







تحريك آزاديءَ ۾ سنڌ جي عالمن جو حصو



داكتر مظهر الدين سومرو

جملي حق ۽ واسطا الطاف مظهر سومرو جي نالي محفوظ

كتاب جو نالو : تحريك آزاديءَ ۾ سنڌ جي عالمن جو حصو

مصنف : داكتر مظهر الدين سومرو

ڇاپو : پهريون ــ نومبر 2008ع

ڇپائيندڙ : الطاف مظهر سومرو

ڳاڻيٽو : 500

د 600 رپيا

ڇاپيندڙ : نقش پبليڪيشنز ، ڪراچي

ملڻ جا هنڌ:

1- فليك نمبر 4, رضيه تيريس

ڀرڳڙي روڊ, هيرآباد

حيدرآباد _ سنڌ

فون: 2613197-022

مربائيل: 3091401-0300

2- شاه لطيف كتاب گهر

گاڏي کاتو _ حيدر چوڪ

حيدر آباد _ سنڌ

آئون هي پيار ڀريو پورهيو ڏيه جي ڏاهي روشن خيال انسان دوست عالم عصب وطن مفڪر محترم محمد ابراهيم جويو

منسوب كريان ٿو

"زير نظر ڪتاب ۾ اوڻيهين صديءَ جي اهڙيئي هڪ ڇڙواڳ رولو، ست سمنڊ پار کان نڪتل، دولت جي بكئي، جديد دُور جي سفيد فام تهذيب جي دعوي دار تاجر ۽ چالاڪ ٽولي جي ڳالهہ ڪيل آهي. جنهن 1843ع ۾ سنڌ جي حڪمران ٽالپرن جي دولت کي لٽڻ ۽ ڦرڻ لاءِ سنڌ تي حملو ڪيو. هن ڪتاب ۾ سنجن هڪ سؤ سالن جي اُنهن ئي لٽيرن, شاطرن ۽ لٽيرن جي غلاميءَ مان آزاديءَ جي تحريڪ ۾ همعصر سنڌي علماءِ ڪرام جي ورتل صى مرادا كيل كردارجى كاله كيل آهى، تفصيل وار وڏيءَ محنت ۽ علمي تحقيق جي روشنيءَ ۾ ٻڌايل ان ڳالهہ کي ڌيان سان پڙهڻ ۽ آئيندي لاءِ ان مان گڏيل قومي اصلاح ۽ چڱائيءَ جا سبق وٺڻ، هن ڪتاب جي لائق پڙهندڙن جو قومي ۽ انساني فرض آهي."

فهرست

| 17 | محمد ابراهيم جويو | • پیش لفظ |
|-----|--|------------------|
| 27 | مظهر الدين سومرو | • مها ڳ |
| 3.3 | مظهر الدين سومرو | • عرض حال |
| 37 | برون برون | • عالمن جون تصوي |
| 45 | باب پهريون | |
| | باب پهريون انگريزن جي آمد ۽ ان جا سبب | سنڌ ۾ |
| 47 | | مذهبي مفاد |
| 49 | | اقتصادي مفاد |
| 54 | | سياسي مفاد |
| 6.3 | باببيو | |
| | ^{باب ٻيو} ا نگريزن جو قبضو ۽ ان جا اث ر | سنڌ تي |
| 65 | | سماجي اثر |
| 67 | | اقتصادي اثر |
| 73 | | تعليمي اثر |
| 76 | | مذهبي اثر |
| 78 | | • آريا سماج |
| 79 | | • شڌي سيا |
| 80 | | • سنگِنن |
| 81 | | • نٿورام جو قتل |
| 82 | | • مسجد منزل گاه |
| 87 | باب تيون | |
| | راڄ کان پيزاري ۽ تحريك آزاديءَ جو آغاز | سنڌ ۾ انگريزي |
| 99 | باب چوٿون | |
| | جو ابتدائي دور ۽ سنڌ جا عالم | سياست |

| سند محمدن ايسوسئيشن | 101 | |
|--------------------------------------|-----|--|
| تعارف | 101 | |
| ڪار ڪردگي | 104 | |
| • سیاسی خدمتون | 104 | |
| • سنڌ جي بمبئيءَ کان جدائي | 104 | |
| ● سائمن كميشن | 105 | |
| • گول ميز ڪانفرنس | 106 | |
| • عدم تعاون جي تحريك | 108 | |
| • مذهبي خدمتون | 108 | |
| ● شدّي تحريڪ | 109 | |
| لاڙڪاڻي جا واقعا | 109 | |
| • آريا سماج | 110 | |
| عالمن جو حصو | 111 | |
| ريشمي رومال تحريك | 111 | |
| تعارف | 111 | |
| عالمن جو حصو | 115 | |
| بمبئيءَ كان عليحدگيءَ جي تحريك | 116 | |
| سنڌ جو ٻمبئيءَ سان الحاق | 116 | |
| الحاق جا اثر | 117 | |
| عليحد گيء لاءِ كوششون | 119 | |
| انفرادي ڪوششون | 119 | |
| • اجتماعي كوششون | 121 | |
| عليحدگيءَ جي مخالفت | 125 | |
| مختلف پارٽين جو رد عمل | 129 | |
| • آل انڊيا نيشنل ڪانگريس | 129 | |
| • آل انډيا مسلر ليگ | 131 | |
| • آل انڊيا خلافت ڪاميٽي | 132 | |
| 2 " | _ | |

ينق محمدن ايسم سئيش

| • مكيه كانفرنسون | | 132 |
|--|---|-----|
| سركاري كوششون | | 134 |
| عالمن جو حصو | | 137 |
| خلافت تحريك | ٠ | 139 |
| تعارف | | 139 |
| ڪار ڪر د گي | | 144 |
| • خلافت جا ڏينهن | | 144 |
| • خليفن سان وفاداري | | 145 |
| • سركار سان لاڳاپا | | 146 |
| • يونان جي مفمت | | 147 |
| • هجرت تحریک | | 148 |
| • انگوراسان همدردي | | 154 |
| • سمرنا جو واقعو | | 155 |
| • لاسين كانفرنس | | 156 |
| • جزيرة العرب | | 156 |
| • ترك موالات | | 156 |
| • كائونسلن جو بائيكاٽ | | 160 |
| • هندو مسلم اتحاد | | 161 |
| • سرڪاري عملدارن جي مذمت | | 162 |
| • صنعت ۽ واپار | | 163 |
| • مقامي چونڊون | | 164 |
| • سنڌ جي عليحدگي | • | 164 |
| • كميونل ايوارڊ جي مذمت | | 165 |
| مڪمل آزاديءَ لاءِ ڪوششون | | 166 |
| • مسلم ليگ سان الحاق | | 167 |
| • قومي تعليم جو واڌارو | | 167 |
| • هارين جي حقن جي حفاظت | | 168 |

| عالمن جو حصو | 171 |
|----------------------------------|-----|
| امن سیا | 176 |
| تعارف | 176 |
| ڪار ڪر د گي | 176 |
| • عالمن جو گروه | 176 |
| • ڏن ڏنين جو ڏڙو | 181 |
| امن سيا ۽ سنڌ جا عالم | 182 |
| جميعت العلماء | 185 |
| تعارف | 185 |
| ڪار ڪردگي | 188 |
| • سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگي | 188 |
| • خلافت تحریک | 188 |
| • قطع تعلقات | 189 |
| سودیشي تحریک | 190 |
| • آزاديءَ جي تحريڪ | 190 |
| عالمن جو حصو | 191 |
| خاكسار تحريك | 195 |
| تعارف | 195 |
| ڪار <i>ڪر</i> د <i>گي</i> | 198 |
| عالمن جو حصو | 198 |
| باب پنجون | 215 |
| ڈیھی سیاس <i>ت جو دو</i> ر | |
| سنڌ هاري ڪاميٽي | 217 |
| تعارف | 217 |
| کار کردگی کار کردگی | 217 |
| عالمن جو حصو | 219 |
| <i>y</i> . 0- | 212 |
| | |

| 219 | سند ازاد پارٽي | |
|-----|-----------------------------|-------------------|
| 219 | • | تعارف |
| 220 | | ڪار ڪردگي |
| 220 | | عالمن جو حصو |
| | سنڌ اتحاد پارٽي | |
| 222 | سند الحاد پارني | : 1 - ** |
| 222 | | تعارف |
| 223 | | ڪار ڪردگي " |
| 225 | | عالمن جو حصو |
| 225 | سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽي | |
| 225 | •• | تعارف |
| 226 | | ڪار ڪردگ <i>ي</i> |
| 227 | | عالمن جو حصو |
| 227 | جمنا، نریدا، سنڌ ساگر پارٽي | |
| 227 | 69 | تعارف |
| 232 | | ڪار ڪردگي |
| 23 | | عالمن جو حصو |
| 237 | باب ڇهون | |
| | مذهبي سياست جو دور | |
| | | |
| 239 | آل انڊيا نيشنل ڪانگريس | |
| 239 | | تعارف |
| 241 | | ڪارڪردگي |
| 241 | | • رولٽ ائڪٽ |
| 242 | | • عدمِ تعاون تح |
| 242 | ملافت | • ڪانگريس ۽ |
| 243 | ن | • تعليمي خدمتو |
| 243 | 5 | • سوديشي تحري |
| | | |

| پرنس آف ویلس جو بائیکاٽ |
|---|
| • سائمن ڪميشن |
| . • نفرو رپوٽ |
| • لوڻ جي ستيا گرھ |
| ڪانگريس ۽ اسيمبلي |
| عالمن جو حصو |
| آل انډيا مسلم ليگ |
| تعارف |
| ڪار ڪرد <i>گي</i> |
| • نظریاتي پرچار |
| • فلسطين جر مسئلو |
| • كانگريس جي مخالفت |
| • مسجد منزل گاه |
| • بقاء لاءِ جنگ |
| عالمن جو حصو |
| بابستون |
| عالمن جي زندگيءَ جو احوال |
| مولانا حاجي احمد ملوي |
| مولانا احمد هالائي |
| مولانا احمد ميمن |
| مولانا احمد ملاح |
| مولانا احمد على "مجذوب" |
| مولانا پيبر احسان الله شاهر راشدي |
| مولانا حافظ اسد الله شاه تكرّائي |
| مولانا حاجي الاهي بخش |
| مولانا حكيم الاهي بخش اعوان |
| مولانا اله بخش "أبوجهو" |
| مو لانا الهـ بخش مهيسر |
| |

| 283 | مولانا حاجي امام الدين راشدي |
|-----|--------------------------------|
| 284 | مولانا سيد امير محمد شاه |
| 284 | مولانا مخدوم بصر الدين سيوهاثي |
| 285 | مولانا ميان پير محمد ٿيٻو |
| 285 | مولانا قاضي تاج محمد نصر پوري |
| 286 | مولانا سيد تاج محمود امروتي |
| 289 | مولانا پير تراب علي شاهر |
| 290 | مولانا حامد الله ميمنً |
| 291 | مولانا قاضي حبيب الله |
| 292 | مولانا حمادالله هاليجوي |
| 292 | مولانا خادم حسين جتوئي |
| 293 | مولانا خدا بخش ڀٽو |
| 293 | مولانا خوش محمد ميروخاني |
| 294 | مولانا حافظ خير محمد اوحدي |
| 295 | مولانا خیر محمد نظامائی |
| 296 | مولانا در محمد دول |
| 297 | مولانا در محمد "خاك" |
| 298 | مولانا دوست محمد لكمير |
| 299 | مولانا دين محمد بُننوي |
| 299 | مولاتا دين محمد "وفائي" |
| 302 | مولانا دين محمد "پٽائي" |
| 302 | مولانا دين محمد "اديب" |
| 303 | مولانا پيير رشد الله ساه راشدي |
| 304 | مولانا مفتى سعدالله انصاري |
| 305 | مولانا شفيع محمذ ببر |
| 305 | مولانا شفيع محمد سوڍر |
| 306 | مولانا شفيع محمد منگيو |
| 307 | مولانا شفيع محمد نظاماتي |
| 308 | مولانا حكيم شمس الدين . |

| 309 | مولانا صاحب ڏنو ڀٽو |
|-----|-----------------------------------|
| 309 | مولانا صدر الدين شاه |
| 310 | مولانا پيرضياء الدين شاه راشدي |
| 310 | مولانا ظهور الحسن درس |
| 312 | مولانا عبدالله بنگلديرائي |
| 313 | مولان عبدالله لغاري |
| 314 | مولانا عبدالله كڏهري |
| 315 | مولانا پير آغا عبدالله جان سرهندي |
| 316 | مولانا عبدالله هالائي |
| 317 | مولانا عبدالله شاه فتاحي |
| 317 | مولانا عبدالله مري |
| 318 | مولانا عبدالحق چانڊيو |
| 319 | مولانا عبدالحق رباني |
| 320 | مولانا عبدالحكير |
| 321 | مولوي عبدالخالق "خليق" مورائي |
| 323 | مولانا عبدالخالق كندياروي |
| 325 | مولانا عبدالرحمن |
| 325 | مولانا سيد عبدالرحيير شاهر |
| 326 | مولانا عبدالرزاق بوبكائي |
| 327 | مولانا عبدالرزاق پيرزادو |
| 327 | مولانا عبدالرئوف ڊومكي |
| 327 | مولانا پير عبدالستار جان سرهندي |
| 328 | مولانا عبدالعزيز تريچاڻوي |
| 329 | مولانا عبدالغفور سيتائي |
| 330 | مولانا عبدالقادر لغاري |
| 331 | مولانا قاضي عبدالكريىر عباسي |
| 331 | مولانا عبدالكريم درس |
| 333 | مولانا عبدالكريم ذيرو |
| 334 | مولانا منتي عبدالكريير |

| 335 | مولانا عبدالكريم چشتي |
|------|-------------------------------|
| 337 | مولانا عبدالكريم مكسي |
| 337 | مولانا عبدالكريم كورائي |
| 339 | مولانا عبدالكريم ككل بنوي |
| 34() | مولانا عبدالكريم سمون |
| 340 | مولانا عبداللطيف دول |
| 341 | مولانا عبدالوهاب لند بلوچ |
| 343 | مولانا عبيدالله سنڌي |
| 349 | مولانا عبيدالله لاشاري |
| 350 | مولانا عزيز الله |
| 350 | مولانا عزيز الله جروار |
| 352 | مولانا عطاء الله پناڻ |
| 353 | مولانا سيد علي اكبر شاه |
| 354 | مولانا علي شير |
| 355 | مولانا علي محمد مهيري |
| 356 | مولانا علي محمد كاكيپوٽو |
| 357 | مولانا غلام احمد ملكائي |
| 358 | مولانا غلام حسين جمالي |
| 360 | مولانا مخدوم غلام حيدر هالائي |
| 361 | مولانا حكيم غلام صديق نوناري |
| 361 | مولانا غلام علي گوپانگ |
| 362 | مولانا غلام عمر جتوئي |
| 363 | مولانا غلام فريدسپريو |
| 364 | مولانا پير غلام مجدد سرهندي |
| 365 | مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي |
| 368 | مولانا فتح علي جتوئي |
| 369 | مولانا فتح علي جتوئي |
| 370_ | مولانا حكيم فتح محمد سيوهائي |
| 371 | مولانا قاضي فتح محمد نظاماني |

| | 372 | مولانا حافظ فضل احمد |
|---|-----|--------------------------------------|
| | 373 | مولانا حكيم فضل الله سومرو |
| | 374 | مولانا حكير فضل محمد نوشهرائي |
| | 374 | مولانا فيض محمد "واعظ" |
| | 375 | مولانا حكيم قائم الدين احمد |
| | 376 | مولانا پير حاجي مٺل شاه |
| | 376 | مولانا حكيم محكم الدين پرهياڙ |
| | 378 | مولانا محمد كتي |
| | 378 | مولانا محمد سومرو |
| | 379 | مولانا محمد بنوي |
| ٠ | 380 | مولانا حاجي محمد قريشي |
| | 380 | مولانا محمد مدنی |
| | 382 | مولانا محمد ابراهيم ڳڙهي ياسيني |
| | 383 | مولانا محمد ابراهيم بنوي |
| | 384 | مولانا پير آقا محمد اسماعيل جان |
| | 384 | مولانا محمد اسماعيل يتو |
| | 385 | مولانا محمد اسماعيل عودي |
| | 386 | مولانا محمد اسماعيل لغاري |
| | 387 | مولانا محمد اكرم انصاري |
| | 388 | مولانا محمد امين آريسر |
| | 389 | مولانا محمد پريل منگيو |
| | 390 | مولانا حافظ خواج محمد حسن جان سرهندي |
| | 391 | مولانا محمد حسن ٽالپر |
| | 391 | مولانا أقا محمد حسين جان سرهندي |
| | 392 | مولانا محمد حسين صديقي |
| | 393 | مولانا محمد حسين زئونر |
| | 393 | مولانا محمد دائود تنيو |
| | 394 | مولان محمد سعید گوپانگ |
| | 345 | مولانا محمد سليمان بنوي |

| مولانا محد مونالا محد مونالا محد مولانا محد مولانا محد مولانا محد مولانا محد مولانا محد مولانا محد |
|--|
| مونالا محم مولانا محم مولانا محم مولانا محم مولانا محم مولانا حكم مولانا حكم مولانا محم مولانا محم مولانا محم |
| مولانا محم |
| مولانا محم مولانا محم مولانا محم مولانا محم مولانا حك مولانا محم |
| مولانا محم مولانا محم مولانا محم مولانا حك مولانا حكم مولانا محم مولانا محم مولانا محم |
| مولانا محم مولانا محم مولانا حك مولانا محم مولانا محم |
| مولانا محم مولانا حک مولانا محم مولانا محم |
| مولانا حك مولانا محم مولانا محم |
| مولانا محم مولانا محم |
| مولانا محم |
| |
| 1.51 |
| مولانا محم |
| مولانا محم |
| مولانامحم |
| مولانا محم |
| مولانا محم |
| مولانا محم |
| مولانا محم |
| مولانا محما |
| مولانا محما |
| مولانا داك |
| مولانا محما |
| مولانا محما |
| مولانا محما |
| مولانا حكي |
| مولانا محما |
| مولانا محما |
| 1.31 |
| مولانا محمد مولانا محمد |
| 2 |

| 421 | مولانا پير محمد هاشعر جان سرهندي |
|-----|----------------------------------|
| 422 | مولانا محمد هاشر |
| 422 | مولانا محمد هاشير لغاري |
| 423 | مولانا محمد هاشعر گهانگهرو |
| 424 | مولانا محمد يعتوب حاجائو |
| 424 | مولانا محمد يوسف بنوي |
| 425 | مولانا محمود پاتائي |
| 426 | مولانا ميان محمود |
| 426 | مولانا معين الدين صديقي |
| 427 | مولانا حكيم معين الدين كنياروي |
| 428 | مولانا مولاداد چانڊيو |
| 428 | مولانا مير محمد نورنگي |
| 429 | مولانا مير محمد جتوئي |
| 429 | مولانا نبي بخش عودي |
| 430 | مولانا نذير حسين جتوئي |
| 431 | مولانا قاضي نظر محمد ديهاتي |
| 432 | مولانا نور محمد نظاماتي |
| 433 | مولانا نور محمد اندڙ |
| 434 | مولانا نور محمد سجاولي |
| 435 | مولانا هدايت الله تنبو |
| 437 | مولانا يار محمد |
| 523 | ضميمو پهريون |
| 528 | ضعيمو بيو |
| 531 | مددی کتاب |
| | ** |

پیش لفظ

"كِنين ماضي من ۾، كِنين استقبالُ حيف تِنين جو حالُ، جن وساريو حال كي." تاريخ لاءِ لكيل كٿي پڙهير:

"سياڳا آهن أهي، جن وٽ تاريخ آهي، ڄاڻن ٿا اُهي تـ کين آئيندي ڇا ڪرڻو آهي: سياڳا آهن اُهي جن جو آئيندو روشن آهي. ڄاڻن ٿا اُهي تہ کين اڄ ڇا ڪرڻو آهي."

قومي تاريخ جي ڳاله به ائين آهي، جيئن ڪنهن فرد انسانيءَ جي زندگيءَ جي ڳاله. ماڻهوءَ جي ڄمڻ کان پوءِ ڪجه وقت، حافظي جي نه هئڻ ڪري، ڪجه ياد نٿو رهي: پوءِ عمر ڀَر ڳاله يا ڳالهيون ڪجن ٿيون ۽ ياد رهن ٿيون. انساني زندگيءَ جي اوائلي تاريخ به ائين آڄاتل رهي. ان بابت ماڻهن جا پاڻ گهڙيا اندازا گهڻو پوءِ جا، ڪافي ڪجه ٻُڏلَ ۽ ٻڌايلَ به آهن.

حيات انسانيءَ بلڪ سڄيءَ جِيوَت جي فطرت غير برابريءَ جي حامل ۽ ان ڏانهن مائل نظر اچي ٿي. ان صورت حال ۾ گهٽ طاقتور جِيوَ گڏجي، اجتماعن ۾، وڌ طاقتور جِيوَ گڏجي، اجتماعن ۾، وڌ طاقتور جِيوَ يا جِيوَن کان پنهنجو بچا؛ ڪن ٿا- پکين لاءِ ڏٺو ۽ چيو ويو آهي ته "ولر ڪيو وتن پرت نہ ڇنن پاڻ ۾."ننڍا ۽ هيڻا جيوَ ائين گڏجي گذاري لاءِ فطري طور پنهنجي جنسي ڄم جي واڌ کان به ڪم وٺن ٿا- جيئن جيتن ۾ ڪيليون ۽ ماڪوڙيون، آبي جيوت ۾ ننڍيو ن مڇيون، گانگٽ وغيره، پکين ۾ اڏامندڙ جيت، ۽ جهرڪين جا ولر، ۽ چوپاين ۾ هرڻ، سَها وغيره.

بني نرع انسانَ تہ نرعُ ئي هڪُ آهن- چمڙيءَ جي رنگ، قدَ بُت ۽ مهانڊن ۾ ڪجه ڪجه فرق سان حياتياتي طور انسانَ ذات هڪُ ئي نسلُ آهي، ۽ ٻيءَ سڄيءَ جيوت کان غير برابريءَ جي خيال کان، برتر ۽ بالاتر آهي- اِن لاءِ هو پاڻ کي مخلوقات ۾ اشرف بہ چوائين ٿا، ۽ اهو پنهنجو اوچو درجو بلڪ غلبو هو سڄيءَ نظرت (Nature) جي لقاءَ تي پنهنجو حق ۽ شان سمجهن ٿا. ارتقائي اوسر ۾ کين ميڄالي ۽ جسماني بيهڪ يا ڍانچي جي صورت ۾، ڌرتيءَ تي ٻيءَ سڄيءَ جيوت تي لٿي پٿي وڏي هڪ وِٿي به حاصل آهي. حياتيءَ جي جهد ۾ اِن وٿيءَ جي زور تي بني نوع انسانَ، پنهنجي پاڻ ۾ ٻولين ۽ طرح طرح جي ٻيء حاصلات جي وسيلي، اندروني طور، تغريق ۽ تصادم جا اُهي اُهي لقاءَ پيدا ڪيا آهن، جو اِن تاءَ ۽ ڪشمڪش ۾ مجموعي طرح مساوات سان گڏ اخوت ۽ آزاديءَ جون نعمتون منجهن ناياب نه ته به رڳو ڪن گروهن ۽ قومن ۾، سي به ڪنهن ڪنهن سطح تائين محدود ۽ مو ڳيون، ملن ٿيون. جيوت جي عالم ۾ انسانُ جيئن سمجهدار ٿيو، ته ڄاڻڻ چاهيائين ته سندس وجود جو ڇا سبب هو. جديد سماجي علم حيات وسيلي انساني زندگيءَ جي اوائلي دورن جا ڪي علمي احوال به لکڻ ۽ پڙهڻ ۾ آيل آهن. حيوان ۽ انسان جون جسماني هڪجهڙايون ي جياپي لاءِ ڪافي هڪجهڙيون ضرور تون سامهون رکندي، جيوت جي اِنهن ٻن وڏن ۽ جياپي لاءِ ڪافي هڪجهڙيون ضرور تون سامهون رکندي، جيوت جي اِنهن ٻن وڏن روپن ۾ سمجه ۽ سُرت جو ويڇو وڏو امتيازُ به مڃيو ويو. ٻن پيرن تي اٿي بيهڻ سان

جڏهن انسانَ پنهنجي کاڌي لاءِ باچتُو شين کي گڏ ڪرڻ ۽ سانڍي رکڻ جو عمل شروع

ڪيو ته انسانن ۾ ملڪيتداريءَ جي سِرشتِ ۽ ان لاءِ حرص جي ابتدا ٿي. ۽ ان ابتدا سان سوين هزارين لکين صدين کان اڄ تائين انساني سماج ۾ ملڪيتداريءَ ۽ ان سان گڏ اٿيلَ سماجي غير برابري- زمين، زر ۽ زن - تائينءَ کي ضابطي ۾ آڻڻ ۽ اُن جي واڌو اقتدار ۽ اختيار جي هيبت ۽ هاڃيڪاريءَ کان بچاءَ جا تدارڪ, قاعدا قانون به قدري ٺهيا ۽ قائم رهيا آهن. ملڪيت جو حرصُ هڪ پاسي ۽ ان کان بُڇان طور ۽ بچڻ لاءِ راڄ مهاجَنَ. رسر رواجَ, سركاريون، مذهب ۽ انقلاب به پئي وارد ٿيا. پر حقيقت سامهون اها آيل رهي تـ انهن سڀني بندوبستن، تدارڪن ۽ ڪوششن ملڪيتداريءَ جي حق کي تسليم پئي ڪيو آهي- ايتري قدر، جو اُن کي ڄڻ اڻ پڇيو ۽ اڻ ڪُڇيو سڳورپ جو درجو ملي ويو. مطلب ته ملڪيت جي حق سان گڏ افلاس ۽ غريبيءَ جي آٿت ۽ علاج طور ملڪيتدار سخاوتون ۽ خيراتَ ڪن. ملڪيت جي ايڏي هٻڇ ۽ لالچ نـ رکن ۽ اڻهوند وارا صبر كن، شكر كن ۽ قناعت كان كر وٺن- اهي صلاحون، نصيحتون ۽ همدرديون سڀني لاءِ. شاهوڪارن ۽ پيٽ گذارُن ٻنهي جي پنهنجي پنهنجي مرضيءَ تي ڇڏيل هيون. مطلب ته ملڪيتداريءَ جي حد به ڪانه هئي ۽ مسڪينيءَ جي به حد ڪانه هئي. البت ملڪيت ۽ مال جي چوريءَ ۽ ان سان هٿ چرانُد وغيره تي پابنديءَ ۽ سزائن جا قانون ۽ قاعدا سخت ۽ پڌرا هئا ۽ عملدار انهن جي تعميل لاءِ هڪيا حاضر ۽ اڻ چُڪيا چست موجود ئي رهيا. ملڪيت جي اهڙي حق کي دنيا جي سڀني مذهبن ۽ انقلابن.

ويندي 1789ع جي فرينچ انقلاب بہ، نہ رڳو مڃيو ٿي پر مانُ ٿي ڏنو. ويھين صديءَ جي شروع وارو سووئٽ انقلاب ئي هو، جنھن ملڪيت جي اهڙيءَ سڳورپ بدران ئي انساني پورهئي جي ڏاڙي تي بيٺل هو - اهڙن انساني پورهئي جي ڏاڙي تي. جنهن جي پيدا ڪيل دولت ئي ملڪيتدارن وٽ وڃي ٿي گڏ ٿِي. ۽ اهي پورهيت پاڻ انهيءَ پنهنجيءَ ئي دولت کان محروم ٿي رهجي ويا.

گڏ ٿيل ۽ ڪارج ۾ نه ايندڙ ملڪيت هونئن به کليل دعوت هجي ٿي ته لُٽجي ۽ قُرجي ۽ اِن سلسلي سان لاڳاپيل ٻي هڪ ڳاله به وڏي ۽ آڻٽر سامهون هئي ته رولو غنير ۽ قورن ۽ لٽيرن جا ٽولا انبوهن ۾ ٿي نڪتا ۽ وَسيل ٺهيل سُکين ستابن ماڻهن، پنهنجن پنهنجن وطنن ۾ ويٺلن تي هلان ڪري آيا ٿي ۽ کين ئي مغت ۾ ماري- ڇوته بچاءَ ۾ سامهون به اهي پاڻ ئي ٿي آيا- سندن ئي دولت، ٻين وٽ ڪئي ٿيل دولت جا ڍير کنيو هليا ٿي ويا. جيئن لُٽيرو محمود غزنوي سنڌ جي رستي سان پوريون سترهن ڪاهون ڪري، سومناٿ مان ڀيري ڀيري سون، چانديءَ ۽ موتين سان پنهنجن خچرن جون خرزيون يَري ۽ ڏٽي روانو ٿي ويندو هو. ان طرح قديم دَورن کان هند سنڌ جي دولت تي حريص نگاهون رکندڙ يونانين، ايرانين، افغانن، ترڪن، منگولن ۽ عربن جون ڪاهون ٿينديون رهيون ۽ هتان جي ملڪن ۽ سرزمين جي دولت لٽبي ۽ ڦربي رهي.

زير نظر ڪتاب ۾ اوڻيهين صديءَ جي اهڙي ئي هڪ ڇڙواڳ رولو. ست سمنڊ پار کان نڪتل. دولت جي بکئي، جديد دَور جي سفيد فام تهذيب جي دعويدار تاجر ۽ چالاڪ ٽولي جي ڳاله ڪيل آهي، جنهن 1843ع ۾ سنڌ جي حڪمران ٽالپرن جي دولت کي لٽڻ ۽ ڦرڻ لاءِ سنڌ تي حملو ڪيو. هن ڪتاب ۾ سڄن هڪ سؤ سالن جي انهن ئي لٽيرن شاطرن ۽ لُٽيرن جي غلاميءَ مان آزاديءَ جي تحريڪ ۾ همعصر سنڌي علماءِ ڪرام جي ورتل حصي ۾ ادا ڪيل ڪردار جي ڳاله ڪيل آهي، تفصيلوار وڏيءَ محنت ۽ علمي تحقيق جي روشنيءَ ۾ ٻڌايل اِن ڳاله کي ڌيان سان پڙهڻ ۽ آئيندي لاءِ ان مان گڏيل قومي اصلاح ۽ چڱائيءَ جا سبَقَ وٺڻ، هن ڪتاب جي لائق پڙهندڙن جو قومي ۽ انساني فرض آهي.

سائين مظهر الدين سومري جي هن وڏي قدر لائق ڪتاب لکڻ تي کين پي. ايڇ. ڊيءَ جي ڊگري ملي. سندن هيءُ ڪتاب مون ٻه ڀيرا اکر اکر ڪري پڙهيو آهي- پهريون ڀيرو مخطوطي جي صورت ۾ ۽ ٻيو ڀيرو اُن جي ٽائيپ ۾ ڪمپوز ٿيل صورت ۾. ٽائيپ ٿيل ڪتاب جي ڪن جزوي اکرن جي درستين ڏانهن پبلشر جو ڏيان به ڇڪايو هوم ۽ اُهي اُئين درست به ٿيا، جنهن جي مون کي بيحد خوشي آهي

سنڌ جي تاريخ جي مخصوص دور جي هِن تصنيف اسان تي ڪي خاص ڳالهيون واضح ڪيون آهن. مثلاً فرقيواريت ۽ قوميت جي ڳاله تحريڪ جي آخري نتيجي ۾ وڌ نقصان پهچايو، ۽ اڄ تائين اُن جا اُگرانتيجا ڀو ڳڻا به پئي پيا آهن. لائق پڙهندڙ خود به هن روشن سوچ جي تصنيف جي مطالعي مان ڏسي سگهندا ته سنڌ جاعلماءَ ڪرام اڪثريت ۾ قوميت، وطنيت، انسانيت بمقابل فرقيواريت ۽ مسلڪيت وسيع القلب آهن ۽ انساني معاشري جي بهتري قومن جي برابريءَ ۽ انساني اخوت، مساوات ۽ آزاديءَ ۾ ڏسن ٿا. ڊاڪٽر مظهر الدين سومري صاحب جي هن پي. ايڇ. ڊيءَ جي علمي مقالي ۾ ڄاڻ جا هيٺيان نڪتا خاص توجه لائق آهن:

انگریزن کان اڳ اسان جي ملڪ سنڌ ۾ مذهبي ڪٽرپڻي جو نالو به ڪونه هو.
 هندو خواه مسلمان ۽ مختلف مذهبن جا پوئلڳ هئڻ جي باوجود محبت ۽ رواداريءَ سان گذاريندا هئا. انگريزن اچڻ سان ئي مذهبي اختلافن جو ٻج ڇٽيو. نتيجي ۾ هڪ ئي ڌرتيءَ جا ماڻهو هڪ ٻئي جي رت جا پياسي ٿي پيا ۽ ماڻهن مذهبي جنون ۾ اچي. هڪ ٻئي جو رت به وَهايو.

سنڌ محمدن ائسوسئيشن به نج سنڌي ماحول ۽ حالتن جي پيداوار هئي، جنهن سن 1884ع کان وٺي 1936ع تائين سنڌ جي عوام جي تعليمي، سماجي، مذهبي ۽ سياسي خدمت ڪئي. "سنڌ مدرسة الاسلام" جو قيام هن ئي جماعت جو ڪارنامو هو. هن جماعت جي ڪاردگيءَ ۾ سنڌي عالمن کي وڏو عمل دخل رهيو. مولانا محمد صادق کڏي مدرسي وارو، مولانا اله بخش اېوجهو، مولانا دين محمد وفائي ۽ حڪيم فتح محمد سيوهاڻي هن جماعت جا سر گرم ڪارڪن هئا، جي فرقيواريت کان ڪوهين پري هئا.

"ريشمي رومال تحريك" جي كهاڻي به سنڌين جي سياسي بصيرت ۽ وطن دوستيءَ جي كارنامن سان ڀريل هئي. هن تحريك جو اصل قائد مولانا عبيدالله سنڌي هو، جو پاڻ كي سنڌي سڏائڻ ۾ فخر محسوس كندو هو. ان كان سواءِ امروٽ ۾ مولانا تاج محمود امروٽيءَ، پير جهنڊي ۾ پير رُشد الله شاهر راشديءَ ۽ كراچيءَ ۾ مولانا محمد صادق كڏي واري زير زمين مركز قائم كري، هن تحريك كي كامياب بنائڻ جي كوشش كئي.

ان ۾ ڪوبہ شڪ نہ آحي تہ "خلافت تحريڪ" سنڌ ۽ هند جي گڏيل تحريڪ هئي، پر هن کي عروج تي پهچائڻ وارا سنڌ جا ئي عالمر هئا. سنڌ جي عالمن هن تحريڪ دوران جيڪي قربانيون ڏنيون، سي سندن وطن دوستيءَ جي جذبي ۽ سچائيءَ جو مثال آهن. سنڌ اندر هن تحريڪ جون 7 ضلعي ڪاميٽيون ۽ 252 شاخون هيون. اهڙيءَ طرح لڳ ڀڳ 300 عالمن هن تحريڪ ۾ حصو ورتو.

انگريزن جي آمد کان پوءِ سنڌ هڪ الڳ، آزاد ۽ خود مختيار ملڪ پنهنجي

حيثيت وڃائي ويٺو. انگريزي راڄ سنڌ جي سياست ۾ وڏو ڦيرو آڻي ڇڏيو. سندن راڄ ۾ هڪ ملڪ بدلجي پهريائين هڪ صوبو، پوءِ اُهو پنهنجي صوبائي حيثيت به وڃائي، وڃي بمبئي پرڳڻي جو حصو بڻيو. انهن سياسي واقعن اسان جي عالمن ۾ پهريائين بيچيني، پوءِ بيزاري ۽ آخر ۾ بيداري پيدا ڪري ڇڏي. ڪيترا عالم ملڪ ڇڏي هليا ويا. مثال طور مولانا عبدالڪريم مٽياروي پنهنجي وطن جي آزادي ختم ٿيندي ڏسي چيو ته، "اسين فرنگي حاڪمن کي ڏسي نٿا سگهون. ان ڪري هاڻي اسان جو هتي رهڻ نهيندو." پوءِ هو سنڌ ڇڏي مٺي مرسل جي ملڪ ڏانهن هليو ويو.

"سنڌ هاري ڪاميٽي" سکر بئراج جي تڪميل کان پوءِ وارين حالتن جي پسمنظر ۾ ٺاهي وئي. هِن پارٽيءَ جي ڪوشش سان اسيمبليءَ جي ايوان خواه ايوان کان ٻاهر هارين جي حقن جون ڳالهيون ٿيڻ لڳيون ۽ پورهيت طبقي ۾ هڪ قسر جي بيداري آئي. سنڌ جي ڪيترن عالمن جهڙوڪ مولوي عبدالله لغاري, مولوي عزيزالله جوار, مولوي محمد معاذ پيرزادو ۽ نذير حسين جتوئي وغيره هن جماعت جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ ۾ ڀرپور حصو ورتو.

دسمبر 1939ع ۾ سنڌ جي عالمن مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي قيادت ۾ "جمنا _ نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهي. هن پارٽيءَ کي ان ڪري قائم ڪيو ويو هو، تہ جيئن پورهيت طبقي جي حالت ۽ حيثيت کي بدلايو وڃي ۽ هندستان کي مذهب بدران زبان ۽ تهذيب جي بنياد تي تقسيم ڪرائڻ جي ڪوشش ورتي وڃي.

مطالعي هيٺ آيل دور جو آخري اڌ ڏهاڪو سنڌ ۾ مذهبي سياست جي جوش ۽ جنون وارو دور هو، جنهن ۾ عوام ڪانگريس ۽ مسلم ليگ جي پلئٽفارمن تان مذهب جي بنياد تي هڪ ٻئي کان الڳ ٿيڻ جو فيصلو ڪيو، ۽ آخرڪار ملڪ جو ورهاڱو ٿيو.

هن مذهبي سياست واري دور ۾ سنڌ جا ڪي عالم "مسلم ليگ" ۾ به ساڳئي جوش ۽ جذبي سان ڪر ڪرڻ لڳا، جهڙيءَ طرح هو خلافت جي زماني ۾ پنهنجيون سياسي خدمتون انجام ڏيئي چڪا هئا. هِن موڙ تي تاريخ پنهنجو رخ بدلايو، ۽ وقت جي حالتن سنڌي عالمن جي قيادت بدران سندن ڪارڪُنيءَ کي قبول ڪيو، ۽ اهو مقصد کين جهڙو تهڙو حاصل ٿي ويو، جنهن لاءِ به هُنن جدوجهد ڪئي هئي!

سنڌ جي تاريخ جو ڪوبہ اهڙو دور نہ رهيو. جنهن ۾ سنڌ جي علماء ڪرامر سياست ۾ ڀرپور حصو نہ ورتو هجي. هُنن سنڌ کان سواءِ هند جي سطح تي بہ پنهنجا سياسي اڻمٽ اثر ڇڏيا آهن.

سنڌي عالمن مذهبي رواداري اختيار ڪندي. مختلف تحريڪن ۽ تنظيمن ۾

حصو ورتو. جنهن ڪري منجهن رواداريءَ جي گڻ ايتريون ته پاڙون پختيون ڪيون. جو هنن غير مسلم اڳواڻن لاءِ. پنهنجي مذهبي عبادتگاهن جا دروازا بند نه ڪيا. ۽ ساڻن گڏجي تحريڪون هلايون.

مطالعي هيٺ آيل دور ۾، سنڌي عالم جڏهن سڌو سنئون عوام جي رابطي ۾ آيا، ۽ باهمي اعتماد کي قائم ڪري ورتائون ته انهيءَ موقعي، هن طبقي کي عوامي مسئلن جي سمجهڻ ۽ انهن کي حل ڪرڻ جي قوت بخشي. ان ڪري وقت گذرڻ سان گڏوگڏ هيءُ طبقو عوامي حقن جي حفاظت ۽ آواز جو ترجمان به بڻيو. تان جو ڪيترن عالمن "هاري تحريك" ۾ شركت كئي ۽ "جمنا _ نربدا _ سنڌ ساگر پارٽيءَ" جي سياسي ميدان تان انصاف تي ٻڌل سماجي ۽ اقتصادي منشور ڏنو.

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ جيتوڻيڪ اٽي ۾ لوڻ برابر عالم سرڪاري ۽ درٻاري نوازشن جو نشانو بڻجي، عوام کان ڪٽجي ويا هئا، پر سندن گهڻائي خوددار، بيباڪ ۽ بي غرض رهي. کين ند تہ کو اقتدارُ مرعوب ڪري سگهيو ۽ ند وري کا درٻار يا سرڪار خريد ڪري سگهي، جنهن جا هيٺيان مکيد ٽي سبب هئا:

- مدرسن طرفان مهيا كيل خاص نوعيت جي ذهني، علمي ۽ انتظامي تربيت.
 - 2- آمدنيء جا ذاتي ذريعا جهڙوڪ طبابت وغيره.
- -3 سيهاسي جماعتن جو مستحكر مالي نظام ، جنهن جي وسيلي سندن مالي مدد ٿي
 سگهندي هئي.

كتاب جي قابل احترام مصنف بابت

پاڻ بابت, منهنجي پنهنجي گذارش تي، ڏاڍي نماڻي انداز ۾ مختصر احوال لکي ڏنو اٿن. جنهن جا ٻہ چار اقتباس پيش خدمت آهن:

"بابا جي ٻڌايل شجري مطابق سندس خاندان ۾ ٽي محمد فاضلَ ۽ ٽي محمد اسحاقَ اڳ ۾ ٿي گذريا ۽ مٿس چوٿين نمبر تي نالو محمد فاضل رکيو ويو، تمام وڏو پهريون محمد فاضل، اُن جو په محمد اسحاق، جنهن جو په محمد فاضل، اُن جو په محمد اسحاق، جنهن جو په محمد اسحاق، جنهن کي ٻ په محمد اسحاق، جنهن جو په محمد اسحاق، جنهن کي ٻ په ٿيا. انهن ۾ وڏو خميسو ۽ ننڍو آئون، جنهن تي سلسليوار وڃي چوٿون نمبر نالو محمد فاضل بيهي ٿو."

"اسان جا وڏا پوکي راهي ڪندا هئا, اُٺ به لڏيندا هئا, ۽ نارن تي ٻنيون به ڪاهيندا هئا. منجهن کي ڇُرَ جو ڪر به ڪندا هئا. بابا جو چوڻ هو تہ سندس پهريون ڏاڏو محمد فاضل درويش شخص ٿي گذريو آهي، نتيجي ۾ خاندان ديني تعليم ڏانهن راغب رهندو آيو. اسان جا وڏا سڪرنڊ تعلقي جي تاريخي قبرستان مخدوم بلاوليءَ ۾ مدفون آهن."

"بابا جو پي؛ محمد اسحاق مين لائين جي ريلوي اسٽيشن سرهاڙي ۽ ڳوٺ نَقُرَ جي وچ ۾ اُٺ تي ٽپال کڻندو هو. اهر انگريزن جو دور هو، نَقُرَ ڳوٺ ۾ هندو واپاري رهندا هئا. هي؛ ڳوٺ سنڌو درياء جي ڪپر سان هئڻ ڪري، دريائي ٻيڙن جي اچ وڃ سبب واپار جو مرڪز هو. اِن ڪري هتي ٽپال ايندي ويندي هئي."

"بابا کي 1918ع ۾ شايد پيءُ جي ورثي طور چيهوپد ۾ ٽپال کاتي ۾ ميل پيون ڪري رکيو ويو ۽ ان بعد سڪرنڊ ۾ ئي نوڪري ڪيائين. پهريائين سندس پگهار و روپيا ۽ پوءِ 12 روپيا ٿيو... ٽپال ڏيڻي وٺڻي نہ به هوندي هئي ته به مقرر ڳوٺن ۾ ضرور پهچي اُن ڳوٺ جي نيڪ مرد کان صحيح وٺبي هئي ته ٽپالي پهتو... بابا کي فرض شناسيءَ ۽ ايمانداريءَ جو اهڙو ته احساس هوندو هو. جو نوڪريءَ دوران سَنَ شهر جو هڪ خط اچي سڪرنڊ وٽس پهتو، پاڻ ڪنهن ٻئي کي ڏيڻ جي بجاءِ محرابپور کان ٿيندو، ٻيلي مان پنڌ ڪري، ٻيڙيءَ جي ذريعي درياءُ اُڪري وڃي سن پهتو، ۽ خط واسطيدار ماڻهوءَ جي حوالي ڪري واپس وريو..."

"آئون 8 جنوري 1940ع مطابق 28 ذوالقعد 1358هـ اڱاري جي رات تاريخي ڳوٺڙي جلالاڻيءَ ۾... پٽن ۾ ٻئي نمبر تي ڄائس ۽ منهنجو نالو مظهر الدين رکيو ويو."

"…. ابتدائي تعلير جو آغاز پرائعري اسڪول بهادر جوکيو، تعلقي سڪرنڊ مان ڪير. اسان جو استاد اسان جو پٿاٽ مرحوم مولا بخش سومرو هو، جيڪو هندو استادن وٽ پڙهي، سنڌي فائينل جو امتحان پاس ڪري استاد ٿيو هو. سندس بدلي ڳوٺ عيسو ڪيريو ۾ ٿي تہ اسان کي بہ پاڻ سان وٺي ويو. اهڙيءَ طرح سندس بدلي سڪرنڊ جي مين پرائمري اسڪول ۾ ٿي تہ مون به وڃي اُتان پرائمريءَ جي تعليم پوري ڪري سڪرنڊ جي ئي اي. پي ڪلاس ۾ داخلا ورتي… جيئن ته اسان جي رهائش تڏهن دِٻَ واري ڳوٺ هئي، منهنجو وڏو ڀاءُ نظام الدين فائينل پاس ڪري ماستر ٿي ويو. آئون ۽ ننڍو ڀاءُ نظير الدين دِٻَ کان سڪرنڊ تائين اوٽ موٽ چار ميل واريءَ جو کيو. گاه به ڪرڻ پوندو هو. اهڙيءَ طرح آئون ته پنهنجي شوق سان مينهون ڏهڻ به سکي ويس، ۽ ڪرڻ پوندو هو. اهڙيءَ طرح آئون ته پنهنجي شوق سان مينهون ڏهڻ به سکي ويس، ۽

"... ٻهراڙيءَ ۾ رهندا هئاسون. روشنيءَ جو انتظام ڪونه هو. هڻ وٺ ۽ ڀڄ ڀڄان

واري زندگي هئي. استاد ڏاڍا محنتي، هوشيار ۽ خيرخواه هوندا هئا. ڳوٺ ۾ ڪر ڪار جي ڪري وقت ڪونه ملندو هو، ان ڪري هوم ورڪ به اسڪول ۾ رسيس دوران ئي ڪري ڇڏيندو هوس.

"… ماءُ پيءُ جي محنت ۽ اورچائيءَ کي ڏسي، مون ۾ جذبو پيدا ٿيندو هو تہ ٻئي جي محتاجيءَ کان بچڻ لاءِ پاڻ تي ڀاڙي اڳتي وڌان. گاه لثندو هوس. ڪاٺيون ڪري ايندو هوس. مينهن کي جهنگ ۾ ڪاهي ويندو هوس. روهڙي ڪئنال ويجهو هئڻ ڪري اُن ۾ ترندو هوس، گهوڙي سواريءَ جو شوق هو، جنهن ڪري گهوڙي ڌاري، بلاوليءَ جي ميلي ۾ گهوڙن جي ڊوڙ ۾ شريڪ ٿي داد به حاصل ڪيم. ان کان پوءِ 1956 ع ڌاري ٻهراڙي ڇڏي اچي سڪرنڊ شهر ۾ ويٺاسون.

"…… 1958ع ۾ اڃا پنجين انگريزيءَ ۾ ئي هوس ته انٽرميڊيئٽ ڊرائنگ ۽ سنڌي فائينل جو امحتان پاس ڪري ورتر. اهڙيءَ طرح آرٽس ۾ 1961ع ۾ مئٽرڪ جو امتحان ڏنير ۽ نتيجي اچڻ کان اڳ ۾ ئي سنڌي فائينل جي بنياد تي سڪرنڊ کان اوله طرف سنڌو درياءَ لڳ 10 ميل پري ڳوٺ مراد علي چانڊيو ۾ مون کي پرائمري ٽيچر مقرر ڪيو ويو. هڪ مهيني بعد نوڪريءَ تان لاٿو ويو. ان بعد جيئن ئي مئٽرڪ جو نتيجو ظاهر ٿيو ته سڪرنڊ کان 8 ميل اوڀر طرف مشهور ڳوٺ کڏهر ۾ پرائمري ماستر مقرر ٿيس... منهنجا ڪجه ساڻي جيڪي سائنس ۾ هئا، تن وڃي گورنمينٽ ڪاليج، ڪاري موري، حيدرآباد ۾ داخلا ورتي. جڏهن ته آئون هڪ ته آرٽس ۾ هوس، ڪليج، ڪاري موري، حيدرآباد ۾ داخلا ورتي. جڏهن ته آئون هڪ ته آرٽس ۾ هوس، هوس، ان ڪري تعليم کاتي ۾ ئي اڳتي وڏڻ لاءِ پرائيويٽ طور امتحان جو سلسلر هوس، ان ڪري تعليم کاتي ۾ ئي اڳتي وڏڻ لاءِ پرائيويٽ طور امتحان جو سلسلر شروع ڪري ڏنم. انهيءَ دوران مون تي بيمارين به حملو ڪيو، پر مون تعليم جي حصول ۾ حوصلو نه هاريو. منهنجي امتحانن جي ترتيب هن طرح آهي:

| 1968ع | 7- ايم، اي، اسلامڪ ڪلچر | 1958ع | ١- اسرميدينك دراننك |
|-------|-------------------------------|--------|--------------------------|
| 1968ع | 8- بي. ايڊ | 1958ع | 2- سنڌي فائينل جو امتحان |
| 1972ع | 9- اير. ايڊ | و1961ع | 3- مئٽرڪ |
| 1976ع | 10- اير. اي پوليٽيڪل سائنس | و1964ع | 4- انٽر آرٽس |
| و1976 | 11- ايل ايل بي | 1964ع | 5- ايس. وي |
| 1984ع | 12- پي ايڇ. ڊي (تحريك آزاديءَ | 1966ع | 6- بي. اي |
| | ۾ سنڌ جي عالمن جو حصو)-" | | |
| | | | |

زير نظر كتابُ جيكو اسان جي هن صابر. شاكر ۽ تعليمي پورهيت جو مٿينءَ

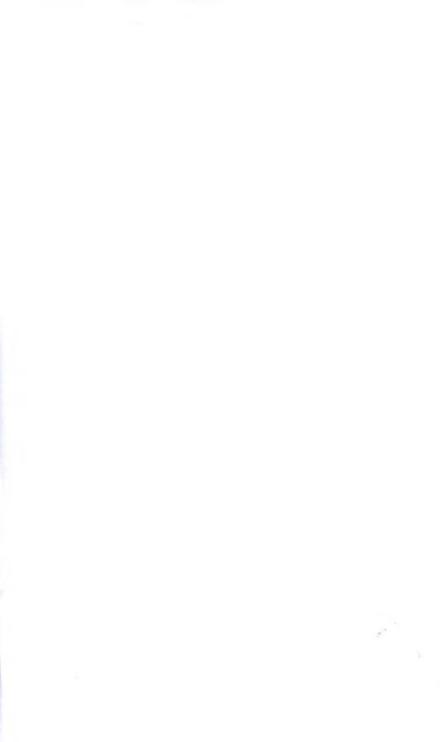
سندن ڏنل امتحانن جي لسٽ ۾ آخري عنوان آهي، اُن جي تياريءَ ۽ تمت بالخير رسائڻ تائين پاڻ ڪيتري محنت، جاکوڙ ۽ کوجنا ڪئي اٿن، اُن جو ڪجهه ذڪر تہ پاڻ ئي ڪتاب جي مُهاڳ ۾ شايد ڪن، پر اسين اوهين ۽ ٻيا سڀ علم دوست، جيڪي ڪتابن پڙهڻ جا هيراڪ آهيون ۽ ڪتابن جي سڃاڻپ ۽ پرک به رکن ٿا، سي ئي هِن ڪتاب تي ڪيل عرق ريزيءَ جو اندازو ۽ قدر ڪري ٿا سگهن.

پَچائي پَهاڻُ، جن رَساڻيو رُڪَ کي، تَنين سندر ڄاڻُ، آهي آڳڙين کي، (شاه-يعن ڪلياڻ)

ٿا صَرافَ سُڄَنِ، پاڻ ڪوٺائن جوهَري، ماڻِڪَ ڪَري مُٺِ ۾، وانءُ وَلِي وَثِ تَنِ، پاڻِيَٺَ ئِي پَرکَنِ، ڪِ ڪَئِنچَلُ گڏِنِ ڪَچَ سين. (شاھ _ سريراڳ)

محمد ابراهيم جويو

حيدرآباد _ سنڌ. 16 آگسٽ 2008ع



مهاڳ

سنڌ قدير تهذيبن جو گهوارو پئي رهي آهي، هن خطي ڪيترن ئي عالمن، اديبن، شاعرن ۽ شجاعن کي مسلسل پئي جنر ڏنو آهي، جيڪي پنهنجي اهليت ۽ ايثار جي جذبي تحت سنڌ وارن جي خدمت ڪرڻ ۾ فخر محسوس ڪندي، پاڻ تر رمندا رهيا، پر اسان لاءِ اهڙا ابدي اشارا ۽ دائمي درس ڇڏي ويا، جيڪي زندگيءَ جي سنوارڻ ۾ ڪارآمد ثابت ٿيندا اچن. اهڙين شخصيتن جي هڪ هڪ ادا کي ويهي قلمبند ڪجي تجي سرين صفحا درڪار ٿين.

اها پڻ حقيقت آهي تہ هر نئون نسل پنهنجن وڏڙن جي ڏسيل ڏات کي راه جو رهبر سمجهي، اڳتي وڌڻ جا جتن ڪندو آهي، اهڙي رهنمائي اسان جي نسل کي تڏهن نصيب ٿيندي، جڏهن گذري ويل نمايان شخصيتن جي زندگين کي تحريري صورت ۾ آڻي، سندن آڏو رکنداسون.

سنڌ جي سياسي تحريكن جي تاريخ ۾ جيتوڻيك اثر رسوخ وارن ماڻهن جو ته كنهن حد تائين ذكر كيو ويو آهي، پر اسان جي تاريخ ديني عالمر، سياستدانن -جن وطن جي آزاديءَ خاطر پنهنجون جانيون قربان كيون، چكيون كاهيون ۽ جيل ڀوڳي جسم جلايا. تن جي احوال كان بلكل وانجهيل نظر اچي ٿي.

سنڌ جي سرزمين اهڙا سورهيہ ۽ سرويج پيدا ڪيا، جن ڌارين جي غلامي قبول نـ ڪئي، جيئرا هئا ته مقابلو ڪيائون ۽ جي سر تي آئي ته سرُ ڏيئي سرها ٿيا.

انهيءَ ڳاله جو مون کي احساس ان وقت ٿيو، جڏهن سنڌ جي تاريخ جو مطالعو ڪرڻ شروع ڪير. اسان جو نئون نسل محض واه او اه !! ڪرڻ ۾ پورو آهي، ۽ وقت توڙي حالتن جي دز اسان جي شاندار ماضيءَ کي وڪوڙيندي وڃي. ان ڪري ارادو ڪير تہ آئون به ڪنهن هڪ دور وارن عالمن جي تحريڪي سرگرمين کي يڪجاءِ ڪريان، تہ جيئن نئين ٽهيءَ وارا انهن جي ڪارنامن کان روشناس ٿين.

سنڌ جي عالمن جي اها تاريخي روايت پئي رهي آهي تہ جڏهن به هن ڏيهه تي ڪي ڏکيا ڏينهن آيا, تہ هُنن ڌرتي ۽ ڌرتيءَ وارن کي وقت تي سڏ ۾ سڏُ ڏيندي. ڪڏهن مخدوم بلال (وفات 929هـ)، ته كڏهن شاه عنايت شهيد جهوك وارو (وفات 1130هـ)، ۽ كڏهنَ مخدوم رحمت الله پاٽائي (وفات 1138هـ)، ته كڏهن مخدوم عبدالرحمٰن كهڙائي (وفات 1145هـ) جي روپ ۾ پنهنجو تن، من ۽ ڏن پئي قربان كيو آهي.

اڄ جي ڪيترن نووارد عالمن ۽ اديبن پنهنجين قلمي ڪاوشن ذريعي اهو پئي تاثر ڏنو آهي تہ تحريڪ آزاديءَ ۾ سنڌ جي عالمن جو حصو ئي نہ هو. ان ڪري وقت جي تقاضا هئي ته هن موضوع جو مطالعو ڪري ڪنهن نتيجي تي پهچجي.

انگريزي دور هن ننڍي کنڊ پاڪ وهند لاءِ غلاميءَ جو هڪ دور هو. پهرين جنگ عظيم جي خاتمي کان پوءِ، پوري دنيا سياسي آزاديءَ جي لهر ۾ لڙهندي ويئي ۽ ان جو اثر اسان جي وطن تي به پوڻ لڳو، ڪيتريون ئي قومي تحريڪون وجود ۾ آيون، جن ۾ سنڌي عالمن نمايان ڪردار ادا ڪندي، ثابت ڪري ڏيکاريو ته اهي نه صرف مسند نشين مدرس هئا. پر وڏا محرڪ ۽ آزاديءَ جا علمبردار به هئا.

بيشك قومي محبت هك انمول جذبي جو نالو آهي، پر كو به جذبو تيستائين بي معنيٰ ئي رهندو، جيستائين ان تي عمل نه كيو وڃي، ان كري كيتري عرصي كان اهو جذبو مون كان عمل جي تقاضا كندو رهيو، ته سنڌ جي انهن وڃايل تاريخي وٿين كي ورائي هٿ كريان ۽ ان متعلق هك جامع مقالو لكان.

انهيءَ ضرورت کي نظر ۾ رکندي مون ماضي قريب جي تاريخي، سياسي، سماجي، مذهبي، تعليمي، ثقافتي ۽ ادبي حالتن جو باريڪ بينيءَ سان جائزو وٺڻ شروع ڪيو، ۽ انهيءَ جي ڇنڊڇاڻ ڪرڻ کان پوءِ منهنجي اها دلي مراد تڏهن پوري ٿي، جڏهن سنڌ جي نامور جيد عالم، مفڪر ۽ دانشور علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ جي رهبري ۽ رهنمائي نصيب ٿي. چوڻي آهي ته "لوه پارس سان لڳي سون بڻجي ويندو آهي." انهيءَ مقولي جي مصداق سائين قاسمي صاحب جن جي رهبريءَ منهنجي مطالعي کي مفيد ۽ ڪارآمد بڻايو، جنهن جي پس منظر ۾ مون سنڌ يونيورسٽيءَ مطالعي کي مفيد ۽ ڪارآمد بڻايو، جنهن جي پس منظر ۾ مون سنڌ يونيورسٽيءَ ۾ "تحريڪ آزاديءَ ۾ سنڌ جي عالمن جو حصو" جي موضوع تي ڊاڪٽريٽ ڪرڻ لاءِ

انهيءَ مقصد کي اڳيان رکي جڏهن مون پنهنجي تحقيقي ڪر جو آغاز ڪيو، تڏهن اندازو لڳائي سگهيس تہ مکڻ جي ماڙي ٺاهڻ تہ آسان آهي، پر سنڌ ۾ سنڌ جي تاريخ تي تحقيق ڪرڻ ڏکيو ڪر آهي. هن سلسلي ۾ خاص ڪري مون کي وسيلن ۽ ذريعن جي ڪميءَ کان سواءِ معلوماتي مواد جي پڻ کوٽ نظر آئي. جيتوڻيڪ آئون ماضي قريب تي کوجنا ڪري رهيو هوس، پر ان هوندي به ائين محسوس ٿيڻ لڳو تہ ڄڻ اهو دور صديون اڳ گذري چڪو آهي. هن موڙ تي پنهنجي قوم جي تاريخ سان بي رخي ۽ علمي بخل جو پڻ شديد احساس ٿيو. پر آئون تہ اهڙيءَ منزل تي پهچي چڪو هوس، جتي ماٺ ڪري ويهڻ بدران محنت جو سهارو وڻي ڏونگر ڏورڻا پيا. آئون پاڻ کي انهيءَ سلسلي ۾ خوش نصيب سمجهان ٿر، تہ ڪن علم دوست ۽ ادب پرور انسانن کي انهيءَ سلسلي ۾ خوش نصيب سمجهان ٿر، تہ ڪن علم دوست ۽ ادب پرور انسانن جون راتيون ويهي ڪٻٽن مان ڪتاب اٿلايا ۽ پنهنجي مطلب جي معلومات گڏ ڪئي.

اهڙن ادب پرورن مان آئون مڙني کان اڳ جناب غلام محمد کٽيءَ جو نالو ڳڻائڻ گهران ٿو، جنهن ميرپور بٺوري ۾ علم ۽ ادب جو مچ مچائي رکيو آهي، ۽ هو هر علمي آس رکندڙ جي مدد ڪندو رهي ٿو. مون سندس ذاتي لائبريريءَ مان ڪيترين ئي اخبارن جا فائيل ڦولهي ۽ مطالعو ڪيو.

اهڙيءَ طرح پنهنجي ڳوٺ سڪرنڊ ۾ جناب عبدالرحمٰن منگيي ۽ ڳوٺ چنجڻي ضلعي لاڙڪاڻي ۾ مولوي درمحمد "خاڪ" مرحوم جي ذاتي لائبريرين جا پڻ خزانا ملي ويا.

انهن ذاتي لائبريرين كان سواءِ مون كي ٻين كيترن ئي كتب خانن، پبلك خواه يونيورسٽين جي لائبريرين ڏسڻ جو پڻ موقعو مليو. جن مان: شاه ولي الله اكيدمي، حيدرآباد، انسٽيٽيوٽ آف سنڌالاجي، اسلاميه كاليج كراچي، انجمن ترقي اردو كراچي، اورينٽل كاليچ منصوره، ايجوكيشنل كانفرنس كراچي، آثار قديمه كراچي، پاكستان آركائيوز كراچي، پير جهنڊي، سنڌ يونيورسٽي ڄام شورو، مجلس علمي كراچي، لياقت ميموريل كراچي ۽ ڊاكٽر محمود حسين كراچي

يونيورسٽيءَ جون لائبريريون ذڪر لائق آهن.

انسان معلومات جا ڪيڏا بينڊار ۽ ڪتابن جا ڍڳ هٿ ڪري، پر جيڪڏهن هن پنهنجن بزرگن جو تجربو، دوستن جا مشورا ۽ عالمن جون هدايتون حاصل نه ڪيون، ته سندس مطالعي يا محنت جا ڪيترائي زاويا اڻپورا رهجي ويندا، جنهن لاءِ آئون پاڻ کي خوش نصيب سمجهان ٿو جو هن قحط الرجال جي دور ۽ علمي بخل جي زماني ۾ مون کي علم دوست، خير خواه عالم ۽ هڏ ڏو کي محسن ملي ويا، جن جي صحبت ۽ ساٿ مان مون گهڻو ڪجه پرايو.

انهيءَ سلسلي ۾ آثون مڙني کان اڳ پنهنجي مربي ۽ مهربان استاد علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ جو اسر شريف ڳڻائڻ گهران ٿو. جنهن هر موڙ تي مون کي پنهنجين مهربانين سان نوازيو، رهبري ڪئي ۽ منزل تي پهچايو.

جڏهن هن دور جي ناميارن عالمن ۽ محتتن جو ذکر نکتو آهي تہ مرحوم پير حسام الدين راشدي، محترم محمد ابراهيم جويي، ڊاکٽر عبدالواحد هاليپوٽي ۽ ڊاکٽر غلام علي الانا جي صحبتن کي به وساري نٿو سگهان، جيڪي مون کي هن تحقيقي ڪر دوران نصيب ٿيون.

اهڙيءَ طرح ڊاڪٽر درمحمد پٺاڻ ۽ محترم حامد علي خانائيءَ پڻ نيڪ مشورن سان نوازيو. جنهن لاءِ سندن ٿورائتو آهيان.

ان كان سواءِ جناب محمد خان سرمري بدينوي ۽ حافظ حبيب "سنڌي" چوهڙ جماليءَ واري جو پڻ شڪر گذار آهيان, جن پنهنجي ترَ جي عالمن جي معلومات فراهر ڪئي.

هن ڏس ۾ محترم عبدالحميد قريشيءَ جي قربن. برادرم نور محمد شيخ جي نوازشن. برادرم لطف علي دوداڻي. برادرم ارباب علي نوناري. برادرم بدر الدين اڄڻ. داڪٽر حافظ محمد يوسف ميمڻ، ۽ جناب وزير احمد سولنگيءَ جي حوصل افزائي کي به وساري نٿو سگهان.

آخر ۾ آئون پنهنجي عزيز ساٿي پير بخش سومري کي به وساري نٿو سگهان.

َ جنهن هن تحقيقي ڪر دوران ڪراچيءَ ۾ گڏ رهي، زندگيءَ جي معاملات کي آسان بنائڻ ۾ سٺو سهڪار ڪيو.

منهنجي هي ۽ نماڻي ڪوشش 78 مهينن جي لڳاتار محنت جو نتيجو آهي. انهيءَ عرصي دوران مون نه رڳو سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ وڃي معلومات هٿ ڪئي، پر مختلف لائبريرين ۾ گوڏا کوڙي جملي 159 ڪتاب، 59 رسالا ۽ ڪيتريون ئي اخبارون اٿلايون ۽ مطالعو ڪيو.

پڇاڙيءَ ۾ وري به آئون انهن مڙني همدردن جو احسانمند آهيان, جن منهنجي هن تحقيقي ڪر ۾ هٿ ونڊايو ۽ همٿايو.

جيئن تـ انسان عيبن جو گهر آهي ۽ هن مقالي ۾ ڪافي اوڻايون رهجي ويون هونديون، اميد ته پڙهندڙ درگذر ڪندا, ۽ منهنجي محنت جو قدر ڪرڻ فرمائيندا. پلئه پايو سچ، آڇيندي لڄ مران. (شاه)

> خادم العلر مظهر الدين سومرو

كراچي_ سنڌ. 25مئي 1983ع



عرض حال

سنڌ يونيورسٽيءَ طرفان پي ايڇ. ڊي (Ph.D) جون ڊگريون ملنديون اچن ۽ هر ٿيسز (Thesis) جي ڪاپي سنڌي قوم جي ورثي ۽ امانتدار اداري سنڌالاجيءَ ۾ به سهيڙبي وڃي. هيءُ ادارو بيشڪ قوم جي سڃاڻپ ۽ تحقيق جو مرڪز آهي. اهڙيءَ طرح ادارن جي مصلحتن سان ڪجه تحقيقي مقالا ڇپجي منظر عام تي اچن ٿا، ۽ باقي بيوسيءَ جي عالم ۾ اتي ئي مدفون آهن.

هڪ باضمير اديب جي ذميواري آهي ته نيڪ متصد خاطر اهڙن ادارن مان وڌ ۾ وڌ استفادو ڪري، ادب کي اجاري پنهنجيءَ قرم جو ڳاٽ اوچو ڪري، پر ڏک انهن ماڻهن جو آهي، جيڪي ريسرچ جي نالي ۾، تحقيقي مقالن جي چيرڦاڙ ڪري، جيئن جو تيئن (وڌ ۾ وڌ ٿوري ٿيرڦار سان يا ٻيءَ ٻوليءَ ۾ ترجمو ڪري) پنهنجي پاران ڪتابي صورت ۾ ڇپارائيندا وتن. جيتوڻيڪ ائين ڪجه منهنجي ٿيسز سان به ٿيو آهي، پر اهڙن مانائتن ۽ ساٿي محققن کي ان طرح جي سهل پسنديءَ کان پرهيز جي پارت هجي!

اهڙين حالتن کي محسوس ڪندي منهنجي دوستن مشورو ڏنو ته ٿيسز پنهنجي طور تي شايع ڪرائي وڃي. ڇاڪاڻ ته اها سن1983ع جي لکيل آهي، ۽ ان جي اصليت پنهنجي جاءِ تي برقرار رهندي.

ڇپائيءَ جي سلسلي ۾ گهڻي وقت کان اسلاميہ ڪاليج ڪراچيءَ جو منهنجو ساٿي محترم نور محمد شيخ زور ڀريندو رهيو آهي، پر آئون کن مجبورين سبب، هن ڪر ۾ هٿ وڄهي نہ سگهيس. هوڏانهن منهنجو ڳوٺائي ڊاڪٽر عبدالرسول قادري بہ اشاعت جي باري ۾ اتساهيندو آيو.

انهن ٻنهي مهربانن جي همٿائڻ کان پوءِ، اشاعت جي اصولن موجب, مون پنهنجي ٿيسز جي اصلاح شروع ڪري ڏني، ۽ ڇپائيءَ جي سلسلي ۾ وڃي محترم محمد ابراهير جويي سان صلاح ڪير. جنهن صاحب جيءَ ۾ جايون ڏيندي، مون تي نہ صرف مشورن جا مينهن وسايا، بلڪ ڪتاب متعلق پنهنجو رايو لکي وڏو احسان بہ کيو.

هاڻي جڏهن ڇپائيءَ جو مرحلو اچي ويو آهي تہ ان لاءِ ضروري سمجهان ٿو تہ ڪجه وضاحتون هن هيٺ اڳواٽ پيش ڪري ڇڏيان تہ جيئن هن ڪتاب جي مطالعي وقت اجايون غلط فهميون پيدانہ ٿين. نج سنڌي ماحول ۾ قائمر ٿيل سنڌ جي سياسي جماعتن تي ڪوشش ڪري تفصيل سان لکيو ويو آهي، ته جيئن اڳتي هلي انهيءَ بنياد تي دور جي سياسي تاريخ مرتب كرڻ ۾ آساني پيدا ٿئي.

جن پارٽين ۾ عالمن ڪثرت سان حصو ورتو آحي. تن تي ڪوشش ڪري ڀرپور

انداز ۾ روشني وڌي ويئي آهي.

گهڻو ڪري سمورين پارٽين جي اهڙي قسم جي سياسي ڪارڪردگيءَ کي اوليت ڏني ويئي آهي. جنهن جي اجاگر ڪرڻ سان عالمن جور، سياسي خدمتون نمايان طور تي ظاهر ٿين ٿيون. ان هوندي به جماعتن جي مجموعي كاركردگيءَ كي به نظر انداز نه كيو ويو آهي.

سياسي پارٽين جي شاخن کي سنڌي الف- بي جي ترتيب سان رکيو ويو آهي. -4 البت پارٽين جي سياسي ڪارڪردگيءَ کي تاريخوار بيان ڪيو ويو آهي.

جيئن ته انگريزن جي دور ۾ ملڪ جو انتظامي ڍانچو مختلف هو. ان ڪري ماڳن ۽ هنڌن جو ذڪر, ان موجب ڪيو ويو آهي. پر ورهاڱي کان پوءِ جڏهن سنڌ جي مختلف ضلعن ۽ تعلقن ۾ انتظامي تبديليون آيون. تہ عالمن جون سياسي خدمتون وري انهيءَ دور جي انتظامي جوڙجڪ مطابق بيان ڪيون ويون آهن. ۽ انهن ۾ ڪاب تبديلي نه آندي ويئي آهي. البت عالمن جي سوانح لکندي کين سن 1983ع تائين وارن تعلقن ۽ ضلعن ۾ شامل ڪيو ويو آهي.

عالمن كي بر سنڌي الف- بي جي ترتيب سان ركيو ويو آهي، پر سندن سوانح لكندي هك ئي نالي وارن عالمن مان. پهريائين ان عالمر كي آندو ويو آهي. جنهن جي وفات اڳ ۾ ٿي آهي. ان کان پوءِ جيڪو عالم تحقيق دوران تہ زنده هو. پر ڪتاب جي ڇپجڻ (2008ع) تائين فوت ٿي چڪو، تنهن جي سوانح ۽ وفات جو ذڪر حاشيي ۾ ڪيو ويو آهي.

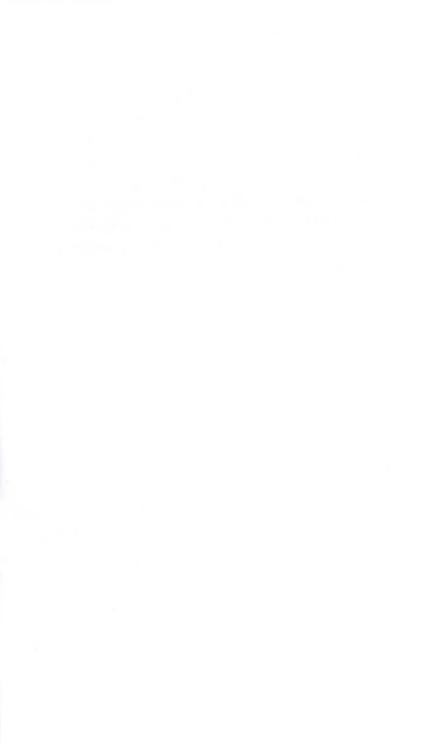
عالمن جي سوانع لكندي سندن جنع ۽ وفات جي سَن كي "تقويع تاريخي". هجري ۽ عيسوي- ٻنهي سنن کي آندو ويو آهي.

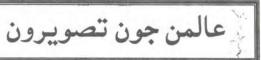
"خلافت تحريك" دوران ئي "جمعيت العلماء" جو قيام عمل ۾ آيو. خلافت جي عوامي هلچل سبب "جمعيت العلماء" جي ڪار ڪردگي نمايان نٿي ٿئي، ۽ جڏهن خلافت تحريك جو خاتمو ٿيو ته، جمعيت العلماءَ ان جي جڳه والاري. ان ڪري عالمن جي سوانح لکڻ وقت "خلافت تحريك" ۽ "جمعيت العلماء" جي اهڙي فرق کي واضح ڪيو ويو آهي.

- و- انهن سمورن عالمن جي سوانح ڏني ويئي آهي، جن جي معلومات ملي سگهي
 آهي. سوانح لکندي خاص توجه عالمن جي سياسي ڪارنامن تي ڏنو ويو آهي،
 جنهن ڪري سوانح مختصر هئڻ سان گڏ جامع به بڻائي ويئي آهي.
- -10 جن عالمن جي زندگيءَ جو احوال نه ملي سگهيو آهي، تن جي الف- بي وار نالن
 جو آخر ۾ ضميمو ڏنو رير آهي.
- 11- اهڙيءَ طرح ٻيو ضميمر الف- بي وار "خلافت تحريڪ" جي انهن شاخن تي مشتمل آهي، جيڪي سنڌ اندر قائر ٿيون هيون، ۽ طوالت جي ڊپ کان انهن کي خلافت واري باب ۾ نہ آندو ويو آهي.
- 12- كتاب جي حوالن كي هرهك باب جي آخر ۾ لكيو ويو آهي، جڏهن تہ حوالي طور آيل كتابن، رسالن ۽ اخبارن جي آخر ۾ "مددي كتاب" طور فهرست ڏني ويئي آهي. البت وضاحتي حاشيا ساڳئي صفحي تي هيٺ آندا ويا آهن.

خادر العلر داكٽر مظهر الدين سومرو سومرا گهٽي- محلو ليلا آباد سڪرنڊ ضلع نواب شاھ - سنڌ

2008 گست 2008ع









(2) مولايا سيدتاج محمود امرولي



(1) موزيا احمد بلاح



(3) مولان سر برات سی ساھ



(5) مولانا دين محمد" وفائي"



(4) مولانا در محمد تخاك



(7) مولانا عبدالله لغاري



(6) مولانا ظهور الحسن درس



(8) مولانا عبدالله كدهري



(10) مولانا عبدالخالق تحليق موراثر



(9) مولانا عبدالحق رباني



(12) مولانا عبدالغفور سيتائي



(11) مولانا سيد عبدالرحيم شاه



(13) مولانا عبدالكريم درس



(15) مولانا عبيدالله سنڌي



(14) مولانا عبدالكريم چشتى



(17) مولانا مخدوم غلام حيدر هالائي



(16) مولانا سبد حاجي على اكبر ساھ



(18) مولانا غلام مصطفي قاسمي



(20) مولايا يير حاجي ميل ساھ



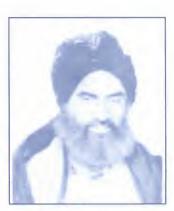
(19) مولانا حڪيم فتح محمد سيوهاني



(22) مولانا محمد مدني



(21) مولانا محمد سومرو



(23) مولانا محمد اسماعيل لغاري



(25)مولالا حصم محمد صديق مورائي



(24) مولانا محمد سليمال بكهبو



(27)مولانا حكيم محمد معاذ يبرزادو



(26) مولانا محمد عظيم "شيدا"



(28) مولانا محمد هاسم لهانگهرو

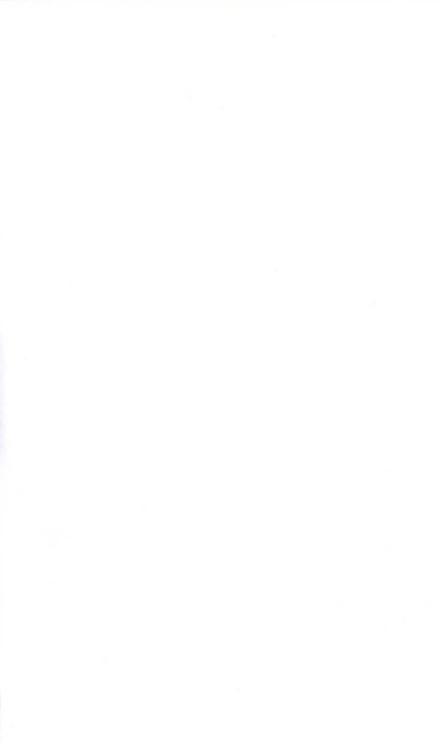


(30) مولانا هدايت الله تنيو



(29)مولانا معين الدين كنياروي

باب پهريون سنڌ ۾ انگريزن جي آمد ۽ ان جا سبب



باب پهريون

سنڌ ۾ انگريزن جي آمد ۽ ان جا سبب

سونهاري سنڌ، سڪندر اعظر جي آمد 325ق، مر کان پوءِ پندرهين صدي عيسويءَ تائين ڪنهن بہ يورپي ماڻهوءَ کي نہ ڏٺو هو. هيءَ ڌرتي سورهين صديءَ جي آخري ڏهاڪي تائين مغرب وارن لاءِ هڪ بند ٿيل ڪتاب هئي، ۽ کين ان متعلق ڪا بہ ڄاڻ نہ هئي. جيڪڏهن ڪجه ڄاڻندا به هئا تہ ان ۾ ڪيتريون ئي غلط ڳالهيون بہ شامل هيون *سنڌ ۾ يورپي قومن جي آمد جا ڪيترائي سبب ٻڌائي سگهجن ٿا. جن جو مختصر ذڪر هيٺ ڪجي ٿو:

مذهبي مفاد: ننڍي کنڊ ۾ پرڏيهي قومن جي اچڻ جو وڏي ۾ وڏو سبب, سندن مذهبي جنون هو. ڇو ته انهيءَ زماني جي يورپ ۾ اهو سمجهيو ويندو هو ته اوڀر وارن ملڪن ۾ عيسائي مذهب جا پوئلڳ ڏکيا ڏينهن گذاري رهيا آهن. انهن تي اتان جا مسلمان ظلر ۽ تشدد ڪري رهيا آهن (1). جن کي ڇڏائڻ خاطر هنن اڀرندي وارن ملڪن ڏانهن اچڻ شروع ڪيو.

"سينٽ ٿامس" (St. Thomas) پهريون حواري هو، جنهن جي تبليغ تي ٽيڪسيلا جي راجا "گونڊي فيرس" (Gonde Phares) عيسائي مذهب اختيار ڪيو(2). جيئن تہ ٽيڪسيلا به ان زماني ۾ سنڌ سان مليل هئي، تنهن ڪري هن واقعي کي به سنڌ جو واقعو قرار ڏئي سگهجي ٿو ته يورپي قومون نج مذهبي مفاد به آڏو رکي چئي سگهجي ٿو ته يورپي قومون نج مذهبي مفاد به آڏو رکي سنڌ ۾ آيون.

عيسائيت جا مبلغ انهيءَ واقعيءَ کان پوءِ به سنڌ ۾ ايندا رهيا، پر کين ڪا به ڪاميابي حاصل نه ٿي. سندن موجودگيءَ جا اهڃاڻ محمد بن قاسم جي ڪاه وقت به ملن ٿا(4), پر پورچو گيزن هٿان ٺٽي کي لٽڻ ۽ ساڙڻ واري واقعي کان پوءِ اهي منظر ٿي. سنڌ ۾ پنهنجي مذهب جي تبليغ ڪرڻ لڳا. انهيءَ سلسلي ۾ گوا کان "آگستينين" (Augustinians) پادري

آڳاٽن سياحن مان "ڊيوريٽ باربوسا" (Duarte Barbosa) پهريون سياح هو. جنهن "هرمز" ٻيٽ کان وئي گجرات تائين سمنڊ وسيلي مسافري ڪئي. هو سنڌ بابت غلط بياني ڪندي لکي ٿو:

[&]quot;سنڌ تي عربن جي حڪومت آهي، هتي جا رهاڪو سڪي مڇي گهرڙن کي کارائين ٿا. هتي جي هڪ ٻوٽي جو ڪانو ماڻهن جي ڄنگهن جهڙو ٿلهو ٿئي ٿو. سنڌو درياءُ فرات درياءَ مان نڪري ايراني نارمان ٿيندو، کنڀات جي نار ۾ ڇوڙ ڪري ٿو."

⁽Dames, M.L: "The Book of Duate Barbosa", Volume I, London, Haklut Society, 1918, P.P. 106-107)

سڀ کان پهريائين سنڌ ۾ آيا(ی). جن مان "بائيگوڊيسانٽ آنا" (Diogo de Sant Anna) پهريون آگستينين فرقي جو مبلغ هو. جنهن 1623ع ۾ سنڌ ۾ اچي لاهري بندر کي. پنهنجي حقمي ڪاررواين جو مرڪز بنايو. هن لاهري بندر ۾ هڪ ديول به تعمير ڪرائي، جنهن کي وقت جي مفل حڪران شاھ جهان ڊاهڻ جو حڪر ڏنو هو (6).

آگستينين فرقي کان سواءِ "ڪارميلائيٽس" (Karmelites) فرقي وارا به سنڌ ۾ آيا. جن جي آمد جو مرڪز گوا نه. پر بصره هر (7). هن فرقي مان "فادر ليوڊوويڪس" (F. "برادر ريڊمپٽس" (B.R. Redemptus) پهريان مبلغ هئا، جيڪي سنڌ ۾ آيا (8). "منوچي" (Manucci) جڏهن سنڌ ۾ آيو. ته هن بکر ۽ لاهري بندر ۾ ڪارملائٽس پائرين سان ملاقات ڪئي (9). انهيءَ کان پوءِ سن 1672ع تائين چئن پادرين جا نالا ملن ٿا. جن ٿئي ۾ وفات ڪئي (8). انهيءَ کان پوءِ سن 1672ع تائين چئن پادرين جا نالا ملن ٿا. جن ٿئي ۾ وفات ڪئي (8). هدي جو ذڪر ڪير آهي(10).

ان کان پوءِ سنڌ توڙي هند جي سياسي حالتن ۾ انقلابي تبديليون آيون. جن جو اثر سنڌ الندر عيسائيت جي تبليغ تي به پيو. سن 1783ع ۾ ڪلهوڙن جي حڪرمت جو خاتمو ٿيو(١١)ع تالير اقتدار ۾ آيا. سنڌ کان ٻاهر ننڍي کنڊ ۾ وري پورچو گيزن جي جاءِ. اچي انگريزن والاري. هن تئين تبديليءَ پڻ سنڌ ۾ عيسائيت جي تبليغ کي متاثر ڪيو. ڇو ته انهيءَ وقت انگريزن مذهب کان وڌيڪ پنهنجي سياسي ۽ اقتصادي مفادن جي بچاء خاطر سنڌ سان نوان لاڳاپا قائم ڪيا. اهڙيءَ طرح سنڌ ۾ عيسائيت جي تبليغي ڪر کي ڪنهن حد تائين ٻنجو اچي ويو.

اقتصادي مفاد: سن 1521ع ۾ شاه بيگ ارغون ٺٽو فتح ڪري سنڌ جو حڪمران بثيو.

اهی پادری هئا:

F.R Louis Francis.

"قالدرالوشي فرائسس" (وفات: آكٽوبر 1622ع)

F.R Patrick of St Louis.

"قادرىيىشرك آف سيئت لوئى (وفات: 1643ع)

F.R Michael of St simon.

"قالور مجل آف سينٽ سائمن" (وفات: 1657ع)

F.R Pater.

"قادرىيىتر" (وقات: 1672ع)

(F. Valens Wienk: "In the Land of the Sindhi and Baluchi", Karachi Rotti Press 1947, P-19)

كيس جلد ئي اجل جو شكار ٿيڻو پيو. نتيجي ۾ 1522ع ۾ سندس پٽ شاه حسن ارغون سنڌ ٻن جو حاكم ٿيو. سن 1554ع ۾ شاه حسن ارغون به لا ولد لاڏاڻو ڪري ويو. ان ڪري سنڌ ٻن خاندانن ۾ ورهائجي ويئي. سنڌ جو اتريون حصو، جنهن جو تخت گاه "بكر" هو، سو "محمود كوكلتاش" كنيو ۽ سنڌ جو ڏاكڻيون حصو، جنهن جو تخت گاه "نٽو" هو، سو "مرزا عيسيٰ ترخان" كي مليو. ان دور ۾ مغربي قومن جون لالچي ۽ حريص نگاهون هندوستان وانگر سنڌ كي به تكي رهيون هيون.

پورچوگيز پهرين مغربي قوم هئا، جن سڀ کان اڳ سنڌ ۾ پير پاتو. سن 1555ع ڌاري پورچوگيز پهرين مغربي قوم هئا، جن سڀ کان اڳ سنڌ ۾ پير پاتو. سن 1555ع ڌاري لاءِ پورچوگيزن کان مدد ورتي. سندس سڏ تي "پيڊروبيريٽو رولن" (Pedro Borrato Rolin) اٺاويه جهاز جنگي سامان ۽ سپاهين سان ڀري اچي ٺٽي پهتو. هن جي پهچڻ کان اڳ مرزا عيسيٰ ترخان، ۽ سلطان محمود جي وچ ۾ ٺاه ٿي چڪو هو. پورچوگيزن پنهنجي پنڌاڻيءَ ۽ جاکوڙ جي معاوضي جو مطالبو ڪيو، پر مرزا عيسيٰ ترخان انڪار ڪيو، جنهن تي ٺٽي کي لايو ويو. ان هزار بي گناه پر امن شهري ماريا ويا ۽ ايشبا جي تاريخ ۾ وڏي ۾ وڏو ڌاڙو هنيو ويو.)

پورچوگيز شروع كان ولي توڙ تائين. سنڌ ۾ واپاري ۽ بحري لٽيرا ٿي رهيا پهر كڏهن برانهن ڌرتيءَ ۾ اكيون نہ وڌيون. مگر انگريزن ائين نہ كيو، هنن نه رڳو سنڌين جو استحصال كيو. پر كين هك صديءَ تائين غلام بربنائي ركيو.

يورپي قومن واپاري ۽ تجارتي بنيادن تي دنيا جي پر امن قومن جو اقتصادي استحصال ڪيو، ۽ کين غلام بنايو، انگريزن هندوستان تي به ان ڪري ئي قبضو ڪيو هو، جڏهن هندوستان جا حاڪر ٿيا ته سالن کان ولي سنڌ جي سکي ۽ ستابي ڌرتيءَ جون ڪهاڻيون ٻڏندا ٿي رهيا، ان ڪري سنڌ تي قبضي ڪرڻ واري نيت کي عملي جامي پهراڻ لاءِ هنن، هن ديس

دنگي وچ دريا, ڪي ٻڏي ڪي اپڙي هرجي واڍي واڻيا, سي سوهڻ سڀ سڙيا معلر ماڳ نه اڳڻين فرنگي منجه ڦريا ملاح تنهنجي مڪڙيءَ اچي چور چڙهيا جتي ڍينگ ڍريا, تتي تاري تنهنجي.

(مرزا قليج بيگ: وڏو شاه جو رسالو, شڪارپور, مسٽرپوكرداس 1913ع ص 97)

[☀] اهر ئي سبب آهي جو شاھ عبداللطيف يورپي ماڻهن کي سنڌ جي پاڻيءَ تي قابض ٿيندي ڏسي چيو تـ:

سان به واپاري ۽ تجارتي لاڳاپا قائر ڪرڻ شروع ڪيا.

"ائنٿوني اسٽارڪي" (Anthony Starkey) پهريون انگريز هو، جيڪو فيبروري 1612ع ۾ ٺٽي ۾ پهتو ۽ سنڌ ۾ تجارتي گنجائش جو جائزو ورتائين. جڏهن اها خبر ٺٽي ۾ رهندڙ پورچو گيزن کي پيئي. ته انهن مان ڪنهن هن کي زهر ڏيئي ماري ڇڏيو(13). ان کان پوءِ سن 1613ع ۾ "والٽرپيٽون" (Walter Payton) ۽ "سررابرت شيرلي" Sir Rabert سنڌ ۾ آيا، جن مان پويون ٺٽي کان ٿيندو آگري پهتو(14). ساڳئي سال "نڪولس وٿنگٽن" (NicholasWithington) نالي هڪ برطانوي واپاريءَ جي سنڌ ۾ آمد جو پتو پوي ٿو، جنهن کي ٺٽي جي ڀرسان سنڌي سردارن هٿان پنهنجو سڀ ڪجه وڃائڻو پيو ۽ آخرڪار جان بچائي وڃي سورت پهتو.

سن 1615ع ۾ برطانيہ سرڪار "سرٿامس رو" (Sir Thomas Roe) کي هندستان موڪليو تہ جيئن هو وقت جي حاڪم جهانگير کان پنهنجي ديس وارن لاءِ ڪي واپاري سهوليترن حاصل ڪري سگهي. جنهن سنڌ ۾ واپار ڪرڻ جي اجازت گهري، پر ڪامياب نه ٿيو. هن "سنڌو درياه" تي هڪ خاص رپورت لکي ۽ 1616ع ۾ سورت واري انگريزي فيڪٽريءَ جي علمدارن تي سنڌ سان تجارت ڪرڻ لاءِ زور ڀريو(15)، ۽ پهريون ڀيرو سنڌ لاءِ ايسٽ انڊيا ڪيپنيءَ جو ڌيان ڇڪايو ويو. ان وقت ڌاري "ميٿولڊ" (Methold) هڪ انگريزي بحري ڪپتان جي ذريعي پورچو گيزن سان صلح ڪيو، جنهن ڪري سنڌ جي لاهري بندر ۾ انگريزن کي واپاري ڪوئي کولڻ جي خواهش پيدا ٿي، پر ان کان ٻي وڏو سبب هيءَ هر جو ان وقت لنڊن جي مارڪيٽ ۾ سوٽي ڪپڙي جي گهڻي گهرج هئي، هيڏانهن ٺٽو ۽ نصرپور ان زماني ۾ سنڌ اندر سوٽي ڪپڙي جا وڏا مرڪز هئا. انهيءَ پوئين سبب هيڪاري انگريزن جي زماني ۾ سنڌ اندر سوٽي ڪپڙي جا وڏا مرڪز هئا. انهيءَ پوئين سبب هيڪاري انگريزن جي در اي ۾ هوس پيدا ڪئي ته هو سنڌ ۾ واپاري ڪوئي تائم ڪن. آخر ۾ ستن سالن کان پوءِ سورت

^{# &}quot;نڪولس وَٿنگٽن" (NicholasWithington) سن 1613ع ۾ "ايسٽ انڊيا ڪمپني" تمام گهڻو (Company) طرفان نير جي خريداري لاءِ احمد آباد کان سنڌ ۾ آيو, انهن ڏينهن ۾ سنڌ ۾ نير تمام گهڻو ٿيندو هو ۽ ڏيساور موڪليو ويندو هو. کيس ميرپوربٺوري جي رستي ۾ ئي ڏيهين ڦريو. جنهن ڪري هو واپس ننگرپارڪر وريو ۽ هڪ واقفڪار هندو واپاريءَ کان پئسا اڌارا وٺي وڃي احمد آباد پهتو. سفر جي دوران هن جيڪي ڪجه ڏٺو وائنو تنهن کي قلمبند ڪيائين، جنهن ۾ سنڌ جي باري ۾ به ڪجه موادملي ٿو.

⁽Bal Karishna: "Commerial Relations between India and England", London, George Roultledge, 1924 P-12)

جي اختياريء وارن پنهنجن ماڻهن کي سنڌ ۾ واپار ڪرڻ جي اجازت ڏني.

اهڙي طرح "ايسٽ انڊيا ڪيپني" (East India Company) سنڌ ۾ پنهنجا اوائلي قدر رکڻ شروع ڪيا ۽ ڪمپنيءَ جو پهريون ڄهاز "دي ڊسڪوري" (The Discovery) 28 نومبر 1635ع تي اچي لاهري بندر تي لنگرانداز ٿيو.

سنڌ ۾ انگريزن جي چڱي آجيان ڪئي ويئي ۽ کين ملڪ اندر تجارتي سهوليتن ۽ مارڪيٽن جي جائزي وٺڻ جو موقعو فراهر ڪيو ويو. اهڙيءَ طرح "جان اسپلر" John() (Spiller)نالي هڪ انگريزمغل سلطنت جي اجازت سان سن 1640ع ۾ ٺٽي ۾ وارد ٿيو(16).

سن 1652ع کان سن 1662ع تائين ڪيترائي واقعا رونما ٿيا، جن هن فيڪٽريءَ کي متاثر ڪيو. سن 1652ع ۾ "ڊچن" (Duches) سنڌ ۾ انگريزن جي واپاري هڪ هٽيءَ کي ٽوڙڻ جي ڪوشش ڪئي. سن 1656ع ۾ لٽي جي سابق گورنر ظفر خان ڪمپنيءَ جون سموريون ٻيڙيون پنهنجي ذاتي تحويل ۾ وئي ڇڏيون. نئين گورنر قباد خان به ڪمپنيءَ وارن سان چڱو قدم نہ کنيو. سن 1658ع ۾ مغل سلطنت جي وارثن جي پاڻ ۾ ويڙه لڳي. ساڳئي سال سنڌ ۾ زردست ڏڪر پيو. اهي سموريون ڳالهيون ٺٽي جي فيڪٽريءَ تي اثر انداز ٿيون. سن 1660ع ۾ هُن طرف وري سورت ۾ رهندڙ ڪمپنيءَ جي ملازمن ۽ انتظاميہ ۾ اختلاف پيدا ٿي پيا. ان کان سواء ٺٽي جي فيڪٽريءَ وارو نگهبان "وليم بيل" (William Bell) وري گهوٻين ۽ غبن تي ڀاڙڻ لڳو. اهڙين حالتن سن 1662ع ۾ فيڪٽريءَ جو خاتمو آڻي ڇڏيو (17).

سن 1739 ۾ "هينري بارن فورڊ" (Henry Born Ford) هڪ انگريز واپاريءَ نير جي سلسلي ۾ بوبڪ ۽ سن تائين سفر ڪيو(18). ان کان پوءِ ڪلهرڙن جي دور ۾ ئي ميان غلام شاه ڪلهوڙي، سن 1758ع ۾ ڪمپنيءَ جي ايجنٽ "سپٽن" (Sempton) کي سنڌ ۾ فيڪٽريون کولڻ جي اجازت ڏني (19). سن 1760ع ڌاري بمبئي حڪومت جي پاران مسٽر "ارسڪن" (MR. Erskine) سنڌ ۾ ريزيڊنٽ مقرر ٿي آيو. جنهن واپار کي به زور وٺارايو ۽ پاڻ سنڌ جي سياست ۾ به عملي طرح بهرو وٺڻ لڳو. هن ڪڪرال جي ڄام سان ڳجهيون ڳالهيون ڪرڻ شروع ڪيون، جنهن ڪري سنڌ جو بادشاھ غلام شاھ ڪلهوڙو ناراض ٿي پيو. ميان صاحب جي اشاري تي سندس عامل گلاب راءِ ڪمپنيءَ جي ملازمن کي تنگ ڪرڻ شروع ڪيون).

سن 1783ع ۾ مير فتح علي خان ٽالپر هالاڻيءَ جي جنگ ۾ ڪلهوڙن کي شڪست ڏيئي سنڌ فتح ڪئي (21). هن سنڌ کي ٽن حصن ۾ ورهايو، ۽ نئين نظام حڪومت موجب "اتر سنڌ" سهراباڻي خاندان کي ملي. مير سهراب خان "خيرپور" کي پنهنجي حڪومت جي گاديءَ جو هنڌ بنائي راڄ ڪرڻ لڳو(22). "مرڪزي سنڌ" وري شهداداڻي خاندان جي حوالي ٿي،

جنهن "حيدرآباد" کي پنهنجي گاديءَ جو هنڌ بڻايو(23). اهڙيءَ طرح "ڏکڻ اوڀ سنڌ" ملڪاڻي خاندان کي ملي، جن "ميرپور" کي پنهنجي گاديءَ جو هنڌ بنايو ۽ ان تي ميرئارو خان حڪمراني ڪرڻ لڳو (24).

مٿي ذڪر ڪيل سنڌ جي ٽن حصن مان "حيدرآباد" کي سياسي، سماجي، مذهبي ۽ اقتصادي نقطي نگاه کان مرڪزي حيثيت حاصل هئي. شهداداڻي خاندان ننڍي کنڊ جي سياسي تاريخ ۾ هڪ انوکو مثال قائم ڪندي، مير فتح علي خان جي سربراهيءَ ۾ جيڪا "جڙياري" قائم ڪئي، سا اجتماعي حڪمرانيءَ جو هڪنادر نمونو هئي.

جيتوڻيك ملك جو نظر ونسق چارئي ڀائر گڏيل نموني سان هلائيندا هئا، پر عملي طرح سان انهيء چؤياريء جو وڏو مير فتح علي خان هو. ۽ ملك جا ڏيهي توڙي پر ڏيهي عهدناما، احكام ۽ لکپڙه سندس ئي نالي ۾ ٿيندي هئي.

مير فتح علي خان جي زماني، سن 1799ع ۾ "بمبئي سول سروسز" (Bombay Civil) مير فتح علي خان جي زماني، سن 1799ع ۾ "بمبئي سول سروسز" (Mr. Nathon crowe) ڪراچيءَ ۾ اچي فيڪٽري قائر ڪئي (25). پر انگريز سامراج جي توسيع پسندي حڪمت عمليءَ کي نظر ۾ رکندي. مير صاحب اها فيڪٽري هڪ سال جي قليل عرصي کان پوءِ بند ڪرائي ڇڏي(26). ان ڪري "ايسٽ انڊيا ڪمپني" (East India Company) جي نہ صرف توهين ٿي، پر کيس هڪ لک روپين جو نقصان بہ ٿيو.

هي، فيكٽري موجوده چڙيا گهر جي اتر، ۽ لياري نديءَ جي اوڀر واري حصي ۾ قائمر كئي ويئي، ۽ ناٿن كرو كي به ان عرصي ۾ ئي سنڌ ۾ موكليو ويو، جنهن پنهنجي سركار جي اشاري تي. كراچيءَ تي قبضي كرڻ متعلق، قوجي، سياسي ۽ سماجي معلومات گڏ كرڻ

اهي هئنا.

1- مير نتح علي خان 1802ع.

2-مير غلار علي خان 1811ع.

3- مير كرم علي خان 1818ع كان 1828ع.

4- مير مراد علي خان 1828ع کان 1832ع.

ان کان پوءِ جيڪا ٻي چؤياري اقتدار ۾ آئي. تنهن ۾ هي شامل هئا.

ا- مير نور محمد خان 1840ع کان 1840ع.

2-مير محمد نصير خان 1840ع كان1843ع.

⁽رحيمداد خان مولائي شيدائي. "تاريخ تمدن سند"، حيدرآباد،سنڌ يونيورسٽي 1959ع ص 581-582)

شروع ڪئي. ان کان پوءِ ناٿن ڪرو ٺٽي ڏانهن لڏي آيو. پر ميرن ساڳئي سال جي آڪٽوبر مهيني ۾ انگريز واپارين ۽ تاجرن کي سنڌ ڇڏي وڃڻ جو حڪر ڏنو (27).

ميرَ. "ناٿن ڪرو" (Nathan Crowe) کي ڪارخاني بند ڪرڻ لاءِ حڪر ڏيڻ ۾ حق بجانب هئا. ڇو ته ناٿن ڪرو جو قيام سنڌ جي مفاد ۾ نه هو. ناٿن ڪرو سنڌ جي باري ۾ هڪ رپورٽ ڏني، جنهن ۾ هو لکي ٿو ته: "سنڌي راڳ جا شوقين آهن. مسلمان عيد ملهائين ٿا. مگر منجهن روح نه آهي. سيدن جي پوڄا جام آهي، ۽ قبرن کي سينگاريو وڃي ٿو. اٺ سواريءَ لاءِ ڪر ڏين ٿا. سمنڊ جي نزديڪ لوڻائيا ٻوٽا جام آهن، جن تي اٺن جو گذران آهي. شاه بندر، اورنگ بندر جي ويجهو ڪافي زمين موجود آهي. جنهن ۾ لوڻ تمام گهڻو ٿئي ٿو، ۽ زندگيءَ جون شيون جام ملن ٿيون، سنڌ جي برساتن جي موسم ۾ فوجون لاهي سگهجن ٿيون. ڪراچيءَ جي ڏکڻ اولهه ۾ سمنڊ جي کاڌ آهي. جنهن ۾ وڏا وڏا جهاز لنگرانداز ٿي سگهن ٿا. ڪراچيءَ جي ڏکڻ اوله ۽ سمنڊ جي کاڌ آهي. جنهن ۾ وڌا وڏا جهاز لنگرانداز ٿي سگهن ٿا. نٽي کان لشڪر خشڪيءَ رستي ٻه موڪلي سگهجي ٿو ۽ حيدرآباد ان جي بلڪل سامهون نٽي کان لشڪر خشڪيءَ رستي ٻه موڪلي سگهجي ٿو ۽ حيدرآباد ان جي بلڪل سامهون آهي" وي انهن جي انهن بيانن مان ظاهر ٿئي ٿو ته انگريزن کي سنڌ جي فتح جي هرس گهڻو اڳ هڻي ۽ اهي واپاري ۽ سوداگر بنجي، پنهنجي سياسي تدبر سان اچي سنڌ جي قسمت جي مالڪ بڻيا.

انگريزن کي سنڌ فتح ڪرڻ لاءِ بہ اهي ساڳيا جواز هئا. جيڪي هن کان اڳ هندوستان کي هڙپ ڪرڻ لاءِ سندن نظر ۾ هئا، جيتوڻيڪ انگريز هندوستان ۾ محض پنهنجي واپاري طبقي جي مفاد لاءِ داخل ٿيا هئا، ۽ سندن مکيه مقصد هندوستان جو مال پنهنجي ملڪ انگلينڊ ۽ ٻين يورپي ملڪن ۾ پهچائي دولت ڪمائڻ جو هو، پر سندن ملڪ جي نون معاشي لاڙن ۽ صنعتي انقلاب هنن جي اڳين ارادن کي بنه بدلائي ڇڏيو. سندن واپاري طبقو نير سرمائيداريءَ مان ترقي ڪندو، ملڪ جي بدلجندڙ معاشي حالتن پٽاندر سامراجي طاقت بنجي ويو. جنهن کي مال جي بدران پيداوار جي ذريعن ۽ مال وڪڻڻ لاءِ بازارن ۽ مارڪيٽن جي تلاش هئي. انهن ٻنهي ضرورتن انگريزن کي بيٺڪون هٿ ڪرڻ تي آماده ڪيو ۽ اهو ئي جواز هندوستان کان پوءِ سنڌ کي فتح ڪرڻ لاءِ سندن سامهون هو.

سياسي مفاد: جيئن ته "ايست انڊيا" (East India Company) ان وقت پنهنجن مسئلن ۾ منجهيل هئي، ۽ مرهٽن خلاف برسرپيڪار هئي (29). ان ڪري کيس سنڌ حڪومت طرفان ڪراچيءَ جي فيڪٽري بند ڪرڻ واري انقلابي ۽ وطن دوستيءَ واري عمل کي ڏسي وائسي نظرانداز ڪرڻو پيو.

انهيءَ عرصي دوران مير قتح علي خان لاڏاڻو ڪري ويو. جنهن ڪري سن 1802ع ۾ مير غلام علي خان گادي نشين ٿيو. جنهن نہ رڳو ڪابل کي ڍل ڏيڻ بند ڪري ڇڏي پر بهاولپور کان سبزل کوٽ ۽ ڀنگ ڀاڙه جا پر ڳڻا به فتح کيا(30). مير موصوف جي انهن ٻنهي عملن جو فطري نتيجو اهو نڪرڻو هو ته ڪابل حکومت جي سامراجي پاليسي جي مقابلي ڪرڻ لاءِ هڪ طاقتور دوست جو ڏڍ حاصل ڪري. ان ڪري هن پنهنجي مرضيءَ ۽ منشا موجب پائمرادو "ايسٽ انڊيا ڪمپني" (East India Company) ڏي سفير اماڻي. پنهنجي ڀاءُ مرحوم مير فتح علي خان طرفان ڪراچيءَ جي فيڪٽري بند ڪرڻ واري قدم تي افسوس جو اظهار ڪيو ۽ نئين سر دوستيءَ جا ناتا قائم ڪرڻ جي آڇ ڪئي(31).

جيئن ته اها آڇ ڪمپنيءَ جي مفاد ۾ هئي، ان ڪري ايسٽ انڊيا ڪمپنيءَ جي عملدارن. ڪنهن هٻڪ کان سواءِ سنڌ دوستيءَ جي حڪمت عملي اختيار ڪئي. ڪراچيءَ ۾ ايسٽ انڊيا ڪمپني جي فيڪٽري قائر ٿيڻ کان اڳ ئي ننڍي کنڊ توڙي بين الاقوامي سطح تي انگريزن خلاف محاذ قائر ٿي چڪو هو.

هندستان انگريزن کي ڪڏهن بہ آرامر سان حکومت ڪرڻ نہ ڏني. مقامي طور تي هڪ طرف ٽيپوسلطان ڪپنيءَ جي راڄ لاءِ خطرو بنجي چڪو هو(32) تہ ٻئي طرف, روس ۽ افغانستان وري انگريزن سان اکيون اکين ۾ ملائڻ لڳا(33). سن 1792ع ۾ افغان حاڪر زمان شاه 33 هزار سپاهي وٺي لاهور تي حملو ڪيو (34). ان ڪري انگريز سرڪار سڏوسنئون خطرو محسوس ڪيو.

اوڻويهين صديءَ جي پهرئين ڏهاڪي ۾ روس ۽ فرانس جي پاليسيءَ ۾ وڏي تبديلي آئي. سن 1807ع ۾ فرانس جي هڪ سفير جو ايراني درٻار ۾ وڏي جوش ۽ جذبي سان آڌرياءِ ڪيو ويو. انهيءَ سال انگريزن کي اهو به احساس ٿيو ته سنڌ فرانس سان دوستيءَ جو دم ڀري رهي آهي(35).

نيپولين بونا پارٽ (Nepoleon Bona parte) هندوستان جي حالتن کان باخبر ٿيڻ لاءِ فرانس مان ڪيترائي جاسوس موڪليا(36). ساڳئي عرصي دوران فرانس ۽ روس اهو منصوبو رٿيو ته بخارا ۽ قنڌار جي رستي ننڍي کنڊ کي فتح ڪجي(37).

اهڙين حالتن هندستان جي ڪمپني راڄ کي سنڌ ۾ سياسي دلچسپي وٺڻ تي آماده ڪيو. ان ڪري بمبئي گورنمينٽ سن 1808ع ۾ "ڪئپٽن ڊيوڊ سيٽن" (Capt David sten) کي حيدرآباد موڪليو، جنهن جولاءِ 1808ع ۾ ميرن سان دوستيءَ جُو معاهدو ڪيو. هن معاهدي موجب انگريزن کي اوکي وقت ۾ ميرن جي فوجي مدد ڪرڻي هئي. تنهن ڪري معاهدو عمل ۾ اچڻ کان انگريزن کي اوکي وقت ۽ ميرن جي فوجي مدد ڪرڻي هئي. تنهن ڪري معاهدو عمل ۾ اچڻ کان انگريزن کي در ڪيو ويو آن کان پوءِ سن 1809ع ۾ "نڪولس هينڪي سمٿ" (N.H.Smith) جي

[#] هن معاهدي جا شرط هثا:

سرېراهيءَ هيٺ ٻيو وقد موڪليو ويو.

سمت 27 اپريل 1809ع تي "ميريا" (Maria) نالي هڪ جهاز ۾ سوار ٿي ڏاڍين تڪليفن کان پوءِ ڪراچي بندرگاه تي پهتو(38). ڪراچيءَ ۾ ميرن جي نائب، انگريز وفد جي توبن سان عزت افزائي ڪئي. ان هوندي به حيدرآباد جي ٽالپري درٻار ۾ ڪراچيءَ جي نواب کي حڪر مليو ته انگريز سفير سان وڌيڪ نرمي اختيار ڪئي وڃي. مسٽر سمت جڏهن حيدرآباد پهتو ته هن ميرن کي چوائي موڪليو ته. جڏهن هو درٻار ۾ اچي ته مير سندس اٿي استقبال ڪن، ۽ ويهڻ لاءِ کيس ڪرسي ڏني وڃي. جيتوڻيڪ هيءُ شرط ڏکيو هو، پر ميرن قبول ڪير(39). مسٽر سمت جو اهو خيال هو ته مير کانئس مرعوب ٿين، جنهن مان هن ناٿن ڪرو جي ناڪاميءَ جو بدلو وٺڻ ٿي گهريو، ۽ سنڌ ۾ انگريزن جي اها پهرين سياسي ڪوشش هئي.

سن 1811ع ۾ مير غلام علي خان جي وفات ٿي، ۽ مير ڪرم علي خان تخت تي ويٺو(40). هن جي ڏينهن ۾ هڪ طرف پنجاب جو حاڪر رنجيت سنگھ سنڌ لاءِ خطرو ثابت ٿيڻ لڳوم ته ٻئي طرف برٽش هند (British India) جي راڄ جون حدون اچي سنڌ سان

- ته پنهي رياستن جي وچ پر دوستيء جو مضبوط رشتو قائم رهندو. ۽ هڪڙي رياست جا دوست پيء رياست جا دوست. ۽ هڪڙيء رياست جا دشمن پيء رياست جا دشمن تسليم ڪيا ويندا.
- .2 جڏهن به ڪنهن ڌر کي فرجي امداد جي ضرورت محسوس ٿي ته اوس ئي اها پوري ڪئي ويندي.
- عيكڏهن هڪ حكومت جا كنهن سان لاڳاپا خراب ٿيا ته ٻي حكومت انهن سان دوستي نه
 ركندي.
- جيكڏهن سنڌ سركار جا ملازم كمپنيءَ سان واسطو ركندڙ بندرن تان اسلح خريد كندا تـ
 كمپني انهن كي اهڙيون سهوليتون ڏيندي.
 - .5 ته کمپنيء جو هڪ سفير ميرن جي دربار ۾ رهندو.
- سرناٿن ڪرو (Sir Nathan Crowe) جي وقت ۾ سنڌ اندر ڪمپنيءَ کي پهتل نقصان کي نظر
 انداز ڪيو ويندو.
 - .7 تدنيم ير هڪ ڪارخانو قائم ڪيو ويندو.

(Altchison: Treaties, "Engagements and Sanads" Calucatta, Government of India 1930, Volume 7, P.53)

* سن 1833ع ڌاري مهاراجا رنجيت سنگه وڏي فوج وٺي بنو ۽ اٽڪ کان ٿيندو اچي مٺن ڪوت جي ويجهو سلطان جي شهر ۾ پهتو. راجا رنجيت سنگه کي ائين وڌندو ڏسي سنڌ جي ميرن کي خطرو محسوس ٿيو. راجا رنجيت سنگه سن 1825ع ڌاري سنڌ تي حملو ڪيو. مگر ڏڪار جي حالتن سبب واپس موٽي ويو. سن 1827ع ڌاري هن ٻيهر سنڌ تي حملو ڪيو ۽ ميرن کان خراج طلب ڪيائين.

لڳيون(41). اهڙين حالتن ويتر سنڌ سرڪار کي هندوستان جي انگريز حاڪمن طرف راغب ڪري ڇڏيو.

سنڌ جو وطن دوست عوام انهن سياسي تبديلين کان ڪڏهن به خوش نه هو، ۽ وقت بوقت ڌارين دشمنن کي پنهنجي ڌرتيءَ تي پير کوڙڻ کان روڪيندو رهيو. انهيءَ سلسلي ۾ سن 1820ع ۾ سنڌي سپاهين هٿان، انگريز سپاهين کي مار کائڻي پئي. جنهن تي بمبئي سرڪار حيدرآباد جي حڪومت کي ڏوهي ٺهرايو، ۽ ڪيپٽن سيڊلر (Capton Sadlier) جي سرپرستيءَ ۾ ميرن سان نئين معاهدي ڪرڻ لاءِ هڪ وقد روانو ڪيو، جنهن نومبر 1820ع ۾ الجي معاهدو ڪيو، *

سن 1828ع سنڌ جي سياسي تاريخ جو هڪ اهر ۽ نازڪ سال هو. جڏهن مير مراد علي خان ٽالپر تي سَرطان جي بيماريءَ جو حملو ٿيو ته هُن پنهنجي علاج لاءِ بمبئيءَ جي گورنر کان ڪنهن قابل ڊاڪٽر جي گهر ڪئي. بمبئي سرڪار "ڊاڪٽر جيمس برنس" (PR. James) کي سنڌ ڏانهن موڪليو(42). ڊاڪٽر جيمس برنس سنڌ ۾ جيڪو وقت رهيو. تنهن ۾ سنڌ جي ملڪي حالتن ۽ انتظام جو جائزو وٺڻ سان گڏ ميرن جي خانگي ۽ شخصي زندگيءَ جو بمطالعو ڪيائين. سن 1828ع ۾ مير ڪرم علي خان وفات ڪئي. ۽ ان جي جاءِ تي مير علي مراد خان تخت تي ويٺو (43). هن ئي زماني ۾ برطاني حڪومت، لارڊ بينٽنڪ (Dord) کي هدايت ڪئي تہ جلد سنڌونديءَ جي تجارتي آمد کي پنهنجي تبضي ۾ آڻي. ان حقيقت جي روشنيءَ ۾ "هينري پاٽنجر" (Henry Pottinger) کي حيدرآباد موڪليو ويو. جنهن ڪري سن 1832ع ۾ چوٿون معاهدو عمل ۾ آيو(44). جنهن موجب انگريزن کي واپاري ۽ تجارتي ضرورت لاءِ سنڌونديءَ جي استعمال ڪرڻ جي اجازت ڏني وئي. ساڳئي تجارتي ضرورت لاءِ سنڌونديءَ جي استعمال ڪرڻ جي اجازت ڏني وئي. ساڳئي سال "اليگزينڊر برنس (Alexander Burnes) رنجيت سنگه ڏانهن سو کڙيون کئي ويو(45) ۽ سال "اليگزينڊر برنس (Alexander Burnes) رنجيت سنگه ڏانهن سو کڙيون کئي ويورن کئيورن کئي ويورن کئي ويورن کيورن کيورن کئي ويورن کئيورن کئي ويورن کئيورن کئيورن کئي ويورن کئيور

⁽Joseph Davey Cunnighan: "History of Sikhs", London, John Murray, 1849, P.173) * هن معاهدی جا شرط هشا:

^{.1} انگريزن ۽ ميرن جي دوستي قائر رهندي.

^{.2} سفيرن جي آمد ورفت جاري رهندي.

^{.3} سنڌ جامير انگريزن کان سواءِ. ٻئي ڪنهن ٻه يورپي يا آمريڪي قوم کي ملڪ ۾ رهڻ نہ ڏيندا.

سنڌ جا مير کوسن ۽ ٻين قومن کي انگريزي سرحدن اندر ڦرمار ڪرڻ کان روڪيندا.

⁽Eastwick, Captain, E.B. "Speeches of Captain Eastwick on the Scinde Question", London, Smith Elder and Company, 1862, P.74)

ان بهاني سان سنڌ اندر منظر نموني ۾ جاسوسي ڪيائين.

سن 1833ع ۾ مير مواد علي خان جي وفات کان پوءِ مير نور محمد خان گاديءَ تي ويٺو(46). هن جي ئي ڏينهن ۾ انگريزن سان پنجون معاهدو 1838ع ۾ عمل ۾ آيو [۽] جنهن موجب انگريزن کي حيدرآبادي درٻار ۾ پنهنجي ايجنٽ رهائڻ جي اجازت ملي. اها انگريزن جي هڪ وڏي چالبازي هئي. جو هڪ ڌڪ سان ٻہ شڪار ڪيائون.

حيدرآبادي درٻار ۾ "هينري پاٽنجر" (Henry Pottinger) کي پوليٽيڪل ايجنٽ مقرر ڪيو ويو. جنهن آگسٽ 1838ع ۾ پنهنجيءَ سرڪار کي ڪوڙي خبر پهچائي تہ مير ايران جي سات سان انگريزن خلاف سازشون سٽي رهيا آهن (47). انگريز سرڪار پوءِ ستت ئي. افغانستان تي چڙهائي ڪرڻ جو ڍونگ رچايو ۽ ان سلسلي ۾ پنجاب جي حاڪم رنجيت سنگه. جلاوطن افغاني امير شجاع الملڪ ۽ انگريزن جي وچ ۾ هڪ ٽه طرفو معاهدو ٿيو(48).

"لارڊ آڪلينڊ" (Lord Auckland) هڪ طرفو سن 1832ع واري معاهدي جي انهن فقرن تان هٿ کڻي ڇڏيو. جنهن موجب ڪمپني حڪومت سنڌونديءَ کي فوجي مقصدن لاءِ استعمال نه پئي ڪري سگهي(49). افغانستان تي ڪاه ڪرڻ لاءِ سنڌو جو رستو اختيار ڪيو ويو(50). جنهن تي ميرن احتجاج ڪيو، پر فوج "رڪر" تائين پهچي چڪي هئي. هڪ طرف بنگال ريجمينٽ سنڌونديءَ وسيلي حيدرآباد ڏانهن وڌندي رهي، ته پئي طرف "جان ڪين" (John جي اڳواڻيءَ هيٺ انگريزي فوج اچي ٺٽي پهتي. ان کان سواءِ شجاع الملڪ پنهنجيءَ فوج جو رخ لاڙڪاڻي طرف ڪري ڇڏيو. عين انهيءَ وقت ميرن جي مٿان سن 1839ع وارو معاهدو مڙهيو ويو. جنهن موجب ميرن کي ڪنهن به ٻاهرينءَ طاقت سان مخفي ٺاه ڪرڻ واري حت کان محروم ڪيو ويو. ميرن انگريزي فوج جي رهائش ۽ کاڌ خوراڪ لاءِ ٽي لک روپيا

٠ هن معاهدي جي شرط هشا:

^{1.} ميرن ۽ انگريزن جي پائيدار دوستيءَ سبب گورنر جنرل چاهي ٿو ته سنڌ جي ميرن ۽ انگريزن جي وچ ۾ جيڪا اثبثت ٿي آهي. تنهن کي روڪيو وڃي ته جيئن ٻنهي پاڙيسري رياستن جي دوستي قائم رهي.

^{2.} صلح ۽ جنگ جي وقت ۾ سنڌ جي حڪومت جا ناتا مضبوط رهن. ۽ اهڙيءَ طرح انگريزي سفير حيدرآباد ۾ رهندو ۽ ميرن جو وڪيل انگريزي درٻار ۾ رهندو. پر انگريزي سفير کي اجازت هوندي تہ کيس جتي وڻي اتي رهي سگهي ٿو ۽ پاڻ سان گڏ فوج به رکي سگهندو.

⁽Mirza Kalichbeg: "History of Sind", Volume II, Karachi, Commissioner's Press, 1902, P.P.224-25)

ڏيڻا ڪيا. ۽ افغانستان جي جنگ ۾ انگريزن جي مدد ڪرڻ تي راضپو ڏيکاريو(51). ميرن ۽ انگريزن جي وچ ۾ اهو آخري معاهدو ٿيو.

اهو معاهدو دوستيءَ جي نام نهاد نالي ۾ ڪيو ويو هو. جنهن تي 5 فيبروري 1839ع تي ٻنهي ڌرين صحيحون ڪيون ۽ ليڪ ٽئين ڏينهن يعني 7 فيبروري 1839ع تي ڪراچيءَ تي قبضو ڪيو ويو(52). انگريزن ڪراچيءَ تي قبضو تڪڙو مگر آسانيءَ سان ڪيو، ڇو تہ ميرن کي اها اميد نه هئي ته انگريز سندن اڱڻ تي ويهي چار چشمي ڪندي دغا ڪندا. جنهن ڪري کين مقابلي ڪرڻ جو موقعو ئي نه مليو.

حوالا

- (1) Achilles, Meers Man: "Christianity in Sind and Baluchistan", Anarticle published in the Journal of sind Historical Society Karachi, December 1938, P-83
- (2) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "جنت السند"، كراچي، سنڌي ادبي بورڊ 1958ع ص 49
- (3) ڊاڪٽر در محمد پٺاڻ: "سنڌ ۾ عيسائيت جي تبليغ ۽ سنڌي علم ادب". 14 اپريل 1980 ع تي "گوئٽي انسٽيٽيوٽ" (Goethe-Institute) ۾ پڙهيل مقالو. ٽائيپ ٿيل ڪاپي ص 4
- (4) پادري بركت الله: "قرون وسطئ كي ايشيائي اور هندوستاني كليسائين". لاهور.
 پنجاب, رليجس بوک سوسائٽي, 1962ع, ص 450.
- (5) F. Valens, Wienk: "In the land of Sindhi and Baluchi", Karachi, Rotti press, 1947, P. 19
- (6) Sorly, H.T: "Shah Abdul latif of Bhit", Oxford, University Press, 1940 P.P 72-76.
- (7) F. Valens, Wienk: "In the Land of the Sindhi and Baluchi", Karacni, Rotti press 1947 P?
- (8) Achilles, Meers Man: "Christianity in Sind and Baluchistan", An article published in the Journal of sind Historical society Karachi, December 1938, P. 86.
- (9) Ibid, P. 90
- (10) Smyth, J.W: "Gazetteer of Province of Sind", B. Volume I, Karachi, 1907,

P-111

- (11) Aitken, E.H: "Gazetteer of Province of Sindh" Bombay, Govt: press, 1907, P-117
- (12) غلام رسول مهر: "تاريخ سند" (كلهوڙا دور) جلد ڇهون. حصو ٻيو، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1964ع ص559.
- (13) Advani, A.B: "The Early British Traders in Sindh" An Article published in the Journal of Sind Historical Society, Karachi, May 1934, P-39
- (14) Ibid, P.39
- (15) Advani, A.B: "The Early British Traders in Sind", An Article published in the Journal of Sind Historical Society, Karachi, May 1934, P-39
 - (16) Kala Tharani: "British Political Mission to Sind", New Delhi, Orient Longman limited 1973 P-2
 - (17) Advani, A.B: "The Early British Traders in Sind", An Article published in the Journal of Sind Historical Society, Karachi May 1934, P.48
 - (18) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ"، حيدرآباد سنڌ يونيورسٽي 1959ع ص 487
 - (19) Kala Tharani: "British Political Mission to Sind", New Delhi, Orient Longman limited, 1973, P-3
 - (20) غلام رسول مهر: "تاريخ سنڌ" (كلهرڙا دور) جلد ڇهون، حصو ٻيو، حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ، 1964 ص 567
 - (21) عظير الدين تتري: "فتح نامه". حيدرآباد. سنڌي ادبي انجمن 1967ع ص119
 - (22) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ سنڌ". حيدرآباد. سنڌ يونيورسٽي 1959ع ص 581.
 - (23) خدادا خان: "لب تاريخ سند"، حيدر آباد. سنڌي ادبي بورد. 1959ع ص 141
 - (24) رحميداد خان مولائي شيدائي: "جنت السنة". كراچي. سنڌي ادبي بورڊ. 1958ع ص 591
 - (25) Rennell: "Memoirs of a Map of Hindoostan", London, W.Bulmer and Company, 1792 P-178.
 - (26) Henry Cousens: "The Antiquities of sind", Karachi, Oxford University

- Press, 1975, P.42.
- (27) Postans Coptain T: "Personal Observations in Sindh", London, Longman, 1843 P.290.
- (28) Napier, W.F.P: "The Conquest of Scinde", London, T & W. Boone, 1845, P.38.
- (29) Hunter W.W: "A History of British India," Valume II, London, Green and Co. 1912, P.339.
- (30) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ", حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي، 1959 ع ص 581.
- (31) Advani, A.B: "The English Missions of 1908, 1909 and 1920 to Sind", Journal of Sind Historical Society, December 1936 P.8
 - (32) Reberts P.E: "History of British India", London, Oxford University press 1952 P.198
- (33) Eastwick, E.B: "A Glance at Sind before Napier, or Dry leaves from Young Egypt", Karachi, Oxford University Press 1973 P.250.
- (34) Syad Muhammad Latif: "History of the Punjab", new Delhi Eurasia Publishing House, 1964 P-301
- (35) Eastwick E.B: "A Glance at Sind before Napier, or Dry leaves from Young Egypt", Karachi, Oxford University Press, 1973, P.P 243-44.
- (36) Dodwell H.H: "The Cambridge History of India", Volume V London, Cambridge University press 1929 P.330
- (37) Eastwick E.B: "A Glance at Sind before Napier, or Dry leaves from Young Egypt", Karachi, Oxford University press 1973 P.176
- (38) Advani, A.B: "The English Missions of 1908, 1909 and 1920 to Sind", journal of Sind Historical Society, December 1936, P-10
- (39) Ibid, P. 12.
- (40) Mirza Kalichbeg: "History of Sind", Volume II, Karachi, Commissioner's Press, 1902, P.212
- (41) رحيمداد خان مولاڻي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ". حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي. 1959 ع ص 581
- (42) James Burnes: "Narrative of a Visit to the Court of Sinde", London,

- Longman and Company 1839, P-2
- (43) Mirza Kalichbeg: "History of Sind", Volume II, Karachi, Commissioner's Press, 1902, P.P 218-219
- (44) Postans T: "Personal Observations on Sind", Karachi, Indus publications, 1973 P.P293-94
- (45) Burton R.F: "Sind and the reces that in habit the velley of the Indus", Karachi, Oxford University Press, 1973, P-28
- (46) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ". حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي، 1959 ع ص 581.
- (47) See, "Commissioner's-in-Sind's Record" file No: 302 and 610, letters dated, August 25* & 26* of 1938 from pottinger.
- (48) Nicholson A.P: "Scaraps of paper", London, Ernest Benn, 1930, P.67.
- (49) Trotter L.J: "The Earl of Auckland", Oxford, Clarendon Press, 1893, P.76.
- (50) Humter W.W: "The Indian Empire", London, Kegan Poul, 1890, P.407.
- (51) Napier W.F.P: "The Conquest of Scinde", London, T. W. Boone, 1845, P.50.
- (52) Baille A.F: "Kurrachee past present and Future", Culcutta Thacker spink and company, 1890, P.7.

- professional programme and the state of the
- A TANK OF THE PARTY OF T
- the state of the s
- 1995) Grandle All, And Tay, And Tay, Take of Take and T
- detail, formational residence of the contract of the contract
- Salam and the control of the control
 - on a programme application of the programme and the second of the second
 - Set To be, and disking private a separate descendent of Townsenski street
- eta produktiva independenta in

بابېيو

سنڌ تي انگريزن جو قبضو ۽ ان جا اثر



باب ٻيو

سنڌ تي انگريزن جو قبضو ۽ ان جا اثر

ايران ۽ فرانس جي ڊپ ۾ "ايسٽ انڊيا ڪمپني" سنڌ سان گڏ افغانستان ۾ ب پنهنجن مفادن جي بچاء خاطر غلط حڪمت عملي اختيار ڪري رهي هئي. سن 1838ع ۾ انهيءَ پاليسيءَ تي عمل ڪندي انگريزن ڪابل جي امير دوست محمد خان جي عيوض معزول امير شاه شجاع کي ڪابل جي تخت تي ٿاڦڻ جي ڪوشش ڪئي، تجيئن هو اقتدار ۾ اچي سندن مفاد جو تحفظ ڪري سگهي. ان کان پوءِ ستت ئي سن 1840ع ۾ مير نور محمد وفات ڪئي، ۽ مير نصير خان تخت تي ويٺو(1). هوڏانهن ڪابل ۾ وري پٺاڻن شاه شجاع کي ماري ڇڏيو(2). نتيجي ۾ انگريزن کي سخت مايوسي ڏسڻي پيئي. ويتر انهيءَ عرصي دوزان بروهي قلات تي قبضي ڪرڻ ۾ ڪامياب ٿي ويا(3). ان ڪري انگريز ڪابل خالي ڪرڻ تي مجبور ٿيا. اتان واپس ورندي، هنن پنهنجي بدناميءَ کي مٽائڻ لاءِ سنڌ تي قبضي ڪرڻ جو منصوبو سٽيو ۽ اهو سن 1843ع وارو ساڳيو ئي نڀاڳو سال هو، جنهن ۾ مياڻيءَ ۽ دٻيءَ جون ٻه جنگيون اهو سن 1843ع وارو ساڳيو ئي نڀاڳو سال هو، جنهن ۾ مياڻيءَ ۽ دٻيءَ جون ٻه جنگيون لاءِ سنڌ تي جيڪي اثر پيا، تن جو مختصر خاڪو هن طرح ٿئي ٿو:

سماجي اثر: انگريزن کان اڳ سنڌ ۾ "سڪار جي سهڻي ۽ دلپڏير هير لڳندي هئي، ماڻهر ميا متارا ۽ ڀريا ڀاڳيا هئا. ڪفايت ۽ قناعت، ٿوري گهڻي تي راضي رهڻ، پنهنجي پالڻهار پروردگار کان ڊڄڻ ۽ کيس ياد ڪرڻ، صبر ۽ همت، محبت ۽ مروت، اهي ۽ ٻيا اهڙا انيڪ اخلاق ماڻهن ۾ موجود هئا. انهيءَ ڪري منجهن نڪا هئي هوس، نحسد، نحرص، نه هېچ، نه باه، نه ساڙ. ٿوري کٽئي گهڻي برڪت هئي. ڪو ڪنهن جو مٺ گهرو ڪونه هوندو هو. سچ ماڻهن جو سير هو، ڪوڙ گهڻي قدر ڪافور هو. انصاف ۽ عدل سهانگو هو. ظلر ۽ بي انصافي ٿيندي هئي تہ جهٽ تدارڪ ٿي سگهندو هو. حاڪر ويچارا سادا انسان ۽ راڄ ڏڻي ويچارا حال ڀائي هوندا هئا(5).

هندن ۽ مسلمانن جو اتحاد ۽ اتفاق هو. عوامر کي مڪمل آزادي هئي. عوامر پنهنجن حاڪمن وٽ آسانيءَ سان پهچي سگهندو هو. نه ته کين اڳواٽ ملاقات لاءِ تاريخون وٺڻيون پونديون هيون ۽ نه وري اهو حڪمرانن جي دورن جو انتظار ڪندو هو. راڄ مهاڄڻ دانهين ويندا هئا ته وقت جي حڪمرانن جا مهمان ٿي رهندا هئا. هندن

توڙي مسلمانن جا فيصلا پنهنجين پنهنجين ريتن ۽ رسمن مطابق نبيريا ويندا هئا. انهيءَ دور جا هندو وڌيڪ ڌرمي ۽ مسلمان وڌيڪ ديندار هئا. عوام پنهنجي تهذيب ۽ تمدن جو عاشق ۽ محافظ هو. کيس پنهنجي ڌرتيءَ وارن ۽ انهن جي نظرين سان عقيدت ۽ انس هو.

سنڌ تي انگريزي راڄ جي آغاز سان هتان جي معاشري ۾ ٻٽي تبديلي آئي. هڪ طرف سنڌي، حاڪر قوم جي سياسي غلبي جي اثر هيٺ اچي ويا، -نهن ڪري کين ڌارين جي حڪر جو پابند ٿيڻو پيو ۽ ٻئي طرف سندن سوچ ۽ فڪر ۾ تبديلي اچڻ لڳي. هن فڪري تبديليءَ سبب سنڌين جا اخلاق ۽ عادتون حاڪمن وانگر ڦرنديون ۽ بگڙجنديون رهيون، تانجو انهن مان ڪيترا پنهنجي اصلي تهذيب ۽ رهڻي ڪهڻي کي الوداع ڪنداويا. هو پنهنجي تهذيب ۽ اخلاق کي به حڪمرانن جي ڪسوٽيءَ تي پرکڻ لڳا.

انگريز حاكمن اهڙي فكري تبديليء لاءِ ڏٺيون وائنيون كوششون به كيون، انهن هن قسم جي انقلاب آڻڻ لاءِ علم ادب جي ميدان جو انتخاب كيو، ۽ انعام واكرام ڏيئي اهڙا كتاب ترجمو كرايا، جيكي سنڌين كي ذهني غلام بنائڻ لاءِ كاني هئا.*

انگريزن " ويڙهايو ۽ حڪومت ڪريو"جي حڪمت عملي اختيار ڪري سنڌ جي متحد ۽ مربوط سماج کي ڀاڱن ۽ طبقيٰ ۾ ورهائي ڇڏيو. جيئن تہ سنڌ "غير منظم جاگيرداري نظام" جي پنجوڙ ۾ ڦاٿل هئي، جنهن کي انگريزن منظم ڪرڻ ۾ اڃا به وڏي هٿي ڏني. هتان جي مٿئين طبقي، هر مهل ۽ موقعي تي انگريزن جو ڀرپور ساٿ ڏنو ۽ ڌارين حڪمرانن لاءِ هنن جيري خاطر ٻڪري ڪهڻ کان به ڪونه ڪيٻايو، هو سرڪار طرفان قائمر ڪيل فنڊن ۾ دل کولي چندا ڏيندا هئا، انگريز حڪمرانن جي يادگارن کي تعمير ڪرڻ لاءِ ڳاٽي ڀڳا چندا گڏ ڪندا هئا ۽ انگلنڊ يا بمبئي جي وڏن حاڪمن جي آڌرياء لاءِ گهر ٻاري ڏياري ڪندا هئا. "پرنس آف ويلس" Prince of (Prince of پرنس آف ويلس" آڌرياء لاءِ گڏ ڪيا ويا. حصوير جو هڪ ٻيو رخ به ملاحظ ڪيو، ان وقت "حيدر آباد عامل ڪريڊٽ ڪوآپريٽو تصوير جو هڪ ٻيو رخ به ملاحظ ڪيو، ان وقت "حيدر آباد عامل ڪريڊٽ ڪوآپريٽو هڪ نعال ۽ نامياري سوسائٽي هئي. هن جماعت جي جملي موڙي ۽ ٻي دولت 8-10-8 معان جي عيني هڪ فعال جماعت جي سڄي ڄمار جي ميڙي چونڊيءَ کان هيروڻون مٿي هڪ شخص جي خوش آمديد تي خرچ ڪيو ٿي ويو(٤).

^{*} سنڌي ٻوليءَ جو پهريون ترجمو ٿيل ناول "راسيلاس" بـ انهيءَ سلسلي جي هڪ ڪڙي هو.

دارين جي حڪومت سنڌ جي جاگيردارن ۽ وڏيرن کي "خانصاحب" ۽ "راءِ بهادر" جا خالي لقب ڏيئي، کانئن گهڻو ڪجه کسي ورتو هو. ان کان سواءِ آمدروفت جي وسيلن جي سڌاري ۽ انگريزي تعليم جي فروغ سنڌ ۾ وچئين طبقي کي جنم ڏنو. جيئن تہ سنڌي مسلمانن يا تہ جاگيردارن ۽ نوابن جي طبقي سان ٿي واسطو رکيو يا وري غريب مگر مذهبي جنون واري طبقي سان سندن لاڳاپو هو. جڏهن ته هيٺئين طبقي کي وري ايترا وسيلا ۽ موقعا ميسر نه هئا. ان ڪري مجموعي طرح سان مسلمان انگريزي تعليم کان ڪيٻائيندا رهيا، ۽ نتيجي ۾ غير مسلم سنڌي، وچئين طبقي جي حيثيت سان ايرڻ لڳا.

جيئن تہ مٿيون طبقو اڍنگين ريتن، رسمن ۽ انگريز پرستيءَ سبب هٿين خالي ٿي چڪو هو، ۽ هن جي حصي ۾ رڳو ڪوڙي عزت ۽ وڏماڻهپي جو ڍونگ ئي وڃي بچيا هئا. ان ڪري سندن جياپي جو دارومدار وڃي وچئين طبقي تي ٿيو. اهڙيءَ طرح انگريزن جي دور ۾ اصلي اهميت وچئين طبقي کي ملي. جيڪو پڙدي پويان ويهي معاشري جي روزمره واري ڊرامي ۾ وڏن ماڻهن کي ڪاٺ جي پتلين وانگر نچائيندو هو. انگريزي دور ۾ هر تحريڪ کي وچئين طبقي جنر ڏنو، پر غريب عوامر ان لاءِ استعمال ٿيو، ۽ وڏا ماڻهو وري شطرنج جي مهرن وانگر ڪر آيا.

مٿي ذڪر ڪيل طبقن کان سواءِ سنڌ جي ڏتڙيل، مظلوم ۽ غريب عوام جو طبقو به هو. جيڪو هو ته اڪثريت ۾ پر باقي طبقن جي ڏاڍ، ڏمر ۽ استحصال جو نشانو بنبو آيو. هن طبقي ۾ سنڌ جو هاري ۽ پورهيت، مزدور ۽ ننڍو ڪاريگر، ۽ ٻين مختلف ڌنڌن وارا ماڻهو اچي ٿي ويا. هن ئي طبقي کي استعمال ڪري، رستن ۽ روڊن تي آڻي، باقي مٿين طبقن پنهنجا مطلب ۽ مقصد پورا ڪيا، هن طبقي کي تعليم جي روشنيءَ کان پري رکيو ويو، جنهن ڪري سياسي سوچ ۽ لوچ سندس ڀاڱي ۾ نه آئي، ۽ نتيجي ۾ تاريخ جي نازڪ موڙن تي پنهنجي مفادن جو بچاء ڪري نه سگهيو ۽ نه وري پاڻ مان ڪا قيادت پيدا ڪري سگهيو، ان ڪري هر تبديلي، جيڪا سندس ڪوششن سان رونما ٿي، تنهن به سندس سک ۽ سڪون جا ڏينهن نه ورايا.

اقتصادي اثر: انگريزن کان اڳ سنڌ جي معيشت ۽ معاشرو بنيادي طرح جاگيردارانه هو. البت سنڌ جو جاگيردارانه معاشي نظام ان دور ۾ ٻه قدم اڳتي وڌي آيو هو ۽ ان کان اڳ جي دور ۾ دولت جي فراوانيءَ ۽ لاپرواهيءَ ڪري واپاري طبقو وجود ۾ اچي چڱا پير کوڙي چڪو هو. سنڌ ۾ انهيءَ دور اندر جاگيرداري معيشت سان گڏ هلڪو نير صنعتي دور پڻ شروع ٿي چڪو هو. واپاري ۽ سوداگر طبقو ڪافي دولت گڏ ڪري، ملڪ جي صنعتن کي ترقي ڏياري رهيو هو ۽ صنعتي ڪاميابيءَ، ۽ عروج نـ رڳو ملڪي دولت پئي وٽن مرڪوز ڪئي، بلڪ ٻاهرين ملڪن ۽ ڀروارن صوبن منجهان دولت کي ڇڪي پئي آندو ۽ ملڪ ڏينهون ڏينهن صنعتي ۽ واپاري لحاظ کان خوشحال ٿيندو ويو(7).

عام ماڻهوءَ جي زندگيءَ جو معيار اطمينان بخش هو. هر ماڻهو پنهنجي محنت ۽ پورهئي جي حياتي نهايت خامزشي ۽ سادگيءَ سان گذاريندو هو. هن جون ضرورتون ٿوريون هيون، ۽ اهي آسانيءَ سان پوريون ٿي سگهنديون هيون. هاري جيڪو ان وقت به اڄ جيان سنڌ جي معيشت جي ڪرنگهي جي هڏي هو. "ان وٽ کاڌو به ڪافي هو. پاڻ ڪجه بچت به هوندي هيس، پنهنجن هٿن جي پورهئي سان جوڙيل مٽيءَ جو اجهو هوندو هوس، جنهن ۾ مختصر سنهون ٿلهو گهرو سامان به هوندو هو. هن وٽ خاص خاص ڏڻن جهڙوڪ ڄر، شادي مرادي يا عيد براد مله نُڻ لاءِ ڪجهه چوپايو مال ۽ ٿورو پئسو ڏوڪڙ به بچيل هوندو هو، زالن جي فرصت جو وقت سٽ ڪتڻ، کير ولوڙي مکڻ ڪيڻ ۽ گهه ٺاهڻ ۾ گذرندو هو. ((8).

اها ته هئي عام ماڻهوءَ جي حالت'، پر سنڌ جو وچون توڙي مٿيون طبقو نهايت سک ۽ سکون جي زندگي گذاريندو هو. انهيءَ انفرادي خوشحاليءَ کان سواءِ اجتماعي طور تي به پورو ملڪ سرسبز، آباد ۽ صنعت توڙي حرفت جو مرکز هو.

سنڌ جي زرعي آسودگيءَ جا ڳڻ، انهن قديم وقتن کان وٺي ڳايا ويا آهن، جن جو رڪارڊ موجود آهي، سڪندراعظم کان وٺي ويندي انگريزن جي آمد تائين ان سلسلي ۾ ڪيتريون ئي شاهديون ڏيئي سگهجن ٿيون. سڪندراعظم جي زماني واريءَ سنڌ جي قدرتي دولت ۽ فن جي ساراه ڪئي ويئي آهي. عربن جي زماني ۾ المسعودي انهيءَ حقيقت کي تسليم ڪندي لکي ٿو ت: "سڄو ملڪ چڱيءَ طرح آباديءَ هيٺ آيل آهي، ۽ وڻن ۽ کيتين سان جهنجهيو پيو آهي" (9). ابن حوقل جو چوڻ آهي ته: "ملڪ ۾ اناج جا انبار لڳا پيا هئا، ۽ قيمتون تمام گهٽ هونديون هيون" (10). انگريزن کان ڪجه وقت اڳ جيڪي سياح ۽ سيلاني آيا، تن به سنڌ جي زرخيزي ۽ خوشحاليءَ جو ذڪر ڪيو آهي"

^{*} اهي هئا:

ا پورچوگيز سيلاني مانرچ (Mannuchi) جيڪو لکي ٿو تد: "کاڌي پيتي جون شيون جتي ڪٿي جام آهن. بازارون شين سان ڏٽيون پيون آهن. سڄو ملڪ ڳوٺن سان آباد آهي. زمبن زرخيز ۽ چڱيءَ طرح پوکيل آهي."

اهڙيءَ طرح سنڌ جي هڪ انگريزي ڪوئيءَ جي منتظر سن 1775ع ۾ سنڌ جي اقتصادي حالتن تي روشني وجهندي لکيو آهي ته "سنڌ جيتوڻيڪ هڪ ننڍو ملڪ آهي، پر قدرتي طرح زرخيز ملڪ آهي، هي؛ ملڪ نهايت آسودو ۽ آباد ملڪ آهي(11).

صنعتي ۽ واپاري نقطي نگاه کان سنڌ، صدين کان وٺي مرڪزي حيثيت رکندڙ هئي. تاريخي دور کان به اڳ مغرب توڙي مشرق جي ملڪن سان سندس واپاري ناتا پئي رهندا آيا. عربن جي زماني ۾ پڻ هيءُ ملڪ باقي مسلمان ملڪن سان واپاري ناتا قائم رکندو آيو، ۽ سنڌ ۽ خراسان جي وچ ۾ ڪابل ۽ باميان جي رستي، ۽ سنڌ ۽ زابستان ۽ سيستان جي وچ ۾ غزني ۽ قنڌار جي رستي مال سان ڀريل قافلن جا قافلا پيا ايندا ويندا هئا (12). سنڌ نه رڳو خشڪي بلڪ بحريءَ رستي به ڏورانهن ملڪن سان واپار ۽ تجارت، عند جو واپار ۽ تجارت، صنعت ۽ ڪاريگري بلند پايي تي پهتل هئي (13). ارغونن، ترخانن ۽ مغلن جي زماني ۾ سنڌ جي آزاديءَ سان گڏو گڏ هن ملڪ جي واپار ۽ صنعت کي به متاثر ٿيڻو پيو، ۽ عيترا دفعا ملڪ ۾ ڏڪر جهڙيون حالتون پيدا ٿيون*. انهيءَ زماني ۾ پورچو گيزن جي

(Elliot: "History of India as told by its own Historians", London, Trubner & Company, 1871, Volume | P.237

 کیپٽن هثملٽن (Camtain Hamilton) جیڪو لکي ٿو تہ: "کٹڪ ۽ چانور، 'گهوڙا ۽ ٻيو چوپايو مال سنڌ ۾ تمام گهڻو هو، ۽ مکن ڪافي انداز ۾ ٻاهر موڪليو ويندو هو."

(Hamilton Alexander: "A New Account of East Indies", London, the Argonaut Press 1930 Volume Viii P.89)

* حڪمرانن جي بي ترجهي ۽ هاري طبقي جي بي وسيءَ ان دور ۾ ڪيترائي ڀيرا ڏڪار کي دعوتون ڏنيون. سن 1659ع ۾ شاه جهان ۽ سندس پٽن جي رچ ۾ ويڙه لڳي، جنهن جي نتيجي ۾ سنڌ ترڙي هند جون حالتون خراب ٿي ويون ۽ هتي ڀيانڪ ڏڪار منهن ڪڍيو. جيترڻيڪ هن کان اڳ برسنڌ ۾ ٻهڀيرا ڏڪار اچي چڪو هو. پر جيڪو سخت ڏڪار سن1662ع ۾ پيو. تنهن دوران بکر ۾ مکڻ جو هڪ آئونس رپئي ۾ ٿي مليو، ڪڪڙ جي چوزي جي قيمت 136 رپيا ٿي ويئي،

(مظهر الدين سومرو: شاه عنايت جي دور جون اقتصادي حالتون. (مقالو) روزاند هلال پاكستان. كراچي، مؤرخ 8 دسمبر 1975ع ص8)

آمد ٿي. جنهن کان پوءِ انگريزن جي اچڻ تائين مختلف وقتن ۾ مختلف يورپي قومن. هتي پنهنجيون تجارتي ڪوٺيون کوليون، جن جو تفصيل هن ئي ڀاڱي جي پهرئين باب ۾ ڏنو ويو آهي.

هن دور ۾ ٺٽو، نصرپور، سيوهڻ، بکر، روهڙي، سکر، شڪارپور، حيدرآباد، خيرپور، گمبٽ، لاڙڪاڻو، ميرپور ۽ راڻي پور، صنعت،واپار ۽ تجارت جا مرڪز هئا، جن ۾ سوٽي ڪپڙي، ريشم، اوني ڪپڙي، نير، شوري، چمڙي جي سامان، جنڊيءَ جي ڪمن، ڪاشيءَ جي ٿانون، عاج جي ڪر، ۽ هٿيارن ٺاهڻ جون صنعتون قائم هيون. ارڙهين صديءَ جي وچ واري دور تائين سنڌ ۾ اٽڪل هڪ درجن صنعتون اوج تي رسيل هيون، انهن صنعتن وارو دور، هنرمندي ۽ وسعت وارو دور هو. ساڳئي وقت سنڌ جو تيار ٿيل مال دنيا جي مکيد مارڪيٽن ۾ پهچندو هو، جتي ان جي تمام گهڻي طلب هوندي هئي (16).

انگريزن جي سنڌ جي فتح باقي اڳين فاتحن جي فتحن کان مختلف هئي. هن درتيءَ تي عرب به آيا ته ارغون ۽ افغان به ساڳئي نموني سان مغلن به هن ملڪ جو استحصال ڪيو ته يونانين ۽ مقدونين به. پر انهن سمورن حڪمرانن جي آمد سنڌ جي سماجي، اقتصادي حالتن ۽ تهذيب و تمدن کي ايتري قدر متاثر نه ڪيو، ان جي مقابلي ۾ انگريزي راڄ سنڌ جي سماج ۽ معاش ۾ وڏيون تبديليون آنديون، سنڌي سماج جا بنيادي ادارا تباه ۽ برباد ٿي ويا، اصول ۽ طور طريقا بدلجي ويا، ۽ ان جي جاءِ هڪ نئين اقتصادي ڍانچي والاري.

انگريز حڪمرانن سرڪاري سطح تي سنڌ جي صنعت کي وڌائڻ لاءِ ڪا بہ جو ڳي ڪوشش نہ ڪئي، پر هڪ هيڏي ساري ملڪ تي قابض هئڻ ڪري پنهنجي انتظام جي گرفت مضبوط رکڻ لاءِ معاشري جي فردن مان ڪامورا ۽ ڪلارڪ پيدا ڪرڻ شروع ڪيا (15). تعليمي نظام ۾ يڪسر زرعي، صنعتي ۽ هنري سکيا ڏانهن ڪو بہ توجهه نہ ڏنو ويو. جنهن جي نتيجي ۾ تعليمي ادارا ۽ اسڪول، نڪما ۽ بيڪار ماڻهو پيدا ڪرڻ لڳا ۽ اهڙيءَ طرح انگريز سرڪار جي تعليمي پاليسي به سنڌ جي اقتصادي بدحاليءَ جو وڏو باعث بڻي.

سنڌ ۾ سرمائيدار طبقي جي جنر وٺڻ کان پرءِ، هن ملڪ ۾ غير سرڪاري سطح تي جديد صنعتڪاريءَ جي دور جي ابتدا ٿي. هن نئين تبديليءَ سنڌ کي ڳوٺن ۽ شهرن ۾ ورهائي ڇڏيو. اهي ڳوٺ جيڪي اڳ، دستڪاريُ، گهرو هنر ۽ صنعت جا مرڪز هئا، سي شهرن ۾ صنعتي ترقي ٿيڻ ڪري ويران ۽ برباد ٿيڻ لڳا. ماڻهو روزگار ۽ پيٽ

پالڻ جي مسئلي کي حل ڪرڻ لاءِ شهرن ڏانهن ڪوچ ڪرڻ لڳا. جنهن جي نتيجي ۾ ڪيترائي سماجي مسئلا پيدا ٿيا.

انگريزي حكومت جي غلط اقتصادي حكمت عمليء سبب روزمره لاءِ كر ايندڙ شين جا اگه چوٽ چڙهڻ لڳا. ۽ عام ماڻهن جي قوت خريد گهٽجڻ لڳي. هن عرصي دوران لڳل ٻن مهاڀاري لڙاين سبب شين جي ويتر كوٽ پيدا ٿي پيئي، ۽ انهن جون قيمتون آسمان سان ڳالهيون كرڻ لڳيون. اهڙين حالتن ۾ عام ماڻهوءَ جي زندگي وبال بڻجي ويئي.

انگريزن سنڌ تي قبضي ڪرڻ کان پوءِ پنهنجن وفادار ماڻهن کي جاگيرون ڏيئي، سنڌ جي زرعي ترقيءَ کي ٻنجو ڏيئي ڇڏيو. چوويهين مئي 1843ع وارو ڏينهن سنڌ جي تاريخ جو هڪ ظلم جو ڏهاڙو ڪري مڃيو ويندو. هن ڏينهن تي برطانيہ جي ملڪ جي سالگره هئي. جنهن جي خوشيءَ ۾ سرچارلس نيپئير حيدرآباد ۾ درٻار ڪئي ۽ سنڌ ي جاگيردارن، وڏيون ۽ پيرن کي سياسي بيعت ڪرڻ جي آڇ ڏني. انهيءَ موقعي تي سرڪار طرفان اهو به اعلان ڪيو ويو ته "فقط انهن جاگيردارن کي زمين جي قبضي

| | | رح هثا: | ن جا اگھہ هن ط | ^{الر} ميرن جي زماني ۾ مکيہ شيہ |
|-------------------|-------------|-----------|----------------|---|
| في من | روپيا | | پايون | جنس |
| = | 1 | 7 | • | 555 |
| 22 | ٠ | 11 | | چَچَ |
| = | 1 | | | جوار |
| = | | 13 | | باجهري |
| = | 1 | 6 | | مگ |
| = | | 15 | • | پئا |
| = | 1 | 7 | | چانور سگداسي |
| لوحيد" پريس ص140) | '، ڪراچي "ا | ي صاحبي ' | اڻي, "ميرن جي | (حكيم فتح محمد سيوه |
| | | | | سن 1857ع ۾ ڪن شين جا اڳ |
| = | 4 | | | چانور سگداسي |
| = | 3 | 14 | • | 5:5 |
| 2 | 2 | 8 | | باجهري |
| = | 1 | 6 | • | يثا |
| ني 1958ع ص 101) | نڌ يونيورسا | درآباد، س | دگیریون", حی | (مرزا قليج بيگ، "يا |

رکڻ جي اجازت ڏني ويندي. جيڪي درٻار ۾ شامل ٿيندا, باقي ٻين جون جاگيرون ضبط کيون وينديون."

هن درٻار ۾ سنڌ جا ڪيترائي جاگيردار، پير ۽ وڏيرا شامل ٿيا، جن مان ڪراچيءَ جو سيٺ نائونمل، جو کين جو سردار ڄام مهر علي، ڪرمتين جو چڱو مڙس ملڪ ابراهيم خان، نومڙين جو سردار ملڪ احمد خان، رندن جو سردار بهاول خان. گبولن جو سردار بلندوخان، ڪاڇي جو سردار حاجي خان لغاري. جمالين جو سردار بخشو خان، جهانگارن جو سيد قائم شاھ ۽ چانڊڪي جي سردار شرڪت ڪئي (16).

سنڌ جي زرعي زمين جو ڳچ حصو آڱرين تي ڳڻڻ جيترن ماڻهن کي ملي ويو، جيڪي نہ تہ ان جي سنڀال ڪري ٿي سگهيا، ۽ نہ وري پنهنجي محدود وسيان آهر ان کي پوک هيٺ آڻي ٿي سگهيا. اڪثريت ذريعہ معاش جي سلسلي ۾ انهن جي محتاج بڻجي ويئي. هن نئين تبديليءَ سبب هاري ۽ زميندار جي لاڳاپن ۾ به قيرو اچي ويو ۽ هاري پنهنجي زميندار جي اڳيان بي وس، مجبور ۽ مفلس بنجي بيهي رهيو. انهن حالتن به سنڌ ۾ ڪيترائي سماجي ۽ اقتصادي مسئلا پيدا ڪيا.

جهڙي نموني سان هاري پنهنجي زميندار جي رحم ۽ ڪرم تي تڳڻ لڳو، تيئن وري زميندار ۽ جاگيردار، لاپي ۽ رسائيءَ جي ٻن پڙن ۾ پيسجڻ لڳو، وقت جا حڪمران عوام سان رابطي ڳنڍڻ واري نالي ۾ جيڪي قهر ۽ ڪيس ڪندا هئا. تن اسان جي اقتصادي حالتن تي نهايت برو اثر وڏو.

سنڌ ۾ انگريزن جي معاشي حڪمت عملي اها ئي رهي جيڪا, سموري هندوستان لاءِ هئي. مقامي صنعتن کي ختم ڪري پنهنجين صنعتن لاءِ ميدان ۽ مارڪيٽ پيدا ڪرڻ، ۽ پنهنجين صنعتن لاءِ ڪچو مال ۽ پيداوار جا ٻيا ذريعي مهيا ڪرڻ سندن تجارتي حڪمت عمليءَ جا به مقصد هئا.

انگريز حڪمرانن سنڌ جي ڪچي مال ۽ پيداوار جي ٻين ذريعن کي ميڙي سيڙي پنهنجي ملڪ ڏانهن موڪلڻ لاءِ ڪيترائي اپاء ورتا. هنن ڪراچيءَ ۾ پاڻيءَ واري بندر

انهيءَ ظلر کان سنڌين کي نجات ڏيارڻ لاءِ رئيس غلام محمد خان ڀرڳڙيءَ بعبئي ڪائونسل ۾ ٺهراءُ آندو. جنهن جي نتيجي ۾ جسٽس هيورڊ جي سربراهيءَ ۾ رسائي ڪميشن قائم ٿي. جنهن سن 1918ع ۾ سنڌ ۾ اچي رسائي ۽ لاپي خلاف تفصيلي جاچ پڙتال ڪئي. (جي ايم سيد: "جنب گذاريم جن سين". (جلد پهريون) حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ (1967ع ص149)

جي اڏاوت شروع ڪئي. اندرينءَ سنڌ کي بندر سان ملائڻ لاءِ رستن ۽ ريلوي لائنن جي ڄار پکيڙڻ جي ابتدا ڪئي، ۽ سنڌ جي زرعي پيداوار وڌائڻ خاطر سکر بئراج جهڙي وڏي منصوبي کي هٿ ۾ کنيو. ساڳئي نموني سان پنهنجي ملڪ مان تيار ٿيل مال ۽ شين جي هڪ اڻ کٽ سلسلي جي ابتدا ڪئي ۽ ڏسندي ئي ڏسندي سڄو ملڪ پرڏيهي مال ۽ سامان جي منڊي بڻجي ويو. نتيجي ۾ سنڌ جي گهريلو دستڪاري، هنرن ۽ صنعت کي وڏو ڇهيو رسيو، ۽ ماڻهن ٻاهريون مال واپرائڻ شروع ڪيو. ان ڪري هڪ طرف سندن تهذيب ۽ تمدن متاثر ٿيو تہ ٻئي طرف سندن ڪمائيءَ جو ڳچ حصو ٻاهرين ملڪن جي پلئه پوڻ سبب اقتصادي طور تي به هو غلاميءَ جي زنجيرن ۾ جڪڙجي ويا (17).

سنڌ جي هنن ڏکوئيندڙ اقتصادي حالتن. نہ رڳو عام ماڻهوءَ جي زندگي زهر ڪري ڇڏي، پر امير طبقي کان بہ سک ۽ سڪون کسي ورتو.

سنڌ جو مٿيون طبقو پنهنجي ڪوڙي شان ۽ شوڪت جي ڀرم رکڻ سان گڏ نئين تهذيب کي اختيار ڪرڻ ۾ ايترو تہ محو ۽ مگن ٿي ويو، جو ڪنهن وقت کان پوءِ سندس سکڻا هٿسرمائيدار طرف وڌڻ لڳا ۽ اهڙيءَ طرح هن سماج ۾ طبقاتي ڇڪتاڻ جنر ورتو.

سڀ کان وڏيڪ توجه اها ڳاله ٿي گهري تہ انگريزي راڄ سنڌ جي خيرخواهي ۽ خدمت ڪرڻ لاءِ تائر نہ ڪيو ويو هو، پر ان جو اصلي مقصد ئي ملڪ جو اقتصادي استحصال ڪرڻ هو. ان ڪري حڪومت پنهنجي اقتدار ۽ اختيار جو غلط استعمال ڪيو. ايتري قدر جو ڍلن اوڳاڙڻ ۽ انتظام رکڻ وارن عملدارن کي عدل ۽ انصاف جا به اختيار ڏنا ويا تہ جيئن اهي عوام کي پنهنجي مرضيءَ مطابق سزا ڏيئي يا گهيسائي سگهن (18). ۽ سندن گرفت کان عام ماڻهو به بچي نہ سگهي. اهڙين حالتن ۾ عوام نہ رڳو مجبور ٿي پيو، پر روز بروز مفلس به ٿيندو ويو.

تعليمي اثر: سنڌ جا کنڊر ۽ پراڻيون وستيون هن حقيقت جي تصديق ڪن ٿيون ته هيءُ ملڪ دنيا جي قديم ترين تهذيب يافته ملڪن مان هڪ هو. جنهن جو معاشرو پنهنجي مڙني روپن ۾ مڪمل ۽ جامع هو، جن ۾ تعليم ۽ تعليمي نظام بہ اچي وڃي ٿو *.

[&]quot; موهين جي دڙي مان نڪتل شين مان هڪ لکڻ جي سليٽ به ملي آهي. البت اها سليٽ اڄ ڪالهه جي سليٽن جهڙي يعني پٿر جي نه آهي. مگر اها سليٽ ٽڪر جي آهي، جنهن تي اکر لکي وري ڊامي سگهجن ٿا. (دوارڪا پرساد روچي رامر شرما: "پراچين سنڌو سڀيتا جو نظارو". حيدرآباد, تاج محل اليڪٽرڪ پرنٽنگ ورڪس سال ؟؟ ص 67)

اهو تعليمي نظام اسلام کان اڳ مختلف مگر منظم روپن ۾ موجود هو. سنڌي ٻولي عام استعمال جي ٻولي هئي ۽ ان جا مختلف رسم الخط رائج هئا، پر سنڌ تي عربن جي حڪومت جي آغاز کان پوءِ تعليمي ميدان ۾ وڏيون تبديليون رونما ٿيون(19). شروعاتي ٽن صدين اندر ڪيترائي عالم ۽ اديب، مفڪر ۽ مدبر پيدا ٿيا، جن ديس توڙي پرديس ۾ پنهنجو نالو روشن ڪيو.

هن ئي زماني ۾ منصوره، ديبل، الور، بكر ۽ سيوهڻ ۾ مدرسا قائمر ٿيا (20). منصوره جي علمي ۽ ادبي حيثيت دمشق ۽ بغداد جهڙي هوندي هئي، ۽ سيوهڻ جو مدرسو اسلامي دنيا ۾ "فتهاءُ الاسلام" جي نالي سان مشهور هو، جتي ٻاهرين ملڪن جا شاگرد به اچي تعليم وٺندا هئا.

سومرن جي دور ۾ مٿي ذڪر ڪيل تعليمي مرڪزن کان سواءِ "اگهر کوٽ" ۾ هڪ مدرسو قائم ٿيو، جتي، پنج سؤ شاگرد قرآن شريف جي تعليم وٺندا هئا، ۽ سندن رهائش، خوراڪ ۽ پوشاڪ جو خرچ سومرا امير ڀريندا هئا (21). سمن جي ڏينهن ۾ سيوهڻ، بکر، ٺٽو، درٻيلو، ٽلٽي، ڳاهو، ٻٻرلوءِ، هالڪنڊي، نصرپور، اگهاماڻي ۽ ٻين شهرن ۾ مدرسا قائم هئا، جن ۾ شاگردن کي تعليم کان سواءِ کاڌو ۽ ڪپڙو مفت ملندو هو (22). ارغونن ۽ ترخانن جي زماني ۾ جيتوڻيڪ سنڌ، سنڌين ۽ سنڌي ٻوليءَ تي ڏکيا ڏينهن آيا، پر ان هوندي به سنڌ جا تعليم دان علم جي نور کي پکيڙيندا آيا. سنڌ ۾ لنواري شريف، راڄوخاناڻي، ميرانپور، ڪڙيو گهنور، ڪوٽ عالم، بجاري شريف مشهور ڳوٺ هئا، جتي علم ميرانپور، ڪڙيو گهنور، ڪوٽ عالم، بجاري شريف مشهور ڳوٺ هئا، جتي علم ۽ ادب جو چرچو هلندڙ هو.

ڪلهوڙن جي دور. سنڌ جي تعليمي تاريخ کي نئون موڙ ڏنو. هن دور ۾ سنڌي ٻوليءَ ۾ تعليم ڏيڻ جي اصول کي رائج ڪيو ويو ۽ مخدوم ابوالحسن سنڌيءَ، سنڌي صور تخطي ٺاهي(23). جنهن جي آڌار تي مخدوم ضياء الدين. مخدوم محمد هاشر ٺٽري. مخدوم عبدالله، مولوي عبدالخالق ۽ مولوي محمد حسن جهڙن مشهور عالمن

^{*} انهيء دور ۾ عبدالملڪ محمد پنهنجي زماني جي زبردست عالمن مان هڪ ٿي گذريو آهي. امام اوزاعي السنڌي حديثن جي چئن امامن مان هڪ هو، ابونصر بن فتح بن عبدالله سنڌي "فقيه متکلم" جي لقب سان شهرت حاصل ڪئي. (گدواڻي منر تولارام: "سنڌي ٻوليءَ جي لپيء جو اتهاس", جئه پور, نامديو پبليڪيشن 1968ع ص 37)

كتاب لكيا ۽ سنڌيءَ ۾ تعليم ڏني. ان كان پوءِ جڏهن ٽالپر اقتدار ۾ آيا. ته انهن سنڌ جي تعليمي درسگاهن جي سرپرستي كئي. هن دور ۾ تعليم ايتري ته ترقي كئي جو وقت جا عالم قرآن شريف جو سنڌيءَ ۾ ترجمو كرڻ جي قابل ٿيا. "*

سنڌ کان سواءِ باقي ننڍي کنڊ ۾ ميڪالي جي تعليمي پاليسيءَ تي عمل ٿي رهيو هو، جنهن کي هتي به رائج ڪيو ويو. کانئن اڳ سنڌ ۾ ڏيهي قسم جو تعليمي نظام رائج هو، جنهن کي سندن پاليسيءَ درهم برهم ڪري ڇڏيو. انگريزن کان اڳ وقت جا حڪمران تعليمي ادارن جي مالي، ۽ اخلاقي مدد ڪندا هئا، ۽ سنڌ جي ڪيترن ئي سيدن ۽ آخوندن کي انهيءَ ڏس ۾ جاگيرون به ڏنيون ويون هيون. انگريزن سنڌ ۾ اچڻ شرط کين ملندڙ مالي امداد بند ڪري ڇڏي، ۽ جاگيرون ضبط ڪري ڇڏيون(24).

ڌارين جيتوڻيڪ فارسي ٻوليءَ کي ملڪ نيڪالي ڏيئي سنڌيءَ کي سرڪاري زبان بڻايو هو، پر ان هوندي به انگريزي زبان جي مڪمل سرپرستي ڪئي وئي. ان سلسلي ۾ سن 1846ع ۾ ڪراچيءَ جي ڪليڪٽر "ڪيپٽن پريڊي" (Karachi Free School) کوليو (25).

اهڙين حالتن ۾ مسلمانن فرنگين جي ٻولي پڙهڻ، پنهنجي مذهبي ۽ قومي غيرت جي خلاف ڄاتو. ان ڪري هو پنهنجي قوم جي ٻين فرقن جي ڀيٽ ۾ انگريزي تعليم کان نفرت ڪرڻ لڳا. جيئن تہ هن نئين تبديليءَ سبب تعليمي نظام سرڪار جي هٿ هيٺ اچي چڪو هو، ۽ انگريز حڪمرانن ڏيهي مڪتبن کولڻ تي پابندي وجهي ڇڏي هئي، يا وري کلندڙ مڪتبن تي پنهنجن مفادن مطابق ڪي شرط عائد ڪري

ان دور جي تعليمي ترقيءَ لاء "اليگزينڊر هئملٽن" (Alexander Hamilton) ٽئي بابت لکي
 ٿو ته:

[&]quot;لٽو شهر دينيات. لسانيت ۽ عملي سياست جي تعليم ۽ تدريس جي سلسلي ۾ خاص شهرت رکي ٿو. هتي چار سو ڪاليج آهن. جن ۾ شاگردن کي انهن علمن جي تعليم ڏني رڃي ٿي".

⁽Alexander Hamilton: "A new Account of the East Indies", London, The Argonaut Press, 1930, Volume I, P.78.)

^{*} آخوند عزيز الله سنڌي ٻوليء جر پهريون نثر نويس هو، جنهن هن دور ۾ قرآن شريف تحت اللفظ ترجمو ڪيو. (خانصاحب محمد صديق ميمڻ، "سنڌ جي ادبي تاريخ"، (برٽش حڪومت کان اڳ) حيدرآباد, مسلم ادبي (اليڪٽرانڪ) پرنٽنگ پريس. 1944ع ص203.

ڇڏيا. ان ڪري سنڌ جا مسلمان پنهنجا مڪتب ۽ مدرسا به قائم ڪري نٿي سگهيا. اهڙيءَ طرح سنڌ جي مسلمان آبادي. تعليم جي ميدان ۾ پوئتي ٿيندي ويئي. ۽ پورو سماج پڙهيلن ۽ اڻ پڙهيلن جي ٻن طبقن ۾ ورهائجي ويو.

وقت جي حڪمرانن سنڌ ۾ تعليمي ترقيءَ طرف ڪو بہ ڏيان نہ ڏنو ۽ ٽيهن سالن جي طويل عرصي ۾ هتي رڳو ٽي ثانوي اسڪول قائم ڪري سگهيا." ان کان پوءِ سن 1947ع تائين هڪ به اعليٰ تعليمي ادارو نه کلي سگهيو. سڀ کان وڌيڪ ستر ظريفي اها هئي جو ابتدائي دور ۾ تعليم لاءِ كو ڌار كاتو مقرر نه هو ۽ تعليمي انتظام روينيو كاتي جي زيردستيءَ ۾ هلندو رهيو. جيكو سن 1900ع ۾ قائم ٿيو هو(26).

مذهبي اثر: مذهبي نقطي نگاه کان سنڌ سدائين صلح. رواداري ۽ ڀائيچاري جو خطو رهيو آهي. هن ڌرتيءَ جي تاريخ جا ورق شاهد آهن تـ هـتي مذهبي ڪٽرپڻي ۽ نفاق جو ٻج ڪڏهن بہ سائو سلو ٿي نہ اڀريو. انگريزن کان اڳ جيتوڻيڪ مسلمان اختيار ۽ اقتدار جا مالڪ هئا، پر غير مسلم سنڌين کي بہ حڪومت جي وهنوار ۽ كاروبار ۾ ڀاڱي ڀائيوار بنايو ويندو هو.*

" اهي هئا:

"نارائڻ جڳن ناٿ اسڪول" ڪراچي. £1853 1.

"گورنمينٽ هاءِ اسڪول" حيدرآباد. 91858 2.

"گي رئمينٽ هاءِ اسڪول" شڪاريور. 91873 3.

- Symith. J. Ws: "Gazetteer of Province of sind", (Karachi District), Bombay 1919, P.39.
- Symith. J. Ws: "Gazetteer of Province of sind", (Hyderabad District), Bombay 1920, P.28.
- Symith. J. Ws: "Gazetteer of Province of sind", (Sukkur District), Bombay C. 1919, P.33.

* مثال طور كجه نالا هيك دّجن ٿا:

دور حکومت نالو ميان غلام شاه/كلهورا دور گمرگ کاتی جر عملدار گلابراء

مشير ديرداس مهتر

> مولراج كرن مل مهتو = 3.

ديوان گدومل 4. هن خطي ۾ تصوف ۽ ويدانيت ملي جلي امن ۽ ايڪتا جو انوکو روپ اختيار ڪيو، جنهن جي نتيجي ۾ مذهبي مت ڀيد. رنگ نسل ۽ ذات پات جا ويڇا بنه گهٽجي ويا، جتي شاه ۽ سچل کي سنڌ جا عظيم شاعر تسليم ڪيو وڃي ٿو. اتي ساميءَ ۽ دلپت کي به نظرانداز نٿو ڪيو وڃي. هن ئي خطي ۾ ڪيترائي غير مسلم، مسلمان مذهبي پيشوائن جا پوئلڳ نظر ايندا. اڄ به سچل سرمست جي مريدن ۽ معتقدن ۾ مسلمانن سان گڏ هندو به وڏي اڪثريت ۾ موجود آهن. سکر جو ناميارو بزرگ ۽ شاعر بچل شاه ۽ ڪراچيءَ جو سائين غني، سنڌ جي سنت سيٺ نهالچند جا معتقد هئا. جن سيٺ نهالچند سان عقيدت جو اظهار ڪندي ڪيترو ڪلام به چيو آهي(27).

انگريزن کان اڳ سنڌ جي تاريخ ۾ ايڪڙ ٻيڪڙ واقعن کان سواءِ هتان جي مذهبي ميدان ۾ مڪمل ٺاپر نظر اچي ٿي، * ۽ ڪٿي به مذهبي اختلاف جا اهڃاڻ نظر نٿا اچن.

انگريزن جي آمدسان سنڌ ۾ سياسي، سماجي ۽ معاشي اختلاف ۽ ڏڦيڙن کان سواءِ مذهبي ڪٽرپڻي جو به آغاز ٿيو. عيسائي، جيڪي انگريزن کان اڳ سنڌ جي عوام کي ڏيهي مذهبن کان متنفر ڪرڻ ۾ مشغول هئا، تن کي هن نئين سياسي تبديليءَ کلي

| 5. | جسپتراء | = | | = | |
|-----|----------------|--------------------|-------------------|----------|--|
| 6. | ديوان گدومل | قنڌار ۽ ڪابل جو سف | ير مير | ن جو دور | |
| 7. | جسپتراء | سفير | | = | |
| 8. | پرتابراءِ | منشي | ميرصوبدار خان/ | = | |
| 9. | منشي مشتاق رام | مسير | مير غلام على خان/ | = | |
| 10. | ديران گرپالداس | ڪڇ ۾ ايلچي | مير كرم على خان/ | = | |
| 11. | منشي خوشيرام | صلاحكار | مير مراد علي خان/ | = | |
| 12. | چوئىترام | مسير | ميرنور محمد خان/ | = | |
| 13. | ديوان لكميچند | صلاحكار | میر رستر خان/ | = | |
| 14. | اتمچند | = | = | = | |
| 2 | 1 76 64 6103 | 17.1 | | . 1951 | |

[&]quot; سن 1832ع ۾ هڪ ڪٽر مسلمان ڪراچيءَ ۾ هندن جي خلاف احتجاج ڪيو. ۽ لاڙ جي ڪن وڏن شهرن ۾ جهاد جو پرچار ڪيو ۽ مشرڪن جي خلاف مؤمنن کي ڀڙڪايو. ڪراچيءَ وارن فسادن ۾ سيٺ نائون مل جو پيءُ سيٺ هو تچند خاص نشانو بڻيو. کيس اغوا ڪري دوآبي ۾ ڪنهن مسلم درگاه تي وٺي آيا. جتي کيس ڪيتري وقت تائين قيد رکيو ويو.

(Seth Naomal Hotchand: "Memoirs of Seth Naomal Hotchand of Karachi", London, William Polarel & Co. Ltd, 1915, P.66).

آزادي ڏيئي ڇڏي، ۽ هنن مذهب اسلام خلاف منظم نموني سان تحريڪ هلائي. ان سلسلي ۾ سنڌ جي عيسائين علم ادب ۽ تعليم جو سهارو ورتو. سن 1846ع ۾ "ڪئپٽن پريڊي" (Captain Preedy) ڪراچيءَ ۾ هڪ اسڪول قائم ڪيو. جيڪو سن 1853ع ۾ "چرچ مشنري سوسائٽي" (Church missionary society) جي حوالي ڪيو ويو. هن اسڪول ۾ عيسائي مذهب جي تعليم لازمي طور تي ڏني ويندي هئي(28).

ادبي ميدان ۾ وري عيسائين "سنڌ ڪرسچن لٽرري سوسائٽي" (Sindh ادبي ميدان ۾ وري عيسائين "سنڌ ڪرسچن لٽرري سوسائٽي (Christian Literary Society) قائم ڪئي.(29) ۽ سنڌيءَ ۾ "جوت" اخبار جو اجراع ڪيو.*

ان کان پوءِ سنڌ ۾ مذهبي اختلافن جو هڪ طوفان برپا ٿيو، جنهن جي نٽيجي ۾ هندو ۽ مسلمان هڪ ڀکني جا مخالف ٿي بيٺا، ۽ ان جي پڄاڻي وڃي سن 1947ع جي سياسي تبديليءَ تي ٿي.

هندن ۽ مسلمانن ۾ مذهبي اختلاف ايترو تہ زور ورتو جو اهي هڪ ٻئي جي مذهبي جاين ۽ درگاهن تي به قابض ٿيڻ کان نہ مڙيا. منگهوپير هجي يا قلندر شهباز يا اڏيرولعل. هندو توڙي مسلمان انهن بزرگن تي پنهنجا پنهنجا حق تسليم ڪرائڻ لڳا. منگهي پير کي اڄ به ڪيترا هندو لالا جئسراج تسليم ڪندا آهن. ۽ مسلمان وري کيس حاجي منگهو سڏيندا آهن. ساڳئي نموني سان قلندر شهباز کي ڪيترا هندو راجا ڀرتريءَ جو اوتار ڪري ليکيندا آهن. ۽ ميلي وقت قلندر شهبلز.جي ميندي سيوهڻ جي ميراثي ۽ نانواڻي کڻندا آهن(30).

سيرمي پادوسي المحكان جتي مندر ڏسندا هئا، اتي کين مسجد ٺاهڻ جي يادگيري ان کان سواءِ مسلمان جتي مندر ڏسندا هئا، اتي کين مسجد نظر ايندي هئي، اتي کين پنهنجي ٽڪاڻي قائم ڪرڻ جو اچي فڪر دامنگير ٿيندو هو. انگريز حڪمرانن جي "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪريو." واري حڪمت عمليءَ جي نتيجي ۾ هندن ۽ مسلمانن جا مذهبي ويڇا جنهن حد کي وڃي پهتا، تنهن جي مختصر جهلڪ هيٺ ڏجي ٿي:

آريا سماج: "آريا سماج" جي تحريك جو بنياد سن 1875ع ۾ سوامي ديانند سرسوتي وڌو(31).هن تحريك هندن ۾ احساس برتري ۽ خود اعتماديءَ جو جذبو تہ

ان اخبار جي جواب ۾ حڪير فتح محمد سيوهاڻيءَ 100 صفحن تي مشتمل "فتح محمدي" نالي ڪتاب لکيو، جيڪو سن 911ع ۾ وڪٽوريا پريس سکر مان ڇپجي پڌرو ٿيو.

پيدا ڪيو پر ڪٽرپڻي جي بنياد تي پنهنجن پوئلڳن کي مسلمانن ۽ عيسائين خلاف ڀڙڪايو ۽ کين "هندستان هندن لاءِ" جو نعرو ڏنو.

هن تنظير جي شاخ جڏهن سنڌ ۾ قائر ٿي تہ ان هتان جي مذهبي ماحول کي بريء طرح متاثر ڪيو، ۽ هندو مسلم اختلاف کي هوا ڏني. آريا سماجين طرفان سنڌ جي مسلمان اڳواڻن سان ڪيترائي مناظرا ٿيا، ۽ ٻنهي مذهبن جي ڪٽر پوئلڳن طرفان هڪ ٻئي تي قلمي وار بہ ڪيا ويا.*

شدي سيا: 16 مارچ 1923ع تي ڪراچيءَ جي "هندو يووڪ سيا" پنهنجي گڏجاڻيءَ ۾ "شدي سيا"(32). قائم ڪرڻ جو فيصلو ڪيو تہ جيئن ڪراچيءَ ۾ رهندڙ ٽن سون مسلمان گهراڻن کي ٻيهر هندو بنائجي، جيڪي اڳ ۾ هندو مذهب سان واسطو رکندا هئا، پر پوءِ اسلامي تبليغ تي مسلمان ٿيا (33). هن تحريڪ سنڌ جي سماج ۾ ڏڦيڙ پيدا ڪيو ۽ سنڌي مذهبي بنيادن تي ڌڙن ۾ ورهائجڻ لڳو. مسلمانن طرفان وري "نومسلم ڪانفرنسون" سڏايون ويون. * جهڙيءَ طرح"شڌي سيا" جو مرڪز ڪراچيءَ کي بنايو ويو. اهڙيءَ طرح اسلامي تبليغ جو آغاز به اتان ٿيو، ۽ ردعمل طور ڪيترن هندن کي

* انهيءَ سلسلي ۾ لکيل ڪن مضمونن جو مختصر وچور هيٺ ڏجي ٿو: ڪڏهن ڇپيو عنوان کنهن پر چپيو محمود شاهر راشدي آكٽوبر 1925ع آريا اخبار جي غلط بياني توحيد آريا ڌرم ۾ عقل مولانا دين محمد وفائي/فيبروري 1926ع محمد بخش واصف آكٽوبر 1934 آرين جي اعتراض جا جواب مولانا دين محمد وفائي/آڪٽوبر 1934ع آرين جي سوالن جا جواب مولانا دين محمد وفائي/آكٽوبر 1934ع معراج جسمانيء تي اعتراض حاجي محمود هالائي مارچ 1935ع آريا ڌرم جو اصلي مسئلو ويديا آهن؟ محمد بخش واصف فيبروري 1936ع

* مثال طور 1926ع ۾ شيخ عبدالعجيد سنڌي ڪراچيءَ ۾ نومسلم ڪانفرنس سڏائي، جيڪا سنڌ جي تاريخ ۾ پهرين ۽ شاندار ڪانفرنس هئي. هن ڪانفرنس ۾ نومسلم ماڻهن لاءِ روزگار جي وسيلن مهيا ڪرڻ، تعليم ڏيارڻ. آباد ڪرڻ، ۽ کين اسلام جي صحيح تعليم کان آگاه ڪرڻ لاءِ مثبت فيصلا ڪيا ويا. (جي ايم سيد: "جنب گذاريم جن سين". جلد پهريون حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص 168)

مسلمان بنايو ريو. ان كان سواءِ حيدرآباد، سكر، نصرپور، لاڙڪاڻو، شهدادڪوٽ، ۽ راڻي پور ان جا خاص مرڪز رهيا. نصرپور ۾ ته ڀاٽين ۽ پانڌياڻين جي وچ ۾ چڪريون پڻ لڳيون. لاڙڪاڻي ۽ شهدادڪوٽ ۾ ڪيترا سنجو ڳي شيخ مرتد ٿيڻ لڳا، جن کي مسلمان عالمن وقت سرڀٽڪڻ کان بچائي ورتو. *

سنڳنن: هن تعريڪ جو آغاز لالا لڄپتراءِ ڪيو، جنهن نه رڳو ڪيترن ئي هندو جوانن کي جنگي سکيا ڏني، پر ان سکيا جا لاتعداد مرڪز به قائر ڪيا. انهن مرڪزن مان تربيت ورتل هندو نوجوانن ننڍي کنڊ جي مختلف هنڌن تي فساد ڪيا. جن جو آغاز ملتان کان ٿيو(34)، ۽ پوءِ ڏسندي ئي ڏسندي سنڌ جي سرزمين به ان اثر کان محفوظ نه رهي سگهي.

"هندو سنڳنن" ۽ "هندو مهاسيا" جهڙين انتها پسند تحريڪن ۽ جماعتن کي سنڌ ۾ منهن ڏيڻ لاءِ هتان جي مسلمانن اعتدال پسنديءَ جو رويو اختيار ڪيو، تہ جيئن مذهبي ڪٽرپڻي کي ممڪن حد تائين روڪيو وڃي.

هندو قوم جا ليڊر اڇوت قومن کي سڌارڻ ۽ انهن کي پاڻ ۾ ملائڻ جي تہ ڪوشش ڪري رهيا هئا، پر انهن مان ڪي تنگ دليءَ وچان سنڌ اندر مڙني مذهبن جي پوئلڳن سان ميل ميلاپ رکڻ بجاءِ، مذهبي اختلافن کي شدت سان پکيڙڻ لڳا.

سنڌ ۾ هن تحريڪ پهريائين ادبي ڇڪتاڻ جو روپ ورتو، ۽ پڄاڻي وڃي فسادن

انهيءَ رد عمل هيٺ ڪراچي مرڪز ۾ جن ماڻهن کي مشرف بالاسلام ڪيو ويو. تن مان ڪن
 جو وچور مثال لاءِ هيٺ ڏجي ٿو:

| اسلامي نا | اصلي نالو | اسلامي نالو | اصلي نالو |
|-----------|-----------|-------------|-----------|
| زينب | ٽنڪ | مويعر | هرڌي |
| شريفه | سوئي | عزيزه | يندان |
| هاجران | رزان | سكينه | نصلي |
| آمنت | پارپتي | ڪريمه | سنهي |
| | | الهربخش | بوچا |

(ڏسو توحيد ڪراچي، ماه سيپٽمبر 1925ع ص24)

انهيءَ سلسلي ۾ راڻي پور جي پير ابومحمد صالح شاه. مولانا دين محمد وفائي. ۽ مولانا
 محمد صادق راڻي پوريءَ تبليغي ڪر ڪيو. ۽ ان فتني کي ٻنجو ڏئي ڇڏيو.
 (هيءَ معلومات جناب پير حسام الدين راشدي کان 29 نومبر 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي)

۽ هنگامن تي ڪئي. هندن مذهب اسلام ۽ ان جي مشاهير خلاف ڪيترائي مضمون. كنيو. * أن كري سنڌ جي پرامن فضا خراب تي پيئي.

نٿورام جو قتل: "شڌي" ۽ "سنڳٺن" تحريڪن جي آغاز کان پوءِ پيغمبر ﷺ جي شان ۾ تحريري گستاخين جو سلاملو شروع ٿيو. سن1935ع ۾ نٿورام. راڄ پال جي لکيل هڪ ڪتاب "رنگيلا رسول" جو سنڌي ۾ ترجمو ڪيو، جنهن ڪِري مسلمانن قانوني چاراچوئيءَ جو سهارو ورتو. حيدرآباد جي سيشن جج شري ملكاڻيءَ نٿورام كي سزا ڏيئي ڇڏي. كيس، اپيل ۾ "جوديشل كمشنر" وٽ پيش ٿيو. ڪورٽ ۾ ڪاروائي هلندي ڪراچيءَ جي هڪ ڪوچوان عبدالقيوم هزارويءَ. نٿورام کي پيٽ ۾ ڇرو هئي قتل ڪري ڇڏيو، جنهن جو مقدمو عبدالقيوم تي قائم ٿير, ۽ کيس ڦاسي جي سزا ڏني ويئي. (35) شهيد جر لاش مسلمانن گهرير. جنهن لاءِ

عيدة تكاعين سالحكن كي مر ثائي قي كان ـــ الـ جِلْيَ ذَنبون هندن طرفان لکيل ڪن ڪتابن جو وچور هيٺ ڏجي ٿو: "اسلامي بهشت". "علماء اسلام كان سوال"، "معراج يها آهي". "مغل رنگ محل"، "مغل شيش محل"، "منهنجي ايشوري مستي"، "ستيارت پرڪاش"، "سندري"، "سنڌو هتيا كاندِ". "ويدك بمكولو". "قرآني الله ميان جي تصوير". "قرآني الله ميان جي سنذ جي سيني الان الكِ دُينَ اللهِ عِن سندي سلمان هي إي المنته " و التعلق المسلمان انهن بخي مرك رهينيان كتاب اكياء على ملك من الله المراك المرابع المرابع محمدعثمان ڏيپلائي ڪسه يا ان تال ايت نهيمان ڏ "عَيدَجو چند"- رَبُّ عِلَا مِنْ لَهُ مُعْمَدِعَتُمَانَ دِيهِلائي مِنَا الْمُعَانِ عَلَمُ مِنْ مِنْ خ<mark>تاتڪ مهاراجا ڏامرسين"۽ حياد خليق مورائي ان عياست علي آهي۔ نه سيسٽ سام ۽ آهي</mark> "لاجراب تحرير" ين المولانا دين محمد وفائي له سمال مد يسال مل خنين في تحييمي ، عياد مسئلر مادك الذر **يخلي موتيلخ** عي بسدا كان حو حي<mark>"ين ين</mark> محمد عثمان ڏيپلائي "سومنات جي سندري" محمد عثمان قريلائي و١٩١٦ ميد المالي بالمالية المالية ا "شيواجي شيش محل" "شديءَ جو سانگ" "وأثكي شاعري" حليق موراني مولانا دين محمد وفائي عالى 25 ما الله Sindh Provincial Mushim League " ترآني صداتت" د راني شدانه ما

محمد عثمان ڏيپلائي

انگريز حاكر پس و پيش كئي. نتيجي ۾ چاكيواڙي ۾ زبردست فائرنگ ٿي، ۽ چوهٺ مسلمان شهيد ٿيا(36). پر مسلمانن غازي عبدالقيوم جو لاش حاصل كري ورتو. هن واقعي سنڌ جي مذهبي توڙي سياسي ماحول كي خراب كري ڇڏيو. شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ ان خوني واقعي تي احتجاج كندي "بمبئي ليجسليٽو اسيمبليءَ (37)

مسجد منزل گاهد: انگريزي راڄ جي بدترين ۽ ڏکوئيندڙ واقعن مان "مسجد منزل گاهد" جو حادثو به هڪ آهي. سن 1839ع ۾ جڏهن انگريزي فوج سکر تي قبضو ڪيو ته ان وقت هنن هندو ترڙي مسلمانن جي عبادتگاهن کي ڪٿي ڪٿي پنهنجي آفيسن ۽ رهائش گاهه طور استعمال ڪيو. منزل گاهه واري ميدان تي سندن پريزيڊنسي (Presidency) ٺهيل هئي. انگريزن جڏهن پنهنجين آفيسن ۽ رهائش گاهن لاءِ مستقل طور تي عمارتن جي اڏاوت ڪرائي ته انهن هندو توڙي مسلمانن جون اڳوڻيون عبادتگاهون مالڪن کي موٽائي ڏيڻ کان سواءِ ڇڏي ڏنيون.

اهڙين حالتن ۾ "مسجد منزل گاه" هڪ مسئلو بڻجي سنڌ جي سياسي افق تي اڀرڻ لڳي. سن 1930ع ۾ هندن "مسجد منزل گاه" کي ساڌٻيلي جي حصي طور تسلير ڪرائڻ جي تحريڪ جو آغاز ڪيو. سندن ڪوششن تڏهن رنگ لاتو، جڏهن سن 1932ع ۾ وقت جي سرڪار مسجد جي تالابندي ڪري ڇڏي.

سنڌ جي بمبئيءَ کان الڳ ٿيڻ کان پوءِ سنڌي مسلمانن ۾ برتريءَ جو احساس پيدا ٿيڻ لڳو. ۽ هنن سر غلام حسين هدايت الله جي وزارت عظميٰ جي زماني ۾ "مسجد منزل گاه" واري مسئلي کي هٿ ۾ کنيو.

سر غلام حسين هدايت الله كان پوءِ جڏهن خانبهادر اله بخش سومرو سنڌ جو وڏو وزير ٿيو ته هن جي آزاد خياليءَ واري حڪمت عمليءَ جي مخالفت ڪندي، سنڌ مسلم ليگ سندس مخالفت طور "مسجد منزل گاه" واري مسئلي کي سامهون آندو." جنهن جي نتيجي ۾ هي عسئلو ملڪ اندر وڳوڙي حالتن جي پيدا ڪرڻ جو سبب بڻيو.

^{*} انهيءَ سلسلي ۾ 19 مئي 1939ع تي سنڌ پراونشل مسلم ليگ جي صدر سيٺ حاجي عبدالله هارون سکر جو دورو ڪيو ۽ جون 1939ع ۾ ليگ جي ورڪنگ ڪاميٽيءَ مسجد منزل گاھ جي بحاليءَ واري ڪاميٽي مقرر ڪئي.

⁽See, "Causes of Sukkur Disturbances", The Sindh Provincial Muslim League Karachi, 1940 P-9)

آگسٽ 1939ع ۾ سکر جي ڪن ناعاقبت انديش آرين ڀرچونڊيءَ واري پير جي فرزند عبدالرحيم کي مارڪٽ ڪئي. ان جي بدلي وٺڻ لاءِ 2 نومبر 1939ع تي مڌر آواز جي مالڪ ڪنور رام ڀڳت (38) ۽ 17 جولاءِ 1940ع تي صوفي منش سياستدان پروفيسر هاسارام پنماڻيءَ کي قتل ڪيو ويو. (39)

حوالا

- (1) Mirza Kalichbeg: "History of Sind", Volume II, Karachi, Commissioners Press, 1902, P.227.
- (2) Olaf Caroe: "The pathans", London, Macmillan & Co. Ltd 1964 P.320-
- (3) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "بلوچستان جي مختصر تاريخ" سکر، ريلوي اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1941ع ص 69
- (4) Lambrick H.T: "Sir Charles Napier and Sind" Oxford Clarendon Press 1952 P.177
 - (5) حكيم فتح محمد سيوهائي: "ميرن جي صاحبي"، كراچي، "الوحيد" پريس ص2٠.
- (6) See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 11-5-1922 P-5 and dated 15-5-1922 P-5.
- (7) سراج الحق: "سنڌ جي اقتصادي تاريخ" (مترجر جو نوٽ) حيدرآباد, حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ 1958ع19.
- (8) Chablani S.P: "Economic Conditions in Sind", Bombay Orient Longmans Ltd, 1951, P-213
- (9) ضياء الدين اصلاحي: "هندوستان عربون كي نظر مين"، اعظم گڙه, معارف پريس 1960ع ص285٠
- (10) Aitken, E.H: "Gazetteer of the Province of sind", Bombay Govt: press, 1907 P-246.
- (11) Hamilton, Walter: "East India Gazettecr", London, 1815, P.740.
- (12) Elliot: "History of India as told by its own Historians", London, Truber & Company 1871, Volume I, P. 427.

- (13) Mc Murdo: "Memoirs on the Indus" An article published in the Journal of Royal Asiatic Society Calucutta 1834, P-30.
- (14) Chablani S.P: "Economic Conditions in Sind" Bombay, Orient Longmans Ltd, 1951, P.96.
- (15) Qureshi Ishtiq Hussain: "Education in Pakistan" Karachi Maaref Ltd, 1975, P. 11.
- (16) Naomal Hotchand: "Memors of Seth Naomal", London, William Pollard & Co. Ltd, 1915, P.P.141-142).
- (17) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "جنت السنڌ ڪراچي", سنڌي ادبي بورڊ 1958ع ص688م
- (18) Metraux. Guy.S: "The new Asia", London, American Library, 1965 P.120.

(19) تفصيل لاءِ ڏسو:

(a) Burton R.F: "Sindh", Karachi, Oxford Universty Press, 1973, P.69.

Latina chila a preparati

- (ب): داكٽر خواج غلام علي الانا: سنڌي ٻوليءَ جي حيثيت اسلام جي آمد كان اڳ، (مقالي) نئين زندگي، ڪُراچي ماه سيپٽمبر 1968ع ص ص 23-24
- (ث): پير حسار الدين: "منصوره جي تاريخ جو هڪ باب"، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، سه ماهي "مهراڻ" نمبرا جلد 10، 1961ع ص 143

ع پڻ ڏييو: را آيا جر جر جي بيان ۽ بداران ڪاري

- (a) Eulot H: "History of India" London, Trubner and Company, 1857, Volume I, P.39.
- (b) Ebward, C. Sachan: "Alberuni's India", Kegan Paul Trench, London,
- (20) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ"، حيدرآباد، سنڌ يونيورسٽي
- روي 1959 عص 338 بمستوره ما الله المستورة كا يسمل المستورة المستور
 - جيدرآباد. سنڌي ادبي بورد. جنوري، فيبروري ۽ مارچ 1974ع ص 133٠
- ر (22) وروبوداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ". حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي 1001 - مارسورسٽي انهن ۽ انهن آهي. انهن انهن ميارسورسٽي

1959ع ص413، 1950ء

- (23) خانصاحب محمد صدیق میمن: "سنڌ جي ادبي تاریخ"، (برٽش حڪومت کان اڳ) حيدرآباد، مسلم ادبي (اليڪٽرڪ) پرنٽنگ پريس، 1944ع ص 59٠
- (24) Sorley H.T: "Gazetteer of West Pakistan" Lohore, Government of Pakistan, 1968, P.675.
- (25) Hughes. A: "Gazetteer of the Province of Sind", London, George Bell & Sons, 1874, P.31.
- (26) See, "A Hand Book of the Government Record" Karachi, 1933, P.40 (27) موتيرام: "رتن جوت"، ڪراچي، هيرالڊ پريس 1958ع ص 417
- (28) Harrison: "A Hand book of Karachi", Karachi, Educational Printing Press 1933, P-23-
- (29) See, "The Daily Gazette" Karachi, dated 24.3.1926, P.5.
 - (30) ڀيرومل: "سنڌ جي هندن جي تاريخ", ڀاڱو 2 ڪراچي 1947ع ص 45.
- (31) رحيمداد خان مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ", حيدرآباد, سنڌيونيورسٽي
- (32) صلاح الدين ناسك: تحريك آزادي لاهور, عزيز پبلشرز, 1975ع ص ص 248-
- (33) See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 19-3-1923, P. 5.
- (34) صلاح الدين ناسك: تحريك آزادي لاهور، عزيز پبلشرز 1975ع ص ص 247٠
- (35) See, "The Daily Gazette" Karachi, dated 19-3-1935, P. 1
- (36) جي ايىر سيد: "جنب گذاريىر جن سين"، (جلد پهريون) حيدرآباد، سنڌي ادبي بورد، 1967ع، ص1،70
 - (37) ايضاً ص 170.
- (38) جي ايىر سيد: "جنب گذاريىر جن سين", (جلد ٻيو) حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع. ص32.
 - (39) ايضاً ص 32.



باب ٽيون سنڌ ۾ انگريزي راڄ کان بيزاري ۽ تحريڪ آزاديءَ جو آغاز

سنگر انگریزی راج کان بیشاری ۴ تعدید آزادی و آغاز

سنڌ ۾ انگريزي راڄ کان بيزاري ۽ تحريڪ آزاديءَ جو آغاز

جيئن تر زير بحث موضوع ئي هن مقالي جو مركزي خيال آهي. ۽ ان تي تفصيلي رؤشني، ايدر بابن ۾ وڌي ويئي آهي، ان كري هتي اختصار تي ئي اكتفا كجي ٿي. ميرن جو دور نہ رڳو سنڌ پر ننڍي كنډ جي سياسي تاريخ جو هڪ سونهري در هر. جنهن ۾ پهريون ڀيرو گڏيل حكومت جي سياسي نظام كي عملي جامو پهرايو وير هر. جنهن جو ننڍي كنډ جي تاريخ ۾ مثال ئي نثر ملي. انگريزن جي آمد كان پوء نه رڳو انهيءَ گڏيل حكومت واري كامياب تجربي جي پڄاڻي ٿي، پر سنڌ هڪ الڳ، آزاد ۽ خودمختيار ملك پنهنجي حيثيت كي وڃائي ويٺو.

انگريزي راڄ سنڌ جي سياست ۾ اُبتر انقلابي قيرو آئي ڇڏيو. سندن راڄ ۾ هڪ ملڪ پهريائين صوبو ٿيو ۽ پوءِ اهر پنهنجي صوبائي حيثيت به وڃائي وڃي بعبئي پر ڳڻي جو حصو بڻيو. انهن سياسي واقعن اسان جي عالمن ۾ پهريائين بيچيني ۽ پعء بيزاري ۽ آخر ۾ بيداري پيدا ڪري ڇڏي. ڪيترا عالم ملڪ ڇڏي هليا ويا. ۽ ڪن وري گوشي نشين ٿي پنهنجي زندگيءَ جو قيد ڪاٽڻ شروع ڪيو. مسلمانن انگريزي تعليم ۽ تهذيب ۾ ايتري دلچسپي نه ورتي. نتيجي ۾ غير مسلم حصو اڳتي وڌڻ لڳو ۽ ڏسندي ئي ڏسندي ويو. " تالپرن جي

* مثال جي طور تي سن 1867ع کان وٺي 1871ع تائين 150 روپيا درماه پگهار کثندڙ هندو توڙي مسلمان ملازمن جا انگ اکر هن طرح هئا:

| هندو | مسلمان | سال |
|------|--------|--------|
| 9 | 3 | و1867 |
| 4 | 1 | ٤1868 |
| 9 | 5 | و1869 |
| 5 | 2 | 1870ع |
| 3 | 1 | ę 1871 |

(كريىر بخش خالد: "خانبهادر حسن علي آفندي" (مقالو) تثين زندگي. كراچي سيپٽمبر. آكٽوبر 1974ع. ص75.

[°] مثال طور مو لانا عبدالكريم مٽيارويءَ جو نالو پيش كري سگهجي ٿو. جنهن پنهنجي وطن جي آزادي ختر ٿيندي ڏسي چير ته: "اسين فرنگي حاكمن كي ڏسي نٿا سگهون، ان كري هاڻي اسان جو هتي رهڻ نہ ٿيندو" پوءِ هو سنڌ ڇڏي مٺي مرسل جي ملك ڏاڻهن لڏي ويو، (ڏسو الرحيم: "مشاهير سنڌ نمبر"، حيدر آباد شاھ ولي الله اكيڊمي، 1967 ص33)

دور ير جنهن طبقي كي سياست جي ميدان ير ايترو عمل داخل حاصل نه هو. سو هاڻي سياست ير به قيادت كرڻ جي قابل ٿي ويو. * اهڙي طرح انگريزن جي راڄ. سنڌ جي سياست ير ٻه الڳ ۽ متضاد ڌڙا قائم كري وڌا.

انگريز عيسائي هئا، ۽ پنهنجي مذهبي تبليغ کي فرض سمجهندا هئا، سندن اثر هيٺ هتي جي مذهبن تي تقريري ۽ تحريري حملا بد ڪيا ويا، پر هن حڪمران طبقي هندن توڙي مسلمانن جي مذهبي پيشوائن، پيرن، ۽ پنڊتن تي هٿ بر رکڻ شروع ڪيو، جن سنڌ جي سياست ۾ حڪومت پرستيءَ جو ڪردار ادا ڪيو، ان جي رد عمل طور اسان جا علماء ڪرام سياست جي ميدان ۾ ڪاهي پيا ۽ پيراڻي سياست جو ڀرپور مقابلو ڪيائون.

انگريز سرڪار سنڌ جي سياست کي دين، ڌرم، رنگ، نسل ۽ اميريءَ غريبيءَ جي طبقن ۾ ورهائي چڪي هئي، پر ان هوندي به سنڌي عوام موقعو ۽ مهل ملڻ تي فرنگي اقتدار جي زنجيرن ٽوڙڻ جي ڪوشش ڪئي، اهو ئي سبب آهي جو جڏهن سن 1857ع وارو واقعو رونما ٿيو تہ سنڌ جي هندن توڙي مسلمانن، ۽ اميرن توڙي غريبن، ان جنگ آزاديءَ ۾ ڀرپور حصو ور تو.

سنڌ ۾ آزاديءَ جي جنگ جو ناد سڀ کان اڳ صحافت ئي وڄايو، جيئن ته سنڌ کان ٻاهر وڏي پيماني تي قتلام ٿي چڪو هو، ۽ وقت جي سرڪار وڏي ڪوشش ورتي ته جيئن باقي هندستان جون خبرون سنڌ جي اخبارن ۾ شايع نہ ٿي سگهن، پر سنڌ جي صحافت سرڪار جي اهڙي ڪوشش جي کليل لفظن ۾ مذمت ڪئي. انهيءَ سلسلي ۾ اخبار "سنڌ قاصد" پنهنجي جولاءِ 1857ع جي اشاعت ۾ انهن پابندين خلاف هڪ ايڊيٽوريل لکيو، جنهن ۾ وقت جي سرڪار طرفان اخبارن تي سنسرشپ لاڳو ڪرڻ واري فيصلي تي راءِ ڏني ته:

"حڪومت جو ڪو به قانون اهڙو ناموزون ۽ غير منصفانه نه آهي، جيترو پابنديءَ جو هي قانون، جنهن ذريعي هندستان جي پريس تي هڪ ظالمانه بندش عائد ڪئي ويئي آهي. اسين هن نتيجي تي پهچي چڪا آهيون ته هيءُ قانون هڪ ئي وقت تي غير

مثال طور "سنڌ سڀا" جهڙي سنڌ جي پهرين سياسي جماعت ٺهي ته ڪيتري وقت تائين غير مسلم ان جي اڳواڻي ڪندا رهيا, هن جماعت جو پهريون صدر سيٺ آتمارام ڀوڄواڻي ٿيو ۽ ديوان ڏيارام ڄيٺمل توڙي ديوان گدومل به جماعت جا اڳواڻ ٿي رهيا. (تارا چند شوقيرام: ڏيارام گدومل جو جيون چرتر. حيدرآباد 1932ع ص16)

منصفانه ۽ غير سياسي آهي. هن قانون هندستاني پريس کي سخت مصيبت ۾ مبتلا ڪري ڇڏيو آهي، هي قانون غير سياسي هن ڪري آهي جو حڪومت هند آئيني ذريعن سان متنة طور تي تمام اخبارن جو ساٿ وئي سگهي ٿي. هي قانون ظلم جي حد تائين غير منصفانه هن ڪري آهي جو پريس کي بنا ڪنهن سبب جي غلطين جي سزا ڀوڳڻي پوي ٿي. "(1)

صحافت جي اهڙي ناد وڄائڻ کان پوءِ سنڌ ۾ سڀ کان پهريائين حيدرآباد ۾ فوجين جي بغاوت جا افواه پکڙجڻ لڳا. حيدرآباد جي ڏيهي سپاهين 8 سيپٽمبر 1857 ع تي حڪومت خلاف آزاديءَ لاءِ جنگ لڙڻ جو فيصلو ڪيو(2). پر آزاديءَ جي هنن اڳواڻن خلاف ڏيهي عملدارن وڃي شڪايتون ڪيون ۽ بغاوت جون خبرون پهچايون ته سپاهي ۽ سڄو شهر ڌارين سرڪار خلاف وڙهڻ وارو آهي.

انهيءَ اطلاع ملڻ تي وقت جي سرڪار پنهنجن انگريزي عملدارن ۽ خزاني جي حفاظت جو جو ڳو بندوبست ڪري. سمورن ڏيهي سپاهين کي صفون سڌيون ڪرڻ جو حڪر ڏنو هن ۽ انهيءَ ئي موقعي تي هٿياربند سپاهين کي بي هٿيار بنايو ويو، جنهن تي ڏيهي سپاهين ڪا ڏٺي وائني مزاحمت ته نه ڪئي، پر سج لهڻ کان پوءِ ڪجه سپاهي ڇانوڻي ڇڏي وڃي شهر ۾ لڪا ته جيئن بغاوت جو جهنڊو بلند ڪري سگهن، پر کين بروقت گرفتار ڪيو ويو.(3) ۽ آخر انهن کي ڪورت مارشل ڪري شهيد ڪيو ويو.(4)

حيدرآباد کان پوءِ سنڌ ۾ جنگ آزاديءَ جو ٻيو مرڪز ڪراچي بڻيو. وطن جي هن حصي جي نوجي سپاهين سيپٽمبر 1857ع جي ٻئي هفتي ۾ بغاوت ڪرڻ جو منصوبو رٿيو. پر ساڳڻي مهيني جي تيرهين تاريخ رات جو اٽڪل يارهين وڳي فوجي پلٽڻ نمبر يارهين جي ڪمانڊنگ آفيسر "ميگريجر" (M. Gregor) کي معلوم ٿيو تسدس پلٽڻ انهيءَ رات بغاوت ڪرڻ واري آهي (5). ۽ ڪراچيءَ ۾ فتح حاصل ڪرڻ کان پوءِ اها حيدرآباد رواني ٿي ويندي(6).

جيئن تہ ان کان اڳ حيدرآباد ۾ به فوجين جي اهڙي ڪوشش ڪامياب ٿي نہ سگهي هئي، ان ڪري جڏهن واسطيدار عملدار کي هڪ حوالدار جي هٿان سڌ پئي (7) تہ هن ترت قدم کڻندي وڃي اعليٰ اختياريءَ وارن کي اطلاع ڏنو (8). انهيءَ اطلاع جي پوئواري ڪندي "يورپين لائيٽ انفينٽري" (European Light Infentary) جي اڳواڻ ڪالونئيل اسٽيلز (Colonel Stiles) يورپي آفيسرن جي خاندانن ۽ سرڪاري خزاني تي سخت پهرو بيهاري ڇڏيو (9). ان کان سواء "ميجر بليڪ" (Major Bleke) کي اهو ڪر

سونپيو ويو تہ هو گهوڙيسوارن کي وٺي بغاوت جر منصوبو سٽيندڙ سپاهين جي رهائش گاھ کي پنهنجي گهيري ۾ وٺي.

جڏهن اختياريءَ وارن عملدارن پنهنجي حفاظت جو جو ڳو بندوبست ڪيو ته ان کان پوءِ فوجي پلٽڻ نمبر يارهينءَ کي صفن ۾ سڏائڻ جو حڪر ڏنو، جيئن ته بغاوت جي باني سپاهين کي اها ڄاڻ نه هئي ته ڪو سندن راز فاش ٿي چڪر آهي، ان ڪري هو پنهنجي منصوبي مطابق ظاهري طور تي ڪا به اهڙي ڳالهه نٿي ڪري سگهيا، جنهن مان اختياريءَ وارن کي بغاوت بابت ڪو اشارو ملي وڃي. ان ڪري پلٽڻ جي اڪثريت اچي پنهنجون صفون بڻايون (10).

اچي پنهنجون صفون بڻايون (10). ان کان پوءِ هر هڪ سپاهيءَ جو نالو وٺي حاضري ڀري ويئي، جنهن مان اختياريءَ وارن کي معلوم ٿيو تہ پلٽڻ جا ستاويھ سپاهي غير حاضر آهن."

ان بعد سپاهين کان هٿيار کسيا ويا, ۽ سندن جاچ پڙتال ڪئي ويئي. هن جاچ پڙتال مان حڪومت کي معلوم ٿيو تہ تيرهن سپاهين صفن بنائڻ واري قاعدي جي ڀڃڪڙي ڪندي، پنهنجيون رائفلون ڀري رکيون هيون(١١)، جن کي اتي جو اتي گرفتار کيو ويو، ۽ باقي ڀاڄوڪڙ سپاهين جي ڳولا کئي ويئي.

ڪراچيءَ جي سپاهين کي جيتوڻيڪ پهريائين ناڪامي ڏسڻي پيئي، پر سندن همت جواب ڪوند ڏنو. ڀڄي ويل سپاهين کي اهڙا موقعا حاصل هئا تر اهي بغاوت کي عوامي تحريڪ جي روپ ۾ اڀاري سگهن, پر سنڌ جي مٿئين طبقي سان واسطو رکندڙ مکي ٻن غدارن حڪومت جو ساٿ ڏنو، جنهن ڪري سپاهين جا باقي منصوبا بر اڻپورا رهجي ويا.

عوام دشمن ۽ حڪومت جي حامي ڌڙي مان سيٺ نائونمل هو تچند به هڪ هو. هن نه رڳو آزاديءَ جي ان جنگ ۾ حڪومت جو ساٿ ڏنڻ، پر انهيءَ واقعي کي قلمبند به ڪرايو، هو ان سلسلي ۾ چوي ٿو ته:

غير حاضر سپاهين جي انگن اکرن لاءِ مختلف محققن جي مختلف راء آهي. سيد معين الحق
 جي خيال مطابق اهي سپاهي ستاويه هئا. ۽ ڊاڪٽر عظيم الشان حيدر اهي انگ ايڪيه ٻڌائي
 ٿو. ڏسو:

⁽a) Syed Moinul Heg: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society, 1968 P. 298.

⁽b) Dr Azimusshan Haider: "History of Karachi", Karachi, Ferozsons, 1974, P.20

"سنڌ کان ٻاهر غدر ۾ رترڇاڻ ۽ ماڻهن سان عقوبتون ٿيون، تن جي بيان ڪرڻ کان قلر قاصر آهي. مان هن وقت بہ تصور ٿو ڪريان ته دل دهلجيو وڃي ٿي. هندستان ۾ جيڪي وهيو واپريو پئي، تنهن جون ڳالهيون ٻڌي عامر ماڻهن خيال ڪيو تہ انگريزڻ جي حڪومت جو اجهو ٿو خاتمو ٿئي.

انهيءَ ڏکئي ۽ آزمائش جي وقت ۾ "سر بارٽل فريئر" (Sir Bartle Frere) جيڪو صبر، فڪر، سوچ ۽ حوصلو ڏيکاريو، تنهن جي جيتري واکاڻ ڪجي اوتري گهٽ آهي. هندستان ۾ انگريزن جي طاقت کي جيڪو خطرو هو، ان کي منهن ڏيڻ لاءِ نتڪليف جو خيال ڪيائين، ثه خرچ جو. دستور موافق آئون سربارٽل کي خبرون پهچائيندو ايندو هوس، آئون پنهنجن پراڻن خانداني گماشتن جي معرفت جوڌپور، جيسلميز، پالي، راجپوتانا، ۽ پنجاب جي مختلف شهرن مان خبرون گهرائي، سڌو بنا ڪنهن شرط شروط جي، ڪمشنر جي حوالي ڪندو هوس. مون کي گهرائي، سڌو بنا ڪنهن شرط شروط جي، ڪمشنر جي حوالي ڪندو هوس. مون کي جنهن به وقت رات هجي يا ڏينهن، گورنمينٽ هائوس ۾ وڃي ڪمشنر سان ملڻ جي اجازت هوندي هئي. ڪمشنر منهنجي لاءِ دربان کي خاص هدايت ڪئي هئي ته هو جنهن وقت به اچي، ان وقت اندر پهچايوس..... مون کي ڊپ هو ته بغاوت سبب عندر. هڪ جهاد جي صورت اختيار ڪئي هئي. مون هڪڙي ڏينهن سربارٽل فريئر غدر. هڪ جهاد جي صورت اختيار ڪئي هئي. مون هڪڙي ڏينهن سربارٽل فريئر هزار ماڻهو وٺي اچان، ڇاڪاڻ ته هر تعصبي ته آهن ۽ ساڳئي وقت هو بهادر. ايماندار عوادار سپاهي آهن. "(12)

" تائونمل آهڙي تموني سان سرڪار جي وفاداريءَ جو عملي مظاهرو ڪيو. هن کان سواءِ ٻيو هو صوبدار الهيار خان، هن وري ڀڄي ويل سپاهين کي گرفتار ڪرائڻ ۾ وقت جي حڪمرانن جي مدد ڪئي. سندس ئي سناٿ سان نو ڀاڄوڪڙ سپاهي گرفتار ٿي سگهيا."

ي چير وڃي ٿر تر سياهين جو هڪ ٽولو پلٽڻ مان ڀڄڻ کان پوءِ اچي صوردار الهيار خان جي ڳوٺ پهتو. جيئن تر رات ٿي چڪي هئي ۽ انهن کي اها غلط فهني ٿي ته صوردار الهيار خان کين لس سيايي جي جام تائين پهچائڻ جو بندوست ڪندو. پر سي ڪجه سندن خواهشن جي برخلاف ئي ٿيو. صوبيدار الهيار دو کي ۾ رکي ۽ صبح جي وقت گرفتار ڪري کين سرڪار جي حوالي ڪيو. (Syed Moinul Heq: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society. 1968 P. 298)

[&]quot; - جاهيس کي مو ت جي مزا الهي: هنڌ تي ڏني ۽ ڀٽي، جٽي اڄ اپ يس مار ڪيٽ لهيار آهي

هڪ طرف سرڪارجي بروقت احتياط ۽ ٻئي طرف ساڻس ڪن ڏيهي ماڻهن جي تعاون سبب سپاهين جي اها ڪوشش ڪامياب ٿي نہ سگهي، ٽن ڏينهن جي معمولي عرصي ۾ بغاوت کي ٻنجو ڏنو ويو ۽ ان کان پوءِ سپاهين کي سزائون ڏنيون ويون.

21 سيپٽمبر 1857ع تائين ايڪٽيھ باغين مان چوويھن کي زندھ پڪڙيو ويو. جن مان ارڙھن کي موت جي سزا ڏني ويئيءِّ ۽ سترھن تي ڪيس ھلايا ويا. جن مان ڪن کي ملڪ بدر ڪيو ويو. ۽ ڪن کي ڦاھيءَ تي لٽڪايو ويو جڏھن تہ ٽي سپاھي ويڙھ ۾ مري ويا(13). ان ڪوشش جي باوجود ڪي سپاھي مفرور رھيا.

حيدرآباد ۽ ڪراچيءَ کان پوءِ شڪارپور آزاديءَ جي هن جنگ ۾ حصو ورتو. ڏيهي سپاهين اتي سيپٽمبر 1857ع جي شروعاتي تاريخن ۾ هڪ رات جو هٿيارن تي قبضو ڪري ورتو ۽ سکر کان وڌيڪ امداد پهچڻ جي انتظار ۾ هئا تـ سرڪار کي خبر پئجي ويئي. نتيجي ۾ "ڪئپٽن مانٽگمريءَ" (Captain Montgomery) بروقت باغي سپاهين کي گرفتار ڪري ور تو(16). اهڙين ڪوششن جي باوجود 23 سيپٽبر 1857ع تي اڌ درجن سپاهين ٻي ڪوشش ڪئي ۽ پنهنجون بندوقون ڀري اچي پلٽڻ جي ميدان تي قابض ٿيا، پر ان کلي بغاوت کي ايترو اڀرڻ جو موقعو نہ مليو(15). انهن سپاهين کي گرفتار ڪرڻ کان پوءِ سکر جي باغين کي به پڪڙيو ويو(16).

شڪارپور ۽ سکر سان گڏ جيڪب آباد بہ هن ڏس ۾ پوئتي پير نہ پاتو. جنگ آزاديءَ ۾ هن حصي جا مکيہ ليڊر هئا- سردار دريا خان جکراڻي، دلمراد خان کوسو ۽ شهر شاهپور جي سيد خاندان جو اعليٰ فردسيد عنايت شاه.

جيڪب آباد ضلعي جي انهن ٽنهي باغي اڳواڻن جي پوري علائتي ۾ چڱي مڃتا هئي. سردار دريا خان ۽ دلمراد خان پنه نجن قبيلن جا چڱا مٿس هئا، ۽ سيد عنايت شاه جو وري قلات، ڀاڳناڙي ۽ اپر سنڌ ۾ مريدن ۽ معتقدن جو وڏو حلقو موجود هنو. خاص ڪري ابڙن، سومرن، سرڪين، چاچڙن، ٻٻرن ۽ جتن جي هن سيد جي خاندان سان عقيد تمندي ۽ روحاني رشتو قائر هو. ان کان سواءِ لاشاري ۽ بگٽي قبيلي جا ماڻهو به سندن مريد هئا. بغاوت جي هن ٽه مور تيءَ پنهنجي اثر رسوخ سان جيڪب آباد ضلعي جي عوام کي انگريزي راڄ خلاف متحد ۽ منظم ڪرڻ لاءِ آماده ٿي پيو.

^{*} سپاهين کي موت جي سزا انهيءَ هنڌ تي ڏني ويئي، جتي اڄ امپريس مارڪيٽ ٺهيل آهي.

سنڌ ۾ انگريزن جون قائم ڪيل "بعبئي انفينٽري ريجمينٽ"، "بلوچ بٽالين" ۽ "بنگال ڪئوَلري" ئي مکي پلٽڻيون هيون. هنن مان ڪجه فوجين کي پنجاب ڏانهن بفاوت کي روڪڻ لاءِ موڪليو ويو هو(17). ۽ ڪجه حصو حيدرآباد ۽ شڪارپور ۾ رکيو ويو. جيڪب آباد ۾ جدا "سنڌ هارس ريجمينٽ" موجود هئي. هنن فوجين لاءِ انگريزن کي اميد هئي تہ باقي بچيل فوجي هن علائقي ۾ بغاوت کي روڪڻ لاءِ ڪافي ٿيندا، پر سردار دريا خان جکراڻي، دلمراد خان کوسي ۽ سيد عنايت شاه جي هلت چلت ٿيندا، پر سرڪار جي ارادن کي ڦيرائي ڇڏيو. ان ڪري سنڌ جي انگريز ڪمشنر موقعي جي نزاڪت خواه انگريزن لاءِ هڪ وڏي خطري کي محسوس ڪري ترت ئي ايران مان "سرجيمس آئو ٽرام" (Sir James Autram) ۽ "جنرل جان جيڪب" (Gen: John کي مدد لاءِ گهرائي ور تو ۽ اتر سنڌ جي ڪمان جو سربراه جنرل جان جيڪب کي مقرر ڪيو (18).

هن سموري بندوبست جي باوجود انگريزن کي سندن ڇاڙتن ۽ جاسوسن ذريعي اها ڄاڻ پئجي ويئي ته سردار درياخان جکراڻي، دلمراد خان کوسو ۽ سيد عنايت شاه منظر بغاوت ڪرڻ جا منصوبا سٽي رهيا آهن. ان ڪري جنگ آزاديءَ جي ٻن سرڪردن. سيد عنايت شاه ۽ دلمراد خان کوسي کي دادو ديري ۾ گرفتار ڪيو ويوسردار دريا خان جکراڻي پنهنجن ٻن ساٿين جي گرفتاريءَ جو ٻڌي، پٺيان جنگ جاري رکڻ جي خيال کان في الحال ٽڪرين ڏانهن فرار ٿي ويو، پر پوءِ کيس به گرفتار ڪيو ويو ويو (19).

هنن ٽنهي باغي سردارن گرفتار ٿيڻ کان پوءِ به بغارت جا منصوبا سٽيا ۽ انهن تي عمل ڪيو. کين سکر ۾ آڻي قيد ڪيو ويو، پر جيئن ئي کين موقعو مليو، تيئن هنن پنهنجي فڪري ۽ ذهني باغي رهبر سيد عنايت شاه کي رات جي وقت بنديخاني جي روشن دان رستي فرار ڪرائي ڇڏيو(20)، تہ جيئن هو باقي ٻن جي غير حاضريءَ ۾ انگريز سرڪار خلاف وڃي ذهن تيار ڪري. هن منصوبي تي عمل ڪرڻ جو معاوضو باقي ٻن رهبرن کي پنهنجي جان جي صورت ۾ ڏيڻو پيو ۽ کين ڪاري پاڻيءَ جي سزا ڏيئي سندن حياتيءَ جو خاتمو آندو ويو(21).

حتيتت اها آهي ته انگريزن جي غلط سياسي حكمت عمليءَ سنڌ جي سياست تي وڏو اثر وڌو ۽ ان جي ردعمل ۾ ئي هن ڌرتيءَ تي ڪيترين تحريڪن، تنظيمن، ۽ جماعتن جنر ورتو، بمبئي سرڪار جو ماٽيجي ماءُ وارو سلوڪ، سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگي واري تحريڪ جي پيدا ڪرڻ جو باعث بڻيو. پوءِ برطانيہ سرڪار ترڪن

سان اڻيئت ڪري پڻهنجي راڄ ۾ پنهنجي ئي خلاف "خلافت نجريڪ" کي جنر ڏنر. هن تحريڪ سنڌ جي سياسي تاريخ کي نئون موڙ ڏنو. ۽ هتي ڏارين خلاف نفرت وارو ٻج سائو سلو ٿي اڀرڻ لڳو. خلافت تحريڪ جي خاتمي کان پوءِ ننڍي کنڊ جي وڏين سياسي پارٽين "ڪانگريس" ۽ "مسلر لينگ" الڳ الڳ رهي بر آزاديءَ جي المراجع المراجع على المراجع الم

ا سنڌ جي سنڌيءَ کان عليحدگيءَ کان پوءِ هتاڻ جي سياسي ماجول ۾ نئين تبديلي رونما تي ۽ سنڌ سطح تي ماڻهن کي منظر ٿيڻ جو موقعر مليو. هنن پنهنجي محصوص سياسي حالتن جي روشنيءَ ۾ سنڌ جي ڀلائيءَ خاطر الڳ ۽ نئون سياسي لائحه عمل تيار كيو. لاهور واري ٺهراء كان پوءِ سنڌ به هندستان جي ٻين پرڳڻن واتگر ننڍي کنڍ جي ٻن وڏين پارٽين جي ڇڪتاڻ جو مرڪز بنجي ويئي، جيئن ترهن خطي جي اڪثريت مسلمان آباديء تي مشتمل هيئ، ان ڪري مسلم ليگ كي پنهنجي مقصدن حاصل كرڻ لاءِ كا به تكليف ڏسٽي نه پيئي. شروع كان وٺي آخر تائين انگريزي راج جي سموري دور ۾ اسان جي عالمن به ڪلهر ڪلهي ۾ ملائي عوام ۽ عوامي تخريڪن جو ساڻ ڏنن جن جي تفصيلي ذڪر مقالي جي ايندڙ ب دار دريا خان جکراتي پنهنجن بن سائين جي گرفتاري، جو ٻڏي، پنيان 1919ء س

جاري رکن جي خيال کال في الحال تنظي**اً تح**يل فرار شي ويو. سريس کسي مرکز فتر

(1) ضياءُ الدين: "تحريك آزاديءَ ۾ سنڌ جو حصو". (مقالو). نئين زندگي، حر سبور ياش سردان فرقال سي 200، م1966 ميمي مادروجاري المرا

(2) Dr. Azimusshan Haider: "History of Karachi", Karachi, Feroz Sons, دىن بى1974 . P. 20 - زهى باغى رقيم سيد منات شاه كى رات چى رقت بىدىغانى

(3) Syed Moinul Haq: "The Great Revolution of 1857", Karachi,

(4) عَلام رياني السندي 1857ع جي جنگ آزادي ". (مقالي) عامرار نئين زندگي دُين سندن حيات جو خاتم أننو وبواان. ·10 و 1957 يثه ريچارك

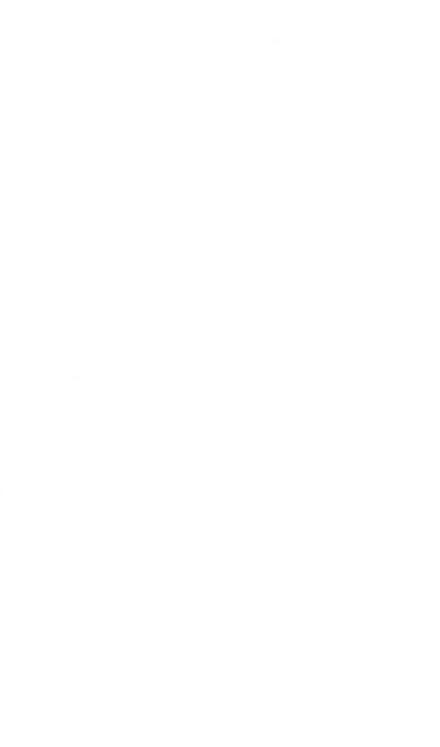
(5) See, Letter No. 328 of 1857, From Commissioner-in-Sind to Governor of Bombay, dated, 21st September, 1857.

(6) Syed Moinul Hag: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society, 1968, P. 298

- (7) Ibid, P. 299.
- (8) Dr. Azimusshan Haider: "History of Karachi", Karachi, Feroz Sons,
- .(9) Syed Moinul Haq: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society, 1968, P. 298.
- (10) Ibid, P. 298.
- (11) Dr. Azimusshan Haider: "History of Karachi", Karachi, Feroz Sons, 1974. P. 20.
- (12) Naomal Hotchand: "Memoirs of Seth Naomal", London, William Pollard & Co, 1915, P. 175.
- (13) See, Secret Letter No. 328 of 1857 from Commissionr-in-sind to Governor of Bombay, dated, Karachi, 21st September, 1857.
- (14) Syed Moinul Haq: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society, 1968, P. 300.
- (15) Ibid, P. 301.
- (16) عبدالكريىر گدائي: "تحريك آزادي، ۾ سنڌ جو حصو", (مقالو)، نئين زندگي، كراچي، ماه مارچ 1968ع، ص33.
- (17) بركت علي "آزاد": "1857ع جي جنگ ۾ جيكب آباد جو حصو", (مقالو)، هفتيوار آزاد, كراچي، مؤرخ 7 اپريل 1975ع، ص7.
 - (18) ايضاً, ص7.
- (19) بركت على "آزاد": "1857ع جي جنگ ۾ جيكب آباد جو حصو", (مقالو),, هفتيوار آزاد, مؤرخ 14، اپريل 1975ع، ص4.
 - (20) ايضاً، ص4.
- (21) عبدالكرير گدائي: "تحريك آزاديءَ ۾ سنڌ جو حصو", (مقالو)، نئين زندگي، كراچي، ماه مارچ 1968ع، ص33.

- THE ELG. P. 2007
- The Administrate Halder Tendary of Relation, Karpithe Farms Sons
- Palentan Maintill Regis from Street Powelships on as a " Augustian British Maintill Balentan Institute Street Street Balentan Institute Street Balentan Institute Street Balentan Balen
 - BUT PLANT IN
- 17) Dr. Astronssisen Findert "History of Karachi", Kargent, "eror Suns. Phys. F. 26.
- Year Neomal Holehand: "Memoirs of Seth Reamal", London, William Polisid & Co. 1915, Prints.
- 1731 Sary Secret Letter for 191 of the from Chinasana 12 and the Covernor of decidacy deed America, 21 "Soutembrillet 1951
- HAP Bred Moin's Flags "Inc Great Revolution of 188", wreading
 - and Market 120
- will write a little traper little a mile of men while the
- الله ير على علي "أول: " وكان في جنگ و جيڪي آباد جو حصر" بينالياء مانت از آداد بطراحي مير 4 تاريخ 1915ء هنڙ
- (81) [481, 40]
- (19) برخت على "آزاد": "7281ع بي جنگ ۽ جيڪ آباد جر حسر" اسالو ... هند ارآزاد عز خور الد بار 1757ع جيڪ
- ms had no
- (اور) ما المعلى المعلى

باب چوٿون سياست جو ابتدائي دور ۽ سنڌ جا عالم



باب چوٿون سياست جو ابتدائي دور ۽ سنڌ جا عالم سنڌ محمدن ايسوسيئيشن

تعارف: هن ننڍي کنڊ ۾ سنڌ ئي اهڙو واحد ملڪ هو، جيڪو سڀ کان آخر ۾ انگريز سامراج جي تسلط هيٺ آيو. هن خطي کي اهو پڻ شرف حاصل آهي ته ديس جي دودن ڌارين حڪمرانن کي سک سان ساه کڻڻ نه ڏنو. جيڪو سنڌين جي سياسي بصيرت ۽ قومي غيرت جو هڪ کليو ثبوت آهي.

سن 1843ع ۾ نيپئير (Napier) جي قبضي ڪرڻ (۱) سان سنڌ جو ملڪ پنهنجي آزادي ۽ خودمختياري وڃائي ويٺو. مگر هن ملڪ جي ماڻهن ان قومي نقصان جي ازالي لاءِ جلد ئي اک پٽي. هنن نه رڳو هٿيار هٿ ۾ کنيا، پر هو سياسي طرح سان به منظم ۽ متحد ٿيڻ لڳا. سڀ کان اڳ سنڌ ۾ "سنڌ سڀا" نالي هڪ ملڪي جماعت جو قيام عمل ۾ آيو، جنهن ۾ سنڌ جا مسلم توڙي غير مسلم گڏجي پنهنجي ملڪي مسئلن کي حل ڪرڻ جي ڪوشش ڪندا هئا (2). اڳتي هلي جڏهن انگريز سرڪار "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪريو" جي حڪمت عملي اختيار ڪئي (3) ۽ ملڪ ۾ رنگ، نسل ۽ دين، ڌرم جا ويڇا وجهڻ شروع ڪيا، ته سنڌين ۾ مذهبي گروه بندي ٿيڻ لڳي. وقت جي سرڪار ڏسي وائسي سنڌ جي مسلمان کي نظرانداز ڪرڻ شروع ڪيو ۽ مسلمان پاڻ بر "غيرن سان نفرت ڪرڻ" واري جذبي هيٺ فرنگي قدرن ۽ طريقن کي اختيار ڪرڻ بي تابري واري بيٺا(4). جنهن جو اهو نتيجو نڪتو ته هندن ۽ مسلمان جي حيثيت ۽ لياقت ۾ فرق ٿيڻ لڳو. هندو تعليم، دولت ۽ اثررسوخ ۾ وڌندا ويا، ۽ مسلمان پوئتي يوندا ويا (5).

اهو احساس زيان سنڌي مسلمانن جي بيداريءَ جو هڪ وڏو ڪارڻ بنيو. ۽ غير مسلم سنڌين سان گڏجي ڪر ڪرڻ جي باوجود، هو پنهنجي مخصوص حالتن ۽ مسئلن جي روشنيءَ ۾ جدا منظر ٿيڻ لڳا. مطالعي هيٺ آيل دؤر ۾ ڪراچيءَ کي سنڌ جي تعليمي، سماجي، ثقافتي، تجارتي ۽ سياسي مرڪز جي حيثيت حاصل هئي، ان ڪري سنڌي مسلمانن جي جماعت سازيءَ جو آغاز بهن ئي شهر کان ٿيو.

سن 1880ع ۾ ڪراچيءَ ۾ پهريون دفعو "انجمن اسلام" نالي مسلمانن جي هڪ جماعت قائم ٿي(6). جيڪا خانبهادر حسن علي آفندي. ميرزا علي محمد ۽ مولانا اله بخش "ابوجهو" جي ڪوششن جو نتيجو هئي. جيئن ته هن جماعت جي صدارت خانبهادر حسن علي آفندي کي ڏني ويئي هئي، جيڪو بنيادي طرح سان ته هڪ غريب خاندان جو فرد هو(7). پر هو پنهنجي محنت ۽ جدوجهد سان ترقي ڪري وڃي ناميارو وڪيل، ۽ امير ماڻهو بنيو. ان ڪري وقت جي پيرن ۽ ميرن کي سندس اڳواڻي ڏکي لڳي ۽ صدارت جي مسئلي تي سنڌي مسلمانن ۾ اختلاف پيدا ٿي پيو ۽ آخرڪار هن نئين ۽ پهرينءَ سياسي جماعت جو ائين ئي خاتمو اچي ويو(8).

مولانا "ابوجهو" انهيءَ حقيقت تي هن طرح روشني وجهي ٿو:
پير هو اچي اختلاف صدارت
ڪي ميرن جي ڪن ۽ ڪي پيرن جي پارت
ڪي عصمت کي ڳولين، ڪي امامت،
نهي نا سگهي انجمن جي عمارت
انهيءَ ڳالهہ کي سال پنج چار گذريا
خيالات سڀ درس تدريس وسريا.

ان کان پوءِ ٻي ڪوشش جو آغاز فيبروري 1884ع ۾ ٿيو(9). جنهن لاءِ پڻ اهڙي نئين سوچ ڏيندڙ خانبهادر حسن علي آفندي ئي هو، جنهن جو ساٿ وري مولانا الهب بخش "اٻوجهو" ڏيئي رهيو هو(10). پر جيئن تہ کين هن کان اڳ اهو تجربو ٿي چڪو هو، تہ سنڌ جو طبقاتي نظام ۽ ذات پات جي رنگ ۾ رَتل معاشرو عوام جي ڀلائيءَ واري ڪم ۾ ڪيڏي رڪاوٽ بڻجي ٿو. ان ڪري ٻنهي جي متفق فيصلي سان اهو طئي ٿيو تہ هن انقلابي قدم کڻڻ کان اڳ عوام کي ذهني طور تي تيار ڪيو وڃي.

عوام ۾ ذهني انقلاب آڻڻ جو ڪر مولوي اله بخش "ابوجهي" پنهنجي سر تي کنيو. هو لڳاتار ۾ مهينا مختلف هنڌن تي وڃي، ماڻهن سان بحث مباحثن ذريعي کين قائل ڪندو ويو. (11). آخر ڪار سنڌ جي هن عالم جي ڪوشش رنگ لاتو، ۽ تاريخ 17 جمادي الاول سن 1301هـ مطابق 16 مارچ 1884ع تي "مجمع محمدي" نالي هڪ جماعت جو قيام عمل ۾ آيو. (12). جنهن کي "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" به چيو وڃي ٿو.

"مجمع محمدي" جي مركزي جماعت ٺاهڻ كان پوءِ، سنڌ ۾ ان جي شاخن قائمر كرڻ جو كبر به مولانا الله بخش " اېوجهو " جي حوالي كيو ويو. جنهن هك سال اندر جماعت جون سنڌ ۾ هيٺينءَ طرح شاخون قائم كرايون. (13).

جون 1884ع تي شڪارپور ۾.
 سيپٽمبر 1884ع تي لاڙڪاڻي ۾.

نبروري 1885ع تي سكر م.
 مارچ 1885ع تى حيدرآباد م.

هن جماعت جا پهريان عهديدار, ۽ ورڪنگ ڪاميٽيءَ جا ميمبر هن طرح

هئا: (14).

صدر: خانبهادر حسن علي آفندي نائب صدر: خانبهادر نجر الدين سيكريني: مولانا اله بخش "إبرجهو"

ميمبر سردار محمد يعقوب. شيخ محمد اسماعيل. خانبهادر خداداد خان، خان بهادر ولي محمد حسن علي، خانبهادر علي حسن علي، سيك علي ڀائي كريم جي، سيك غلام حسين چاڳلا,سيك نور محمد لالڻ، سيك صالح محمد عمر دوسل، سيك غلام حسين خالقذنو، سيك فيض محمد فتح على، ۽ شهزادو محمد يعقوب.

جيئن تـ "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" سنڌ جي مسلمانن جي پهرين سياسي پارٽي هئي. ان ڪري هن جماعت کي پوريءَ طرح سنڌ ۾ نهايت ڪاميابي حاصل ٿي. سن 1917ع تائين هن جماعت جي مرڪزي آفيس ڪراچيءَ ۾ رهي، ۽ ان کان پوءِ ڪجه وقت لاءِ سکر به جماعت جو مرڪز رهيو. (15). انهيءَ مرڪزي آفيس کان سواءِ جماعت جي هر هڪ ضلعي ۾ هڪ برانچ آفيس به هوندي هئي. هيءَ جماعت سن 1936ع تائين قائم رهي. مولانا اله بخش "ابوجهو" هن جماعت جو پهريون سيڪريٽري مقرر ٿيو ۽ سندس وفات کان پوءِ خانبهادر ولي محمد حسن علي جماعت جو آخر تائين سيڪريٽري ٿي رهيو (16).

سن 1884ع كان وئي 1936ع تائين جماعت جا صدر هيٺينءَ طرح هئا: (17).

| 1896ع تائين | کان | 1884ع | خانبهادر حسن علي آنندي |
|----------------|-----|-------|-------------------------------------|
| و1903 | کان | 1896 | بانبهادر قادرداد خان وزير آف خيرپور |
| تائين | | ٤ | |
| 1907ع | کان | 1903 | سردار محمد يعقوب |
| تائين | | ع | |
| 1912ع | کان | 1907 | خانبهادر شيخ صادق علي خان |
| تائين | | ٤ | |

| و1919ع | کان | 1912ع | شيخ محمد ابراهير |
|----------------|-----|-----------|-------------------------|
| تائين 1925ع | کان | و1919ع | سيد الهندو شاه |
| تائين 1933ع | کان | 1925 | سر شاهنواز ڀٽو |
| تائين 1936ع | کان | و 1933 | خانبهادر محمد ايوب كهڙو |
| تائين | | ٤ | |

ڪارڪردگي:

هيءَ جماعت جن مقصدن حاصل كرڻ لاءِ قائر كئي ويئي هئي، سي هن طرح هئا(18):

- سنڌي مسلمانن جي تعليم , معاشري ۽ عام مفادن جي نگهباني ڪرڻ.
 - 2. حكومت الكيان مسلمانن جا مسئلا پيش كري حل كرائن.
 - .3 حكومت سان وفاداري قائم ركن.
 - ننڍي کنڊ جي ساڳين مقصدن وارين جماعتن سان تعاون ڪرڻ.

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جي پوري ڄمار انهن ئي مقصدن جي حصول لاءِ وقف ٿيل نظر اچي ٿي. پر ان جي باقي خدمتن جو به ذڪر ڪجي ٿو:

سياسيي خدمتون: "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" كي جيڪڏهن سنڌي مسلمانن جو ابتدائي تنظيمي قدم ، ۽ سياسي تجربو چئجي ته ان ۾ ڪو به وڌاء نه ٿيندو . (19).

جيتوڻيك شروع ۾ هن جماعت كو به انقلابي يا قومي سياسي كارنامو ته سرانجام نه ڏنو، پر سنڌي مسلمانن جي حقن لاءِ آواز بلند كندي، نيٺ هك فعال ۽ منظم سياسي جماعت جو روپ اختيار كيو. هن جماعت جي سياسي خدمتن جو مختصر خاكو هن طرح آهي:

سنڌ جي بمبئيءَ کان جدائي: مطالعي هيٺ آيل دور ۾ "سنڌ جي بمبئي کان جدائيءَ واري تحريڪ" سنڌي مسلمانن جي ورهاڱي کان اڳ واري سياسي تاريخ ۾ اهر جاءِ ولاري ٿي. "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" نه صرف سنڌي عوامر کي سنڌ جي آزاد حيثيت جي فائدن کان باخبر ڪري. ان کي جدا ڪرڻ جو شعور ڏنو. پر هن

تحريك جو ڀرپور ساٿ ڏيندي، وقت به وقت سركار كان سنڌ كي بمبئيءَ كان الڳ كرڻ جا به مطالبا پئي كيا (20). ان كري سنڌ جي جدائيءَ واري تحريك جي كاميابيءَ جو سهرو هن جماعت جي سر تي ركجي ته ان ۾ كو به وڌاء نہ ٿيندو.

سائمن ڪميشن: سن 1919ع جو "گورنمينٽ آف انڊيا ائڪٽ" Government (Government) مندستاني عوام توڙي برطانيہ سرڪار جو هڪ آئيني تجربو هو، جنهن جي لاڳو ڪرڻ کان پوءِ عوام جي مطالبن تي حڪومت برطانيہ کي هن ائڪٽ تي نظر ثاني ڪرڻ جي ضرورت محسوس ٿي. آخر ۾ برطانيہ سرڪار تاريخ 8 نومبر 1927ع تي "سرجان سائمن" (Sir John Simon) جي اڳواڻيءَ هيٺ هڪ ڪميشن مقرر ڪئي(21) تہ جيئن اها وقت ۽ حالتن جي ضرورتن مطابق ائڪٽ ۾ تبديلين آڻڻ جي سفارش پيش ڪري (22).

"سائمن كميشن" قطعي طور تي هك پارليامينٽري كميشن هئي، جيكا برطانوي ايوان عام (House of Commons) جي پنجن، ۽ ايوان بالا (House of Commons) جي پنجن، ۽ ايوان بالا (Lords) جي ٻن ميمبرن تي مشتمل هئي (23). جيئن ته هن كميشن ۾ كنهن به هندستاني ميمبر كي نه كنيو ويو هو تنهن كري اها جيئن ئي سن 1929ع ۾ هندستان ۾ آئي ته ان جي تشكيل ۽ تعاون تي پوري ملك ۾ سخت احتجاج كيو ويو(24). اهڙي طرح ساڳيو رد عمل "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" به ظاهر كيو ۽ ان كميشن اڳيان نهايت زوردار لفظن ۾ "سنڌ جي بمبئيءَ كان عليحدگيءَ" جو مطالبو كيو (25). انهيءَ مطالبي جا لفظ اڄ به تاريخ جي ورقن ۾ هن طرح محفوظ آهن:

"سنڌ جي بمبئي کاتي سان شموليت، ڪنهن به طرح ڪا نہ ٿي ٺهي. اهر ميلاپ نسلي، جاگرافيائي، لساني، زراعتي، يا ٻئي ڪنهن به هڪجهڙائيءَ تي نٿو ٺهڪي اچي. اهر هڪ اتفاقي حادثو هو ته بمبئيءَ جي لشڪر سنڌ کي فتح ڪيو، جنهن ڪري ان کي بمبئي سان ڳنڍيو ويو، بمبئي علائقي سان رهڻ ڪري، سنڌ کي تعليمي، مالي ۽ سماجي طرح گهڻو نقصان پهتو آهي، جنهن ڪري اها بمبئي کاتي جي رهاڪن کان سڀ ڪنهن معاملي ۾ پوئتي رهجي ويئي آهي، انهن ۽ ٻين ڪيترن سببن ڪري هيءَ ايسوسيئيشن ڪميشن کي پرزور سفارش ٿي ڪري ته سنڌ کي بمبئي کاتي کان عليحدو ڪري، کيس جدا اسيمبلي ڏني وڃي، اها گهر سنڌ جي اڪثر رهاڪن جي آهي، جنهن ۾ مسلمان، پارسي، ڪرستان گهر جي تقوم پرست هندو به شريڪ آهن. هندستان جا سڀ مسلمان به ان گهر جي

تائيد ۾ آهن. "انڊين نيشنل ڪانگريس" (Indian National Congress) به ان تجويز جي اصول کي قبول ڪيو آهي. "(26)

جڏهن سائمن ڪميشن سنڌي عوام جي جائز گهر کي نظرانداز ڪندي. سنڌ جي جدائيءَ جي مخالفت ۾ فيصلو ڏنو (27) ته "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" وڏي سنجيدگيءَ سان انگريز سرڪار جي انهيءَ چال جو نوٽيس ورتو ۽ پرزور لفظن ۾ ڪميشن جي ان فيصلي جي مذمت ڪندي (28). هڪ ٺهراءُ بحال ڪيو ته:

"سائمن ڪميشن جي رپورٽ مان اهر صاف ظاهر آهي ته ان جي اشاعت ۽ عمل مان اسان کي ڪو به فائدو نه آهي، سنڌي مسلمانن جي سنڌ جي جدائيءَ واري جائز گهر کي ڏٺو وائنو نظر انداز ڪيو ويو آهي"(29).

اهڙيءَ طرح "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" تجويز ڪيل "گول ميز ڪانفرنس" ۾ هن مسئلي کي نئين سر پيش ڪرڻ جو پرو گرام جوڙير(30). آخرڪار هن ئي جماعت جي ڪوششن سان "پهرين گول ميز ڪانفرنس" ۾ سنڌ جي مالي معاملن جي تحقيق ڪرڻ جو فيصلو ڪيو ويو(31). ان سلسلي ۾ سن 1931ع ۾ "مائيلس ارونگ ڪاميٽي" Miles (Miles عير "مائيلس ارونگ ڪاميٽي " Irwing Committee) ناهي ويئي(32). "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" هن ڪاميٽيءَ اڳيان بي سنڌ جي جدائيءَ واري مسئلي کي حل ڪرائڻ لاءِ انگ اکر پيش ڪري، اهو ثابت ڪيو تي سنڌ مالي معاملن ۾ پنهنجي پيرن تي بيهي سگهي ٿي(33).

پوءِ جلد ئي سن 1931ع ۾ ٻي گول ميز ڪانفرنس ٿي (34). جنهن مسٽر بارن (47). جنهن مسٽر بارن (47) جي صدارت هيٺ سنڌ جي هندن توڙي مسلمانن جي ڪانفرنس سڏائڻ جو فيصلو ڪيو تہ جيئن "مائيلس ارونگ ڪاميٽي"(48). سنڌ "محمدن ائسوسيئيشن" هن ڪڍيل نتيجن تي تجويزون وئي سگهجن (35). سنڌ "محمدن ائسوسيئيشن" هن ڪانفرنس ۾ ڀرپور حصو ورتو ۽ پنهنجي نائب صدر جي نمائندگيءَ ۾ سنڌي مسلمانن جي جذبن ۽ امنگن جي ترجماني ڪئي(36). هن جماعت جي ڪوششن نيٺ رنگ لاتو ۽ سن 379ع جي ائڪٽ ۾ سنڌ جي جدائيءَ واري حق کي تسليم ڪيو ويو (37).

گول ميز كانفرنس: (Round Table Conference) برطانيه ۾ "كنزرويٽو (Labour Party) برطانيه ۾ "كنزرويٽو پارٽي" (Labour Party) جي جاءِ تي جڏهن "ليبر پارٽي" (Ramsay Mac Donald) اقتدار ۾ آئي تہ نئين وزيراعظم "ريمزي ميكڊانلڊ" (Ramsay Mac Donald) هندستان جي آئيني مسئلن كي نئين نظر سان ڏسڻ ۽ حل كرڻ جي كوشش كئي (38) . كيس خبر هئي تہ هندستاني عوام. جنهن "سائمن كميشن" جو آڌرياءُ كرڻ به پسند ن كيو، سو ان كميشن جي رپورٽ كي به قبول نہ كندو. ان كري هندستان جي

آئيني مسئلي جي حل جو بنياد اها رپورٽ نہ پر عوام جي صلاح هئڻ گهرجي. ان ڪري برطانيہ سرڪار پهريون ڀيرو 1930ع ۾ "گول ميز ڪانفرنس" Round Table) (Conference سڏائڻ جو فيصلو ڪيو(39).

جيئن ته برطانيه سرڪار جو هيءُ فيصلو هندستاني عوام جي گهرجن مطابق هو. ان ڪري هندستان ۾ "ڪانگريس پارٽي" (Congress Party) کان سواءِ باقي ٻين جماعتن سان گڏ "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" به هن فيصلي جي واکاڻ ڪئي (40).

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جيئن تہ "سائمن ڪميشن" جي رپورٽ کان مايوس ٿي چڪي هئي، ان ڪري هن جماعت جي ڪارڪنن "گول ميز ڪانفرنس" مان فائدي وٺڻ لاءِ پنهنجي اجلاس مؤرخ 12 جولاءِ 1930ع ۾ اهو فيصلو ڪيو تہ:

"ايندڙ آڪٽربر ۾ ٿيندڙ "گول ميز ڪانفرنس" ۾ جتي هندستان جا مختلف نمائندا پنهنجين تحريڪن ۽ تنظيمن جي ترجماني ڪندا اتي "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" پنهنجي صدر سر شاهنواز خان ڀٽي کي اهو اختيار ڏيندي گذارش ٿي ڪري ته هو به ڪانفرنس ۾ وڃي سنڌي مسلمانن جي جائز حقن جي حاصل ڪرڻ لاءِ تن. من ۽ ڌن جي بازي لڳائي" (41).

"گول ميز كانفرنس"(Round Table Conference) جي گڏجاڻي كان اڳ، هندستان جي كن سياسي پارٽين، جن ۾ كانگريس به هك هئي، هن كانفرنفس كي رد كري ڇڏيو(42). پر "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" اهڙي نازك وقت تي، سركاري در جو كردار ادا كندي اهڙين جماعتن جي كاركردگيءَ جي نه صرف مذمت كئي، بلك انهن جي مقابلي كرڻ لاءِ ميدان ۾ نكري اچڻ جا منصوبا به رٿيا(43).

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" سرڪار دوستيءَ واري سياسي حڪمت عمليءَ کي ڪر آڻيندي وقت جي سرڪار کان اها گهر ڪئي تہ ان جي به هڪ گيوضيءَ کي "گول ميز ڪانفرنس"(Round Table Conference) ۾ شرڪت ڪرڻ جو موقعو ڏنو وڃي(44)). آخر ۾ ان مطالبي کي مڃائڻ ۾ به ڪامياب ٿي ويئي، ۽ هن جماعت جو سرگرم ڪارڪن سر شاهنواز خان ڀٽو، بمبئي سرڪار طرفان "گول ميز ڪانفرنس" (Round) ڪارڪن سر شاهنواز خان ڀٽو، بمبئي سرڪار طرفان "گول ميز ڪانفرنس" Table Conference) جي شريڪ ٿيڻ لاءِ سنڌ جو نمائندو مقرر ڪيو ويو(45). جنهن جي ڪوششن سان ان ڪانفرنس ۾ "ارل رسل" (Earl Russel) جي اڳواڻيءَ هيٺ نائون نمبر ڪاميٽي ٺاهي ويئي تہ جيئن سنڌ جي جدائيءَ واري مسئلي تي تفصيل سان غور ڪري سگهجي(46). اهڙي طرح هن جماعت "گول ميز ڪانفرنس" (Round Table) عير ڪانفرنس" Conference)

عدم تعاون جي تحريك: "خلافت تحريك" جي وقت ۾ "كانگريس پارٽي" نه رڳو هندستاني مسلمانن جون همدرديون حاصل كرڻ ۾ كامياب ٿي، پر كيس مسلمانن جي قيادت كرڻ جو به موقعو مليو. هندو مسلم اتحاد جي ان قوت اڳتي هلي "عدم تعاون جي تحريك" جو روپ ورتو.

"عدم تعارن جي تحريك"، "كانگريس پارٽي" ۽ "خلافت تحريك" جي هك گڏيل حكمت عملي هئي. وقت جي سركار ان تحريك كي دٻائڻ ۽ ختم كرڻ لاءِ پنهنجي لك ۽ چٺ جا كيترائي طريقا استعمال كيا. سركار خلافتي عالمن كي منهن ڏيڻ لاءِ، سركاري عالمن كي اڀارڻ جي كوشش كئي. اهڙيءَ طرح "امن سيا" نالي هك هٿ ٺوكي جماعت ٺهرائي، عوام جي اتحاد كي ٽوڙڻ جا جتن كيا. ۽ باقي سياسي جماعتن تي پڻ اثر رسوخ هلائي كين "عدم تعاون جي تحريك" خلاف كم كرڻ لاءِ اڀاريو.

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" هن تحريك دوران سركار دوستيءَ جو ثبوت ڏيندي سنڌ ۾ "عدم تعاون تحريك" جي ڀرپور مخالفت كئي(47). هيءَ تحريك هڪ كان وڌيك دفعا هلي*. جنهن ۾ هر دفعي "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جو ردعمل ساڳيو ئي رهيو(48).

مذهبي خدمتون: سنڌ بنيادي طور تي جاگيردار نظام جي اشڪنجي ۾ جڪڙيل رهي آهي، جيئن ته اهر نظام هميشه انساني اهميت ۽ عظمت جو مخالف رهندو اچي ٿو. ان ڪري هن ئي ڌرتيءَ تي اهڙي نظام خلاف تحريڪن جو اڀرڻ هڪ فطري ڳالهه هئي. سنڌ ۾ تصوف ۽ ويدانت جون روحاني تحريڪون به اهڙين ئي حالتن جو ردعمل هيون. جن ڪيتري وقت تائين سنڌ جي سماج کي توازن ۾ رکيو. پر جڏهن سنڌ انگريزن جي ور چڙهي ته اسان جي ڪيترن ئي سماجي قدرن کي متاثر ٿيڻو پيو. خاص ڪري جڏهن انگريز سرڪار "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪيو" جي حڪمت عملي اختيار ڪئي ته سنڌ ۾ انگريز سرڪار "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪيو" جي حڪمت عملي اختيار ڪئي ته سنڌ ۾

^{• &}quot;عدم تعاون تحريك" هيك ڄاڻايل عرصن تي هلائي ويئي:

¹ آگسٽ 1920ع کان وٺي 12 فيبروري 1922ع تائين.

⁴ مارچ 1930ع كان وئي 4 مارچ 1931ع تائين.

³ جنوري 1932ع كان وئي 7 اپريل 1934 تائين.

پر 9 مئي 1933ع کان 1 آگسٽ 1933ع تائين مهمل رهي.

⁽Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme", Bombay, Allied Publishers, Private limited 1964 P-222)

وري رنگ نسل ۽ ذات پات جي ريتن ۽ رسمن کي نئين سر اڀرڻ ۽ اسرڻ جو موقعو مليو. ۽ ملڪ ۾ مذهبي تنگ دلي ۽ ڪٽرپڻي کي هوا لڳڻ شروع ٿي. هڪ طرف انگريز عيسائي پنهنجي سرڪار جي سرپرستيءَ هيٺ مذهبي تبليغ کي لڳي ويا تہ ٻئي طرف سنڌ جي هندن کي بہ ڄڻ تہ موقعو ملي ويو.

شدي تحريك: سال 1923ع ۾ كراچيءَ ۾ "شدي سڀا" جو قيام عمل ۾ آندو ويو(4). جنهن اڳتي هلي سنڌ ۾ مذهبي ڇكتاڻ كي جنم ڏنو، هن تحريك سبب "لاڙكاڻي ۽ شهداد كوت جا سنجو ڳي شيخ مرتد ٿيڻ لڳا ۽ پئنچات اڳيان هنن گريه وزاري كئي ته كين واپس پنهنجي ڏاڏاڻي ڌرم ۾ داخل كيو وڃي" (50). اهڙين حالتن ۾ سنڌ جي مسلمان عالمن كي به اڳتي قدم كڻڻو پيو. مولانا دين محمد وفائي لاڙكاڻي، مولانا محمد صادق راڻيپوريءَ، لاڙكاڻي، مولانا محمد صادق راڻيپوريءَ، واري كراچي، ۽ مولانا محمد صادق راڻيپوريءَ، مسلمان بنائڻ جي مهم جو آغاز كيو(51).

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" سنڌ جي انهيءَ نازڪ دور ۾ سنڌي مسلمانن جو ڀرپور ساٿ ڏنو ۽ اسلام جي خدمت لاءِ سرٽوڙ ڪوشش ڪئي. انهيءَ سلسلي ۾ ڪجهمثال ڏيڻ بي مهل نہ ٿيندا.

لاڙڪاڻي جا واقعا: سن 1927ع جي ابتدا ۾ لاڙڪاڻي جي بااثر هندن هڪ مسلمان عورت کي هرکائي هندو بنايو. جيئن ته ان عورت کي ٽي ٻار هئا، ان ڪري لاڙڪاڻي جي مسلمانن وڃي عدالت جا در کڙڪايا، تہ جيئن انهن ٻارن کي هٿ ڪري سگهن، هن لاءِ ته مسلمان پيءُ جو اولاد هئڻ ڪري، سندن پرورش توڙي تربيت مسلمانن وانگر ٿي سگهي. لاڙڪاڻي جي "ڊسٽرڪٽ مئجسٽريٽ" (District) مسلمانن جي هن جائز گهر کي رد ڪري ڇڏيو، ۽ نتيجي ۾ اتي هندو مسلم فساد ٿيا(52). پوريءَ سنڌ جي هندن انهن فسادن تي هاءِ گهوڙا مچائي ڏني. لاڙڪاڻي ۾ جملي 38 مسلمانن کي گرفتار ڪيو ويو، جن مان 15 ڄئن تي قلم 369 آءِ.پي.سي هيٺ ڪيس هلايو ويو(53). اهڙيءَ طرح لاڙڪاڻو مذهبي ڇڪتاڻ جو مرڪز بنجي ويو.

ذكر كيل عورت جي ذكوئيندڙ واقعي كان پوءِ لاڙكاڻي جي عبدالله كوكر ۽ دلاور خان ماڇيءَ جي ٻارن كي زوريءَ هندو بنايو ويو(54). لاڙڪاڻي جو "سب ڊويزنل مئجسٽريٽ" (Sub-Divisional Magistrate)۽ ٻيا واسطيدار عملدار هندو هئا، ان

ڪري اهي غير جانبداريءَ تي عمل ڪري نہ سگهيا ۽ نتيجي ۾ لاڙڪاڻي جون حالتون وڌيڪ سنگين ٿي ويون ۽ وري هنگامن جي شروعات ٿي(55).

"سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" لاڙڪاڻي جي واقعن تي پنهنجو شديد ردعمل ظاهر ڪيو ۽ پنهنجين گڏجاڻين ۾ واسطيدار هندو عملدارن جي زوردار مذمت ڪئي ۽ سنڌ جي مسلمانن کي 13 جنوري1928ع تي "يوم لاڙڪاڻو" ملهائڻ جي اپيل ڪئي(56). جنهن تي پوريءَ سنڌ ۾ سٺو اثر ظاهر ٿيو ۽ هنڌين ماڳين "يوم لاڙڪاڻو" ملهايو ويو(57).

لاڙڪاڻو هندن ۽ مسلمانن لاءِ قانوني جنگ جو هڪ محاذ بنجي چڪو هو. هتان جي "ريزيڊنٽ مئجسٽريٽ" (Resident Magistrate) مسٽر روپچند (Mr. جي "ريزيڊنٽ مئجسٽريٽ" (Rupchand) مسٽر روپچند (58)، پر شهر جي معزز مسلمانن خاص طرح سان خداداد خان سرهيي مسلمانن جي اخلاقي، مالي ۽ قانوني مدد ڪئي (59). ريزيڊنٽ مئجسريٽ جي فيصلي خلاف "سيشن جج" ۽ قانوني مدد ڪئي (Session Judge) جي ڪورٽ ۾ ڪيس داخل ڪيو ويو(60) ۽ نتيجي ۾ مسلمانن کي ڪاميابي حاصل ٿي. سيشن جج "مسٽر نارمن" (Mr. Norman) پنهنجي فتويٰ ۾ نرڳو مسلمانن کي بي ڏوهي ٺهرايو، پر "ريزيڊنٽ مئجسٽريٽ مسٽر روپچند" تي بر ڇنڊا اڇلايا ته هن فرقيواران نوعيت جو فيصلو ڏنو آهي(61).

سيشن جج جي فيصلي خلاف سموريء سنڌ جي هندن ننهن چوٽيءَ جو زور لڳائي، بمبئي سرڪار کي انهيءَ فتويٰ خلاف اپيلون ڪيون(62). "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" انهن حالتن جو ڀرپور مقابلو ڪيو ۽ هندن جي اڻ وڻندڙ ارادن کي ناڪام بنائڻ لاءِ بمبئي سرڪار کي سختيءَ سان چتاءُ ڏنر ته لاڙڪاڻي جا مسلمان اڳيئي هندو عملدارن جي ڏاڍاين جو نشانو بنجي، مالي ۽ جاني نقصان سهي چڪا آهن. جنهن جو ڪي قدر ازالو مسٽر نارمن پنهنجي غير جانبدارانه فتويٰ ۾ ڪيو آهي. هاڻي جيڪڏهن بمبئي سرڪار هندن جي مسٽر نارمن خلاف ڪيل اپيل تي، ڪو به توجهه جيڪڏهن بمبئي سرڪار هندن جي مسٽر نارمن خلاف ڪيل اپيل تي، ڪو به توجهه ديندي (63).

آريا سماج: "شدي سڀا" جي قيام کان پوءِ سنڌ جي ڪيترين غير مسلر مذهبي جماعتن منظر نموني سان مذهب اسلام خلاف ڪر ڪرڻ شروع ڪيو. اهڙين جماعتن ۾ "آريا سماج" جو نالو مثال طور پيش ڪري سگهجي ٿو.

هن جماعت طرفان سنڌ جي مختلف هنڌن تي مذهبي گڏجاڻين جي نالي ۾ اسلام ۽ ان جي پيغمبر خلاف تحريڪ هلائي ويئي. سن 1928ع ۾ "آريا سماج" جي ميرپور واري شاخ انهيءَ ڏس ۾ جڏهن سڀ کان اڳري ٿي ويئي تہ "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" وقت جي سرڪار جو ان طرف ڏيان ڇڪائيندي مٿن قانوني ڪاروائي ڪرڻ جي گهر ڪئي(64).

عالمن جو حصو: "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ مان معلوم ٿئي ٿو ته سنڌ جي عالمن هن جماعت ۾ ڀرپور حصو وٺي، پنهنجي ملڪ ۽ قوم جي خدمت ڪئي. هيءَ جماعت جيتوڻيڪ خانبهادر حسن علي آفنديءَ سان گڏ مولوي اله بخش "اٻوجهجي" جي محنت ۽ ڪوشش جو نتيجو هئي، پر اڳتي هلي ساڻن هن جماعت ۾ شامل ٿي جن عالمن ساٿ نڀايو، تن مان مولانا دين محمد وفائي (ڪراچي) مولانا حڪيم فتح محمد سيوهاڻي (ڪراچي) مولانا عبدالحڪيم، مولانا محمد سليمان ٻنوي (لٽر) ۽ مولانا حڪيم فحمد عالم (لاڙڪاڻو) جا نالا قابل ذکر آهن.

ريشمي رومال تحريك

تعارف: سن 1857ع كان 1900ع تائين عالر اسلام ۾ وڏيون تبديليون اچي چڪيون هيون. پورو هندستان فرنگي راڄ ۾ اچي چڪو هو. ان كان سواءِ برطانيم. پنهنجيءَ سلطنت جو دائرو مصر ۽ سوڊان تائين وڏائي ڇڏيو هو. ٻئي طرف وري آفريكي ملكن جي مسلمان حصن تي اٽليءَ ۽ فرانس جون حريص نگاهون ڄمي چڪيون هيون. اهڙيءَ طرح انڊونيشيا وري هالينڊ جي قبضي هيٺاهي چڪو هو.

سنڌ ۽ هند جي مسلمان لاءِ اها بدلجندڙ حالت تشويش جو باعث بڻي. ان کان پوءِ
سندن آخري سهارو يعني ترڪي ملڪ، جيڪو عالم اسلام جو مرڪز ۽ خلافت جو
وارث هو، تنهن جي بہ پاش پاش ٿيڻ جون حالتون ظاهر ٿي پيون. سن 1911ع ۾
طرابلس ۾ جنگ جو آغاز ٿيو، جنهن هتان جي مسلمانن کي وڌيڪ پريشان ڪري
ڇڏيو. ان کان پوءِ برطانيہ پنهنجي غلط حڪمت عمليءَ ۽ بد نيتيءَ جي نتيجي ۾
ترڪيءَ کي پهرين مهاڀاري لڙائيءَ ۾ شريڪ ٿيڻ تي مجبور ڪيو، انهيءَ سموري
پس منظر "ريشمي رومال تحريڪ" کي جنم ڏنو.

مولانا عبيدالله سنڌي ان زماني ۾ پير جهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" جو مهتمر هو، جنهن کي شيخ الهند مولانا محمود الحسن کان ديوبند پهچڻ لاءِ حڪر مليو. مولانا صاحب حڪر جي پوئواري ڪندي ديوبند پهچي ويو(65)،

جتى هن مولانا محمود الحسن جي ئي تعاون سان سن 1909ع ۾ "جمعيت

الانصار" نالي هڪ جماعت قائم ڪئي (66). ۽ جنهن جو پاڻ سيڪريٽري ٿي ڪر ڪرڻ لڳو. هن عرصي دوران مولانا ابوالڪلام آزاد سن 1912ع ۾ "جمعيت حزب الله" قائم ڪئي (67). ٻه سال پوءِ يعني 1914ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ دهليءَ ۾ وڃي "نظارة المعارف" نالي هڪ جماعت ٺاهي(68). هن تنظيمي تحريڪ دوران کيس حڪيم اجمل خان، نواب وقارالملڪ، ڊاڪٽر انصاري ۽ مولانا ابوالڪلام آزاد سان گڏجي ڪم ڪرڻ جو موقعو مليو.

مولانا صاحب هن عرصي دوران دهليء جي فتحپوري مسجد ۾ "قاسر العلوم" نالي مدرسو قائر ڪيو(69)، جيڪو حقيقت ۾ "نظارة المعارف" جي تحريڪ جو ئي نتيجو هو. مولانا عبيدالله هن مدرسي جي معرفت شاگردن ۾ قومي جذبي جو روح ڦوڪڻ شروع ڪيو ۽ ان سلسلي ۾ اتي "موتمر الانصار" نالي شاگرد جماعت جو بنياد وڌو(70). مولانا سنڌي وڏي جوش ۽ جذبي سان سنڌ ۽ هند جي عوامي ذهن کي انگريزن خلاف تيار ڪري رهيو هو ۽ اهر ڪر اڃا اڌورو ئي هو، ته مولانا محمودالحسن کيس افغانستان ۾ وڃي ڪر ڪرڻ لاءِ آماده ڪيو. جيتوڻيڪ مولانا عبيدالله هندستان ۾ رهي ڪري انقلابي ڪر ڪرڻ ۽ ماڻهن کي تيار ڪرڻ جي حمايت ۾ هو، پر پوءِ مولانا محمودالحسن جي امر جي آڏو اچي نه سگهيو ۽ لاچار افغانستان ڏانهن هجرت ڪرڻ لاءِ تياري ڪرڻ لڳو(71).

مولانا عبيدالله سنڌي مڪمل تياري ڪرڻ کان پوءِ مولوي عبدالله لغاريءَ کي ساڻ ڪري مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي تعاون سان (72). 15 آڪٽوبر 1915ع تي وڃي ڪابل پهتو(73). جتي پهچڻ کان پوءِ کيس خبر پيئي تہ مولانا محمود الحسن ٻاهرين طاقتن جي مدد ۽ سهاري سان هندستان کي انگريزن کان آزاد ڪرائڻ لاءِ سوچي رهيو آهي. جيئن تہ مولانا سنڌي، سنڌ کي ڇڏي چڪو هو ۽ مولانا محمودالحسن جي منصوبي کي عملي جامي پهرائڻ کان سواءِ هن لاءِ ٻيو چارو ئي نہ رهيو هو. ان ڪري سندس ئي ڪوششن سان "ريشمي رومال تحريڪ" جو آغاز ٿيو.

مولانا محمود الحسن هندستان ۾ هڪ اهڙو انقلاب آڻڻ ٿي گهريو. جيڪو ٻن ذريعن سان برپا ٿي سگهيو ٿي. پهريون، هندستان اندر بغاوت ڪرائڻ ۽ ٻيو، هندستان جي اتر اوله سرحد تي قبائلين کان ڪنهن طاقتور حڪومت جي نگرانيءَ هيٺ حملو ڪرائڻ. انهيءَ مقصد کي پوري ڪرڻ لاءِ يارهن منصوبا بنائي، انهن تي عمل ڪيو ويو، جن جو خلاصو هن طرح آهي:

.1 ملك جي اندر هندو مسلم اتحاد قائم كري ماڻهن كي بغاوت لاءِ آماده كرڻ.

- دير تعلير يافته عالمن جي طبقي ۽ جديد تعلير يافتہ طبقي کي ذهني طور تي
 هڪ ٻئي جي ويجهو آڻڻ(74).
- بين الاقوامي دنيا, خاص ڪري چين، برما، انڊونيشيا، فرانس ۽ آمريڪا کي پنهنجو هر خيال بنائڻ(75).
- 4. هندستان ۾ انگريز اقتدار تي حملي ڪرڻ لاءِ نقشر بنائڻ ۽ قبائلي ماڻهن کي جنگي تربيت ڏيڻ(76).
- 5. فرنگي سرڪار جي جاسوس کاتي خواه فوج ۾ پنهنجا ماڻهو موڪلي سندن منصوبن کان باخبر ٿيڻ.
 - انقلاب کان پوءِ واري عرصي لاءِ عبوري حكومت جو خاكو ٺاهڻ(77).
 - .7 سنڌ ۽ هند ۾ بغاوت جا مرڪز ٺاهڻ ۽ نوجوانن کي جنگي تربيت ڏيڻ(78).
- 8 کابل، انقره، استنبول، قسطنطنيه، ۽ برلن ۾ رضاڪارن جي ڀرتيءَ جا
 مرکز کولڻ.
 - .9 روس ۽ جرمنيءَ کي ترڪي حڪومت جو مددگار بنائڻ (79).
 - .10 حملي لاءِ كي محاذ مقرر كرڻ ۽ افغان حكومت كان رستي جي اجازت وٺڻ(80).
 - 11. حملي ۽ بغاوت لاءِ هڪ ڏينهن مقرر ڪرڻ(81).

انهيءَ مقصد کي حاصل ڪرڻ لاءِ مولانا عبيدالله سنڌي ۽ مولانا محمود الحسن پنهنجي پنهنجي اختيار ۽ لياقت مطابق ڪر جو آغاز ڪيو. مولانا عبيدالله سنڌي دهليءَ ۽ ديوبند ۾ "جمعيت الانصار" جي قيام کان وٺي "موتمر الانصار" جي تشڪيل تائين هندومسلم اتحاد ۽ عام ذهنن جي تياريءَ جو ڪر ڪري چڪو هو. ان کان پوءِ کيس ڪابل ۾ رهي باقي ڪر ڪرڻو هو. هن طرف مولانا محمود الحسن هندستان ڇڏي مکي ۽ مديني ۾ ترکيءَ جي حڪمرانن سان رابطي ۾ رهيو. هن مکي ۾ ترک گورنر غالب پاشا سان ملاقات ڪئي ۽ کيس پنهنجو هم خيال بنايو.

مولانا عبيدالله سنڌي افغانستان ۾ پهچڻ کان پوءِ جنگي نقشا تيار ڪيا(82). ۽ ترڪيءَ خواه جرمنيءَ جي وفدن سان گڏيل مشورا ڪيا(83). ان کان سواءِ راجا مهندر پرتاب جي صدارت ۾ "عارضي حڪومت" تشڪيل ڏني(84). ۽ "جنود ربانيءَ" جي نالي سان فوج تيار ڪئي(85).

جيئن ته مولانا عبيدالله سنڌي ۽ مولانا محمود الحسن هڪ ٻئي کان ڪافي پري هئا، ان ڪري مولانا عبيدالله سنڌ ۽ هند جي مکيه انقلابي اڳواڻن سان رابطو ڪيو ته جيئن سندس ۽ مولانا محمود الحسن جي وچ ۾ آسانيءَ سان خيالن جي ڏي وٺ ٿي سگهي. ان سلسلي ۾ پهريائين مولانا عبدالله لغاريءَ کي هندستان موڪليو ويو ته راجا مهندر پرتاب ۽ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جا خط کڻي مولانا محمد علي، ڊاڪٽر انصاري ۽ حڪير اجمل کي وڃي سلامتيءَ سان پهچائي، ۽ مولانا غلام محمد دينپوريءَ، مولانا تاج محمود امروٽي ۽ پير جهنڊي جي پير رشد الله صاحب کان انگريزن خلاف جهاد جي اجازت وئي واپس ڪابل موڪلي(86).

مولانا عبدالله لغاريء جي سنڌ ۾ آمد کان پوءِ مولانا عبيدالله سنڌي افغان حڪومت سان معاهدي ڪرڻ ۾ ڪامياب ٿي ويو. جنهن مطابق ترڪ فوجن کي سرحدي علائقن مان لنگهڻ جي اجازت ملي ويئي. مولانا عبيدالله ۽ افغانستان جي نائب سلطنت نصر الله خان اهو سڄو معاهدو ۽ حملي ڪرڻ جي تاريخ جي منظوريءَ جي عبارت هڪ ريشمي رومال تي اثائي ڇڏي. اها عبارت عربي زبان ۾ هئي، جنهن تي عبارت هڪ ريشمي رومال تي اثائي ڇڏي. اها عبارت عربي زبان ۾ هئي، جنهن تي خبيب الله خان ۽ سندس ٽنهي پٽن جون صحيحون ٿيل هيون. اهو رومال ۽ ٻين ماڻهن ڏي روشمي رومالن تي لکيل خط شيخ عبدالحق نالي نومسلم جي حوالي ڪيا ويا. جيڪو انهيءَ وقت افغانستان ۽ هندستان ۾ ڪپڙي جو ڪاروبار به ڪندو هو ۽ تحريڪ جي پيغام رسانيءَ جو ڪر به چڱي نموني ۾ سر انجام ڏيندو هو.

شيخ عبد الحق كي هدايت كئي ويئي هئي ته جيك هن ٿي سگهي ته پاڻ حيدر آباد سنڌ پهچي رومال شيخ عبد الرحيم كي ڏئي، جنهن كي اڳ ۾ ئي پروگرامر دنل هو ته اهر رومال حج تي وڃي شيخ الهند جي حوالي كري، پر جيك هن شيخ عبد الحق كو خطرو محسوس كري ته پوء اهو رومال پشاور جي كاركن حق نواز جي حوالي كري (87).

شيخ عبدالحق كابل مان روانو ٿيو ۽ ملتان ۾ پهچي، اچي ربنواز جو مهمان ٿيو، ۽ كيس ان راز كان واقف كيائين(88). انهيءَ عرصي دوران سندس ميزبان ربنواز انهن مان هڪ رومال كڻي وڃي ملتان ڊوينن جي كمشنر كي ڏيكاريو، جنهن بروقت انهيءَ خط تي كو توجه نه ڏنو. شيخ عبدالحق كي ڏيكاريو، جنهن بروقت انهيءَ خط تي كو توجه نه ڏنو. شيخ عبدالحق كي جڏهن اهو احساس ٿيو ته رب نواز ساڻس غداري كئي آهي ۽ مڙني واسطيدارن كي گرفتار كرائڻ جو منصوبو سٽيو آهي، تڏهن پاڻ هكدم دين پور پهچي ويو ۽ ريشمي رومال وارا باقي خط وڃي مولانا غلام محمد صاحب جي حوالي كيائين، پر اهو رومال جنهن تي تحريك جو منصوبو اڻيل هو، سوهن کڻي وڃي حيدر آباد ۾ شيخ عبدالرحير جي حوالي كيو(88).

هوڏانهن ملتان جي ڪمشنر خط تي توجه نه ڏيڻ جي باوجود اهو جاسوس کاتي

جي حوالي ڪري ڇڏيو. جنهن خط جو مطالعو ڪري حڪومت کي آگاه ڪيو تہ ڪا وڏي سازش سٽي ويئي آهي، ۽ ان لاءِ باقي خطن ۽ واسطيدار ماڻهن کي هٿ ڪيو وڃي. حڪومت تحرڪ ۾ اچي ويئي ۽ دين پوري بزرگن، مولانا عبدالله لغاري، مولانا تاج محمود امروٽي ۽ جهنڊي وارن بزرگن کي گرفتار ڪري ورتائين(90) شيخ عبدالرحيم جنهن کي اصلي رومال ملي چڪو هو، کيس جڏهن گرفتار ڪرڻ لاءِ فوج ڀتيون ڀڃي سندس گهر ۾ ڪاهي پيئي، تہ پاڻ مفرور ٿي ويو، پر اهو رومال فوجين کي هٿ اچي ويو ۽ اهڙيءَ طرح "ريشمي رومال تحريڪ" جو راز کلي پيو، ۽ هيءَ تحريڪ هميش لاءِ ختر ٿي ويئي، ۽ هيءَ تحريڪ هميش

عالمن جو حصو: مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سن 1857ع واري واقعي کان پوءِ هيءَ پهرين تحريك هئي، جنهن ۾ سنڌ ۽ هند جي عالمن گڏجي بهرو ورتو ۽ انگريزن کي پنهنجي ڌرتيءَ تان لوڌي كڍڻ خاطر ننڍي کنڊ کان سواءِ ٻاهرين ملكن ۾ به ساڻن وڙهڻ لاءِ مركز قائم كيا.

هن تحريك مر سنة جي عالمن ۽ اڳواڻن ڀرپور حصو ورتو, جن مان, پير اسد الله شاهر, مولانا تاج محمود امروٽي, مولانا عبدالله لغاري, مولانا محمد صادق كڏي وارو, شيخ عبدالرحير, حكير عبدالتيور, شيخ عبدالمجيد سنڌي, شيخ ابراهير سنڌي, حاجي شاه بخش, فتح محمد ۽ محمد ميان منصور جا نالا ذكر كرڻ جي لائق آهن.

مولانا عبيدالله سنڌي، جيتوڻيڪ سندس واسطو سنڌ ڌرتيءَ سان نهو، پر پوءِ به سنڌي سڏائڻ ۾ فخر محسوس ڪندو هو، سو تحريڪ جو مرڪزي ڪردار ٿي رهيو. ان کان سواءِ مولانا عبدالله لغاري تحريڪ جي پهرئين مرحلي ۾ سندس ساٿي ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح شيخ عبدالرحيم جي شخصيت ۽ حيثيت کي پڻ انهيءَ سلسلي ۾ نظر انداز ڪري نٿو سگهجي، جيڪو مولانا عبيدالله سنڌيءَ ۽ مولانا محمود الحسن جي وچ ۾ رابطي جي ڪڙي بڻيو هو.

مولانا عبيدالله سنڌيءَ جڏهن افغانستان ۾ "جنود رباني" نالي فوج قائر ڪئي تہ ان ۾ مولانا تاج محمود امروٽيءَ ۽ پير اسد الله شاه کي ليفٽينٽ جنرل، شيخ ابراهير سنڌيءَ کي ميجر جنرل، مولانا عبدالله لغاري، شيخ عبدالرحير ۽ مولانا محمد صادق کڏي واري کي ڪرنل، ۽ حاجي شاه بخش کي ليفٽيننٽ ڪرنل مقرر ڪيرويو هو. ان کان سواءِ سنڌ ۾ امروٽ، حيدرآباد ۽ ڪراچي هن تحريڪ جا مکيدر هئا.

بمبئيءَ كان عليحدگيءَ جي تحريك

سنڌ جو بمبئيء سان الحاق: سر چارلس نيپئير (Sir Charlis Napier) سن 1847ع ۾ سنڌ کي خير آباد چيو. جنهن کان پوءِ سنڌ جي خودمختيار صوبائي حيثيت کي ختر ڪري، کيس بمبئي پر ڳئي جو حصو بنايو ويو(92)، ۽ بمبئيءَ جي سرڪاري عملدارن مان "مسٽر رابرٽ پرنگل" (Mr. Robert Pringle) کي سنڌ جو پهريون ڪمشنر مقرر ڪيو ويو(93). هن کان اڳ نيپئير (Napier) سنڌ جي خودمختيار گورنر جي حيثيت سان سڌو سنئون هند سرڪار جي گورنر جنرل جي ماتحت رهي ملڪ جو انظام هلائيندو هو، پر ان کان پوءِ سنڌ جي ڪمشنر کي بمبئي جي گورنر جي ماتحت به ماتحت بي انتظام ويا.

سنڌ کي بمبئي صوبي جي حصي بنائڻ لاءِ سرڪار اهو تائر ڏنو تہ سنڌ جو انتظام جيڪو هن کان اڳ لشڪري راڄ (Martial Law) جي اصولن هيٺ هلايو ويندو هو، تنهنجو خاتمو آڻجي. ان لاءِ ملڪ جو انتظام غير فوجي عملدارن جي هٿ ۾ ڏنر ويو(94).

وقت جي سرڪار پنهنجي بچاء يا مفاد ۾ سنڌ کي بمبئيءَ سان ملائڻ لاءِ اهو ئي جواز پيش ڪيو، پر ان لاءِ ڪيترن ئي ٻين هيٺ ڄاڻايل سببن جي به نشاندهي ڪرائي سگهجي ٿي:

سر چارلس نيپئير (Sir Charlis Napier) نه صرف سنڌ تي غير قانوني ۽ ٺڳيءَ سان قبضو ڄمائي، پنهنجي ساک وڃائي چڪو هو، بلڪ گورنر جي حيثيت ۾ سندس تقرري به هن جي ساک خلاف ڀڙڪيل باه تي گاسليٽ جو ڪر ڏنو. جن آفيسرن هن جي گناهن جي اپٽار ڪئي هئي، سي بمبئي سرڪار سان تعلق رکندا هئا. ان ڪري وقت جي سرڪار پنهنجن آفيسرن کي خوش رکڻ لاءِ سنڌ جو انتظام سندن حوالي ڪرڻ ٿي گهريو.

سر چارلس نيپئير سنڌ تي قبضي ڪرڻ کان پوءِ ٽالپر حڪمرانن کان هٿ ڪيل خزاني مان اندازو لڳائي چڪو هو تہ سنڌ هڪ سکيو ستابو ۽ امير ملڪ آهي. هن ملڪ جي آسودگي ۽ معاشي خوشحالي ئي ڌارين کي پاڻ ڏانهن متوجهه ڪرڻ جو ڪارڻ پئي رهي آهي. سر چارلس نيپئير جي سنڌ ڇڏڻ کان پوءِ سامراجي قوتن کي سنڌ جي استحصال ڪرڻ جو ان کان وڌيڪ ڪو ٻيو وجه نٿي ملي سگهيو تہ سنڌ کي سنئون سڌو ڪنهن مناسب مرڪز سان ملايو وڃي ۽ آسانيءَ سان پنهنجون من گهريون مرادون سڌو ڪنهن مناسب مرڪز سان ملايو وڃي ۽ آسانيءَ سان پنهنجون من گهريون مرادون

پوريون ڪري سگهجن.

سنڌ تي چئن سالن جي حڪمراني ڪرڻ جي باوجود انگريز سرڪار کي اهو شدت سان احساس هو ته سنڌ جا غير تمند ۽ محب وطن ماڻهو موقعو ملڻ تي پنهنجي آزادي ۽ خودمختاريءَ لاءِ جنگ وڙهي ٿي سگهيا. ان ڪري کين هڪ مضبوط انتظامي گرفت ۾ رکڻ لاءِ سنڌ کي بمبئي سان ملايو ويو(95).

الحاق جا اثر: سن 1847ع كان وٺي سن 1936ع تائين سنڌ پنهنجي الحاق واري زماني ۾ ڪيتريون ئي سختيون سٺيون ۽ ڏکن جا ڏونگر ڏوريا، جن جو تفصيل سان ذڪر ڪرڻ هن مقالي جي موضوع کان ٻاهر آهي، پر ڪن مکيد مسئلن جي نشاندهي ڪرڻ تڏهن بر بي مهل نہ ٿيندو.

سر چارلس نيپئير جي فريب ۽ ٺڳيءَ اڳ ۾ ئي سنڌ جي آزاديءَ کي ڌڪ رسايو هو. ۽ هڪ خودمختيار ملڪ هن حادثي ۾ پنهنجي آزادي وڃائي چڪو هو. نہ صرف ايترو پر بمبئي سان الحاق کان پوءِ تہ پنهنجي صوبائي خودمختياريءَ تان به هٿ ڌوئي ويٺو هو. هيءُ ڳانڍاپو سنڌين لاءِ سياسي شعبي ۾ نهايت نقصان وارو ۽ هاڃيڪار ثابت ٿيو. سنڌ جيڪا پنهنجي مردم خيزيءَ سبب ڪيترائي رهبر ۽ اڳواڻ پيدا ڪندي رهي آهي, تنهن جي هن دور ۾ پيدا ڪيل اڳواڻن ۽ سياسي رهبرن کان ڄڻڪ سندن لياقتن ۽ صلاحيتن ڏيکارڻ جو موقعو کسيو ويو. جنهن جي نتيجي ۾ قيادت جون واڳون وڃي ڌارين کي مليون.

انهيءَ ۾ ڪو بہ شڪ نہ آهي تہ نئين انتظامي ڦير گهير کان پوءِ سنڌ جي ڪمشنر کي وسيع اختيار ڏنا ويا، پر حقيقت جي نگاه سان ڏٺو وڃي تہ کيس اهي اختيار سنڌ جي خدمت ۽ ترقيءَ واسطي نہ پر ان تي حڪمراني ڪرڻ لاءِ ڏنا ويا هئا. سنڌ جو ڪمشنر ترقياتي منصوبن تي عمل ڪرڻ لاءِ بنهہ بي اختيار هو، ۽ هر مسئلي جي فني پيچيدگين جي حل واسطي کيس بمبئي سرڪار جي حڪمرانن ڏانهن ڏسڻو پوندو هو(96). ان ڪري سنڌ انهن سرڪاري ڪارواين جو ٻل بنجي ويئي ۽ سندس ترقيءَ کي بنح احد لگه.

سر چارلس نيپئير جي چئن سالن واري فوجي حكومت كان پوءِ ٿيڻ ائين گهربو هو ته وقت جي سركار سنڌ جي قومي حيثيت، روايتن ۽ بنيادي انساني حقن كي ذهن ۾ ركي كا نئين تبديلي عمل ۾ آڻي ها، پر ائين نه ٿيو ۽ هن سن 1868ع ۾ سنڌ ائكٽ (Sind Act) لاڳو كري، سنڌ اندر كامورا شاهيءَ كي هٿي ڏني.

جيئن ته اختيار ۽ اقتدار جا مالڪ سنڌ جا ڪامورا سنڌ جي مٿئين طبقي، يعني

جاگيردارن، زميندارن، سردارن ۽ پيرن کي لٺ ۽ چٺ واريءَ پاليسيءَ سان مطيع بنائيندا ٿي ويا، ان ڪري سنڌ جو سماج سياسي نقط نگاھ کان ٻن حصن ۾ ورهائبو ويو.

ان زماني ۾ سنڌ جي غريب ۽ غلام عوام کي نه رڳو سنڌ جي ڪامورن جو قهر ٿي ڏسٽو پيو، پر بمبئيءَ جي گورنرن ۽ ٻين آفيسرن جي خوشيءَ لاءِ قربانيءَ جو ٻڪرو ب ٿيڻو پوندو هو. سنڌ جي بمبئيءَ سان الحاق واري زماني ۾ هر سال بمبئي سرڪار جو گورنر سنڌ جي سير سفر تي ايندو هو، ته اهڙي موقعي تي سنڌ جا ڪامورا، جيري خاطر ٻڪري ڪهي وجهندا هئا. اهڙيءَ طرح سنڌ کي رشوت، رسائي ۽ لاپي جي مصيبتن ۾ مبتلا ٿيڻو پيو.

مذهبي حكمت يا اقتدار كي كڏهن به سنڌين جي سيني تي راڄ كرڻ جو موقعر نه مليو هو. انگريز سركار "ويڙهايو ۽ حكومت كريو" واري حكمت عمليء جي آڌار تي اڳ ۾ ئي ننڍي كنڊ ۾ فرقي پرستيءَ جو ٻج ڇٽي چكي هئي. سنڌ جو عوام، جيكو اڃا انهيءَ وبا كان بچيل هو، تنهن كي بمبئيءَ سان الحاق واري زماني ۾ اهڙن مسئلن ۽ مونجهارن سان منهن ڏيڻو پيو، جنهن ۾ كين پهريون ڀيرو فرقي پرستيءَ جي هوا لڳي. هندن ۽ مسلمانن جون كيتريون ئي متضاد تحريكون جيكي سنڌ كان ٻاهر جنم وٺي چكيون هيون، تن كي هن الحاق واري زماني ۾ سنڌ اندر اثرانداز ٿيڻ جو موقعو مليو.

هن زماني ۾ وقت جي سرڪار، سنڌ جي تعليم ڏانهن به ڪو ڌيان نه ڏنو. جيئن ته بمبئي صوبي جي انتظام تي غير سنڌي ڪامورن جو قبضو هو، ان ڪري سنڌ جو تعليمي مسئلو سندن ڪو به توجهه ڇڪائي نه سگهيو. سنڌ ۾ تعليم جو کاتو به گهڻو پوءِ 1900ع ۾ قائر ڪيو ويو. تاريخ شاهد آهي ته مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سڄي سنڌ اندر وقت جي سرڪار طرفان هڪ ڪاليج به نه کوليو ويو. اعليٰ تعليم کان سواءِ ثانوي تعليم جي ميدان ۾ به سنڌي پوئتي پوندا ٿي ويا. سن 1887ع ۾ هتان جي عوام جي ڪوششن سان "ڊي جي سنڌ ڪاليج" (D.J. Sind College) کليو(97). جنهن کان اڳ سنڌ جي سمورن مئٽرڪ جي شاگردن کي امتحان ڏيڻ واسطي بمبئي وڃڻو پوندو هو. ان جو نتيجو اهو نڪتو جو پهرين ٽيهن سالن ۾ صرف ڏيڍ درجن سنڌي شاگرد بي. اي ان جو نتيجو اهو نڪتو جو پهرين ٽيهن سالن ۾ صرف ڏيڍ درجن سنڌي شاگرد بي. اي قائم ڪري سگهي. اهڙيءَ طرح اعليٰ ۽ ثانوي تعليم کان سواءِ ابتدائي تعليم جو شعبو بريءَ طرح متاثر هو.

بمبئي ۽ سنڌ جي وچ ۾ ڪي بہ آمدورفت جون سهوليتون موجود نہ هيون ۽ نہ ئي

سرڪار ان طرف كو ڌيان ڏنو. ماڻهن كي خشكيءَ جي رستي بمبئي وڃڻ لاءِ كوٽڙيءَ كان ملتان تائين آگبوٽ رستي وڃڻو پوندو هو، جنهن كان پوءِ پهريائين لاهور ۽ ان كان پوءِ دهليءَ تائين ريلوي ذريعي، ۽ تنهن كان پوءِ ڇڪڙن ۾ چڙهي احمد آباد تائين ۽ آخر ۾ احمد آباد كان بمبئيءَ تائين ريلوي جو سفر اختيار كرڻو پوندو هو.

مڙني کاتن جا مکيه عملدار سنڌ کان اٺ سو ميل پري ٿي رهيا. جن کي نه سنڌ جي مڪاني حالتن جو پتو هو ۽ نه وري ان جي زبان کان واقف هئا. سال ۾ ٿورا ڀيرا دوري ڪرڻ سان هو حالتن جو صحيح اندازو لڳائڻ کان قاصر رهيا.

ڏورانهين پنڌ تي صوبي جو هيڊڪوارٽر هئڻ ڪري مکيہ مسئلن ۽ لکپڙه جي فيصلي ڪرڻ ۾ اڪثر دير لڳندي هئي، جنهن ڪري ڪي ضروري سوال بہ جلد فيصل نہ ٿيڻ سبب نقصان جو باعث بڻبا هئا.

پوري هندستان جي صوبن ۾ برما کان پوءِ بمبئي کاتي جو انتظامي خرچ وڌيڪ هوندو هو. ان ڪري سنڌ جي ترقيءَ ۽ تعمير لاءِ پئسو بچي نٿي سگهيو. اهڙيءَ طرح ترقيءَ جي لحاظ کان به سنڌ پوئتي پوندي ويئي (99).

عليحدگيءَ لاءِ كوششون: سنڌ سنڌي عوام لاءِ دنيا جو وڏي ۾ وڏو مقدس اجهو ۽ ورثو آهي. هتان جي عوام جي ترقي سنڌ سان، ۽ سنڌ جي تهذيب ۽ تمدن جي اوسر سنڌي عوام سان لاڳاپيل آهي. سنڌ جي عوام پنهنجي ڌرتيءَ جي انفراديت، آسودگيءَ ۽ روشن مستقبل لاءِ جيڪي جاکوڙون ڪيون، سي اسان جي تاريخ ۾ اهم بابن جي حيثيت رکن ٿيون.

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ جڏهن سنڌ کي بمبئي پرڳڻي سان ملائي هتان جي عوامر جو استحصال ڪيو ويو ته اسان جي عالمن، دانشورن ۽ سياسي اڳواڻن جيڪي ڪوششون ورتيون، تن جو تفصيل هن طرح آهي:

انفرادي كوششون: سنڌ جي بمبئي كان عليحدگيءَ واري تحريك جي تاريخ ۾ سيٺ هرچند راءِ وشنداس جو نالو اهر جاءِ والاري ٿو. سنڌ جي هن وطن دوست سياستدان مڙني كان اڳ ۾ پهريون دفعو سن 1908ع ۾ "سنڌ پراونشل كانفرنس (Sind Provincial Conference) جي موقعي تي انهيءَ مسئلي ڏانهن عوام جو ڌيان ڇكايو(100)، جنهن كان پوءِ سندس ساٿي ۽ سامراجي قوتن جي كٽر مخالف رئيس غلام محمد خان ڀرڳڙيءَ پنهنجي ذاتي كوششن سان، ان مسئلي كي وقت جي سركار اڳيان پيش كيو (101). سنڌي سياست جي انهيءَ بي بدل ۽ بي مثل ٻه مورتيءَ هن مسئلي كي ننڍي كنڊ جي سطح تائين مانوس كرائڻ جي به كوشش كئي.

انهيءَ سلسلي ۾ شيخ عبدالعجيد سنڌيءَ جي ڪوششن کي به نظر انداز ڪري نٿو سگهجي. هن صاحب سنڌ جي عليحدگيءَ واري مسئلي تي سنڌ کان ٻاهر پوري ننڍي کنڊ جي سطح تي جيڪي ڪوششون ورتيون، تن جو ذڪر هن ئي باب جي ٻئي هنڌ تي ڪيو ويو آهي، پر سندس سنڌ اندر خدمتن مان اخبار "الوحيد" وسيلي عام راءِ هموار ڪرڻ قابل ذڪر آهي. شيخ صاحب سن 1924ع ۾ پهريون ڀيرو سنڌ جي ان مشهور اخبار کي سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري مهم جو پرچارڪ ذريعو بنائي مشهور اخبار کي سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري مهم جو پرچارڪ ذريعو بنائي ويئي. اهڙيءَ طرح سن 1927ع ۾ سر حاجي عبدالله هارون، سنڌ جي آزادي ۽ ۽ خودمختياريءَ کي مانوس ڪرائڻ ۽ ان لاءِ عام راءِ هموار ڪرڻ واسطي سنڌ ۾ خودمختياريءَ کي مانوس ڪرائڻ ۽ ان لاءِ عام راءِ هموار ڪرڻ واسطي سنڌ ۾ "مسلمانن جو هفتو" ملهائڻ جي تجويز پيش ڪئي(103).

جڏهن 1927ع ۾ سائمن ڪميشن مقرر ڪئي ريئي ته ان جي مدد لاءِ بمبئي ڪائونسل سر شاهنواز ڀٽي جي چيئرمينيءَ هيٺ هڪ صوبائي ڪاميٽي ٺاهي. جنهن ۾ سيد ميران محمد شاه کي ميمبر جي حيثيت سان کنيو ويو(104). سن 1929 ع ۾ بمبئي ڪاميٽيءَ جي سڀني ميمبرن "سائمن ڪميشن" کي رپورت پيش ڪئي. جنهن ۾ سنڌ جي جدائيءَ خلاف تجويز پيش ڪئي ويئي هئي. سيد ميران محمد شاه سنڌ جي جدائيءَ جي فائدي ۾، ۽ سر شاهنواز خان ڀٽي سنڌ جي جدائيءَ جي فائدي ۾، ۽ سر شاهنواز خان ڀٽي سنڌ جي جدائيءَ جي خلاف راء ڏني(105).

سن 1930ع ۾ سنڌ مان سر شاهنواز خان ڀٽي ۽ سر غلام حسين هدايت الله کي "گول ميز ڪانفرنس" (Round Table Conferance) ۾ پنهنجي قوم ۽ وطن جي جذبن ۽ امنگن جي ترجماني ڪرڻ جو موقعو مليو. جنهن ۾ ٻنهي ميمبرن "ارل رسل" (Earl Russel) جي صدارت هيٺ سنڌ جي مسئلي تي سوچڻ لاءِ قائم ٿيل سب ڪاميٽيءَ اڳياز پنهنجي وطن دوستيءَ، لياقتن ۽ صلاحيتن جو ڀرپور ثبوت ڏنو (106).

اهڙيءَ طرح خانبهادر محمد ايوب کهڙي جون خدمتون به سنڌ جي بمبئي کان عليحدگيءَ واري تاريخ ۾ اهر جاءِ والارين ٿيون. هن صاحب سن 1930ع ۾ "سفرنگس آف سنڌ" (Sufferings of Sind) انگريزيءَ ۾ هڪ ڪتاب لکي سنڌ جي جدائيءَ لاءِ پڙهيل طبقي جون همدرديون حاصل ڪرڻ جي ڪامياب ڪوشش جي جدائيءَ لاءِ پڙهيل طبقي جون همدرديون حاصل ڪرڻ جي ڪامياب ڪوشش ڪئي. سن 1933ع ۾ برطاني جي پارليامينٽ جڏهن هندستان کي نون سڌارن ڏيڻ واسطي "جائنٽ پارليامينٽري ڪاميٽي" (Joint Parliamentary Committee)

ويهاري ته ان سنڌ جي مسئلي تي روشني وجهڻ لاءِ "سنڌ آزاد ڪانفرنس" کي عيوضي موڪلڻ جي دعوت ڏني، جنهن تي سنڌ مان خان بهادر محمد ايوب کهڙي کي نمائندي طور موڪليو ويو(107). جتي هن صاحب سنڌ جي مسئلي کي نهايت مدبرانه انداز ۾ پيش ڪيو.

هن تحريك جي تاريخ ۾ سنڌ جي سپوت فرزند، هزرايل هائينس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان جي انفرادي كوششن كي به نظر انداز كري نٿر سگهجي. پاڻ تحريك جي ابتدا كان ولي، كاميابيءَ واري انتها تائين هن تحريك سان وابست رهيو. سن 1930ع ۾ گول ميز كانفرنس جڏهن "ارل رسل" (Earl Russel) جي صدارت هيٺ سب كاميٽي ٺاهي ته هز رايل هائينس سر سلطان محمد شاه پرنس آغاخان اهر پارسي أدا كيو آخر ۾ پارسي خاندان جي چشر وچراغ سنڌ جي هڏ ڏوكي ۽ كراچيءَ جي ابي سياستدان جمشيد مهتا جي كيل جاكوڙ كي مقالي جي هن باب جي جيءَ ۾ جاءِ ديڻ كان سواءَ رهي نٿو سگهجي. جمشيد مهتا سنڌ جي كن تنگ نظر هندن طرفان هلايل سنڌ جي بمبئي كان عليحدگيءَ واري تحريك جي خلاف هلايل مهم جو ڀرپور مقابلو كيو، ۽ ان سلسلي ۾ هك پمغليٽ لكيو (108). جنهن كي اڄ به سنڌ جي سياسي درب ۾ هك شهپاري جي حيثيت حاصل آهي.

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحد گيءَ واري جدوجهد جي تاريخ کي جيڪڏهن انفرادي ڪوششن جي خاڪن ۾ چٽيو ويندو ته هيءُ موضوع تمام طويل ۽ بحث طلب ٿي پوندو. ان ڪري مختصر لفظن ۾ ائين چئي سگهجي ٿو ته سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحد گي، ورها گي کان اڳ وارن ڪيترن ئي اسان جي رهبرن ۽ ڪارڪنن جي انفرادي توڙي اجتماعي ڪوششن جو نتيجو هئي.

اجتماعي كوششون: سن 1908ع سنة جي سياسي تاريخ جو هك سياڳو سال

[•] پاڻ ان لاءِ لکي ٿو تہ:

[&]quot;ان ڪاميٽيءَ جي مسلم نمائندن. جن ۾ آڳ بہ شامل هوس، فرقيوارانہ طرز جي دليل بازي نہ ڪئي. اسان زور لاتو تہ سنڌ جي رهاڪن جي حق تلفي ڪرڻ جي آڌار تي، عملي ۽ انتظامي سببن جي بنيادن تي سنڌ کي بمبئيءَ کان جدا ڪيو وڃي، اسان جي ٻين هندو ساٿين بہ اسان جي تائيد ڪئي، ۽ ائين رٿ منظور ڪئي ويئي." ("محبوب: هزرايل هائينس سر سلطان محمد شاه پرنس آغاخان"، ڪراچي. اسماعيليد ايسوسيئيشن، 1959ع، ص348)

هو، جنهن ۾ سنڌ اندر "سنڌ پراونشل ڪانفرنس" (Sind Provincial Conference) سڏائڻ جو رواج پيو. ان جي وسيلي سنڌ جي عوام کي اجتماعي طرح سان پنهنجي جذبن ۽ امنگن جي اظهار ڪرڻ جو موقعو مليو. سنڌ جي عليحدگي ۽ خودمختيار سوچ رکندڙ عوام, ساڳئي ئي سال انهيءَ پليٽ فارم تان سنڌ جي عليحدگيءَ ۽ خودمختاريءَ جو آواز بلند ڪيو(109).

سنڌ پراونشل ڪانفرنس جي انهيءَ اجلاس کان پوءِ سنڌ ۾ سن 1920ع تائين. اهڙيون ڪانفرنسون ٿينديون رهيون پر جن ڪانفرنسن ۾ سنڌ جي عليحدگيءَ واري مسئلي کي جو ڳي جاءِ ڏني ويئي، تن ۾ نومبر 1917ع ۽ مارچ 1918ع تي سڏايل سنڌ پراونشل ڪانفرنسون وڏي اهميت رکن ٿيون.

نومبر 1917ع ۾ نون سڌارن تي ويپار ڪرڻ لاءِ حيدرآباد ۾ خاص "سنڌ پراونشل ڪانفرنس" منعقد ٿي، جنهن ۾ سنڌ جي جدائيءَ واري مسئلي تي غور ڪرڻ لاءِ سيٺ هرچند راءِ وشنداس جي اڳواڻيءَ هيٺ هڪ خاص ڪاميٽي تشڪيل ڏني ويئي" ان ڪاميٽيءَ کي نون سڌارن بابت پنهنجيءَ راءِ کان واقف ڪرڻ لاءِ انڊيا جي "سيڪريٽري آف اسٽيٽ" (Secretary of State for India) سان ملڻ لاءِ چيو ويو. هن ڪاميٽيءَ تي مشتمل هڪ وفد چيلمسفورڊ (Chelmsford) ۽ مسٽر مانٽيگو (Mr. کي جيڪا درخواست پيش ڪئي، تنهن جي فقري نمبر 10 ۾ هيٺين لفظن

| ح آهي: | ور هن طر | و سالوار وچ | انفرنسن ج | ° انهن ڪ |
|--------|----------|-------------|-----------|----------|
|--------|----------|-------------|-----------|----------|

| 1909ع٠ | حيدرآباد، | بي سنڌ پراونشل كانفرنس، |
|---------|------------|----------------------------|
| 1916ع. | لاڙڪاڻو. | تين سنڌ پراونشل ڪانفرنس، |
| 1917ع. | شڪارپور، | چوٿين سنڌ پراونشل ڪانفرنس. |
| 1917ع. | حيدرآباد. | خاص سنڌ پراونشل ڪانفرنس. |
| 1918ع٠ | ڪراچي، | پنجين سنڌ پراونشل ڪانفرنس. |
| 1919ع. | جيڪب آباد، | ڇهين سنڌ پراونشل ڪانفرنس، |
| . 91920 | سکر. | ستين سنڌ پراونشل كانفرنس. |

(موتيرام راموائي: "رتن جوت"، حصو پهريون، كراچي، هيرالڊ پريس، 1958ع ص 645)

* هن كاميسيءَ جا بيا ميمبر هئا:

مسٽر جيرامداس دولترام، درگداس آڏواڻي، نارائڻداس بيچر ۽ رستر خورشيد سڌوا (هيءَ معلومات جناب جي ايم سيد کان 20 جولاءِ 1977ع انٽرويو ذريعي ورتي ويئي)

۾ گهر ڪئي ويئي هئي:

"درخواست كندڙ وڌيك عرض ٿا كن ته سنڌ جا رهاكو 70 سالن تائين بمبئي كاتي جي غلاميءَ هيٺ رهيا آهن، جنهن ۾ مٿن ملٽري صوبن جهڙي حكومت هلائي ويئي آهي، تنهن كري سندن تقاضا آهي ته جيستائين سنڌ كي آزاد ۽ جدا صوبو بنائي كيس جدا ايگزيكيوٽو كائونسل، چارٽرڊ هاءِ كورت ۽ جدا انتظامي مشنري ڏيڻ لاءِ سركار انتظام كري، ان كان اڳ هندستان كي نون سڌارن ڏيڻ وقت كر از كر بببئيءَ جي گورنر كي سڌو ان كائونسل جي ماتحت كيو وڃي ۽ سنڌ جي كمشنر كي جيكي اختيار سن 1868ع جي ائكٽ هيٺ ڏنا ويا آهن، سي واپس وٺي، كيس بمبئي جي ٻين كمشنرن جي ليول تي آندو وڃي. بمبئيءَ جي گورنر كي چند مهينن لاءِ كراچي رهايو وڃي، ايگزيكيوٽو بمبئيءَ جي گورنر كي چند مهينن لاءِ كراچي رهايو وڃي، ايگزيكيوٽو عيائونسل جا ميمبر به سنڌ ۾ ايندا رهن، ۽ كر از كر هك دفعو گورنر جي كائونسل جو اجلاس ڪراچيءَ ۾ سڏايو وڃي"(110).

مارچ 1918ع پر مسٽر مرليڌر جيرامداس جي صدارت هيٺ ڪراچيءَ ۾ "سنڌ پراونشل ڪانفرنس" ٿي، جنهن پر وقت جي نامور سياستدانن جهڙوڪ: هرچند راءِ وشنداس، غلام علي چاڳلا، آر، بي هيرانند کيمسنگه، لوڪومل چيلا رام، مکي ڄيٺانند پريتمداس، سنتداس، منگهارام، آر، ڪي. سڏوا ۽ ڊاڪٽر چؤٿرام شرڪت ڪئي. هن ڪانفرنس جي آخري اجلاس ۾ "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ" وارو ٺهراءُ بحال ڪيو ويو(111).

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحد گيءَ واري تاريخ پنهنجي ابتدائي دور ۾ هندو توڙي مسلمانن ۽ پارسي توڙي سکن جي باهمي اتفاق جو مظهر هئي. جڏهن مسلم ۽ غير مسلم سنڌين جا ان مسئلي تي اختلاف ٿي پيا، تڏهن به انهن ٻنهي فرقن جي وطن دوست سياستدانن اجتماعي طرح سان سنڌ جي عليحد گي ۽ آزاديءَ لاءِ ڪر ڪيو. انهيءَ سلسلي ۾ سن 1928ع ۾ سنڌ جي هندو, مسلمان ۽ پارسي ليڊرن جي وچ ۾ هڪ عهدنامو ٿيو، جنهن ۾ سڀني سنڌ کي بمبئي پر ڳڻي کان نجات ڏيارڻ لاءِ اتفاق ڪيو. ان عهدنامي تي هيٺين ماڻهن صحيحون ڪيون: (112)

مستر سنتداس منگهارام، وكيل، حيدرآباد. مستر جمشيد نسروانجي ميهتا پريزيدنٽ كراچي ميونسپالٽي. مستر نارائنداس انند جي، ايم، ايل، سي كراچي. مولوي محمد صديق صاحب، كڏو مدرسو كراچي. مستر كي پنيا، ايڊيٽر "سنڌ آبزرور" كراچي، قاضي عبدالرحمان چيف آفيسر اسكول بورڊ كراچي، سر حاجي

عبدالله هارون اير، ايل، اي كراچي. شيخ عبدالعجيد صاحب سنڌي، كراچي. مسٽر جئيمل پرسرامر گلراجاڻي، كراچي. ڇتومل كنڌاڻي، كراچي. قاضي عبدالقيوم حيدرآباد. وشنوشرما ايڊيٽر "هندوجاتي" كراچي. مير اله بخش ٽالپر، ايڊيٽر "الوحيد" كراچي. سوامي گووند آنند. ايڊيٽر "اخبار كيسريہ" كراچي. مسٽر پرسرامر ٽهلراماڻي، كراچي. لوكومل پريتمداس. مئنيجر "هندوجاتي" اخبار كراچي. لعل چند امر ڏنرمل جڳتياڻي كراچي. مسٽر رستم خورشيد سڌوا كراچي. مسٽر كيولرام موٽواڻي كراچي. سيد جمال الدين حسن بخاري كراچي. غلام حسين غفوريائي كراچي. دين محمد عليگ مئنيجر "الوحيد" كراچي. مسٽر ايم ايم كرپالاڻي كراچي. مولانا دين محمد وفائي، كراچي، مراچي، مولانا دين محمد وفائي، كراچي، مراچي، مولانا دين محمد

سنڌ پراونشل ڪانفرنس وانگر سنڌي مسلمانن به مطالعي هيٺ آيل دور ۾ ڪيتريون ئي ڪانفرنسون سڏايون، جن ۾ سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري مسئلي کي وڏي اهميت ڏني ويندي هئي. اُنهيءَ سلسلي ۾ جولاءِ 1928ع ۾ ڊاڪٽر شيخ محمد عالم جي صدارت هيٺ ڪراچيءَ ۾ سنڌي مسلمانن جي سياسي ڪانفرنس ٿي، جنهن جي مباحثن ۽ مطالبن جو مرڪز سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگي ئي رهيو(113).

سن 1932ع تائين سنڌ جا مسلمان، اجتماعي طرح سان بمبئي کان عليحدگيءَ واري مسئلي کي پيش ڪرڻ جا نت نوان طريقا اختيار ڪري چڪا هئا. انهيءَ مقصد خاطر سنڌ ۾ "سنڌ آزاد ڪانفرنسون" ڪوٺايون ويون.

انهيءَ سلسلي جي پهرين ڪانفرنس 18 اپريل 1932ع تي ڪراچيءَ ۾ شيخ عبدالمجيد جي صدارت هيٺ (116)، ۽ ٻي 15 نومبر 1932ع تي حيدرآباد ۾ علام يوسف عليءَ جي صدارت هيٺ ٿي.*

صدر: سر شاهنواز خان پتو.

نائب صدر: خانبهادر محمد ايوب كهڙو.

سيكريٽري: سيد ميران محمد شاه.

(ڏسو روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 1 مئي 1934ع ص2)

[•] انهيءَ موقعي تي "سنڌ آزاد ڪانفرنس" نالي هڪ جماعت قائر ڪئي ويئي. جنهن جا پهريان عهديدار هئا:

سنڌ ۾ ٽين آزاد ڪانفرنس 26 اپريل 1934ع تي خانبهادر پير بخش جي صدارت هيٺ سکر ۾ (115)، ۽ چوٿين ڪانفرنس 28 جولاءِ 1934ع تي ڪراچيءَ ۾ سر غلام حسين هدايت الله جي صدارت هيٺ ٿي(116).

هنن اجلاسن سنڌ جي جدائيءَ واري مطالبي کي حقيقت ۾ بدلائي ڇڏيو، ۽ ايتري قدر ته عام راءِ هموار ڪئي جو وقت جي سرڪار لاءِ سنڌي عوام جي مطالبي مڃڻ کان سواءِ ٻيو ڪو به چارو نه رهيو.

عليحد گيءَ جي مخالفت: هٿ جون آڱريون به برابر ۽ هڪ جهڙيون نه ٿينديون آهن. جي مصداق ورهاڱي کان اڳ جي سڀني سنڌي هندن کي به هڪ جهڙو چئي نٿو سگهجي. ڪيترن ئي هندن، مسلمانن سان ڪلهو ڪلهي ۾ ملائي ڪر ڪيو ته ڪن وري مسلمانن جي مخالفت به ڪئي.

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واريءَ تحريڪ جو پهريون مبلغ به هڪ هندو اڳواڻ، سيٺ هرچند راءِ وشنداس هو ۽ ان تحريڪ جي مخالفت ڪرڻ وارا به پهريان ڪي هندو ئي هئا.

خاص كري جدّهن شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ سن1924ع ۾ پهريون ڀيرو "الوحيد" اخبار ۾ سنڌ جي عليحدگيءَ ۽ خودمختياريءَ جي تحريڪ تي لکڻ شروع كيو ته سنڌ جا كي هندو، ان جا مخالف ٿي بيٺا. جن ۾ مسٽر ويرومل بيگراج، پروفيسر ڇٻلاڻي، ديوان بهادر هيرانند كيمسنگه، مكي گربندرام ۽ جيرامداس دولترام جا نالا قابل ذكر آهن. سنڌ جي بمبئيءَ كان عليحدگيءَ واري تحريك جي مخالفت ايترو ته زور وٺي ويئي جو هن تحريك جو پهريون مبلغ سيٺ هرچندراءِ وشنداس به انهن حالتن كان متاثر ٿي هك وقت تحريك جو مخالف تي بيٺو (117).

انهيءَ سال ئي مٿي ذكر كيل مخالف ليڊرن جي هلنديءَ پڄنديءَ سبب سنڌ جي هيءَ تحريك پهريون ڀيرو هندو مهاسڀائين جو نشانو بڻي. ان كري سن 1925ع واري "آل انڊيا هندو مهاسڀا" واري اجلاس ۾ اين. سي. كيلكر (N.C. Kelkar) پنهنجي صدارتي خطبي ۾ هن تحريك جي مخالفت كئي(118). تن ڏينهن ۾ مسٽر جيرامداس دولترام "هندستان ٽائيمس" (Hindustan Times) جو ايڊيٽر هو(119)، جنهن هن منزل تي لالالجپتراءِ ۽ پنڊت مدن موهن مالويہ جي اثر هيٺ سنڌ جي بمبئيءَ جنهن هن منزل تي دسلم ٺاه واري

تجويز بابت برخلافيءَ جاليک لکيا به من تحريک جو مقابلو سنڌ جي ڪيترن ئي هندن ۽ پارسين گڏجي ڪيو. جن ۾ سوامي گروند آنند، مسٽر چيٺمل پرسرام، مسٽر سنتداس منگهارام، مسٽر ڪي پنيا، مسٽر وشنوشرما، مسٽر ٽيڪمداس، واڌومل، مسٽر رستر ڪي سڌوا ۽ مسٽر جمشيد نسروانجي ميهتا ۽ ٻيا ذڪر لائق آهن.

مسٽر جمشيد نسروانجيءَ سن 1927ع ۾ هڪ پمغليٽ لکي مسٽر جيرامداس دولترامر جي ليکن ۽ سيٺ هرچند راءِ وشنداس جي اعتراض جو ڀرپور ۽ مدلل جواب ڏنو(120).

سن 1928ع ۾ سنڌ جي جدائيء جي مخالف ڪانگريس گروه "آل انڊيا ڪانگريس ڪاميٽيءَ" کي پرشو تمداس ٺاڪرداس جي چيئرمينيءَ هيٺ هڪ ڪاميٽي مقرر ڪرڻ تي مجبور ڪيو، تہ جيئن هن مسئلي جي مختلف پهلوئن جو غور سان جائزو وٺي رپورٽ پيش ڪري.**

جيئن ته ڪاميٽيءَ تي مسلمان ميمبرن کي سندن رضامندي کان سواءِ نامزد ڪيو ويو هو، ان ڪري هن ڪاميٽيءَ ڪنهن ٺاه کان سواءِ سنڌ جي جدائيءَ کان بعد ٻن

مسلمان مٿي ذکر ڪيل صوبن ۾ ٿورائيءَ وارن کي آهي رعايتون ڏيڻ لاءِ تيار ٿيندا. جيڪي هندو مسلمانن کي هندو گهڻائيءَ وارن صوبن ۾ ڏيڻ لاءِ تيار ٿيندا. انهن شرطن تي مسلمان گڏيل چونڊون قبول ڪندا. (جي اير سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس 1968 ص 34).

(Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of the marement of the Sopasation of Sind", an Article Published in Alwahid Special Edition "Sind Azad" Number Karachi 15' June 1936 P-55-

^{* 25} مارچ 1927ع تي محمد علي جناح جي صدارت هيٺ مسلمان اڳراڻن جي هڪ گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ هندو مسلم ٺاه لاءِ هيءَ تجويز بحال ٿي:

^{. 1} سنڌ کي الڳ صوبو بڻايو وڃي.

^{.2} فرنٽير ۽ بلوچستان جي صوبن سان نوان سڌارا لاڳو ڪيا وڃن.

^{. 3.} پنجاب ۽ بنگال ۾ آدمشماريء مطابق مسلمانن کي نمائندگي ڏني وڃي.

^{.4} مركزي اسيمبليءَ ۾ مسلمانن كي ٽيون حصو نمائندگي ڏني وڃي.

^{••} هن ڪاميٽيءَ جا ٻيا ميمبر هئا:

^{.1} پروفيسر چېلائي.

^{.2} مسترجيرامداس دولترام.

^{.3} شيخ عبدالمجيد سنڌي.

^{.4} سيك حاجى عبدالله هارون.

كروڙن جي كوت جي رپورٽ به پيش كئي(121).

ساڳئي سال ئي "نهرو رپورٽ" (Nehru Report) شايع ٿي، جنهن ۾ سنڌ جي مالي حالت تي غور ڪرڻ واري شرط سان سنڌ جي جدائيءَ واري سفارش ڪيل هئي(122). ان رپورٽ جي روشنيءَ ۾ ئي "نيشنل ڪنوينشن" (National Convention) جي لکنؤ واري اجلاس ۾ سنڌ بابت متفق راءِ سان طيءِ ڪيو ويو ته (123)

"نهرو آئين عمل ۾ اچڻ بعد سنڌ کي ضروري مالي ٿيرين گهرين سان جدا پرڳڻر ڪيو ويندو. کوٽ جي پورائي جو ذمو سنڌين کي کڻڻو پوندو. سنڌ اسيمبليءَ ۾ هندن کي چاليه سيڪڙو نمائندگي ڏني ويندي." پر ان ٺهراء جي ڪن فرقه پرست هندن مخالفت بر ڪئي.

سنڌ جي عليحدگيءَ جي مسئلي جڏهن سياست کان وڌي مذهبي رنگ ورتو تہ هن ڏيهہ جي گهڻين غير مسلم مذهبي ۽ سياسي جماعن سنڌ جي عليحدگيءَ واريءَ تحريك جي مخالفت ڪئي. اهڙين حالتن ۾ "سنڌ هندو پئنچائتس" (Sind Hindu Penchaats) ۽ "سنڌ هندو سيا" هن مسئلي کي پنهنجيءَ "زندگيءَ ۽ موت" جو مسئلو سمجهي هٿ ۾ کنيو. تاريخ سيا" هن مسئلي کي پنهنجيءَ "زندگيءَ ۽ موت" جو مسئلو سمجهي هٿ ۾ کنيو. تاريخ 12 نومبر 1228ع تي جڏهن "سائمن ڪميشن" (Simon Commission) ڪراچيءَ ۾ آئي(124)، ته هن جماعت جي هڪ وفد زوردار نموني ۾ وٽس سنڌ جي عليحدگيءَ خلاف ڪيس پيش ڪيو(125).

سن 1932ع ۾ گول ميز ڪانفرنس جي نتيجن کان مائوف ۽ مايوس ٿي سنڌ جي ڪن هندن "اينٽي سنڌ سيپريشن ڪاميٽي" (Anti Sind Separation Committee) ٺاهي، جنهن تي ديوان بهادر مرليڌر، مسٽر لالچند نولوراء، پروفيسر ڇٻلاڻي ۽ سي، ڪي ٿڌائيء کي مکيد ڪارڪنن جي صورت ۾ کنيو ويو. هن ڪاميٽيءَ مختلف پمغليٽ ڇپارائي سنڌ جي عام راءِ کي پنهنجي قائدي ۾ ڪرڻ جي ناڪام ڪوشش ڪئي. ان کان سواءِ سنڌ جي مختلف شهرن، خاص ڪري ڪراچي، حيدرآباد ۽ سکر ۾ ان ڪاميٽيءَ طرفان گڏجاڻيون ٿينديون رهيون ۽ اهو سلسلو سنڌ جي بمبئيءَ کان الڳ ٿيڻ تائين قائم رهيو.*

اهڙين گڏجاڻين جو مختصر ۽ تاريخوار وچور هيٺ ڏجي ٿو:
تاريخ زير اهتمام هنڌ
13 فيبروري 1932ع اينٽي سيپريشن ڪاميٽي ڪراچي، ڪراچي، اينٽي سيپريشن ڪاميٽي عيدرآباد، حيدرآباد، حيدرآباد، صدرآباد، ميٽريشن ڪاميٽي عيدرآباد، صدرآباد، ميٽريشن ڪاميٽي عيدرآباد، صدرآباد، ميٽريشن ڪاميٽي عيدرآباد، صدرآباد، صدرآباد، ميٽريشن ڪاميٽي عيدرآباد، صدرآباد، صدرآباد، صدرآباد، عيدرآباد، عيدرآباد، صدرآباد، عيدرآباد، عيدرآباد،

سن 1933ع ۾ جڏهن انگلينڊ ۾ "برٽش پارليامينٽ" (British Parliament) هندستان جي سڌارن واري بل جي مسودي تي غور ڪرڻ لاءِ "جائنٽ پارليامينٽري ڪاميٽيءَ (Joint Parliamentary Committee) مقرر ڪئي (126) تہ ان ڪاميٽيءَ "سنڌ آزاد ڪانفرنس" کان سواءِ جدائيءَ واري تحريڪ جي مخالف هندن کي به دعوت ڏني تہ اهي اچي پنهنجي خيال جو اظهار ڪن. سنڌ آزاد ڪانفرنس طرفان خانبهادر محمد ايوب کهڙي کي ولايت موڪليو ويو ۽ هندن جي ترجماني وري پروفيسر ڇپلاڻيءَ ڪئي(127).

سنڌ جي جدائيءَ جي تحريڪ واري تاريخ ۾ محمد ايوب کهڙي جي "سنوريشن "سفرنگس آف سنڌ" (Sufferings of Sind) ۽ پروفيسر ڇٻلاڻيءَ جي "سيپريشن آف سنڌ فرام بامبي پريزيڊنسي" (Separation of Sind from Bombay جهڙن ڪتابن کي اهر تاريخي دستاويزن جي حيثيت حاصل آهي. پروفيسر ڇٻلاڻيءَ پنهنجي محققانه ۽ مدبرانہ مخالفت جي باوجود "جائنٽ پارليامينٽري ڪاميٽيءَ" کي متاثر ڪري نہ سگهيو ۽ هن ڪاميٽيءَ سکر بئراج کي گورنر جي خاص نگرانيءَ هيٺ رکڻ واري شرط سان سنڌ جي جدائي بابت سفارش پيش ڪئي (128).

ان جي باوجود سنڌ جي ڪن فرقيوار ۽ تنگ نظر هندر ورڪرن ڪڏهن به دل سان هن مطالبي تي غور نه ڪيو ۽ سندن انهيءَ تنگ نظريءَ اڳتي هلي هڪ ئي وطن جي ماڻهن کي ٻن مختلف رستن تي ڌڪي بيهارڻ لاءِ مجبور به ڪيو.

تاريخ 26 جنوري 1933ع تي انهيءَ ٽولي پاران ڪراچيءَ ۾ "سنڌ هندو ڪانفرنس" (Sind Hindu Conference) ٿي، جنهن ۾ وزيراعظم انگلنڊ جي اعلان ۾ سنڌ جي جدائيءَ جي اصول قبول ڪرڻ کي ننديو ويو ۽ ٺهراءُ بحال ڪيو ويو ته ساريءَ سنڌ اندر "سنڌ جي جدائيءَ واري تحريڪ" خلاف نئين سر تيزيءَ سان هلچل هلائي وڃي(129).

سنڌ جا ڪي اثر رکندڙ هندو, سنڌ جي عليحدگيءَ واري تحريڪ خلاف پرچار ڪرڻ لاءِ انگلينڊ ۾ "مهاسيا" کي به پنهنجو هر خيال بنائي چڪا هئا ۽ نتيجي ۾ 1934ع ۾ لنڊن ۾ هڪ آفيس قائم ڪئي ويئي، جنهن جي ڪر تي هز رائل هائينيس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان پنهنجي ذاتي ڪوششن سان پاڻي ٿيري ڇڏيو(130). ان کان پوءِ سنڌ جا هندو ڪجه وقت لاءِ ماٺ ۾ رهيا پر سن 1935ع ۾ انهن لنڊن ۾ ڪن گورن

مبلغن کي معاوضو به ڏيئي سنڌ جي جدائيءَ واري تحريڪ خلاف پرچار ڪراير. *

جيئن جيئن حالتون سنڌ جي آزاديءَ جي فائدي ۾ ٿينديون ويون، تيئن تيئن سنڌ جا اُهي شهري ڪنهن حد تائين گهڻ ۾ به وڃي پيا. سن 1935ع ۾ سنڌ جي هڪ نامور هندو اڳواڻ لالچند نولراءِ قانون ساز اسيمبليءَ ۾ ان موضوع تي تقرير ڪندي مسلمانن کي گهٽ وڌ به ڳالهايو(131). اهڙين حدن ٽپڻ جي باوجود اُهي پنهنجي مقصد ۾ ڪامياب ٿي نه سگهيا.

مختصر لفظن ۾ ائين چئي سگهجي ٿو تہ سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ جي ڏيه توڙي پرڏيه ۾ مخالفت ٿي، پر سنڌ جا وطن دوست ۽ آزادي پسند ماڻهر پوءِ به پنهنجي هن قومي مقصد ۾ ڪامياب ۽ ڪامران ٿي ويا.

مختلف پارٽين جو رد عمل: مقالي جي مختلف هنڌن تي سياسي پارٽين جو ذڪر ڪندي، سندن سنڌ جي عليحدگيءَ واري تحريڪ جي سلسلي وارين ڪوششن جو ذڪر ڪيو ويو آهي، ان ڪري هتي ساڳئي مواد کي دهرائڻ بجاءِ ننڍي کنڊ جي مکي سياسي پارٽين جي ردعمل جو خاڪو پيش ڪجي ٿو:

آل انڊيا نيشنل ڪانگريس: سن 1913ع ۾ پهريون ڀيرو "انڊين نيشنل ڪانگريس" (Indian National Congress) هن مسئلي ڏانهن متوجه ٿي. انهيءَ جماعت جو ساليانو اجلاس ڪراچيءَ ۾ ٿيو، جنهن ۾ سيٺ هرچند راءِ وشنداس مرحبا ڪاميٽيءَ جي چيئرمين جي حيثيت ۾ تقرير ڪندي سنڌ جي عليحدگيءَ جو آواز بلند ڪيو(132).

سن 1917ع ۾ جڏهن "مسٽر مانٽيگو" (Mr. Montague) ۽ "لارڊ چيمسفورڊ" (Lord Chelmsford) تي مشتمل سڌارن واري ڪميشن هندستان ۾ آيل هئي ته انهيءَ موقعي تي ڪانگريس پارٽيءَ جي شاخ سنڌ پراونشل ڪانفرنس (Sind Provincial جو خاص اجلاس سڏايو ويو. جنهن طرفان پڻ ڪانفرنس جي صدر سيٺ هرچندراءِ وشنداس ڪميشن کي سنڌ جي عليحدگيءَ متعلق هڪ يادداشت پيش ڪئي.

اهڙن مبلغن مان "ٽي ايچ اين ايڪسف" (T.H.N. Acough) به هڪ هو. جنهن 1935ع ۾ حدر آباد جي "ائنٽي سيپريشن ڪاميٽيءَ" (Anti Separation Committee) کان ڏه هزار روپيا گهرائڻ لاءِ لکپڙه ڪئي هئي.

⁽See, "The Daily Gazette", Karachi, Dated 21-2-1935, P.4)

سن 1925ع ۾ انڊين نيشنل ڪانگريس جو ڪانپور ۾ اجلاس ٿيو، جنهن ۾ ڪانگريس پنهنجي انتظامي سهوليت خاطر سنڌ کي الڳ صوبي جي حيثيت ڏني. ان کان پوءِ ڊسمبر 1927ع ۾ ڊاڪٽر مختيار احمد جي صدارت هيٺ انڊين نيشنل ڪانگريس جو اجلاس مدراس ۾ ٿيو، جنهن ۾ سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ وارو ٺهراءِ بحال ڪيو ويو. *

"سائمن ڪميشن" (Simon Commission) سان عدم تعاون ڪرڻ وارين حالتن جي موٽ ۾ "آل انڊيا نيشنل ڪانگريس" پنهنجي ساڳئي اجلاس ۾ پنڊت موتي لال نهرو جي چيئرمينيءَ هيٺ "نهرو ڪاميٽي" (Nehru Committee) قائم ڪئي تہ جيئن ڏيهي ۽ مختلف پرڳڻن جي عوام جي امنگن ۽ ضرورتن مطابق هندستان جو آئيني خاڪو تيار ڪري سگهجي (133). سن 1928ع ۾ موتي لال نهروءَ پنهنجي رپورٽ پيش ڪئي، جنهن ۾ ڪن شرطن سان سنڌ جي عليحدگيءَ واري مطالبي کي قبول کيو ويوهو.

هن رپورٽ جي شايع ٿيڻ کان پوءِ سنڌ جي قومي حلقن کي پهريون ڀيرو احساس ٿيو تہ آل انڊيا ڪانگريس ڪاميٽيءَ تي ڪي فرقہ پرست هندو اثر انداز ٿي رهيا آهن.

* اهو نهرا؛ هن طرح هو:

" كانگريس ان راء جي آهي ته هندستان ۾ صوبن جي ڦير گهير جو سوال، مناسب تبديلين سان يكدم هٿ ۾ كنيو وڃي، جيكو به صوبو زبان جي بنياد تي جدا ٿيڻ گهري، تنهن كي جدا كرڻ جو انتظام كيو وڃي، كانگريس جي راء آهي ته ان جي شروعات سنڌ كي جدا صوبي بنائڻ سان كئي وڃي."

(جي اير سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس 1968ع ص 73)

^{**} نهرو رپورت ۾ سنڌ جي عليحدگي هنن شرطن تي تسلير ڪئي ويئي هئي:

جاچ ڪرڻ کان پوءِ اهو ڏٺو ويو آهي تہ:
 الف. سنڌ مالي لحاظ کان خود کفيل آهي.

ب. جيكڏهن كي اهڙيون حالتون پيدا ٿين ۽ سنڌ كي مالي مسئلا درپيش اچن ۽ سنڌ
 جو اكثريتي عوام اهي برداشت كرڻ لاءِ تيار ٿئي.

^{.2} سنڌ جي حڪومت اهڙي نموني جي هوندي جهڙي آئين تحت ٻين صوبن ۾ هوندي.

^{3.} غير مسلم ٿورائيءَ کي اهي ئي رعايتون حاصل هونديون، جيڪي نهرو رپورٽ ۾ ڏنيون ويون آهن. P.12 (See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 19.9.1928 P.12)

۽ اڳتي هلي هن جماعت ۾ ڪا وڌيڪ اميد رکي نٿي سگهجي. پر سن 1930ع ۾ "گانڌي ارون ٺاه" (Gandhi Irwin Pact) کان پوءِ ڪانگريس ڪاميٽيءَ جي جڏهن بعبئيءَ ۾ گڏجاڻي ٿي، ته ان ۾ هن جماعت ٺهراءُ بحال ڪري هڪ ڀيرو وري به سنڌ جي جدائيءَ واري مطالبي کي تسلير ڪيو(134). پر انهيءَ حقيقت کان به ڪو انڪار نٿو ڪري سگهجي ته سنڌ جي ڪن ڪانگريسي هندو اڳواڻن ۽ مرڪزي ڪانگريس ڪاميٽيءَ جي حڪمت عمليءَ ۾ زمين آسمان جو فرق هو، جنهن ڪري سنڌ جي ڪانگريس ڪاميٽيءَ سنڌ اندر هن تحريڪ جي حمايت ڪرڻ بدران رڪاوٽون پيدا ڪرڻ شروع ڪيون. پر حالتون هڪ وهندڙ درياءَ وانگر انهن رڪاوٽن کي لوڙهينديون اچي سنڌ جي عليحدگيءَ واري ڏينهن تائين پهتيون.

آل انڊيا مسلم ليگ: هن ۾ ڪوب شڪ نه آهي ته مطالعي هيٺ آيل دور ۾ مسلم ليگ ننڍي کنڊ جي مسلمانن جي هڪ جماعت هئي، پر شروع کان وٺي هن جماعت تي سنڌ کان سواءِ هندستان جي ٻين پرڳڻن جي مسلمان اڳواڻن جو اثر پئي رهيو، ۽ هن جماعت نه ته سنڌ جي مسئلن ۾ ڪا دلچسپي ورتي ۽ نه ئي وري کيس سنڌ ۾ مقبوليت حاصل هئي. جيتري قدر سنڌ جي عليحدگيءَ جو سوال هو ته "آل انڊيا مسلم ليگ" (All India Muslim league) پهريون ڀيرو سن 1925ع ۾ عليڳڙه واري سالياني اجلاس ۾ سنڌ جي جدائيءَ واري سوال تي واضح نموني سان فيصلو ڪيو ۽ ان جي عليحدگيءَ جو مطالبو ڪيو (135).

سائمن ڪميشن (Simon Commission) جي مقرريءَ کان پوءِ هندستان جي سمورين پارٽين، ان تي شديد ردعمل ظاهر ڪيو ۽ هر پارٽيءَ پنهنجي طرفان ملڪ لاءِ آئيني خاڪو تيار ڪيو. مسلم ليگ، جيڪا ان وقت ٻن ڏڙن ۾ ورهائجي چڪي هئي، "تنهن جي هڪ ڏڙي مسٽر محمد علي جناح جي اڳواڻيءَ هيٺ چوڏهن نڪتا پيش ڪيا، ۽ مطالبو ڪيو ته هندستان جي مسلمانن لاءِ نئين آئين جي ڪا به تجويز ان وقت تائين قبول نہ ڪئي ويندي، جيستائين هنن چوڏهن نڪتن کي نه مڃيو ويندو. انهن چوڏهن نڪتن ۾ هڪ نڪتو، سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحد گيءَ بابت به هو (136).

مسلم ليگ اهڙيءَ طرح سنڌ جي هن اهر مسئلي جي اخلاقي ساٿ ڏيندي رهي

اهي ڌڙا هئا:

سر شفيع گروپ ۽ جناح گروپ. (صلاح الدين ناسڪ:تحريڪ آزادي. لاهور، عزيز پبلشرز 1975ع ص284)

۽ خاص ڪري ان جي هڪ ڌڙي جي اڳراڻ مسٽر محمد علي جناح "گول ميز ڪانفرنس" (Earl Russel) جي موقعي تي "ارل رسل"(Earl Russel) جي موقعي تي "ارل رسل"(Earl Russel) جي صدارت هيٺ ٺهيل سب ڪاميٽيءَ جي ميمبر جي حيثيت سان سنڌ جي جدائيءَ لاءِ چڱي جاکوڙ ڪئي.

آل انڊيا خلافت ڪاميٽي: جيڪڏهن سنڌ جي سياسي رهبرن کي "آل انڊيا خلافت ڪاميٽي" (All India Khilafat Committee) جو روح روان ۽ اڳواڻ چئجي تہ ڪو بہ وڌاء نہ ٿيندو " انهيءَ نسبت سان سنڌ جي جدائيءَ جو مسئلو شروع کان وٺي آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ جي توجه ڇڪائڻ جو باعث پئي رهيو، پر پهريون دفعر ڊسمبر 1925ع ۾ جڏهن آل انڊيا خلافت ڪانفرنس جو اجلاس ڪانپور ۾ ٿيو تہ ان ۾ سنڌ کي الڳ صوبائي حيثيت ڏيڻ جو مطالبو کيو ويو (137).

ان کان پوءِ وقت بوقت هيءَ ڪاميٽي سنڌ جي هن اهر مسئلي جي حمايت ڪندي رهي. سن 1932ع ۾ آل انڊيا خلافت ڪانفرنس جو اجلاس اجمير ۾ ٿيو، جنهن جي صدارت سنڌ جي نامور سياستدان شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ ڪئي. هن اجلاس ۾ بمبئي صوبي جي مسلمانن طرفان پنجن شرطن جي بنياد تي گڏيل چونڊن قبول ڪرڻ جو ٺهراءِ بحال ٿيو، جن مان سنڌ جي جدائيءَ جو شرط به هڪ هو(138). ان کان پوءِ سنڌ جو هيءُ جائز مطالبو برطانيد توڙي هند سرڪار لاءِ غور طلب رهيو ۽ سنڌ جي آزادي هڪ حقيقت بنجي چڪي هئي. جنهن کان پوءِ هن مسئلي تي ڪنهن به پارٽيءَ لاءِ مخالفت ڪرڻ جو جواز ئي نه رهيو.

مكي كانفرنسون: سائمن كميشن (Simon Commission) جي قائر ٿيڻ كان پوءِ ننڍي كنڊ جي باشعور عوامر ان كميشن ۾ پنهنجي نمائندگي نه ڏسي شديد ردعمل جو اظهار كيو ۽ سائس كو به تعاون نه كيو. هيءَ كميشن هندستان كي ڏنل اڳئين آئين جي جاچ كرڻ ۽ نون سڌارن آڻڻ لاءِ تجويزن ڏيڻ واسطي قائم كئي ويئي هئي. عوام جي عدم تعاون جي نتيجي ۾ اهو ضروري هو ته ننڍي كنڊ جون مختلف پارٽيون انفرادي توڙي اجتماعي طرح سان هندستان لاءِ آئيني تجويزون پيش كن ۽

^{*} آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ جي انقلابي حڪمت عملي سنڌ جي سياسي مدبرن جي بصيرت جي پيداوار هئي. مولانا تاج محمود امروٽيءَ هن جماعت کي "عدم تعاون تحريڪ" جو تصور ڏنو ۽ رئيس جان محمد جوڻيجي عملي طور تي "هجرت تحريڪ" جو بنياد وڌو، اهي ٻئي اڳواڻ سنڌ جي پيداوار هئا.

پنهنجي سياسي مستقبل جو خاڪو چٽين. سن 1928ع کان سنڌ جي عليحدگيءَ واري مسئلي تي بحث ڪرڻ لاءِ ننڍي کنڊ اندر ڪانفرنسون ۽ ڪنوينشنون سڏايون ويون. جن جو مختصر ذڪر هيٺ ڪجي ٿو:

آگسٽ 1928ع ۾ لکنؤ ۾ آل انڊيا پارٽيز ڪانفرنس ٿي. انهيءَ موقعي تي ننڍي کنڊ جي مسلمان سياستدانن، پنهنجي گڏيل بيان ۾ سنڌ جي عليحد گيءَ واري مطالبي جي حمايت ڪئي.*

ان كان پوءِ نومبر 1928ع ۾ كلكتي ۾ آل پارٽيز كنوينشن ٿيو. جنهن ۾ سنڌ جي مكي عيوضين جهڙوك: سر حاجي عبدالله هارون، شيخ عبدالمجيد سنڌي ۽ بابا مير محمد بلوچ شركت كري، سنڌ جي عليحدگيءَ واري مسئلي كي ڀرپور نموني سان پيش كيو(139).

سن 1929ع ۾ هز رائل هائنيس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان جي صدارت هيٺ دهليءَ ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" (All India Muslim league) جي گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ به سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ بابت هيٺيون يڪراءِ ٺهراءُ بحال ڪيو ويو:

"جيئن ته سنڌ کي بمبئي علائقي سان نسلي، لساني، جاگرافيائي ۽ انتظامي نقطي نگاه سان ڪوبه لاڳاپونه آهي، تنهن ڪري هن ڪانفرنس جو رايو آهي ته ان کي جدا صوبو بنائي جدا اسيمبلي ڏني وڃي. هندو اتليت جي مناسب حقوق جي حفاظت ڀلي ڪئي وڃي. سنڌ اسيمبليءَ ۾ هندن کي اوتري نمائندگي ڏني وڃي، جيتري قدر مسلمانن کي مسلم اتليت وارن صوبن ۾ ڏيڻ جو اصول قبول ڪيو ويندو"(140).

سن 1931ع ۾ "آل انڊيا مسلم ڪانفرنس" جو اجلاس لاهور ۾ ٿيو، جنهن جي صدارت ڊاڪٽر محمد اقبال ڪئي . شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ جي ڪوششن سان هن اجلاس بـ سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري مطالبي جي پٺيرائي ڪئي(141).

[•] هن گڏيل بيان تي صحيحون ڪندڙ هئا:

مستر علي امار, مهاراجا محمود آباد, راجا نواب علي. تي. اي كي. شيروان, ابوالكلار "آزاد", اير. سي, چا گلا, مستر لطيف احمد, محمد اسماعيل, سيد جالب, خليق الزمان, محمد نسير مسند علي نادي, مولانا اكرم خان, يعتوب عارف ۽ داكٽر كچلو.

⁽See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 30-8-1928 P-1)

سركاري كوششون: هن تحريك جو آغاز كيترو وقت اڳ ٿي چكو هو، ۽ سنڌ جي خود مختياري گهرندڙ سياسي اڳواڻ ان مطالبي كي ننڍي كنڊ جو هك اهر سياسي مسئلو مڃارائي چكا هئا. پر وقت جي سركار هن مطالبي كان باخبر هئڻ جي باوچود عملي طرح سان انهيءَ ڏس ۾ كو به قدم نٿي كنيو.

سن 1909ع ۾ جڏهن "منٽومارلي سڌارن" (MintoMorley Reforms) بعد سنڌ کي "بمبئي ڪائونسل" (Bombay Council) لاءِ چئن نمائندن موڪلڻ جو حق مليو ته هيءُ مسئلو جيڪو اڳ ڪانفرنسن ۽ سياسي پارٽين جي ڪاميٽين تائين محدود هو. سو بمبئي ڪائونسل تائين پهچي ويو. سن 1921ع ۾ مسٽر آءِ. ايس. حاجي هن ڪائونسل ۾ هن تحريڪ جي فائدي ۾ پهريون ڀيرو ڪوشش ڪئي پر رٿ تي بحث ڪرڻ کان اڳ بمبئي ڪائونسل جو اجلاس ختر ٿي ويو(142).

هن مسئلي تي جڏهن ننڍي کنڊ جي سمورين سياسي پارٽين پنهنجو عمل ۽ ردعمل ڏيکاريو تہ وقت جي سرڪار بہ متاثر ٿي. اهڌيءَ طرح پهريون ئي ڀيرو هي؛ مسئلو سرڪار جي توجهہ ڇڪائڻ جو باعث بڻيو.

سن 1928ع ۾ برطانيہ سرڪار هندستان کي مليل سڌارن جي تعميل ۽ نتيجن بابت جانچ ڪري، نون سڌارڻ ڏيڻ لاءِ سفارش ڪرڻ واسطي "سائمن ڪيشن" (Simon Commission) مقرر ڪئي. هيءَ ڪميشن 12 نومبر 1928ع تي جڏهن ڪراچيءَ ۾ آئي ته "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" (Sind Mohammadan) جڏهن ڪراچيءَ ۾ آئي ته "سنڌ هندو سيا" (Sind Hindu Sabha) ان جي اڳيان سنڌ جي عليحدگيءَ جي موافقت ۽ مخالفت ۾ پنهنجون عرضداشتون پيش ڪيون.

بعبئي سرڪار ان ڪميشن سان ٻانهن ٻيلي ٿي ڪر ڪرڻ لاءِ سر شاهنراز ڀٽي جي چيئرمينيءَ هيٺ بعبئي جي صوبائي ڪاميٽي تشڪيل ڏني هئي، جنهن تي سنڌ مان سيد ميران محمد شاه کي به ميمبر طور کنيو ويو(143). هن ڪاميٽيءَ 7 مئي 1929ع تي "سائمن ڪميشن" کي پنهنجي رپورٽ پيش ڪئي(144). جنهن ۾ سيد ميران محمد شاه جي اختلاقي نوت کان سواء باقي جملي ميمبرن سنڌ جي عليحدگيءَ خلاف راء ڏني(145). جيتوڻيڪ هند جي مرڪزي اسيمبليءَ طرفان مقرر ڪيل ڪاميٽيءَ به سنڌ جي جدائيءَ جي فائدي ۾ راءِ ڏني(146)، پر ان هوندي به سائمن ڪئيشن سنڌ جي جدائيءَ جي مخالفت ۾ فيصلو ڏنو ۽ صرف هيءَ سفارش ڪئي ته: "آئنده بمبئي ڪائونسل جي سنڌي ميمبرن کي سنڌ سان واسطو رکندڙ مسئلن کي بببئي ڪائونسل جي اندر پيش ڪرڻ لاءِ پنهنجي ڌار ڪاميٽي ٺاهڻ جي اجازت ڏني

وڃي. " (147) هن ڪميشن جي رپورٽ جي پڌري ٿيڻ کان پوءِ سنڌ جي خود مختياري گهرندڙ جماعتن ۽ شخصيتن پنهنجو شديد ردعمل ڏيکاريو، جنهن جو تفصيل هن ئي باب ۾ مناسب هنڌ ۽ سياسي پارٽين جي الڳ الڳ بابن ۾ بيان ڪيو ويو آهي.

12 نومبر 1930ع کان 19 جنوري 1931ع تائين لنڊن ۾ هندستان کي سڌارن ڏيڻ جي مسئلي تي غور ڪرڻ لاءِ ڪانگريس کان سواءِ جملي پارٽين جي نمائندن جي شرڪت ۽ تعاون سان "گول ميز ڪانفرنس"(Round Table Conference) ٿي(148). جنهن ۾ سر شاهنواز خان ڀٽو ۽ سر غلام حسين هدايت الله به شامل ٿيا(149).

سر شاهنراز ڀٽي جي ڪوششن سان، هن ڪانفرنس سنڌ جي سوال تي غور ڪرڻ لاءِ "ارل رسل" (Earl Russel) جي صدارت هيٺ هندستان جي نامور سياستدانن تي مشتمل هڪ سب ڪاميٽي مقرر ڪئي. "

ان ڪاميٽيءَ وڏي غور ۽ فڪر کان پوءِ مالي تحقيقات ڪرائڻ واري شرط سان. سنڌ کي بمبئيءَ کان الڳ ڪرڻ جي حفارش ڪئي.

سن 1931ع ۾ گول ميز ڪانفرنس جي روشنيءَ ۾ هند سرڪار "مائيلس ارونگ" (Miles Irwing) جي چيئرمينيءَ هيٺ سنڌ جي مالي حالت ٻابت رپورٽ ڏيڻ لاءِ هڪ ڪاميٽي تشڪيل ڏني. (150)

هن كاميني، كراچي بر اچي سنڌ جي سياستدانن سان ملاقاتون كيون ۽ آخر بر سنڌ جي 97,40,000 ستانري لک چاليه هزار روپيا سالياني كوٽ ڏيكاري، اندازو لڳايو ته جيكڏهن سنڌ كي صوبائي حيثيت ڏني ويئي ته ان جو شروعاتي خرچ 22,00,000 ٻاويه لک روپيا ٿيندو. (151)

سن 1932ع ۾ برطانيہ جي وزيراعظر "مسٽر رامزي مئڪڊونالڊ" Mr. Ramsay" هول ميز ڪانفرنس جي ڏنل تجويزن جي روشني ۾ "ڪيونل ايوارڊ" (Communal Award) جو اعلان ڪيو. هن اعلان ۾ اصولي طور تي سنڌ جي بمبئيء کان عليحدگيءَ واري حقيقت کي تسلير ڪيو ويو، (152) جنهن کان پوءِ هند سرڪار (152) جنهن کان پوءِ هند سرڪار (Hon.A.F.L. Brayne) جي صدارت هيٺ هڪ ڪاميٽي مقرر

^{*} ان كاميني، تي جن مشهور سياسي الروائن كي كنيو ويو هو. سي هئا:

مسٽر محمد علي جناح، سر آغا خان، ڊاڪٽر شفاعت احمد خان، سر محمد شفيع، ڊاڪٽر مونجي، مسٽر چنتامڻي، راجا نريندرنائ، سردار سمپورن سنگه، ۽ مسٽر جيڪر (جي ايم سيد "سنڌ جي بمبئي کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس 1968ع ص82)

ڪئي تہ جيئن اها "مائيلس ارونگ" ڪاميٽيءَ جي نشاندهي ڪرايل کوٽ جي پورائي لاءِ پنهنجون تجويزون پيش ڪري.*

هن ڪاميٽيءَ اڌ مهيني کان وڌيڪ عرصو ڪراچيءَ ۾ پنهنجون گڏجاڻيون ڪيون ۽ آخرڪار حڪومت کي رپورٽ پيش ڪئي، جنهن ۾ سنڌ جي کوٽ کي گهٽائي 80،00،000 اسي لک روپيا ڏيکاريو ويو. ان کان سواءِ هن ڪاميٽيءَ اها راءِ ب ڏني ته هند سرڪار اها کوٽ 15 سالن تائين ڀريندي رهي. جنهن کان پوءِ سنڌ پاڻ تي ڀاڙي سگهڻ جهڙي ٿيندي (153).

وقت جي هند سرڪار سنڌ جي عليحدگيءَ کي عملي جامو پهرائڻ لاءِ 27 آڪٽوبر 1933 تي "سنڌ انتظامي ڪاميٽي" (Sind Administrative Committee) تشڪيل ڏني (154) تـ جيئن:

- . اها ڪراچيءَ ۾ "گررنينٽ هائرس" (Government House) "ڪائونسل چيمبر"(Council Chamber)سيڪريٽريٽ ۽ آفيسرن جي رهائش،
- ا۱۱ سنڌ جي بمبئيءَ جي صحت، تعليم، سائنس، جهنگلات، زراعت ۽ ٻين ادارن سان مستقبل جي الحاق بابت.
 - .١١١ سكر بئراج تي اطمينان بخش نموني ۾ كرجي نگهبانيء لاءِ انتظامي امورن، ۽
- السركاري ملازمن ۽ سنڌ جي عليحدگيءَ سا لاڳاپو رکندڙ ٻين مسئلن تي تغتيش
 کري سركار کي رپورٽ پيش كري.

هيءَ ڪاميٽي "ايڇ ڊو" (H.Dow) جي اڳواڻي ۾ بنائي ويئي هئي. ۽ ان تي "آر بي ميڪلهان" (R.B.Meclahan)، "جي، ڪئلا" (G.Kaula))، سر حاجي عبدالله هارون، ڪي بي محمد ايوب کهڙو، آر بي هيرانند ۽ "اي. ايل پرائيس" (E.L.Price) کان سواءِ "ايڇ، بي. لئمبرڪ" (H.B.Lambrick) کي به ميمبر طور مقرر ڪيو ويو هو (155).

^{*} ان ڪاميٽيءَ جا ميمبر هثا:

سر شاهنواز خان يتو. آنربل ميان علي بخش. سر حاجي عبدالله هارون، مير بنده علي خان تالپر، خانبهادر اله بخش سرمرو، خانبهادر محمد ايوب کهڙو، قاضي عبدالرحمان، مستر لعل چند نولراء، ديوان بهادر مرليڌر، پروفيسر ڇېلاثي، مستر هوشنگ ڊنشا، مستر اي ايل پرائيس ۽ پروفيسر يتيجا. (جي اير سيد: "سنڌ جي بمبئي کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرئيگ پريس 1968ع ص84).

آخر كار "ڊر كاميٽي" (Dow Committee) پنهنجي رپورٽ پيش كئي، جنهن ۾ سفارش كيل هئي ته هندستان ۾ نون سڏارن رائج كرڻ كان گهٽ ۾ گهٽ هڪ سال اڳ سنڌ كي بمبئيءَ كان الڳ كيو وڃي(156).

سن 1933ع ۾ انگلنڊ ۽ برٽش پارليامينٽ هندستان جي سڏارن جي بل جي مسودي تي غور ڪرڻ لاءِ "جائنٽ پارليامينٽري ڪاميٽي" (Joint Parliamentary) مقرر ڪئي، جنهن "سنڌ آزاد ڪانفرنس" کي سنڌ جي جدائيءَ واري ڪيس پيش ڪرڻ لاءِ دعوت ڏني. ڪانفرنس جي ورڪنگ ڪاميٽيءَ, خانبهادر محمد ايوب کهڙي کي ان ڪاميٽيءَ اڳيان شاهدي ڏيڻ لاءِ موڪليو، جنهن اتي وڃي تحسين جو ڳو ڪر ڪيو.

آڪٽوبر 1934ع ۾ "جائنٽ پارليامينٽري ڪاميٽي" "Committee عير رپورٽ شايع ٿي(157). جنهن ۾ سنڌ جي جدائي لاءِ پارليامينٽ کي سفارش ڪيل هئي. پر سکر بئراج کي گورنر جي خاص نگرانيءَ هيٺ رکڻ جي سفارش ڪئي ويئي هئي. جنهن تي سنڌي عوام سخت احتجاجي ٺهراءَ پيش ڪيا، جنهن جو مختصر خاڪر هن باب جي ٻئي هنڌ تي ڏنو ويو آهي.

سبن 1935ع ۾ برطاني پارليامينٽ ۾ هندستان لاءِ نون سڌارن آڻڻ جو بيل پيش ڪيو ويـو، جنهن جي فقـري نمبر 46 مـوجب سنڌ کي جدا صـوبو تسليم ڪيو ويـو (158). ساڳئي سال جي آخر ۾ اهـو بـل پاليامينٽ پاس ڪيو، جنهن کي گورنمينٽ آف انـڊيا ائڪـٽ 1935 (Government of India Act) چيو وڃي ٿو.

هن ائڪٽ موجب سنڌ جي جدائيءَ جي تاريخ "آرڊر ان ڪائونسل" (Order in) (Council) ذريعي مقرر ٿيڻي هئي، جنهن جي فيصلي مؤرخ 22 جنوري 1936ع موجب 1. اپريل 1936ع تي سنڌ کي الڳ صوبي جي حيثيت ڏني وئي (159)

عالمن جو حصو: سنڌ جي بعبئيء کان آزاديءَ واري تحريك ۾ سنڌي عالمن ٻن طريتن سان حصو ورتو، پهرئين طريقي موجب مختلف پارٽين جهڙوك: "خلافت تحريك" ۽ "جميعت العلماء" جي سياسي ميدان تان، جن جو ذكر انهن پارٽين جي احوال ڏيندي، هن مقالي جي مناسب هنڌن تي ڪيو ويو آهي ۽ ٻيو سڌو سنئون هن تحريك ۾ حصى وٺڻ سان.

سن 1932ع ۾ "سنڌ آزاد ڪانفرنس" سڏائڻ جو رواج پيو، جنهن جي ڪارواين

پڙهڻ سان اسان کي ڪيترن ئي عالمن جا نالا ملن ٿا. * تحريڪ کي وڌيڪ زور وٺائڻ ۽ مقبول بنائڻ واسطي سنڌ ۾ "سنڌ آزاد جماعت" قائم ڪئي ويئي(160). هن تحريڪ ۾ جن عالمن ڀرپور حصو ورتو, تن جي نالن جو وچور هن طرح ٿئي ٿر(161):

مولانا حبيب الله (لاڙڪاڻو)، مولانا خير محمد لغاري (ٿرپارڪر)، مولانا شغيع محمد منگيو (نواب شاهر)، مولانا شغيع محمد نظاماڻي (حيدرآباد)، مولانا صدرالدين شاه (جيڪب آباد) مولانا عبدالحميد (لاڙڪاڻو)، مولانا عبدالحي (ٿرپارڪر) مولانا عبدالحيم شاه (ٺٽو)، مولانا عبدالصمد مولانا عبدالحي (ٿرپارڪر) مولانا حاجي عبدالرحيم شاه (ٺٽو)، مولانا عبدالصمد (ڪراچي)، مولانا عبدالكريم كورائي (جيڪب آباد)، مولانا عبدالكريم كورائي (جيڪب آباد)، مولانا عبدالكريم ويدرآباد)، مولانا قاضي عبدالكريم ويدرآباد)، مولانا عبدالكريم عباسي (ٺٽو)، مولانا عبدالواحد (نوب شاهر)، مولانا عظاءُ الله پٺاڻ (فاضي عبدالكريم معمد (كراچي)، مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي (لاڙڪاڻو)، مولانا حكيم مولانا غلام محمد (ڪراچي)، مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي (لاڙڪاڻو)، مولانا حكيم شاهر) مولانا محمد حسن لغاري (سانگهڙ) شاهر) مولانا محمد حسن لغاري (سانگهڙ) شاهر) مولانا محمد حسن لغاري (سانگهڙ) مولانا محمد عباسي (لاڙڪاڻو)، مولانا محمد موسيٰ (ٿرپارڪر) مولانا محمد موسيٰ (ٿرپارڪر) عمرکٽي (ٺٽو) مولانا محمد موسيٰ (ٿرپارڪر)

هيء جماعت ان لاء ٺاهي ريشي هئي ته جيئن سنڌ ۾ بمبئيء کان آزاديء واري تحريڪ لاء راء هموار ڪري سگهجي. سنڌ جي عالمن هن جماعت ۾ ڀرپور حصو ورتو، ۽ سندن ئي ڪوشش سان هن جماعت جي سياسي ميدان تان آزاديء جي لاٽ ٻاري ويئي. جنهن جي نتيجي ۾ آخرڪار سنڌ کي بمبئيء کان آزاد ڪيو ويو.

[&]quot; تاريخ 15 نومبر 1932ع تي حيدرآباد ۾ علام يوسف عليءَ جي صدارت هيٺ سڏايل ٻي "سنڌ ڪانفرنس" ۾ شريڪ ٿيندڙ عالمن جا نالا هن طرح آهن: مولانا پير مجدد صاحب (حيدرآباد) مولانا حڪير فتح محمد سيوهاڻي (ڪراچي) ۽ مولانا محمد معاذ پيرزادو (نواب شاه) جن کي هن ڪانفرنس جي مستقبل ڪاميٽيءَ تي بہ کنيو ويو هو. (جي ايم. سيد, سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968ع ص120)

خلافت تحريك

تعارف: پهرين مهاڀاري لڙائيءَ جي شروعات ۾ ترڪن کي پنهنجن ڪيترن ئي علائقن تان هٿ کڻڻو پيو ۽ سندن شڪست سنڌ ۽ هند جي مسلمانن کي مايوس ڪرڻ جو وڏو ڪارڻ بڻي. ڇو تہ انهيءَ زماني ۾ ترڪي ئي مسلمانن جو وڏو ڏڍ ۽ خلافت جو مرڪز هئي. جيتوڻيڪ هندستان جي عوام هن جنگ ۾ غير مشروط طور تي برطانيہ جي مالي، جاني ۽ اخلاقي مدد ڪئي هئي، ۽ خود انگريز حڪومت سنڌ ۽ هند جي مسلمانن سان وعدو ڪيو هو تہ هوءَ ترڪيءَ جي قوت ۽ اقتدار کي نہ ڇيهو رسائيندي، ۽ نه وري اهڙي قسم جي منصوبي ۾ شريڪ ٿيندي، پر جڏهن جنگ ۾ جرمنيءَ کي شڪست آئي ته ترڪي جيڪو ان جو ساٿي هو، تنهن تي به شڪست جا ڇنڊا پيا. هنن ئي حالتن ۾ صلح جو معاهدو ٿيو، جنهن جي ذريعي ترڪيءَ تي هي شرط مڙهيا ويا تہ:

"پنهنجي سموري فوج ختر ڪري ڇڏيندو. ان جا جنگي جهاز ضبط ڪيا ويندا، ايشيائي ڪوچڪ ۽ عرب ۾ سرحدن کان سواءِ ملڪ جو اندروني انتظام ترڪيءَ جي حوالي هوندو. پر ريلوي جي نگرائي ۽ استعمال جو حق اتحادين کي حاصل هوندو" (162).

خارجي طور تي تركيء جي حالتن مسلمانن كي وقت جي حكومت خلاف ڀڙڪائي ڇڏيو ۽ ٻئي طرف وري "رولٽ ايڪٽ" (Rowlatt Act)، ۽ جليانوالا باغ جي حادثي هندستان جي باقي عوام كي انگريزن خلاف كري ڇڏيو.

جڏهن حڪومت کي احساس ٿيو تر سنڌ ۽ هند جو عوامر خلانت جي مسئلي تي متحد ٿي، انگريز راڄ لاءِ خطرو بنجي ويندو تر هن پنهنجن هر خيال عالمن کال مخلافت جي مسئلي تي فتوائون ڪڍارايون. جن ۾ اهو ڄاڻايو ويو هو تر "خلافت" جو ادارو مذهبي، تاريخي ۽ عملي طور تي ختر ٿي چڪو آهي. ان ڪري ترڪن کي خلافت جو گادي نشين تسليم ڪرڻ، ڪنهن به طرح سان جائز نه آهي. سنڌ ۾ حڪومت جي اهڙي وفاداريءَ جو ثبوت مولوي فيض الڪريم ٺارو شاهيءَ ڏنو، جنهن مئي 1919ع ۾ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ ڪتاب لکي، سنڌ جي پنجانوي عالمن، پيرن ۽ گادي نشين کان تصديق ڪرائي. " ان کان پوءِ محمد عبدالغنيءَ به ساڳئي موضوع تي "خلافت جي مسئلي تي خيالات" ڪتاب لکيو. "

ا من كتاب جا تفصيل امن سياجي باب ير ڏنا ويا آهن.

^{* *} هن كتاب جا تفصيل امن سيا جي باب ۾ ڏنا ويا آهن.

اهي حالتون سنڌ ۽ هند جي عوام اڳيان هيون، جن جي روشنيءَ ۾ سنڌ ۾ سيپٽمبر 1919ع ۾ "خلافت تحريڪ" جو بنياد وڌو ويو(163)، ۽ نومبر 1919ع ۾ دهليءَ ۾ "خلافت ڪاميٽيءَ" جو قيام عمل ۾ آيو(164). جنهن طرفان سڀ کان پهريائين مٿي ذڪر ڪيل ڪتابن جا رد لکيا ويا، ۽ انهن کي وڏي پيماني تي ورهايو ويو.

سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي تاريخ سنڌ اندر سياسي تنظيم جو هڪ مثالي نمونو هئي. مركزي آفيس كان سواءِ ان جون سنڌ اندر كل ست ضلعي كاميٽيون * ۽ ٻه سؤ ٻارنجاه شاخون هيون. **

سنڌ خلافت ڪاميٽي اهڙو منظر ادارو هو، جنهن جي اڳيان خلافت جي مسئلي کان سواءِ سنڌ جي تعليمي، مذهبي، سماجي ۽ سياسي خدمت ڪرڻ جو هڪ جامع منصوبو هو. هن جماعت شروع کان وٺي آخر تائين پنهنجا مبلغ مقرر ڪيا، جن سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ وڃي زبردست تبليغ ڪئي، ۽ عوام ۾ شعور پيدا ڪيو. هن جماعت کي پنهنجي مقصد حاصل ڪرڻ لاءِ ڪيترائي فند بہ قائم ڪرڻا پيا، جن جو تفصيل هن طرح آهي: * * *

حاجين جي امداد جو فند: هي؛ فند سن 22-1923ع ۾ قائر ڪير وير هر. تہ جيئن سنڌ مان حرمين شريفين جي زيارت ۽ حج تي ويندڙ ماڻهن لاءِ سهوليتون پيدا

^{*} اهي ضلعي ڪاميٽيون هيون:

ضلعو ٿرپارڪر. ضلعر جيڪب آباد, ضلعر حيدرآباد, ضلعر سکر, ضلعر ڪراچي، ضلعر لاڙڪاڻو ۽ ضلعر ساهتي (نواب شاه), (ڏسو جميعت خلافت صوب سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين. ڪراچي، "الرحيد" اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص ص33-34).

[•] انهن شاخن جو الف. بي وارو وچور ضميمي نمبر ٻئي ۾ ڏنو ويو آهي ۽ ان ۾ هر شاخ کان پوءِ سن 1983ع تائين وارو ضلعو پڻ ڏنو ويو آهي. (هيء معلومات روزانه "الوحيد" ڪراچي. ڊيلي -گزيٽ (Daily Gazette Karachi) ڪراچي جي مختلف پرچن ۽ خلافت ڪاميٽيء جي مختلف رپورٽن مان ورتي ويئي) -

^{* *} مُعلومات جميعت خلافت صوب سنڌ جي ساليانين رپورٽن ۽ روزانه "الوحيد", جي مختلف پرچن مان ورتل آهي.

ڪري سگهجن، جهڙوڪ مختلف اسٽيشنن تي رضا ڪارن جا جٿا قائم ڪرڻ، ڪراچيءَ ۾ حاجين جي طعام، قيام ۽ علاج معالجي جو بندوبست ڪرڻ، اسپيشل ٽرين ڀاڙي تي ڪرڻ، يا سندن آمدروفت جي سهوليتن کي آسان بنائڻ ۽ اخبارن جي وسيلي سندن معلوماتي مدد ڪرڻ.

اخبار "الوحيد" جي امداد جو فند: جيئن ته هيءَ اخبار جماعت طرفان قائر كئي ويئي هئي، ۽ ان جي پرچار جو مكي ذريعو به هئي، ان كري اخبار جو انتظار جماعت جي هٿ هيٺ هو، جنهن لاءِ اهو فندقائر كيو ويو هو.

سمرنا جو فند: هي؛ فند سمرنا جي مظلوم مسلمانن جي مدد ڪرڻ لاءِ جاري ڪيو ويو هو. هن فند جا پئسا "آل انڊيا خلافت ڪاميٽي" جي معرفت سمرنا جي ستايلن تائين پهچايا (يندا هئا.

انگورا جو فند: هي؛ فند سمرنا فند كان پوءِ قائم كيو ويو ته جيئن انگورا جي فاتح تركن جي مالي مدد كئي وچي.

طباره فند: سمرنا جي فتح کان پوءِ سنڌ ۽ هند جي خلافتي مسلمانن اهو طي ڪيو ته ترڪن کي خوشيءَ جي يادگار ۾ ٽي هوائي جهاز ڏنا وڃن، انهن مان هڪ جهاز سنڌ جي خلافتين ڏيڻ جو انجام ڪيو. هيءُ فند انهيءَ ڪري قائم ڪيو ويو هر ته هڪ جهاز جي قيمت گڏ ڪري ترڪن کي پهچائي وڃي.

مدين مهاجرين فند: جزيرة العرب جي لڙائيءَ وقت جيڪي ماڻهو متاثر ٿي ۽ مهاجر بڻجي اچي مديني ۾ رهيا, تن جي مالي مدد ڪرڻ لاءِ هيءُ فند قائم ڪيو ويو هو.

موپيلا فند: 1921ع ۾ موپلا ۾ مسلمان هارين غير مسلم زميندارن ۽ وڏيرن خلافت بغاوت ڪئي، جنهن کي ختر ڪرڻ لاءِ حڪومت کي مارشل لا جو سهارو وٺڻو پيو. اهڙين حالتن اتان جي مسلمانن کي معاشي ۽ سياسي طور تي متاثر ڪيو. انهن جي امداد لاءِ موپلا فند گڏ ڪيو ويو هو.

چندو بابت انسداد فتنه: سنڌ ۾ شڌي سڀا جي قيام کان پوءِ هتان جون مذهبي حالتون خراب ٿيڻ لڳيون ۽ هندن طرفان نومسلم کي مذهب بدلائڻ جون ڪوششون ڪيون ويون. انهيءَ جنون کي منهن ڏيڻ لاءِ هيءُ فند قائم ڪيو ويو هو. انهن قائم ڪيل فندن کان سواءِ خلافت ڪاميٽيءَ کي پنهنجو"خلافت بيت المال" به هوندو هو. جنهن مان جماعت جي انتظام هلائڻ جو خرچ هلايو ويندو هو.

سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي قيام کان وٺي ان جي اختتام تائين هن سياسي جماعت سنڌ جي جيڪا خدمت ڪئي، تنهن کي ڪڏهن به فراموش ڪري نٿو سگهجي. اهر هن جماعت جي مقبول هئڻ جو هڪ واضح دليل آهي، جو هن جماعت جون شاخون سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ پکڙيل هيون. ان کان سواءِ مطالعي هيٺ آيل دور ۾ خلافت ڪاميٽي هڪ اهڙي جماعت هئي، جنهن باقي ٻين سمورين جماعتن جي ڀيٽ ۾ گهڻي کان گهڻيون گڏجاڻيون ڪيون، جلسا ڪيا، هڙتالون ڪرايون ۽ ڪانفرنسون سڏايون ٿا

سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ پنهنجي سموري سياسي ڄمار ۾ فعال ۽ منظر جماعت جي حيثيت سان ڪر ڪيو ۽ اهو سندس ئي ڪارنامو هو جو سنڌ جي عوام ۾ سياسي شعور ۽ بيداري پيدا ٿي، جنهن سبب هنن تنَ، مَنَ ۽ ڏنَ جي قرباني ڏيئي، ڌارئين حڪمران کي پنهنجي ڌرتيءَ تان لوڌي ڪڍڻ جي هر ممڪن ڪوشش ڪئي. سموري هندستان ۾ سنڌ جي ڌرتي ۽ خلافت ڪاميٽي ئي حقيقت ۾ قيادت ۽ قربانيءَ جو عملي نمونو پيش ڪيو. هن ئي ڌرتيءَ تان "هجرت تحريڪ" جنم ورتو. "ترڪ موالات" تحريڪ کي هتان جي

هن كاميٽيءَ طرفان مختلف وقتن تي ٻن قسمن جون كانفرنسون ٿينديون هيون:
 پهريون سنڌ سطح تي ۽ ٻيون مقامي سطح تي. كجه اهر كانفرنسن جو مختصر وچور هن طرح ٿئى ٿو:

| 4 2 | |
|-----------------------------------|----------------------------|
| كانفرنس جو هنڌ | تاريخ |
| حيدرآباد | 4 جنوري 1920ع |
| لاڙڪاڻو | 6 جنوري 1920ع |
| پات | 30 اپريل 1920ع |
| جيڪب آباد | 20 مثي 1920ع |
| حيدرآباد | 23 جولاء 1920ع |
| سكر | 8 جولاء 1922ع |
| 5 | 8 سيپٽمبر 1922ع |
| جيڪب آباد | 11 جنوري 1923ع |
| Fin | .30 جنوري 1923ع |
| سكر | 29 آڪٽوبر1928ع |
| ميهر | 23 مارچ1930ع |
| Face | 26 نومبر 1931ع |
| حيد" جي مختلف برچن مان ورتي ويئي) | (هيءَ معلومات روزانه "الو. |
| ي جي محت برچي ٥٠٥ در دي ريدي | رهيء معلومات رورات الو |

عوامر ئي خلافت ڪاميٽي جي ڪوششن سان ڪامياب بڻايو.

سنڌي عرام ۽ عالمن نہ رڳو "سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ" وسيلي پنهنجا جوهر ڏيکاريا، مگر انهن سنڌ کان ٻاهر "آل انڊيا خلافت ڪاميٽي" جي به رهبري ڪئي ۽ ان سان تعاون ڪيو. اجتماعي طور تي هن تحريڪ کي محمد علي "جوهر"، رئيس غلام محمد ڀرڳڙي، حاجي عبدالله هارون، شيخ عبدالمجيد سنڌي ۽ رئيس جان محمد جوڻيجي جهڙا عظيم مدبر ۽ بي لوث انسان ملي ويا. هن تحريڪ کي پوري هندستان ۾ زور وشور سان هلايو ويو، جنهن ۾ سنڌ جا ماڻهو مڙني کان اڳرارهيا.

سن 1920ع ۾ مرڪزي خلافت ڪاميٽيءَ طرفان محمد علي "جوهر" سيد سليمان ندوي. ۽ سيد حسن امام تي مشتمل هڪ وفد لنڊن موڪليو ويو، ته جيئن برطانيه سرڪار جي اڳيان خلافت جي مسئلي کي چڱيءَ طرح پيش ڪري سگهي(165). هن وفد کي ڪا به خاطر خواه ڪاميابي حاصل ٿي نه سگهي ۽ عربن کي حق خود اختياري ڏيڻ جي نالي ۾ ترڪيءَ کي ٽڪرا ٽڪرا ڪرڻ واري ڏوه کي، برطانيه سرڪار وقت جي تتاضا ۽ هڪ حقيقت قرار ڏنو(166).

وند جي واپسيءَ کان پوءِ ڊسمبر 1920ع ۾ ناگپور ۾ "مسلم ليگ" ۽ "ڪانگريس" جو اجلاس ٿيو. جنهن ۾ "ترڪ موالات تحريڪ" هلائڻ جو اعلان ڪيو ويو(167). هن تحريڪ دوران ڪيترن ئي ماڻهن پنهنجون نوڪريون ڇڏيون، خطاب واپس ڪيا ۽ سرڪاري امداد وٺڻ بند ڪري ڇڏي. يارهن هزار ماڻهو جيل موڪليا ويا ۽ ارڙهن هزار ماڻهن افغانستان ڏانهن هجرت ڪئي(168). هن هجرت جي ڪاروان جي اڳواڻي رئيس المهاجرين جان محمد جوڻيجي ڪئي.

"خلافت تحريك" هندو مسلم اتحاد جو هك انوكو مثال هئي. هن تحريك جي اڳراڻي مهاتما گانڌي كري رهيو هو. آگسٽ 1921ع جي لڳ ڀڳ هيءَ تحريك بغاوت جو روپ وٺڻ لڳي. موپل ۾ مسلمان هارين بغاوت شروع كئي جنهن كي ختم كرڻ لاءِ مارشل لا Martial Law)، لڳايو ويو. چوري چورا ۾ ٿاڻو ساڙيو ويو، ريل جون پٽڙيون اکوڙيون ويون ۽ ٽيليفون جون تارون ڪپيون ويون(169)، ساڳئي وقت اهو پڻ محسوس كيو پئي ويو ته برطانيه جو راڄ ٿورن ڏينهن جو مهمان آهي. پر اوچتو ئي فيبروري 2022ع ۾ مهاتم گانڌيءَ تحريك ختم كرڻ جو اعلان كيو(170).

سن 1924ع ۾ مصطفيٰ ڪمال ترڪيءَ جو حاڪر بنجي چڪو هو، هنهن خليفي عبدالحميد کي ملڪ نيڪالي ڏيئي خلافت جو خاتمو آڻي ڇڏيو(171). مسلمان جڏهن مصطفيٰ ڪمال جي اهڙيءَ پاليسيءَ ۽ ترڪيءَ جي حالتن کان مايوس ٿيا تہ خلافت کي بچائڻ ۽ بحال ڪرڻ لاءِ انهن امير نجد ڏانهن رخ ڪيو. سن 1928ع ۾ محمد علمي "جوهر" مڪي وڃي. امير نجد سان ڳالهيون ڪيون (172). پر اهي ڳالهيون بہ ناڪامر ٿيون. ان ڪري خلافت جو هميشہ لاءِ خاتمو اچي ويو.

ڪارڪردگي: خلافت ڪاميٽيءَ جي سموريءَ ڪارڪردگيءَ کي ٻن حصن ۾ ورهائي سگهجي ٿو. پهريون: نج "خلافت" جي اداري کي بحال ڪرائڻ جون ڪوششون ۽ ٻيو سنڌ جون سياسي، سماجي، مذهبي ۽ تعليمي خدمتون. "خلافت ڪاميٽيءَ"جي ڪارڪردگيءَ جو مختصر خاڪو هن طرح ٿئي ٿو:

خلافت جا ڏينهن، جيتوڻيڪ خلافت جو مسئلو گهڻو اڳ سنڌي عوامر کي پاڻ ڏانهن متوجه ڪري چڪو هو، پر 17 آڪٽوبر 1919ع هن تحريڪ جي تاريخ جو اهو پهريون ڏينهن هو، جنهن کي سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ "يوم خلافت" جي حيثيت سان ملهايو ويو. هن ڏينهن تي سلطنت عثمانيہ جي بقاءَ لاءِ دعائون گهريون ويون، جلسا سڏايا ويا ۽ ترڪن جي حمايت ۾ نہ صرف ٺهراءَ بحال ڪيا ويا، پر امروت، ٺلاه، ٽنڊوالهيار، ٽنڊو محمد خان، ڳڙهي ياسين، دادو، ڊيرو، ڊکڻ، حيدرآباد، رتوديرو، روهڙي، رڪن، ماتلي، ميرپورخاص، نواب شاهر لاڙڪاڻو، سکر، شڪارپور، قمبر، هالا پراڻا ۽ ڪراچيءَ ۾ خلافت جو ڏينهن به وڏي ڌامر ڌوم سان ملهايو ويو(173). هيءُ واقعو سنڌ ۾ خلافت تحريڪ خواه ڪاميٽيءَ کي گهر گهر پهچائڻ جو سبب بڻيو.

پوءِ ستت ئي ٻئي مهيني ۾ خلافت ڪاميٽيءَ 17 ڊسمبر 1919ع کي احتجاج جو ڏينهن ڪري ملهايو ۽ ان کان چار ڏينهن اڳ سرڪار طرفان ملهايل"جشن صلح "جو بائيڪاٽ ڪيو.

هن واقعي كان پوءِ سنڌ جي خلافت كاميٽيءَ 1920ع ۾ ٻه دفعا خلافت جا ڏينهن ملهايا. جن مان پهريون 19 مارچ 1920ع تي ۽ ٻيو 1 آگسٽ 1920 تي ملهايو ويو. جيتوڻيڪ مارچ 1920ع جو "يوم خلافت" پهرئين ملهايل خلافت ڏينهن (17 آڪٽوبر 1919ع)، كان گهٽ كو نه هو، پر آگسٽ 1920ع وارو ڏينهن سنڌ جي سياسي تاريخ ۾ هميشد لاءِ ياد كيو ويندو. هن ڏينهن ملهائڻ لاءِ "سنڌ خلافت كاميٽيءَ" خاص هدايتون جاري كيون هيون، جن مان هي قابل ذكر آهن: (174).

- 1. مڪمل طور تي هڙتال ٿيڻ گهرجي.
- جيڪڏهن ٿي سگهي تہ مسلمان روزو رکن ۽ باقي ٻين مذهبن وارا پنهنجي طور طريقي سان عبادت ڪن.

- قول ۽ فعل ذريعي تشدد اختيار نه ڪيو وڃي.
- ماڻهن تي زبردستي هڙتال ڪرڻ جو فيصلو مڙهيو نه وڃي.
- 5. "ترك موالات" جاري كرڻ ۽ "تركي شرائط صلح" قبول نہ كرڻ جا ٺهراء بحال كيا وڃن.

"سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ" جي سڏ تي سڄي سنڌ لبيڪ چئي اٿي ۽ هيءُ ڏينهن ننڍن خواه وڏن شهرن، ڳوٺن، ۽ واهڻن ۾ ملهايو ويو. جن مان: امروٽ، بدين، پنوعاقل، ڀريا, ٺٽو، ٺل، کاهي، حيدرآباد، مٽياري، ميروخان، مورو، نواب شاه، نوشهرو فيروز، نصرپور، سکر، سيوهڻ، سونڊا، شاهپور، شاه جو ڳوٺ، شڪارپور، قمبر، هالا پراڻا، ڪراچي ۽ ڪوٽڙيءَ جا نالا ذڪر لائق آهن(175)، ان کان پوءِ هن جماعت کي عوام جي حمايت ۽ مقبوليت حاصل ٿي. جنهن جي آڌار تي "ترڪ موالات" ۽ "هجرت" جون تحريڪون وڏي جوش ۽ جذبي سان هلايون ويون.

خليفن سان وفاداري: خلافت تحريك جي آغاز سان گڏ خليفي جي شخصيت ۽ وجود به خلافت جو اهر مسئلو بڻجي ويو. مطالعي هيٺ آيل دور ۾ پهريائين سلطان وحيد الدين ۽ ان كان پوءِ سلطان عبدالحميد سلطنت عثمانيہ جا خليفا بڻيا. سندن حيثيت كي مضبوط ۽ مستحكر بنائڻ لاءِ سنڌ جي خلافتين نه رڳو خطبن ۾ سندن نالا شامل كري ڇڏيا، پر سنڌ خلافت كاميٽيءَ كي سندن وفاداريءَ جا ٺهراءَ به منظور كرڻا پوندا هئا. سن 1920ع ۾ حيدرآباد ۽ كراچي خلافت جا مكيه مركز رهيا. جتي نه رڳو خليفي وحيد الدين سان وفاداريءَ جا انجام ۽ اقرار كيا ويا(176)، پر سندس نالي پٺيان "الوحيد" اخبار جو به اجراء كيو ويو. كانئس پوءِ سلطان عبدالحميد خلافت نشين ٿيو ته ان جي حق ۾ به سن 1922ع كان ٺهراءَ منظور ٿيڻ لڳا. اهڙي قسم جا ٺهراءَ ڳوٺ وڪا خلافت كاميٽيءَ ڊسمبر 1922ع ۾، قمبر خلافت كاميٽيءَ ڊسمبر 1922ع ۾، قمبر خلافت خلافت كاميٽيءَ ڊسمبر 1922ع ۾، رتوديرو خلافت كاميٽيءَ ڊسمبر 1922ع ۾، وري ديرو خلافت كاميٽيءَ جنوري 1923ع ۾، وري ديرو خلافت كاميٽيءَ جنوري 1923ع ۾، منظور كيار 177).

جڏهن خود ترڪيءَ وارن 3-3-1924ع تي خلافت جو خاتمو آڻي ڇڏيو(178)، ۽ سلطان عبدالحميد کي ان عهدي تان معزول ڪري ڇڏيو، تڏهن به سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جا ڪيترا قائد کيس خليفو تسليم ڪري سندس حق ۽ وفاداريءَ ۾ ٺهراءَ منظور ڪندا رهيا. انهيءَ سلسلي ۾ تاريخ 21 مارچ 1924ع تي امروت خلافت

ڪاميٽيءَ جي گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ ٺهراءَ منظور ڪيو ويو هو ته سلطان عبدالحميد کي جيستائين دنيا جا سمورا مسلمان خلافت جي عهدي تان معزول نٿا ڪن، تيستائين پاڻ مسلمانن جو خليفو رهندو(179).

سركار سان لاڳاپا: "رولٽ ايكٽ" (Rowlatt Act) جي نافذ ٿيڻ ۽ جليانوالا باغ جي واقعي تائين وقت جي سركار خلاف ماڻهن جي دلين ۾ كافي نفرت پکڙجي چڪي هئي، پر برطاني حكومت جي تركيءَ خلاف لڳاتار جارحان حكمت عمليءَ مسلمانن، خاص كري خلافتي اڳواڻن جي دلين ۾ فرنگي سركار خلاف نفرت جو ٻچ ڇڏيو.

برطانيه سرڪار جنگ دوران هندستاني مسلمانن کي اهو يقين ڏياريو هو ته اها سندس مقدس مقامات جو احترام ڪندي، پر هوءَ پنهنجي وعدي کي نه رڳو پاڙي نه سگهي پر پنهنجن مفادن جي حفاظت خاطر لڳاتار پاڪ جاين تي قبضا ڪرڻ شروع ڪيا. هنن نرمبر 1914ع تي بصري، 11 مارچ 1917ع تي بغداد، 9 ڊسمبر 1917ع تي بيت المقدس ۽ ان کان پوءِ ڪوفي، مدينه، ڪربلا معليٰ ۽ نجف اشرف تي قبضو کري ورتو(180).

اهڙيءَ طرح انهن ئي حدن ۾ هڪ طرف شريف مڪي جي قيادت ۽ خانداني بادشاهت ۽ ٻئي طرف فلسطين ۾ يهودي، سامراجيت قائر ڪرڻ لاءِ عملي قدم کنيا(181).

ان كان سواءِ برطانيه سركار ۽ سندس اتحادين هي ۽ به وعدو كيو هو ته سلطنت عثمانيه ۽ تركيءَ جي جاگرافيائي حيثيت ۽ صورت كي تبديل نه كيو ويندو، پر اهو وعدو به پورو تي نه سگهيو، ڇو ته تركيءَ جي عهدنامي مطابق ٿريس ۽ سمرنا كان سواءِ خود سندس دارالسلطنت قسطنطنيه به كجه وقت تائين تركيءَ كان كسيا ويا هئا(182). نه رڳو ايترو پر تركيءَ تي ذلت آميز عهدناما ۽ جنگيون مڙهي، ان كي يورپ جو بيمار ملك بڻايو ويو، جنهن جي نتيجي ۾ عثمانيه سلطنت اندروني خلفشار جو شكار بنجي ويئي ۽ خلافت جي امانت كي سنڀالي نه سگهي.

سنڌ جي خلافتي اڳواڻن ۽ ڪارڪنن ابتدا کان وٺي خلافت جي خاتمي تائين برطانيہ سرڪار جي سامراجي حڪمت عمليءَ جي مذمت پئي ڪئي. جنهن جي شاهديءَ لاءِ خلافت ڪاميٽيءَ جي مختلف شاخن جي ڪارڪردگي مثال طور پيش ڪري سگهجي ٿي.

خاص كري جدِّهن تركن كي سمرنا ۾ فتح حاصل ٿي، تدِّهن برطانيه سركار انهيءَ فتح جو برو اثر قبول كيو ۽ پنهنجا جنگي جهاز، خواه لشكر قسطنطنيه ۽ دره دانيال دِّانهن روانا كيا. حالانك فرانس ۽ اٽلي انهيءَ ۾ شركت كرڻ كان انكاري ٿيا. مسلمانن جي هن دوست مائي باپ حكومت ايتري قدر شرارت ۾ قدم زني كئي جو آمريكا، آفريكا، آسٽريليا، مطلب ته هر طرف حربي امداد لاءِ تارون كيون(183)،

هي؛ واقعو مسلمانن کي نراس ۽ ناراض ڪرڻ جو وڏي کان وڏو سبب هو. ان ڪري سنڌ ۾ سرڪار جي انهيءَ حڪمت عمليءَ خلاف 29 سيپٽمبر 1922ع جي تاريخ کي برطانيہ جي مذمت جو ڏينهن ڪري ملهايو ويو. ان کان پوءِ به اهو سلسلو ڪافي وقت تائين جاري رهيو. جنهن جي ڪاميابيءَ جو اندازو هن مان لڳائي سگهجي ٿو ته مکيہ شهرن کان سواءِ ڪاميٽيءَ جي هنن هيٺ ذڪر ڪيل شاخن ۾ به گڏجاڻيون ٿيون ۽ برطانيہ سرڪار جي مذمت ڪئي ويئي(184).

29 سيپٽمبر 29وع تي ٿيل گڏجاڻيون: اسلام ڪوٽ، امروٽ، انڙپور، بٺي، بهراڻ، ڀان، تلوايو، ٽکڙ، ٽنڊو آدم، ٽنڊوڄام، ٺل، ٺلاه، پيلوڙو، جادو ڪلهوڙو، جيڪب آباد، خيرپور ناٿن شاه، دائم خان مشوري، ديدڙ، سجاول، سيوهڻ، شهداد ڪوٽ، شيخ ڀرڪيو، قبول ڪيريو، قمبر، ڪڍڻ، ڪنڀاريو، ڪنڙي، ڪيڪاري، کاريو، غلام شاه، کوکر، گوڻاڻو، ڳجهڙ، ڳڙهي ياسين، گهٽهڙ، ماتلي، مٽياري، مخدوم بلال، منڙيو، موڙائي، ميرپور بٺورو، ميهڙ، نصرپور، نوشهروفيروز، وروائي ۽ هالا.

30 سيپٽمبر 1922ع تي ٿيل گڏجاڻيون: دادو, مانجهند, ملڪاڻي, مخدور بلال ۽ نوشهروفيروز.

12 آڪٽوبر 1922ع تي ٿيل گڏجائي: باگڙجي

18 آڪٽوبر 1922ع تي ٿيل گڏجاڻي: دودو

19 آڪٽوبر 1922ع تي ٿيل گڏجاڻي: عبدر

ائين ڪو نہ هو تہ برطانيہ سرڪار جي محض هڪ ئي سال مذمت ڪئي ويئي، پر اهو سلسلو آخر تائين قائم رهيو ۽ انهيءَ جذبي ئي خلافت کي بچائڻ کان پوءِ ڌارين حڪمرانن کي ڌرتيءَ تان لوڌي ڪڍڻ جي همت بخشي.

يونان جي مذمّت: مطالعي هيٺ آيل دور ۾ تركن سان دوستيءَ ۽ وفاداريءَ سبب سنڌ جي عوام كيترن ئي ملكن ۽ ماڻهن جون دشمنيون قبول كيون، جن مان يونان به هك هو. جيتوڻيك انگريزن سلطنت عثمانيه كي هك وڏي طاقت جي حيثيت ۾ ڏسڻ نٿي گهريو. پر يونان ان جي ڀيٽ ۾ ترڪيءَ جو ويجهو ۽ سخت دشمن هو. ان ڪري سنڌ جي عوامر کي بہ هن ملڪ جي حڪمرانن کان سخت نفرت هئي.

سن 1922ع ۾ يونان قسطنطنيہ تي حملي ڪرڻ جو منصوبو رٿيو. اها خبر جڏهن سنڌ ۾ پهتي ته هنڌين ماڳين يوناني ادارن جي مذمت ڪئي ويئي. يوناني حڪمت عمليءَ خلاف سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي جن شاخن ٺهراءَ منظور ڪيا، تن جو تاريخوار وچور هن هيٺ ڏجي ٿو: (185)

15 آگسٽ تي ڄام نور الله، 23 آگسٽ 1922ع تي قبمر، اسيپٽمبر 1922ع تي جيڪب آباد، 8 سيپٽمبر 1922ع تي ٽنڊوڄام، ٺٽو، ٺل، رتوديرو، شهداد ڪوٽ، لاڙڪاڻو، مانجهو، ميرپور بٺورو، نصيرآباد، وسين ملوڪ شاھ ۽ 10 سيپٽمبر 1922ع تي سکر.

هجرت تحريك: سنڌ جي سياسي تاريخ پنهنجن خواه پراون جي قلم جو نشانو بڻي آهي. سنڌ جا اهي قلم ڌڻي، جيكي اسان جي سياسي تاريخ ۽ سياسي واقعن جا عيني شاهد يا كردار رهيا آهن، تن پنهنجي شخصيت ۽ كردار كي اڀارڻ لاءِ حقيقتن جو خون كيو آهي. ڌارين وري جڏهن قلم هٿ ۾ كنيو آهي ته انهن آزاديءَ جي تحريك جا كارناما، پنهنجي كاتي ۾ چاڙهي، رسوايون ۽ ذلتون اسان جي نالي لكي ڇڏيون آهن. جڏهن اسين "هجرت تحريك" جي تاريخ جا ورق ورايون ٿا ته تاريخ نويسيءَ جو ساڳيو نشتر اسان جي جذبن ۽ امنگن جو خون كري ڇڏي ٿو. غير سنڌي كتابن جي مطالعي كرڻ مان معلوم ٿئي ٿو تہ ڄڻ "هجرت تحريك" جو آغاز اڳ ۾ ٻين كيو ۽ پوءِ اسان اكيون ٻوٽي انهيءَ جي پيروي كئي جي جر حقيقت ائين نه آهي. "هجرت تحريك" جو عملي آغاز سڀ كان پهريائين سنڌ مان ٿيو ۽ ان جي پوئواري باقي هندستان وارن كئي.

لاڙڪاڻي ۾ خلافت ڪانفرنس جي آخري اجلاس منعقده 8 فيبروري 1920ع تي اهر طئي ٿيو هو تہ جان محمد جوڻيجي جي اڳواڻي هيٺ سنڌ جي خلافتين جو هڪ وفد

^{*} عام طور تي اهو سمجهيو ريندو آهي ته "هجرت تحريك" جو خيال سڀ كان پهريائين عزيز هنديءَ كي آيو. جنهن اپريل 1920ع ۾ سڏايل دهليءَ كانفرنس جي موقعي تي هجرت بابت ٺهراءَ پيش كرڻ جي كوشش كئي. تنهن كي پهريائين "ٺهراءَ كاميٽي" نا منظوركيو ۽ پوءِ ان تي كيس عام جلسي ۾ ڳالهائڻ كان پري ركيو ويو. (سيد رئيس احمد جعفري: اوراق گم گشته، لاهور نيو قائن پريس سال ؟ ص ص 776-777)

بمبئيءَ وجي گورنر سان ملاقات ڪري ۽ کيس سنڌ جي ڪامورن جي ظلمن جو داستان ٻڌائي. لڳاتار ڇويه ڏينهن نٽائڻ بعد، جڏهن وقت جي گورنر وفد سان ملاقات ن ڪئي ۽ جڏهن بمبئيءَ مان سنڌ وارن جي سفارت نا اميد ٿي موٽي آئي ۽ ترڪيءَ سان صلح جي شرطن ۾ ٿير قاريا ترميم جي ڪا اميد ڪا نرهي ۽ سنڌ ۾ ب ڪامورن جي ظلم تي کين ڳڻتي هئي، پر هنن کي پڪ ٿي تہ ڪنهن به صورت ۾ حڪومت جي موجوده نوڪر شاهي مان ڪا ڀلائي يا دادرسي ٿيڻي ڪا نہ آهي، تنهن ڪري نهايت تنگ اچي، سيوهڻ خلافت ڪانفرنس جي موقعي تي جيڪا عبدالڪريم درس جي زير صدارت منعقد ٿي هئي، هجرت جو ٺهراءُ پاس ڪيائون(186).

هتي هيءَ ڳاله غور ڪرڻ جو ڳي آهي ته سيوهڻ خلافت ڪانفرنس اپريل 1920ع ۾ منعقد ٿي، جنهن ۾ هجرت جو ٺهراءِ ته منظور ٿي سگهيو ، پر ساڳئي مهيني ۾ دهليءَ خلافت ڪانفرنس ۾ جڏهن عزيز هندي ساڳيو ٺهراءِ پيش ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي ته اتان جي خلافتي اڳواڻن ڏسي وائسي انهيءَ ٺهراءَ کي پيش ٿيڻ به نه ڏنو.

سيوهڻ خلافت ڪانفرنس کان پوءِ مئي 1920ع ۾ جڏهن جيڪب آباد ۾ خلافت ڪانفرنس ٿي تد ان موقعي تي باقاعده هجرت ڪاميٽيءَ جو انعقاد ٿيو. جنهن جو صدر جناب پير تراب علي شاه صاحب ۽ سيڪريٽري رئيس جان محمد جوڻيجو چونڊيا ويا(187). جڏهن ڪانفرنس جي آخري ڏينهن تي هجرت جو اعلان ٿيو ته هزارين ماڻهن سنڌ مان ڪابل ڏانهن هجرت ڪرڻ لاءِ نالا ڏنا.

ان کان پوءِ ساڳئي مهيني ۾ "هجرت ڪاميٽيءَ" جو ٻيو اجلاس حيدرآباد ۾ پير تراب علي شاه جي صدارت هيٺ ٿيو، جنهن ۾ حڪومت کي هجرت ڪرڻ جي منصوبي کان باخبر ڪيو ويو. ان کان پوءِ اهو به ضروري ڄاتو ويو ته هجرت جي تحريڪ کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ لاءِ هجرت جي خواهشمندن جي مڪمل رهبري ڪئي وڃي. انهيءَ سلسلي ۾ جون 1920ع ۾ مختلف ذرائع ابلاغ ذريعي اهو پڌرو ڪيو ويو ته:(188).

- جيڪي هجرت ڪرڻ گهرن ٿا, سي پنهنجا نالا, ذاتي احوال ۽ مالي حالت لکت ۾ "هجرت ڪاميٽي" ڏانهن موڪلي ڏين.
- جيڪي خواهشمند "هجرت ڪاميٽي" جي مالي مدد ڪرڻ گهرن ٿا، سي اڳتي
 تدم وڌائين.
- سنڌ مان پهريون قافلو 9 جولاءِ 1920ع تي روانو ٿيندو. سو انهيءَ ۾ هجرت ڪندڙ پنهنجي مڪمل تياري ڪري ڇڏين.

جڏهن هند جي عالمن ۽ خلافتي اڳواڻن اهو ڏٺو ته هجرت جو منصوبو سنڌ ۾ هڪ تحريڪ جي روپ ۾ اڀري چڪو آهي، تڏهن انهن هميش جي هير جيان ٻين جي ڪمائيءَ تي هٿ گهمائڻ لاءِ ڪيترائي اعلان ڪيا ۽ هدايتون جاري ڪيون. اهڙن عالمن مان غلام محمد عزيز هنديءَ جو نالو خاص طور تي ذکر ڪرڻ جي لائق آهي. جنهن حالتن جو جائزو وٺندي پنهنجو پاڻ کي "خادم المهاجرين" جي لقب سان مشهور ڪيو. ۽ سنڌ ۾ "هجرت ڪاميٽي" ٺهڻ کان پوءِ اخبارن ۾ اشتهار ۽ هدايتون ڇپارايون. بدقسمتيءَ سان پري جي دهلن کي سندر سمجهندي ۽ احساس ڪمتريءَ جي ڪن ۾ بدقسمتيءَ سان پري جي دهلن کي سندر سمجهندي ۽ احساس ڪمتريءَ جي ڪن ۾ جون قيدو ويو. جون 1920ع ۾ "الوحيد" ۾ انهيءَ خود ساختہ "خادم المهاجرين" جون هي هدايتون شايع ٿيون: (189).

- اهو مسلمان هجرت جو ارادو كري, جو تكليفن ۽ مصيبتن جي سهڻ جي طاقت
 ركندو هجي ۽ سختيون سامهون اچڻ كري دچي نه وڃي.
- جو مسلمان هجرت جي نيت رکي ٿو, اهو فقط اسلام جي خدمت جي نيت سان هجرت ڪري.
- ۵. سڀ ڪنهن مهاجر کي تاڪيد ڪيو وڃي ٿو تہ هو ڪو بہ اهڙو ڪر يا گنتگو نہ
 ڪن، جنهن ڪري ماڻهن جي امن ۾ نقصان پوڻ جو انديشو هجي.
- 4 مهاجرن کي گهرجي تہ جيترو سرمايو پاڻ سان کڻي سگهن تہ اهو کڻن ڇو تہ هجرت جو مقصد آهي تہ هميشہ لاءِ هندستان کي ڇڏيو وڃي جيئن تہ حضرت رسول الله ﷺ جن هميشہ لاءِ مڪي کي ڇڏي ويا ۽ ساري زندگي مديني ۾ گذاريائون.
 - .5 مهاجرن کي گهرجي ته اسلامي غيرت ڪري هجرت ڪن.
- سڀ ڪنهن مهاجر کي پنهنجي اهل عيال سميت هجرت ڪرڻ جي شرعي اجازت آهي ۽ جو مهاجر فراغت سان سموري اهل عيال سميت هجرت ڪرڻ گهري تر بيشڪ ڪري.
- جو مسكين مهاجر غربت كري هجرت كرڻ كان لاچار آهي ته اهو رهندڙ مسلمانن كان مدد وٺي.
- 8. رهندڙ مسلمانن جو فرض آهي ته ان غريب مفلس مهاجر جي مدد ڪن, جو سچيءَ دل سان هجرت ڪرڻ جو خواهشمند آهي، جيئن ته ان مسڪين مهاجر کي راولپنڊيءَ جي ٽڪيٽ ۽ سفر جو خرچ ڏنو وڃي ۽ باقي پئسا ان مهاجر لاءِ ان جي

نالي ۽ پتي سميت "مجلس استقباليه وانتظاميه مهاجرين راولپنڊي" جي سيڪريٽري جناب مرزا قطب الدين، سيڪريٽري "خلافت ڪاميٽي" راولپنڊي جي خدمت ۾ موڪلي ڏين.

.9 مهاجرن کي گهرجي ته چوٿين رمضان کان پوءِ راولپنڊي اچڻ شروع کن.

.10 سفر جو سامان مختصر ۽ پورو کڻڻ گهرجي.

11. مهاجرن کي معلوم هئڻ گهرجي ته هن موسم ۾ ڪابل تائين رستو اگرچ گرم آهي، پر رات جو سردي پوي ٿي، تنهن ڪري گرم ڪپڙا، بسترا ۽ پاڻيءَ لاءِ لوٽا ضرور ساڻ کڻن.

بهرحال پنهنجيءَ مڙسيءَ ۽ پراون جي آسرن تي 9 جولاءِ 1920ع تي رئيس المهاجرين جان محمد جوڻيجي جي سربراهيءَ ۾ لاڙڪاڻي مان سنڌي مهاجرن جي پهرئين قافلي جي روانگي ٿي(190). اهڙي نموني سان ٿوري عرصي ۾ لاڙڪاڻي مان 288 مردن، جيڪب آباد مان 113 مردن، شڪارپور مان21 مردن ۽ سکر مان 67 مردن ۽ جملي 100 عورتن پنهنجي ڌرتي ماتا کي خيرآباد چيو(191).

سنڌي مهاجرن جي آڌرياءَ لاءِ اڳيئي ظفر علي لاهور مان چندو گڏ ڪري ڇڏيو هو. ان ڪري جڏهن سنڌي مهاجر لاهور ۾ پهتا تہ کين بادامي باغ ريلوي اسٽيشن تي مهمان بڻايو ويو(192).

آخرڪار مهاجرن جو هيءُ پهريون قافلو 16 جولاءِ 1920ع تي پشاور مان روانو ٿيو ۽ 19 جولاءِ 1920ع تي وڃي جلال آباد پهتو.

جيئن عزيز "هندي" ۽ ٻين خود ساخت هجرتي اڳواڻن، هن نج "سياسي تحريك" كي "مذهبي تحريك" جو روپ ڏيئي ڇڏيو هو، ان كري سنڌ توڙي هند جي اٻوجه ۽ ساده لوح ماڻهن مذهبي جذبي ۽ جوش سان كابل ڏانهن رخ كيو، اهو مذهبي جذبوئي "هجرت تحريك" جي ناكاميءَ جو پهريون سبب بڻيو.

هن تحريك اڳتي هلي جيكو رخ اختيار كيو، انهيءَ جو اندازو رئيس المهاجرين جناب جان محمد جوڻيجي جي انهيءَ تقرير مان لڳائي سگهجي ٿو، جيكا هن 4 آكٽوبر 1920ع تي كابل مان واپس ٿيندي كئي هئي. انهيءَ تقرير جا كي اقتباس هيٺ ڏجن ٿا:

"اسپيشل ٽرين ۾ گهڻو ڪري سڀ ماڻهو مفلس. بي سر وسامان هئا. گهڻن ُکي ته پورالٽا به بدن تي نه هئا. اهڙن ماڻهن کي جيڪڏهن ٽڪيٽ نه ٿي ڏنوسون تہ سخت رنج ٿيا ٿي ۽ چيائون ٿي تہ هجرت ڪا شاهوڪارن لاءِ آهي. ڇا اسان خدا ڪارڻ نٿا هلون؟ اسان بہ سمجهيو تہ مذهبي جوش دلين ۾ اٿن. انهن کي روڪڻ مناسب نہ آهي..... هجرت ڪميٽيء کي چندي جا پئسا كو نه هئا، تكيت تمام ٿورن ماڻهن پنهنجن پئسن سان خريد ڪيا، ٽڪيٽن ۾ چندي مان (3000)، ٽن هزارن کان گهٽ پئسا وصول قيا (3500)، تي هزار پنج سؤ كميتيء قرض ورتو, باقي الآكل (8500)، اك هزار پنج سو روپيا مون پنهنجي جيب مان خرچ كيا. كل اسپيشل ٽرين تي (14538)، چوڏهن هزار پنج سؤ اٺٽيه روپيا خرچ ٿيا.آخر هتان روانا ٿياسون, واٽ تي مهاجرن جي اهڙي مرحبا ٿي. جو ڪنهن بادشاه جي بہ ڪا نہ ٿيندي هوندي.... رستي ۾ اٽڪل (8000)، اٺ هزار روپيا مهاجرن جي امداد لاءِ مليا. جي هن ريت خرچ ڪيا ويا. مهاجرن لاءِ 53 بيل گاڏيون، هر هڪ جو ڪرايو (120)، هڪ سو ويه روپيا. ڪل ڪرايو (6400)، ڇهه هزار چار سو ڏنو ويو. انهن کان سواءِ 10 بگيون، هر هڪ جو ڪرايو (150), هڪ سو پنجاه روپيا. ڪل ڪرايو (1500)، هڪ هزار پنج سو روپيا. جملي (6900)، ڇه هزار نو سو روپيا.... واٽ ۾ پيادن لاءِ جيترا گڏه ۽ خبيرهٿ لڳا, انهن جو خرچ ۽ رستي ۾ غريبن جي کاڌي جو بندوبست مون پنهنجي كيسي مان كيو..... افغانستان جي حد ۾ قافلي جي انغاني ماڻهن پنهنجي وسعت آهر چڱي خدمت ڪئي... جنهن وقت جلال آباد پهتاسون ته اٽڪل پندرهن ڄڻا اتان واپس ٿيڻ لڳا بغير ڪنهن سبب جي.... هتي اسان ٻڌو آهي ته موٽي آيلن ظاڪر ڪيو آهي ته واك ير كيترا ماڻهو مري ويا، كن كي درياء ير لوڙهيو ويو، كن كي باهم ۾ ساڙيو ويو. اهو سمورو ڪوڙ آهي. رستي ۾ ٻہ پٺاڻ اسان جي قافلي ۾ فوت ٿيا هئا, انهن کي "ڍڪي" جي شهر ۾ دفن ڪيو ويو. ڪابل تائين سنڌي قافلي مان هڪ عورت فوت ٿي هئي. جا گاڏيءَ تان ڪري پئي هئى.... ايحا اسان جو قافلو كابل ۾ ئي هئو ته يكدم ٻيا هزارين مهاجر اچي پهتا ۽ ان رقت اٽڪل هڪ لک ٽيه هزار مهاجر افغانستان جي سرحد ۾ داخل ٿي چڪا هئا. اهي ماڻهو گهڻو ڪري بي سروسامان هئا ۽ هڪ هڪ قافلو سندن ويهن ويهن ۽ ٽيهن ٽيهن هزارن جي انداز ۾ هو. انهن جو انتظام رستي ۾ يا خود ڪابل ۾ پوريءَ طرح ٿي نه سگهيو. تنهن ڪري

امير صاحب مهاجرن جي تقسيم جو خيال كيو. مگر جهڙيءَ طرح امير صاحب فرمايو. اهڙيءَ ريت ماڻهن نه ڪيو....

آئرن هن جاءِ تي عرض كندس ته مهاجرن جي پردي ۾ جيكا خلق افغانستان ۾ گڏ ٿي هئي، سا چئن قسمن جي هئي. هڪڙو ٽولو خاص شرير ۽ شيطانن جو هو, ٻيو ٽولو انهن ماڻهن جو هو جن كي تعاشيين چئجي. كابل ۾ نكي بد پيش عور تون هيون، نكو هيو كو ناٽك ۽ ٻيو تماشو، جنهن سان اهڙن ماڻهن جي رهاڻ ٿئي. انهن كي افغانستان ۾ هك ويراني نظر آئي. ٽيون ٽولو انهن آدمين جو هو، جن كي ضعيف الايمان چئجي. يعني تہ جن كي كا ٿوري تكليف آئي ته برداشت نكري سگهيا. انهن ٽنهي قسمن جا ماڻهو واپس ٿيڻ لڳا. چوٿون ٽولو اهڙو به هو جن جو ايمان كامل هو. اهر ايا سوڌو افغانستان ۾ موجود آهي" (193).

رئيس المهاجرين جي تقرير مان اهو انداز و لڳائي سگهجي ٿو تهيءَ سياسي تحريك هك در وڏي پيماني تي اڀري آئي، جو هك طرف مهاجرن جي اڳواٽ ذهني تربيت ٿي نه سگهي ۽ ٻئي طرف اڳتي هلي اها بدانتظاميءَ جو شكار بڻجي ويئي ۽ نتيجي ۾ هك "سياسي تحريك"، "مذهبي تحريك" ۾ بدلجي ويئي.

جيئن ته ننڍي کنڊ جي عوامر جي اها نفسيات آهي ته هو فعال مسلمان نه هئڻ جي بارجود حد کان وڌيڪ مذهبي جوش ۽ جنون رکندو آهي. ان ڪري مهاجرن جي اڪثريت به اهڙن مفلس ۽ نادار ماڻهن تي مشتمل هئي، جن مذهبي جنون کي سياسي شعور مٿان اوليت ڏني.

انهن داخلي سببن کان سواءِ ٻن مکي خارجي سببن جو به هن تحريڪ جي ناڪاميءَ ۾ وڏو هٿ هو. انهن مان پهريون سبب هو فرنگي سرڪار جي بدنيتي. جنهن جي نتيجي ۾ ڪيترا سرڪاري جاسوس مهاجر بڻجي افغانستان ويا ۽ اتي وڃي ڏڦيڙ وڌائون. ٻيو سبب هوغير سنڌي عالمن جي غير مستقل مزاجي ۽ اڳواڻيءَ جو اجايو جنون. سنڌ ۽ هند جي غريب عوام ۾ هجرت جو جنون تڏهن جاڳيو، جڏهن غير سنڌي عالمن ۽ اڳواڻن فتوائون ۽ هدايتون جاري ڪيون. پر جڏهن ساده لوح عوام انهن جي اواز تي لبيڪ چئي "هجرت تحريڪ" کي هڪ طوفان جي حيثيت بخشي ته غير سنڌي عالمن عوام جو ساٿ ڏيئي، انهن سان گڏ هجرت ته نه ڪئي (196)، پر پنهنجن بيائن، عالمن عوام جو ساٿ ڏيئي، انهن سان گڏ هجرت ته نه ڪئي (196)، پر پنهنجن بيائن،

هدايتن ۽ فتوائن ۾ ردوبدل آڻڻ ۾ ئي پنهنجي عظمت ڄاتي.*

غير سنڌي عالم ۽ اڳواڻ نہ رڳو وقت ۽ حالتن مطابق پنهنجو موقف بدلائيندا رهيا، پر وقت بوقت سنڌي عالمن ۽ اڳواڻن ۾ بي اعتماديءَ جو اظهار بہ ڪندا رهيا. سندن انهيءَ روش به هن تحريك كي وڏو ڇيهو رسايو. مولوي غلام محمد عزيز هندي جنهن هجرت جهڙي سياسي تحريك كي مذهبي ۽ جنوني تحريك ۾ تبديل كرڻ لاءِ ننهن چوٽيءَ جو زور لڳايو، سو جڏهن آخري اٺين قافلي سان گڏجي افغانستان پهتو تاتي "انجمن مهاجرين هند" جي صدر ۽ ننڍي كنڊ جي نامور باغي عبيدالله سنڌيءَ جي حكم كي مڃڻ بدران خود خياليءَ جي پوئواري كرڻ لڳو(195). ۽ ائين مهاجرن ۾ اختلافن جي پوڻ جو آغاز ٿيو.

"هجرت تحريك" كي آخري ڇيهو تڏهن رسيو، جڏهن رئيس المهاجرين جان محمد جوڻيجي اپريل 1921ع ۾ هي؛ جهان ڇڏيو، جنهن سان گڏ "هجرت تحريك" جو بخاتمو ٿي ويو.

انگورا سان همدردي: سيوريء جي معاهدي ٿيڻ کان پوءِ به يونان ۽ ترڪيءَ جي جنگ جاري رهي، ۽ هن جنگ ۾ يونان لڳاتار ڪاميابيون حاصل ڪندو رهيو. تانجو آگسٽ 1921ع ۾ ان جون فوجون انگورا کان چاليهن ميلن جي مفاصلي تي اچي پهتيون. سنڌ جا مسلمان يونان جي پيش قدميءَ کي عملي طرح روڪي نه پئي سگهيا، پر هنن انگورا ۽ ان علائقي جي عوام لاءِ مالي ۽ اخلاقي امداد مهيا ڪرڻ جو جو ڳو بندوبست ڪيو. سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ انگورا فند قائم ڪيو، جيڪو مرڪزي ۽ خلافت ڪاميٽيءَ انگورا فند قائم ڪيو، جيڪو مرڪزي ۽ خلافت ڪاميٽيءَ وسيلي ترڪن جي حوالي ڪيو ويندو هو. ان کان پوءِ جڏهن سيپٽمبر خلافت ڪاميٽيءَ وسيلي ترڪن جي حوالي ڪيو ويندو هو. ان کان پوءِ جڏهن سيپٽمبر سيونا ۾ ترڪن کي فتح حاصل ٿي ۽ مصطفيٰ ڪمال پاشا اتاترڪ جون فوجون هڪ سال جي جدوجهد بعد سمونا ۾ فاتح جي حيثيت ۾ داخل ٿيون (1966)، ته اهو سمورو هڪ

انهيءَ سلسلي ۾ عبدالباريءَ جي هيٺ ڏنل بيان کي مثال طور پيش ڪري سگهجي ٿو:
 "مون هر ڪنهن مسلمان کي هجرت ڪرڻ جو حڪر ڪو نہ ڏنو آهي. ۽ نڪي
 ڪابل ۾ حالتون اهڙيون آهن. جو اوڏانهن هجرت ڪري وڃجي، مون کي يتين
 نٿو ٿئي تہ سواءِ پوري پوري غور ڪرڻ جي هجرت ڪو فرض آهي. تنهن کان
 سواءِ ڪيتراحق ادا ڪرڻا آهن ۽ والدين جي رضا وٺڻ ضروري آهي."

هيءُ بيان انهيءَ وقت ڏنو ويو هو. جڏهن "هجرت تحريڪ" پنهنجي اوج تي پهچي چڪي هئي. (ڏسو روزانه "الوحيد". ڪراچي مؤرخه 7 آگسٽ 1920ع ص1).

سال جو عرصو سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ ۽ ان جي مختلف شاخن ٺهرائن وسيلي ترڪن جي اخلاقي مدد ڪئي(197).

سمرنا جو واقعو: مئي 1919ع ۾ يوناني فاتح جي حيثيت ۾ سمرنا ۾ داخل ٿيا(198). سمرنا سلطنت عثمانيہ جي ايشيا ڪوچڪ ۾ هڪ سرسبز ۽ زرخيز آبادي هئي. اتان جي عوام تي يوناني حڪمرانن جيڪي ڏاڍ ڪيا، تن جو اندازو لڳائي نٿو سگهجي. محض ايدن ۽ بزعامو علائقن ۾ هڪ سو هنڌن کي باهيون ڏنيون ويون. ماڻهن کي زنده ساڙيو ويو. مقامي ماڻهن کي زبردستي جلاوطن ڪيو ويو ۽ بلاتميز ٻار توڙي ٻڍي، مرد توڙي عورت کي قتل ڪيو ويو (199).

سموري سمرنا جو حصو يونانين جي ظلم ۽ ڏاڍ جو نشانو بڻجي چڪو هو. رڳو اناظوليہ جو محدود علائقو ترکي فوج جي قبضي هيٺ هو. جنهن ۾ غازي مصطفيٰ کمال پاشا اسلام جي عزت، حفاظت ۽ آزاديءَ جو جهنڊو بلند ڪري رکيو هو. جيتوڻيڪ يونانين کي شروعات ۾ ڪنهن حد تائين ڪاميابي نصيب ٿي. پر اها ڪاميابي ستت ئي شڪست ۾ بدلجي ويئي ۽ مصطفيٰ ڪمال اتاترڪ جي قيادت ۾ ترکي فوج پهريائين انگورا پوءِ سمرنا فتح کيو، ترکن جي هيءَ فتح سنڌ جي مسلمان خلافتين لاءِ ڪنهن خوشيءَ کان گهٽ نه هئي. ان ڪري "جشن فتح" جي ڏينهن ملهائڻ لاءِ هنن 8 سيپٽمبر 1922ع کان وٺي 17 سيپٽمبر 1922ع تائين سنڌ جي ڪنڊ مبارڪباديءَ جا ٺهراءَ منظور ڪيا(200). اهڙين گڏجاڻين جو مختصر ۽ تاريخوار وچور هن طرح آهي:

7 سيپٽمبر 1922ع تي ڪوٽڙي، 8سيپٽمبر 1922ع تي ڳوٺ امام علي شاهر، ٽنڊر محمد خان، جيڪب آباد، ماتلي ۽ 12 سيپٽمبر 1922ع تي ڪراچيءَ ۾ .

ان کان سواءِ 17 سيپٽمبر 1922ع تي سنڌ ۽ هند ۾ جيڪو جشن فتح ملهايو ويو، تنهن ۾ مکي شهرن جي خلافت ڪاميٽين کان سواءِ هيٺ ڄاڻايل شاخن پڻ ڀرپور حصو ورتو(202).

الآڙو، بئي، بدين، ٻوٻي، ڀان، ڀورا، ٿريچاڻي، ٽنڊوآدم، ٺٽو، پير جو ڳوٺ، پير سرهندي، جئوسومرو، جيڪب آباد، جهرڪ، ڇڄڙا، دڌ، ڏهر، ڊينگاڻ، ڍورو نارو، رتوديرو، روهڙي، سعد الله، سکر، سونڊا، سيوهڻ، شادي پلي، شڪارپور، شهدادڪوٽ، فاضل ڪلهوڙو، ڪاڪيپوٽ، ڪوٽڙي، ڪيسر پارڪر، کپرو، گدارا، گوگارو، ڳڙهي ٻڍل، گهوٽڪي، ماڏو، مانجهند، مٽياري، ملا ابڙا، ميرپور بٺورو،

ميرپورخاص، ميروخان، ميهڙ،نصرپور، نوحيون، نئون واهڻ، وسين ملوڪ شاه، وڳڻ. هالا پراڻا ۽ هالا نوان.

لاسين كانفرنس: خلافت تحريك جي آغاز كان وٺي سنڌ جا مسلمان مذهبي ۽ جذباتي طور تي تركن جا حامي بڻجي چكا هئا. ان كري تركن جي هر كا خوشي ۽ هنن جي خوشيءَ برابر هئي ۽ تركن جو هر غمر، هو پنهنجو غر كري سمجهندا هئا.

لاسين كانفرنس جو آغاز ڊسمبر 1922ع ۾ ٿيو ۽ جولاءِ 1923ع ۾ انهيءَ كانفرنس جي خاتمي كان پوءِ تركن ۽ اتحادين جي وچ ۾ صلح جي عهدنامي تي صحيحون ٿيون، جيتوڻيك برطانيہ سنڌ ۽ هند جي عوام كي نظرنداز كندي هن كانفرنس ۾ مذمت جو ڳو كردار ادا كيو، پر پوءِ به صلح جو عهدنامو تركن جي مفاد وٽان هو. انهيءَ صلح جي جشن ملهائڻ لاءِ سموري سنڌ پاڻ سراپا جشن بڻجي ويئي. خلافت كاميٽيءَ جي مختلف شاخن خوشيءَ جي اظهار ۽ غازي مصطفيٰ كمال پاشا كي مباركباد ڏيڻ لاءِ جلسا كيا(203).

جُرْيرة العرب: لاسين كانفرنس كان پوءِ تركن كي جدّهن منهن مٿي كرڻ جو موقعر مليو ۽ سنڌ جو عوام انهيءَ جشن ملهائڻ ۾ مشغول هو. تدّهن سنڌ خلافت كاميٽي انهن عوامي امنگن ۽ جذبن كي صحيح دڳ لائڻ لاءِ نومبر 1923ع ۾ "جزيرة العرب هفتر" ملهائڻ جي هدايت كئي.

جيئن ته انهيءَ زماني ۾ جزيرة العرب نه رڳو غير مسلمانن جي قبضي ۾ هو. پر تڏهوڪي خليفي جي اقتدار کان به الڳ ۽ آزاد هو. سنڌ خلافت ڪاميٽي 16 نومبر کان 24 نومبر تائين "جزيرة العرب هفتو" ملهايو، جنهن ۾ مسجدن ۾ دعائون گهريون ويون ۽ برطانيه سرڪار خلاف مذمت جا ٺهراء منظور ڪيا ويا(204).

ترك موالات: پهرين عالمگير جنگ جي خاتمي كان پوءِ تركيءَ تي صلح جا ذلت آميز شرط مڙهيا ويا, جيكي هر صورت ۾ مسلمانن جي مذهبي جذبن جي خلاف هئا. اهي شرط برطاني حكومت جي وعدن جي ڏئي وائڻي ڀيڪڙي هئي.

سنڌ ۽ هند جا مسلمان برطانري حڪومت جي انهيءَ رويي کي ڪڏهن به اکيون ٻوٽي قبول ڪري نٿي سگهيا، ان ڪري هنن 22 جون 1920ع تي وائسراءِ ۽ گورنر جنرل هندستان "بيرن چيمسفورڊ" (Barin Chelmsford)، کي هڪ يادداشت نامو ڏنو، جنهن ۾ اهو مطالبو ڪيو ويو هو ته برطانوي سرڪار ترڪيءَ تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني ڪرائي، ٻيءَ حالت ۾ سنڌ ۽ هند جا مسلمان "ترڪ موالات" جو آغاز ڪندا(205).

سنڌ جي جملي ارڙهن عالمن ۽ سياسي اڳواڻن ذڪر ڪيل يادداشت تي صحيحون ڪيون، ۽ اهي هئا: (206)، سيٺ حاجي عبدالله هارون (ڪراچي)، ابوالحسن سيد تاج محمود (امروت)، ميان امين الدين منشي (حيدرآباد). شيخ عبدالمجيد (حيدرآباد)، محمد خان (حيدرآباد)، ڊاڪٽر اير اي احمد (ڪراچي)، مولوي سيد اسد الله (ٽکڙ)، مولوي محمد صادق (ڪراچي)، مسٽر جان محمد جوڻيجو (لاڙڪاڻو)، پير تراب علي شاه (قمبر)، مولوي عبدالغفور (جيڪب آباد)، مولوي عبدالخالق مورائي (مورو)، پير رشد الله (پير جهنڊو)، مولوي حڪير محمد مولوي حڪير فضل محمد (نوشهرو)، نجر الدين انصاري (نوشهرو)، مولوي حڪير محمد صديق (مورو)، محمد هاشر مخلص (ميرپور خاص)، ۽ حاجي احمد علي (ڊينگاڻ)

سنڌ توڙي هند جي خلافتي اڳواڻن هر ممڪن وسيلا ڪر آڻي حڪومت کي پنهنجي حڪمت عمليءَ تي نظر ثاني ڪرڻ لاءِ آماده ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي، پر جڏهن سندن هر ڪوشش ڪنهن نتيجي پيدا ڪرڻ کان سواءِ ختر ٿي ويئي ته مايوس ۽ نااميد بڻجي "ترڪ موالات تحريڪ" هلائڻ تي مجبور ٿيا.

هن تحريك جو تخيل سڀ كان پهريائين سنڌ جي ڌرتيءَ تان اڀريو. انهيءَ سلسلي ۾ اپريل 1920ع ۾ سيوهڻ ۾ خلافت كاميٽيءَ جي گڏجاڻي ٿي. جنهن ۾ "ترڪ موالات" جو ٺهراءُ پيش كيو ويو(207). تنهن كان هك مهينو پوءِ كراچيءَ ۾ خلافت جو جلسو ٿيو، جنهن ۾ ساڳئي قسم جو ٺهراءُ بحال كيو ويو(208).

ان کان ہم مهينا پوءِ جولاءِ 1920ع ۾ قمبر ۾ خلافت ڪاميٽيءَ جو اجلاس ٿيو، جنهن ۾ به اهڙي قسر جو ٺهراءُ بحال ڪيو ويو(209). سنڌ جي اڳواڻيءَ ۾ جڏهن "ترڪ موالات" جو آغاز ٿيو، ته ان کان پوءِ 6 سيپٽمبر 1920ع تي ڪلڪتي ۾ خلافت تحريڪ، مسلم ليگ ۽ ڪانگريس جو گڏيل اجلاس ٿيو، جنهن ۾ هن تحريڪ کي جاري رکڻ جو فيصلو ڪيو ويو، پوءِ جلد ئي سنڌ ۽ هند جي عالمن هن فيصلي جي تصديق ڪري فتريٰ ڪڍي، جنهن تي سنڌ مان حاجي محمد قاسم (سونڊا)، تاج محمود امروٽي (امروٽي)، ۽ مولوي شمس الدين (حيدرآباد)، به صحيحون ڪيون (210).

" هن فتري کان پوءِ ۽ ترڪ موالات تحريڪ جي آغاز بعد هڪ ٻي جامع فتريٰ ڪڍي ويئي، جنهن جي پڻ سنڌ جي هيٺ ڄاڻايل عالمن تصديق ڪئي(211):

مولانا محمد سليمان، مولانا محمد ابراهيم (كراچي)، مولانا محمد ابوالقاسم، مولانا محمد صادق (كڏو، كراچي)، مولانا عبدالله (حيدرآباد)، مولانا شمس الدين نوشهرائي (كراچي)، مولانا حكيم فتح محمد سيوهاڻي (كراچي)، مولانا عبدالكريم (كراچي)، مولانا دين محمد وفائي (كراچي)، مولانا

عبدالرحيم, مولانا محمد, مولانا محمد عثمان بلوچ (كراچي), مولانا غلام محمد مجددي (حيدرآباد). مولانا فضل الدين (خيريور). مولانا محمد اسماعيل مدرسه دار الرشاد پير جهندو (حيدرآباد)، مولانا عبدالقادر (پير جهنڊو)، مولانا محمد نور الحق (پير جهنڊو)، مولانا عبدالله (پير جهنڊو)، مولانا محمد حسن سرهندي (حيدرآباد). مولانا على محمد مهيري (ٺٽو), مولانا محمد عثمان صباغ (ٿرپارڪر), مولانا محمد عمر سرهندي (مٽياري), مولانا محمد عثمان ميمن، مولانا محمد نور (....),مولانا محمد حسن نتوي (نتو), مولانا محمد عاقل عاقلي (لاڙڪاڻو). مولانا غلام عمر سونو جتوئي (لاڙڪاڻو)، مولانا غلام نور(سکر). مولانا حافظ محمد كامل(لازكائو), مولانا محمد امين (....),مولانا مير محمد نورنگي (لاڙڪاڻو)، مولانا پير مٺل شاھ ٺلاهي (لاڙڪاڻو)، مولانا عبدالواحد (لاڙڪاڻو)، مولانا محمد عمر خيرپور ناٿن شاھ (دادو), مولانا سيد عبدالغني معروف النبي (جيڪب آباد). مولانا عبدالخالق مورائي (نواب شاهر), مولانا پير اسد الله شاه حسيني (حيدرآباد), مولانا خادم حسين (جيڪب آباد). مولانا اسماعيل گهوٽڪي (سکر)، مولانا نور محمد گهوٽڪي (سکر), مولانا فتح على دارالفيوض هاشميه سجاول (ٺٽو), مولانا محمود مدرسه محموديه شكارپور (شكارپور), مولانا سيد تراب على شاه (لاڙكاڻو), مولانا پير غلام مجدد (حيدرآباد), مولانا بصير الدين صديقي (دادو), مولانا محمد حسن صديقي (دادو), مولانا محمد معين صديقي (دادو), مولانا عبدالواحد مدرسه اسلاميه مينا قمبر (لاڙڪاڻو), مولانا صاحبةنو قرني (شكاريور), مولانا عبدالكريم (لازكائو), مولانا محمد صادق پنو عاقل (سکر)، ۽ مولانا محمد حسن (ڪراچي).

"ترك موالات" اها جامع تحريك هئي، جيكا پنهنجي مفهوم جي اعتبار كان انگريز سركار ۽ سندس ڇاڙتن كان منهن موڙڻ جو عمل هو، جيئن تہ منهن موڙڻ يا لاڳاپن ٽوڙڻ جو اصطلاح وسيع معنيٰ ركي ٿو، ان كري هن تحريك كي هيٺين مختلف حصن پر ورهايو ويو(212).

- السركاري كائونسلن جي ميمبري، وكالت جو ذنذو، سركاري تعليمي ادارن ۾ تعليمي ادارن لاءِ سركاري مالي امداد، اعزازي مئجسٽريٽيون، خطاب ۽ پيون سركاري رعايتون قبول نـ كرڻ.
 - 2. حكومت جي فوجي ۽ غير فوجي ملازمتن كي حرام سمجهڻ.
 - 3 انگريزي مال استعمال نه ڪرڻ.

ترك موالات كي كامياب ۽ كامران بنائڻ لاءِ "سنڌ خلافت كاميٽي" منظر لائح عمل تيار كيو. تحريك جي آغاز كان كيترو اڳ ذرائع ابلاغ جي وسيلي ترك موالات جي تشهير ڪئي ويئي، ۽ ماڻهن کي هن طرح جون هدايتون ڏنيون ويون ته: "

- 1 پهريون آگسٽ 1920ع مطابق 15 ذوالقعد 1338هـ آچر ڏينهن مڪمل ۽ عام هڙتال ڪئي وڃي. مگر ڪارخانن ۾ ڪر ڪرڻ وارن کي جيستائين سندن مالڪ اجازت نہ ڏين. تيسين هر ڪر ڦٽو نہ ڪن. اهڙيءَ طرح اسپتالن جا نوڪر ۽ صحت کاتي جا نوڪر ۽ ريلوي ڪارخانن جا مزدور، جن جي لڳولڳ ڪر جاري رکڻ جي ضرورت آهي، اهي به ڪر نہ ڇڏين.
- انهيءَ ڏينهن عبادت گاهن ۾ نهايت زاري ۽ عاجزيءَ سان دعائون گهريون وڃن ۽ جيڪي ماڻهو روزا رکي سگهن تہ اهي روزا به رکن. پر مسلمان شرعي قاعدي مرجب 2 روزا رکن يا تہ 31 جولاءِ جو بہ يا تہ 2 آگسٽ جو.
- ساري ملڪ ۾ جلسا ڪيا وڃن، تانجو ننڍڙا ڳوٺ به پوئتي نه رهن، تقريرون ٿين
 يا نه ٿين مگر هيٺ ڏيکاريل تجويز منظور ڪئي وڃي:
- ان فلاڻي شهر جي رهاڪن جو هي جلسو مرڪزي خلافت ڪميٽي بمبئي جي ان تحريڪ سان پوري همدردي ظاهر ڪري ٿو جا جمعيت مٿين شرع اسلام جي ۽ اسلامي جذبات جي موافق ترڪي شرائط صلح تي ٻيهر نظر ڪرائڻ ۽ ان ۾ ٿير گهير ڪرڻ جي غرض سان ڪئي آهي. ۽ ان جي اختيار ڪيل طرز عمل يعني ترڪ موالات ۽ ڪم ۾ شريڪ نہ ٿيڻ کي جا شرائط صلح جي مناسب ٿير گهير تائين رهندي، تسليم ڪري ٿو.
- ii. هي جلسو نهايت ادب سان شاهي گورنمينٽ کي بادشاهت جي فائدي جي خاطر جنهن جي هو عوضي آهي، گهڻي تاڪيد سان ترغيب ڏياري ٿو ته هو صلح جي انهن شرطن ۾ انصاف جهڙي ٿير گهير ۽ نظر ثاني ڪرائي، جن تي بي انصافي ۽ وزيرن جي وعدي ڀڃڻ ڪري ساري دنيا ۾ لعنت ملامت ڪئي وئي آهي.
- 4. مٿيون تجويزون جناب نواب وائسراءِ بهادر بالقابه جي خدمت ۾ هڪ لفافي ۾ بند ڪري موڪلجن، جن ۾ هي به درخواست ڪيل هجي ته انهن تجويزن کي امپرئيل گورنمينٽ جي خدمت ۾ روانو ڪري (تار ڏيڻ جي ضرورت نه آهي).

اهڙي قسر جون هدايتون "الوحيد" اخبار ۽ مختلف چوپڙين جي صورت ۾ شايح ٿيون.
 (تفصيل لاءِ ڏسو. روزانه "الوحيد". ڪراچيءَ جا مختلف پرچا جهڙوڪ: مؤرخه 6 جولاءِ. 1920 ع. ص2. 13 جولاءِ 1920ع. ص3. 26 سيپٽمبر 1920ع. ص4. ۽ پڻ ڏسو "ترڪ موالات نمبر!" ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ، سال؟. ص10 کان 12.

- مقامي خلافت ڪميٽين کي صلاح ڏجي تہ انهن تجويزن کي پاس ڪرائي
 موڪلڻ ۾ خاص طرح ڌيان ڏين.
 - 6 کو جلسو نہ کدجي، تقريرن ۾ برابري ۽ حد اندر رهڻ جو لحاظ رکڻ گهرجي.
- وڏن شهرن ۾ جيڪڏهن خلق جي گهڻائي ڪري هڪ هنڌ انتظام نہ ٿئي ته گهڻن
 جاين ۾ جلسا ڪري، مٿيون تجويزون پڙهي، منظور ڪرايون وڃن.
- 8 پوليس ۽ حاڪمن جي سمجهاڻين ۽ انهن جي قاعدن جي پوري پيروي لازمي طرح ڪئي وڃي, جيڪڏهن ڪنهن شهر ۾ لکيل حڪر جي معرفت جلسي تي پابندي هجي تہ اتي اجازت وٺڻ کان سواءِ جلسو نہ ڪيو وڃي.

ترك موالات جي آغاز كان وٺي انجام تائين سنڌ خلافت كاميٽيءَ نه رڳو انهيءَ تي بي مثال نموني عمل كيو، پر ان جي ڀرپور تبليغ ۽ تشهير به كئي، هك سال جي قليل عرصي ۾ سنڌ خلافت كاميٽيءَ جي جن مختلف شاخن ٺهراءَ بحال كيا، تن جو تاريخوار وچور هن طرح آهي(213):

4. آگسٽ 1920ع تي جيڪب آباد، 16 آگسٽ 1920ع تي مٽياري، 3. آڪٽوبر 1920ع تي مٽياري، 3. آڪٽوبر 1920ع تي خواچي ۽ مٽياري، 6. آڪٽوبر 1920ع تي نواب شاهه، 8. آڪٽوبر 1920ع تي نوشهروفيرون، 15 آڪٽوبر 1920ع تي نندو آدم، 16 آڪٽوبر 1920ع تي حيدرآباد، 19 آڪٽوبر 1920ع تي بائوديرو، 21 آڪٽوبر 1920ع تي نصرپور، 26 آڪٽوبر 1920ع تي نصرپور، 26 آڪٽوبر 1920ع تي نصرپور، 26 ماڙي، جلباڻي ۽ موريو لاکو، 4. نومبر 1920ع تي جيڪب آباد، 6. نومبر 1920ع تي ٺٽر، ٺل ۽ ڳوٺ غلام نبي شاهه، 10. نومبر 1920ع تي ميرپور، 13 نومبر 1920ع تي ٺٽر، 26 نومبر 1920ع تي ميرپور، 13 نومبر 1920ع تي ٺٽر، 26 نومبر 1920ع تي مولي مبارڪ.

ڪائونسلن جو بائيڪاٽ: ترڪ موالات جي آغاز کان پوءِ خلانتي وقت جي حڪومت سان ڪنهن به قسم جو سهڪار ڪرڻ لاءِ تيار نه هئا، هنن ڪرسيون ڇڏيون، پروانا واپس ڪيا، مالي امدادون ٿڏي ڇڏيون ۽ اسيمبلين ۾ چونڊ جي وڃڻ جو خواب خيال به لاهي ڇڏيو. اهڙين ئي حالتن ۾ حڪومت طرفان ڪائونسلن جي چونڊن جو اعلان ٿيو. خلافتي اڳواڻن لاءِ اهر اعلان ڪنهن به وڏي آزمائش کان گهٽ نه هو. حالتون اهڙيون لچي بيٺيون هيون جو قوم پرست ۽ وطن دوست ماڻهو ميدان کان ٻاهر هئا. پر خوشامدڙيا ۽ سرڪار پرست ماڻهو پنهنجي وفاداريءَ جي ڳٽ کي، اڃا بسوڙهي ڪرڻ لاءِ ڪائونسلن جا اميداوار ٿي بيٺا. خلافتين کي اهو شديد احساس

هو تہ اهڙا موقعي پرست، خود غرض ۽ درٻاري ماڻهو جڏهن ڪائونسلن ۾ پهچندا تہ حكومت سندن سهڪار سان ڪارا قانون ٺاهي ۽ نافذ ڪري سگهندي. اهڙين حالتن ۾ خلافتي اڳواڻن لاءِ فقط اهو ئي رستو وڃي بچيو هو تہ ماڻهن کي چونڊن جي دونگ کان باخبر ڪن ۽ منجهن سياسي شعور پيدا ڪري چونڊن ۾ حصي نہ وٺڻ تي رضامند ڪن.

خلافت كاميني و كائونسلن جي چونڊن جي بائيكات كي كامياب بنائڻ لاءِ انوكي قسر جي مهر جو آغاز كيو. مختلف هنڌن لاءِ تبليغي وقد ٺاهيا ويا, جن ميلن ملاكڙن ۽ شادين مرادين جهڙن موقعن كان وٺي ويندي عام جلسن ۽ محفلن تائين تبليغون كيون. وڏن شهرن ۾ انهن وقدن كائونسلن كان بائيكات جا هفتا ملهايا.*

هندو مسلم اتحاد: انگريزن هندستان ۾ ڪمپني راڄ جي خاتمي کان پوءِ جڏهن نئين دور جو آغاز ڪيو تہ انهيءَ جو بنياد هُنن "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪريو" جي حڪمت عمليءَ تي رکيو. سن 1905ع ۾ "بنگال جي ورهاڱي" فرنگي حڪمرانن جي اهڙي ارادي کي عملي صورت بخشي ۽ هندو مسلم اختلاف جو بنياد پيو. اهو سياسي اختلاف اڳتي هلي مذهبي ڇڪتاڻ جو سبب بڻيو.

سنڌ ۾ هندو مسلم اختلاف سڀ کان پهريائين ادب جي ميدان ۾ ظاهر ٿيو ۽ پوءِ کلئي عام بحث مباحثا ۽ مناظرا ٿيڻ لڳا، پر انهن واقعن سنڌ جي ملڪي خواه قومي ٻڌيء کي متاثر نه ڪيو. جليانوالا باغ جي واقعي ۽ خلافت تحريڪ جي آغاز کي هندو مسلم اتحاد جو بي مثال نمونو چئي سگهجي ٿو.

هن تحريك دوران خلافتي الكوائن كي اهو شديد احساس هو ته حكومت هندو مسلم اتحاد كي كڏهن به قبول نه كندي، ۽ هوءَ پنهنجي حكمت عمليءَ مطابق

کائونسلن جي بائيڪاٽ بابت مختلف هنڌن تي جيڪي گڏجاڻيون ٿيون تن مان محض
 هڪ ضلعي ۾ ٿيل گڏجاڻين جو تاريخوار وچور هن طرح ٿئي ٿو:

آ. آكٽوبر 1920ع كان 7 آكٽوبر 1920ع ۽ 16 آكٽوبر 1920ع تي حيدرآباد ۾، 18 آكٽوبر 1920ع تي حيدرآباد ۾، 18 آكٽوبر 1920ع تي نصرپور ۽ 2
 آكٽوبر 1920ع تي مٽياري. (ڏسو روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 8، آكٽوبر، 1920ع ص3
 آكٽوبر 1920ع ص2، 20 آكٽوبر 1920ع، ص2، 22 آكٽوبر 1920ع، ص 2، 24
 آکٽوبر 1920ع ص2 ۽ 7 نومبر 1920ع، ص3).

ويڙهائي حڪومت قائم ڪندي رهندي. ان ڪري سنڌي اڳواڻن خلافت تحريڪ جي پليٽ فارم کي هندو مسلم اتحاد قائم ڪرڻ لاءِ به استعمال ڪيو. هن جماعت جي مختلف شاخن جي مختلف ڪارواين کي مطالعي هيٺ آڻڻ سان معلوم ٿئي ٿوت خلافت تحريڪ جي آغاز کان وئي ان جي انجام تائين هندو مسلم اتحاد کي قائم رکڻ جي ڪوشش ڪئي ويئي. انهيءَ سلسلي ۾ ڪاميٽيءَ جي مختلف شاخن هندو مسلم اتحاد قائم ڪرڻ بابت ڪيترائي ٺهراءَ بحال ڪيا "جن ۾ مسلمانن کي، ڳئون ڪهڻ کان پرهيز ڪرڻ جي تلقين ڪئي ويندي هئي، ۽ هندن کي وري مسلمانن جي مذهبي جاين جي احترام ڪرڻ جا مشورا ڏنا ويندا هئا. خلافت ڪاميٽيءَ جي مختلف شاخن هندو مسلم اتحاد جو عملي مظاهرو به ڪيو ۽ هڪ ٻئي جي قيادت به تسليم ڪئي. ننڍي حسلم اتحاد جو عملي مظاهرو به ڪيو ۽ هڪ ٻئي جي قيادت به تسليم ڪئي. ننڍي جو امو عملي نمونو خلافت تحريڪ جي ئي ڪوششن جو نتيجو هو، ۽ اهڙو اتحاد اڳ ۾ قائم ٿي نه سگهيو هو.

سركاري عملدارن جي مذمت: غيرن جي حكمرانيءَ ۾ غلام قوم كيترن ئي طبقن ۾ رهائجي ويندي آهي، جنهن جو فائدو وٺي غير پنهنجي حاكميت ڳچ عرصي تائين قائم ركي سگهندو آهي، غلاميءَ جي دور ۾ مٿيون طبقو ۽ سركاري عملدار ڏاڍي حكمران جي لٺ بڻجي پوندا آهن. خلافت تحريك جي زماني ۾ به ائين ئي ٿيو. جيتوڻيك انگريز عملدار آگرين تي ڳڻڻ جيترا مس هئا، پر خطابن ۽ لقبن جي شوقين وڏيرن جي به كمي كا نه هئي، عملدارن انهن پڳدارن جي سهكار سان سنڌي عوام، عاص كري خلافتي اڳواڻن خوام كاركنن تي ظلم ۽ ڏاڍ كيا. خلافت تحريك جي آغاز سان ئي اهو سلسلو شروع ٿيو، ۽ ان جي اختتام تائين سنڌ جو عوام سور ۽ سختيون سهندو رهيو. جنهن جو مثال هن مان ئي ملي سگهي ٿو ته سيپٽمبر 1922ع كان وٺي سهندو رهيو. جنهن جو مثال هن مان ئي ملي سگهي ٿو ته سيپٽمبر 1922ع كان وٺي

کان ص16) ،

جن شاخن اهڙا ٺهراء بحال ڪيا. تن جو مثالي ۽ تاريخوار وچور هن طرح آهي:
 19 مارچ 1920ع تي بئي. (ڏسو روزانا "الامين" حيدر آباد مؤرخ 26 لپريل1920ع ص14

^{7.} اپريل 1920ع تي هالا، (ايضا ص14 كان ص16)،

³⁰ اپريل 1920ع تي شڪارپور. (ڏسو روزانا "الامين"حيدرآباد مؤرخہ 17. مئي 1920ع5ص)،

¹⁹ مئي 1920ع تبي كراچي، (ڏسو روزانا "الامين" حيدر آباد مؤرخ 31 اپريل1920ع ص2).

^{8.} آكٽوبر تي نوشهرو. (ڏسو روزانا "الوحيد" حيدرآباد مؤرخ 13 آکٽوبر 1920ع ص3).

ڏاڍ ۽ ڏمر آڏو ڪڏهن به نه جهڪيو. نه رڳو ايترو پر انهيءَ ظلم ۽ تشدد جي ڀرپور مذمت به ڪيائين. خلافت ڪاميٽيءَ جي ڪيترين ئي گڏجاڻين ۾ سرڪاري عملدارن جي مذمت ڪئي ويئي، ۽ انهن جي خلاف ٺهراء بحال ڪيا ويا. اهڙي قسر جي گڏجاڻين جو مثال خاطر ۽ مختصر تاريخوار وچور هن طرح آهي: (215).

3 جولاءِ 1920ع تي ڪراچي، 23 جولاءِ 1920ع تي حيدرآباد، 11 آگسٽ 1920ع تي بٺي، 26 نومبر 1920ع تي سونڊا، 26 جنوري 1921ع تي نواب شاه ۽ 28 سيپٽمبر 1922ع تي چڪ.

صنعت ۽ واپار: مطالعي هيٺ آيل دور ۾ عالمن جي سختگير حڪمت عمليءَ سبب مسلمان انگريزي تعليم کان پري رهيا. ان ڪري کين هندن جي ڀيٽ ۾ زندگيءَ جي هر هڪ شعبي ۾ پوئتي رهجي وڃڻو پيو. خاص ڪري صنعت ۽ واپار ۾ ته مسلمانن ڪا به جو ڳي ترقي نه ڪئي.

انگريزي تهذيب ۽ ثقافت جي تيز تر وهڪري ڏيهي تهذيب ۽ تمدن کي بريءَ طرح متاثر ڪيو، عوام جو لکيل پڙهيل طبقو حڪمرانن جي تهذيب ۽ تمدن کي اکيون ٻوٽي قبول ڪرڻ لڳو. انهيءَ احساس ڪمتريءَ ڏيهي صنعتڪاريءَ کي نقصان رسايو ۽ پورو ملڪ غير ملڪي شين جي وڪري جي منڊي بڻجي ويو. سامراجي حڪومت هتان جو ڪچو مال ٻاهر موڪلي ڏيهي صنعتي ترقيءَ جا دروازا بند ڪري حِدَي، ماڻهو ٻاهرئين مال وٺڻ تي مجبور هئا. ان ڪري هر سال هن ملڪ جو اڻ ميو ناڻو ڌارين جي نذر ٿي ويندو هو.

اهڙين حالتن ۾ سنڌ توڙي هند جي جملي سياسي پارٽين گهريلو صنعتي ترقيءَ کي پنهنجي منشور ۾ مناسب جاءِ ڏني، جن مان خلافت ڪاميٽي به هڪ هئي.

سنڌ خلافت ڪاميٽي ۽ ان جون سموريون شاخون گهريلو صنعتي ترقيءَ کي فروغ ڏيڻ جو اهر ذريعو بڻيون. جيتوڻيڪ ڌن ۽ دولت جي گهٽتائيءَ سبب هن پارٽيءَ صنعتي ترقيءَ ۾ ڪو عملي حصو نہ ورتو، پر تبليغ ۽ تشهير ذريعي عوام ۾ ديسي شين جي واپرائڻ جو جذبو اڀاريو ۽ کين ٻاهرئين مال استعمال ڪرڻ کان نفرت ڏياري. نصرف ايترو پر غير ملڪي شين جي استعمال ڪرڻ خلاف مختلف گڏجاڻين ۾ ٺهراءَ نب بحال ڪيا. سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي مختلف شاخن جي ڪارڪرد گيءَ جي تاريخ انهيءَ حقيقت جي تصديق ڪري ٿي.

خلافت كاميني، جي جن مختلف شاخن وقت بوقت ڏيهي صنعتي ترقيءَ لاءِ

ٺهراء بحال ڪيا، تن جو مختصر ۽ تاريخوار وچور هن طرح آهي: (216)

17 اپريل 1920ع تي سيوهڻ ۽ هالا، 30 اپريل 1920ع تي شڪارپور، 19مئي 1920ع تي شڪارپور، 19مئي 1920ع تي خراچي، 2 جولاءِ 1920ع تي قمبر، 8 آڪٽربر 1920ع تي نوشهروفيروز، 4 آگسٽ 1922ع ئي جيڪب آباد، 11 نومبر 1920ع تي مبارڪ پور، 8 آگسٽ 1922ع تي بل، 28 آگسٽ 1922ع تي ڳوٺ ٿاله ۽ ڳوٺ تي ٺل، 28 آگسٽ 1922ع تي ڪوٽڙي، 2 سيپٽمبر 1922ع تي ڳوٺ پنهور، 28 سيپٽمبر 1922ع تي چڪ، 3 جنوري 1923ع تي ماٽو، 5 جنوري 1933ع تي ڪراچي، 11 بيبروري 1931ع تي ڪراچي، 11 فيبروري 1931ع تي حيرآباد ۽ 30 اپريل 1933ع تي مراد پور.

مقامي چونڊون: سن 1920ع ۾ ڪائونسلن جي بائيڪاٽ کان پوءِ خلافتي اڳواڻن کي شديد احساس ٿيو ته هيٺئين طبقي جي عوام ۾ شعور آڻي کين ڌارئين ۽ جابر حڪومت جي حڪمت عمليءَ کان ته واقف ڪري ۽ پري رکي سگهجي ٿو. پر مٿيون طبقو وقت ۽ حالتن مطابق پنهنجون وفاداريون بدائيندو رهي ٿو. جنهن ڪري قوم مان طبقاتي اختلاف جو خاتمو آڻڻ ممڪن نه آهي، ان ڪري هن ڪاميٽيءَ مجبور ٿي لوڪل بورڊن ۾ پنهنجن ماڻهن کي موڪلڻ جي حڪمت عملي اختيار ڪئي، ته جيئن ننڍن خواه وڏن ايوانن ۾ حڪومت توڙي سندس ڇاڙتن کي غلط قانون سازيءَ جي کليءَ طرح اجازت نه ملي سگهي. سن 1922ع کان وٺي خلافت تحريڪ جي خاتمي تائين انهيءَ ئي حڪمت عمليءَ تي عمل ڪيو ويو ۽ حيدرآباد، شڪارپور، ڪراچي توڙي ٻين شهرن جي لوڪل بورڊن ۾ خلافتي اميدوار بيهاريا ويا ۽ سندن حمايت ۾ جلسا سڏايا ويا جي محدود اختيارن ڪري عوام جي جاميابي به حاصل ٿيندي هئي، پر لوڪل بورڊن جي محدود اختيارن ڪري عوام جي جو ڳي خدمت نه ڪري سگهيا.

سنڌ جي عليحدگي: هن مقالي جي "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ" واري باب ۾ خلافت تحريڪ جي خدمتن جي نشاندهي ڪرائي ويئي آهي. هتي صرف هن ڳالهه جو اضافو ڪرڻو آهي تہ خلافت ڪاميٽيءَ هن مسئلي کي به او تري اهميت ٿي ڏني،

اهڙي قسر جا جلسا 6 سيپٽمبر 1922ع تي شڪارپور، 19 نومبر 1922ع تي حيدرآباد ۽ 6
 آگسٽ 1928ع ڪراچيءَ ۾ ٿيا. (ڏسو روزانه "الوحيد" مؤرخ 12 سيپٽمبر 1922ع ص 4. 25
 نومبر 1922ع ص4 ۽ 8 آگسٽ 1928ع ص6).

جيڪا ان کي تنهن دور جا سنڌي مسلمان ڏيئي رهيا هئا. سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي مرڪزي گڏجاڻين خواه ڪانفرنسن جي موقعن تي سنڌ جي عليحدگيءَ جا لهراءَ بحال ٿيا. انهيءَ سلسلي ۾ سڀ کان پهريون ٺهراءُ 6 آگسٽ 1928ع تي سڏايل ڪراچي خلافت ڪاميٽيءَ جي اجلاس ۾ بحال ٿيو(217)، جنهن کان پوءِ ساڳئي سال جي ڊسمبر مهيني ۾ جڏهن سکر ۾ خلافت ڪانفرنس ٿي ته ان موقعي تي به سنڌ جي عليحدگيءَ جو ٺهراءَ بحال ڪيو ويو، جنهن جا لفظ هي هئا ته: (218).

"جنهن صورت ۾ سنڌ جي رهاڪن جي اڪثريت ان جي جدا صوبي بنائڻ لاءِ مالي ۽ انتظامي خرچ جو ذمو کڻڻ لاءِ تيار آهي، باقي کوٽ ڀرڻ لاءِ مرڪزي حڪومت کي تيار رهڻ گهرجي، تنهن ڪري سنڌ جي جدائيءَ کي مالي پورائي جي رنڊڪ سبب روڪڻ جي هيءَ ڪانفرنس مخالفت ڪري ٿي."

انهيءَ کان پوءِ جڏهن تاريخ 10 فيبروري 1931ع تي صوبہ سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي گڏجاڻي ٿي تہ ان موقعي تي شيخ عبدالمجيد سنڌي، جي ايم سيد، پير الاهي بخش، سيد ميران محمد شاه، نور محمد وڪيل، حاتبر علوي، سيٺ حاجي عبدالله هارون، محمد هاشر گذدر، محمد حنيف, قاضي خدا بخش ۽ قاضي فضل الله تي مشتمل هڪ سب ڪاميٽي ٺاهي ويئي تہ جيئن مالي حالتن جي جاچ ڪندڙ سرڪاري ڪاميٽيءَ لاءِ انگ اکر گڏ ڪري، پنهنجو نقطي نظر پيش ڪري سگهي(219).

اهڙيءَ طرح پوءِ به هيءَ جماعت "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ" تائين هڪ نه ٻيءَ صورت ۾ ان تحريڪ جو ساٿ ڏيندي رهي.

كميونل ايوارد جي مذمت: "سائمن كميشن" (Round Table Conference)، ۽ پهرين "گول ميز كانفرنس" (Round Table Conference)، جي ناكامين عوام ۾ 'بيچيني پيدا كري وڌي. ۽ نتيجي ۾ سنڌ ۽ هند سياسي خلفشار جو مركز بنجي ويا. انهن حالتن كان مجبور ٿي برطانيہ جي وزيراعظر "ريمزي ميكدونالڊ" (Ramsay Mac Donald)، "كميونل ايوارڊ" جو اعلان كيو. جيئن ته هن ايوارڊ ۾ كنهن حد تائين مسلمانن جا مطالبا تسلير كيا ويا هئا، ان كري كين كجه سكون نصيب ٿيو. پر پنجن مهينن كان پوءِ جڏهن هن ايوارڊ جي باقي حصي جي باري ۾ اعلان كيو ويو ته سنڌ ۽ هند جي مسلمانن انهيءَ جي سخت مذمت كئي، چي باري ۾ اعلان كيو ويو ته سنڌ ۽ هند جي مسلمانن انهيءَ جي سخت مذمت كئي،

توازن جو حق نه ڏنو ويو هو، پر بنگال ۽ پنجاب جي صوبن ۾ سندن نمائندگيءَ ۾ گهٽتائي آندي ويئي هئي. ان جي ڀيٽ ۾ سنڌ ۽ سرحد جي ٻن مسلمان اڪثريت وارن هنڌن ۽ غير مسلم اقليتن کي وڌيڪ توازن جو حق ڏنو ويو هو.

اهڙيون حالتون سنڌ خلافت تحريڪ جهڙيءَ فعال جماعت لاءِ به قبول ڪرڻ جي قابل نه هيون. ان ڪري هن جماعت پنهنجي ڪيترين ئي گڏجاڻين ۾ "ڪميونل ايوارڊ" جي مذمت ڪئي. تاريخ 1 اپريل 1933ع تي جڏهن مرادپور ۾ جيڪب آباد ضلعي خلافت ڪانفرنس ٿي، تڏهن انهيءَ مسئلي ۽ موضوع تي سخت ترين ٺهراء منظو ڪيا ويا(220).

مڪمل آزاديءَ لاءِ ڪوششون: خلاف تحريڪ محض ترڪيءَ جي خلافت کي بچائڻ جي ڪوشش نہ ڪئي، پر حقيقت ۾ هيءِ آزاديءَ جو هڪ اهڙو جذبو هو. جنهن عوام کي اتحاد ۽ اتفاق ڪرڻ تي مجبور ڪيو.

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ نه رڳو عوام ۾ آزاديءَ جي حاصل ڪرڻ جي لهر پيدا ڪئي پر انهيءَ دور ۾ آزاد ٿيندڙ قومن يا آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪندڙ ماڻهن جي اخلاقي امداد بہ ڪئي. هن ئي دور ۾ مصر، الجزائر ۽ چين جو عوام آزاديءَ لاءِ ڪوششون ڪري رهيو هو. سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ پنهنجي گڏجاڻين ۾ اتان جي عوام جي همدرديءَ ۾ ٺهراء منظور ڪيا، ۽ انهن جي ڪوششن کي مثالُ بڻائي پنهنجي عوام کي ڌارئين حڪمران کان نجات حاصل ڪرڻ جي تلين ڪئي.

انهيءَ سلسلي ۾ سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ ۽ ان جي مختلف شاخن جي ڪارڪردگيءَ کي مثال طور پيش ڪري سگهجي ٿو. جيئن آگسٽ 1927ع ۾ ڳوٺ چيهي جي خلافت ڪاميٽيءَ مصر جي آزاديءَ وارين ڪوششن کي اڳيان رکي عوام کي سنڌ ۽ هند آزاد ڪرائڻ جو درس ڏنو(221)، ان کان پوءِ ڊسمبر 1930ع ۾ ميهڙ جي خلافت ڪاميٽيءَ الجزائر جي مجاهدن جي همدرديءَ ۾ ٺهراءُ منظور ڪيو(222)، ان بعد ليريل 1933ع ۾ مرادپور ۾ سڏايل جيڪب آباد ضلعي خلافت ڪانفرنس ۾ چين سان همدردي ڏيکارڻ ۽ جپان جي مذمت ڪرڻ لاءِ ٺهراءُ منظور ٿيو (223)،

اهڙيءَ طرح پنهنجي غلاميءَ جي زنجيرن ٽوڙڻ لاءِ بہ ڪيترائي ٺهراءُ منظور ڪيا ويا. جن مان چڪ خلافت ڪانفرنس تاريخ 28 سيپٽمبر 1922ع تي مڪمل آزاديءَ جو ٺهراءُ منظور ڪيو(224)، خلافت ڪاميٽيءَ جي انهن نماڻين ڪوششن پهريائين عوام کي مذهبي مسئلي تي گڏڪيو ۽ بعد ۾ کين سياسي شعور ڏيئي

منجهن آزاديءَ جو روح ڦوڪيو. اهو ئي سبب هو جو خلافت جي خاتمي کان پوءِ مسلم ليگ ميدان خالي ڏسي آسانيءَ سان عوام جي اڳواڻي ڪئي.

مسلم ليگ سان الحاق: جيتوڻيك عمليءَ طور تي خلافت تحريك جو خاتمو 1924ع ۾ ٿي چكو هو(225)، پر پوءِ بر سنڌ خلافت كاميٽي هك فعال سياسي جماعت وانگر ملك جي خدمت كندي رهي. هن جماعت پنهنجي سياسي ڄمار جي ٽئين ڏهاكي ۾ محسوس كيو ته سنڌ ۽ هند جون سياسي حالتون بدلجي چكيون آهن ۽ هندو خواه مسلمان كانگريس ۽ مسلم ليگ جي قيادت قبول كري چكا آهن. ان كري سنڌ خلافت كاميٽيءَ به وقت ۽ حالتن جي تقاضا پوري كندي كنهن به هك جماعت سان الحاق كرڻ جو سوچيو.

اپريل 1938ع ۾ حيد آباد ۾ سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جي جنرل بورڊ جو اجلاس ٿيو. جنهن ۾ اتفاق راءِ سان فيصلر ڪيو ويو تہ مسلم ليگ سان سهڪار ڪيو وڃي ۽ سنڌ جي عوامر کي هن جماعت جي امداد ڪرڻ جي استدعا ڪئي ويئي (226). سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جو اهو اهم سياسي فيصلو هو. جنهن کي آزاديءَ جي تحريڪ جي تاريخ لکندي ڪڏهن به نظر انداز ڪري نٿو سگهجي.

قومي تعليم جو واڏارو: تعليم قومن جي ذهني اوسر جو اهم ذريعو آهي. جيڪڏهن ان جو بنياد قومي فلاح ۽ بهبود جي مقصد تي رکيو ويندو تہ تعليم جو نظام سچا وطن دوست ۽ قوم جا خير خواه انسان پيدا ڪندو. ان جي مقابلي ۾ ڌاريون حڪمران تعليم جي نظام کي اهڙو رنگ ۽ روپ ڏيندو آهي، جنهن مان رڳو ذهني طور تي غلام ۽ احساس ڪمتريءَ ۾ مبتلا انسان پيدا ٿي سگهندا آهن. مطالعي هيٺ آيل دور ۾ انگريز سرڪار به تعليم جي ذريعي کي پنهنجن مفادن خاطر استعمال ڪيو. سندن تعليمي نظام اڻ ڳڻيا ڪامورا تہ پيدا ڪيا، مگر انهن مان لائق انسان ڪي ٿورائي ٿيا. هن تعليمي نظام ذهني طور تي ڪاري رنگ جا گورا انسان پيدا ڪيا، جن کي پنهنجي تهذيب ۽ تمدن پيارو هو. هو پنهنجي حڪمران جي تهذيب ۽ تمدن پيارو هو. هو پنهنجي حڪمران جي هر عمل کي صحيح ۽ سچو سمجهڻ تي مجبور هئا ۽ پنهنجي ڏرتيءَ وارن جي ڌڙڪندڙ دلين جو احساس وٽن ناپيد هو.

تعلير جي اهڙي تباه ڪن نظام اسان جي بزرگن کي مجبور ڪيو تہ هو انهيءَ ڏس ۾ اڳتي وڌي قوم جي رهبري ۽ رهنمائي ڪن. خلافت تحريڪ کان اڳ اسيمبلين ۽ ڪائونسلن ۾ تعليم جي سلسلي ۾ بل بحال ڪرايا ويا، پر خلافت تحريڪ جي آغاز

حالتن کي نئون موڙ ڏنو، ۽ سنڌ ۾ نئين تحريڪ جي ابتدا ٿي.

تعلير جي هن نئين تحريك جا كيترائي رخ هئا. هك طرف خلافتي اڳواڻن ۽ كاركنن سركاري اسكولن مان پنهنجو اولاد كڍي ورتو، ۽ ٻئي طرف انهيءَ كوت كي پوري كرڻ لاءِ قومي بنيادن تي تعليمي ادارا قائم كيا أنهيءَ كان اڳ قائم ٿيل غير سركاري تعليمي ادارن مان كيترن كي سركاري مالي امداد نه وٺڻ تي آماده كري أ انگريز سركار جي اثر ۽ رسوخ كان بچايو ويو.

سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ خلافت جي سوال کان پوءِ تعلير جي مسئلي کي وڏي اهميت ڏني ۽ پنهنجي ملڪ جي بزرگن کي هن مسئلي جي نوعيت ڏانهن متوجه ڪيو. قومي تعليم کي ترقي وٺائڻ لاءِ هن جماعت لوڪلبورڊ ۾ پنهنجا اميدوار بيهاريا ته جيئن اهي قومي تعليم کي ڳوٺ ڳوٺ ۾ پهچائڻ جو ذريعو بڻجن.

ان کان سواءِ جماعت جي مرڪزي دفتر ۾ تعليم جو الڳ شعبو قائم ڪيو ويو ۽ ملڪ جي هڪ سو کان وڌيڪ تعليمي ادارن جو ان سان الحاق ڪير ويو. انهن جي مالي امداد ڪئي ويئي ۽ قومي تعليم جو جامع نصاب تيار ڪيو ويو(227)، مرڪزي دفتر جي انهيءَ ڪارڪردگيءَ کان سواءِ جماعت جون مختلف شاخون پنهنجين گڏجاڻين ۾ قومي تعليم حاصل ڪرڻ جا ٺهراءَ بحال ڪندي انهيءَ جي عوام ۾ تبليغ ڪنديون هيون.**

هارين جي حقن جي حفاظت: مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سنڌ ۽ پنجاب جا لاڳاپا ايترا سٺا نه هئا. هتان جو عوام پنجابين کان ڪنهن حد تائين مايوس هو. اهو

[·] جيئن كراچيء مر مدرس مليه اسلاميه قائم كيو ويو.

^{*} سنڌ جي ڪيترن ئي مڪتبن ۽ مدرسن سرڪاري مالي امداد وٺڻ کان انڪار ڪيو. جن مان مثال طور مڪتب ڊٻ چانڊيه ۽ سجاول گوپانگ، مدرسه اسحاق ديرو ۽ بنگلديرو جا نالا پيش ڪري سگهجن ٿا (تفصيل لاءِ ڏسو روزانه "الامين" حيدر آباد. مؤرخہ 7 جون 1920ع ص ص 5-6 وزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 18 جولاءِ 1920ع ص 4 ۽ نومبر 1922ع ص4)

^{*} مثال خاطر كن شاخن جو تاريخوار وچور هن طرح آهي:

¹⁷ اپريل 1920ع تي سيوهڻ ۽ هالا 24 سيپٽمبر 1920ع تي مورو. 27 آڪٽوبر 1920 تي ڪراچي. 10 سيپٽمبر 1920ع تي جيئند. 11 نومبر 1920 تي مبارڪپور. 9 نومبر 1924ع تي سکر. 14 نومبر 1924ع تي کٻڙ ۽ 30 اپريل 1933 تي مرادپور. (هيءَ معلومات روزانہ "الوحيد" جي سال 1920ع کان 1933ع وارن مختلف پرچن مان ورتي ويئي)

ئي سبب هو جو جڏهن سنڌ کي بمبئيءَ کان الڳ ڪرڻ جي تحريڪ هلي ۽ ڪن حلقن طرفان ان کي پنجاب سان ملائڻ جي تجويز پيش ٿي تہ سنڌ جي عوام اها راءِ رد ڪري ڇڏي.

سكر بئراج جي كوٽائيءَ كان پوءِ سنڌ جي كيتري غير آباد زمين زراعت كرڻ جي لائق ٿي، جنهن تي سنڌ جي عوام جو ئي حق هو. پر فرنگي سرڪار انهن كي نظرنداز كندي ٻاهرين ماڻهن; خاص كري پنجاب جي جاگيردارن، نوابن ۽ رٽائرڊ فوجي آفيسرن كي زمينون وكرو كري كين سنڌ ۾ آباد كرڻ جو سلسلو شروع كيو.

سنڌ خلافت ڪاميٽي پنهنجي ڌرتيءَ تي هن نو آبادياتي نظام جي وجود کي برداشت ڪرڻ لاءِ تيار نہ هئي. ان ڪري هن جماعت حڪومت جي انهيءَ غلط حڪمت عمليءَ جي شديد مذمت ڪئي ۽ "زمين – زمين وارن کي" ڏيارڻ لاءِ پاڻ پتوڙيو ۽ ٺهراءَ بحال ڪيا(228)، سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جو هيءِ ڪارنامو وطن دوستيءَ جو هڪ نادر نموند هو.

مذهبي خدمتون: خلافت ڪاميٽي بنيادي طرح سان مسلمانن جي فڪر ۽ خيالن جي پيداوار هئي، جنهن جي قيادت گهڻي ڀاڱي عالمن جي هٿ هيٺ هئي۔ ان ڪري فطري طور تي خلافت ڪاميٽي مذهبي خدمتن طرف ته راغب رهي، پر وقت ۽ حالتن مطابق رنگ بدلايائين.

شروعات ۾ مذهبي خدمتن جو آغاز محض اصلاحي ۽ تبليعي نوعيت جو هو. هن مرحلي تي سنڌ جي مسلمان عوام کي دين جي اصول تي هلائڻ ۽ بدعتن کان باز رهڻ جي تلقين ڪئي ويندي هئي. اها روايت به پهريائين ڪاميٽيءَ جي گڏجاڻين تائين محدود رهي * پر پوءِ جڏهن سنڌي عالم عوام جي ويجهو آيا، ته هنن ميلن ۽ ملاکڙن جي موقعن تي به پندونصيحت جو پرچار ڪيو. انهيءَ سلسلي ۾ غلام شاه ۽ ٽنڊي

تبليغي ۽ اصلاحي نوعيت جا جيڪي ٺهراء جماعت يا ان جي شاخن طرفان بحال ٿيا. تن جو مثالي ۽ تاريخوار وچور هن طرح آهي:

¹⁸ آگسٽ 1922ع سکر. 15 ڊسمبر 1922ع تي ڳوٺ نبي شاه. 11 مئي 1924ع تي شهداد ڪرت. 6 آگسٽ 1928ع تي ڪراچي ۽ 30 اپريل 1933ع تي مرادپور. (ڏسو روزانہ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخ 2 سيپٽمبر 1922ع ص4. 30 ڊسمبر 1922ع ص4، 20 مئي 1924ع ص4، 8 آگسٽ 1928ع ص6 ۽ 5 مئي 1933ع ص6).

باگي جي ڊسمبر 1922ع واري ميلي کي شاهديءَ طور پيش ڪري سگهجي ٿو. جنهن موقعي تي خلافتي مبلغن سياست سان گڏ مذهب جي تبليغ به ڪئي (229)، جڏهن "عدم تعاون" ۽ "ترڪ موالات" جون تحريڪون هليون ته اسان جي عالمن بائهن جو اثر قبول ڪيو ۽ نتيجي ۾ سندن نصيحتن شدت اختيار ڪئي، ۽ ڪنهن حد تائين بدعتي خواه بي نمازين سان بائيڪاٽ جا ٺهراء بحال ٿيا. "

سن 1923ع ۾ ڪراچي ۾ "شڌي سڀا" قائم ٿي. ان کان اڳ ڪانگريسي قيادت مسلمان خلافتين جو اعتماد وڃائي چڪي هئي. هنن ٻنهي واقعن هندو مسلم اختلافن کي هوا ڏني ۽ خلافت ڪاميٽيءَ جون مذهبي خدمتون ٻن ڌڙن ۾ ورهائجي ويون. هڪڙن اڳواڻن هندو مسلم اتحاد کي قائم ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي ۽ ٻين عالمن وري الله ۽ الله جي رسول جي رضامندي حاصل ڪرڻ خاطر هندن کي دين اسلام جي دائري ۾ داخل ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي.**

ان کان پوءِ جڏهن سکر بئراج جي کوٽائي شروع ٿي تہ ڪن مسجدن جي مسمار ٿيڻ جون حالتون پيدا ٿيون. انهيءَ واقعي وري خلافتي عالمن کي مسجدن جي بتاءَ جي مسئلي ڏانهن راغب ڪيو. سڀ کان پهريائين سکر خلافت ڪانفرنس مؤرخ 28 آڪٽوبر 1928ع تي اهڙي قسر جو ٺهراءُ بعال ڪيو(230)، ان بعد ڳوٺ قاضي محمد عارف تعلقي ميهڙ جي هڪ مسجد تي هندو مسلمر اختلاف پيدا ٿي پيو ۽ حڪومت لاچار ٿي ٽڪاڻي لڳ مسجد جي صحن ڊهرائڻ جو حڪر ڏنر، خلافت ڪاميٽيءَ هن واقعي تي به شديد ردعمل ظاهر ڪيو (231). سن 1938ع ۾ جڏهن مسجد منزل گاه سياسي ۽ مذهبي اختلافن جو بنياد بڻي، ۽ انهيءَ عرصي دوران لنواريءَ جي حَجَ تي سنڌ ۾ شديد رد عمل جو اظهار ٿيو تہ خلافت ڪاميٽي انهيءَ واقعي ۾ به ملوث رهي پنهنجي مرڪزي اجلاس مؤرخ 24 اپريل 1938ع تي نہ صرف مسجد منزل گاه مسلمانن کي ڏيڻ لاءِ حڪومت کان مطالبو ڪيو پر لنواريءَ جي حج واري رد عمل کي مسلمانن کي ڏيڻ لاءِ حڪومت کان مطالبو ڪيو پر لنواريءَ جي حج واري رد عمل کي

اهڙي قسر جو ٺهرا؛ خلافت ڪاميٽي ماڏو پنهنجي گڏجاڻي مؤرخ 3 جنوري 1923ع تي
 بحال ڪيو هو (ڏسو روزانه"الوحيد" ڪراچي. مؤرخ 17 جنوري 1923ع ص7).

^{••} امروت ۾ خلافت ڪاميٽيءَ طرفان سڏايل جلسي مؤرخہ 21 مارچ 1924ع جي موقعي تي مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي هٿ تي ٻن هندن اسلام قبول ڪيو. هن واقعي کي مثال طور پيش ڪري سگهجي ٿو. (ڏسو روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26 مارچ 1924ع ص4) ،

عالمن جو حصو: انهي ۽ چوڻ ۾ ڪوب وڌاء نہ ٿيندو تہ خلافت تحريك اهڙي جماعت هئي. هن جماعت جو تعامن جي هئي. هن جماعت جو تيار ۽ تيادت سنڌي عالمن جي وظن دوستيءَ ۽ سياسي شعور جو هڪ مظهر هئي.

سنڌي عالمن خلافت تحريك كي كامياب ۽ كامران بنائڻ لاءِ مختلف طريقن سان جدوجهد كئي ۽ جن عالمن هن تحريك ۾ حصو ورتو، تن جي نالن جو وچور هن طرح ٿئي ٿو(233).

مولوي ابوبكر (ٺٽو), آخوند آدم (شڪارپور), احمد ملوي(لاڙڪاڻو), مولوي احمد ميمن (حيدر آباد). مولوي احمد ميمن (بدين). مولوي احمد ملاح (بدين). مولوي احمد علي نارائي (ترپاركر), پير احسان الله شاه راشدي (حيدرآباد), سيد اسد الله شاه تكرّائي (حيدرآباد)، الاهي بخش اعوان (شكارپور)، الاهي بخش لاكير (دادو)، مولوي اله بخش مهيسر (دادو), پير حاجي امام الدين شاه راشدي (لاڙڪاڻو), سيد امير محمد شاه (دادو). ملان الهركيو ميمن (خيرپور)، مولوي الهركيو، ثل (جيكب آباد)، مولوي جافظ اله وسايو (لاڙڪاڻو)، مولوي بصر الدين (دادو)، مولوي پير بقادار شاه (حيدرآباد). مولوي ميان پير محمد (حيدرآباد). قاضي تاج محمد نصرپوري (حيدرآباد)، سيد تاج محمود امروتي (شڪارپور)، پير تراب علي شاه (لاڙڪاڻو)، حافظ حامد الله ذّيهِو (ترپاركر). حاجي حامد الله بيلائي (نتو). قاضي حبيب الله (خيپور)، سيد حزب الله شاه (شڪارپور)، حماد الله هاليجوي (سکر)، مولوي ميان جان محمد ولهاري (ترپاركر). مولوي خادم حسين جتوئي (شكارپور). خان محمد گهموري (ٿرپارڪر), خدا بخش ڀٽو (سکر), خوش محمد ميرو خاني (لاڙڪاڻو), مولوي زخير محمد نظاماتي (بدين). مولوي خير محمد فيروز شاهي (دادو)، مولوي خير محمد (لاڙڪاڻو). مولوي در محمد ڊول (جيڪب آباد). مولوي در محمد "خاڪ" (لاڙڪاڻو). مولوي دوست محمد لكمير (نواب شاهر)، مولوي دين محمد بنوي (لاڙڪاڻو)، دين معد "وفائي" (كراچي), مولوي دين محمد "اديب" (دادو), مولوي ڏنل شاه (....), مولوي

رحيم بخش (جيكب آباد)، مولوي رحيم بحش (كراچي)، پير رشد الله شاه (حيدرآباد)، روشن الدين (....)، سرور بخش (جيكب آباد). مفتى سعد الله (خيرپور)، مولوی شریف (حیدرآباد), مولوی شغیع محمد بهر (دادو), مولوی شغیع محمد سودر (دادو)، مولوي شفيع محمد منگير (نواب شاهر)، حكيم شمس الدين (حيدرآباد)، مولوي شهاب الدين (....). مولوي شير محمد (شكارپور)، مولوي صاحبذنو ميمر (خيرپور)، مولوي صاحبذنو (جيكب آباد، مولوي پير صاحبذنو شاه (....)، مولوي ميان صدر الدين (كراچي)، مولوى صدر الدين شاه (جيكب آباد)، مولوى ضيا؛ الدين شاه راشدي (حيدرآباد)، مولوي سيد عابد شاه (جيكب آباد)، مولوي عبدالله بنگلديرائي (لاڙڪاڻو). مولوي عبدالله لغاري (سانگهڙ). مولوي پير آغا عبدالله جان سرهندي (حيدرآباد). مولوي عبدالله هالائي (حيدرآباد), مولوي عبدالله شاه فتاحي" (خيرپور), مولوي عبدالله مرى (سانگهڙ)، مولوي عبدالله بوبكائي (دادو)، مولوي عبدالله (حيدرآباد)، حافظ عبدالله (لازَّكاثر)، سيد عبدالله شاه (جيكِب آباد)، مولوي عبدالله (ٿرپارڪر), عبدالله کڏهري (نواب شاهر), مولوي عبدالحق چانڊيو (ٿرپارڪر), مولوي عبدالحكير (سكر)، ميان حاجي عبدالحكير (الرپاركر)، مولوي عبدالحكير (شكارپور), حافظ عبدالحميد تريچائي (سكر), عبدالحميد ڀٽي (سكر), مولوي عبدالحلير (جيكب آباد), مولوي عبدالحي (نواب شاهر), مولوي عبدالخالق كندياروي (نواب شاهر), مولوي عبدالخالق "خليق" مورائي (نواب شاهر), قاضي عبدالرحمٰن (حدرآباد). مولوي عبدالرحمٰن (دادو). مولوي عبدالرحيم (جيكب آباد). مولوي سيد حاجى عبدالرحير شاه (ئنو). مولوي غبدالرحيم (كراچي)، مولوي عبدالرزاق پيرزادو (سکر)، مولوي عبدالرزاق بوبكائي (دادو)، مولوي عبدالرؤف دومكي (جيكب آباد)، مولوی پیر آغا عبدالستار جان (حیدرآباد), مولوی عبدالشکور (.....), عبدالعزیز الريحاثي (سكر)، مولوي شيخ عبدالعزيز (حيدرآباد)، مولوي عبدالعزيز (سكر)، مولوي عبدالففور (سكر). مولوى عبدالففور (جيكب آباد). حافظ عبدالغنى (لازَّكائو). مولوی عبدالقادر لغاری (سانگهڙ)، مولوی عبدالقيوم (ٿرپارڪر). مولوي عبدالڪريم عباسي (ئتن)، مولوي عبدالكريم درس (كراچي)، مولوي عبدالكريم ڏيرو (لاڙڪاڻو)، مفتى عبدالرحير (سکر)، عبدالڪرير چشتى (شڪارپور)، مولوي عبدالكرير مكسى (دادو)، عبدالكرير كورائي (جيكب آباد)، مولوي عبدالكرير ككل (لاز كاثر)، مولوى عبدالكريم سمون (بدين)، مولوي عبداللطيف دول (جيكب آباد)، مولوي عبدالواحد (جيكب آباد)، مولوي حاجي عزيز الله (نواب شاهر)، قاضي عزيز للله (لازَّكانُو), عزيز الله (....), عطاء الله ينانُ (ننو), سيد حاجي على اكبر شاه (دادو)، موالان سيد على انور شاه (نواب شاه)، على شير (سكر)، على محمد مهيري (نتو). مولوى عنايت الله (دادو). غلام احمد ملكائي (دادو). مولوى شيخ غلام حسين (بدين). غلام حسين (لاڙڪاڻو). مولوي غلام رسول (جيڪب آباد). مولوي غلام رسول (سكر)، مولوي غلام رسول شاه (خيريور)، سيد ميان غلام شاه (دادو)، حُكيم غلام صديق (لاڙڪاڻو)، غلام على گوپانگ (بدين)، غلام عمر جتوئي (لاڙڪاڻو)، غلام فزید سپریور (لاڑکاٹو), مولوی غلام محمد (حیدرآباد), مولوی غلام محمد (لاڙڪاڻو). مولوي غلام محمد (كراچي), پير غلام مجدد (حيدرآباد)، نتح على جتوئي ننڍو (ٺٽو)، فتح علي جتوئي وڏو (ٺٽو)، حڪيم فتح محمد سيوهاڻي (ڪراچي). قاضي فتح محمد نظاماتي (حيدرآباد), مولوي فتح محمد (لاڙڪاڻو), مولوي فتح محمد (ٺٽو), پير فتح الدين شاه (لاڙڪاڻو). حڪيم فتح محمد (شڪارپور)، مولوي فتح محمد (ترپارکر)، مولوي فخر الدين (دادو)، مولوي حکيم فضل الله (شکارپور)، مولوي فضل الحق (لازَّكاتُو)، حكيم فضل محمد نوشهرائي (نواب شاهر). سيد فيض الله (....)، مولوي فيض محمد واعظ (لاڙڪاڻو)، مولوي قائم الدين احمد (جيڪب آباد)، مولوى قادر بخش (لازّكائو)، ملا قاسم (كراچي)، مولوى قمر الدين واعظ (جيك آباد)، مولوي قیصر خان (نواب شاه)، مولوي كريىر بخش (لاڙكاڻو)، مولوي كريىر بخش (جيڪب آباد). مولوي ڪريبر بخش (نواب شاهر), مولوي گل محمد (نواب شاهر).

مولوي لعل محمد (الرپاركر). مولوي لعل محمد متعلوي (حيدر آباد)، حافظ متارو ساڍر (الرپاركر)، پير منل شاه راشدي (لاڙكاڻو)، پير محبوب شاه (حيدرآباد)، حسن شاه (جيكب آباد). حكيم الدين پرهياڙ (حيدرآباد). حافظ محمد مٽياروي (حيدرآباد). محمد خان (خيرپور), محمد کٽي (ٺٽو), حاجي محمد قريشي (دادو), محمد ڪڇي (كراچي), حافظ محمد هالائي (حيدرآباد), مولوي محمد (لاڙڪائو), محمد ابراهير ڳڙهي ياسيني (شڪارپور)، محمد اسماعيل ڀٽو (سکر). مولوي محمد اسماعيل (شكارپور)، مولوي پير آقامحمد اسماعيل جان (حيدرآباد)، محمد اكرم انصاري (حيدرآباد)، مولوي محمد اكرم (الرپاركر)، مولوي محمد اعظر (لازكائو)، مولوي پير محمد امار شاه (حيدرآباد), محمد امير آريسر (ٿرپارڪر), محمد باقر شاه (ٺٽو), ملا محمد بچل (لاڙڪاڻو), حافظ محمد بخش (جيڪب آباد), محمد پريل منگيو (نواب شاهر), خواج محمد حسن جان (حيدرآباد), محمد حسن (لاڙڪاڻو), مولوي محمد حسن (سانگهڙ), حافظ محمد حسن (جيڪب آباد), محمد حسين صديقي (ٺٽو). پير آقا محمد حسين جان (حيدرآباد), مولوي محمد حسين جمالي (نواب شاهر), مولوي محمد دائود تنيو (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد رحير بخش (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد رمضان (حیدرآباد), محمد سعید گوپانگ (بدین), مولوی محمد سلطان (دادو), مولوی محمد سليمان "واعظ" (دادو). محمد سليمان بنوي(ٺٽو). محمد سليمان (لاڙڪاڻو). مولوي محمد سليمان چانديو (....), محمد سليمان هالائي (حيدرآباد), مولوي آخوند محمد سمن (دادو), محمد صادق كڏي وارو (كراچي), محمد صادق انڍڙ (سكر), محمد صالح ماذّوي (دادو)، محمد صالح سمون (ترپاركر)، مولوي محمد صالح شيخ (خيرپور)، مولوي محمد صالح (دادو). مولوي حكيم محمد صديق مورائي (نواب شاهـ), محمد صديق كڇي (كراچي). مولوي معمد صديق (لاڙكاڻو)، مولوي معمد صديق (حيدرآباد)، مولوى محمد طاهر (سانگهڙ)، مولوي محمد طيب لکمير (نواب شاهر)، محمد عاقل (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد عالم (لاڙڪاڻو)، محمد عبدالحڪيم

(شكارپور)، محمد عثمان قراني (قرپاركر)، محمد عثمان كٽي (ٺٽو)، محمد عثمان شيخ (نواب شاهر), محمد عثمان بلوچ (كراچي), محمد عظير "شيدا" (لاڙكاڻو). محمدعلی جوٹیجر (ٿرپارڪر), محمد علی (نواب شاهر), محمد علی (شڪارپور). محمد عمر کٽي (ٺٽو), محمد قاسر ڳڙهي ياسيني (شڪارپور), مولوي محمد قاسر (حیدرآباد), مولوی محمد قاسر (ترپارکر), مولوی محمد قاسر (سکر), مولوی محمد مبارك پلى "رپاركر), مولوي محمد مصري (دادو), حكيم محمد معاذ پيرزادو (نواب شاه), مولوي محمد موسى حبشى (حيدرآباد), مولوي محمد موسى (كراچي), مولوي محمد وارث (دادو), مولوي محمد وارث (لاڙڪاڻو), مولوي محمد هارون (حيدر آباد), مولوی محمد هاشر ، اسحاق دیرائی (شکارپور) ، مولوی محمد هاشر کٹی (نٹو) ، محمد هاشر گِڙهي ياسيني (شڪارپور), محمد هاشر (دادو), محمد هاشر (سکر), محمد هاشر "مخلص" (حيدر آباد), مولوي محمد هاشر (نتو), مولوي محمد هاشر (خيرپور), محمد يعقوب جاجاثو (ترپاركر)، محمد يوسف بنوي (نتو)، محمد يونس (ترپاركر)، محمد پاٽائي (دادو)، ميان محمود (دادو). پير محمود شاه (لاڙڪاڻو). محمود (ٺٽو). سيد محمود شاه بخاري (جيكب آباد)، محمد (لأزاكائو)، مولوي مصلح الدين (ترياركر)، معين الدين كنياروي (نواب شاهر), مولاداد (لاڙكاڻو), مير محمد حسن ٽالپر (نواب شاه)، مير محمد نورنگي (لاڙڪاڻو)، مير محمد جتوئي (ٺٽو)، نبي بخش عودي (جيكب آباد), نذير حسين جتوئي (لاڙكاڻو), ميان نظام الدين امروٽي (شكارپور), قاضی نظر محمد دیهاتی (نواب شاهر), نور محمد اندرّ (سکر), نور محمد نظاماتی (حيدرآباد). نور الحسن (لاڙڪاڻو). نور محمد (نواب شاهر). شيخ نور محمد مٽياروي (حيدرآباد)، نور محمد (جيكب آباد). نور محمد تنگوائي (جيكب آباد)، نور محمد (نُنو). حافظ ولى محمد هالائي (حيدر آباد), هدايت الله تنيو (نواب شاه), پير هدايت الله ٺلاهي (لاڙڪاڻو), مولوي يار محمد (شڪارپور), مولوي يار محمد (حيدرآباد), ۽ مولوي يار محمد جمالي (كراچي).

امن سيا

تعارف: ڌارين ۽ جابر حڪومتن جو هميشه دستور پئي رهيو آهي، ته محڪوم قدون کي غلاميءَ ۾ رکڻ لا منجهن تفرقو پيدا ڪنديون آهن. ته جيئن اهي پاڻ ۾ وڙهندي ڪمزور ٿينديون رهن، ۽ حڪمران وري مٿن آسانيءَ سان پنهنجو تسلط قائم رکي سگهن.

عالمي وڏي جنگ کان پوءِ "خلافت تحريك" جو آغاز ٿيو، تہ انگرين سركار ان كي منهن ڏيڻ لاءِ "امن سڀا" جي تحريك هلائي. هن نئين جماعت جاخاص ہرمقصد هئا: پهريون هندستان جي مسلمانن كي تركي خلافت جي مسئلي كان پري ركڻ، ۽ ٻيو ان آزادي پسند عوام كي محض پنه نجو وفادار غلام بنائي ركڻ.

ڪار ڪردگي: انهن مقصدن کي حاصل ڪرڻ لاءِ وقت جي سرڪار ٻہ مکيہ محاذ قائم ڪيا. پهريون محاذ دنيا تي دين وڪڻڻ وارن عالمن جي گروه حوالي ڪيو ۽ ٻيو محاذ سنڌ جي ڏن ڏڻي وڏيرن جي سنڀال هيٺ ڏنائون. انهن ٻنهي محاذن جو مختصر ذڪر هيٺ ڪجي ٿو:

عالمن جو گروهم: هن گروه جي اڳواڻي مولوي نيض الڪريم * کي ڏني ويئي ۽ محمد عبدالغنيءَ ۽ مولوي عبدالعزيز سندس ساٿين طور ڪر ڪيو.

* مولوي فيض الكرير ولد محمد عيسيٰ ساند، مولهڻ جي ڀرسان ساندن جي ڳوٺ ضلعي نواب شاهر جو رهاكو هو. پاڻ ڳوٺ فيض محمد آڳري تعلقي ميهڙ ۾ مولوي محمد آڳري كان تعليم ورتي هئائين اهل حديث مسلك جو هو. مولوي صاحب پنهنجي دور جو وڏو جيد عالمر هو ۽ علم حديث، فقه ۽ اسلامي تاريخ جو وڏو ڄاڻو هو. طب تي كيس چڱو عبور حاصل هو. فتريٰ نويسيءَ ۾ يگاند روزگار هو. "خلافت تحريك" كي كمزور كرڻ لاءِ انگريزن كيس منتخب كيو. جنهن كري پاڻ امن سڀائي عالمن جو روح روان بڻجي، وقت جي سركار كي خوش كرڻ لاءِ تركيءَ جي خليفي خلاف "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو كڍيو جنهن تي سنڌ جي امن سڀائي عالمن، پيرن، مشائخن ۽ در گاهن جي سجاده نشينن صحيحون كيون. انهيءَ فتويٰ جي رد ۾ وري مولانا دين محمد وفائي "اظهار الكرامة" نالي فتويٰ جو رسالو شايع كرايو.

هن گروه جو اهو عقيدو هو ته اهي ئي علم جا اڪابر ۽ سياست جا مدبر آهن اسان جو اسان مان گهڻا مسلمان اڄوڪي وقت ۾ مذهبي واقنيت پوري نٿا رکن. اسان جو مذهبي جوش انهيءَ سبب ڪري نه آهي ته اسان پنهنجي مذهب جي زرين اصولن تي قائم آهيون، بلڪ فقط انهيءَ ڪري آهي ته اسان جا بزرگ، جهڙيءَ طرح ٻيا رسر ورواج اسان جي لاءِ ڇڏي ويا آهن، اهڙيءَ طرح هي مذهب به اسان جي لاءِ ڇڏي ويا آهن. يعني اسان پنهنجي مذهب کي رڳو هڪڙي قسر جو رواج ڪري سمجهيو آهي ۽ بس. جنهن جو نتيجو هي ٿيو آهي جو اسان مذهبي تحقيقات کي ڇڏي ويٺا آهيون ۽ جيڪي ڪجه اسان پنهنجن ابن ڏاڏن کان ٻڌو آهي، انهيءَ تي انڌن وانگر هلڻ پنهنجو دين ۽ ايمان سمجهون ٿا." (234)

هن گروه پنهنجي انهيءَ عقيدي جي آڌار تي خلافت جي تشريح هنن لفظن ۾ ڪئي تہ:

"خلافت اسلام جي اركان ۾ داخل نه آهي. هڪڙو دنيوي مسئلو آهي، جو ماڻهن جي مرضيءَ تي مدار رکي ٿو. جنهن کي وڻين تنهن کي پنهنجو خليفو چونڊين. ڇو ته حضرت رسول ڪرير ﷺ جي نبوت سان اسلام كامل تي چكو هو، جيئن قرآن كريم ۾ ارشاد آهي "اليوم اكملت لكم دينكم" باقي ضرورت هن ڳاله جي آهي ته سندن وفات كان پوءِ ڪنهن اهڙي ماڻهوءَ کي مقرر ڪجي، جو ماڻهن کي احڪام شريعت جو پابند كرائي ۽ سلطنت ۾ انتظام ركي. جنهن صورت ۾ اهي ٻئي ڳالهيون اهڙيون هيون، جن جو عامر ماڻهن سان ئي تعلق هو. تنهن صورت ۾ ضروري هو. ته ماڻهو پنهنجي مرضيءَ سان ڪنهن به شخص کي پنهنجو خليفويا امير چونڊين. مگر اسلام جا اصول ماڻهن جي هٿن ۾ نه آهن. اهي ته خدا تعاليٰ جا بنايل آهن. ڪنهن به شخص جي رضا ۽ رغبت جي انهن ۾ ڳاله ئي ڪانهي. تنهن ڪري انهيءَ مان ثابت ٿيو تہ خلافت جو مسئلو اسلام جي اصولن ۾ داخل ڪونهي. بلڪ خليفي جي مقرري ماڻهن جي ئي وس ۾ آهي. تنهن ڪري جيڪڏهن ڪو مسلمان ڪنهن سلطان جي خلافت نه ميي ته اهو اسلام جي دائري کان خارچ نٿو ٿي سگهي. بادشاه جو مقرر كرڻ محض ملكي انتظام لاءِ ضروري آهي. تنهن كري اهو مسئلو به صرف بين دنيوي ڳالهين مثلاً نڪاح. خريدوفروخت وغيره وانگر شريعت ۾ داخل آهي ۽ نہ ڪنهن ركن اسلام موافق داخل آهي" (235)،

هن گروه هڪ طرف خلافت کي غير اصولي امر قرار ڏنو، تہ ٻئي طرف انهيءَ لاءِ وري ڪي مذهبي شرط عائد ڪيا. سندن خيال ۾ خلافت واسطي علم، عدالت، ڪفايت، هوش حواس ۽ عضون جي سلامتي ۽ قريشي نسب جا شرط نهايت ضروري هئا. سندن عقيدي موجب:

"علم انهيءَ ڪري ضروري آهي، ته جيڪو خليفو خود احڪام شرعيه کان واقف هوندو ته انهن کي جاري ڪرڻ ۾ سعيو ۽ ڪوشش ڪندو. خليفو صاحب اجتهاد هئڻ گهرجي، جو ٻيا ماڻهو سندس پيروي ڪن ۽ نه اهڙو هجي، جو پاڻ ٻين جو پوئلڳ ۽ محتاج هجي.

خليفي جو عادل هئڻ به ضروري آهي. ڇو جو سڀ عدالت وارا منصب سندس نظر هيٺ هوندا آهن.

ڪفايت انهيءَ واسطي ضروري آهي تہ خليفو ماڻهن کي خدائي قانون جو پابند ڪري ۽ جهاد، زڪوات، بيت المال ۽ فوج ۽ ٻيا بادشاهي ڪر چڱيءَ طرح هلائي سگهي.

هوش حواس ۽ عضون جي سلامتي هن ڪري ضروري آهي. تہ جيڪڏهن خليفو انڌو. گونگو، ٻوڙو يا چريو هوندو تہ خلافت جو ڪر ڪري ڪين سگهندو. جيڪڏهن خليفي کي منصبي تصرف کان روڪي ڇڏجي تہ اها ڳالهه به اهڙي آهي، جهڙي هوش حواس ۽ عضون جي ناسلامتي.

خليفو قريشي نسب مان هئڻ گهرجي، ڇو ته حديث شريف ۾ حڪر آهي "الائمة من قريش" ۽ هن حديث شريف کي عالمن هميشه قبول ڪير آهي ۽ بني سقيفه ۾ جڏهن انصارن سڳورن سعد بن عباده رائي کي خليفو چونڊڻ جي ڪوشش ڪئي، تڏهن حضرت عمر رائي انهيءَ حديث جو دليل پيش ڪري حضرت ابوبڪر صديق رائيءَ کي خليفو چونڊرايو" (236).

اهي ته هئا هن گروه جا خلافت لاءِ خيال ۽ عقيدا، پر سندس اصلي مقصد ۽ نيت سياسي مفاد ئي هو. اهر سياسي مفاد، جيڪو سندس آقائن کي عزيز هو، تنهن جي حاصل ڪرڻ لاءِ اهو گروه پنهنجي عقيدن جر بنياد ٻڌي عوام کي تاثر ڏئي ٿي سگهيو ته:

"هن وقت جيڪي ماڻهو خلافت ترڪيءَ تي زور ٿا ڏين. اهي وڏي

خطرناڪ غلطيءَ ۾ مسلمانن کي ڦاسائڻ ٿا گهرن، ڇاڪاڻ تہ ان جو لازم نتيجو اهو نڪرندو تہ هندستان ۾ ٻہ جماعتون ٿينديون، هڪڙي طرفدار ترکن جي، ٻي طرفدار عربن جي. ٻنهي جماعتن ۾ سخت اختلاف ۽ اجايو جهڳڙو قائم رهندو ۽ سواءِ ڪنهن فائدي جي مسلمانن کي اجايو نقصان ٿيندو. ازانسواءِ اهڙي قسم جي تحرڪ جي ڪري ترڪن کي شايد جوش اچي، جو حجاز تي چڙهائي ڪن ۽ ظاهر آهي تہ عرب باآسانيءَ سان پنهنجي آزادگيءَ جي واڳ ترڪن جي هٿ ۾ نه ڏيندا، ۽ نتيجو اهو ٿيندو جو خود حرمين شريفين ۾ خونريزي ۽ جنگ جو امڪان ٿيندو. لهذا مسلمانن کي گهرجي ته اهڙن آئينده جي خوفناڪ واقعن کان حذر ڪن ۽ مسلمانن کي پاڻ جنگ جدال کان بچائڻ جي واقعن کان حذر ڪن ۽ مسلمانن کي پاڻ جنگ جدال کان بچائڻ جي

"اسان سيني مسلمانن تي بحكر خدا ورسول، بادشاه وقت جي اطاعت ۽ فرمانبرداري ضروري آهي، ۽ هر قسر جي شور ۽ فساد كان پرهيز كرڻ واجب آهي، جهڙيء طرح خدا جي فضل سان مسلمان هميشہ كندا آيا آهن. اسان جي مدعا آهي تہ كو بہ مسلمان خدا ۽ رسول جي حكمن كان منهن نہ قيرائي، انهيءَ واسطي هن رسالي جو بيان دليلن سان مدلل بيان كيو ويو آهي، جو اميد آهي ته عام طرح سبب هدايت جو تلندو. "(238).

ننڍي کنڊ ۾ مذهب جو ميدان رڳو عالمن لاءِ وقف ٿيل نه آهي، پر پير ۽ سبجاده نشين ب ساڳي ئي حيثيت سان ساڻن شريڪ نظر اچن ٿا. ان ڪري جنهن هنڌ تي عالمن جو ذڪر ڪيو ويندو، اتي پيرن ۽ فقيرن کي بر نظرانداز نٿر ڪري سگهجي.

امن سيا جي قيام ۽ تبليغ ۾ ڪن عالمن سان گڏ سنڌ جي پيرن ۽ فقيرن بہ پاڻ ملهائڻ جي ڪوشش ڪئي. انهيءَ سلسلي ۾ 4 جولاءِ 1930ع تي هالن ۾ مخدوم غلام حيدر جي ڪوششن سان ملڪ جي مشهور پيرن ۽ فقيرن جي گڏجاڻي ٿي (239)، جنهن ۾ شرڪت ڪندڙ هئا:

.

سجاده نشين در گاه ڪريمي بلڙي. ضلع حيدر آباد سجاده نشين در گاه هالا

پير سيد غلام حيدر شاهر, ايمر, ايل سي مخدوم غلام محمدصاحب,

بير محمد معصوم

پیر سید حسن علی شاه

سيد على اكبر شاه لكياري

پیر سید قادن شاه لکیاری

پیر غلام حسین سرهندی

پير فخر الدين شاه راشدي

پير سيف الله شاه راشدي

پير شمس الدين

پير فتح محمد شاهر

پیر فضل علی شاه

خليفه الهربخش صاحب

پير سيد خالقڏنو شاھ

پیر سید محمد بقادار شاه جیلانی

كنياري شريف, ضلع نواب شاه. ٿاڻو بولاخان. ضلع ڪراچي آراضي, ضلع لاڙڪاڻو. جيس آباد, ضلع ٿر ۽ پارڪر ضلع ٿر ۽ پارڪر ضلع ٿر ۽ پارڪر متياري، ضلع حيدرآباد سجاده نشین، درگاه نصرپور، ضلع حیدرآباد نصربور ضلع حيدرآباد گولاڙي, تعلقه ٽنڊوباگو, ضلع حيدرآباد كٽياڻ, ضلع حيدرآباد سجاده نشین در گاه سانگرو، ضلع حیدرآباد سجاده نشين، در گاه كڙيا گنهور، ضلع حيدرآباد در گاه جهندا والا, ضلع نواب شاه سجاده نشین , در گاه مكان شریف ضلع حیدر آباد سجاده نشين. دِنْرو. ضلع نواب شاه پيرسيد گل محمد شاه ولدسيد ولي محمد شاه نمائندو در گاه لعل شهباز سيوهن. ضلع لازكاثو منياري, ضلع حيدرآباد كدو, ضلع حيدر آباد

پیر محمد امام شاه راشدی پیر غلام دستگیر صاحب پير ڏنل شاه. پیر بقادار شاه پیر قاسر علی شاه پیر نبی بخش شاه پير خدا ڏنو شاھ صاحب پير غلام نبي شاه ولد صديق محمد شاهر پير ڪوڙل شاھ پير سيد عبدالله شاه الهدنو ساند پير امين محمد شاه فاضلائي خانصاحب علي بخش شاه

سيد محمد عالر شاه ڏاڏائي

پیر سید شاهنواز شاه

پير عطا محمد شاه

نمائندو درگاه بكيرا، ضلع حيدرآباد شهدادپور, ضلع نواب شاهم ضلع حيدر آباد ضلع حيدرآباد وهائي, ضلع حيدرآباد ضلع حيدرآباد جوثه, ضلع حيدرآباد كدو، ضلع حيدرآباد

شاهپور, ضلع حيدرآباد

نصرپور، ضلع حيدر آباد

باجارا تعلقه سيوهن، ضلع دادو

سيد اسد الله شاهر

ضلع ٿر ۽ پارڪر ضلع ٿر ۽ پارڪر

پير هاشر شاه لڪياري پير سيد جڙيل شاه

سنڌ جي هنن روحاني رهبرن "خلافت تحريڪ" ۽ "عدم تعاون تحريڪ" جي خلاف جيڪو ڪر ڪيو. تنهن جو اندازو ساڳيءَ گڏجاڻيءَ ۾ بحال ڪيل ٺهرائن مان لڳائي سگهجي ٿو. گڏجاڻيءَ ۾ منظور ڪيل ٺهراءِ هن طرح هئا:

"سنڌ جي پيرن جي هيءَ گڏجاڻي "عدر تعاون تحريڪ" جي مذمت ڪندي ديس وارن کي اپيل ٿي ڪري تہ اهي هر ممڪن ڪوشش وٺي هن تحريڪ کي ناڪام بنائين، ۽ انهيءَ سلسلي ۾ سنڌ جي باقي پيرن کي التجا ٿي ڪجي تہ اهي مؤثر قدر کڻي پنهنجو اثر رسوخ هلائي تحريڪ کي وڌيڪ اسرڻ کان روڪين".

پیر غلام حیدر شاه صاحب

رٿ ڏيندڙ:

پیر محمد امام شاه

ٽيڪر ڏيندڙ:

اله بخش صاحب، پير بقادار شاه پير خدا ڏنو شاهر،

رڌيڪ ٽيڪر ڏيندڙ:

میان معصوم شاهر ، پیر فتح محمد.

آل پارٽيز ڪانفرنس" جي اسلامي جي پيرن هيءَ گڏجاڻي دهليءَ ۾ سڏايل "آل پارٽيز ڪانفرنس" جي مطالبن جي ڌئيد ڪري ٿي، ۽ برطانيہ سرڪار کان گول ميز ڪانفرنس ۾ مسلمانن کي نمائندگي ڏيڻ جي گهر ڪري ٿي".

پیر سید امام شاه

رٿ ڏيندڙ:

پیر سید غلام نبی شاهه.

ٽيڪر ڏيندڙ:

ڏن ڏڻين جو ڏڙو: هن جماعت کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ لاءِ وقت جي سرڪار سنڌ جي ڪيترن ئي ڏن ڏڻي وڏيرن کي ساٿ ڏيڻ تي آماده ڪيو، جن جو محاذ سنڌي عوام ۾ هيٺ ڄاڻايل نظرين ۽ ءتيدن جي برچار ڪرڻ جو باعث بڻيو:

i. برطانيه جي تاج ۽ تخت سان وفاداري برقرار رکڻ(240).

ii. "عدم تعاون تحريك" جي مخالفت كرڻ(241).

.iii هند سرڪار جي ڪارنامن کي اجاگر ڪرڻ(242).

iv. "خلافت تحريك" ۽ كانگريس پارٽيءَ جي مذمت كرڻ(243).

"امن سيا" جو قيام ۽ عمل وقت جي سرڪار جي ملڪي سياست ۾ کلي ۽ ڏئي وائني مداخلت جو مظهر هو. هن جماعت جي ڪاڪردگيءَ جي مطالعي مان معلوم

ٿئي ٿو تہ مختيار ڪار ۽ ڪليڪٽر ذاتي طور تي هن سڀا جي گڏجاڻين ۾ شرڪت ڪندا هئا.*

سنڌ ۾ قائم ڪيل ڪن "امن سڀا" جي شاخن جو وچور هن طرح آهي:

اباوڙو (244)، بدين (245)، بيلو(246)، ٽنڊوباگو(247)، ٽنڊوڄام (248)، ڳڙهي ياسين(249)، ديرو محبت (250)، ڏهرڪي (251)، مانجهند (252)، نصيرآباد(253)، سڪرنڊ (254)، قاضي احمد (255)، قمبر (256)، ۽ هالا (257).

امن سبيا ۽ سنڌ جا عالم: هن باب جي ابتدا ۾ مختصر نموني ۾ مکيه عالمن جو حوالي طور ذکر کيو ويو آهي، ۽ حقيقت ۾ اهي ئي عالم _ يعني مولوي فيض الڪرير، محمد عبدالغني ۽ مولوي عبدالعزيز ئي هن سيا جي جان هئا، ۽ هنن ئي "امن سيا" کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ جي سرٽوڙ ڪوشش ڪئي.

مولوي فيض الكرير قلمي ۽ علمي محاذ سنڀاليندي "تحقيق الخلافت" نالي هڪ كتاب تصنيف كيو ، سندس ساٿ محمد عبدالغنيءَ ڏنر، جنهن وري خلافت جي مسئلي تي "خيالات" نالي هڪ كتاب لكيو . * مُولوي عبدالعزيز اكثر كري ساهتي

^{*} آفيسرن جي شركت جا كجه مثال هيٺ ڏجن ٿا:

i. مسٽر نانڪرام مختيار ڪار ڳڙهي ياسين، جنهن ڳڙهي ياسين "امن سڀا" جي گڏجاڻين چ شرڪت ڪئي. (See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 16.6.1921, P.5)

ii. مسٽر اي. جي بولس (Mr. E.J.Bolus)، ڪليڪٽر ضلع نواب شاه. جيڪو اڪثر ڪري نواب شاه مصلارت ڪندر هو. (See, "The Daily) نواب شاه ضلعي ۾ "امن سڀا" جي گڏجاڻين جي صدارت ڪندر هو. (Gazette", Karachi, dated 12.10.1922, P.5)

كتاب بر خلافت جي مسئلي تي اها راء ڏني ويئي هئي ته، تركن جي خلافت غير اسلامي آهي، ۽ انهيءَ حجت كي ثابت كرڻ لاءِ كتاب بر "صحيح مسلم"، "صحيح بخاري"، "حجة الله البالغه" ۽ "شرح عقائد" جا حوالا ڏنا ويا آهن. (تفصيل لاءِ ڏسو "تحقيق الخلافت" كراچي، ڊيلي گزيٽ 1919ع)

^{• *} هي ؛ كتاب به كراچي جي ديلي گزيٽ مان شايع ٿيو، جيكو 18 صفحن تي مشتمل آهي.
هن كتاب ۾ هيٺيان باب ركيا ديا آهن:

منڍ, خلافت جي حقيقت, خلافت اسلام جو رکن آهي ڇا؟, خلافت جا شرط, خلافت ڪيئن دنياوي سلطنت ٿي ويئي, هندستان جا مسلمان ۽ اسلامي خلافت, شريف مکي جي خودمختياري.

پرڳڻي جي "امن سيا" جي گڏجاڻين ۾ شرڪت ڪري، هن جماعت جي تبليغ ڪندو هو. جنهن جي نتيجي ۾ کيس لونگيون ٻڌارايون وينديون هيون(258).

جيئن ته هيءَ سڀا عوامي تحريك _ خاص طور تي "خلافت تحريك" كي بنجي ڏيڻ لاءِ بنائي ويئي هئي. ان كري سنڌ جا كيترائي عالم هن كان پري ۽ پاسيرو رهيا. پر وقت جي ظالم حكمران جي دہاءَ هيٺ اچي سنڌ جي كن عالمن ۽ پيرن مولوي فيض الكريم جي كتاب "تحقيق الخلافت" تي صحيحون كيون. انهن عالمن ۽ پيرن جا نالا هن طرح آهن: (259)

شمس العلماء سيد محمد شاه مردان شاه سجاده نشين، (پير ڳوٺ ضلع خيريور)، ابرمحمد صالح شاه سجاده نشين، (راثي پور)، سيد پير خميسو شاه نقيب، (گمبت)، مخدوم ظهير الدين سجاده نشين، (هالا نوان). غلام مجدد سرهندي سجاده نشين (تندرسائينداد ضلع حيدرآباد)، پير الهيار شاه سجاده نشين (متياري)، پير على مظفر شاه. (كنگري تعلقو روهڙي). پير سيد علي مدد شاه (راڻي پور). پير سيد محمد شاه (كراچي), امام الدين شاه (ٺلاه تعلقو ڏوكري), عطاءُ الله شاه (گهوٽكني ضلع سكر)، بير مير محمد شاه سجاده نشين، (گهوتكي)، حافظ عبدالله سجاده نشين (يرچندي ضلع سكر)، مخدوم حبيب الله (پاٽ)، محمد صالح شاه سجاده نشين (پاٽ)، پير سيد ولي محمد شاه (سيوهڻ). شاڭ دوران شاه سجاده نشين. (بٽ سرائي ضلع دادو)، پير محمد محين الدين (بِٽ سرائي)، پير امان الله شاه (....)، پير علي شاه سجاده نشين (شاه آباد ضلع لاڙڪاڻو). علي محمد قادري سجاده نشين (لاڙڪاڻو). مخدوم هادي بخش سجاده نشين. (محمد پور تعلقر گهوٽڪي). مولانا شفيع محمد قاضي (هالا نوان). قاضي ابراهير شاه (حيدرآباد). مولوي عبدالرحمٰن (پير ڳوٺ ضلع خيرپور), مولوي شاه محمد (هالا نوان), مولوي تاج محمد (هالا نوان), مولوي محمود سجاده نشين (پاٽ), مولوي محمد عثمان (ڳوٺ جمال), مولوي محمد عمر (كڏهر تعلقو سكرند), مولوي محمد محسن (ميان جو گوث تعلقو شكارپور), سيد عبدالنبي (....)، مولوي محمد پناه (بلوچ آباد), مولوي حاجي محمد صالح (ڳڙهي ياسين), مولوي گل

ذكر كيل ٻنهي كتابن جي جملن جي تركيب، بيهك جون نشانيون ۽ لفظن جو ذخيرو اردو زبان تان ور تل نظر اچي ٿو، ۽ ائين ٿو لڳي ته اهي ٻئي كتاب كنهن اردو دان جا لكيل آهن. جن كي سنڌيءَ ۾ ترجمو كري مولوي فيض الكريم ۽ محمد عبدالغنيءَ جي نالي ۾ ڇهارايا ويا هئا. (تفصيل لاء ڏسو، "خلافت جي مسئلي تي خيالات" كراچي، ڊيلي گزيٽ سال ؟)

محمد (حيدرآباد), مولوي عبدالقادر (مسو ديرو ضلع لاڙڪاڻو), مولوي حاجي محمد صادق (مورو ضلع نواب شاهم). مولوي محمد يعقوب (شهداد خان لغاري ضلع سكر). مولوي عبدالكريم (سكر)، مولوي خوش محمد شاه (نار شاه ضلع نواب شاه), مولوي عبدالعزيز (حيدر آباد), مولوي شاهر محمد (هالا پراڻا), مولوي محمد (هالا نوان), مولوي الهركيو عباسي (هالا نوان), مولوي محمد معين الدين (هالا نوان), مولوي لعل محمد (منّياري)، مولوي محمد فاضل (منّياري)، مولوي عبدالرحمٰن (منّياري)، مولوي پير محمد (تندوقيصر ضلع حيدرآباد)، مولوي سيد الهيار شاه (بهاول زئونر)، مولوي عبدالله (بنگلديرو ضلع لاڙڪاڻو). مولوي امام بخش (رتوديرو ضلع لاڙڪاڻو). مولوي خوش محمد (ميرو خان ضلع لاڙڪاڻو). مولوي دين محمد (بني تعلقو ميروخان). مولوي نور الحق (ڳوٺ آباد تعلقو رتوديرو). مولوي عبدالحليم (پير بخش ڀٽو تعلقو رتوديرو)، مولوي خير محمد (ڇٽو جويو تعلقو ميروخان)، مولوي قاضي عبدالله (ڳوٺ پاڳارو تعلقو رتوديرو). مولوي ڪريـر بخش (دودو خان ڀٽو ضلع لاڙڪاڻو). مولوي محمد صديق (حيدرآباد). مولوي محمد ڏيرو (ڳوٺ ڏيرا تعلقو ڪڪڙ)، مولوي محمد عمر (ڳوٺ ابراهيم چنڊ تعلقو ڪڪڙ)، مولوي محمد علي ڏيرو (ڳوٺ ڏيرا تعلقو ككڙ)، مولوي عبدالحق (ڳونَ ملك تعلقو ككڙ)، مولوي شجاع محمد (ڳوٺ تهلو تعلقو ككتل). ، مولوي غلام رسول (لذو ديرو تعلقو ككتل)، مولوي عبدالنبي (لذو ديرو تعلقو ككڙ)، مولوي محمد احسان (پاٽ)، مولوي نور محمد شاھ (ڳوٺ سوجهرو ضلع لاڙڪاڻو)، مولوي محمد عظيم (خداداد خان پٺاڻ تعلقو دادو)، مولوي گل محمد (گهنور آباد تعلقو وارهم). مولوي عبدالكريم (الهركيو جلباڻي تعلقو واره). مولوي عبدالرحلن (ٿرڙي هاجران تعلقو واره), مولوي محمد صالح ابڙو (گاجي كهاوڙ تعلقو وارهم)، مولوي سيد عبدالحق (جاني بند تعلقو وارهم), مولوي عبدالهادي (ڳوٺ الهم بخش تعلقو واره)، مولوي عبدالكريم ڀٽو (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد عاقل (تعلقو لازَّكاتُو)، مولوي محمد بچل (لازَّكاتُو)، مولوي غلام حسين (وليداد تعلقو لازَّكاتُو)، مولوي تاج محمد (كرن تعلقو شكارپور), مولوي مولا بخش (ڳوٺ ملا آباد تعلقو ڏوڪري)، مولوي غلام محمد (سونو جتوئي تعلقو لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالواحد (سونو جتوئي)، مولوي غلام عمر (سونو جتوئي)، مولوي عبدالرحيم (سونو جتوئي)، مولوي سيد محمد صالح شاه (آريجا تعلقو لاڙڪاڻو), مولوي عبدالغني (ڳوٺ رکيل تعلقو لازَّكاتُو)، مولوي سيد صالح شاه (تندو ولي محمد ضلع حيدرآباد). مولوي محمد عثمان (دادو شاهر), مولوي عبدالكريم درس (كراچي), مولوي غلام الرسول

(محرابپور), مولوي محب النبي (ڳوٺ سيال تعلقو دادو), مولوي سعيد الدين (نورپور), ۽ مولوي سعد الله (ڳوٺ ميتلا ضلعو لاڙڪاڻو).

ذكر كيل عالمن ۽ پيرن مان كيترن كي جلد ئي پوءِ پنهنجي غلطيءَ جو احساس ٿيو ۽ ان جي ازالي كرڻ ۾ ب كا كسر نہ ڇڏيائون. جڏهن خلافت كاميٽيءَ طرفان مولوي فيض الكريم جي كتاب "تحقيق الخلافت" جي رد ۾ "اظهار الكرامت" شايع كرايو ويو ته انهيءَ ۾ تصديق ۽ صحيح كري پنهنجي غلطيءَ جو كنارو ادا كيائون.*

حقيقت ۾ هن سڀا کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ ۾ وقت جي ڪامورن، ۽ سنڌ جي ڪن سرڪار پرست وڏيرن جو ئي هٿ هو، ۽ جيڪڏهن عالمن جو هن جماعت ۾ ڪو حصو هو تہ اهو آڱرين تي ڳڻڻ جيترن، دنيا ڪارڻ ديسن وڪڻندڙن ملن جو ئي هو.

جميعت العلماء

تعارف: نومبر 1919ع ۾ دهليءَ ۾ سڏايل "خلافت ڪانفرنس" جي موقعي تي. هندستان جي ڪن عالمن اهو محسوس ڪيو ته پوري ننڍي کنڊ جي عالمن جي هڪ اهڙي جماعت ٺاهجي، جيڪا وقت ۽ حالتن مطابق مسلمانن جي اسلامي سياست جي روشنيءَ ۾ رهبري ڪري سگهي.

انهيءَ موقعي تي مولانا محمد عبدالباريءَ جي صدارت ۾ حاضر عالمن جي هڪ گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ سنڌ جي عالمن مان مولانا اسد الله صاحب سنڌي، مولانا تاج محمد صاحب، پير محمد امام صاحب سنڌي، مولانا عبدالله صاحب، ۽ مولانا محمد صادق صاحب شركت كئى (260).

هن گڏجاڻيءَ ۾ متفق طور تي "جمعيت العلماء هند" قائم ڪرڻ جو فيصلو ٿيو. ۽ ان سلسلي ۾ مولانا محمد اڪرم ۽ مولانا ڪفايت الله کي جماعت جي مقصدن ۽ ضابطن جي مسودي تيار ڪرڻ جو ڪر سونهيو ويو.

انهيءَ گڏجاڻيءَ ۾ "جمعيت العلماء هند" لاءِ مولانا محمد ڪفايت الله کي عارضي صدر ۽ مولانا حافظ احمد سعيد کي عارضي سيڪريٽري مقرر ڪيو ويو.

^{*} انهن عالمن ۽ پيرن جو ذكر سندن سوانح عمريءَ ۾ كيو ويو آهي.

"جمعيت العلماء هند" جي ٻي گڏجاڻي 28 ڊسمبر 1919ع تي امرتسر ۾ ٿي، جنهن ۾ جماعت جي اساسي اصولن ۽ ضابطن جي مسودي تيار ڪرڻ لاءِ مولانا ثناءُ الله، مولانا محمد اکرم خان ۽ مولانا منير زمان تي مشتمل هڪ کاميٽي تشکيل ڏني ويئي. ان کان سواءِ جماعت جي هڪ ايگزيکيوٽو Executive) کاميٽي تشکيل ڏني ويئي، جنهن تي سنڌ مان پير تراب علي شاه، مولوي عبدالله صاحب، ۽ مولوي محمد صادق صاحب کي ميمبر جي حيثيت سان کنيو ويو(261).

"جمعيت العلماء هند" جي قائر ٿيڻ کان پوءِ جلد ئي حضرت مولانا تاج محمود امروٽيء جي صدارت هيٺ سنڌ ۾ هن جماعت جي شاخ قائر ڪئي ويئي. جنهن جو پهريون سيڪريٽري مولوي حڪير فتح محمد سيوهاڻيءَ کي مقرر ڪيو ويو(262). ان کان پوءِ مولانا محمد صادق کڏي وارو ۽ سيد اسد الله شاه ٽکڙائي هن جا صدر. مولانا مير محمد نورنگي نائب صدر ۽ مولانا دين محمد وفائي انهيءَ جو سيڪريٽري ٿي ڪر ڪيو.

سنڌ ۾ ڪيترن ئي هنڌن تي هن جماعت جون شاخون قائم ڪيون ويون، جنهن جا مکيه مرڪز هي هئا: (263).

بدين: بدين، ضلعي حيدر آبادجي "جمعيت العلماء سند" جا عهديدار هن طرح هئا: (263)

در: مولوي غلام علي

نائب صدر: مولوي عبدالوهاب

سيڪريٽري: مولوي احمد

خزانچي: مولوي حاجي عبدالله

نل: نل ضلعي جيكب آباد ۾ قائر ٿيل "جمعيت العلماء سنڌ" جا عهديدار هن طرح هئا: (264).

صدر: مولوي نبي بخش عودي ناثب صدر: مولوي محمد اسماعيل سيكريٽري: مولوي در محمد نائب سيكريٽري: مولوي عبداللطيف

ميهن : ميهو ضلعي لا واكائي جي "جمعيت العلماء سند" جا عهديدار هن طرح هئا: (265).

صدر: مولوي محمد اكمل

نائب صدر: مولوي اله بخش

سيڪريٽري: مولوي عبدالوهاب

نائب سيكريٽري: مولوي عبدالكريم

شكارپور: شكارپور. ضلعي سكر ۾ قائم ٿيل "جمعيت العلماء سنڌ" جا عهديدار هن طرح هئا: (266).

صدر: مولوى حماد الله

نائب صدر: مولوي حافظ نور محمد

سيكريٽري: مولوي عبدالكريم چشتي

نائب سيكريٽري: مولوي حافظ محمد هاشر

خرانچي: مولوي علي شير

كراچي: كراچي جي "جمعيت العلماء سند" جا عهديدار هن طرح هئا: (267)

صدر: مولوي محمد صادق

ناثب صدر: مولوي حسين احمد مدني

سيكريٽري: مولوي دين محمد وفائي

خرانچي: مولوي حكيم فتح محمد سيوهاڻي

"جمعيت العلماء سنڌ" جي تاريخ ۾ ڪيترائي اختلائي موڙ به آيا. پهرئين اختلاف جا اهجاڻ تڏهن ظاهر. ٿيا، جڏهن هن جماعت جي همايوني ٽولي مذهبي عقيدن جي بنياد تي "جمعيت العلماء سنڌ" جي خلاف اختلاف جو جهنڊو هٿ ۾ کنيو. انهيءَ اختلائي ڌڙي ۾ مولوي صاحبداد ۽ مولوي عبدالقيوم بختيارپوريءَ جا نالا قابل ذکر آهن. "جمعيت العلماء سنڌ" جي مٽياريءَ واري اجلاس ۾ انهن ٻنهي ٽولن جو اختلاف ختر ٿيو ۽ "جمعيت العلماء سنڌ" سنڌي عالمن جي هڪ متحد قوت بڻجي ڪر ڪرڻ لڳي(268).

هن جماعت ۾ ٻيو شديد اختلاف ٿرپارڪر ضلعي جي عالمن جي گروه پيدا ٿيڻ سان پيو. جيئن تہ ٿرپارڪري ٽولي تي مسلم ليگ جو اثر غالب هو، ان ڪري هيءُ دڙو "جمعيت العلماء سنڌ" جو مخالف ٿي بيٺو. انهيءَ طرفان ڪيترائي اهڙا ٺهراء پاس ٿيا، جن ۾ "جمعيت العلماء سنڌ" تي ڪانگريس دوستيءَ جا الزام لڳايا ويا، ۽ ان جي صدر تي پڻ بي اعتماديءَ جو اظهار ڪيو ويو(269).

ڪار ڪردگي: انهن اختلافن ۽ بحرانن جي باوجود "جمعيت العلماء سنڌ" جيڪا پنهنجي قوم جي سياسي خدمت ڪئي، تنهن جو مختصر ذڪر هيٺ ڪجي ٿو:

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگي: سنڌ پنهنجي تاريخي، جاگرانيائي، تهذيبي، تمدني، لساني ۽ قرمي نقط نگاه کان هڪ الڳ ۽ آزاد ملڪ جي حيثيت رکي ٿي. ان جو بمبئي پر ڳڻي سان الحاق غير فطري ۽ غير منطقي هو. سنڌي عوام سنڌ جي بمبئيءَ سان الحاق واري زماني ۾، جيڪا آزاديءَ جي تحريڪ هلائي تنهن ۾ "جمعيت العلماء سنڌ" ڀرپور حصو ور ٿو. هن جماعت جي جلسن جي ڪارواين ۽ انهن ۾ بحال ٿيل ٺهرائن ۾ سنڌ جي آزاديءَ واري مطالبي کي جو ڳي جاء ڏني ويندي هئي. "*

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيء واري تحريك سنڌي عوام جي اصلي منزل نه، پر اها ان اصلي منزل جي حاصل كرڻ جو هك مكيه موڙيا سنگ ميل هئي. ڇاڪاڻ ته جڏهن سنڌي مسلمان، سنڌ جي جدائيءَ واري مقصد ۾ كامياب ٿي ويا، ته "جمعيت العلماء" جي سركرده اڳواڻن عوام تي اهو واضح كري ڇڏيو ته:

"سنڌ جي ڌار ٿيڻ کان پوءِ سمورا اختيارات فرنگي گورنر جي هٿ ۾ رهندا. ۽ سنڌي ميمبر فقط خالي کوکا رهجي ويندا. " (270)

ان ڪري سنڌي عوامر کي پنهنجي اصلي آزاديءَ واري جدوجهد کي، ساڳئي جذبي ۽ جوش سان جاري رکڻو پوندو.

خلافت تحريك: " جمعيت العلماء سند" سندي عالمن جي نج سياسي ۽ مذهبي جماعت هئي. جيتوڻيك هيء جماعت كنهن تحريك جي پيداوار نه هئي، پر مطالعي

جيئن تـ تعلقي ميروخان جي ڳوٺ عرضي ڀٽر ۾ جمعيت جي سڏال جلسي ۾ سنڌ جي بمبئيء
 کان عليحدگيءَ لاءِ هنن لفظن ۾ ٺهراءُ بحال ڪيو ويو:

[&]quot;سنڌ بمبئيءَ کاتي کان ضرور جدا ٿيڻ گهرجي، ٻيءَ صورت ۾ اسان رعيت جو سخت آزردگيءَ جو حال ٿيندو. تنهن ڪري هيءُ جلسو زوردار لفظن ۾ سنڌ جي عليحدگيءَ لاءِ گهر ڪري ٿو." (ڏسو روزانه "الوحيد)، ڪراچي 1 آڪٽوبر 1931 ص6).

[•] انهيءَ سلسلي ۾ "جمعيت العلماء" جو ساليانو جلسو, ڊسمبر 1931ع ڪراچي.وڏي اهميت رکي ٿو. هن جلسي جي صدارت مولانا ابوالڪلام آزاد ڪئي هئي ۽ ان ۾ سنڌ جي جدائيءَ بابت ڀرپور لفظن ۾ ٺهراء بحال ڪيو ويو هو. (جي اير سيد "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي" حيدرآباد. حيدري پرنٽنگ پريس 1968ع ص89).

هيٺ آيل دور جي مختلف تحريكن ۾ حصو ضرور ورتو هئائين. هن جماعت جي "خلافت تحريك" لاءِ كيل كوششن كي مثال طور پيش كري سگهجي ٿو. "جمعيت العلماء سنڌ" پنهنجي قيام كان وٺي تحريك جي اختتام تائين خلافت جي مسئلي تي نهايت سياسي بصيرت جو مظاهرو كيو. جماعت طرفان وقت بوقت عالمن جا وقت مقرر كيا ويندا هئا, جيكي پيرن ۽ زميندارن وٽ وڃي كين خلافت جي اهميت ۽ افاديت كان واقف كندا هئا(271).

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سرڪار جي ڪن ڇاڙتن عالمن سلطان عبدالمجيد خان جي خلافت متعلق ماڻهن جي ذهنن ۾ جڏهن شڪ ۽ شبها پيدا ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي تـ "جمعيت العلماء سنڌ" پنهنجي گڏجاڻين ۾ سلطان عبدالمجيد خان جي حق ۾ ٺهراءَ پئي بحال ڪيا.*

"خلافت تحريك" كي ناكام بنائڻ لاءِ سركار طرفان جڏهن "امن سيا" قائم كرڻ جي سازش سٽي ويئي تہ "جمعيت العلماء سنڌ" حالتن كي منهن ڏيندي. خاص طرح سان پنهنجي ميمبرن، ۽ عام طرح سان سنڌي مسلمانن كي سامراج جي انهيءَ سازش كان باخبر ركڻ جي كوشش كئي(272).

ترڪيءَ جي هار کان پوءِ جڏهن برطانيہ سرڪار ٻين سامراجي قوتن سان گڏجي مٿس ذلت آميز عهدنامو مڙهڻ جي ڪوشش ڪئي تہ وقت جي ٻين سياسي پارٽين سان گڏ "جمعيت العلماء سنڌ" به هن حادثي تي ڏک جا ڳوڙها ڳاڙيا ۽ برطانيہ سرڪار جي وعدي خلافيءَ جي ڀرپور مذمت ڪئي(273).

قطع تعلقات: انگريزي راڄ خلاف سنڌ ۽ هند جي عالمن ۽ سياسي دانشورن جيڪي به طريقا اختيار ڪيا، تن ۾ "قطع تعلقات" اهم ۽ مؤثر طريقو هو. جيئن ته انگريز حڪمران ننڍي کنڊ جي سياسي اقتدار کان سواءِ هتان جي ذريعن ۽ وسيلن تي به قابض هو، ان ڪري کيس آسانيءَ سان اهڙا هٿ نوڪيا عالم ۽ اديب

 [&]quot;جمعيت العلماء سنڌ" جي جلسي مؤرخ 11 اپريل 1923ع ۾ انهيءَ موضوع تي هنن لفظن ۾ ٺهراءُ بحال ڪيو ويو:

[&]quot;هيءَ جمعيت، امير المؤمنين خليفة المسلمين سلطان عبدالمجيد خان ظل الله تعاليٰ جي خلافت كي تسلير كندي شرعي طور سان هن جي خليفي هجڻ كي قبول كري ٿي، ۽ اظهار عقيدت كري ٿي" (ڏسو روزانه "الرحيد" كراچي، 15 آكٽوبر 1923ع ص3).

ملي ٿي سگهيا، جيڪي وقت جي گوري حڪمران کي ظل الله سڏڻ جو ٺيڪو کنيو ويٺا هئا. سنڌ ۾ اهڙن عالمن "قطع تعلقات" کي غير شرعي عمل قرار ڏيڻ جي ڪوشش ڪئي.

"جمعيت العلماء سنڌ" اهڙن عالمن جي ارادن کان بخوبي واقف هئي. ان ڪري کيس پنهنجي مختلف اجلاسن ۾ "قطع تعلقات" کي ديني فرض جي حيثيت ڏيڻ لاءِ نہ صرف ٺهراء بحال ڪرڻا پيا (274)، پر اهي مسلمان جيڪي "قطع تعلقات" ۾ حصي وٺڻ سبب پنهنجي ميمبري يا نرڪري وڃائي ويهندا هئا، تن جي جاءِ تي جمعيت ٻين مسلمانن جي اچڻ کي بہ حرام قرار ڏيندي هئي (275).

سوديشي تحريك: تومون ان وقت تائين آزادي حاصل كري نه سگهنديون آهن, جيستائين منجهن قومي شعور, خود اعتمادي ۽ قرباني ڏيڻ جو جذبو پيدا نٿر ٿئي. مطالعي هيٺ آيل دور ۾ انگريز سامراج نه رڳو اسان وت اقتدار جي كرسي والاري ويٺو هو, پر اسان تي پنهنجي تهذيب تمدن مڙهي اسان مان قومي تشخص ختم كرڻ جي به كوشش كري رهيو هو. اهڙي نازك دور ۾ وقت جي اها تقاضا هئي تد اهڙيون تحريكون هلايون وڃن، جن جي نتيجي ۾ هتان جو عوام پنهنجي پيرن تي بيهي پاڻ سڃاڻي سگهي. "سوديشي تحريك" سنڌ ۽ هند جي سياسي مدبرن جي انهيءَ حكمت عمليءَ جو نتيجو هئي.

من تحريك كي كامياب ۽ كامران بنائڻ ۾ "جمعيت العلماء سنڌ" ڀرپور حصو ورتو. هن ديسي شين واپرائڻ لاءِ فتوائون صادر كيون، ۽ ماڻهن كي غير ملكي شين استعمال كرڻ كان باز ركڻ جي كوشش كئي (276). نه صرف ايترو پر هر هك ضلعي ۾ جمعيت پنهنجي طرفان "سوديشي تحريك" كي فروغ ڏيڻ لاءِ مبلغ ۾ مقرر كيا (277).

آزاديءَ جي تحريك: "جمعيت العلماء سند" محض سندي مسلمانن جي سياسي اڳواڻي ڪرڻ يا مٿن مذهبي تبليغ مڙهڻ لاءِ قائم نه ڪئي ويئي هئي، پر هن جماعت جو اول ۽ آخر مقصد وطن جي آزاديءَ جو هو. اها آزادي جن ذريعن ۽ وسيلن سان حاصل ڪئي ٿي ويئي، تن ۾ سياسي قيادت ۽ مذهبي رهبري ٻه مکيد ذريعا هئا.

سَنَّدَ جَيَّ عالمن هن جَماعت جي وسيلي آزاديءَ جي حصول لاءِ جيڪي اثنَّڪ ڪوششون ڪيون، سي اسين پنهنجي آزاديءَ جي جدوجهد واري تاريخ ۾ هميش سونهري اکرن ۾ لکندا رهنداسون. سنڌي عالمن پنهنجي اصلي مقصد جي مطالبي ۽

حق کي ڪڏهن به مبهر يا مشڪوڪ نه رکيو، ۽ جڏهن ۽ جٿي به کين موقعو مليو. ته هنن اها صدا بلند ڪئي، جيڪا اڄ به اسان جي ڪنن ۾ گونججي رهي آهي.

"جمعيت العلماء سنڌ" پنهنجي مختلف جلسن ۾ آزاديءَ جي ٺهراءَ کي وڏي اوليت ۽ اهميت ڏيندي هئي ،" ۽ سندس انهيءَ وطن دوستي توڙي آزاد پسندگيءَ کي ڪڏهن به نظر انداز ڪري نٿو سگهجي.

عالمن جو حصو: جميعت العلماء جي قيام کان وٺي اختتام تائين سنڌ جي عالمن هن جماعت جي ڀرپور خدمت ڪئي. نومبر 1919ع ۾ جڏهن مولانا محمد عبدالباريءَ جي صدارت هيٺ دهليءَ ۾ هن جماعت کي قائم ڪرڻ لاءِ گڏجاڻي ٿي، ته سنڌ جي عالمن به انهيءَ ۾ حصو ورتو، ۽ ان جي پهرين "ايگزيڪيوٽو ڪاميٽي" Executive" عالمن به انهيءَ ۾ حصو ورتو، ۽ ان جي پهرين "ايگزيڪيوٽو ڪاميٽي" (Committee) تي به سنڌ جي عالمن کي مناسب نمائندگي ڏني ويئي. جيئن ته انهن جا نالا ۽ ذڪر هن کان اڳ ٿي چڪو آهي، تنهن ڪري ان کي ورجائڻ مناسب نٿو لڳي. "جمعيت العلماء هند" جي مڙني جلسن ۾ سنڌ جا عالم شرڪت ڪندا هئا، ۽ ان جا اهم اجلاس سندن ئي صدارت هيٺ ٿيا.

سيپٽمبر 1920ع ۾ ڪلڪتي ۾ سڏايل "جمعيت العلماء هند" جو اهر اجلاس حضرت مولانا تاج محمود امروٽيءَ صاحب جي صدارت هيٺ ٿيو. جنهن ۾ مولانا ابوالڪلام آزاد، سيد مرتضيٰ حسن، مفتي ڪفايت الله دهلوي. مولانا مسعود علي ندوي، مولانا شائق احمد عثماني، عبدالماجد بدايوني، مولوي محمد دائود غزنوي ۽ ٻين سوين

^{* &}quot;جمعيت العلماء سند" جي جلسن ۾ بحال ٿيل اهڙن ٺهرائن جا ٻه مثال هيٺ ڏجن ٿا:

¹¹ اپريل 1923ع واري گڏجاڻيءَ ۾ بحال ٿيل ٺهراءَ جا لفظ هن طرح آهن:
"جنهن صورت ۾ اسان جي خلافت ۽ مذهب جو تحفظ سواءِ آزاديءَ جي ناممڪن آهي. تنهن ڪري سوراج حاصل ڪرڻ اسان جي مذهبي امورن ۾ داخل آهي. جنهن لاءِ جدوجهد ضروري آهي." (ڏسو روزانه "الوحيد" ڪراچي، 15 اپريل 1923ع ص3).

مٽيارين ۾ سڏايل اجلاس ۾ بحال ٿيل ٺهراءَ جا لفظ هن طرح آهن: "جمعيت العلماء سنڌ" جو هيءُ اجلاس. هن ڳاله جو نهايت زوردار اظهار ڪري ٿو ته، مذهبي آزادي ۽ مذهبي زندگي لاءِ سڀ ڪنهن مسلمان کي ضروري آهي ته هندستان جي آزاديءَ لاءِ دل وجان سان ڪوشش ڪري." (ڏسو "توحيد" ڪراچي، ماه ڊسمبر 1924ع، ۽ جنوري 1925، ص32)،

عالمن شركت كئي. هن ئي گڏجاڻيءَ ۾ "ترك موالات" لاءِ فتوي "هجرت" ۽ شرعي فيصلن كرڻ لاءِ هك "دستور العمل" ٺاهڻ جون تجريزون" بحال ٿيون(278)،

سنڌ جي عالمن نه رڳو "جمعيت العلماء هند" کي ڪامياب بنائڻ جي ڪوشش ڪئي، پر ان کي سنڌ اندر مقبول بنائڻ ۾ به ڀرپور حصو ورتو. اڳ ۾ ذڪر ڪيل مرڪزن کان سواءِ امروت، حيدرآباد، سکر، مٽياري، ميروخان ۽ همايون به هن جماعت جا مرڪز هوندا هئا.

سنڌ جي جن عالمن هن جماعت ۾ حصو ورتو, تن جو مختصر وچور هن طرح ٿئي ٿو: (279).

مولوي ابراهيم, مولوي ابوبكر متعلوي (ٺٽو)، مولوي احمد هالائي (حيدرآباد). مولوي احمد ملاح (بدين), مولوي احمد ميمڻ (بدين), مولوي احمد ملوي (لاڙڪاڻو), مولوي احمد الدين (جيكب آباد), مولانا سيد اسد الله تكرَّائي (حيدر آباد), مولوي محمد اسماعيل (شكارپور)، مولوي الاهي بخش اعوال (شكارپور)، مولوي اله بخش مهيسر (دادو), مولوي پير امام الدين شاه (لاڙڪاڻو), مولوي امام الدين (بدين), مولوي امير محمد شاهر (دادو). مولوي امين الله (لاڙڪاڻو)، مولوي تاج محمد(حيدرآباد). مولانا تاج محمود امروتي (شكارپور), مولانا پير تراب علي شاه(لاڙكاڻو), مولوي حبيب الله (دادو). مولوي قاضي حبيب الله (خيرپور)، مولوي حزب الله شاه (شكارپور)، مولوي حزب الله شاه (لاڙڪاڻو). مولانا حمادالله هاليجوي (سکر). مولوي خدا بخش ملوي (لاڙڪاڻو). مولوي خدا بخش (جيڪب آباد)، مولوي پير خورشيد احمد سرهندي (حيدرآباد), مولوي خوش محمد ميرو خاني (لاڙڪاڻو), مولوي سيد خير شاه راشدي (بدين). مولوي در محمد ډول (جيكب آباد)، مولانا دين محمد "وقائي" (كراچي)، مولوي دين محمد "اديب" (دادو), مولوي رحيم بخش (جيڪب آباد), مولوي رسول بخش (لاڙڪاڻو). مولوي سرور بخش (جيڪب آباد)، مولوي حافظ شريف حسين (حيدر آباد)، مولوي شفيع الدين (شڪارپور), مولوي شفيع محمد ملوي (لاڙڪاڻو), مولوي شفيع محمد تنيو (لاڙڪاڻو), مولوي شمس الدين احمد (ڪراچي), مولوي شهاب الدين (لاڙڪاڻو), مولوي صاحبڏنو (شڪارپور), مولوي صاحبڏنو (جيڪب آباد), مولانا پير ضياء الدين راشدي (حيدرآباد), مولانا عبدالله شاه فتاحي (خيرپور), مولانا عبدالله لغاري (سانگهڙ). مولانا عبدالله كڏهري (نواب شاه)، مولوي عبدالله (بدين)، مولوي عبدالله جان سرهندي (حيدرآباد)، مولوي عبدالباقي (الرپاركر)، مولانا عبدالحق رباني (حيدرآباد). مولوي عبدالحكيم (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالحكيم (سكر)، مولوي

عبدالحلير (دادو, مولوي عبدالخالق كندياروي (نواب شاهر), مولوي عبدالخالق "خليق" مورائي (نواب شاهر). مولوي عبدالرحيم (لاڙڪاڻو)، مولانا سيد حاجي عبدالرحيم شاه (نتو)، مولوي عبدالرحيم (بدين). مولوي عبدالرحمٰن متعلوي (حيدرآباد)، مولوي عبدالرحلن (دادو)، مولوي عبدالرحلن (شكارپور)، مولوي عبدالرزاق (جيكب آباد). مولوي پير حاجي عبدالستار جان(حيدرآباد). مولوي عبدالعزيز تريچاڻي (سکر), مولوي عبدالعليم عودي (جيڪب آباد), مولوي عبدالعليم (حيدرآباد)، مولوي عبدالغفار (جيكب آباد)، مولوي عبدالغفور (شكارپور). مولوي عبدالغفور (لاڙڪاڻو)، مولوي پير عبدالفتاح شاه (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالقادر (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالقادر لغاري (سانگهڙ)، مولوي حاجي عبدالقادر (دادو)، مولوي عبدالقيوم (سكر). مولوي عبدالكريم مكسى (دادو)، مولانا عبدالكريم چشتى (شكارپور)، مولوي عبدالكريم (شكارپور)، مولوي عبدالكريم (بدين). مولوي عبدالكريم فيروز شاهي (دادو), مولوي عبدالكريم عباسي (نتو), مولوي عبدالكريم (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالڪرير (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالڪرير (جيڪب آباد)، مولوي عبداللطيف دول (جيكب آباد). مولوي عبدالواحد (لارَّكاتُو). مولوي عبدالوهاب لند (بدين)، مولوي عبدالوهاب (دادو)، مولوي عبدالوهاب (شكاريور)، مولوي عبيد الله (جيكب آباد), مولوي عبيذ الله لاشاري (لاڙكاڻو), مولوي عزيز الله جروار (سكر), مولوي عطاءُ الله پناڻ (ٺٽو). مولوي عليشير (سکر), مولوي على محمد مهيري (ٺٽو). مولانا علي محمد كاكيبور (الراكاثو)، مولوي عنايت الله (دادو)، مولوي غلام حسين (لاڙڪاڻو). مولوي غلام رسول (لاڙڪاڻو). مولوي غلام رسول شاھ (سکر). مولوي غلام صديق (لاڙڪاڻو)، مولوي غلام عثمان (دادو)، مولوي غلام على (بدين). مولوي غلام عمر (لازَّكائو). مولوي غلام فريد سپريو (لازَّكاثو). مولوي غلام محمد (لارَّكاتُو), مولوي غلام محمد (حيدرآباد), مولانا پير غلام مجدد (حيدرآباد), مولانا غلام مصطفىٰ قاسمى (لاڙڪاڻو). مولوي غلام نبي آڳرو (دادو). مولوي پير عنايت الدين راشدي (لاڙڪاڻو), مولوي فتح على جتوئي (ٺٽو), مولوي حڪير فتح محمد سيوهاڻي (كراچي), مولوي فدا محمد (دادو), مولوي فقير محمد (لاڙڪاڻو), مولوي فقير محمد (سكر), مولوي حكيم قائم الدين احمد (جيكب آباد), مولوي پير محبوب شاه راشدي (حيدرآباد)، مولانا محكم الدين (حيدرآباد)، مولوي محمد بنوي (ٺٽو). مولانا محمد مدنی (کراچی)، مولوي محمد سومرو (کراچی)، مولوي محمد هالائی (حيدرآباد). مولوي محمد ابراهيم جتوئي (دادو)، مولوي محمد ابراهيم (شڪارپور). مولوي محمد ابراهير (لاڙڪاڻو), مولوي محمد اسماعيل (شڪارپور), مولوي محمد اسماعيل لغاري (حيدرآباد), مولوي محمد اسماعيل جان (حيدرآباد), مولوي محمد اسماعیل عودی (جیکب آباد), مولوی محمد اسماعیل (سکر), مولوی محمد اسماعیل (سكر)، مولوي محمد اشرف (الرپاركر)، مولوي محمد افضل (سكر)، مولوي محمد اکرم انصاری (حیدرآباد)، مولوی محمد اکرم (جیکب آباد). مولوی محمد اکمل (دادو). مولوي محمد امين آريسر (الرپاركر). مولوي محمد حسن سيوهاڻي (دادو). مولوي محمد حسن (دادو), مولوي محمد حسين صديقي (لتو), مولوي محمد حسين جان (حيدرآباد). مولوي محمد دائود تنيو (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد سعيد 'لوپانگ (بدين)، مولوي محمد سليمان (دادو), مولوي محمد سليمان بنوي (ٺٽو), مولوي محمد سليمان ملوى (لازَّكائل)، مولوى محمد سليمان "واعظ" (دادو), مولوى محمد صادق (كراچي)، مولوي محمد صادق (سكر), مولوي محمد صالح متعلوي (....), مولوي محمد صالح سمون (ٿرپارڪر). مولوي محمد صالح (لاڙڪاڻو). مولوي محمد صالح "عاجز" (شكاريور). مولوى محمد صديق (لاڙكاڻو)، مولوي محمد صديق كڇى (كراچي)، مولوي محمد طيب لكمير (نواب شاه), مولوي محمد ضيا؛ الحق (شكارپور), مولوي محمد عاقل "عاقلي"(لاڙڪاڻو), مولوي محمد عالم ملوي (لاڙڪاڻو), مولوي محمد عبدالحكيم (شكارپور). مولوي محمد عثمان (سكر)، مولوي محمد عثمان (حيدرآباد), مولوي محمد عثمان بلوچ (كراچى), مولوي محمد عثمان (نواب اله), مولوي محمد عثمان کٽي (ٺٽو). مولوي محمد عثمان "قراني" (ٿرپارڪر). مولوي محمد عظيم "شيدا" (لاڙڪاڻو), مولوي محمد علي جوڻيجو (ٿرپارڪر), مولوي محمد عمر جتوئي (تنو), مولوي داكتر محمد عمر (سكر), مولوي محمد فاضل متعلوي (....)، مولوى محمد قاسر (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد قاسر (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد قاسر (شکارپور)، مولوي محمد مبارک (شکارپور)، مولوي محمد مبارک پَلی (الرپارکر)، مولوی حکیم محمد معاذ پیرزادر (نواب شاهر)، مولوی محمد موسی (حيدرآباد), مولوي محمد وارث (دادو), مولوي محمد هاشر اسحاق ديرائي (شڪارپور), مولوي محمد هاشر کٽي (ٺٽو), مولوي محمد يوسف ٻنوي (ٺٽو). مولوي محمود (لاڙڪاڻو), مولوي محمود (حيدرآباد), مولوي محمود (ٺٽو), مولوي معين الدين کنياروي (نواب شاهر), مولوي مولا بخش ملوي (لاڙڪاڻو), مولوي مير محمد جتوئي (دادو), مولوي مير محمد نورنگي (لاڙڪاڻو), مولوي مير محمد جتوئي (ٺٽو), مولوي نبي بخش عودي (شكارپور)، مولوى نثار احمد (لاڙكاڻو)، مولوي نذير حسين جتوئي (لاڙكاڻو)، مولوي نصير الدين صديقي (دادو), مولوي نظام الدين چانڊيو (الآزاڪاڻو), مولوي نواب الدين (الاڙاڪاڻو), مولوي حافظ نور محمد (شڪارپور), مولوي نور محمد سجاولي (ٺٽو), مولوي نور محمد (سکر), مولوي ولي محمد جتوئي (....), مولوي يار محمد (حيدرآباد), مولوي يار محمد ميان جو ڳوٺ (شڪارپور), ۽ مولوي محمد يعقوب (....).

خاكسار تحريك

تعارف: سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ دوران ئي سنڌ جي سياستدانن ۽ سياسي پارٽين کي سياستدانن ۽ سياسي پارٽين کي پنهنجو خير خواه ۽ هڏ ڏو کي سمجهڻ شروع ڪيو هو. ويتر هتان جي مهمان نوازيءَ جي غير ضروري گڻ سنڌي وڏيرن، پيرن، اميرن ۽ اڳواڻن کي ڌارين رهبرن جي عقيدتمنديءَ جي بيپاڙي ول ۾ وڪوڙي ڇڏيو. انهيءَ احساس ڪمتريءَ سنڌ ۾ ڪيترن ئي غير مانوس، اجنبي ۽ انو کين تحريڪن ۽ سياسي پارٽين کي پير ڄمائڻ جو موقعو فراهر ڪيو. "خاڪسار تحريڪ" بن انهن مان هڪ هئي، جيڪا سن 1931ع ۾ پانڊون جي ڳوٺ ۾ قائم ڪئي ويئي هئي (280).

سنڌ ۾ هن تحريڪ کي مانوس ڪرائڻ وارو نصير محمد نظاماڻي هو، جنهن حيدرآباد کي مرڪز بڻائي، تحريڪ جي ڪاميابيءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو، ان بعد ڊاڪٽر قاضي محمد اڪبر، تحريڪ کي مقبول بڻايو، اهڙيءَ طرح لاڙڪاڻي ۽ جيڪب آباد ۾ پير الاهي بخش جي ڪوششن سان هن تحريڪ جون شاخون قائم ٿيون ۽ ڪراچيءَ ۾ وري سيد حضرت شاه ۽ قاضي عبدالرسول وڪيل تحريڪ جا پرچارڪ ۽ باني بڻيا.

"خاكسار تحريك" جو مركزي دفتر اڇره، لاهور ۾ هو ۽ علام عنايت الله خان مشرقي هن تحريك جو باني هو. هن تحريك جي قيام ۾ كيترن ئي واقعن ۽ سببن كي جو ڳي جاءِ مليل هئي. تحريك جي اڳواڻن جي اها راءِ هئي ته: (281).

- اسلام جي مذهبي اڳواڻن، خاص ڪري مولوي صاحبن اتفاق، اتحاد، ۽ ٻڌي قائم ڪرائڻ لاءِ ڪيترائي وعظ ڪيا، پر سندن وعظ ونصيحت مان ڪو به کڙ تيل ڪوندنڪو.
- عالمن جي انهن ڪوششن ويتر مسلمانن کي فرقن ۾ ورهائي ڇڏيو، تانجو اڄ نفرت زور وٺي ويئي آهي ۽ هر ڪو پاڻ کي حق تي سمجهي رهيو آهي.
- .3 اهڙي نموني سان اجتماعي ڪوششون ڪيون ويون ۽ ڪيتريون جماعتون

ٺاهيون ويون, پر پوءِ به مسلمانن ۾ اتحاد ۽ اتفاق قائمر ٿي نه سگهيو.

- عالمن وانگر سياسي اڳواڻن به اتفاق پيدا ڪرڻ بدران، پنهنجي لاءِ سياسي فرقا
 پيدا ڪيا.
- 5. قوم جي اصلاح لاءِ چندي چاڙي تي زور ڏنو ويو، عوام جي مفاد جي نالي ۾ ڏن ۽ دولت گڏ ڪئي ويئي، پر انهيءَ مان قوم تہ طاقتور ٿي نہ سگهي، بلڪ ڪيترا اڳواڻ امير بڻجي ويا.
 - 6٠ قومي كتاب، قومي ترانا ۽ مرئيا لكيا ويا ته به قوم، قوم نه تي سگهي.

انهن سببن ۽ اوڻاين کي اڳيان رکي تحريڪ جي بانين عوام کي هيءَ نئين سوچ ڏني ته: "خاڪسارن جي تحريڪ ڪامل محبت, صلح ۽ امن جي تحريڪ آهي. ان ۾ هندو, سک، پارسي ۽عيسائي حتاڪ حڪومت سان به ڪنهن قسر جي مخالفت ممڪن نه آهي. خلق خدا جي بلا لحاظ مذهب وملت خدمت ڪرڻ هر خاڪسار جو فرض آهي، ۽ بيلچو فقط خدمت ۽ مزدوريءَ جي لاءِ آهي. جنهن خاڪسار بيلچي جو غلط ۽ خلاف قانون استعمال ڪيو. ان کي خاڪسارن جي جماعت مان ڪڍيو ويندو(282).

انهيءَ مختصر وضاحت كان پوءِ هن تحريك جا مقصد به واضع كيا ويا جيكي هن طرح هئا: (283).

- 1٠ قوم کي عمل سان هڪ ڪري ڇڏڻ.
- 2. ننڍن ۽ وڏن کي هڪ صف ۾ آڻي بيهارڻ.
- .3 سيني کان هڪ ٻئي جي خدمت ڪرائي پنهنجي محبت وڏائڻ.
 - 4. الله جا نوكر بنائي سيني جون نظرون مٿي كري ڇڏڻ.
 - هڪرنگ جو لباس پهرائي وحدت پيدا ڪرڻ.
 - 6. مذهبي فرقن جي سيني بحثن کي ڇڏي ڏيڻ.
 - 7. سياسي فرقن جي سيني بحثن کي ڇڏي ڏيڻ.
 - .8 ماك سيكاري قوم كى طاقتور بثائن.
- 9. بيلچي جو اسلامي نشان هٿ ۾ ڏئي ۽ سپاهين وارا قواعد ڪرائي قوم کي چست ڪرڻ
- 10 سڄي ڳوٺ يا شهر کي هڪ آفيسر جي هٿ هيٺ ۽ سڄي قوم کي هڪ امير ۽ هڪ حڪم جو پابند ڪرڻ.
 - 11. چندو جمع نہ کرڻ.
 - 12. کنهن به شخص، قوم یا انجمن یا تحریک جی مخالفت نه کرن.

جيترڻيڪ هيءَ تحريڪ سڀني لاءِ هئي، مگر عملي طور تي ان کي مسلمانن تائين محدود رکيو ويو هو. هن تحريڪ جي هر هڪ ميمبر لاءِ اهو ضروري هو ته: (284)،

- .1 ڪنهن به مسلمان جي خلاف نه هجي.
- 2. پاڙيسري طاقتن سان رواداري رکي.
- .3 مجاهدن ۽ سپاهين واريون قابليتون پيدا ڪري.
- پنهنجي مقرر ڪيل سالار جي هر حڪر کي بنا حيل وحجت جي مڃي.
- خدا ۽ اسلام جي راه ۾ هر وقت پنهنجو مال ۽ جان تانجو ٻار ٻچا به قربان ڪرڻ
 جي طاقت پيدا ڪري.
 - .6 وقتجي پابندي ڪري.
 - خدا کان سواء ڪنهن به طاقت کان نه ڊجي.
- 8. کيس سڄيءَ زمين جي بادشاهي ۽ ان ۾ اسلام جي اجتماعي غلبي پيدا ڪرڻ جو يتين هجي.
 - .9 روحاني جذبا پيدا ڪري، شيطاني ۽ نفساني جذبن کي ناس ڪري.
 - .10 صرف خلق جي خدمت ڪري ۽ ان خدمت جو اجورو نہ وٺي.
 - .11 نماز قائم كري.
 - 12. قطار ۾ بيهي مسلمانن جي اوچ، نيچ کي عملي طرح سان برابر ڪري ڇڏي.
 - 13. نرجين جهڙي زندگي گذاري.
 - .14 مڙني غفلتن ۽ سستين کي پري ڪري.
 - 15. بيلچى كى نبى كرير على جي سنت سمجهي پاڻوٽركي.
 - 16. خاکي وردي پائي ۽ ان تي ڀائپيءَ جو ڳاڙهو نشان لڳائي.
 - .17 پاڻ ۾ جڏهن ملي ته فوجي سلام ڪري.
 - .18 نقط خاكسار كان سودو ولي.
 - .19 مسلمانن سان مذهبي عقيدن بابت بحث نه ڪري.
 - هر مسلمان کي هڪ لڙهيءَ ۾ پوئڻ لاءِ هر موقعي تي تبليغ ڪندو رهي.
 - .21 خاموشي اختيار ڪري.
 - 22. ٻڌڻ ۽ ڪرڻ وارو ٿئي، چوڻ ۽ نه ڪرڻ وارو نه ٿئي.
 - 23. مسلمانن سان سياسي عقيدن جي باري ۾ بحث نه ڪري.
 - 24. قوم جي هر فرد کي مرڪزي اجتماع ۾ شامل ٿيڻ لاءِ عملي طرح تيار ڪري.

ڪارڪردگي: هن تحريڪ کي سنڌ ۾ ايتري ڪاميابي حاصل نہ ٿي. ڇو تہ تحريڪ خود تضادن جو مجموعو هئي، ۽ جن مقصدن خاطر اها قائم ڪئي ويئي هئي، اهي عين سنڌي سماج ۽ معاشري جي خلاف هئا. ان ۾ ڪو به شڪ نہ آهي تہ سنڌ جي اڪثريت مسلمان آباديءَ تي مشتمل هئي. پر پوءِ به رواداري، ڀائپي ۽ سهپ هن سماج جا بنيادي نظريا هئا. امن ۽ سڪون واريءَ هن ڌرتيءَ لاءِ فوجي راڄ يا فوجي ڇانوڻيءَ جهڙيون حالتون قابل قبول ٿي نہ پئي سگهيون.

هن تحريك جيستائين نج "اصلاحي ۽ ديني تحريك" جي حيثيت ۾ كر كيو، ان وقت تائين سنڌ جي محدود عوام انهيءَ جو سات ڏنو، پر جڏهن هيءَ جماعت سياسي رنگ وٺندي ويئي. تڏهن سنڌ وارا ان كان پري ٿيندا ويا. تانجو مختصر عرصي ۾ هن جماعت جو نالو ۽ نشان ئي مٽجي ويو.

عالمن جو حصو: سنڌ جي عالمن جيتوڻيڪ هن جماعت ۾ شرڪت ڪئي. پر اها اٽي ۾ لوڻ برابر هئي. اهڙن عالمن مان. مولانا احمد علي نارائي، مولانا خير محمد نظاماڻي، مولانا شفيع محمد نظاماڻي، مولانا عبدالوهاب لنڊ، مولانا محمد پريل منگيو، مولانا مير محمد حسن ٽالپر، محمد سليمان ٿرڙي محبت وارو، محمد معاذ پيرزادو، محمد هاشر رکن وارو، محمد يعقوب حاجاڻو ۽ هدايت الله تنيو ذکر لائق آهن.

حوالا

- Smith, V.A: "The Oxford History of India", Clarendon Press, Oxford 1961, P.609.
- (2) موتيرام، ايس، راموڻي: "سنڌ ۾ پبلڪ جيوت جو اوائلي دور" (مقالو).
 (3) مندواسي, هنتيوار، بمبئي 1969ع ص5.
- (3) Rajput, A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P-12.
- (4) Sorley, H.T: "Gazeteer of West Pakistan" The Former Province of Sind, including Khairpur State, Government of West Pakistan Lahore 1968, P-676.
- (5) Ibid, P.676.
- (6) مولوي اله بخش: "مسدس ابوجهو" حيدرآباد, سند مسلم ادبي سوسائتي.949ع ص54.

- ميرزا قليچ بيگ: "خانبهادر حسن علي افنديء جي سوانح عمري" حيدرآباد.
 اسٽنڊرڊ پرنٽنگ ورڪس 1925ع، ص 40.
- (8) مولوي الهـ بخش: "مسدس ابوجهو" حيدرآباد, سنڌ مسلم اذبي سوسائٽي.(8) 1949ع -54.
- (9) مولوي اله بخش: "مسدس ابوجهو" حيدرآباد, سنڌ مسلم ادبي سوسائٽي.(9) 1949ع، ص55.
 - (10) ايضا, ص55
- (11) هيءَ معلومات جناب اير. احمد شاه ولد مولوي اله بخش "اېوجهو" كان تحريري انٽرويو ذريعي ورتي ويئي. انٽرويو كاپي راقر الحروف وت محفوظ آهي.
- (12) Dr. Azimusshan Haider:, "History of Karachi" Karachi Feroz Sons 1974, P-31.
- (13) مولوي اله بخش: "مسدس ابوجهو" حيدرآباد, سنڌ مسلر ادبي سوسائٽي. 1949ع، ص56.
- (14) See, "The Platinum Jubli Book" Sind Madressah-Tul-Islam 1960,
 P-54 (Under heading: History of Sind Madressah Tul Islam, An
 Article Written by Khawaja Ali Mohammed)
- (15) See the Daily Gazette Karachi Dated 10.10.1917, P.5
- (16) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين". (جلد پهريون) حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، (1967ع ص 214)٠
- (17) سيد معتاز حسين شاهه: "سنڌ مدرسة الاسلام جو سنڌ جي علمي، ادبي ۽ سياسي تاريخ ۾ حصو" پي ايچ ڊي. ٿيسز (قلمي)، 1979ع، ص ص 396-397).
- (18) See, "The Karachi Directory", Karachi, Daily Gazette Press, 1916, P.106.
- (19) Hamida Khuhro: "Analysis of Muslim Political Organizatin in Sind"

 1843-47 (An Article Published in the "Sind Journal of Political

 Science & Modern History" Summer 1977/Winter 1978, University of Sind, Jamshoro, P.25).
- (20) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بعبئيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص91.

- (21) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P.187.
- (22) Ibid, P.187.
 - (23) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي". لاهور، عزيز پبلشرز، 1978ع ص270.
- (24) See The "Daily Gazette" Karachi dated 10-10-1928, P-12
- (25) See The "Daily Gazette" Karachi dated 10-10-1928, P-12
- (26) See, The "Memorendum" Presented To Miles Irwing Committee by Sind Mohammedan Association.
- (27) مولائي شيدائي: "سنڌ جي جدائيءَ واري تحريڪ". (مقالو). روزانہ مهراڻ "سالگره نمبر"، حيدرآباد، مؤرخہ 15 جنوري 1961ع، ص22.
 - (28) جناب جي. اير. سيد کان 20 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ور تل معلومات.
- (29) See The "Daily Gazette" Karachi Dated 12.7.1930, P.7
- (30) See, The "Resolution No:1" Passed by "Sind Mohammedan Association" in its Meeting at Gerelo, held on the 9th of Jluy, 1930-
- (31) جي، اير. سيد: "سنڌ جي بعبثيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص82.
 - (32) ڏسو. "الوحيد". سنڌ "آزاد نمبر". ڪراچي، مورخ 15، جون 1936ع، ص117.
- (33) See, The "Memorandum" Presented to Miles Irwing Committee by Sind Mohammedan Association
- (34) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص83.
- (35) مولائي شيدائي: "سنڌ جي جدائيءَ واري تحريڪ", (مقالو). روزانه مهراڻ "سالگره نمبر", حيدرآباد، مؤرخ 15 جنوري 1961ع، ص23.
- (36) هيءَ معلومات "خانبهادر محمد ايوب کهڙي" کان 3 مارچ 1979ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (37) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحد گيءَ جي تواريخ" (مقالي) "الوحيد" "سنڌ آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخ 15 جون 1936ع ص119.
 - (38) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي". لاهور، عزيز پبلشرز، 1978ع ص296.
- (39) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P.228-

- (40) See. The "Meeting Minutes of Sind Mohammedan Association" held on 10-12-1930.
- (41) See The "Daily Gazette" Karachi dated 12.7.1930 P.7
- (42) Kanshik, P.D: "The Congress Ideology and Programme" Bombay, Allied Publishers Private Limited, 1964 P.308
- (43) See The "Daily Gazette" Karachi dated 23.5.1930 P.11
- (44) Ibid, P-11
- (45) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد2) حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، (45) 1967 ص167
- (46) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيء جي تواريخ" (مقالي) "الوحيد اسپيشل ايڊيشن" "سنڌ آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخ 15 جون 1936ع ص116٠
- (47) See The "Daily Gazette" Karachi dated 29.6.1921, P.4.
- (48) See The "Daily Gazette" Karachi dated 19.5.1930, P.5
- (49) See The "Daily Gazette" Karachi dated 19.3.1923, P.5
- (50) ڪرير بخش خالد: "پاڪستان تحريڪ جو پس منظر سنڌ ۾" (مقالی) نئين زندگي، ڪراچي آگسٽ 1971ع، ص 28
- (51) هيءَ معلومات جناب محمد صادق کٽي سابق سيڪريٽري خلافت ڪاميٽي ڏرڪريءَ کان تاريخ 13 ڊسمبر 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ريئي.
- (52) See The "Daily Gazette" Karachi dated 31-3-1927, P-7 (Under the Larkana Riots-An-Eye-Witness Story)
- (53) See The "Daily Gazette" Karachi dated 17.10.1927 P.11
- (54) See The "Daily Gazette" Karachi dated 10-1-1928 P-11
- (55) هيءَ معلومات جناب محمد صادق کٽي سابق سيڪريٽري خلافت ڪاميٽي ڏوڪريءَ کان تاريخ 13 ڊسمبر 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (56) See, "The Resolution No 'N' Passed by "Sind Mohammedan Association" in its meeting held on 12.12.1927.
 - (57) ڏسوروزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ، 14 جنوري، 1928ع ص1·
- (58) See The "Daily Gazette" Karachi Dated 3-6-1928, P-17
- (59) محمد حنيف سرهيو: "مرحوم سيٺ حاجي خدادا شرهيو" (مقالو), مهراڻ سوانح نمبر، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، 621

- (60) See The "Daily Gazette" Karachi dated 30.6.1928 P.17
- (61) Ibid, P.17
- (62) See, "The Resolution No 'ii' Passed by "Sind Hindu Sabha" in its meeting held on 15.6.1928.
- (63) See The "Daily Gazette" Karachi dated 30.6.1928 P.17
- (64) See, "The Resolution No 'Viii' Passed by "Sind Mohammedan Association" in its meeting held on 15th July 1928
- (65) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Ageny 1969 P-176
- (66) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالي) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص15.
- (67) باكثر احمد حسين كمال: "ريشمي رومال تحريك" (مقالو) هفت روزه "الفتح" كراچي، مؤرخ 24 مارچ 1978ع، ص20.
- (68) مولانا عبيدالله سنڌي: "كابل مين سات سال" (مرتب محمد سرور) لاهور. سنده ساگر اكادمي 1976 ص154.
- (69) مولانا دين محمد وفائي: "مولانا عبيدالله صاحب (اداريه) ماهوار "توحيد" كراچي. سيپٽمبر 1937ع ص33).
 - (70) ايضاً، ص33.
- (71) محمد سرور: "مولانا عبيدالله سنڌي" اشاعت پنجر، لاهور، سنڌ ساگر اكادمي، 1976 ص29-
- (72) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالي) ماهوار "توحيد"، كراچي, آكٽوبر 1944ع ص15.
 - (73) ظفر حين ايبك: "آپ بيتي" (حصاول) لاهور، منصور بك هائوس، 1384هـ ص92.
- (74) محمد يعقوب: "تحريك ريشمي رومال ير سنڌ جو حصو" (مقالو) مهراڻ "سالگره نعبر" 5 جنوري 1962ع، ڪراچي، نئين سنڌ پرنٽنگ پريس ص135.
- (75) مولانا حسين احمد مدني: "تحريك ريشمي رومال" لاهور. اردو پريس 1960عص137٠
 - (76) ايضاً. ص147.
- (77) محمد يعقوب: "تحريك ريشمي رومال ير سنة جو حصو" (مقالو) مهران "سالگره نمبر" 5 جنوري 1962ع كراچي، نئين سنة پرنٽنگ پريس ص 135.

- (78) مولانا حسين احمد مدني: "تحريك ريشمي رومال" لاهور، اردو پريس 1960ع ص159.
- (79) محمد يعقوب: "تحريك ريشمي رومال ۾ سنڌ جو حصو" (مقالو) مهراڻ "سالگره نمبر" 5 جنوري 1962ع كراچي، نئين سنڌ پرنٽنگ پريس ص 135
- (80) مولانا حسين احمد مدني: "تحريك ريشمي رومال" لاهور، اردو پريس 1960ع ص171
 - (81) ايضا ص174.
 - (82) ايضا ص 148
- (83) مولانا حسين احمد مدني: "نقش حيات" (جلد دوم) كراچي, دارالاشاعت. 1979 ع. ص 577.
 - (84) ڏسو هفتيوار "چوڏس"، ڪراچي، آگسٽ 1946ع ص13.
- (85) مولانا سيد محمد ميان صاحب: "تحريك شيخ الهند" لاهور، مكتبه محموديه 1978 ع 2930.
- (86) داكٽر نبي بخش خان بلوچ: "مولوي عبدالله لغاري" (مقالو) تر ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر", جلد 3-4 حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص275.
- (87) محمد يعقوب: "تحريك ريشمي رومال ۾ سنڌ جو حصو" (مقالو) مهراڻ "سالگره نمبر" 5 جنوري 1962ع كراچي، نئين سنڌ پرنٽنگ پريس ص 135.
- (88) ظفر حسين ايبك: "آپ بيتي" (حصد اول) لاهور. منصور بك هائوس. - 1384هـ ص1383
- (89) داكٽر نبي بخش خان بلوچ: "مولوي عبدالله لغاري" (مقالي) نہ ماهي "مهراڻ" "سوانح نمبر"، جلد 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورد 1957ع ص276
 - (90) ايضاً، ص277
- (91) محمد يعقوب: "تحريك ريشمي رومال ۾ سنڌ جو حصو" (مقالي) مهراڻ "سالگره نمبر" 5 جنوري 1962ع كراچي، نئين سنڌ پرنٽنگ پريس ص 136.
- (92) T.H.Sorley: "Gazetteer of West Pakistan" Lahore, Published by West Pakistan, 1968 P-184-
- (93) Azimusshan Halder:, "History of Kacachi" Karachi Feroz Sons 1974 P-17-

- (94) Compbell George: "Modern India" A Sketch of The System of Civil Government, With Some Naties and Native Institutions London, John, Murray 1853, P-195.
- (95) جي. ايم. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص5٠
- (96) Azimusshan Halder:, "History of Karachi" Karachi Feroz Sons 1974
 P-17-
- (97) Dr. Azimusshan Haider:, "History of Karachi" Karachi Feroz Sons 1974 P.134
- (98) ڀيرومل آڏواڻي: "سنڌ جي هندن جي تاريخ" ڀاڱو ٻيو, ڪراچي، هلال پرنٽنگ پرس, ميڪلوڊ روڊ, 1947ع ص59.
- (99) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي". حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 90.
 - (100) ايضًا ص 17
- (101) See The "Daily Gazette" Karachi dated 6-3-1920 P-7
- (102) هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 26 سيپٽبر 1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (103) See The "Daily Gazette" Karachi dated 26-8-1920 P-7
- (104) سيد غلام رسول شاه: "كليات ميران" حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي پريس 1960ء صت.
- (105) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد2) حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع ص168.
- (106) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحد گيء جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد" "سنڌ آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخ 15 جون 1936ع ص116٠
- (107) هيءَ معلومات "خانبهادر محمد ايوب کهڙي" کان 3 مارچ 1979ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (108) ضياء الدين احمد برني: "جمشيد نسروانجي" كراچي، تهيوسوفيكل سوسائتي 1953ع ص9.

- (109) جي. ايم. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 1٠٠
- (110) جي، اير، سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 72-73
- (111) See The "Daily Gazette" Karachi dated 1.4.1918 P.4
- (112) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ يريس، 1968 ص 75-56.
- (113) See The "Daily Gazette" Karachi dated 9.7.1928 P.4
- (14) هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 26 سيپٽبر 1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (115) قسو روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ، 1 مئى 1934 ص2
- (116) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيءَ جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد" اسپيشل ايڊيشن سنڌ "آزاد نمبر", ڪراچي، مؤرخہ 15 جون 1936ع ص118.
- (117) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 35.
- (118) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of The Movement of the Separation of Sind" An Article Published in Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P.53.
- (119) See The "Indian & Pakistan Year Book & Who's Who" Bombay, The Times of Indian Press 1948 P. 1204.
- (120) جمشيد ميهتا نسروانجي: "سنڌ جو بمبئيءَ کان جدا ٿيڻ" حيدرآباد, بلئوٽسڪي پريس 1927ع.
- (121) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of The Movement of the Separation of Sind" An Article Published in Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P.56
- (122) See The "Daily Gazette" Karachi Dated 17-8-1928 P-11
 - (123) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 50.
 - (124) See The "Daily Gazette" Karachi Dated 13-11-1928 P-1

- (125) See The "Memorandum Presented by Sind Hindu Sabha" to The "Simon Commission".
- (126) سيد ميران محمد شاه: "سَنڌ جي عليحد گيءَ جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد" اسپيشل ايڊيشن سنڌ "آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخ 15 جون 1936ع ص117.
- (127) هيءَ معلومات "خانبهادر محمد ايوب کهڙي" کان 3 مارچ 1979ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (128) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيءَ جي تواريخ" (مقالي) "الوحيد" اسپيشل ايڊيشن سنڌ "آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخ 15 جون 1936ع ص118٠
- (129) See The "Daily Gazette" Karachi dated 27-1-1933 P.5
- (130) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص 98۰
- (131) See The "Daily Gazette" Karachi dated 7.2.1935 P.2
- (132) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of the Movement of The Separation of Sind" An Article Published Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P-52
 - (133) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي"، لاهور، عزيز پېلشرز، 1978ع ص270٠
- (134) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of the Movement of the Separation of Sind" An Article Published Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P-61
- (135) هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 26 سيپٽبر 1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (136) G.Allana: "Pakistan Movement Historic Documents" Karachi, Department of International Relations, 1967 P.60.
- (137) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of the Movement of the Separation of Sind" An Article Published in Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P-54
- (138) هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 26 سيپٽبر 1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (139) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص76.

- (140) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص76.
- (141) هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 26 سيپٽبر 1976ع تي انٽروير ذريعي ورتي ويئي. شيخ صاحب انهيءَ ڪانفرنس جو وڌيڪ احوال هن طرح ٻڌايو ته: "ڪانفرنس جي صدارت ڊاڪٽر محمد اقبال ڪري رهيو هو. جيڪا هڪ هنگام خيز ۽ اهر ڪانفرنس هئي، مجلس احرار جي رضاڪارن اهڙو ته هنگامو مچائي ڏنو، جو اجتماع بي قابر ٿيندو ويو. صدر جي بار بار اپيلن ۽ التجائن جي باوجود حاضرين ۾ ماك نہ آئي، پر هن ناچيز ڪلاڪن جي هنگامي کي ٿورن منٽن جي اندر ٺاپر ۾ بدلائي ڇڏيو. اها منهنجي (شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ جي) نہ پر سنڌ جي ئي عظمت هئي، جو ايڏي وڏي هنگامي کي ختر ڪرائڻ لاءِ هن ناچيز جو انتخاب ڪيو ويو."
- (142) Maulana Muhammad Irfan: "A Brief History of the Movement of the Separation of Sind" An Article Published Alwahid Special edition Sind Azad No Karachi, 15th June 1936, P-53
- (143) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص52.
- (144) See The "Daily Gazette" Karachi dated 8-5-1929, P-3
- (145) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيءَ جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد" اسپيشل ايڊيشن سنڌ "آزاد نمبر"، كراچي، مؤرخہ 15 جون 1936ع ص116
- (146) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص53
- (147) محمد عرفان: "سنڌ جي جدائيءَ واري تحريڪ جي مختصر تاريخ" (مقالي) روزانہ مهراڻ، "سالگره نمبر"، حيدرآباد، مؤرخہ 15 جنوري 1961ع، ص22.
- (148) Smith: "The Oxford History of India" London, Oxford University press, 1961, P.796.
- (149) جي. ايىر. سيد: "جنب گذاريىر جن سين" (جلد2) حيدرآباد، سنڌي ادبي بورد. 1967ع ص156ء
- (150) Ahmad Shafi: "Haji Sir Abdoola Haroon A Biography" Karachi, Pakistan Herald Press, Year? P.83.

- (151) هيءَ معلومات "خانبهادر محمد ايوب کهڙي" کان 3 مارچ 1979ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (152) G.Allana: "Pakistan Movement Historic Documents" Karachi,
 Department of International Reletions, 1967 P-88
- (153) هيءَ معلومات "خانبهادر محمد ايوب کهڙي" کان 3 مارچ 1979ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (154) See The "Daily Gazette" Karachi Dated 28-10-1933, P-19
- (155) Ibid, P.2
 - (156) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي", حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص98
 - (157) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيءَ جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد" "سنڌ آزاد نمبر", ڪراچي, مؤرخ 15 جون 1936ع ص118.
 - (158) See The "Indian & Pakistan Year Book & Who's Who" Bombay, The Times of Indian Press 1948 P-249
 - (159) سيد ميران محمد شاه: "سنڌ جي عليحدگيءَ جي تواريخ" (مقالو) "الوحيد اسپيشل ايڊيشن" "سنڌ آزاد نمبر"، ڪراچي، مؤرخہ 15 جون 1936ع ص119.
 - (160) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي". حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص92
 - (161) هيء معلومات روزانه "الرحيد" جي سال 1931ع جي مختلف پرچن مان ورتي ويئي.
 - (162) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي"، لاهور، عزيز پبا شرز، 1975ع، ص236٠.
 - (163) ِڏسو: "جمعيت خلافت اسلاميه صبہ سنڌ, خلافت سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" ڪراچي، دبدبہ حيدري پريس 1922ع ص3.
 - (164) Smith, Vincent.A: "The Oxford History of India" Claredon Press 1961, P.784
 - (165) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P-142
 - (166) سيد هاشمي: "تاريخ مسلمانان پاک وبهارت" كراچي. انجمن ترقي اردو 1953) ع ص547.
 - (167) Hanafi:M.A: "Muslim Rule in Indo Pakistan" Dacca, Ideal library, 1946 P.292

- (168) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P-144
- (169) Hanafi:M.A: "Muslim Rule in Indo Pakistan" Dacca, Ideal library, 1946 P.292
 - (170) صاحبزاده عبدالرسول: "تاريخ پاك وهند" لاهور، ايم. آر. برادرز، 1970ع ص448.
- (171) L.F. Rush Brook, William: "The state of Pakistan" London, Faber and Faber, 1962, P.20
- (172) سيد هاشمي: "تاريخ مسلمانان پاک وبهارت" كراچي، انجمن ترقي اردو 1953) ع ص454
 - (173) ڏسو: روزانه "الامين" حيدرآباد، مؤرخہ 23 آڪٽوبر 1919ع ص9.
- (174) تفصيل لاءِ ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 18 جولاءِ 1920ع ص 2 ۽ روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 1، آگسٽ 1920ع ص2.
- (175) هيءَ معلومات روزانہ "الوحيد" جي مختلف پرچن مؤرخہ 7-8-10-11-61 ۽ 31 آگسٽ 1920ع مان ورتي ويئي.
- (176) تفصيل لاءِ ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 26 جنوري 1920ع ص12 ۽ 31 مئي 1920ع ص2.
- (177) تفصيل لاءٍ ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 12 ڊسمبر 1922ع، ص1، مؤرخہ 13 ڊسمبر 1922ع ص4 ۽ مؤرخہ 17 جولاءِ مورخہ 21 ڊسمبر 1922ع ص4،
- (178) William-L. Langer: "An Encyclopedia of World History" London, George G.Harrap & CO, Ltd, Year ? P-112
 - (179) تفصيل لاءِ ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 26 مارچ 1924ع ص4.
 - (180) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 17 آڪٽوبر 1920ع ص4
- (181) William.L. Langer: "An Encyclopedia of World History" London, George G. Harrap & CO, LTD, Year ? P.127
 - (182) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 17، آڪٽوبر 1920ع ص4.
- (183) ڏسو "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع ڪراچي، "الوحيد" اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص5.
- (184) هيء معلومات روزانه "الوحيد" جي مختلف پرچن جهڙوڪ: 3 آڪٽوبر 1922ع 5

آكٽوبر 1922، 6 آكٽوبر 1922، 8 آكٽوبر 1922ع 13 آكٽوبر 1922ع ۽ 31 آكٽوبر 1922ع ۽ 31 آكٽوبر 1922ع مان ورتي ويئي.

(185) هيءَ معلومات روزانہ "الوحيد" جي آگسٽ ۽ سيپٽمبر 1922ع جي پرچن مان ورتي ويئي.

(186) مولانا دين محمد وفائي: "ياد جانان" سكر، حكيم عبدالحق كتب فروش 1920 ع ص14.

(187) ايضا، ص 16

(188) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 13 جون 1920ع ص١٠

(189) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 1 جون 1920ع ص٠١٠

(190) مولانا دين محمد وفائي: "ياد جانان" سكر ، حكير عبدالحق كتب فروش 1920 ع ص 9.

(191) ايضا، ص10.

(192) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 جولاءِ 1920ع ص3٠.

(193) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 21 آڪٽوبر 1920ع ص ص 3-4

(194) Jamaluddin Ahmad: "Middle Phase of Muslim Politicel Movement" London, Publishers United Ltd 1969, P-25

(195) سيد رئيس احمد جعفري ندوي: "اوراق گر گشت" لاهور، محمد علي اكيدمي 1968ع ص816ء

(196) William.L. Langer: "An Encyclopedia of World History" London, George G. Harrap & CO, Ltd, Year? P.121

(197) تفصيل لاءِ ڏسو، مٽياري خلافت ڪاميٽيءَ جي گڏجاڻي مؤرخ 1 نومبر 1922ع ۽ حيدرآباد خلافت ڪاميٽيءَ جي گڏجاڻي مؤرخ 19 نومبر 1922ع،

(198) William-L. Langer: "An Encyclopedia of World History" London, George G. Harrap & CO, Ltd, Year ? P-118

(199) منشي مشتاق احمد: "سمرنا كي خونين داستان" ميرك سوراج پرنٽنگ وركس سال؟ ص3.

(200) ڏسو "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ، بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص4.

(201) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 سيپٽمبر 1922ع ص4.

- (202) هيءَ معلومات روزانه "الوحيد" ڪراچي جي مؤرخه 21 سيپٽمبر 1922ع کان مؤرخ 26، سيپٽمبر 1922ع وارن پرچن مان ورتي ويئي.
- (203) ڏسو "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ، بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص9٠ (204) ايضاً ص10٠
 - (205) ڏسو: "ترڪ موالات نمبر1" بمبئي، مرڪزي خلافت ڪميٽي جون 1920ع ص5
 - (206) ايضاً ص ص 10-11
 - (207) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 27 اپريل 1920ع ص4
 - (208) ڏسو "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 31 مئي 1920ع ص2
 - (209) ڏسو "روزانہ الوحيد" ڪراچي. مؤرخہ 10 جولاءِ 1920ع ص3
 - (210) ذَّسو: "متنقه نتوي" دهلي، علماء هند، سال؟ ص ص 14-15
- (211) ڏسو: "متفقه فتريٰ" دهلي جمعية مركزيه علماء هند. جمادي الآخر 1339هـ ص 10 کان 27.
 - (212) ڏسو: "متفقه فتوي" دهلي، علماء هند، جمادي الآخر 1339ع ص2
- (213) هيءَ معلومات روزانہ "الوحيد" ڪراچي سال 1920ع جي مختلف پرچن مان ورتني بيئي.
- (214) ذسو "جمعيت خلافت صوب سنڌ جي ساليائي رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع ڪراچي، "الوحيد" اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص ص 35-37.
- (215) هيءَ معلومات روزانه "الوحيد" كراچي جي مختلف پرچن جهڙوك: مؤرخہ 15 جنوري 1920ع 9 جولاءِ 1920ع 27 جولاءِ 1920ع 18 آگسٽ 1920ع 5 ڊسمبر 1920ع 25 جنوري 1921ع ۽ 5 آڪٽوبر 1922ع مان ورتي ويئي.
- (216) هيءَ معلومات روزانه "الوحيد" كراچي جي سال 1920ع كان 1933 جي مختلف پرچن مان ورتي ويئي.
 - (217) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 8 آگسٽ 1928ع ص6٠
- (218) جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس، 1968 ص76-77،
 - (219) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 14 فيبروري ص1931ع ص٠2٠
 - (220) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 5 مئي 1933ع ص6-

(221) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 31 آگسٽ 1920ع ص4.

(222) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه ١ جنوري 1931ع ص٦٠.

(223) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخ 5 مئي 1933ع ص6.

(224) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخہ 5 آڪٽوبر 1922 ع ص1.

(225) George Lenczowski: "Middle Fast in World affairs" New york, Cornell Universty Press, 1958, P-118

(226) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص2.

(227) ڏسو "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع ڪراچي، "الوحيد" اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص 17

(228) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 8 آگسٽ 1928ع ص6

(229) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 28 ڊسمبر 1922 ص4.

(230) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 1 نومبر 1928ع ص١٠.

(231) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه ١ جنوري 1931ع ص٦٠.

(232) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص2٠

(233) هيءَ معلومات روزانه "الامين"، "الوحيد" ۽ "ڊيلي گزيٽ" جي مختلف پرچن ۽ خلافت ڪاميٽيءَ جي مختلف رپورٽن مان ورتي ويئي.

(234) محمد عبدالغني: "خلافت جي مسئلي تي خيالات" كراچي، سي. سٽلريل ڊيلي گزيٽ پريس ص1

(235) محمد عبدالغني: "خلافت جي مسئلي تي خيالات" كراچي، سي، سٽلويل ڊيلي گزيٽ پريس ص ص3-4

(236) محمد عبدالغني: "خلافت جي مسئلي تي خيالات" كراچي، سي، سٽلريل ڊيلي گزيٽ پريس ص 4-5

(237) مولوي فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ديلي گزيٽ پريس، ص ص 10-9

(238) ايضا، ص18

(239) See The "Daily Gazette" Karachi dated 7.7.1930, P.7

(240) ڏسو: ڏهرڪي "امن سڀا"جي ڪاروائي ماه جون. 1921ع (پاڻ وٽ رکيل).

(241) ڏسو: قاضي احمد "امن سڀا" جي ڪاروائي ماه جولاءِ 1922ع جو قراداد نمبر1 (پاڻ وٽ رکيل).

```
(242) ڏسو: ٽنڊوبا گو "امن سڀا"جي ڪاروائي ماه جون 1921ع (پاڻ وٽ رکيل).
```

(243) ڏسو: ديرو محبت "امن سيا"جي ڪاروائي مؤرخ 30 جنوري 1923ع (پاڻ وٽرکيل).

(244) See The "Daily Gazette" Karachi dated 6.9.1921, P.5

(245) See The "Daily Gazette" Karachi dated 19.5.1921, P.5

(246) See The "Daily Gazette" Karachi dated 13.7.1921, P.5

(247) See The "Daily Gazette" Karachi dated 9.6.1921, P.5

(248) See The "Daily Gazette" Karachi dated 29.6.1921, P

(249) See The "Daily Gazette" Karachi ated 19.7.1921, P.5

(250) See The "Daily Gazette" Karachi dated 6.2.1923, P.5

(251) See The "Daily Gazette" Karachi dated 14.7.1921, P.5

(252) See The "Daily Gazette" Karachi dated 5.7.1921, P.5

(253) See The "Daily Gazette" Karachi dated 18-8-1921, P-5

(254) See The "Daily Gazette" Karachi dated 9-1-1922, P-4

(255) See The "Daily Gazette" Karachi dated 10.7.1921, P.10

(256) See The "Daily Gazette" Karachi dated 16-7-1921, P-5

(257) See The "Daily Gazette" Karachi dated 4.7.1921, P.5

(258) See The "Daily Gazette" Karachi dated 10.7.1921, P.10

(259) مولوي فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ڊيلي گزيٽ پريس، 1919ع ص ص 19-44.

(260) ذَّسو: "مختصر حالات انعقاد جمعيت علماء هند" دهلي، محبوب المطابع ص؟ ص5

(261) دّسو: "مختصر حالات انعقاد جمعيت علماء هند" دهلي، محبوب المطابع سال ؟

ص ص 6-7

(262) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، 4، جولاءِ 1920ع ص3.

(263) لاسو: روزانه "الوحيد" كراچي 22 مئي 1931ع ص٠2٠

(264) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي 15 ڊسمبر 1931ع ص2٠.

(265) لاسر: روزانه "الوحيد" كراچى 4 جنوري، 1922ع ص4.

(266) لاسو: روزانه "الوحيد" كراچى 10 سيپٽمبر 1922ع ص4.

(267) هيءَ معلومات جناب "حڪيم محمد احسن" کان 25 آگسٽ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (268) ڏسو: "توحيد" ڪراچي ماه جنوري 1925ع ص ص 28-30
 - (269) ڏسو: "توحيد" ڪراچي ماه سيپٽمبر 1937ع ص9٠
 - (270) لاسو: "توحيد" كراچى، ماه فيبروري 1935ع ص 48
 - (271) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، 4 جولاءِ 1920ع ص3٠
- (272) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي 10 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - (273) ڏسو: روزانه "الرحيد" ڪراچي 29مارچ 1924ع ص4.
 - (274) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي 4 جولاءِ 1920ع ص 3٠
- (275) ڏسو: قرارداد نمبر5 "جمعيت العلماء سنڌ" جي جلسي جي ڪاروائي. مؤرخ 20 جولاءِ 1920ع.
- (276) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي "جمعيت العلماء سنڌ" 1340هر.
 - (277) لاسو: روزانه "الوحيد" كراچي 29 جون 1923ع ص4.
 - (278) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي 15 سيپٽمبر 1920ع ص3٠.
- (279) هيءَ معلومات روزانه "الامين". "الوحيد"، "ڊيلي گزيٽ" جي مختلف پرچن مان ۽ علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (280) محمد عظمت الله يني: "المشرقي"، گجرات، (پاكستان) پنجاب اليكٽرك پريس 1923ع ص57٠
- (281) نصير محمد نظاماڻي: "تحريك خاكسار جا مختصر اصول" حيدرآباد, مسلم پرنٽنگ پريس 1935ع ص7.
- (282) نصير محمد نظامائي: "تحريك خاكسار جا مختصر اصول" حيدرآباد, مسلم پرنٽنگ پريس 1935ع ص1.
 - (283) ايضاً, ص8.
- (284) محمد عظمت الله يتي: "المشرقي گجرات" (پاكستان) پنجاب اليكٽرك پريس 1923ع ص ص 64-65.

باب پنجون ڏيهي سياست جو دور



باب پنجون ڏيهي سياست جو دور سنڌ هاري ڪاميٽي

تعارف: جدّهن سكر بشراج جي تكميل حقيقت جو روپ ورتو, ته سنة جي زميندارن ۽ كاتيدارن سان گڏ، هاري به هن ايندڙ نئين تبديليءَ كان متاثر ٿيڻ لڳا، ۽ هنن اهو محسوس كيو ته كين پنهنجي مفادن جي بچاء لاءِ كا تنظير ٺاهڻ گهرجي.

انهيءَ پس منظر ۾ سن 1930ع ۾ ميرپورخاص ۾ جمشيد مهتا جي صدارت هيٽ سنڌ جي سياستدانن جي هڪ گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ "سنڌ هاري ڪاميٽي" جو قيام عمل ۾ آندو ويو(1).

هن پارٽيءَ جو پهريون صدر پرنسپال گرڪلي کي چونڊيو ويو، ۽ چيٽمل پرسرام, شيخ عبدالمجيد سنڌي، ۽ جي. ايم. سيد انهيءَ جا سيڪريٽري مقرر ٿيا(2)د هن پارٽيءَ کي سموريءَ سنڌ ۾ وڏي مقبوليت حاصل ٿي، ۽ اڳتي هلي. هيٺ ڄاڻايل سياستدانن ان ۾ ڀرپور حصو ورتو(3).

مولوي عبدالله لغاري، غلام حسين سومرو، فتير محمد مگريو، شمس الدين شاه، عبدالله لغاري، غلام حسين سومرو، فتير محمد، رئيس بروهي، مولوي نذير حسين، محمد خان لاكو، مولوي معاذ، سيد شاهنواز شاه، قادر بخش نظامائي، ارباب نور محمد پليجو، محمد امين كوسو، الاهي بخش قريشي، نبي بخش تنيو، مولوي عزيز الله جروار، كامريد عبدالقادر، حيدر بخش جتوئي ۽ كامريد سيد جمال الدين بخاري.

"سنڌ هاري ڪاميٽي" نه رڳو سنڌي مسلمان سياستدانن جي هئي، پر ان کي روشن خيال غير مسلم طبقي جو به عملي ساٿ مليو، جن ۾ جيرامدلس دولترالر، پروفيسر گهنشام، مسٽر نارائٹداس بيچر، مسٽر سنتداس منگهارام ۽ ڊاڪٽر چمنداس قابل ذکر آهن(4).

ڪار ڪرد گي: جيترڻيڪ هاري ڪاميٽي سن 1930ع ۾ ٺهي، پر ان جا پهريان ڏه سال سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ، ۽ ان کان پوءِ جي حالتن ۾ نٿين سياسي جوڙجڪ جو ٻل ٿي ويا. ان ڪري هيءَ پارٽي رڳو مختلف هنڌن تي

ڪانفرنسون ڪرائڻ کان سواءِ ٻيو ڪو بہ ڪارنامو سر انجام نہ ڏيئي سگهي*، پر ايوان کان ٻاهر هوندي به هن پارٽيء هارين جي حقن لاءِ تعريف جرڳي خدمت ڪئي.

هن پارٽيءَ جي ڪوششن سان سن 1942ع ۾ سنڌ جي وزارت هارين جي مسئلن کي حل ڪرڻ ڏانهن توجه ڏنو، ۽ سن 1943ع ۾ انهيءَ سلسلي ۾ "سنڌ ليجسليشن ڪاميٽي" کي تشڪيل ڏنو**, جنهن اٽڪل ويهن مهينن جي جاچ کان پوءِ پنهنجي رپورٽ ۾ هن طرح سفارش ڪئي:(5)

- هارين كي حق ڏنا وڃن. نر ڳو هن لاءِ ته انهن جو هڪ طبقو پيدا كيو وڃي، پر ان لاءِ ته
 هاريءَ جي زمين ۾ دلچسپي پيدا كري آباديءَ كي وڌيك كار گر بنائي سگهجي.
- دميندار ۽ هارين جي حقن. فرضن ۽ لاڳاپن کي قانوني تحفظ ڏنر وڃي، ۽
 هارين جي حقن جي ضمانت ڏني وڃي.
 - .3. پنجن سالن کان ڪر ڪندڙ هارين کي موروثي حق ڏنا وڃن.
 - .4 موروثي هارين جو ركارد ركيو وچي.

ڪاميٽيءَ تـ هارين جي حقن لاءِ سٺيون سفار شون ڏنيون، پر وقت جي وزارت انهن ڏانهن ڪوب تيان نه ڏنو. ان ڪري هن پارٽيءَ کي اهو احساس ٿيڻ لڳو تـ جيستائين هن پارٽيءَ جا هڏ ڏو کي اسيمبليءَ ۾ چونڊجي نه ويندا، تيستائين ڪنهن به مسئلي جو حل ڳولهي نه سگهبو، ان ڪري هن پارٽيءَ 1946 ع جي شروعات ۾ ڪرايل چونڊن ۾ پنهنجا چار اميدوار بيهاريا * پر کيس

° لمي هثا:

حيدر بخش جتوئي ڏوڪري - واره تڪ.

عبدالقادر حيدرآباد تك.

تاضى نيض محمد كنڊيارو تك.

رامجي كولهي جيس آباد/غيرمسلرتك.

(هيءَ معلومات جناب قاضي فضل الله كان 25 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

اهڙين ڪانفرنسن مان 15 نومبر 1936ع تي سڏايل هاري ڪانفرنس ذڪر ڪرڻ جي لائڻ
 آهي. جنهن ۾ لڳ ڀڳ اڍائي سو هارين شرڪت ڪئي. ۽ ان جي صدارت جمشيد مهتا ڪئي
 هئي۔ (See, The "Daily Gazette" Karachi, Dated, 16, 11, 1936 P-4)

[&]quot; آها ڪاميٽي 26 جون 1943ع تي تشڪيل ڏني ويئي، جنهن ۾ ٽي وزير. ڏه سنڌ اسيمبليءَ جا ميمبر. چار سرڪاري ڪامورا ۽ هڪ زميندار کنيو ويو هو. (هيءَ معلومات "جناب قاضي فضل الله" کان 25 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي)

ايتري كاميابي حاصل "ي نه سگهي. سا گئي سال جي نومبر مهيني ۾ سنڌ اسيمبليءَ جون نيون چونڊون كرايون ويون(6). انهن چونڊن ۾ ب "سنڌ هاري كاميٽي" مقابلو كيو، پر نتيجا اهي ساڳيا ئي نكتا.

بهرحال حالتن كي نئون موڙ مليو. ۽ سنڌ وزارت 3 مارچ 1947ع ۾ هڪ ٺهراءَ ذريعي "هاري جاچ كاميٽي" ٺاهي" پر هن كاميٽيءَ جي سفارشن پيش كرڻ كان اڳي ئي. هندستان جو ورها گو ٿيو، ۽ پاكستان جو قيام عمل ۾ اچي ويو. اهڙيءَ طرح "سنڌ هاري كاميٽي" پنهنجي عمل جي نئين دور ۾ داخل ٿي.

عالمن جو حصو : سنڌ جي عالمن جتي عوام جي مذهبي ۽ سياسي خدمت ڪئي، اتي طبقاتي نظام کي ٽوڙڻ ۽ هڪ جهڙي سماج کي جوڙڻ لاءِ به ڪوششون ورتيون. "سنڌ هاري ڪاميٽيءَ "جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ ۾ انهيءَ جذبي هيٺ جن عالمن ڀرپور حصو ورتو، تن مان مولانا عبدالله لغاري (سانگهڙ)، مولانا عزيز الله جروار (سکر)، مولانا محمد اسماعيل لغاري (حيدرآباد)، مولانا محمد حسين سومرو (بدين)، مولانا محمد صالح "عاجز" (شڪارپور)، مولانا محمد علي شاه (خيرپور)، مولانا محمد علي (سانگهڙ)، مولانا محمد يعقوب حاجاڻو (شارکر)، مولانا محمد نذير جتوئيءَ جا (ٿرپارڪر)، مولانا محمد نذير جتوئيءَ جا نابل ذکر آهن(7).

سنڌ آزاد پارٽي

تعارف: هيءَ پارٽي سن 1935ع ۾ ٺاهي وئي، ۽ ان جو عارضي صدر شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کي مقرر ڪيو ويو جنهن اڳتي هلي هن جماعت کي ڪامياب ۽ ڪامران بڻايو. (8)

نور الدين صديتي ميمبر مينيئجر انڪمبرڊ اسٽيٽس سنڌ آغا شاهي سيڪريٽري

(حيدر بخش الهداد خان جتوئي: "هاري انتلاب"، حيدرآباد، هاري دارالاشاعت 1953ع ص68٠.

اها كاميني جن ميمبرن تي مشتمل هئي، سي هئا:

سر راجر تامس چيئرمين سنڌ سركار جو فرعي صلاحكار
مستر محمد مسعود ميمبر كليكٽر نواب شاهـ
نور الدين صديتي ميمبر مينيئجر انكمبرد اسٽيٽس سنڌ

- پارٽيءَ جا مکيه مقصد هن طرح واضح ڪيا ويا هئا: (9)
 - 1- هندستان لاء مكمل جوابدار حكومت قائم كرائل.
 - -2 صوبى لاء جوابدار حكومت قائر كرائل.
- -3 جدا جدا فرقن ۽ سياسي پارٽين جي وچ ۾ اتحاد قائم ڪرائڻ.
- -4 مسلم قوم جي مذهبي، اخلاقي، تعليمي، معاشرتي، ۽ مالي اصلاح ۽ بهتريءَ لاءِ عام سڌاري جي ڪوشش ڪرڻ.

شيخ عبدالمجيد سنڌيء جي شخصيت هن پارٽيء کي حد کان وڌيڪ مقبول بناير ۽ سنڌ اندر هيٺين هنڌن تي ان جون شاخون قائعر ڪيون ويون: (10)

ابراهیم پنوهر تعلقو دادو، گون اله آباد تعلقو دادو، بنو تعلقو میرپور شورو، گون پیر بخش تالپر، فقیرآباد 22 نصرت ضلع ترپارکر، دائود مهیسر لگ میهی حیدرآباد، جمیک آباد، چک، چتن شام تعلقو سکرند، گون تنب تعلقو میرو خان، گون خیر محمد لغاری، گون مولوی عبدالله لغاری، عمر کون، عودی تعلقو نیل، ماتلی، مرادپور تعلقو نیل، نواب شاه، گون سیال تعقلو دادو، سجاول، شکارپور، هالانوان، گون هاشر سومرو ضلعو نش، جهرک، جهمپیر، کراچی، کرم خان نظاماشی تعقلو هالا ۽ شهر کنگروو تعلقو د گهیری.

ڪار ڪردگي: هن پارٽيءَ "سنڌ جي بمبئي کان علحدگيءَ" واري تحريك ۾ جيڪو حصو ورتو، ان جو تفصيلي احوال هن ئي مقالي جي ٻئي هنڌ تي ڏنو ويو آهي. سنڌ جڏهن بمبئيءَ کان الڳ ٿي هڪ آزاد ۽ خومختيار صوبي جي حيث يت قائم ڪئي تہ "سنڌ آزاد پارٽي" وقت جي سياسي ضرورتن مطابق "آل انڊيا مسلم ليگ" سان الحاق ڪري صوبي جي سياسي خدمت ڪرڻ جو آغاز ڪيو. (11)، ۽ سنڌ اسيمبليءَ جي پهرين چونڊن ۾ پنهنجي خومختيار حيث يت سان بهرو ورتو. جنهن ۾ هن پارٽيءَ کي 3سيٽون مليون (12) ان کان چي هن پارٽيءَ جر عملي وجود ختم ٿي ويو.

عالمن چو حصو: هن پارٽيءَ ۾ سنڌ جي جن عالمن ڀرپور نموني سان حصو ورتر. تن جو وچور هن طرح آهي: (13).

> عالر جو نالو عهدو شاخ مولانا ابوبكر خزائچي سجاول مولانا فضل الله حكيم ناثب صدر شكارپور

مولانا حاجي حبيب الله **گر**ك الهم آباد تعلقر دادو صدر گوٺ مولوي خير محمد لغاري مولانا خير محمد صدر مولانا خوش محمد تعلقو ميرو خان ميمير شهر ڪنگورو تعلقو ڊگهڙي حاجي عبدالحي نوماڻي صدر خرانچي مولانا عبدالحميد **گرك اله آبادتعلقو دادو** مراديور تعلقو ٺل مولانا عبدالحليم نائب صدر مولانا عبدالرحير كراچي ميمبر مولانا عبدالواحد نواب شاهر صدر دائود مهيسر لڳ ميهڙ حاجى عبدالقادر نائب صدر مولانا عبدالصمد ڪراچي ڪاميٽي ميمير عبدالكريم چشتى جنرل سیکریٽری شڪارپور عودى تعلقو ٺل مولانا عبدالكريس سيڪريٽري تعلقو ميرو خان عبدالكريم ككل ميمبر گون هاشر سرمرو تعلقو ^ئٽو عبدالكريم عباسي نائب صدر مولانا عبدالكريم ڪراچي ڪاميٽي ميمبر على انور فاضل ديوبند بُنى گوك تنيه تعلقو ميروخان ميمبر مولانا عطاء الله سيكريتري ماتلى مولانا غلام محمد جهميير ميمير پير غلام مجدد سرهندي صدر حيدرآباد مولانا غلام مصطفى قاسمى تعلقو ميروخان ميمبر مولانا محمد ابراهيم بنيء وارو تعلقو مبروخان ميمير محمد اسماعيل قريشي گوك تنيه تعلقو ميرو خان ميمير مولانا محمد پريل چتن شاه تعلقو سكرند ناظم مولانا محمد يوسف بنو تعلقو ميريور بنورو صدر مولانا محمد حسن لغاري صدر گوك مولوى عبدالله لغارى میان محمد حسن عباسی صدر گرك سيال تعلقو دادو مولانا محمد عثمان ميمبر نواب شاهر مولانا محمد عثمان ميمبر چڪ حاجى محمد رحيم بخش صدر جيڪ آباد

سحاول سيكريٽري مولانا حاجي محمود آباد، دیم 22 نصرت نائب صدرفتير مولانا محمد موسي گوٺ سيال تعلقو دادو محمد صالح عباسي سيكريٽري ڳوٺ تنيه تعلقو ميرو خان مولانا نذير حسين ميمبر گوك تنيه تعلقو ميروخان شاه محمد هڪڙو ٻُٺي ميمبر چتن شام تعلقو سكرند شفيع محمد منگيو صدر كرم خان نظامائي تعلقو هالا شفيع محمد خان نظامائى مراد يور تعلقو ٺل صدر سيد صدرالدين شاه

سنڌ اتحاد پارٽي

تعارف: سنڌ جي بمبئي کان علحدگيءَ واري تحريڪ جڏهن حقيقت جو روپ وٺڻ لڳي ته ، هتان جي سياستدانن کي ايندڙ نين تبديلين جي روشنيءَ ۾ سياسي گروهن جي جوڙجڪ ڪرڻ جو خيال پيدا ٿيو. جيئن ته هن وقت تائين سنڌ جي سياسي ماحول ۾ مذهبي ڪڏرپڻي جو رنگ ڀرجي چڪو هو، ان ڪري هن طبقي کي اهو احساس ٿيو ته سنڌ ۾ اهڙن سياستدانن کي هڪ مرڪز تي گڏ ڪيو وڃي، جيڪي غيرفرقيواراند بنيادن تي پرڳڻي جي سياسي خدمت سرانجام ڏيئي سگهن.

ان سلسلي ۾ محترم جي. ايسر. سيد جي كوشش سان 3 جون 1935ع تي سر غلام حسين هدايت الله جي صدارت هيٺ كراچيءَ ۾ سنڌ جي نامور سياستدانن جي گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ اهو فيصلو كيو ويو تـ صوبي جي بهتريُّلاءِ غير فرقيوارن ۽ اقتصادي بنيادن تي سنڌ جي هك سياسي جماعت قائم كجي، جنهن جو آئيني مسئلن سان تعلق ركندڙ ٻيءَ جماعت سان كوب واسطو نه هجي (14).

[•] انهيءَ گڏجاڻيءَ ۾ شريڪ ٿيندڙ هئا:

سر غلام حسين هدايت الله، جي. ايم. سيد خانبها دراله بخش سومرو، خانبها در محمد ايوب كهڙو. شيخ عبدالمجيد سنڌي، علام آءِ. آءِ قاضي، حكيم فتح محمد سيوهاڻي، مسٽر ڄيٺمل پرسرام، مسٽر حاتم علوي، ۽ سيد ميران محمد شاه.

⁽هيء معلومات جناب جي. ايم. سيد كان 20 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي وئي)·

آخرڪار 31 آگست 1936ع تي سنڌ جي سياستدانن جي گڏجاڻي ٿي. ۽ نتيجي ۾ "سنڌ اتحاد پارٽي" ٺاهي ويئيءٌ جنهن جي قيادت سر عبدالله هارون جي حوالي ڪئي ويئي. ۽ سر شاهنواز ڀٽو. ۽ ميران محمد شاهر ان جا ڊپٽي ليڊر مقرر ٿيا (15).

ابتدا ير پارٽي جا مقصد هن طرح واضح ڪيا ويا (16).

- 1- اقتصادي بنيادن تي غير فرقيوارانه سلوك پيدا كرڻ.
- -2 ملك جي سيني فرتن كي نوكريون، تعليم ۽ واپار ۾ سهوليتون مهيا كرڻ.
- -3 آبادگارن ۽ مزدورن جي مفاد کي ترقي ڏيارڻ, ۽ نان بئراج ايراضيءَ لاءِ آبپاشيءَ
 جو خاص طرح انتظار ڪرڻ.
- ڳوٺن جي سڌاري. گهرو هنرن جي واڌاري. ۽ ڳوٺاڻن کي موجوده زماني جون سهوليتون مهيا ڪرڻ.
 - -5 ننڍن کاتيدارن کي وياج خورن ۽ وڏن زميندارن جي چنبي کان بچائڻ.
 - -6 هارين جي حقن جي حفاظت ڪرڻ.
 - -7 آبادگارن کي قرضن کان آجو ڪرڻ.
 - -8 ملك جي تعليم, تندرستي, ۽ رشوت دور كرائڻ لاءِ كوششون وٺڻ.
 - 9 صوبي جي مڪمل خودمختياريءَ لاءَ ڪوشش ڪرڻ.

ڪار کردگي، جڏهن چونڊون شروع ٿيون ته گهڻو ڪري مسلمانن جي سمورين جاين تي هن پارٽيءَ پنهنجا اميدوار بيهاريا ' جيتوڻيڪ هن پارٽيءَ پنهنجا اميدوار اسيبمليءَ لاءِ چونڊجي آيا. کي وڏي ڪاميابي حاصل ٿي ۽ ان جا 22. اميدوار اسيبمليءَ لاءِ چونڊجي آيا. پر پارٽيءَ جي ليڊر سرشاهنواز ڀٽي کي شڪست آئي(17) ۽ اهو ئي هن پارٽيءَ جي اتحاد جي پاڻ پاڻ پاڻ ٿيڻ جو وڏو سبب بڻيو.

انهيءَ گڏجاڻيءَ ۾ ٻن ڊپٽي ليڊرن, سرشاهنواز ڀٽي. ۽ سر غلام حسين هدايت الله کان سواءِ سيد ميران محمد شاه کي وڌيڪ ٽيون ڊپٽي ليڊر چونڊجڻ تي اعتراض وٺي سر غلام حسين ان پارٽيءَ کان جدا ٿي ويو. ۽ پنهنجي جدا پارٽي "سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽي" قائمِ ڪيائين. (تفصيل لاءِ ڏسو، هن ئي باب ۾ "سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽي").

^{*} هيءَ پارٽي جيتوڻيڪ غير فرقيو ارائه بنيادن تي ٺاهي ويئي هئي. پر ڪنهن به غير مسلر هن سان ساٿ نه ڏنو. ان ڪري پارٽيءَ کي سمورا مسلمان اميدوار بيهارڻا پيا. (معلومات خانبهادر, ايوب کهڙي کان ورتل).

پارٽيءَ کي انهيءَ صدمي کان سواءِ وقت جي انگريز گررنر "سر لنسليٽ گرهام" (Sir Lancelot Graham) جي غير جمهوري طريتن به سخت نقصان رسايو. هڻ "سنڌ اتحاد پارٽي" کي اقتدار سنڀالڻ واري آڇ ڏيڻ جي بدران صرف ٽي سيٽون حاصل ڪندڙ "سنڌ مسلم پوليٽيڪل" پارٽيءَ جي قائد سر غلام حسين هدايت الله کي حڪومت ٺاهڻ جي دعوت ڏني، جنهن جي نتيجي ۾ "سنڌ اتحاد پارٽيءَ" کي خانبهادر الله بخش سومري جي قيادت هيٺ مخالف پارٽيءَ جو ڪردار ادا ڪرڻو پيو(18)، ۽ ائين شي هيءَ پارٽي ڪانگريس پارٽيءَ جي تعاون سان مخالف بينچن تي ويهي عوام جي خدمت ڪندي رهي.

جيئن ته "سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽي" اقتدار ۾ هجڻ جي باوجود پنهنجي حيثيت کي برقرار رکڻ لاءِ ٻين جي سهاري وٺڻ تي مجبور هئي. ان ڪري "سنڌ اتحاد پارٽيءَ" ڪن اصولن تي متفق ٿي اقتدار واري پارٽيءَ سان اتحاد قائم رکڻ جو ٿاه ڪيو". ۽ اهڙيءَ طرح هن پارٽيءَ غير سرڪاري طور تي عوام جي خدمت ڪرڻ جو آعاز ڪيو. اهو هن پارٽيءَ جو ئي ڪارنامو هو، جنهن جي تعاون سان سر غلام حسين هدايت الله جي وزارت ڪيترائي تعريف جوڳا ڪر آيا، جهڙوڪ: موينيو زمين تان چوپايي مال جي پنچري معاف ڪرڻ، پراڻن تقاوي قرضن کي سهولتين وارين قسطن ۾ وصول ڪرڻ، رهيل وياج معاف ڪرڻ، وڏن آفيسرن جي درٻارن جي ڪرسين جي پروانن ڏيڻ جي رسر بند ڪرڻ، ۽ لوڪل بورڊن تي ميمبرن وزارتون نہ ڏنيون ويون تہ ٻنهي پارٽين جو اتحاد ٽڻي ويو ۽ "اتحاد پارٽيءَ". حينانگريس پارٽيءَ جي تعاون سان هڪ رپئي جي ڪتر واري رٿ تي "سنڌ مسلم وزارتون نہ ڏنيون ويون تہ ٻنهي پارٽين جو اتحاد ٽڻي ويو ۽ "اتحاد پارٽيءَ". چوليٽيڪل پارٽيءَ" جي وزارت کي شڪست ڏني(19). ان کان پوءِ هيءَ پارٽي پوليٽيڪل پارٽيءَ" جي وزارت کي شڪست ڏني(19). ان کان پوءِ هيءَ پارٽي

[&]quot;سنڌ اتحاد پارٽي" ۽ "مسلم پوليٽيڪل پارٽيء" جي وڄ ۾ اهو طي ٿيو ته:
"وزارت جي رهبري لاءِ ٻنهي پارٽين جي گڏيل هڪ ورڪنگ ڪاميٽي ٺاهي
وڃي، تہ جيئن اها قاتون سازيءَ جي سوالن، اصولي مسئلن ۽ انتظامي طريقي
بابت وقت به وقت وزارت کي مشورا ڏيئي سگهي.

ملڪ جي تعمير ۽ ماڻهن جي ترقي لاءِ ٻنهي جماعتن جو هڪ گڏيل منصوبو تيار ڪيو وڃي. جنهن کي ورڪنگ ڪاميٽيءَ جي هدايتن مطابق وزارت عمل ۾ آڻيندي."

⁽جي. اير. سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد", حيدرآباد اسلاميه پرنٽنگ پريس، 1952ع، ص14).

"كانگريس" ۽ "آزاد هندو گروپ" جي ساٿ سان اقتدار ۾ آئي(20). ۽ ان جي طرفان خانبهادر اله بخش 23 مارچ 1938ع تي وزارت ٺاهي.*

"سنڌ اتحاد پارٽيءَ"جي وزارت ڏن گروهن جو مجموعو هئي. ان ڪري سندس اقتدار ۾ "ڪانگريس" ۽ "آزاد هندو گروپ" به شامل ٿي ويا، جنهن اڳتي هلي نااتفاتيءَ کي جنر ڏنو. ڍلن وڌائڻ جي مسئلي تي پارٽي ۽ وزارت جو پاڻ ۾ اختلاف ٿي پيو، ۽ وڏي وزير کي پنهنجي ڪرسيءَ بچائڻ لاءِ مسلمانن بدران هندن طرف جهڪڻو پيو. اهڙيءَ طرح هيءَ پارٽي اقتدار ۾ اچي، انتشار جو نشانو بڻجي ختر ٿي ويئي.

عالمن جو حصو: "سنڌ اتحاد پارٽي" سنڌ جي سياست ۾ ٻن سالن تائين فعال رهي. انهيءَ عرصي دوران "ڪانگريس" خواه "مسلم ليگ" پارٽيءَ جو به هن سان اشتراڪ رهيو. ان ڪري اڻ سڌيءَ طرح انهن ٻنهي جماعتن جا عالم سياستدان "سنڌ اتحاد پارٽيءَ" جا ساٿي ۽ حامي ٿي رهيا. جن عالمن هن پارٽيءَ ۾ ڀرپور حصو ورتو، تن مان مولانا دين محمد وفائي (ڪراچي)، مولانا حڪيم فتح محمد سيوهاڻي (ڪراچي)، ۽ مولانا محمد صادق (ڪراچي) جا نالا ذڪر لائق آهن(21).

سنڌ مسلم پؤليٽيڪل پارٽي

تعارف: "سنڌ اتحاد پارٽي" کي ٺهيي اڃا سال ئي مس ٿيو هو تہ سنڌ جي ڌن ڌڻين پنهنجين من مستين جو آغاز ڪيو. پارٽيءَ جي پهرئين سالياني اجلاس جي موقعي تي ڊپٽي ليڊر جي چونڊ واري معمولي مسئلي تي "سنڌ اتحاد پارٽيءَ" جو اتحاد ٽٽي ويو. ۽ سر غلام حسين هدايت الله پنهنجي ڌڙي سان گڏجي "مسلم پوليٽيڪل پارٽي" ٺاهي(22). هن پارٽيءَ جو قيام 1 آڪٽوبر 1936ع تي عمل ۾ آندو ويو، ۽ ان جا خاص مقصد هن طرح مقرر ڪيا ويا: (23)

1. سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيء کان پوءِ برطانوي قانون مطابق سياست کي فروغ ڏيڻ.

2. بيءَ هر خيال جماعت سان ممكن حد تائين سهكار كرن.

[•] سندس وزارت هنن وزين تي مشتعمل هئي:

خانبهادر الهربخش (خزانه ۽ داخله).

نهچلداس وزيراثي (پي. ڊبليو. ڊي. ميڊيڪل ۽ پبلڪ هيلٿ).

پير الاهي بخش (روينيو).

⁽هيءَ معلومات جناب قاضي فضل الله كان 25 جولاءِ 1977ع تي انترويو ذريعي ورتني ويئي).

- 3. سنڌ جي مسلمانن جي سياسي خدمت ڪرڻ.
- 4. مجموعي طور تي سموري سنڌ جي سماجي، تعليمي ۽ صنعتي ترقيءَ لاءِ
 ڪوشش ڪرڻ.
- کاتیدار زمیندارن جي حقن جي حفاظت ڪرڻ، ۽ سنڌ ۾ زرعي ترقيءَ لاءِ
 ڪوششون ڪرڻ.
 - 6. رسائي ۽ لاپي جي خاتمي آڻڻ لاءِ ڪوششون ڪرڻ.

هن جماعت جي قيادت سر غلام حسين هدايت الله پنهنجي هٿ هيٺ رکي ۽ خانبهادر محمد ايوب کهڙو ۽ مير بنده علي خان ٽالپر ان جا ڊپٽي ليڊر مقرر ڪيا ويا. سيڪريٽري جنرل جو عهدو وري نور محمد وڪيل جي حوالي ڪيو ويو(24).

هن جماعت جا باقي مكيه كاركن هن طرح هئا: (25)

خانبهادر سيد محمد كامل شاه، خانبهادر غلام محمد خان اسران، سيد قبول محمد شاه، خانبهادر قيصر خان بوزدار، خانصاحب پير رسول بخش شاه، شمس الدين باركزئي، جي. ايم. عيسائي، رحيم بخش، مير صوبدار خان، الهدّنو خان سندرائي، رئيس يار محمد خان جوڻيجو، داكٽر سلطان احمد جوڻيجو، كئيٽن شيخ عطا محمد، خانبهادر امام بخش جتوئي، ۽ نظر علي خان.

ڪار ڪردگي: هن جماعت سنڌ جي پهرين چونڊن ۾ حصو ورتو, ۽ لڳ ڀڳ 17 اميدوار بيهاريا، جن مان رڳو 3 ڪامياب ٿي سگهيا چونڊن جي نتيجي مطابق هيءَ جماعت ۽ شيخ عبدالعجيد جي "سنڌ آزاد پارٽي" ۽ اهڙيون جماعتون هيون، جن باقي ٻين جماعتن جي ييٽ ۾ گهٽ ڪاميابي حاصل ڪئي، پر وقت جي گورنر "سر لنسليٽ گرهام" (Sir "ييٽ ۾ گهٽ ڪاميابي حاصل ڪئي، پر وقت جي گورنر "سر لنسليٽ گرهام" کي وزارت الهي ناهڻ جي آڇ ڪئي. جنهن هندو آزاد گروپ جي تعاون سان سنڌ جي پهرين وزارت ناهي. *

[°] اهي هثا:

سر قملام حسين هدايت الله, خانبهادر محمد ايوب كهڙو ۽ غلام محمد خان اسراڻ (هيءَ معلومات خانبهادر محمد ايوب كهڙي كان تاريخ 3 مارچ 1979ع تي ورتي ويئي). • پهرين وزارت جا ميمبر هن طرح هئا:

سر غلام حسين هدايت الله و ڏو وزير (خزانه، داخله، عام انتظام ۽ سياسي امور) مکي گوبند رام وزير (پوليس ۽ پي. ڊبليو. ڊي) مير بنده علي خان وزير (روينيو) (هيءَ معلومات "جناب جي. ايم. سيد" کان 20 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي).

ڪجه وقت کان پوءِ "سنڌ اتحاد پارٽي" به اقتدار جي هن مالڪ جماعت جو ساٿ ڏيڻ شروع ڪيو. جڏهن مکي گوبندرام جي استعفيٰ ڏيڻ کان پوءِ سر غلام حسين هدايت الله هندو آزاد گروپ جي صلاح کان سواءِ ڊاڪٽر هيمنداس کي وزير مقرر ڪيو تہ "هندو آزاد گروپ" ۽ "سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽي" جي وچ ۾ اختلافن جو آغاز ٿيو. ۽ ڀوڄسنگه جي وفات بعد ميران محمد شاھ جي اسپيڪر ٿيڻ سبب ويتر انهن اختلافن ۾ واڌارو اچي ويو. ٻئي طرف وري "سنڌ آزاد پارٽيءَ" هن پارٽيءَ سان تعاون جي معاوضي ۾ پنهنجي ڪن ماڻهن کي وزير مقرر ڪرائڻ پئي گهريو، پر ناڪاميءَ جي صورت ۾ هيءَ جماعت بہ اقتدار واري پارٽيءَ جي خلاف ٿي بيٺي. ان ڪري اسيمبليءَ جي سمورين پارٽين گڏجي سر غلام حسين هدايت الله جي وزارت کي هڪ رپئي جي ڪتر واري رٿ تي شڪست ڏني، ۽ اهڙي طرح 1 مارچ 1938ع تي سنڌ جي پهرين وزارت ۽ "سنڌ مسلم پوليٽيڪل پارٽيء" جي اقتدار جو خاتمو اچي ويو(26)٠ عالمن جو حصو: "سنڌ مسلر پوليٽيڪل پارٽيءَ" جي ڄمار ٿوري عرصي تائين محدود رهي. ان ڪري هن جماعت ۾ عالمن کي خدمت ڪرڻ جو ڪو خاص موقعو نہ مليو. ان هوندي به جيڪي عالمر هن جماعت سان وابسته رهيا. تن مان. مولانا دين محمد "اديب" (دادو) مولانًا مخدوم غلام حيدر (حيدرآباد). ۽ مولانا محمد اسماعيل قريشي (لاڙڪاڻو) ذڪر لائق آهن(27).

جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي

تعارف: جڏهن مولانا عبيدالله سنڌيءَ انگريزي راڄ خلاف ڪر ڪرڻ واسطي، هندستان ڇڏي وڃي ڪابل وسايو، تڏهن هندستان جون سياسي، سماجي ۽ مذهبي حالتون مختلف هيون. هندو مسلم اختلاف اڃا ننڍي کنڊ جي عوام جي ذهنن ۽ دلين تي حڪمران نه بڻيو هو. "آل انڊيا نيشنل ڪانگريس" ۽ "آل انڊيا مسلم ليگ" به اڃا واضح طور تي آزاديءَ حاصل ڪرڻ جي حڪمت عملي نه ٺاهي هئي. ان وقت مسلمان ترڪي ۽ اٽليءَ جي جنگ سبب يورپ وارن، خاص ڪري انگريزن جي خلاف ٿي رهيا هئا. مولانا سنڌيءَ جي چوويهن سالن جي ملڪ کان پري رهڻ واري عرصي دوران سنڌ توڙي هند ۾ ڪيتريون ئي تبديليون اچي چڪيون هيون. سنڌ ۾ بمبئيءَ کان عليحدگيءَ جي تحريڪ نه رڳو ڪامياب ٿي چڪي هئي، پر سنڌي وزير به عوام جي عليحدگيءَ جي تحريڪ نه رڳو ڪامياب ٿي چڪي هئي، پر سنڌي وزير به عوام جي قيادت سنڀالي چڪا هئا. ان کان سواءِ سڄو ننڍو کنڊ سياسي طور تي "آل انڊيا نيشنل ڪانگريس" ۽ "آل انڊيا مسلم ليگ ۽ ٻن حلقن ۾ ورهائجي چڪو هو. "خلافت

تحريك" جي خاتمي كان پوءِ جڏهن هندو مسلم اتحاد پاش پاش ٿي ويو، ته ان جي نتيجي ۾ سنڌ توڙي هند جو عوام مذهبي بنيادن تي گروهن ۾ ورهائجي ويو. اهڙين حالتن ۾ مولانا عبيدالله سنڌي وطن واپس وريو ۽ هن انقلابي اڳواڻ انهن ڏکوئيندڙ حالتن جي مطالعي ۽ مشاهدي ڪرڻ کان پوءِ، اهو محسوس ڪيو ته ننڍي کنڊ لاءِ آزادي هاڻي مسئلو نه رهيو آهي، ڇو ته اها سندس مقدر بنجي چڪي هئي. پر سڀ کان وڌيڪ ڀيانڪ ۽ تباه ڪن مسئلو مذهب ۽ ثقافت جو هو، جنهن ننڍي کنڊ جي عوام کان ايڪي ۽ الفت جون خوبيون کسي ورتيون هيون. مولانا عبيدالله سنڌي انهن مسئلن جي ايڪي ۽ الفت جون خوبيون کسي ورتيون هيون. مولانا عبيدالله سنڌي انهن مسئلن جي ملڪي ۽ الفت جو سرچشمو آهي، تهڙي طرح گنگا، جمنا، دريائن جي ميلاپ وارو خطو هندو سندس خيال مطابق "جهڙيءَ طرح گنگا، جمنا، دريائن جي ميلاپ وارو خطو هندو تهذيب جو سرچشمو آهي، تهڙي طرح سنڌ ساگر مسلم تهذيب جو خزانو آهي. جيڪڏهن اسان انهن ٻنهي عظيم الشان هندستان جي حصن کي پنهنجي نظريي تي ٺاه جيڪڏهن اسان انهن ٻنهي عظيم الشان هندستان جي حصن کي پنهنجي نظريي تي ٺاه ڪرائي سگهياسون ته هندو مسلم جيڪڏهن اسان باهمي اتحاد جي روشنيءَ ۾ سنڌ توڙي هند کي هڪ وحدت جي وادي بنائي ميلارا انسان باهمي اتحاد جي روشنيءَ ۾ سنڌ توڙي هند کي هڪ وحدت جي وادي بنائي سگهندا، ۽ ان قوت جي وسيلي دنيا جي رهبري ڪرڻ لائق ٿيندا.

"جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" جو بنياد 10 ڊسمبر 1939ع تي رکيو ويو(29). جنهن جو نصب العين هن طرح مقرر ڪيو ويو:

دارالرشاد، السواد الاعظم، قاسر المعارف جا جهونا كاركن ۽ انهن جا ساٿي، جيكي وطن جي خدمت كي پنهنجر مذهبي فرض سمجهن ٿا، انڊين نيشنل كانگريس جي اندر هك مستقل پارٽيءَ كي تشكيل ڏين ٿا، جنهن جو اتر اولهم هندوستان جي محدود پر ڳڻن سان تعلق هوندو.

(الف): پارٽيءَ جو نالو جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽي هوندو.

(ب): پارٽيءَ جو ڪر ڪار چئن ڀاڱن ۾ ورهايل هوندو:

أ. اڄوڪو سنڌ صوبو جنهن جو مرڪز ڪراچي آهي.

ii. سنڌوندي ۽ ان کي ڀرتي ڪندڙن جي زمين جنهن جو مرڪز لاهور آهي.

iii. گنگا ۽ جمنا ندين جي وچ وارو حصو، ۽ انهن جي اثر هيٺ ايندڙ اجميري بنارسي علائقو جنهن جو مركز دهلي آهي.

iv هندستان جو ڪو بہ پرڳڻو، جيڪو پنهنجي مرضيءَ سان پارٽيءَ ۾ اچڻ گهري.

هن پارٽيءَ جا نظرياتي بنيادي اصول هيٺينءَطرح آهن:

- (الف) سياسي جدوجهد ۾ تشدد نہ ڪرڻ واري اصول موجب آزادي ماڻڻ جي ڪوشش. هن تاريخي حقيقت کي وسارڻ نہ گهرجي ته عيسائيت تشدد نہ ڪرڻ واري اصول تي لاڳيتو ٽن سؤ ورهين تائين عمل ڪرڻ کان پوءِ منزل ماڻي.
- ب) هاري ۽ هنر مند پورهيت جي معاشي حالت کي سڏارڻ ۽ انهن کي ترقي وٺائي يورپ جي پورهيت طبقي جهڙو بنائڻ. ڇاڪاڻ تہ جيستائين ملڪ جي عام آبادي يعني عوام جي معاشي حالت نہ سڏرندي تيستائين سياسي ترقيءَ جي منزل به هٿ نہ ايندي.
- (ج) هندستان کي هڪ ملڪ نہ پر يورپ وانگر، گهڻن ملڪن وارو علائقو سمجهڻ، زبان ۽ تهذيب کي ملڪ جي ورهاڱي جو بنياد مڃڻ.
- (د) هر هڪ هندستاني ملڪ يا پرڳڻي (مطلب تہ جنهن به علائقي ۾ هڪ ٻولي ڳالهائي ٿي وڃي، ۽ انهيءَ جي تهذيب ۾ پڻ هڪ جهڙائي هجي) ۽ رهندڙ سيني مردن ۽ عورتن جو هڪ جيترو حق مڃڻ، ۽ جمهوري سرشتي هيٺ قوميت کي ترقي وٺائڻ. نسل، مذهب ۽ قدامت کي وڏائيءَ جو وسيلو نهنائڻ.
- هر هڪ هندستاني ملڪ يا پرڳڻي جي عام آباديءَ کي انهيءَ جي مادري
 ٻوليءَ ۾ تعليم ڏيئي ووٽ جو قدر ۽ اهميت سمجهائڻ. (تشريح)

جيڪي به هندستاني ٻوليون عربي صورت خطيءَ ۾ لکيون وڃن ٿيون، تن جي ڄاڻ، عامر طرح سان وڌائڻ، هلندڙ صورت خطيءَ وسيلي ڏاڍي ڏکي ڳالهه آهي. انهيءَ لاءِ ضروري آهي تہ حرفن کي ڌار ڌار لکڻ جو رواج قائعر ڪيو وڃي، يا رومن حرفن ۾ لکڻ شروع ڪجي. ٻيءَ صورت ۾ تائيپ رائيٽر مان سولائيءَ سان فائدو وٺي سگهجي ٿو. اسين جيئن تہ ڪنهن به ڳاله کي زوريءَ مڃائڻ نٿا گهرون. ان ڪري آهستي سمجه ۽ سوچ پيدا ڪري انهيءَ ۾ ڪاميابي ماڻينداسون.

(و) ترقي يافته يورپ جون شيون پنهنجي ملك ۾ ٺاهڻ ۽ پيدا كرڻ لاءِ، ۽ وطن جر. خدمت ۽ حفاظت لاءِ، مردن ۽ عورتن ۾ دليري ۽ همٿ جي جذبي پيدا كرڻ واسطي يورپي زندگيءَ جِي طرز سيكارڻ.

(تشريح): يورپي قومن جي سياسي برادريءَ ۾ شامل ٿيڻ کان سواءِ نہ تہ ايشيا جي سياسي ترقي آسان آهي ۽ نہ وري هندستان جي. انهيءَ ڪري ئي اسان کي سماجي تبديليءَ واري عمل کي خوشيءَ سان منهن ڏيڻ گهرجي. نہ تہ رجعت پسند قوتون ملک کي تباه ۽ برباد ڪري ڇڏينديون.

(ز): سوچ. اخلاق ۽ سياست ۾ هڪجهڙائي پيدا ڪرڻ لاءِ امام ولي الله دهلويءَ جي

طريقي ۽ دانائيءَ کي پارٽيءَ جو عقلي بنياد مڃڻ، انهيءَ ئي طريقي سان ماڻهن کي. انسان ذات جي خدمت لاءِ تيار ڪرڻ.

(تشريح): ٻيءَ هزار هجري صديءَ جي شروعات کان وٺي يعني جلال الدين اڪبر جي دور کان ئي مسلمان عالمن جي هڪ ڌر ابن عربيءَ جي فلسفي يا ويدانت جي فلسفي کي سڌارڻ ۽ وڌائڻ ۾ رڌل رهي تہ جيئن انهيءَ کي هندستاني زندگيءَ لاءِ هڪ سياسي بنياد بنائي سگهي. حقيقت ۾ امام ولي الله جو فلسفو انهن سمورين ڪوششن جو نچوڙ آهي. انهيءَ سان سمورن مذهبن ۾ برادري يا هڪجهڙيون ڳالهيون ڳولي سگهون ٿا، ۽ انسان دات جي ارتقائي تاريخ جي تشريح ڪري سگهجي ٿي.

(ح): هندستان جي ايكي كي فيڊريشن تي ٻڌل سمجهڻ. هندستان كي هڪ ملڪ يائڻڻ ائين غلط آهي، جيئن كو ماڻهو روس كي ڇڏي باقي سموري يورپ كي هڪ ملڪ سڏي.

(ط): فيڊريشن جي تڪميل لاءِ گهڻي وقت تائين برٽش ڪامن ويلٿ ۾ رهڻ جو فيصلو ڪرڻ.

(ي): فيڊريشن جي ٻولي ترقي يافته هندستاني (اردو) ۽ انگريزي هوندي.

(تشريح): اردوء كي رومن حرفن ۾ لكي يورپي قومن آڏوآڻڻ، ۽ مقطع حرفن ۾ لكي الشيائي قومن تائين پهچائڻ، انهيءَ مقصد جي پورائي لاءِ بنه ضروري آهي.

.3 پارٽيءَ جا عملي سياسي اصول هن طرح آهن:

(الف): پارٽي پنهنجن نظرين کي ڦهلائڻ لاءِ، ڪن خاص تعليمي ادارن ۾ خدام خلق تيار ڪندي. فقط اهي ئي ماڻهر پارٽيءَ جا ميمبر ٿي سگهندا، جيڪي انسان ذات جي خدمت کي پنهنجو فرض سمجهندا، ۽ تشدد ن ڪرڻ واري اصول جي پوئواري ڪندي، انهيءَ فرض جي تعميل ۾ هر ڪنهن نموني جي تڪليف سهڻ جو پختو وچن ڪندا، ۽ پڻ اهي ايذاء ڏيندڙن تي ڪنهن به نموني سان هٿ نه کڻندا.

(ب): پارٽيءَ جا جيترا به ميمبر حڪومت ۾ شامل ٿيندا, تن لاءِ اهو ضروري
 آهي ته هو پنهنجي ڪرسيءَ تي ويهي ملڪ جي مٿاني رهواسين سان
 هڪجهڙو ورتاء ڪن ۽ پڻ رشوت کي بند ڪرائيندا.

(ج): پارڻيءَ جا واپاري ميمبر، ماپ ۽ تور ۾ گهٽ وڌ نه ڪندا. ۾ به خيانت نه ڪندا، ۽ وياج کي بند ڪرائيندا.

(د): پارٽيءَ جا زميندار ميمبر، هاريءَ سان جيڪو به معاهدو ڪندا. انهيءَ تي

- پابند رهندا. هاريءَ جي ڪٽنب جي وقت سر وڌندڙ گهرجن جي پوري ڪرڻ ۾ پڻ مدد ڪندا.
- (ه): پارٽيءَ جا هاري ميمبر، سرڪار پاران مقرر ڪيل زمين جو محصول يا مالگذاري، ۽ زميندار جو ڀاڱو، معاهدي جي پابنديءَ سان ادا ڪندا.
- ن): پارتيءَ جا هاري ميمبر، کنهن سان به جيڪو به معاهدو کندا, امانت جو خاص خيال رکندا.
- (ز): پارٽيءَ جا جيڪي ميمبر علمي ۽ اخلاقي خدمت لاءِ مقرر ڪيا ويا آهن. سي پنهنجي ملڪ مان جهالت ختر ڪرائڻ لاءِ پاڻ پتوڙيندا، اهي زندگيءَ جي بنه ئي ٿورين ضرورتن تي پنهنجو گذران ڪندا.
- (ح): پارٽيءَ جي هر هڪ عملي ميمبر جو اهو فرض هوندو ته هو وس آهر. هر هڪ مرد ۽ عورت کي لکڻ ۽ پڙهڻ سيکاري.
 - i. پنهنجي ملڪ جي ٻوليءَ ۾ ·
 - از پنهنجي بين الاقوامي ٻوليءَ ۾.
 - انا هر پابند مذهب کي ان جي ملڪي ٻوليءَ ۾.
- (ط): پارٽيءَ جي هر انهيءَ ميمبر جو. جيڪو اخلاقي استاد يا مرشد جو درجو رکندڙ آهي. فرض هوندو ته هو پنهنجن ملڪي ڀائرن کي حقن جو احترام سيکاري. ايستائين جو سندن ملڪ جو هر شخص، ڪنهن به بئي انسان جي جان, مال ۽ عزت کي ڇيهو رسائڻ اخلاقي طرح سان حرام سمجهي.
- (ي): پارٽيءَ جو هر هڪ ميمبر، پنهنجي زندگيءَ جون گهرجون پوريون ڪرڻ لاءِ. پاڻ محنت ڪري ڪمائيندو. سندس اهو فرض هوندو ته هو ملڪ مان بيڪاريءَ واري زندگيءَ جي طور کي ختر ڪرڻ جي ڪوشش ڪندو. هر امير ۽ غريب ماڻهوءَ کي ڪنهن نه ڪنهن طريقي سان پورهيت بنايو وڃي.

مولانا عبيدالله سنڌيءَ هن جماعت جي پليٽ فاربر تان پهريون دفعو لساني بنيادن تي هندستان جي ورهاڱي جو مطالبو ڪيو(30). لساني بنيادن تي قائم ٿيندڙ الڳ ۽ خودمختيار رياستن جو پاڻ ۾ شاھ ولي الله ۽ ويدانت جي گڏيل فلسفي جي بنياد تي اتحاد قائم ڪرڻ جو منصوبو پيش ڪيو-

مگر حالتون گهڻو اڳتي وڌي چڪيون هيون، ۽ ننڍي کنڊ جو عوام مذهب جي بنياد تي هندستان جي ورهاڱي جو آغاز پيدا ڪري چڪو هو. انهيءَ غوغاء ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي امن ۽ پيار جو پيغام ڪنهن به نہ ٻڌو. نه رڳو ايترو پر زندگيءَ به

سندس ساٿ نہ ڏنو ۽ هو سن 1944ع ۾ هيءُ جهان ڇڏي ويو. جيتوڻيڪ سندس وفات کان پوءِ هن جي پوئلڳن "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" کي قائم ۽ برقرار رکڻ لاءِ پاڻ پتوڙڻ جي ڪوشش ڪئي، پر وقت ۽ حالتن جو پاڻي گهڻو مٿي چڙهي چڪو هو.

ڪار ڪردگي: "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" کي مستقل بنائڻ لاءِ 24 ڊسمبر 1939ع تي دارالرشاد ۾، ۽ 28 ڊسمبر 1939ع تي ڪراچيءَ ۾ جماعت جي اڳواڻن جي گڏجاڻي ٿي(31). جنهن ۾ متفق طور تي "جمعيت خدام الحڪمة" جي نالي سان هڪ مستقل شعبو قائم ڪيو ويو، تہ جيئن هڪ طرف شاه ولي الله جي فلسفي تي پارٽيءَ جي ڪارڪنن کي متفق بنائجي ۽ ٻئي طرف ننڍي کنڊ جي سياسي ترقيءَ لاءِ "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ۽ "انڊين نيشنل ڪانگريس" جي وچ ۾ عملي اتحاد قائم ڪجي(32). سنڌ ۾ هن شعبي جا ٻه مرڪزا قائم ڪيا ويا. پهريون ڳوٺ جهنڊو، جنهن جي قيادت اتان جي راشدي پيرن جي حوالي ڪئي ويئي، ۽ ٻيو مظهر العلوم ڪراچي، جنهن جي اڳواڻي مولانا محمد صادق جي حوالي ڪئي ويئي، انهن مرڪزن ۾ قرآن جنهن جي اڳواڻي مولانا محمد صادق جي حوالي ڪئي ويئي. انهن مرڪزن ۾ قرآن شريف جو تفسير پڙهائي "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" جي عام ڪارڪنن جي ذهني تربيت ڪئي ويندي هئي ويندي هئي ويندي.

جيئن ته "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" جون جاگرافيائي حدون سنڌ کان ٻاهر به هيون، ان ڪري هن پارٽيءَ جا ڪجه شعبا ٻين هنڌن تي به قائم ڪيا ويا. "بيت الحڪمت" اهڙن شعبن مان هڪ هو. جنهن جو بنياد 17 نومبر 1940ع تي دهليءَ ۾ رکيو ويو (34)، ۽ سنڌ ۾ ان جون به شاخون کوليون ويون. * هن اداري جا به اڳيان ئي اغراض و مقاصد هئا، جيڪي "جميعت خدام الحڪمت" لاءِ مقرر ڪيا ويا هئا.

مولانا عبيد الله سنڌي پنهنجي دور جو هڪ تجربيڪار سياستدان هو. سندس سياسي حڪمت عملي ان وقت جي ڪيترن سياسي رهبرن ۽ اڳواڻن کان الڳ ۽ نرالي هئي. هن "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" جي وسيلي ننڍي کنڊ ۾ هندو مسلمان اتحاد جو منظر ڏسڻ ٿي گهريو. ان ڪري هن نه رڳو هم خيال عالمن کي پنهنجي قيادت بخشي، پر عوام جي سياسي تربيت ڪرڻ جو به هڪ منصوبو رٿيو. ان سلسلي ۾ 6 اگسٽ 1941ع تي دارالرشاد ڳوٺ پير جهنڊو ۾ "سنڌ ساگر انسٽيٽيوٽ" قائم

^{*} اهي شاخون ڳوٺ پير جهنڊي ۽ ڪراچيءَ ۾ قائمر ڪيون ويون هيون. (هيءَ معلومات علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان 20، فبروري 1981ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي).

ڪيو(35). جيڪو "جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽيءَ" جو هڪ تربيتي ادارو هو. ان کان پوءِ 25 جون 1942ع تي دارالرشاد لڳ "سنڌ ساگر نيشنل اسڪول" شروع ڪيو ويو." هن اسڪول ۾ ديني ۽ دنياوي علومن کان شاگردن کي بهرور ڪيو ويندو هو. انگريزي ۽ عربي زبانون لازمي طرح سيکاريون وينديون هيون. شاه ولي الله جي فلسفي سان گڏ ويدانت، فلاسافي ۽ يورپين فلاسافي به سيکاري ويندي هئي، ته جيئن اسڪول جي معرفت اهڙا ماڻهو پيدا ڪري سگهجن، جيڪي خدا جي خلق جي هڪ خادر جي حيثيت سان خدمت ڪري سگهن.

عالمن جو حصو: "جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽيءَ" اسان جي عالمن جي سياسي شعور ۽ عوام دوستيءَ جو مظهر هئي، پر جيئن تہ مولانا عبيدالله سنڌي ستت ئي هيءَ جهان ڇڏي ويو: ان ڪري هيءَ جماعت به ٿوري عرصي کان پوءِ ڪنهن حد تائين بي عمل بڻجي ويئي. تنهن هوندي به هن جماعت جي فعال هئڻ واري دور ۾ جن عالمن پنهنجون خدمتون سر انجام ڏنيون، تن جي نالن جو وچور هن طرح آهي: (36).

مولانا حبيب الله (لازّكاثو)، مولانا دين محمد "وفائي" (كراچي): مولانا شفيع محمد منگيو (نواب شاهه): مولانا عبدالله لغاري (سانگهڙ): مولانا عبدالله كيريو كڏهري (نواب شاهه): مولانا عبدالحق رباني (حيدرآباد): مولانا سيد عبدالرحيم شاه (نيّو): مولانا عبداللطيف جروار (لازّكاثو): مولانا عبيدالله لاشاري (لازّكاثو): مولانا عزيزالله جروار (سكر): مولانا علي محمد كاكيپوتو (شكارپور): مولانا حكيم غلام صديق (لازّكاثو): مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي (لازّكاثو): مولانا غلام مصلفيٰ قاسمي (لازّكاثو): مولانا بعد اكرم انصاري (حيدر آباد): مولانا محمد سليمان بگهيو (حيدر آباد): مولانا محمد سليمان بگهيو (كراچي): مولانا محمد عثمان بلرچ (كراچي): مولانا حكيم محمد معاذ (نوابشاه): مولانا محمد هاشر گهانگهرو (نوابشاه) ۽ مولانا نذير حسين جتوئي (لازّكاثو).

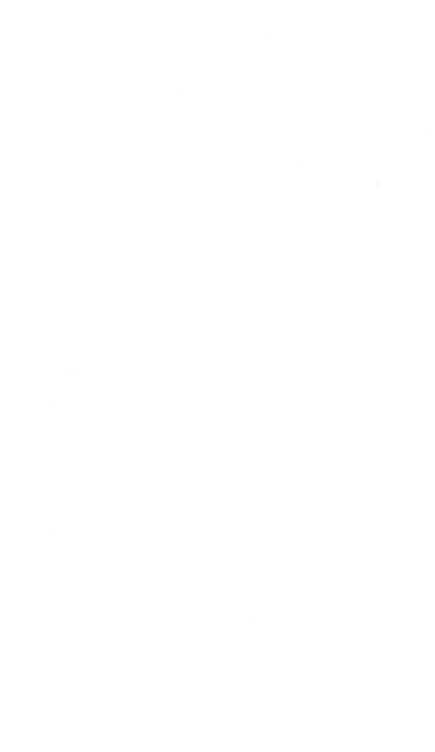
^{*}هن اسكول جو افتتاح 24 اپريل 1944ع تي ٿيو. ان موقعي تي اسكول جو نالو بدلائي "محمد قاسم ولي الله ٿيولاجيكل كاليج" ركيو ويو ۽ مولوي بشير احمد لڏيانويءَ كي لاهور مان گهرائي، انهيءَ جو وائيس پرنسيپال مقرر كيو ويو. (ڏسو، ماهوار توحيد، كراچي، ماهجون 1944ع، صو).

حوالا

- (I) محمد عثمان ڏيپلائي: "جناب سيد غلام مرتضيٰ شاه (جي اير سيد)" (مقالو) مهراڻ، سوانح نمبر . ڪراچي، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص681.
- (2) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 16-11-1936 P-4
- (3) هيء معلومات جناب غلام مصطفيٰ ڀرڳڙي کان تاريخ 28 مئي 1980ع تي ورتي ويئي.
- (4) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 16-11-1936 P-4
- (5) حيدر بخش الهداد خان جتوئي: "هاري انقلاب" حيدرآباد, هاري دارالاشاعت 1953ع ص65.
- هيءَ معلومات جناب غلام مصطفيٰ ڀرڳڙيءَ کان 28 مئي تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (7) اها معلومات مولانا محمد صالح "عاجز" كان 19 جون 1982 تى ورتى ويئى.
- (8) هيءَ معلومات شيخ عبد المجيد سنڌيءَ کان 26 بسمبر1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (9) ڏسو: "سنڌ آزاد پارٽيءَ جي جوڙجڪ"(دستور العمل) ڪراچي, الوحيد پرنٽنگ پريس 1935ع ص1
 - (10) اها معلومات مختلف اخبارن مان ورتبي وئي.
- (11) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 5-12-1936 P-4
 - (12) جي ايم سيد. "تئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدر آباد اسلامي پرنٽنگ پريس 1952 ص11.
- (13) ذكر كيل عالمن جا نالا بن ذريعن سان حاصل كيا ويا آهن: پهريون روزاند الوحيد جا مختلف برچا ۽ ٻيو انٽرويو جيكو 8 مئي1982ع تي علام غلام مصطفئ قاسمي كان ورتو ويو.
 - (14) جي اير سيد. "تئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدر آباد اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952 ص9.
- (15) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 2-11-1936 P-4
- (16) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 30-10-1936 P-4
- (17) جي. ايىر سيد: "جنب گذاريىر جن سين" (جلد ٻيو) حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص171٠
- (18) هيء معلومات خانبهادر ايوب كهڙي گان 3 مارچ 1979 تي انٽرويو ذريعي ورتى

رئى.

- (19) هيءَ معلومات جناب غلام مصطفيٰ ڀرڳڙيءَ کان 28 مئي 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي وئي.
- (20) Ram Gopal: "Indian Muslims", Bombay, Asia Publishing House, 1964, P. 287.
 - (21) اها معلومات مولانا صالح "عاجز" كان 19 جون 1982ع تى ورتى وئى.
 - (22) جي اير سيد. "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدر آباد اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952 ص10
- (23) See, The "Daily Gazette" Karachi, dated 3-11-1936 P-11
- (24) See, The "Daily Gazette" Karachi, dated 2.11.1936 P.4
- (25) See, The "Daily Gazette" Karachi, dated 10-11-1936 P-4
- (26) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P-287
 - (27) هيءَ معلومات جناب غلام محمد ڀرڳڙيءَ کان 28 مئي 1980ع تي ورتي ويئي.
 - (28) ڏسو: ماهوار"توحيد" ڪراچي، ماه سيپٽمبر 1946ع ص25.
 - (29) پروفيسر محمد سرور: "خطبات عبيدالله سنڌي" لاهور, سنڌ ساگر اڪادمي ص
- (30) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Ageny 1969 P. 181.
 - (31) پرونيسر محمد سرور: "خطبات عبيدالله سنڌي" لاهور، سنڌ ساگر اڪادمي ص 186
 - (32) ايضاً. ص 188
 - (33) هيءَ معلومات علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان 10 جنوري 1981ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (34) پروفيسر محمد سرور: "خطبات عبيدالله سنڌي" لاهور، سنڌ ساگر اڪادمي ص 223
 - (35) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي. ماه سيپٽمبر 1943ع ص12٠٠
 - (36) هيءَ معلومات علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان 10 جنوري 1981ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.



باب ڇهون مذهبي سياست جو دور



باب ڇهون مذهبي سياست جو دور آل انڊيا نيشنل ڪانگريس

تعارف: سن 1857ع جي جنگ آزاديءَ ننڍي کنڊ ۾ ٻهو ڏيون تبديليون آنديون. هڪ طرف مغل سلطنت جو خاتمو ٿي ويو، ۽ ٻئي طرف ڪمپني راڄ جي جاءِ برطاني جي تاج ورتي (1). هن آزاديءَ جي ڪوشش ۾ جيتوڻيڪ ڪا تنظيم نه هئي، پر ان هوندي به هندو توڙي مسلمان هڪڙي ئي مقصد سان ڌارين دشمنن جو مقابلو ڪرڻ لڳا.

هن جدوجهد كان پوءِ انگريزن جي راڄ نيتي پاليسيءَ ۾ وڏي تبديلي آئي، ۽ انهن "ويڙهايو ۽ حكومت كريو" جي حكمت عملي اختيار كئي(2). لارڊ دفرن (lord انهن "ويڙهايو ۽ حكومت كريو" جي حكمت عملي اختيار كئي(2). لارڊ دفرن (Mr. Hume) كي هندستان ۾ نفاق جي بح ڇٽڻ لاءِ آماده كيو. جنهن جي كوشش سان سن1885ع ۾ "آل انڊيا نيشنل كانگريس" (All India National Congress) جو قيام عمل ۾ آيو (3). اها جماعت جيكا انگريزن پنهنجي مفادن جي حاصل كرڻ خاطر قائم كرائي. سا اڳتي هلي سندن ئي خلاف هك مضبوط سياسي قوت بنجي پيئي.

ڪانگريس جر پهريون اجلاس 28 ڊسمبر 1885ع تي مسٽر بينرجيءَ (Mr.Bannerji) جي صدارت هيٺ ٿيو. جنهن ۾ 76 وفد (Delegates)، ۽ 30 همدرد شامل ٿيا(4).

انهيءَ ۾ ڪو بہ شڪ نہ آهي تہ سنڌ، "آل انڊيا نيشنل ڪانگريس" جي قيام ۾ ڀرپور حصو ورتو، " پر سنڌ ۾ هن جماعت جي باقاعده شاخ گهڻو پوءِ قائم ٿي. جنهن کان اڳ، يعني سن 1908ع ۾ سنڌ ۾ "سنڌ پراونشل ڪانفرنس" (Sind Provincial گان اڳ، يعني سن 1908ع ۾ سنڌ ۾ "سنڌ پراونشل ڪانفرنس شانگريس جي ئي اثر جو (Conference) سڏائڻ جو رواج پيو، ۽ اهي ڪانفرنسون به ڪانگريس جي ئي اثر جو نتيجو هيون(5).

[°] آل انڊيا نيشنل ڪانگريس جي قائر ٿيڻ لاءِ جيڪا پهرين سياسي اڳواڻن جي گڏجاڻي ٿي. تنهن ۾ سنڌ مان وشنداس ۽ ساڌر هيرانند شرڪت ڪئي. (ڀيرومل مهر چند آڏوڻي: "سنڌ جي هندن جي تاريخ" ڪراچي. هندستان پرنٽنگ پريس، 1947ع، ص78).

سن 1913ع ۾ ڪراچيءَ ۾ آل انڊيا نيشنل ڪانگريس جو ساليانو اجلاس ٿيو. جنهن کان پوءِ اجلاس ۾ شرڪت ڪندڙ ننڍي کنڊ جي ڪانگريسي اڳواڻن سنڌ جو دورو ڪيو. ۽ اهڙيءَ طرح سنڌ ۾ هيءَ جماعت پنهنجا پير پختا ڪرڻ لڳي، ۽ سن 1915ع ۾ هن جماعت جي باقاعدي سنڌ ۾ شاخ قائم ٿي(6) ساڳئي سال مهاتما گانڌي سنڌ جي دوري تي آيو، جنهن جي نتيجي ۾ ڪراچي، حيدرآباد، سکر ۽ شڪارپور ۾ هن جماعت جون شاخون قائم ٿيون، ۽ آخرڪار سن1917ع ۾ هيءَ سنڌ جي واحد، منظم ۽ عوام جي ترجمان جماعت بڻجي ويئي(7).

جيئن ته سنة ان وقت بمبئي پرڳڻي جو هڪ حصو هئي، ان ڪري سنة جي ڪانگريسي اڳواڻن اهو محسوس ڪيو ته هتان جي ڪانگريس ڪاميٽيءَ کي الڳ صوبائي حيثيت ڏني وڃي، ۽ ان کي بمبئي جي صوبائي ڪانگريس ڪاميٽيءَ ڪاميٽيءَ جي زيردستيءَ کان ٻاهر ڪڍيو وڃي (8). هتان جا اڳواڻ ان مقصد حاصل ڪرڻ ۾ ڪامياب ٿي ويا، ۽ سنڌ جي بمبئي کان عليحدگيءَ کان اڳ هتان جي ڪانگريس ڪاميٽي الڳ ۽ آزاد صوبائي خود مختياريءَ جي حيثيت سان سرگرم عمل رهي. هن جماعت کي سنڌ ۾ ڪامياب ۽ مقبول بنائڻ وارا هي اڳواڻ هئا:

ایسرداس: ناکرداس کیمسنگه: گوپالداس چینمل: درگداس آذوائی: جیرامداس دولترام: جمشید میهتا: مکی چینانند: چینمل پرسرام: چتریج تیجومل: داکتر چوئترام: مستر عبدالجبار: غلام علی چاگلا: مانسنگه چوهترمل، پروفیسر نارائنداس ملکائی، لالچند امر ذنو مل، پروفیسر واسوائی، سادو واسوائی، هیرانند کرمچند، هرچندراء وشنداس، پروفیسر گهنشیام چینانند، کیسومل تیکچند عکولورام وسن مل.

متي بيان كَيل اڳواڻن سنڌ ۾ هن جماعت كي هڪ مضبوط سياسي قوت بنائڻ واسطي ڪجه ذيلي جماعتون بائلهي "اسٽوڊنٽس كانگريس پارٽي" (Citizens Association)، "سٽيزنس ايسوسيئيشن" (Citizens Association)، ۽ "سوشل سروس ليگ "(Social Service league)).

لالا لجپترا، ۽ مدن موهن مالويہ سموري سنڌ جو دورو ڪيو. مکيہ شهرن جهڙوڪ: ڪراچي.
 حيدرآباد ۽ شڪار پور ۾ جلسا ٿيا. (وشنو شرما: ڊاڪٽر چوئٽرام پرتابرا، گدواڻي جي جيوني. بمبئي. هندستان ساهتيم مالا، 1927ع ص72 کان ص75)

كاركردگي: هن جماعت پنهنجي قيام كان وٺي پاكستان جي ٺهڻ تائين سنڌ توڙي هند جي بي مثال سياسي ۽ سماجي خدمت سرانجام ڏني. جيتوڻيك "سنڌ كانگريس كاميٽي" اكثر كري "آل انڊيا نيشنل كانگريس" جي صوبائي شاخ هئي، ۽ ان جي حمكت عمليءَ مطابق كر كندي هئي، پركيترين ڳالهين ۾ هن جماعت سنڌ جي ڏيهي سياست ۾ ب عملي طرح حصو ورتو، جنهن جو مختصر احوال هيك ڏجي ٿو:

رولٽ ائڪٽ (Rowlatt Act): پهرين مهاڀاري لڙائيءَ جي ختر ٿيڻ کان پوءِ پوري هندستان ۾ ڏڪر جهڙيون حالتون پيدا ٿي ويون. ملڪ جو ڪچو مال جنگي حالتن جي نذر ٿي ويو. قيمتون چوٽ چڙهي ويون. نتيجي ۾ چو طرف فساد ۽ لاقانونيت جون وارداتون ٿيڻ لڳيون. جنهن تي حڪومت مجبور ٿي، سن1919ع ۾ "رولٽ ائڪٽ" (Rowlatt Act) پاس ڪيو(10).

هن ائڪٽ موجب ملڪ جي انتظاميہ کي مڪمل اختيار ڏنو ويو تہ ملڪ مان ڪنهن بہ شخص کي جلاوطن ڪري، پريس جي آزادي ختر ڪري، يا سياسي قيدين تي ڪيس هلائڻ لاءِ خاص ٽربيونل مقرر ڪري(11). اهڙين ئي حالتن ۾ مهاتما گانڌي ملڪي سياست ۾ ٽپي پيو. رولٽ ائڪٽ خلاف امرتسري جليانوالا باغ ۾ ماڻهن جو وڏو ميڙ ٿيو. جنهن تي "جنرل ڊائر" (Grneral Dyre) بي هٿيار ماڻهن تي گوليون هلايون، جنهن ۾ 300 ماڻهو موت جو شڪار ۽ 200 ماڻهو شديد زخمي ٿيا(12)، ۽ ڪيترن ئي سياسي ڪانگريسي اڳواڻن کي گرفتار ڪيو ويو.

جليانوالا باغ جي انهيءَ خوني واقعي برصغير جي ماڻهن جي دلين کي مجروح کري وڌو. سنڌ ۾ ان واقعي تي شديد روِ عمل جو اظهار ڪيو ويو. ڪانگريس پارٽيءَ جي سهاري هيٺ سنڌ جي وڏن شهرن جهڙوڪ: ڪراچي، حيدرآباد: سکر ۽ شڪارپور ۾ سرڪار جي خلاف احتجاجي جلوس ڪڍيا ويا، ۽ ان دور جي پنجاب حڪومت جي مذمت ۾ ڪيترائي ٺهراءَ بحال ڪيا ويا(13). ننڍي کنڊ جي ٻين هنڌن تي ڏهڪاءُ پيدا ٿي چڪو هو. ڪنهن کي به پنجاب جون حدون پار ڪري، ٻئي صوبي ۾ پير پائڻ جي اجازت ڪانه هئي. اتان جي سياسي اڳواڻن کي چونڊي ڦاهي يا ڪاري پاڻيءَ جون سزائون ڏنيون ويون. پر سنڌ جو خطو فرنگي راڄ جي ڏاڍ ۽ ڏهڪاءَ اڳيان نہ جهڪيو، ۽ ان واقعي کان پوءِ جيڪب آباد ۾ جمشيد ميهتا جي صدارت هيٺ "سنڌ پراونشل کانورتهي کان پوءِ جيڪب آباد ۾ جمشيد ميهتا جي صدارت هيٺ "سنڌ پراونشل ڪانفرس" (Sind Provincial Conference) ٿي، جنهن ۾ کليءَ طرح سرڪاري

حكمت عمليءَ جي مذمت كئي ويئي. نه رڳو ايترو پر ان كان پوءِ سنڌ مان تمام گهڻا ماڻهو، جليانوالا جي شهيدن كي ڀيٽا ڏيڻ لاءِ هڪ اسپيشل ٽرين وسيلي امرتسر پهتا(14)، ۽ پنجاب جي سرزمين تي وڃي جنرل ڊائر (General Dyre) جي انساني كوس واري قدم كي نندي، اتي جي مايوس عوام ۾ نئون روح ڦوكيو. اهڙين حالتن كانگريس پارٽيءَ جي پروگرام ۾ اڃان به وڌيك جوش ۽ جذبو پيدا كيو.

عدم تعاون تحريك: سن 1920ع جي اجلاس ۾ كانگريس عدم تعاون تحريك جو پروگرام منظور كيو، ۽ ماڻهن كي پنهنجا لقب ڇڏڻ، ميمبرن كي كائونسلن تان استعفائون ڏيڻ، پنهنجا ٻار سركاري اسكولن ۽ كاليجن ۾ نموكلڻ، ۽ ولايتي شين جي نه واپرائڻ جي هدايت كئي، اهڙيءَ طرح مهاتما گانڌي، راييندرنات تئگور (Rabindaranath Tagore) ۽ مدارس هاءِ كورت جي جج سبرمينيد آثر (Subramania Aiyar) سركار كي پنهنجا خطاب موٽائي ڏنا، جنهن جي پيروي هندستان جي ٻين كانگريسي اڳواڻن به كئي (15). كانگريس اها تحريك 1.آگسٽ 1920ع كان 12، فبروري 1922ع تائين هلائي (16). هن تحريك جو اهو اثر ظاهر ٿيو. جو هندستان ۾ "سوديشي تحريك" كي وڏي هٿي ملي. كانگريس هك كروڙ روپين جو هندستان ۾ "هوديشي عيئي، ۽ پارٽيءَ ويه لک چرخا جاري كرايا(17). پوءِ جلد ئي ولايتي شراب نه پيئڻ، ۽ ولايتي كپڙي ساڙڻ جا پروگرام رٿيا ويا، ۽ ان سلسلي ۾ ولايتي شرابين ميشڻ، ۽ ولايتي ڪپڙي ساڙڻ جا پروگرام رٿيا ويا، ۽ ان سلسلي ۾ هزارين ماڻهن گرفتاريون پيش كيون.

سنڌ هن هل چل ۾ حصي کان وڌيڪ پنهنجي ڀيٽا پيش ڪئي. جيتوڻيڪ سنڌ ان وقت ڪو الڳ صوبو نه هئي، پر هتان جي ڪانگريسي اڳواڻن ايترو ته ڪر ڪيو، جنهن جو مثال هندستان جا ٻِيا صوبا پيش ڪرڻ کان قاصر هئا. ڪانگريسي اڳواڻن سنڌ جو ڪو تپو يا تعلقو نه ڇڏيو، جنهن ۾ هنن ان تحريڪ کي مقبول بنائڻ جي ڪوشش نه ڪئي هجي. جيڪب آباد جي ڳوٺن کان وٺي دور ٿرپارڪر جي ڳوٺن، مٺي ۽ ڇاڇري تائين ڪانگريس پنهنجي سڏ ڏيڻ ۾ ڪامياب ٿي ويئي(18).

ڪانگريس ۽ خلافت: انهيءَ عرصي دوران سنڌ ترڙي هند ۾ "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو، ۽ هن پارٽيءَ "آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ" جي سهڪار سان انگريزن خلاف تحريڪ هلائي. سنڌ ۾ ٻنهي پارٽين گڏجي هن ڌرتيءَ جي ڳوٺ ڳوٺ ۽ شهر شهر کي بيداريءَ جو سڏ ڏنو. ڪانگريس ڪاميٽيءَ خلافت تحريڪ جي سمورن دورن- يعني "ترڪِ موالات" ۽ "هجرت تحريڪ" ۾ ڀرپور ساٿ ڏنو. هندو توڙي

مسلمانن جي اهڙي اتحاد ۽ ڀائپيءَ جو مثال ننڍي کنڊ جي تحريڪ ۾ ملي نٿو سگهي. هن تحريڪ جي اڳواڻي مهاتما گانڌي ڪئي، ۽ هندو اڳواڻن مسلمانن جي مسجدن ۾ ، ۽ مسلمان عالمن وري هندن جي ٽڪاڻن ۾ تقريرون ڪيون(19). جيئن ته "خلافت تحريڪ" جو تفصيلي ذڪر هن ئي مقالي جي ٻئي هنڌ تي ڪيو ويو آهي، ان ڪري هتي تفصيل ۾ وڃڻ جي ضرورت محسوس نٿي ٿئي. البت ايترو چئي سگهجي ٿو ته ڪانگريس ۽ خلافت جي اتحاد ڪيتري وقت تائين آزمائشون سهي فرنگي سرڪار جي اقتداري ٿنڀن کي لوڏي رکيو.

تعليمي خدمتون: سنڌ ڪانگريس ڪاميٽيءَ ننڍي کنڊ توڙي سنڌ جي سياسي خدمت ڪرڻ سان گڏوگڏ هتان جي تعليمي ترقي لاءِ بہ پاڻ پتوڙيو، خاص ڪري خلافت تحريڪ دوران، جن ماڻهن انگريز سرڪار جي تعليمي ادارن جو بائيڪات ڪيو، تن جي مستقبل سنوارڻ لاءِ ڪانگريس ڪاميٽيءَ نه رڳو کين قوم پرست اڳواڻن طرفان قائم ڪيل تعليمي ادارن ۾ داخل وٺڻ تي همٿايو، پر کين مالي مدد ڏيڻ جو بہ پروگرام سٽيو، سن292ع ۾ سنڌ جي سمورين ضلعي شاخن شاگردن کي اسڪالرشپ ڏيڻ جو آغاز ڪيو، اها نه رڳو هندن کي ڏني وئي، پر ان ۾ مسلمانن کي به ايگي ڀائيوار بنايو ويو، ۽ هر هڪ شاگرد کي هرماه 15 رپيا ڏنا ويندا هئا(20).

سوديشي تحريك: خلافت ۽ كانگريس جي اتحاد سان جڏهن فرنگي سركار خلاف پهرئين عدم تعاون جي تحريك هلي ته هن جماعت پوري ننڍي كنڊ ۾ "سوديشي تحريك" جو به آغاز كيو. جنهن جو مقصد هي هو ته عوام ۾ ڏيهي شين جي واپرائڻ جي عادت وڌي وڃي، ۽ ملكي وسيلن كي كر آڻڻ لاءِ آماده كيو وڃي. سنڌ كانگريس "سوديشي تحريك" كي زور وٺائڻ لاءِ هيٺيان اپاء ورتا: (12).

- آبائي انڊين ليگ" (Buy Indian League) جي سهاري هيٺ نج ڏيهي شين جي وڪڻڻ لاءِ سنڌ جي مختلف ڳوٺن ۽ شهرن ۾ دڪان کولڻ.
- چرخي جي استعمال کي عام بنائڻ لاءِ مختلف هنڌن تي سوديشي نمائشون
 لڳائڻ.
- 3. پرڏيهي شين جي پئڪنگ ڪرڻ. جنهن وسيلي ولايتي شيون ساڙڻ ۽ تبليغ وسيلي عوام کي انهن شين جي واپرائڻ کان منع ڪرڻ.

پرنس آف ويلس جو بائيڪاٽ: 1922ع ۾ پرنس آف ويلس جڏهن هندستان جي دوري تي آيو، تڏهن سنڌ جو دورو پڻ سندس پروگرام ۾ شامل هو، پر سنڌ جي غيرتمند عوار، ڌارين جي حڪومت جي خلاف پنهنجي دلي جذبن ۽ امنگن جي اظهار لاءِ شهزادي جو سنڌ ۾ اچڻ گوارا نہ ٿي ڪيو. ان سلسلي ۾ سنڌ جي ڪانگريسي اڳواڻن ۽ ٻين قومي جماعتن ملي، سنڌي، گجراتي ۽ انگريزي ٻولين ۾ پوسٽر ڇپارايا. جن تي اهو لکيو ويو تہ سنڌ جو عوام شهزادي جي استقبال جو بائيڪات ڪري. پر سنڌ جي انگريز ڪمشنر شهزادي جي اچڻ کان هڪ هنتر اڳ ۾ اهو حڪر جاري ڪيو تہ ڪا به پريس يا اخبار شهزادي جي بائيڪات بابت ڪو به لفظ نه ڇاپي، عن دوري ان جو ڪو پرچار ڪري. حڪومت جي انهن سختين جي باوجود تاريخ 14، مارچ 1922ع تي سنڌ جي مکيد اخبارن، نه رڳو حڪومت جي اهڙي قدم جي مذمت عثي، پر اخباري سائز جي پني ۾ ماڻهن کي اها اپيل ڪئي ته هو هر حالت ۾ شهزادي جو بائيڪاٽ ڪري، پنهنجي قومي غيرت جو شبوت ڏين. اهي اخبارون ۽ پوسٽر پوليس جي سخت چوڪسيءَ جي باوجود ڪراچيءَ جي مکيد رستن ۽ ڀتين تي لڳايا ويا. پرنس آف ويلس جڏهن 17 مارچ 1922ع تي ڪراچيءَ پهتو ته هڪ به ماڻهو سندس آجيان لاءِ نه ويو. شهر ۾ چوطرف هڙتال رهي. ايتري قدر جو ٽانگا به نه هليا. سخت ٿڏ ۾ ڪنهن پوليس يا ملٽريءَ واري کي چانهه جو سگريٽ ٻيڙي به نه ملي. سخت ٿڏ ۾ ڪنهن پوليس يا ملٽريءَ واري کي چانهه جو ڪوپ به نصيب نه ٿيو.(22).

سائمن ڪميشن: هن ڪميشن جو ذڪر اڳ ۾ ٿي چڪو آهي ته سندس رويي تي هتان جي عوام ۽ پارٽين طرفان بي اطمينانيءَ جو اظهار ڪيو ويو. ۽ جڏهن ڪانگريس پارٽيءَ جو وارو آيو ته ان به ڪميشن جي مخالفت ۾ پاڻ ملهايو.

سنڌ جي ڪانگريس ڪاميٽيءَ 30، جنوري 1928ع تي "سائمن ڪميشن" جي بائيڪاٽ ڪرڻ جو پروگرام بنايو، ۽ هن ڪميشن جڏهن 23، فيبروري 1928ع تي بمبئيءَ جي سرزمين تي پير رکيو ته پارٽيءَ جي سڏ تي پوريءَ سنڌ ۾ هڙتال ٿي. اها ڪميشن جڏهن ڪراچي پهتي ته ڪانگريسي اڳواڻن جي ڪوششن سان ان جو مڪمل بائيڪاٽ ڪيو ويو، ڪن جزوي ۽ اڻ ڄاتل ماڻهن کان سواءِ باقي مکي ماڻهن ملڪ جو سڏ اونائي ڪميشن اڳيان شاهديون نه ڏنيون. اهڙيءَ طرح ڪراچيءَ مان ڪميشن جا ميمبر نراس ٿي ملڪ جي ٻين ڀاڱن ڏانهن روانا ٿيا(23).

نهرو رپوٽ: هن وقت تائين انگريزي راڄ خلاف ڪيتريون ئي تحريڪون هلي چڪيو هيون، ۽ ان وقت جون مڙئي سياسي پارٽيون پنهنجي تجربي جي روشنيءَ ۾ هن راءِ تي پهتيون تہ انگريزن کان هر حالت ۾ جند ڇڏائڻ گهرجي. جنهن لاءِ سن1928

ع ۾ "آل پارٽيز ڪانفرس" (All Parties Conference) سڏائي ويئي(24). هيءَ ڪانفرس حقيقت ۾ "سائمن ڪميشن"جو ردِ عمل هئي. ڪانفرس ۾ موتي لعل نهروءَ جي صدارت هيٺ هڪ ڪاميٽي مقرر ڪئي ويئي. ان ڪاميٽيءَ جلد ئي هڪ رپوٽ تيار ڪئي، جنهن کي "نهرو رپوٽ" سڏيو وڃي ٿو(25). هن رپوٽ جي تياري ۾ سنڌ جي ڪانگريسي اڳواڻن اهر پارٽ ادا ڪيو. اهو سندن ئي ڪوششن جو نتيجو هو، جو هن رپوٽ ۾ سنڌ جي بعبئيءَ کان علحدگيءَ واري تحريڪ جي مخالفت ڪئي ويئي هئي. جيئن ته هن تحريڪ ۽ ڪانگريس جو ذڪر هن ئي مقالي جي ٻئي هنڌ تي ڪيو وير آهي، ان ڪري هتي تفصيل ڏيڻ مناسب نٿو لڳي.

لوڻ جي ستيا گره: بسمبر 1928ع واري سالياني اجلاس ۾ ڪانگريس انگريزي سرڪار کان گهر ڪئي ته: هڪ سال اندر هندستان کي بيٺڪي حڪومت ڏني وڃي (26). سرڪار طرفان هن گهر تي به ڪو توجه نه ڏنو ويو، جنهن ڪري سن 1929ع واري اجلاس ۾ ڪانگريس جي مڙني ڌرين گڏجي ٺهرا ۽ بحال ڪيو ته هاڻي ڪانگريس مڪمل آزادي يا مڪمل بيٺڪي حڪومت حاصل ڪرڻ جي ڪوشش ڪندي(27). انهيءَ سلسلي ۾ 26، جنوري 1930ع تي "آزاديءَ جو ڏينهن" مترر ڪيو ويو جيڪو ڪانگريس طرفان هر سال ملهايو ويو(28). ساڳي سال ئي مهاتما گانڌيءَ "لوڻ جي ستياگره" شروع ڪئي(29). جنهن جي نتيجي ۾ سڄو هندستان ان ستياگره جي لپيٽ ۾ اچي ويو. هڪ سال اندر 87 ماڻهو جيل ۾ ويا، جن ۾ ٻه هزار رڳو عورتون هنيون (30).

كانگريس جي اها سول نافرمانيءَ واري تحريك 4 مارچ 1930ع كان شروع ٿي. سن 1931ع ۾ سركار مجبور ٿي مهاتما گانڌيءَ سان ڳالهيون كيون، ۽ "گانڌي ارون ٺاه" (Gandhi .Irwin Pact) ٿيو. جنهن موجب كانگريس 4 مارچ 1931ع تي "ستياگره" ختم كئي(31).

سنڌ ۾ هن تحريڪ جو آغاز 6، اپريل 1930 ع کان ٿيو. سنڌ جي مشهور شهرن جهڙوڪ: ڪراچي: حيدر آباد: سکر ۽ شڪار پور ۾ روزان گڏ جاڻيون ٿيڻ لڳيون. هن ئي تحريڪ دوران 12، اپريل 1930ع تي ڪراچيءَ ۾ عوام تي گوليون هلايون ويو. جنهن جي نتيجي ۾ ٻه ڪانگريسي موت جو شڪار ٿيا. * پر سنڌ جو عوام اهڙن خوني

[•] اهي هثا:

والنّيئر مينگهراج دنيچند ۽ دتاييه مرهٽي (وشنو شرما: "دِاكٽر چوئٽرام پر تابراء گدواڻي جي جيوني". بمبئي هندستان ساهتيه هالا، 1967ع، ص116) .

حملن کان به موعوب نه ٿيو. ۽ هن اول کان وٺي آخر تائين تحريڪ کي زور وٺرايو.

انگريز سامراج هند واسين کي خوش ڪرڻ لاءِ "گول ميز ڪانغرنس" Round) عنديءَ Table Conference) سڏائن جو بندوبست ڪيو. سن 1931ع ۾ مهاتما گانڌيءَ ڪانگريس طرفان ان ڪانغرنس ۾ شرڪت ڪئي(32)، پر کيس چڱي موٽ نہ ملي. تنهنڪري سن1932ع کان وٺي ٻيو ڀيرو "ستياگره تحريڪ" هلائي ويئي، جيڪا 1934ع تائين جازي رهي(33). تحريڪ جي دوران اٽڪل هڪ لک ماڻهو جيلن ۾ ويا، ۽ سرڪار طرفان ڪيترن ئي ماڻهن جون مختلف هنڌن تي زمينون ضبط ڪيون ويون. ۽ ڪانگريسي ڪارڪنن جون ڪيتريون اخبارون ۽ پريسون بند ڪيون ويون(34).

سنڌ بہ سرڪاري سختين جي دہاء هيٺ آئي. سموري ڀارت ۾ پهرين پريس ۽ اخبار جيڪي ضبط ڪيون ويون، سي سنڌ جون هنيون*. ڪيترن ئي اڳواڻن کي گرفتار ڪيو ويو. جن ۾ ڊاڪٽر چوئٿرام، وشنو شرما، مهراج لوڪرام، هيرانند ڪرمچند، ڊاڪٽر وشنداس، هاسومل ايسرداس ۽ مانسگ چوهڙمل جا نالا قابل ذڪر آهن(35).

سن 1935ع ۾ هندستان کي نران سڌارا مليا(36). تنهن کان پرءِ ڪانگريس جي شدت واري پاليسيءَ ۾ ڪجه نرمي آئي. سن 1936ع ۾ نون سڏارن جي روشنيءَ ۾ چونڊون ڪرايون ويون. انهن چونڊن ڪانگريس کي 11 صوبن مان 7 صوبن ۾ خاص وزارتون. ۽ آسام توڙي سنڌ ۾ گڏيل وزارتن قائم ڪرڻ جو موقعو فراهم ڪيو(37). هنن چونڊن جي نتيجي ۾ ڪانگريس ۽ مسلم ليگ صوبائي حڪومتون قائم ڪيون.

كانگريس ۽ اسيمبلي: پوءِ ستت ئي ٻي مهاڀاري لڙائيءَ جي ابتدا ٿي. جنهن ۾ كانگريس ڏٺو ته برطانيه. شهنشاهيت جي بچائڻ لاءِ هندستان كي استعمال كري رهي آهي. ان كري موقعو ۽ مهل ڏسي "كانگريس وركنگ كاميٽيءَ" هك پڌر نامي ذريعي حكومت كان يقين وٺڻ چاهيو ته لڙائيءَ ۾ هندستان كي هك آزاد فريق

اها اخبار هئي: "هندوجاتي" جنهن جو ايڊيٽر وشنو شرما هو. ۽ پريس وري مهراج لوڪرام جي هئي. هن پريس جو دفتر، ڪاغذ پٽ، ۽ ڪتاب جلائي سمنڊ ۾ اڇلايا ويا، ۽ پريس جو چاليهن هزارن جو سامان ٽن هزارن ۾ نيلام ڪيو ويو. (وشنو شرما: "ڊاڪٽر چؤئشرام پرتا براءِ گدوائي جي جيوئي" بمبئي، هندوستان ساهتيه مالا 1967ع ص 176).

۽ حڪومت جو درجو ڏنو وڃي(38). برطانيہ سرڪار طرفان ڪانگريس کي ڪو جوڳو جواب نہ مليو. ان ڪري آڪٽوبر 1939ع ۾ ڪانگريس وزارتن پنهنجي جماعت جي هدايت تي استعيفائون ڏيئي ڇڏيون(39).

بي مهاياري لڙائي برِصغير جي سياسي تاريخ ۾ وڏي اهميت رکي ٿي. ڇاڪاڻ ته هيءُ ننڍو کنڊ به انهيءَ جي اثر کان بچي نه سگهيو. مهاياري لڙائيءَ جي ابتدا ۾ يورپي قوتن کي عارضي شڪست ملي، ۽ ايشيا ۾ جاپان جي شهنشاهيت غلام قومن جو سهارو محسوس ٿيڻ لڳي(40). اهڙين حالتن ۾ جاپان خود انگريز سرڪار لاءِ خطرو بنجي پيو. وقت جي حالتن پٽاندڙ انگريز سرڪار اهو محسوس ڪيو ته هند واسين تي هٿ رکيو وڃي. جنهن لاءِ برٽش سرڪار "سراسٽيفورڊ ڪرپس" (Sir Stafford Cripps) جي اڳواڻيءَ هيٺ هڪ مشن هندستان موڪليو، ته جيئن هندستاني اڳواڻن سان آئيني ۽ سياسي ٺاه ڪري سگهجي(41). ڪانگريس "ڪرپس مشن" (Cripps Mission) سان ڪو به تعاون نه ڪيو. نه صرف ايترو بلڪ ان جي تجويز کي به رد ڪري ڇڏيو ۽ 8 آگسٽ 1942ع تي "هندستان ايترو بلڪ ان جي تحريڪ هلائي(42).

سنڌ به هن ۾ ڀرپور حصو ورتو. تحريڪ جي آغاز سان گڏ سرڪاري سختي شروع ٿي. ڪراچي: شڪار پور: لاڙڪاڻي: ميرپور خاص: نوابشاهد: دادو ۽ ٻين مکيه شهرن ۾ بروقت گرفتاريون ٿيون. حيدرآباد ۽ سکر ۾ تن ڏينهن ۾ حرن جي آزار سبب مارشل لا لڳل هو. ماڻهو مارشل لا جي سختين هيٺ اڳيئي آزاريل هئا. تنهن ڪري بروقت ڪي ٿوريون گرفتاريون ٿيون، ۽ ڪم ڪندڙ سوچي رهيا هئا تہ مارشل لا جي سختين هوندي به ڪيئن هلچل کي هلائجي. داڪٽر چوئٽرام، شري جيرامداس ۽ ٻيا سنڌ جا مکيه ڪم ڪندڙ جيل ۾ نظر بند ٿي چڪا هئا. انهن اڳواڻن کان سواءِ پٺيان ڪم ڪندڙن ڪجه وقت هلچل کي پوريءَ طرح هلايو، سوين والنٽيئر ملڪي سڏ اونائي هڪٻئي پٺيان جيل ڀرڻ لڳا. ميٽنگن پٺيان ميٽنگون ٿيڻ لڳيون. سرگسون نڪرڻ لڳيون. جوانن لٺيون پئي سٺيون. اختياريءَ وارا کين ڦٽڪا هڻڻ لڳا. هزارن جي تعداد ۾ ماڻهو جيلن ۾ ويا، ۽ سنڌ پنهنجو شان اوچو رکيو(43).

هن ئي عرصي دوران جڏهن ڪانگريس جا سڀئي اڳواڻ جيلن ۾ هئا، تہ جي. ايمر. سيد موقعي جو فائدو وٺندي، 3 مارچ 1943ع تي اهر تاريخي ٺهراءُ پيش ڪيو، جنهن مطابق سنڌ کي پاڪستان ۾ شامل ٿيڻ جي خواهش ڏيکاري ويئي. هن واقعي ڪانگريس پارٽيءَ کي سنڌ اسيمبليءَ جي ايوان توڙي ان کان ٻاهر گهڻو بدنام ڪيو. ان کان پوءِ ننڍي کنڊ جي سياست ۾ ڪيتريون ئي تبديليون آيون، ۽ سنڌ ڪانگريس پارٽي هن خطي کان وڌيڪ ننڍي کنڊ جي انهن سياسي حالتن ۽ تبديلين ۾ دلچسپي وٺڻ لڳي. انهن مکي تبديلين جو ذکر هيٺ ڪجي ٿو:

" ڪرپس مشن" (Cripps Mission) جي ناڪام ٿيڻ کان پوءِ 1945ع ۾ "شملا ڪانفرنس" سڏائي ويئي(44). هيءَ ڪانفرنس به ڪانگريس جي تعاون نہ ملڻ سبب ڪامياب نہ ٿي سگهي. ساڳئي سال ۾ ئي انگلنڊ مان " ڪئبينيٽ مشن" Cabinet) هندستان ۾ آيو(45). جنهن ليگ توڙي ڪانگريس جي اڳواڻن سان ملاقاتون ڪيون: مگر ڌرين جي وچ ۾ ٺاه ٿي نہ سگهيو. جنهن ڪري سن 1946ع ۾ هن مشن پنهنجو هڪ طرفو منصوبو پيش ڪيو. ڪانگريس جزوي طرح، ۽ مسلم ليگ مڪمل طور تي اهو منصوبو تيول ڪيو(46).

ڪئبنيٽ مشن جي انهيءَ منصوبي مطابق مسلم ليگ کي عارضي حڪومت ٺاهڻ جو حق پئي حاصل ٿيو. مگر عملي طرح تي ائين نہ ٿيو. ان جي برعڪس ڪانگريس کي حڪومت ٺاهڻ جي اجازت ڏني ويئي، جنهن تي مسلم ليگ پنهنجو ردِ عمل ظاهر ڪندي منصوبي تي ڏنل رضامندو ۽ منظوري واپس ورتي، ۽ 14 آگسٽ عمل ظاهر ڪندي منصوبي تي ڏنل رضامندو ۽ منظوري ماهايو(1940).

كانگريس ۽ مسلم ليگ جي انهيءَ پاليسيءَ سبب هندستان جون حالتون خراب ٿي ويون، ۽ هر هنڌ فرقيوارانه فساد ٿيڻ لڳا. اهڙين حالتن ۾ 24، مارچ 1947ع تي "لارڊ مائوٽ بيٽن" (Lord Mountbatin) حكومت جون واڳون سنڀاليون(48)، ۽ هندستان جي ورهاڱي جو اعلان ڪيو.

عالمن جو حصو: سنڌ ۽ هند جي سياست ابتدا کان وٺي "خلافت تحريك" تائين هڪ ئي رنگ ۾ رهي. هن عرصي کي جيكڏهن اسين اتحاد جو دور چئون تہ كو به وڌاؤنه ٿيندو. جيتوڻيك كانگريس، مسلم ليگ ۽ كي ٻيون سياسي پارٽيون الڳ الڳ نقطه نظر رکندڙ ماڻهن تي مشتمل هيون، پر پوءِ به انهن جا اختلاف محدود رهيا. اهو ئي سبب آهي جو هن عرصي دوران سڏايل سياسي جلسن ۾ اڳواڻ كنهن تفريق كان سواءِ شركت كندا هئا، انهن ئي حالتن ۾ كانگريس ۽ مسلم ليگ جي وچ ۾ لکنؤ وارو معاهدو ٿي سگهيو. هندو خواه مسلمانن جو اهو اتحاد "عدم تعاون جي تحريك" يا گئي ائين چئجي ته مخلافت تحريك" يا ثين برقرار رهيو.

خلافت تحريك دوران اعتماد ۽ ڀائيچاري جو اهو عالم رهيو. جو مسلمانن

مهاتما گانڌيءَ جي قيادت قبول ڪئي. خلافت تحريڪ جي خاتمي کان پوءِ سنڌ خواه هند جي سياست تي مذهبي رنگ چڙهڻ لڳو ڪيترا مسلمان "آل انڊيا مسلم ليگ "آلها" الهه المثل الم

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سنڌ اندر ٺٽر. دادو، جيڪب آباد، حيدرآباد روهڙي، سکر، شڪارپور، ڪراچي، گهوٽڪي، لاڙڪاڻو، نواب شاه ۽ هالا ڪانگريس جماعت جا مکي مرڪز هئا، انهن مرڪزن يا خود ڪانگريس جماعت ۾ سنڌي عالمن جي جيتوڻيڪ اڪثريت نه ئي. پر ان هوندي به هتان جي ڪانگريس سان کن عالمن جو ساٿ رهيو، سنڌ جي اهڙن ڪانگريسي عالمن جو مختصر وچور هن طرح ٿئي ٿو: (49)

مولانا احمد علي نارائي (ترپارڪر). مولانا سيد تاج محمود امروتي (شڪارپور)، مولانا غلهور الحسن درس (ڪراچي). مولانا عبدالڪريم چشتي (شڪارپور)، مولانا عبدالوهاب لنڊ (بدين)، مولانا عزيز الله جروار (سکر)، مولانا غلام فريد سپريو (لاڙڪاڻو)، مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي (لاڙڪاڻو)، مولانا حضير فتح محمد سيوهاڻي (ڪراچي)، مولانا محکم الدين پرهياڙ (حيدرآباد)، سولانا محمد حادق کڏي وارو حسين (.....)، مولانا محمد صالح "عاجز" (شڪارپور)، مولانا محمد صالح سون (بدين)، مولانا محمد صديق ڪڇي (ڪراچي)، مولانا محمد عثمان بلوچ (ڪراچي)، مولانا محمد عثمان عليج (ڪراچي)، مولانا محمد عثمان عليج (ڪراچي)، مولانا محمد عثمان عليج مولانا محمد عثمان عليج مولانا مير محمد معاد پيرزادو (نواب شاه)، مولانا محمد يعقوب حاجاڻو (ٿرپارڪر) ۽ مولانا مير محمد حسن ٽالپر (نواب شاه).

آل اندیا مسلم لیگ

تعارف: انگريز سركار، جيكا اگ سن 1857ع واري واقعي ۾ ننڍي كنڍ جي التعاد ۽ قومي غيرت جو مظاهروڏسي چكي هئي، تنهن اهڙي نئين سياسي بيداريءَ كي پنهنجي تسلط ۽ مفادن جي خلاف محسوس كيو. جنهن كري حكمرانن روالتي حڪمت عمليءَ کي جاري رکندي، ننڍي کنڊ جي مختلف قومن ۾ مذهبي متهيد واري طريقي سان نفاق وجهڻ شروع ڪيو.

كانگريس جو قيام ننڍي كنڊ جي عوام جي سياسي بيداريءَ كان سواءِ انگريز سركار لاءِ سٺر سوڻ ثابت ٿيو. مسٽر هيوم (Mr. Hume) جي هن جماعت جي قيام، ۽ ابتدائي ڪار كردگيءَ ۾ حصي وٺڻ جي عمل، وقت جي كيترن ئي مسلمانن كي يقين جي حد تائين بدظن كري ڇڏيو ته سركار ڏٺو وائنو غير مسلم عوام جي سرپرستي كري رهي آهي. ننڍي كنڊ جي مسلمانن مان خاص طرح سان سرسيد احمد خان مسلمانن كي كانگريس ۾ شامل ٿيڻ كان روڪڻ لاءِ هڪ تحريڪ جي طور تي شديد مخالفت كئي(50)

سر سيد احمد خان ۽ سندس فڪري پوئلڳن جي تبليغ ۽ مختلف قومن جي ترقيءَ ۾ وڏي فرق. ننڍي کنڊ جي غربت ۾ مبتلا پرڳڻن، خاص طرح سان بنگال جي عوام کي ڪانگريس کان پري رکڻ ۾ اهم ڪردار ادا ڪيو. اهڙيءَ طرح سان هن جماعت کي هندن جي جماعت تصور ڪرڻ لڳا. انهيءَ سلسلي ۾ 11 نومبر 1888ع تي ڊاڪا ۾ هڪ اجلاس ٿيو. جنهن ۾ هي ٺهراء بحال ڪيا ويا:

- اجلاس جي متفق راءِ آهي تہ ڪنهن بہ مسلمان کي، ڪنهن بہ صورت ۾ ڪانگريس سان شامل ٿيڻ نہ گهرجي، ۽ نہ ئي ان جي ڪنهن تحريڪ ۾ حصو وٺڻ گهرجي.
 - 2. ڊاڪا ۽ ان جي پسگردائيءَ جي مسلمانن کي نيشنل ڪانگريس سان ڪا به همدردي نہ آهي، ۽ نہ ئي ان جي اغراض ومقاصد کي تسلير ڪن ٿا. اجلاس هيءُ به اعلان ڪري ٿو تہ مسلمان نہ تہ ان ۾ شريڪ ٿيندا، ۽ نہ ئي پنهنجو ڪو وقد موڪليندا. (51)

وقت جي سرڪار جڏهن ڏٺو تہ ڪانگريس خلاف بنگال ۾ هڪ تحريڪ اڀري رهي آهي. تڏهن انهن حالتن جي باهر تي گاسليٽ هاريندي 1905ع ۾ بنگال جو ورهاڱو ڪيو(52).

حڪومت جي هن قدم ، ننڍي کنڊ جي ان غير مسلم عوام کي گهٽين ۾ نڪرڻ تي مجبور ڪيو، جيڪو هن کان اڳ مسلمانن جي ڪانگريس خلاف پاليسي، ۽ عدم تعاون کان مايوس ٿي چڪو هو. اهڙيءَ طرح ننڍي کنڊ جو عوام پهريون ڀيرو هڪ ٻئي جي سامهون ٿيو، ۽ مذهب جي بنياد تي ٻن ڌڙن ۾ ورهائجڻ لڳو(53).

انهن حالتن ۾ ڪانگريس تي تنگ نظر هندو طبقي جو دٻاءِ پوڻ لڳو. ۽ هيءَ جماعت قومي مسئلن کي حل ڪرڻ بجاءِ. برطانيہ سرڪار جون همدرديون حاصل ڪرڻ لڳي. جنهن ڪري منجهس مسلمانن جي ضرورتن ۽ خواهشن مطابق درست منصفانہ فيصلي ڪرڻ جي نا اهليت جون نشانيون ظاهر ٿيڻ لڳيون. اهڙين حالتن مسلمانن کي سياسي طرح سان منظر ڪرڻ لاءِ مجبور ڪيو.

سڀ کان اڳ سر آغا خان ۽ نواب محسن الملڪ هن نتيجي تي پهتا ته، انهن لاءِ فقط هڪڙو ئي رستو وڃي بچيو آهي ته ننڍي کنڊ جا مسلمان پنهنجي خود مختيار جماعت ٺاهي، عليحده نموني ڪر ڪن، ۽ برطاني حڪومت کان پنهنجي جداگاند سياسي حيثيت، اهڙي الڳ فوم جي صورت ۾ تسليم ڪرائين جيڪا ٻيءَ قوم ۾ سمايل هجي(54).

انهيءَ سلسلي ۾ سن 1906ع ۾ نواب سلير الله خان جي ڪوششن سان ڊاڪا ۾ ننڍي کنڊ جي مکي مسلمان اڳواڻن جي هڪ گڏجاڻي ٿي(55)، جنهن ۾ مسلم ليگ جو قيام عمل ۾ آندو ويو. گڏجاڻيءَ ۾ نواب سليم خان جي رٿ تي، جنهن جي تائيد حکيم اجمل خان، مولانا محمد علي، ۽ مولانا ظفر علي خان ڪئي(56). مسلم ليگ جا هيٺيان اغراض ومقاصد به مقرر ڪيا ويا: (57).

- مندستان جي مسلمانن ۾ برطاني حڪومت لاءِ وفاداريءَ جي جڏبن کي ترقي
 ڏيڻ، ۽ ايندڙ حالتن ۾ حڪومت خلاف جيڪڏهن ڪي غلط فهميون پيدا ٿين تہ
 اهي دور ڪرڻ.
- مندستان جي مسلمانن جي سياسي حقن, مفادن جي حفاظت, مسلمانن جي ضرورتن ۽ امنگن جي حڪومت اڳيان ترجماني ڪرڻ.
- انهن مقصدن کي نقصان رسائڻ کان سواءِ ٻين جماعتن خلاف مسلمانن جي جڏبن
 جي پرورش کي روڪڻ.

ساڳيءَ گڏجاڻيءَ ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" جا پهريان عهديدار هن طرح چونڊيا ويا: (58).

صدر: هرزائل هائينيس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان.

سيكريٽري: نواب وقار الملك

جوائنت سيكريٽري: نواب محسن الملك

مطالعي هيٺ آيل دور ۾, سنڌ ننڍي کنڊ جي انهن ملڪن مان هڪ هو, جيڪو مڙني کان پوءِ فرنگي طاقت جو نشانو بڻيو. هيءُ ملڪ سن 1843ع ۾ انگريزن جي قبضي هيٺ آيو(59). جنهن کان اڳ باقي ننڍي کنڊ جو ڳچ حصو جيتوڻيڪ انگريزي تهذيب ۽ تمدن جو اثر قبول ڪري پنهنجو رد عمل ظاهر ڪري چڪو هو، پر سنڌ جي باشعور ۽ محب وطن عوام انگريز سرڪار جي انهيءَ "ويڙهايو ۽ حڪومت ڪيو" واري حڪمت عمليءَ خلاف نہ صرف سنڌ، بلڪ پوري ننڍ کنڊ جي سياسي ڌارا ۾ شامل ٿي متحرڪ ٿيڻ لڳو.

سنڌي عوام سنڌ اندر "سنڌ سڀا" ۽ "مجمع محمدي" ذريعي سياسي طرح سان منظر ٿي چڪو هو، ۽ ان کان پوءِ سن 1885ع ۾ جڏهن "آل انڊيا ڪانگريس پارٽي" ٺهي ته هتان جي سياسي اڳواڻن، ان جماعت جي قيام عمل ۾ اهر ڪردار ادا ڪيو! ان بعد جيئن ئي ننڍي کنڊ جي مسلمان اڳواڻن "آل انڊيا مسلم ليگ" ٺاهي ته هتي جي باهعي اختلافن سبب سنڌ ۾ به "مسلم ليگ" قائم ڪئي ويئي.

هن کان اڳ "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جيڪا ڪيترو وقت فعال رهي سنڌي مسلمانن جي سياسي، سماجي،مذهبي ۽ تعليمي خدمت سرانجام ڏيندي رهي، ساويهين صديءَ جي ٻئي ڏهاڪي ۾ پير پائيندي ٻن ڌڙن ۾ ورهائجي ويئي. هڪ ڌڙي اپر سنڌ جي زميندارن ۽ جاگيردارن جي سرپرستيءَ ۾ سرڪار نوازي ۽ برطانيد حڪومت جي فرمانبرداريءَ جي حڪمت عملي اختيار ڪئي. جنهن کان مجبور ٿي، ڪن محب وطن زميندارن ۽ سياستدانن پنهنجو الڳ سياسي حلقو قائم ڪرڻ گهريو.

انهيءَ سلسلي ۾ سڀ کان پهريون قدم رئيس غلام محمد خان ڀر ڳڙيءَ کنيو. جنهن جي ڪوششن سان سن 1917ع ۾ "سنڌ مسلم ليگ" قائم ٿي. جيتوڻيڪ رئيس غلام محمد ڀرڳڙي "سنڌ مسلم ليگ" جي پهرينءَ گڏجاڻيءَ ۾ پاڻ شريڪ ٿي نہ سگهير پر پوءِ به سندس سرپرستيءَ ۾ سنڌ ۾ هڪ نئين سياسي جماعت جو قيام عمل ۾ آيو. "سنڌ محمد ايسوسيئيشن" کان پوءِ، مطالعي هيٺ آيل دور ۾ هيءَ ئي مسلمانن جي پهرين جماعت هئي، جنهن اعتدال پسند مسلمانن کي ڪنهن عرصي تائين هڪ پليٽ فارم مهيا ڪيو. هن مسلم ليگ جو "آل انڊيا مسلم ليگ" سان ڪو به واسطو نه هو، پر اها پنهنجي جاءِ تي خود مختيار، الڳ ۽ آزاد جماعت هئي(60). هن جماعت جي ڪار ڪرد گي ۽ سر گرمي سنڌ تائين محدود رهي ۽ ان جي اغراض ومقاصد ۾ "سنڌ محمد ايسوسيئيشن" جي مخالفت ۽ سنڌ جي محب وطن مسلمانن جي حقن جي حفاظت کي مکيد جاءِ مليل هئي.

^{*} كانگريس جي پهرئين اجلاس ۾ سنڌ مان سيٺ وشنداس نهالچند ۽ ساڌو هيرانند شريك ٿيا هئا. (موتيرام رامواڻي: "رتن جوت" كراچي، پاكستان هيرالد پريس 1958ع ص609).

سن 1920ع ۾ جڏهن رئيس غلام محمد خان ڀرڳڙيءَ ولايت ۾ وڃي خلافت تحريڪ جي پرچار جو ڪر شروع ڪيو، تڏهن سر عبدالله هارون "سنڌ مسلم ليگ" جو صدر بڻيو(61). هن موڙتي به "سنڌ مسلم ليگ" گهڻي حد تائين "آل انڊيا مسلم ليگ" کان الڳ رهي، پر ان هوندي به سنڌ جي سياستدانن جو انفرادي طور تي مرڪزي مسلم ليگ سان واهپو رهيو " سنڌ مسلم ليگ 1925ع تائين پنهنجي سرگرمين کي ايترو ته وسيع ڪري چڪي هئي، جو سندس عام مقبوليت سبب کيس نئين سر تشڪيل ڏيڻو پيو " سن 1943ع ۾ هن جماعت جي قيادت ۾ سبب کيس نئين سر تشڪيل ڏيڻو پيو " سن 1943ع ۾ هن جماعت جي قيادت ۾ تبديلي آئي، ۽ حاتم علوي ان جو صدر بڻيو(62) انهيءَ دور ۾ "سنڌ مسلم تيگ" پنهنجي الڳ ۽ آزاد حيثيت وڃائي "آل انڊيا مسلم ليگ" جي شاخ ٿيڻ طرف گامزن رهي، جنهن جا ڪيترائي اندروني توڙي بيروني ڪارڻ هئا، تن مان ڪن جو ذڪر هيٺ ڪجي ٿو:

ننڍي کنڊ جي سطح تي سن 1916ع جي "ميثاق لکنؤ" جي واقعي کان پوءِ, اهو ٿي محسوس ٿيو تہ هندو ۽ مسلمان آزاديءَ جي عظيم تر مفاد کي آڏو رکي اتحاد ۽ اتفاق جو ثبوت ڏيندا, پر انهيءَ کان پوءِ جي واقعن ٻنهي ڌرين کي مذهبي بنيادن تي ورهائجڻ تي مجبور ڪيو. سنڌ، پنجاب ۽ بنگال کان سواءِ ننڍي کنڊ جي ٻين ڪيترن صوبن ۽ رياستن ۾ مسلمانن جو ڪو بہ سياسي آواز ٻڌڻ ۾ نہ آيو. ان ڪري هو مسلم اڪثريت وارن صوبن جي ڀيٽ ۾ ڪانگريس جا ڪٽر دشمن، ۽ مسلم ليگ جي مبلغ

صدر: حاجي سر عبدالله هارون. نائب صدر: سيٺ محمد ڪامل شاه. سيڪريٽري: ڊاڪٽر شيخ نور محمد.

خرانچى: حكير فتح محمد سيوهاڻي.

سنڌ مان رئيس غلام محمد خان ڀرڳڙي. حاجي عبدالله هارون. حاتم علوي، محمد عبدالقادر ميمڻ، غلام علي چاڳلا، غلام حسين هدايت الله ۽ شيخ عبدالمجيد سنڌي انفرادي طور تي "آل انڊيا مسلم ليگ" توڙي "آل انڊيا ڪانگريس" ڪاميٽيءَ جي جلسن ۾ شرڪت ڪندا هئا. (ڏسو: "آل انڊيا مسلم ليگ" ۽ "آل انڊيا نيشنل ڪانگريس" جي ساليانن جلسن جون ڪاروايون)

^{* 1925}ع ۾ "سنڌ مسلم ليگ" کي نئين سر تشڪيل ڏيڻ وقت, ان جا عهديدار هن طرح چونڊيا ويا:

⁽See, "The Daily Gazette", Karachi, dated 18-2-1925, P.6).

بنجي پيا. سندن انهيءَ روش ننڍي کنڊ جي ٻن وڏين جماعتن کي هڪ ٻئي کان پري رکيو. تانجو "سائمن ڪميشن" (Simon Commission) جي بائيڪاٽ کان پوءِ "مسلم ليگ" ۽ "ڪانگريس" ٻنهي الڳ راهون اختيار ڪيون. "نهرو رپورٽ" جي شايع ٿيڻ کان پوءِ "مسلم ليگ" پنهنجا چوڏهن نڪتا پيش ڪيا، ۽ ائين ٻنهي جماعتن کي مخالفت جي حڪمت عملي اختيار ڪرڻي پيئي.

"نهرو رپورٽ" جي رد عمل ۾ ننڍي کنڊ جي مسلمانن پنهنجي ڪانفرنس سڏائي، انهيءَ تاريخي حقيقت جي نشاندهي ڪئي ته کين هندن کان الڳ ۽ آزاد ٿي پنهنجي سياسي مرڪز تي گڏ ٿيڻ گهرجي. انهن ئي حالتن جي پس منظر ۾ ڊاڪٽر محمد اقبال سن 1930ع ۾ اله آباد ۾ سڏايل "آل انڊيا مسلم ليگ" جي سالياني ميڙ ۾ مسلمانن کي الڳ سياسي مرڪز تي جمع ٿيڻ جو مشورو ڏنو.

سن 1930 کان 1933ع تائين گول ميزڪانفرنسون ٿيون، سي به "آل انڊيا مسلم ليگ" ۽ "آل انڊيا ڪانگريس" ڪاميٽيءَ جي اختلافن سبب ڪامياب ٿي نه سگهيون. سن 1935ع ۾ هندستان سان "انڊيا ايڪٽ" (India Act) لاڳو ٿيو. جنهن جي نتيجي ۾ سن 1937ع ۾ عام چونڊون ٿيون، جنهن ۾ ڪانگريس وڏي اڪثريت سان ڪاميابي حاصل ڪئي، ۽ مسلم ليگ کي ننڍي کنڊ جي سياست ۾ اٽي ۾ لوڻ برابر حيثيت ملي. ڪانگريس راڄ ۾ مسلم ٿورائيءَ وارن صوبن ۾ مسلمانن سان جيڪي زيادتيون ٿيون، تن کي سهارو بنائي، مسلم ليگ، محمد علي جناح جي قيادت هيٺ ننڍي کنڊ جي مسلمانن کي نئين سر منظم ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي. جنهن جو اثر سنڌ جي مسلمانن تي به پيو.

اندروني طور تي به سنڌ ۾ ڪيترا مذهبي توڙي سياسي واقعا رونما ٿيا، جن هتان جي مذهب پسند مسلمانن کي هندن کان الڳ رهڻ تي مجبور ڪيو. "شڌي سڀا"، "سنڳٺن" ۽ "سنجوڳي تحريڪن" هندو مسلم اتحاد کي هٿي ڏني. تانجو نٿو رام واري واقعي باهه تي گاسليٽ هاري ڇڏيو. انهن مذهبي واقعن کان سواءِ "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيء" جي واقعي به سنڌ جي جي هندو توڙي مسلمان فرقن تي پنهنجا اثر ڇڏيا. هندو جيڪي سنڌ جي جملي آباديءَ جو ستاويه سيڪڙو هئا، تن کي 1935ع جي انڊيا ايڪٽ موجب چاليه سيڪڙو عيوضي مليا، ۽ اهڙيءَ طرح کين آئيني حفاظت ملي ويئي. نتيجي ۾ هو جدا چونڊن جي نظام مطابق الڳ قوت جي حيثيت ۾ نروار ٿيا(63)، ۽ ائين سنڌ جي سياست ۾ فرقيواران اثر پوڻ لڳو.

ننڍي کنڊ جي سياسي واقعن هتان جي سياسي اڳواڻن کي شديد ردعمل ظاهر ڪرڻ تي آماده ڪيو، ۽ حاجي عبدالله هارون، مسٽر محمد هاشر گذدر، مير بنده علي خان، جي. اير. سيد، سر غلام حسين هدايت الله، شيخ عبدالمجيد سنڌي ۽ پير الاهي بخش سنڌ ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" کي مضبوط بنائڻ لاءِ ڀرپور ڪوشش ڪئي. هنن سن 1938ع ۾ پهرين "سنڌ پراونشل مسلم ليگ ڪانفرنس" سڏائي. هيءَ ڪانفرنس ئي سنڌ ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" کي منظم ۽ مضبوط ڪرڻ جو وڏو باعث بڻي، ۽ ان کي سنڌ مسلم ليگ" جي صوبائي شاخ کولي ويئي، جنهن جو مرڪز ڪراچي رهيو. ان کان سواءِ حيدرآباد، ٿرپارڪر، نواب شاه، سکر، جيڪب آباد، لاڙڪاني ۽ دادوءَ ۾ به ضلعي شاخون قائم ڪيون ويون (64)).

ڪار ڪردگي: صوبہ سنڌ مسلم ليگ جي قائم ڪرڻ وقت. ان جي عهديدارن ۽ اڳواڻن عوام اڳيان هڪ "پڌر نامو"(Manifesto) پيش ڪيو. جنهن ۾ تعليم، ڳوٺاني ترقي، صحت عام، زراعت، آبپاشي، قانون سازي ۽ ٻين ڪيترن ئي منصوبن تي عمل ڪرڻ جا وعدا وعيد ڪيا هئا، پر مطالعي هيٺ آيل دور ۾ هن جماعت جي ڪارڪردگيءَ جو دارومدار پنهنجي پڌر نامي تي نه، پر وقت ۽ حالتن تي رهيو. هن جماعت جي ڪارڪردگيءَ جو خاڪو هن طرح ٿئي ٿو:

نظرياتي پرچار: مسلم ليگ جو قيام ۽ بقاء انهيءَ تي ٻڌل هو ته هيء جماعت مذهبي بنيادن تي ننڍي کنڊ جي عوام کي متحد ڪري. ان لاءِ هن جماعت نظرياتي پرچار تي ڪافي توجهه ڏنو، ۽ پنهنجي خاص مبلغن توڙي ٺهرائن وسيلي عوام کي اهڙي قسم جي تعليم جو آغاز سن 1938ع ۾ سڏايل پهرين صوبائي مسلم ليگ ڪانفرنس جي واقعي سان گڏ ٿيو. ان موقعي تي جيڪو ٺهراء بحال ڪيو ويو، تنهن جو تت هيءُ آهي:

"هيءَ كانفرنس مسمانن كي استدعا ٿي كري ته اهي هنڌين ماڳين مسلم ليگ جون شاخون كولين ۽ پاڻ كي "مسلم نيشنل گارڊ" (Muslm National Guard) ۾ ڀرتي كرائين. مسلمانن جا اڻيل كپڙا پهرين، مسلمانن جي ثقافت كي ترقي ۽ ترويج ڏيارين ۽ ان تي سختي سان عمل كن" (65).

فلسطين جو مسئلو: انگريز سرڪار نه رڳو ننڍي کنڊ جو سياسي ۽ اقتصادي استحصال ڪيو، پر ان جي سلطنت جو سياه پاڇو جنهن به خطي تي پيو، تنهن کي

ضرور متات كيائين. فلسطين جي سرزمين به انهيءَ اثر كان وانجهايل نه رهي. برطاندي حكومت "بيلفر دكلئريشن" (Balfour Declaration) فلسطين لاء "رايل كي سفارشن جي نتيجي ۾ فلسطين كي تقسيم كرڻ جو ارادو ظاهر كيو. اهو واقعو سنڌ توڙي هند جي مسلمانن لاءِ غم ۽ غصي جو باعث بڻيو ۽ نتيجي ۾ انهن برطانيه سركار جي يهودي نواز پاليسيءَ جي سفمت كئي. دنيا جي مسلمانن جڏهن قاهره ۾ "مسلم ورلڊ كانفرنس" (Muslim) سفرت كئي. دنيا جي مسلماني ته مسلم ليگ به ان كانفرنس ۾ نه رڳو شركت كئي. پيسائس تعاون به كيو."

سنڌ ۾ فلسطين جي مسئلي کي خلافت تحريڪ کان پوءِ ٻئي نمبر تي ترجيح ڏني ويئي ۽ ان تي شديد رد عمل جو اظهار به ڪيو ويو. سنڌ جي مڙني ضلعن کان سواءِ مختلف هنڌن جهڙوڪ: ڳوٺ وهره تعلقو عمر ڪوٽ، قمبر، ڳوٺ محبوب تئيو تعلقو ميرو خان ۽ ٻين ڪيترن ئي ڳوٺن ۾ فلسطين ڪاميٽيون ٺاهيون ويون. اهڙيءَ طرح وقت بوقت جلسن توڙي گڏجاڻين ذريعي فلسطيني مظلومن سان پنهنجي محبت ۽ همدرديءَ جو اظهار ڪندي ، برطاني حڪومت جي حڪمت عمليءَ جي مخالفت ڪئي ويندي هئي۔ *

كَانْكُريس جِي مخالفت: جيئن من كان الد ذكر تي چكو آمي ته سن 1937ع

^{*} هن كانفرنس بر چودري خليق الزمان. مستر عبدالرحمن صديقي، مولانا حسرت موهاني ع مولانا مقهر الدين مسلم ليگ طرفان شركت كئي.

⁽Rashdi Ali Mohammad Shah: "The Report Of The First Sind Provincial Muslim League Conference" Karachi Civil and Military Press 1938 P-13)

اتهن گوئن پر قائر کیل فلسطینی کامینیون هنن میمبرن تی مشتمل هیون:

¹⁻ ضلعي سطع جي فلسطين ڪاميٽي: ضلعي مسلم ليگ جا عهديدار

کو محبوب تنیا فلسطین کامیتی: مولوي محمد دائود ۽ مولوي محمد هاشر.

 ⁻³ تعلقو قمبر فلسطين كاميتي: مولانا مير محمد صاحب نورنگي, مولانا غلام فريد ۽
 مولانا غلام مصطفئ قاسمي.

^{-4.} قمير شهر فلسطين ڪاميٽي: غلام محمد خان، گلاب خان ۽ حمزو خان.

⁻⁵ كُوث وهره فلسطين كاميتي: مولوي شير محمد. مستر لطف الله. ۽ حكير مولوي محمد امين. (ڏسو: روزانه الوحيد، كراچي، 30 نومبر 1938ع ص4).

جي چونڊن جي نتيجي ۾ " آل انڊيا نيشنل ڪانگريس"ڪاميٽيءَ کي ننڍي کنڊ جي ڪيترن ئي صوبن ۾ حڪومت قائم ڪرڻ جو موقعو مليو، ۽ "آل انڊيا مسلم ليگ" ذري گهٽ پنهنجو سياسي وجود وڃائي چڪي هئي. اهڙين حالتن ۾ مسلم ليگ لاءِ هڪ ئي راه کليل هئي ته اهي پنهنجي مخالف جماعت جي معمولي يا غير معمولي غلطين تي شديد رد عمل ظاهر ڪري ۽ پنهنجي بقاءَ لاءِ ڪانگريس جماعت جي مخالف ڪري.

سنڌ ۾ ڪانگريس مخالفت جو آغاز سن 1938ع ۾ سڏايل پهرين سنڌ صوبائي مسلم ليگ ڪانفرنس ۾ بحال ٿيل ٺهراءَ ذريعي ٿيو. انهيءَ ٺهراءَ جو تت هي هوت:

"آل اند بيا كانگريس كاميٽي چونڊن جي نتيجي ۾ حاصل كيل كاميابيءَ جي آڌار تي مسلم ليگ كي مسلمانن جي واحد نمائنده جماعت تسليم كرڻ كان انكار كندي. كيتريون ئي اره زورايون ۽ ڏاڍايون كيون آهن. جهڙوك: پنهنجي پريس ۽ پروپئگنڊا ذريعي مسلمانن ۾ اختلاف جو ٻج ڇٽڻ، پنهنجي اقتدار هيٺ آيل صوبن ۾ هندو راڄ قائم كرڻ. ۽ مسلمانن كان مذهبي توڙي ثقافتي آزادي كسڻ. سنڌ. پنجاب ۽ بنگال ۾ مسلمانن سان الحاق كري، گڏيل وزارتون قائم كرڻ. مسلم ٿورائي وارن كورن بندي ماترم كي قومي تراني طور رائح كرڻ. هنديءَ كي ديوناگري لپي قرار ڏيئي، ننڍي كنڊ جي رابطي جي زبان بنائڻ جي كورن جي كورن بي كرڻ الوكل باڊيز ۽ ٻين نيم خودمختيار ادارن ۾ چونڊن جي گڏيل سرشتي كي رائح كرڻ. مسلم ٿورائي وارن جي ورن مسلم ٿورائي وارن جي مورن ۾ اردو اسكول کي بند كرڻ. مسلم ٿورائيءَ وارن صوبن ۾ رادو اسكول کي بند كرڻ، مسلم ٿورائيءَ وارن صوبن ۾ مسلمان جي آواز ۽ راءِ کي دٻائڻ وغيره" (66).

سنڌ جي مسلر ليگي رهبرن هن ڏرتيءَ تي ساڳي تند تنواري ۽ ڪانگريس ڪاميٽي ُجي خلاف نفرت جو ٻج ڇٽيو، جنهن کي سائي سلي ڪرڻ ۾ ڪانگريس جي ڪن ناعاقبت انديش اڳواڻن اهر ڪردار ادا ڪيو، مسلمانن جي اثر هيٺ آيل ذرائع ابلاغ انهن واقعن جو وڏي پيماني تي پرچار ڪيو ۽ ائين سنڌ ۾ ڪانگريس پنهنجي دشمنيءَ جو^ن پاڙون پختيون ڪندي وئي.*

مسجد منزل گاهر: سن 1938ع ۾ سڏايل صوب سنڌ مسلر ليگ ڪانفرنس، سنڌ ۾ پوءِ پيش ايندڙ واقعن جو ڪارڻ بڻي. حقيقت هيءَ آهي ته انهيءَ ڪانفرنس ۾ جيڪو ٻج ڇٽيو ويو هو، سنڌي عوام ان جو فصل سن 1947ع تائين لڻندو رهيو. مسجد منزل گاه سکر جي واقعي جون پاڙون انهيءَ ڪانفرنس ۾ کتل هيون، ۽ هن ئي ميڙ جي موقعي تي سکر جي شهري مسئلي کي ننڍي کنڊ جي مسلمانن جي مذهبي مسئلي جي حيثيت ملي. ان هوندي به مارچ 1939ع تائين هن مسئلي ڪا شدت اعتيار نه ڪئي، پر حيثيت ملي. ان هوندي به مارچ 1939ع تائين هن مسئلي ڪا شدت اعتيار نه ڪئي، پر ان وقت سنڌ جون سياسي حالتون ڪجه اهڙيون هيون جو "سنڌ مسلم ليگ" هن

* اهڙي قسم جا خط الرحيد ۾ شايع ٿيندا رهندا هئا. انهيءَ جي شماري ۾ پهرين جون سن1941 ع تي ڳوٺ رستم تعلقي سکر مان خداداد مهر جو خط شايع ٿيو (حالانڪ اهو خط کاٻي هٿ جي صحيح سان شايع ٿيو، پر ان جي ٻولي ڪنهن پڙهيل ڪڙهيل جي لڳي ٿي) جنهن جو تت هن طرح آهي:

"هن شهر ۾ سينيٽري بورڊ آهي، جنهن جو نه ڏئي، نه ڏوڻي، رڳوبي داد. صفائي ۽ روشنائيءَ جو بندوبست هندن لاءِ فائدو وٺن هندو. مسلمان رڳو ڪني پاڻيءَ جو واس وٺن، ۽ گند جو هندن جي محلن ۽ گهٽين مان ميڙي مسلمانن جي پاڙن جي ڀرسان ڦٽو ڪن ۽ انهيءَ ڪني گهٽين مان ميڙي مسلمانن جي پاڙن جي ڀرسان ڦٽو ڪن ۽ انهيءَ ڪني آهي، جن مان اسي سيڪڙو زميندار، باقي واپار جي لائين جا ماڻهو آهن. اسان آهي، جن مان اسي سيڪڙو زميندار، باقي واپار جي لائين جا ماڻهو آهن. اسان آولن جن وٽ 135 ليسن بندوقن جاءِ 30 ليسن ريوالور آهن. اسان آزار کڙو ڪيو ويو آهي. سندن جو ايترو آزار آهي جو اسين جيئرا ترال کڙو ڪيو ويو آهي. سندن جو ايترو آزار آهي جو اسين جيئرا تراسن عيني مقام ڏي وڃڻ جو رستو هندن جي زمين مان نڪتل آهي. آهن. يعني مقام ڏي وڃڻ جو رستو هندن جي گهرن ۾ کهيون ۽ نل لڳل آهن، جن مان جيڪو پاڻي وافر ٿو ٿئي سوسڀ مسلمان پڙوسين جي آهن، جن مان جيڪو پاڻي وافر ٿو ٿئي سوسڀ مسلمان پڙوسين جي جو بين جي پاڙن ۾ ڇڏيو وڃي ٿو......"

(ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي 1 جون1941ع ص ص ١-2).

مسئلي کي هٿ ۾ کنيو*، ۽ "مسجد منزل گاه ريسٽوريشن ڪاميٽي" (Masjd) Manzilgah Restoration Committee كي تشكيل ڏنر. جنهن ٺهراء بحال كري سرڪار کي اطلاع ڏنر تہ جيڪڏهن مسجد منزل گاه بابت جلد فيصلو نہ ڪيو ويو تہ ع كين مجبور ٿي، هن جي حاصل كرڻ لاءِ "ستياگره" كرڻي پوندي (67). حكومت جي سرد مهري ڏسي. هن ڪاميٽيءَ پهرين آڪٽوبر 1939ع کان "ستياگره" جو آغاز ڪيو، ۽ ٽن ڏينهن جي اندر اندر اهو مسئلو باه وانگر سڄي سنڌ ۾ ڀڙڪي اٿيو. ۽ هندو توڙي مسلمان مسجد منزل گاه کي پنهنجي زندگي توڙي موت جو مسئلو ڄاڻڻ لڳا. هڪ طرف ڪانگريس ۽ مهاسيا جون گڏجاڻيون ٿيون، ۽ ٻئي طرف مسلم ليگ جي ڪاروباري ڪاميٽي ميڙ سڏائڻ لڳي. انهن حالتن کي خراب ٿيندو ڏسي 14 آڪٽوبر 1939ع تي سنڌ جي گورنر هڪ حڪر نامو جاري ڪري اختياريءَ وارن کي ٻن مهينن لاءِ نظر بند كرڻ جا اختيار ڏنا. 19 نومبر 1939ع تي اله بخش وزارت مسلمانن كان مسجد جي زوريءَ قبضي ڇڏائڻ جي ڪوشش ڪئي. ۽ ائين سنڌ ۾ هند و مسلم فساد شروع ٿيا. انهن فسادن ۾ جملي 161 هندو ۽ 14 مسلمان اجل جو شڪار ٿيا. 164 گهر ساڙيا ويا. ۽ 467 گهر ڦريا ويا(68). ان کان سواءِ سنڌ ۾ هڪ نفرت ڀريو سياسي ماحول پيدا ٿي ويو. ۽ ڪانگريس پارٽي الھ بخش وزارت کان بدظن ٿي پيئي: ۽ آخر ڪار 18. مارچ 1940ع تي سندس جاءِ تي مير بنده عليءَ جي هٿ هيٺ نئين وزارت تائم ٿي(69)٠

بقاء لاءِ جنگ: حقيقت ۾ سنڌ اندر مسلم ليگ جي تاريخ، ڪارڪردگي ۽ ڪارنامن سان نہ پر باهمي اختلافن ۽ انتشار جي واقعن سان ڀري پيئي آهي. هن جماعت اقتدار ۾ رهي يا اقتدار کان ٻاهر سنڌ جي عوام لاءِ ايترو وقت نہ سيڙايو، جيترو باهمي اختلافن تي ڏنو. سنڌ ۾ مسلم ليگ جو عروج ۽ ترقي، آڪٽوبر 1938ع واري کانفرنس کان پوءِ ٿيو. جنهن کان اڳ هن جماعت جو سنڌ ۾ ڪو به عملي وجود نه هو.

أن وقت الهه بخش وزارت حكومت ير هئي، جنهن كي غير مسلم ليكي مسلمانن ۽ كانگريسي جماعت جو تعاون حاصل هو، مسلم ليگ جي اها منشا هئي ته اها كنهن به صورت ير كانگريس پرست وزارت جو خاتمو آثي. ان كري مسجد منزل گاه جي معاملي كي مسلم ليگ سونهري موقعو ڄاتو، ۽ هن ان جي وسيلي هك ئي ذك سان به شكار كرڻ گهريا. يعني هك طرف مسلمانن جي مذهبي خدمت كري سندس همدردي حاصل كرڻي هئي ته بئيءَ طرف الله بخش وزارت ۽ كانگريس پر اختلاف وجهڻ. (معلومات جناب قاضي فضل الله كان 25ع جو 1977ع جي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي).

كانفرنس جي موقعي تي ئي مسلم ليگ اسيمبلي پارٽي ٺهي، جنهن جو ليڊر سر غلام حسين هدايت الله كي، ۽ ڊپٽي ليڊر مير بنده عليءَ كي نامزد كيو ويو(70). حالانك اهي ٻيئي ٻين پارٽين جي ٽكيٽن تي چونڊجي آيا هئا بسر غلام حسين هدايت الله، جيكو ان وقت آزاد هندو كانگريس ۽ اتحاد پارٽيءَ جي مخالفت سبب پنهنجي وزارت اعليٰ وڃائي چكو هو. وقت ۽ حالتن مطابق هن اهو ئي مناسب ڄاتو ته مسلم ليگ جي واڳ سيٺ عبدالله مسلم ليگ جو سهارو حاصل كري. صوبي سنڌ مسلم ليگ جي واڳ سيٺ عبدالله هارون جي هٿ ۾ ڏني ويئي، ۽ جي. ايم. سيد. شيخ عبدالمجيد سنڌي، محمد ايوب كهڙي، ۽ علي محمد راشديءَ هن جماعت كي مقبول بنائڻ لاءِ كوشش كئي. هنن سڄي سنڌ جا دورا كري، هنڌين ماڳين هن جماعت جون شاخون كولايون. اهڙيءَ طرح مسلم ليگ سنڌ جي اسيمبلي ۽ عوام ۾ نمايان ٿي.

اله بخش وزارت جي خاتمي کان پوءِ مير بنده عليءَ جي هٿ هيٺ سنڌ جي ٽين، مگر مسلر ليگ جي پهرين وزارت قائر ٿي. جيڪا ستت ئي پوءِ باهمي اختلاف جو شڪار بڻجي ويئي، ان جي هڪ ڌڙي جي. اير، سيد جي سرپرستيءَ هيٺ مسلمانن جي هڪ گڏيل حڪومت قائر ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي، جنهن جي ڪري جي.اير. سيد مسلم ليگ جي صدر جي اجازت کان سواءِ استعفيٰ ڏيئي، خانبهادر اله بخش کي وزارت جي جاءِ ڏني. جي.اير. سيد گروپ ۽ اله بخش گروپ جي وچ ۾ اهر ٺاه ٿي چڪو هو تہ ڪجه وقت کان پوءِ نه رڳو جي.اير. سيد پر مير بنده علي به وزارت تان استعفيٰ ڏيندو، ۽ ان جي جاءِ تي اله بخش گروپ جي ماڻهوء کي وزير مقرر ڪيو ويندو. جيتوڻيڪ جي.اير.سيد اڳ ۾ منظوري وٺڻ کانسواءِ پنهنجي پارٽيءَ طرفان اهر ٺاه ڪيو.هو راهد ڪيو هو. پر وقت ۽ حالتن کي نظر ۾ رکندي "آل انڊيا مسلم ليگ" جي صدر

پهرين اليكشن ۾ جيكي پارٽيون اسيمبليءَ تائين پهتيون، تن جو ميمبرن سميت وچور هيك ڏجي ٿو:

| ميمبر، | 22 | اتحادپارٽي |
|----------|----|-------------------------|
| ميمبر. | 7 | ڪانگريس پارٽي |
| ميمبر. | 3 | مسلر پوليٽيڪل پارٽي |
| ميمير، | 3 | سنڌ آزاد پارٽي |
| ميمبر. | 5 | باقي آزاد هندو ۽ مسلمان |
| کو بہ نہ | | مسلم لیگ |
| | | |

⁽هيءَ معلومات جناب شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ کان 6 ڊسمبر 1976ع تي ورتي ريئي).

محمد علي جناح ان کي نظرانداز ڪري ڇڏيو. جي.اير.سيد گروپ مير بنده عليءَ تي استعفيٰ ڏيڻ تي زور ڏيندو رهيو. جڏهن مطالبن شدت اختيار ڪئي ته "آل انڊيا مسلم ليگ " مير بنده عليءَ جي وزارت کي بچائڻ جي ڪوشش ڪئي. پر جي.ايم.سيد گروپ ڪانگريس سان ملي ڪتر جي رٿ تي هن وزارت کي شڪست ڏني ۽ اهڙي نموني سان مسلم ليگ جي پهرين وزارت جو خاتمو اچي ويو.

بسندس کوششن سان صوبہ سنڌ منتظم کاميٽي ٺاهي ويئي، ۽ ان جي چيئرمين آيو، ۽ سندس کوششن سان صوبہ سنڌ منتظم کاميٽي ٺاهي ويئي، ۽ ان جي چيئرمين شپ جي.ايم.سيد جي حوالي ٿي*. جي. ايم. سيد منتظم کاميٽيءَ کي فعال شپ جي.ايم.سيد جي حوالي ٿي*. جي. ايم. سيد منتظم کاميٽيءَ کي فعال سڏائڻ، ڳرٺن جو گشت ڪرڻ، پاکستان ۽ مسلم ليگ تي لٽريچر ڇپائڻ، هندن جي غلط پاليسين کان عوام کي آگاه ڪرڻ جو ڪم هٿ ۾ کئڻ، ۽ ان سلسلي ۾ سلطان ڪوٽ. ڪوٽڙي، سيوهڻ ۽ موري ۾ گڏجاڻيون سڏارائي سنڌ ۾ 450 شاخون کولايون. انهيءَ عرصي دوران خانبهادر اله بخش کانگريس ۽ آزاد هندو گروپ جي تعاون سان اقتدار ۾ اچي چڪو هو، جنهن ڪري مسلم ليگ کي اسيمبلي توڙي اسيمبليءَ کان ٻاهر وقت جي سرڪار جي ڏاڍاين جو نشانو بنجڻو پيو*. مسلم ليگ تان مصيبت جا ڪڪر ترقت جي سرڪار جي ڏاڍاين جو نشانو بنجڻو پيو*. مسلم ليگ تان مصيبت جا ڪڪر ترقت جي سرڪار جي ڏاڍاين جو نشانو بنجڻو پيو*. مسلم ليگ تان مصيبت جا ڪڪر عي ۽ جنهن جي نتيجي ۾ سنڌ جي گورنر سندس وزارت کي ڊسمس ڪري ڇڏيو.

خانبهادر الهـ بخش جي وزارت ٽٽڻ کان پوءِ وقت جي گورنر سر غلام حسين هدايت اللہ کي وزارت ٺاهڻ جي آڇ ڪڻي، جيڪو هن کان اڳ مسلم ليگ کي ڇڏي الهـ

^{*} منتظر كاميتي، جابيا ميمبر هئا:

قاضي فضل الله. محمد هاشر گذدر. غلام نبي پٺاڻ، يوسف هارون، حاجي عبدالله هارون. عبدالستار جان سرهندي. سيد حسن بخش شاه ۽ فيض محمد مڱريو. (هيءَ معلومات قاضي فضل الله کان 25 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي).

^{*} انهيءَ سلسلي ۾ هڪ واقعي کي پيش ڪري سگهجي ٿو:

تاريخ 6 جولاءِ 1941ع تي سڪرنڊ ۾ ضلعي نواب شاھ مسلم ليگ جي ڪانفرنس ٿيڻي هئي. جنهن جا انتظام به مڪمل ٿي چڪا هئا، پر اله بخش وزارت پنهنجي ساٿي ڌڙن جي اثر هيٺ ايندي ڪانفرنس تي ڪالراجي بهاني مقرر ٿيل تاريخ کان صرف ٻه ڏينهن اڳ بندش وجهي ڇڏي. (هيءَ معلومات "سيد حسن بخش شاھ" کان 15 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي)،

بخش جي وزارت ۾ وزير جي حيثيت سان ڪر ڪري رهيو هو. ان وقت سنڌ اسيمبليءَ اندر مسلم ليگ انهيءَ حيثيت ۾ هئي تہ ڪنهن ٻيءَ پارٽيءَ سان تعاون ڪري وزارت ناهي سگهي. پر گورنر هن جماعت کي آڇ ڏيڻ بدران هڪ غير جمهوري قدم کئي چڪو هو. ان ڪري سنڌ مسلم ليگ اسيمبلي پارٽي ٻن ڌڙن ۾ ورهائجي ويئي. هڪ ڌڙي سر غلام حسين هدايت الله سان تعاون ڪرڻ گهريو، جنهن جي اڳراڻي جي ايم.سيد جي هٿ هيٺ هئي ۽ ٻيو ڌڙو ڪنهن به صورت ۾ سر غلام حسين هدايت الله سان ساٿ ڏيڻ جي حق ۾ نه هو. جنهن جي قيادت شيخ عبدالمجيد سنڌي ڪري رهيو هو. آخرڪار سر غلام حسين سنڌ مسلم ليگ جي هم خيال ڌڙي سان گڏجي وزارت ٺاهي. جيتوڻيڪ "آل انڊيا مسلم ليگ جي اختياريءَ وارن انهيءَ خلاف ناراضگيءَ جو اظهار ڪيو، پر پوءِ وقت ۽ حالتن کان مجبور ٿيندي کين اهو غير فطري الحاق قبول ڪرڻو پيو، سر غلام حسين هدايت الله سان ساٿ ڏيندڙ مسلم ليگي ڌڙي الحاق قبول ڪرڻو پيو، سر غلام حسين هدايت الله سان ساٿ ڏيندڙ مسلم ليگي ڌڙي واري ٺهراءَ جي توسيع ڪئي ويئي هئي.*

مسلم ليگ وزارت ۾ اچڻ کان پوءِ وري باممي اختلاف جو نشانو بڻي. جنهن جا مکيہ سبب هئا عهدن جي ورچ ۽ ڇوٽيءَ چونڊ لاءِٽڪيٽن جي ورهاست. سرعبدالله هارون جي وفات کان پوءِ "سنڌ مسلم ليگ" جي صدارت لاءِ خانبهادر محمد ايوب کهڙي ڪوشش ڪئي، ۽ هڪ ئي وقت تي پارٽيءَ جي قيادت ۽ وزارت جو عهدو پنهنجي هٿ ۾ رکيائين. ان ڪري جي ايم سيد گروپ اصولي طور تي انهيءَ روش تي اختلاف ڏيکاريو، پر جناب محمد علي جناح جي مداخلت تي صوبي سنڌ مسلم ليگ جي صدارت جي واڳي جڏهن جي ايم سيد جي حوالي ٿي تہ اهو معاملو اتي ئي دفع ٿي ويو. اڳتي هلي ڇوٽي چونڊ جي ٽڪيٽن جي ورهاست ۽ وزارت کي صوبي مسلم ٿي ويو. اڳتي هلي ڇوٽي چونڊ جي ٽڪيٽن جي ورهاست ۽ وزارت کي صوبي مسلم

^{*} هيءُ ٺهراءُ جي.اير.سيد 3 مارچ 1943ع تي سنڌ اسيمبليءَ ۾ پيش ڪيو. ان وقت اسيمبليءَ ۾ ملمان ميمبرن مان 29 ميمبر مسلم ليگ جا ٿي چڪا هئا. ۽ اجلاس ۾ سندس ئي اڪثريت هئي. ڪانگريس ميمبر "هندوستان ڇڏيو هلچل" سبب جيلن ۾ بند هئا. تنهن کان سواءِ خانبهادر الله بخش به اجلاس ۾ شريڪ نه هو. ان ڪري هيءُ ٺهراءُ آسانيءَ سان بحال ٿي ويو. رڳو ٻن هندو وزيرن ۽ هڪ انهن جي پارليامينٽري سيڪريٽريءَ مخالفت ڪئي ۽ آزاد هندو گروپ جا ميمبر احتجاج طور اسيمبلي ڇڏي ٻاهر هليا ويا. (ڏسو جي.ايم.سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدرآباد, اسلاميه پريٽنگ پريس 1952ع ص160).

ليگ جي پروگرام تي عمل ڪرائڻ واري مسئلي تي مسلم ليگي وزيراعظم سر غلام حسين هدايت الله ۽ صوبي سنڌ مسلم ليگ جي صدر جي. ايم. سيد جي وچ ۾ ڇڪتاڻ پيدا ٿي. جنهن اهو رنگ لاتو جو 7 جولاءِ 1944ع تي سنڌ مسلم ليگ ورڪنگ كاميني، هك نهرا، وسيلي سند جي وزارت كان استعفيٰ جو مطالبو كيو(71). سن 1944ع جي آخر ۾ خان بهادر احمد خان سڏايو جي وفات سبب سنڌ اسيمبليءَ ۾ ميمبر جي جاءِ خالي ٿي پيئي. ليگ جي تيادت آغا غلام نبي خان پٺاڻ کي ٽڪيٽ ڏني، ۽ سر غلام حسين هدايت الله پنهنجي پٽ انور حسين کي ٽڪيٽ ڏيڻ گهري. اهو اختلاف اڳتي هلي انهيءَ حد تائين پهتو جو پارٽيءَ جا اڳواڻ آغا غلام نبي خان پٺاڻ جي مدد ڪرڻ لڳا ۽ اقتدار جا مالڪ غير مسلم ليگي اميدوار حاجي مولا بخش سومري جو ساٿ ڏيڻ لڳا ۽ ائين هڪ پارٽي مرڪزي مسلم ليگ جي مداخلت تي بہ ٻن ڌڙن ۾ ورهائجي ويئي. فيبروري 1945ع ۾ انهيءَ اختلاف اهو روپ ور تو جو سر غلام حسين هدايت الله جي حڪومت کي هڪ رپئي جي ڪتر جي رٿ تي شڪست ڏسٽي پيئي. پر گورنر جي مداخلت ۽ مهلت تي وزيراعظىر حاجي مولا بخش ۽ ان جي گروھ جي ساٿ سان اڪثريت ۾ اچي پنهنجي وزارت بچائي ورتي. عارضي طور تي مسلم ليگ جي ٻنهي ذَرَّن ۾ مرڪزي جماعت جي مداخلت تي ٺاھ ٿيو ۽ پوءِ سر غلام حسين هدايت الله حاجي مولا بخش جي گروه کي آسانيءَ سان وزارت مان ٻاهر ڪڍي ڇڏيو.

سنڌ مسلم ليگ جو باهمي اختلاف هن موڙ تي پهچڻ کان پوءِ صوبائي مسلم ليگ ۽ "آل انڊيا مسلم ليگ" جي وچ ۾ ڇڪتاڻ جو باعث بڻيو. جون 1945ع ۾ صوبي مسلم ليگ ڪائونسل پنهنجي ٺهرائن ذريعي "آل انڊيا مسلم ليگ" جي سنڌ لاءِ اختيار ڪيل حڪمت عمليءَ سان اختلاف ظاهر ڪيو. پر وقت ۽ حالتن کي نظر ۾ رکندي "آل انڊيا مسلم ليگ" ان مسئلي کي نظر انداز ڪري ڇڏيو. ان کان پوءِ ايندڙ چونڊن لاءِ ٺهندڙ صوبائي پارليامينٽري بورڊ جي سوال تي "سنڌ مسلم ليگ" ۽ "آل انڊيا مسلم ليگ" جي وقتي طور تي اثبت پيدا ٿي پيئي، جنهن آڪٽوبر 1945ع ۾ هلي ڇڪتاڻ جو روپ ور تو. تانجو هڪ ڌڙي کي جي. ايم. سيد جي قيادت هيٺ مسلم ليگ مان ٻاهر نڪرڻو پيو."

^{*} جي. ايم. سيد واري ڌڙي جي راءِ هئي تہ پارليامينٽري بورڊ جي تشڪيل اهڙيءَ طرح ڪئي وڃي جو ايماندار ۽ وفادار ماڻهو ٽڪيٽيون حاصل ڪري سگهن. پر قائداعظم محمد علي جناح پاڻ بورڊ ٺاهيو. جنهن تي جي.ايم.سيد. سر غلام حين هدايت الله، مير غلام علي خان. پير

جنوري 1946ع ۾ نين چونڊ ٿيڻ بعد مسلم ليگ کي 27. ڪانگريس کي 21. مسلم ليگ كان باهر نكتل ترقي پسند گروه كي 4, قوم پرست مسلمانن كي 4. يورپين کي3 ۽ مزدورن کي 1 سيٽ ملي. ترقي پسند ڌڙي, قوم پرست مسلمانن ۽ كانگريس سان ملي "كوئليشن ليبر پارٽي" (Coalition labour Party) ٺاهي، جيكا سنڌ اسيمبليءَ جي 29 ميمبرن تي مشتمل هئي. مسلم ليگ جا ان وقت اسيمبليءَ ۾ 28 ميمبر هئا. انهيءَ پارٽي پوزيشن جي باوجود وقت جي گورنر مسلم ليگ کي وزارت ٺاهڻ جي آڇ ڪئي، ۽ ائين مسلم ليگ وزارت قائم ٿي. "ڪوئليشن پارٽي" اسيمبليءَ ۾ وزارت جي خلاف بي اعتماديءَ جو ٺهراءُ پيش ڪيو. جيڪو هڪ ووٽ جي اڪثريت تي ڪامياب ٿي نہ سگھيو. اهڙيءَ طرح اڳتي هلي وزارت کي ڪتر جي رٿ تان شڪست آئي. پر گورنر مسلم ليگي وزيراعظر کي موقعو ڏنو تہ هو 24 ڪلاڪن اندر پنهنجي اڪثريت ثابت ڪري. سنڌ اسيمبليءَ جا مسلمان ميمبر ڍنڍ جي پکين وانگر كڏهن هن ڀر ته كڏهن هن ڀر ٿيندا رهيا، ۽ روزبروز اسيمبليءَ ۾ پارٽي پوزيشن بدلبي رهي.جنهن ڪري سنڌ جي گورنر اسيمبليءَ کي ختر ڪري، نين چونڊن جو اعلان ڪري ڇڏيو. هن عرصي دوران مسلم ليگ جا وزير ئي، سر غلام حسين جي قيادت هيٺ ڪر ڪندا رهيا ۽ سندس سرڪار جي نظرداريءَ هيٺ ئي نيون چونڊون ٿيون، جنهن ۾ هيءَ جماعت اڪثريت سان چونڊجي آئي. "

عالمن جو حصو: مسلر ليگ كي جيكڏهن مسلمانن جي بيداريءَ جي پيدارار

الاهي بخش خانبهادر محمد ايوب كهڙي. سيد خير شاه ۽ آغا غلام نبيءَ كي ميمبر جي حيثيت سان كنيو ديو. جيئن ته هن بورڊ ۾ سيد گروپ جي اتليت هئي. ان كري صوبائي كائونسل ۽ پارليامينتري بورڊ جا اختلاف وڌي ويا. جنهن كري لياقت علي خان، نواب محمد اسماعيل ۽ حسين امام كراچيءَ ۾ آيا، پر سندن مداخلت سان به كو ٺاه ٿي نه سگهيو. مسلم ليگ كائونسل پارليامينٽري بورڊ جي كن ميمبرن تي ندامت جو ٺهراء بحال كيو. انهن حالتن كان مجبور ٿي، كوئيٽا مان آرام وئي قائم اعظم كراچي موٽيو، ۽ انهيءَ ملاقات ۾ ئي ليگ جي پريزيڊنٽ ۽ سيد جي وچ ۾ كو ٺاه نه ٿي سگهيو. ان كان پوءِ مسلم ليگ هاءِ كمانڊ جي ايم.سيد كي پنهنجي طرفان بيهاريل ميمبرن جي مدد كرڻ لاءِ هدايتون جاري كيون. جنهن ۾ هن انكار كيو ۽ نتيجي ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" كيس ليگ مان خارچ كري ڇڏيو. (هيءَ ۾ هاندار جي ويئي).

سمجهيو وڃي ٿو تہ اسان کي هن جماعت جي روح کي عالمن ۾ ڳولڻو پوندو. مسلم ليگ جي ڪارڪردگي ۽ تاريخ عالمن جي خدمتن سان سينگاري پئي آهي.

خلافت تحريك جي خاتمي كان پوءِ سنڌ جا عالم بن ڌڙن ۾ ورهائجي ويا. هڪ ڌر كانگريس جي اصولن ۽ نظرين كي مجيندي "جمعيت العلماءِ" جو جهنڊو هٿ ۾ كنيو ۽ بيءَ خلافت تحريك دوران كانگريس جي كاركردگيءَ كان مايوس ٿيندي, مسلم ليگ كي ئي پنهنجي منَ جي مرادن حاصل كرڻ جو ذريعو ڄاتو.

سنڌ مسلم ليگ ۾ اسان جي عالمن، اڪثر ڪري تنظيمي ميدان ۾ پاڻ ملهايو، ۽ اسيمبليءَ جو ايوان مسلم ليگي رهبرن لاءِ ڇڏي ڏنائون. جيئن مٿي بيان ٿي چڪو آهي تہ مسلم ليگ سن 1938ع ۾ سنڌ اندر صحيح معنيٰ ۾ پير پاتو، پر سنڌ جا عالم انهيءَ کان به اڳه هن جماعت کي پنهنجي ملڪ ۾ مانوس ڪرائي چڪا هئا. سنڌ کي صوبائي حيثيت ملڻ کان پوءِ هتان جي سياستدانن وقت ۽ حالتن مطابق جيڪا سياسي تنظيم جوڙي، تنهن ۾ "سنڌ آزاد پارٽيءَ" کي خاص اهميت حاصل هئي. هن پارٽيءَ جون سنڌ ۾ لڳ ڀڳ 28 شاخون هيون، ۽ انهن سمورين شاخن جا عهديدار سنڌ جا عالم ئي هئا. سن 1937ع ۾ ان جماعت کي مسلم ليگ ۾ ضم ڪيو ويو(72)، ۽ اهڙيءَ طرح سنڌ آزاد پارٽيءَ سان واسطو رکندڙ عالم "سنڌ مسلم ليگ" جا ڪارڪن بڻجي ويا.

سنڌ مسلم ليگ جي منظر ٿيڻ کان پوءِ. اسان جي عالمن انفرادي توڙي اجتماعي طرح سان مسلم ليگ کي مقبول بنائڻ جي ڪوشش ڪئي. انهن مان ڪيترن عالمن پنهنجي قلم جي قوت کي به انهيءَ ڪم لاءِ استعمال ڪيو.*

سن 1938ع ۾ سيٺ حاجي عبدالله هارون جي صدارت هيٺ ۽ ان کان پوءِ جي اير سيد جي اڳراڻيءَ ۾ جڏهن سنڌ ۾ هن جماعت جون 450 شاخون کليون تہ انهيءَ تنظيمي ڪر ۾ به اسان جي عالمن، ڪارڪنن توڙي اڳواڻن جي حيثيت سان هٿ ونڊايو. مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سنڌ جا هيٺ ڄاڻايل عالم هن جماعت سان وابسته رهيا(73).

مولوي ابوبكر گلال، مولوي احمد خان سرهندي (حيدرآباد)، مولوي حافظ احمد پنهور (دادو)، مولوي ادريس لاڙ كاڻو)، مولانا سيد اسد الله شاه (حيدرآباد)، مولانا الهم بخش (سكر)، مولوي انعام الحق (كراچي)، مولوي تاج محمد شاه (....)، مولوي تاج محمد (دادو) مولانا تاج محمود امروتي (شكارپور)،

انهيءَ سلسلي ۾ مولانا دين محمد وفائي. مولانا عبدالكريم چشتي ۽ مولانا حكيم محمد معاذ پيرزادي مسلم ليگ جي مفاد خاطر كتاب ۽ مضمون لكيا.

مولوي حامد الله (دادو), مولوي حاجي حبيب الله (لازَّكاتُو) مولانا قاضي حبيب الله (خيرپور), مولوي خان محمد (دادو), مولانا خوش محمد ميروخاني (لاڙڪاڻو), مولوي خير محمد (....). مولانا حافظ خير محمد اوحدي (شكارپور). مولوي خير محمد نظامائي (بدين) مولوي در محمد (لاڙڪاڻو), مولانا دين محمد پاٽائي (دادو). مولانا دين محمد "وفائي"(كراچي)، مولوي رحير داد تنيو (لاڙكاڻو)، مولوي سلطان محمود (....). مولوي شاه محمد (....). مولوي شفيع محمد (دادو), مولوي شفيع محمد (نواب شاه). مولوي شير محمد (....). مولوي صدر الدين شاه (جيكب آباد). مولانا ظهور الحسن درس (كراچي', مولوي عبد الحلير (جيكب آباد), مولوي عبد الحميد (الرَّڪاڻو),مولوي عبد الحي فيروزشاهي (دادو),مولوي عبد الحي (ٿرپارڪر), مولانا عبد الحي حقاني (كراچي), مولانا عبد الخالق خليق مورائي (نواب شاه), مولانا حافظ عبد الرؤن (ترياركر). مولوي عبد الرحيم (....)، مولوي عبد الصمد (كراچي). مولوي عبد العزيز تويچاڻي (سكر)، مولوي عبد الغفور سهتو (حيدرآباد). مولوي عبد الغفور سيتائي (دادو). مولوي حاجي عبد القادر (لارَّكائو) مولوي عبد القادر مَلَك (....)، مولوي عبد الكريم (أننه) مولوي عبد الكريم (نواب شاه)، مولوي عبد الكريم (دادو)، مولوى عبد الكريم عودي (جيكب آباد)، مولوي عبد الكريم چشتى (شكارپور)، مولوى عبد الكريم بُنوي (الرَّكاش). مولوي عبد الكريم بروهي (الرَّكاش). مولوي عبدالكريس (....). مولانا مولوي عبدالكريس (سكر)، مولوي عبد الكريس (كراچي). مولوي عبد الله مجاهد (نواب شاه), مولوي عبد الله سومرو (جيكب آباد), مولوي عبد الله (الرَّكاثر). مولوي عبد الله (سانگهڙ), مولوي عبد الله (ترپاركر),مولوي عبد المجيد (كراچي) مولوي عبد المجيد چنر (دادر) مولوي عبد الواحد (نواب شاهر), مولوي عبد الوهاب لند (بدين), مولوي عزيز الله (نواب شاه), عزيز الله (....)، مولوي عطاء الله ينَاوْرُنْتُو). مولوي عطاء الله (لاڙڪاڻو). مولانا سيد حاجي علي اڪبر شاه(دادو). مولاناعلي گوهر (نوابشاه), مولانا علي محمد مهيري (ٺٽو), حافظ علي محمد (دادو), مولوي على محمد (نوابشاه)، مولوي حكيم على محمد شاه (...) مولوي عنايت الله (دادو), غلام احمد ملكائي (دادو)، غلام احمد نورنگي لاڙكاڻو)، غلام حسين جمالي (توليشاه). مخدوم غلام حيدر هائي (حيدرآباد). غلام رسول (دادو). غلام رسول مري (...). غلام فريد سپريو (لاڙڪاڻو)، غلام قادر (دادو)، پير غلام مجدد (حيدرآباد)، حاجى غلام محمد (حيدرآباد), غلام محمد (دادو), غلام محمد برزو (دادو)، غلام محمد (كراچي). غلام مصطفيٰ (ترپاركر)، غلام يحييٰ (لاڙكاڻو)، غلام يحييٰ (دادو)،

حكيم فتح محمد سيوهائي (كراچي). حكيم فضل الله (شكارپور). فضل الله (نوابشاه), فضل كريم (كراچي), فقير احمد (..), قادر بخش (ترپاركر), قطب الدين (دادو)، قمر الدين (...)، كريم بخش مكسى (دادو)، كريم بخش (لازّ كاتُو)، حافظ لطف الله (دادو), محكر الدين (حيدر آباد), محمد چنو (دادو), ميان محمد (...), محمد ابراهيم بنوي (لاڙڪاڻو), محمد احد چنو (دادو), حافظ محمد اسحاق (..), محمد اسماعيل (لاڙڪاڻو), محمد اعظر (دادو), محمد امين آريسر (ٿرپارڪر), محمد بچل آريجو (لاڙڪاڻو), محمد بخش (....)، محمد يريل منگيو (نوابشاهر), محمد حسن لغاري (...). محمد حسن (نوابشاه), محمد حسن كهاور (لازكائي). ميان محمد حسن عباسي (لازَّكاتُو), مولوي حافظ خواج محمد حسن جان (حيدرآباد), مولوي محمد حسین صدیقی (نتو) مولوی محمد حمزو خان(...) مولوی محمد خان(....), مولوی محمد دائود (لاڙڪاڻو)، مولوي محمد دائود تنيو (لاڙڪاڻو)، مولوي حاجي محمد رحيم بخش (جيكب آباد), مولوي محمد سعيد گوپانگ (بدين), مولوي محمد شعيب (...), مولوى محمد شفيع (ٿرپارڪر). مولوي محمد صالح (لاڙڪاڻو), مولوي محمد صالح عباسي (لاز كائو)، مولوى محمد صالح چانديو (....)، مولوى محمد صالح سمون (ترپاركر)، مولوی محمد صدیق (دادو), مولانا حافظ محمد صدیق (....), مولوی محمد طیب لكمير (نواب شاه),مولوي محمد عامل (نواب شاه), مولوى حكير محمد عبدالكرير (....), مولوي حاجي محمد عثمان (نواب شاهر), مولوي محمد عثمان (ٺٽو). مولوي محمد عظيم "شيدا" (لاڙڪاڻو), مولوي محمد عمر کٽي(ٺٽو) مولوي محمد علي پنهور (دادو), مولوي محمد قاسم (حيدرآباد), مولوي محمد مبارك پلى, (ترپاركر), مولوي محمد موسيٰ (دادو), مولوي محمد موسيٰ (ٿرپارڪر), مولوي محمد وريل (دادو), مولانا محمد يوسف بنوي (ٺٽو), مولوي محمود (دادو), مولوي محمود (ٺٽو). مولوي مولا داد (دادو), مولانا مير محمد نورنگي (لاڙڪاڻو), مولوي نصير الدين چنو (دادو), مولوي نور محمد چاچڙ (سکر). مولوي وفا محمد (ٿرپارڪر)، ۽ مولوي هدايت الله (لاڙڪاڻو).

حوالا

- Allana G: "Quaid-e-Azam Jinnah, The Story of Nation" Lahore Feroze sons, 1917, P-48.
 - (2) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.12.

- (3) اير.آر.مائيداسائي: "قومي اڳراڻ" ڪراچي، مائيدا ساڻي، 1935ع ص١٠
- (4) Aziz-K.K: "Britian and Muslim India" London, William Heine Mann Ltd, 1963, P-30.
- (5) جي.اير.سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي" حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ پريس. 1968ء ص17.
 - (6) ايضا, ص 78.
- (7) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 1.3.1917, P.5
- (8) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 18.12.1916, P.17 .ورتي ويثي و الما معلومات مولانا محمد صالح "عاجز"كان19 جون 1982 تي ورتي ويثي (9)
- (10) Smith.V.A: "The Oxford History of India" Claredon Press Oxford, 1961, P.785
- (11) Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme" Bombay, Allied Publishers Private Limited, 1964 P-223
- (12) Weekes.R.V: "Pakistan Birth and Growth of a Muslim Nation" London, D.V an Nostrand Company 1964, P.77
- (13) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 1.3.1919, P.5
- (14) وشنر شرما: "ڊاڪٽر چوڻٿرام پرتابراءِ گدواڻي جي جيوني" بمبئي، هندستان ساهتير مالا. 1967ع ص 109،
- (15) Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme" Bombay, Allied Publishers Private Limited, 1964 P.229
- (16) Ibid, P.222
- (17) Ibid, P.229
- (18) وشنو شرما: "دِاكٽر چوئشرام پرتابراءِ گدواڻي جي جيوني" بمبئي، هندستان ساهتيہ مالا، 1967ع ص 117٠
 - (19) معلومات علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ كان ورتل.
- (20) See, "The Daily Gazette", Karachi, dated, 20-4-1922, P.5.
 - (21) معلومات مولانا محمد صالح "عاجز"كان ورتل.
- (22) وشنو شرما: "دِاكٽر چوئٿرام پرتابراءِ گدواڻي جي جيوني" بمبئي، هندستان ساهتيہ مالا، 1967ع ص 139،

- (23) ايضاً, ص155
- (24) Percival Spear: "Modern India" London, Oxford University, 1965, P-350.
- (25) Jawaher Lal Nehru: "An Autography" John Lane the Bodley head London, 1937, P-172.
- (26) پريداس برهمچاري: "كانگريس كهاڻي" نوجيون ساهتيه منڊل، حيدرآباد 1946 ص156
- (27) وشن. آءِ جڳتياڻي: "قومي پروانه" حيدرآباد, ڪوڙومل سنڌي ساهت منڊل, 1944ع ص13.
 - (28) ايضاً, ص28
- (29) پريداس برهمچاري: "كانگريس كهاڻي" نوجيون ساهتيه منڊل، حيدرآباد 1946 ص139،
- (30) وشن. آءِ جڳتياڻي: "قومي پروانه" حيدرآباد, ڪوڙومل سنڌي ساهت منڊل, 1944ع ص13٠
- (31) Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme" Bombay, Allied Publishers Private Limited, 1964, P.222.
- (32) Aga Khan: "The Memoirs of Aga Khan> Cassell & Company Ltd, London, 1954, P.223.
- (33) Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme" Bombay, Allied Publishers Ltd, 1964, P.222.
- (34) وشن. آءِ جڳتياڻي: "قومي پروانه" حيدرآباد، ڪوڙومل سنڌي ساهت منڊل. 1944ع ص15٠
 - (35) ايضاً, ص 176
- (36) Percival Spear: "Modern India" London, Oxford University, 1965, P-354.
- (37) Kanshik, P.D: "The Congress Idiology and Programme" Bombay, Allied Publishers Ltd, 1964, P.272.
- (38) L.F. Rush Brook, Williams: "The state of Pakistan" London, Faber and Faber, 1962, P.24

- (39) Grover L.B: "Studies in Modern Indian History" Bombay S.Chand & Co, 1963 P-311.
- (40) Brunn Geoffrey: "The World in the Twentieth Century" D.C. Heath & Company Boston, 1948, P.644.
- (41) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.86
- (42) Ibid, P.82
- (43) وشنو شرما: "دِاكٽر چوئٿرام پرتابراءِ گدواڻي جي جيوني" بعبثي، هندستان ساهتيہ مالا، 1967ع ص 209
- (44) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.P. 95-96
- (45) Khan Abdul Waheed: "Indian Wins the Freedam the Other Side" Pakistan Educatinal Publishers Ltd, Karachi, 1961, P.222
- (46) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.114.
- (47) Weel.as.R.V: "Pakistan Birth and Growth of a Muslim Nation" Londan, D.V an Nostrand Company 1964, P.87
- (48) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.178.
 - (49) معلومات مولانا محمد صالح "عاجز" كان ورتي وئي.
 - (50) فائق كامران: "تحريك پاكستان", لاهور, فيروزسنز لمينيد 1976ع ص46.
 - (51) ڏسو: حوالو مٿيون ص52٠.
 - (52) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي" لاهور عزيز پبلشرز 1975، ص204٠
- (53) Ram Gopal: "Indian Muslims" Bombay, Asia Publishing House, 1964, P-93.
- (54) محبوب: "هزرائل هائنيس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان" ڪراچي، اسماعيليه ايسوسيئيشن 1959ع ص149٠
- (55) Rajput. A.B: "Muslim League Yesterday and Today" Lahore Mohammad Ashraf, 1948, P.19.
 - (56) صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي" لاهور، عزيز پبلشرز 1975ع ص209٠.

- (57) G.Allana: "Pakistan Movement Historic Documents" Karachi, University of Karachi 1967, P.P.22-23
- (58) Weekes.R.V: "Pakistan Birth ond Growth of a Muslim Nation"
 London, D.V an Nostrand Company INC, 1964, P.74
- (59) Smith Vincent. A: "The Oxford History of India" Oxford, Claredon Press 1961, P.592.
- (60) ڏسو: "ماهوار پيغام" ڪراچي. شعب اطلاعات کاتو، سيپٽمبر آڪٽوبر 1982 ص14٠
- (61) جي.ايـر.سيد: "جنب گذاريـر جن سين" (جلد ٻيو) حيدرآباد، سنڌي ادبي بورد 1967ع ص49.
- (62) See "The Daily Gazette", Karachi, dated 11-8-1934 P.22
- (63) جي.اير.سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدرآباد, اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952 ع ص7٠.
 - (64) ڏسو: "صوبه سنڌ مسلم ليگ ۽ ان جي شاخن جا اغراض ومقاصد ص١٠.
- (65) See "Resolution No 2" adopted in the First Sind Provincial Muslim League Conference, held in October, 1938, at Karachi.
- (66) See "Resolution No 5" adopted in the First Sind Provincial Muslim League Conference, held in October, 1938
- (67) جي.اير.سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدرآباد. اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952 ع ص56٠٠
 - (68) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. 18 جنوري. 1940 ص1·
- (69) جي.اير.سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" حيدرآباد, اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952 ع ص82.
- (70) جي. ايىر سيد: "جنب گذاريىر جن سين" (جلد ٻيو) حيدرآباد سنڌي ادبي بوديد 1967ع ص183٠
- (71) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 8.7.1944, P.1
- (72) هي، معلومات "جناب شيخ عبدالمجيد سنڌي، "كان 6 ڊسمبر 1976ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (73) روزانه "الوحيد" جي مختلف پرچن مان ورتل معلومات.

and the standard for the standard of the stand

State of the state of the lighter trades are record that the following state of the state of the

EN Training the same of the same

بابستون عالمن جي زندگيءَ جو احوال



باب ستون

عالمن جي زندگيءَ جو احوال

مولانا حاجي احمد ملوي

حاجي احمد ولد فضل محمد ابڙو ڳوٺ ملا ابڙا ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. مولوي محمد حسن حيدرآباديءَ کان تعليم وٺي دستاربند ٿيو، ۽ پوءِ اتي ئي درس وتدريس جو آغاز ڪيائين(1). ڪجه وقت کان پوءِ حيدرآباد ڇڏي وڃي بلوچستان ۾ رهيو، جتي گهڻو وقت دين جي خدمت ڪرڻ کانپوء واپس وطن وريو ۽ اچي زمين جو ٽڪرو آباد ڪري پيٽ گذر ڪرڻ لڳو(2).

مولوي حاجي احمد ملويء جي سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ٿيو. پاڻ تحريك جي سرگرم كاركنن مان هك هو. جڏهن انگريزن هن تحريك كي ناكام بنائڻ لاءِ "امن سيا" قائم كرائي، ۽ مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ شايع كرائي، تـ خلافتي عالمن به ان جي رد ۾ فتوائن جو سلسلو شروع كيو. مولوي صاحب خلافتي عالمن جو سات ڏيندي، سندن جاري كيل فتوائن جي تصديق كئي ۽ پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت پيش كيو(3).

هن ئي تحريك دوران جڏهن "هجرت تحريك" جو آغاز ٿيو ته پاڻ هنڌين ماڳين تقريرون كري، ان كي كامياب بنائڻ جي كوشش كيائين(4).

مولانا حاجي احمد ملويءَ سفر جي حالت ۾ سن 1351هـ مطابق 1932ع ۾ شڪارپور لڳ وفات ڪئي(5).

مولانا احمد هالائي

مولوي احمد ولد مولوي محمد جي ولادت جي تاريخ 7 جمادي الثاني سن 1314هـ مطابق 13 نومبر 1896ع تي پراڻن هالن ۾ ٿي. هن ارڙهن سالن جي ڄمار ۾ پنهنجي والد بزرگوار مولانا محمد وٽ جملي ديني نصاب ختم ڪري دستار بندي ڪئي.

علمي فراغت کان پوءِ مولوي صاحب "مدرسه محمديه" ۾ درس ڏيڻ لڳو، ۽ ان سان گڏ فتوي نويسيءَ ۽ شرعي فيصلن جو ڪر به ڪندو رهيو(6).

مولانا صاحب "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جي

شروعات ڪئي. پاڻ "هالا خلافت ڪاميٽيءَ" جي عهديدارن مان هڪ هو(7), ۽ هن تحريڪ کي ڪامياب بنائڻ واسطي ان جي مالي مدد به ڀرپور نموني ۾ ڪيائين(8).

مولانا هالائي مبلغ بڻجي وڃي خلافت جي مسئلي کي عوامر تائين پهچائيندو هو. انگريزن خلاف هن جي جوش ۽ ولولي کي ڏسي وقت جي سرڪار نه صرف مٿس زبان بنديءَ جو حڪر صادر ڪيو*, پر هن محب وطن عالم کي جيل ياترا بہ ڪرڻي پيئي(9).

"خلافت تحريك" جي آغاز بعد جدِّهن انگريز سركار "امن سيا" جي روح روان عالم مولوي فيض الكريم كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو كتاب لكرائي خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت كي مسخ كرڻ جي كوشش كئي، ته خلافتي عالمن به ان فتويٰ جا رد لكي شايع كرايا، جن جي مولانا صاحب به تصديق كئي(10).

پاڻ تاريخ 15 محرم سن 1376ه مطابق 22 آگسٽ 1956ع تي رحلت ڪيائين(١١).

مولانا احمد ميمڻ

مولانا احمد ولد ميان عارف ميمڻ سن 1304هـ مطابق 1886ع ۾ تعلقي ڏيپلي ضلعي ٿرپارڪر ۾ ڄائو. ابتدائي فارسي ۽ عربيءَ جي تعليم ڳرٺ رپ ضلعي بدين ۾ مولانا محمد رفيق وٽ حاصل ڪرڻ کان پوءِ باقي تعليم وڃي مگسي ڳرٺ ملير ۾ مولانا محمد عمر وٽ پوري ڪري فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ "فياض العلوم دارالبركات" كيڻ ۾ درس وتدريس ڏيڻ شروع كيائين. ان بعد "مدرسه اسلاميه" ڏيپلي ۾ پڙهائڻ سان گڏ پيش اماميءَ جا فرائض به انجام ڏيندو رهيو(12).

مولانا احمد ميمڻ پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو. پاڻ تحريڪ جي ڪيترن ئي جلسن ۾ شريڪ ٿي، نه صرف انگريزن خلاف نفرت جو اظهار ڪندو هو، پر تحريڪ کي زور وٺائڻ لاءِ ان جي مالي مدد ب ڪندو هو(13). هن هلچل ۾ ڀرپور حصي وٺڻ جي پاداش ۾ کيس چئن مهينن لاءِ جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي(14).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماء" ۾ شموليت اختيار ڪئي، ۽ ان جي جلسن ۾ شريڪ ٿي انگريزي ڪپڙا ساڙائيندو هو، ۽ وطن جي آزاديءَ لاءِ ڀرپور ڪوشش ڪيائين(15).

^{*} كيس سيوهڻ ۾ سڏايل خلافت ڪانفرنس جي موقعي تي سرڪار طرفان تقرير نہ ڪرڻ جو نوٽيس ڏنو ويو هو. (ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص 14-16).

مولانا صاحب تاريخ 18 ربيع الاول سن 1376هـ مطابق 23 آكٽوبر 1956ع تي هن فاني دنيا مان لاڏاڻو كيو(16).

مولانا احمد ملاح

مولوي احمد ولد ناگيو ملاح سن 1294ه مطابق 1887ع ۾ ڳوٺ ڪنڊي تعلقي بدين ۾ ڄائو. قرآن شريف حاجي عبدالله منڌري وٽ پڙهيو ۽ فارسيءَ جي تعليم تعليم تعليم تعليم تعليم مولوي محمد هاشم ڪڇيءَ کان ورتائين. ان بعد سجاول، رپ ۽ ٻين شهرن جي مڪتبن ۾ به پڙهيو، ۽ آخر ۾ ناگو شاھ نالي مڪتب مان وڃي دستاربند ٿيو(17).

مولوي احمد ملاح پوري ڄمار درس وتدريس ۾ بسر ڪئي. پاڻ سنڌي. اردو. عربي، فارسي ۽ سرائيڪي ٻولين ۾ مهارت رکندو هو. شعروشاعري ۽ تصنيف وتاليف سندس زندگيءَ جو مکي مشغلو هو. نثر ۽ نظر ۾ سندس لکيل ڪتابن مان ڪجه ڪتاب هي آهن: (18)

"معرفت الاالله", "گلزار احمد", "گلشن احمد", "نور القرآن", "هاکرائي حق", "فتح لنواري", "شرک چٽ", "بياض احمد" ۽ "قرآن شريف جو منظوم ترجمو"

مولانا احمد ملاح لار جو هك مشهور عالم سياستدان هو. انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ جدّهن ملك اندر هلچل شروع ئي، ته هن "خلافت تحريك" ۾ بهري وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو. پاڻ خلافت كاميٽيءَ جي سرگرم كاركنن مان هك هو. تحريك جي آغاز كان وٺي انجام تائين خلافت جي مسئلي كي پنهنجو ديني ۽ سياسي فرض سمجهي هن تحريك ۾ ڀرپور حصو وٺڻ لڳو، جنهن جي پاداش ۾ كيس چئن مهينن لاءِ جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي(19). مولانا صاحب كيترو وقت حيدر آباد ضلعي جي خلافت كاميٽيءَ ۽ سنڌ خلافت كاميٽيءَ جو ميمبر به ٿي رهيو(20).

خلافت تحريك جي خاتمي كان پوءِ سنڌ جي عالمن جڏهن "جمعيت العلماء سنڌ" قائم كئي ته مولانا ملاح ان ۾ شامل ٿيو، ۽ پنهنجي صلاحيتن ۽ وطن دوستيء جي جذبي سبب هن جماعت ۾ به كيترن ئي عهدن تي فائز رهي، وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين. پاڻ 1925ع كان وٺي هن جماعت جي "كاروباري كاميٽيءَ" جو ميمبر ٿي رهيو(21) ۽ ان كان سواءِ كيس هن جماعت جي بدين واري شاخ جو ناظم مقرر كيو ويو هو(22).

مــولانا احمــد مــلاح ســن 1389هــ مطابــق 1969ع ۾ هــن دنــيا مــان لاڏاڻــو ڪيو(23)٠

مولانا احمد علي "مجذوب"

مولوي احمد علي ذات جو دَل سن 1315هـ مطابق 1897ع ڌاري ضلعي ٿرپارڪر ۾ ڄائو. پاڻ پڪو موحد ۽ جيد عالم ٿي گذريو آهي ۽ ڪيترو وقت ڊينگاڻ ڀرڳڙيءَ جي مدرسي ۾ ديني تعليم ڏنائين(24).

جدّهن "خلافت تحريك" شروع تي ته مولانا احمد علي صاحب ان ۾ شامل تي پنهنجي سياسي زندگيءَ جي ابتدا كئي. پاڻ ترپاركر ضلعي جي قومي ۽ خلافتي كاركنن مان هك هو ۽ تحريك جي ضلعي خواه صوبائي سطح وارن جلسن ۾ شريك تي خلافتي عالمن جو سات دّيندو هو(25). محب وطن عالمن جدّهن "ترك موالات" تي عمل كندي انگريزي شين جي استعمال كان روكڻ لاءِ فتوائن جو سلسلو شروع كيو. ته مولانا احمد على صاحب به انهن فتوائن جي تائيد كئي(26).

ان کان پوءِ ڪجه وقت لاءِ "ڪانگريس" ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪندو رهيو، ۽ آخر ۾ "خاڪسار تحريڪ" سان وابستگي اختيار ڪيائين. پاڻ مڙني تحريڪن ۾ هڪ مخلص ڪارڪن، دلير مبلغ ۽ سچي سپاهيءَ جي حيثيت سان ڪر ڪندو رهيو (27).

هيءُ حريت پسند عالم تاريخ 8 ذي القعد سن 1386هـ مطابق 18 فيبروري 1967 ع تي هن فاني دنيا مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو(28).

مولانا پير احسان الله شاهه راشدي

پير احسان الله شاه ولد پير رشد الله شاه راشديءَ جي ولادت تاريخ 27 رجب سن 1313هـ مطابق 13 مارچ 1896ع تي ڳوٺ پير جهنڊي تعلقي هالا ضلعي حيدرآباد ۾ ٿي. تعليم پنهنجي ڳوٺ جي مدرسي "دارالرشاد" مان حاصل ڪيائين. علمي فراغت کان پوءِ پيريءَ مريديءَ ۾ پاڻ کي مشغول رکيائين.

پير صاحب وڏو علم دوست ۽ ادب پرور انسان هو. هن اڻ ميو ڌن خرچ ڪري عاليشان ڪتب خانو تيار ڪيو. ان کان سواءِ کيس تحرير ۽ تقرير جي فن ۾ به مهارت حاصل هئي. سندس لکيل ڪي ڪتاب هي آهن:

رسالو "المقالة المحبوبة في الدعاء بعد صلواة النكتوبة" ۽ "خيمة الزجاجة في شرح ابن ماجة" (29).

پير احسان الله صاحب سنڌ جي ديني ۽ علمي خاندان جو چشر وچراغ هو، ان ڪري فطري طور تي سندس رغبت مذهبي نوعيت واري سياست ڏانهن رهي. تاهر سنڌ ۾ جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو ته پاڻ ان ۾ ڀرپور حصو وٺي انگريزن خلاف ڪر ڪرڻ لڳو(30).

پير صاحب تاريخ 15 شعبان سن 1358هـ مطابــق 30 سيپٽمبر 1939ع تي رحلت ڪئي(31).

مولانا حافظ اسد الله شاهه تكرّائي

سيد حكير حاجي حافظ قاضي اسد الله شاه "فدا" ولد سيد اله بخش شاه تاريخ 15 شعبان المعظم سن 1285ه مطابق 30 نرمبر 1869ع تي اڳئبن ٽکڙ ۾ ڄائو. سندس تعليم جو آغاز حافظ يوسف وٽان ٿيو. جنهن وٽ سنڌي. فارسي ۽ فقه پڙهڻ کان پوءِ صرف نون مهينن جي قليل عرصي ۾ قرآن مجيد حفظ ڪري ورتائين.

ان بعد دستار بندي وجي حيدرآباد ۾ مولانا محمد حسن وٽ ڪيائين. علر جي تانگه کيس ڪجه وقت لاءِ ديوبند ۾ مولانا محمود الحسن شيخ الهند جو به شاگرد بڻايو. پر جيئن ته پاڻ پنهنجن عزيزن کي ٻڌائڻ ۽ انهن جي رضامندي کان سواءِ ديوبند پڙهڻ ويو هو. ان ڪري ستت ئي کيس واپس ڳوٺ موٽي اچڻو پيو(32).

ديوبند کان واپس اچي سيد ميران محمد شاه اول کان طب جي تعليم ۾ مهارت حاصل ڪيائين. اهڙيءَ طرح حڪمت جي ڏنڌي کي ذريعو معاش بڻائي. ٽکڙ ۾ هڪ عاليشان دوا خانو کوليائين(33).

شاه صاحب جو ٻالپڻي کان وٺي علم ادب ڏانهن به لاڙو هوندو هو. 1906ع ۾ هن ٽکڙ مان "بهار اخلاق" نالي هڪ ماهوار رسالو جاري ڪيو. هن رسالي سالن جا سال سنڌيءَ ٻوليءَ ۽ علم ادب جي خدمت ڪئي. پاڻ سنڌيءَ ۽ فارسيءَ جو بلند پايه شاعر به هو. هن ڪجه مذهبي ۽ سياسي نوعيت جا ڪتاب به لکيا، جن جو وچور هن طرح آهي(34):

"هديه اسديه". "الانتصار في جواب الاشتهار". "فتح الهادي في رد گمنام حيدرآبادي" ۽ "اثبات الخلافة للدولة العثمانية" ذكر لائق آهن.

سيد اسد الله شاه مطالعي هيٺ آيل دور جي مسلمان اڳواڻ سياستدانن مان هڪ هو. وطن دوستيءَ جي جذبي کيس سڀ کان پهريائين مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي صحبت ۾ آندو, ان ڪري پاڻ "ريشمي رومال تحريڪ" ۾ حصو ورتائين. هن تحريڪ

۾ مولانا عبيدالله سنڌيء کبس "جنود ربانيه" ۾ ليفٽيننٽ جنرل جو عهدو ڏنو هر(35).

ان كان پوءِ جدّهن "خلافت تحريك" جو آغاز ٿيو، ته مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي رفاقت ۾ انهيءَ جماعت ۾ ڀرپور حصو وٺڻ لڳو، ۽ "خلافت تحريك" جي زماني ۾ سنڌ توڙي هند ۾ جيكي به مكيه كانفرنسون ٿيون، تن ۾ پاڻ شركت كيائين. اهڙيءَ طرح جدّهن "ترك موالات تحريك" جي شروعات ٿي، ته ان كي كامياب بنائڻ لاءِ شاه صاحب سنڌ جي كنڊ كڙڇ ۾ پهچي ڀرپور پرچار كيو(36).

سيد اسد الله شاه عملي طور تي تحريك ۾ حصي وٺڻ كان سواءِ هن جي مالي مدد به كندو هر(37)، ۽ جڏهن خلافتي عالمن طرفان فتوائون شايع ٿيون، ته نہ صرف انهن جي تصديق كيائين(38) پر هن وطن دوست عالم پنهنجي سر به "امن سيائي ملن" خلاف قلمي جهاد كير.*

"خلافت تحريك" دوران ئي "جمعيت العلماء هند" جو قيام عمل ۾ آندو ويو هو. سيد اسد الله شاه به انهن سنڌي عالمن مان هڪ هو، جن هن جماعت جي پهرئين اجلاس ۾ شركت كئي (39). پاڻ "جمعيت العلماء هند" ۾ ڀرپور حصو وٺندي. كيتري وقت تائين هن جماعت جي سنڌ شاخ جو صدر بہ ٿي رهيو(40).

آخر ۾ جڏهن مذهبي بنيادن تي "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" آزاديءَ حاصل ڪرڻ لاءِ ملڪ اندر هلچل شروع ڪئي ته پاڻ "مسلم ليگ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين، ۽ سرگرميءَ سان ان ۾ حصو وٺندي ڪيتري وقت تائين "سنڌ مسلم ليگ" جو صدر به تي رهيو(11).

شاه صاحب تاريخ 27 رجب 1344ه مطابق 10 فيبروري 1926ع تي هيءُ جهان ڇڏيو(42).

مولانا حاجي الاهي بخش

مولوي حاجي الاهي بخش ولد ميان عبدالحلير بلوچ ڳوٺ ٻانهي لاکير ضلعي دادو ۾ تولد ٿيو. قرآن شريف جي ابتدائي تعليم ڳوٺ ۾ ورتائين. ان بعد پرائمري اسڪول راوت خان لغاريءَ ۾ داخل ٿيو. جتي سنڌيءَ سان گڏ فارسيءَ جي تعليم بحاصل ڪيائين (43). ڪافي ناغي کان پوءِ وري تعليم جو سلسلو جاري رکيائين، ۽

پاڻ "امن سڀا" جي روح روان مولوي فيض الكريم جي كتاب "تحقيق الخلافت" جي رد
 ۾ "الفتوحات الربانيه في الاثبات الخلافة للدولت العثمانيه" نالي فتريٰ كڍيائين. (اسد الله "اسد": "تذكره شعراء تكڙ" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1959ع ص 75).

مولانا عطا؛ الله فيروز شاهيءَ, ۽ مولانا شفيع محمد "مسجدي" كان علم حاصل كري فارغ التحصيل "يو(44).

علمي فراغت كان پوءِ مولوي صاحب درس وتدريس جو مشغلو اختيار كيو. دَّتي تعاليٰ كيس شاعريءَ جي ڏات ۽ لکڻ پڙهڻ جو ڍنگ به عطا كيو هو. هن سنڌي، سرائكي ۽ فارسيءَ ۾ كلام چيو آهي ۽ پنهنجي شاعريءَ ۾ تخلص بدران سڄو نالو كر آڻيندو هو. سندس لكيل كتابن جو وچور هن طرح آهي: (45)

"نيك صلاح"، "بهشتي باغ"، "ضرورت پرده"، "آرين جي رد ۾ هك رسالو" ۽ "تعليم تي هڪ رسالو".

مولانا حاجي الاهي بخش "خلافت تحريك" جي سرگرم ۽ مقامي اڳواڻن مان هڪ هو. خلافت جي مسئلي کيس انگريزن کان ايترو تہ متنفر ڪري ڇڏيو، جو پاڻ پنهنجي مدرسي کي ملندڙ سرڪاري گرانٽ وٺڻ کان انڪار ڪري ڇڏيائين(46)، ويتر انهيءَ غربت هوندي به تحريك جي مالي مدد كندو هو(47)، ۽ سندس ئي ڪوششن سان خيرپور ناٿن شاه ۾ خلافت كانفرنس منعقد ٿي. پوءِ سگهو ئي سن 1338ه مطابق 1920ع ۾ راه رباني وٺي ويو(48).

مولانا حكير الاهي بخش اعوال

مولانا الاهي بخش ولد وڏيرو غوث بخش اعواڻ سن 1318هـ مطابق 1900 ع ڌاري شڪارپور ۾ ڄائو (49)، ڪجهـ وقت مولـوي يـار محمـد وٽ پـڙهڻ بعد باقـي تعلـير امروٽ شريف ۾ پـوري ڪيائين. ان کـان پـوءِ مـولانا تـاج محمـود امروٽيءَ جي مـدد سـان وڃي دارالعلـوم ديوبـند پهـتو. جـتان پـوءِ حڪـيم اجمل خان جي طبيه ڪالـيج دهليءَ ۾ داخل ٿي، پـنجن سـالن جي انـدر حڪمت جي سـند وٺـي واپـس وطـن وريـو ۽ اچـي شڪارپور ۾ پنهـنجو دواخانـو کوليائين. حڪمت جي شغل سـان گڏ پـاڙي جي مسجد ۾ درس قرآن ۽ امامت جـا فـرائض بـ انجام ڏيندو رهيو(50).

مولانا الاهي بخش جي شاگرديءَ خواه ان کان پوءِ وارو زمانو حضرت مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي صحبت ۽ تعليم وتربيت ۾ گذريو. امروٽ شريف کي انهيءَ وقت ۾ ڌارئين حڪمران خلاف مڙني تحريڪن جي مرڪر جي حيثيت حاصل هئي. مولانا اعواڻ صاحب ديني تعليم سان گڏ پنهنجي محسن استاد ۽ سياسي اڳواڻ مولانا تاج محمود امروٽي کان وطن جي آزاديءَ جا به درس وٺي چڪو هو. جڏهن "خلافت تحريك" شروع ئي ته مولانا الاهي بخش جيتوڻيك اڃا شاگرديءَ جي دور مان گذري رهير هو، تڏهن به هن تحريك ۾ ڀرپور حصو ورتائين.

جڏهن تركيءَ جي مسلمانن تي اٽليءَ طرفان ظلر ٿيڻ لڳا تہ 31 مئي 1931ع تي شڪارپور ۾ هڪ عظير الشان جلسو ٿيو. جنهن ۾ اٽليءَ جي مظالر تي نفرت جو اظهار كيو ويو. هن گڏجاڻيءَ ۾ مولانا اعواڻ صاحب به شريك ٿي پنهنجي بين الاقوامي سياسي بصيرت جو ثبوت پيش كيو(51).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ "جمعيت العلماء" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پنهنجون سياسي خدمتون سر انجام ڏيندو رهيو(62).

پاڻ سن 1382ه مطابق 1964ع ۾ رحلت ڪيائين(53).

مولانا اله بخش "ابوجهو"

مولوي اله بخش جي ولادت ميانوالي پنجاب ۾ ٿي. ديني علمن کان سواءِ مشرقي ٻولين جو به وڏو ماهر هو.

مولوي صاحب پهريائين فرنگي فوجين کي مشرقي زبانن جي تعليم ڏيندو هو. اتان رٽائر ڪرڻ کان پوءِ سن 1880ع ۾ سنڌ ۾ سالٽ انسپيڪٽر مقرر ٿيو. ان کان سواءِ ڪجه وقت سرڪاري هاءِ اسڪول ۾ فارسيءَ جو ٽيچر بـ ٿي رهيو(54). جڏهن حسن علي آفندي سنڌ مدرسو قائم ڪيو ته هن اتي پوري ڄمار فارسي ٽيچر جي حيثيت ۾ ڪر ڪيو.

پاڻ سنڌيءَ ۾ شاعري به ڪندو هو، جنهن ۾ "اٻوجهو" تخلص ڪر آندو اٿس. سندس شاعريءَ جي ڪتاب"مسدس اٻوجهو" کي سنڌي ادب جي تاريخ ۾ اهر مقامر حاصل آهي(55).

مولوي اله بخش حسن علي آفنديءَ سان گڏجي سن 1884ع ۾ "مجمع محمدي" جي نالي سان هڪ جماعت آائم ڪئي، جيڪا سنڌ جي مسلمانن جي پهرئين سياسي،سماجي، مذهبي ۽ تعليمي جماعت هئي. پاڻ ان جماعت جو باني سيڪريٽري مقرر ٿيو (56). هن جماعت اڳتي هلي "محمدن ايسوسيئيشن" جو روپ اختيار ڪيو. پاڻ ڪيترو وقت ڪراچي ميونسپ لٽيءَ جو ميمبر به ٿي رهيو (57).

مولوي صاحب سن 1319ه مطابق 1901ع ۾ وفات ڪئي(58).

مولانا الهربخش مهيسر

مولري اله بخش ولد محمد عمر مهيسر سن 1306هـ مطابق 1889ع ۾ ڳوٺ

پپري ضلع دادو ۾ ڄائو. تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ ئي مولانا عبد الرحمٰن فيروزشاهيءَ کان حاصل ڪري, دستاربندي ڪيائين.

علمي فراغت کان پوءِ درس تدريس کي اختيار ڪيائين ۽ پوري ڄمار انهيءَ شغل ۾ بسر ڪيائين(59).

مولوي الهم بخش مهيسر "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست ۾ قدم رکيو. انگريزن جڏهن مولوي فيض الكريم ٺاروشاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جاري كرائي. تحريك كي كمزور بنائڻ جي كوشش كئي، ته خلافتي عالمن جي طرفان ان جو رد لكي شايع كرايو ويو، جنهن جي مولانا مهيسر صاحب به تصديق كئي(60).

"خلافت تحريك " دوران "جمعيت العلماء" ۾ به شامل ٿيو، ۽ وطن جي آزادي لاءِ سرگرميءَ سان حصو وٺندي . ڪيتري وقت تائين هن جماعت جي ميهڙ شاخ جو نائب صدر بـ ٿي رهيو(61).

پاڻ سن 1346ع مطابق 1928ع ۾ لاڏاڻو ڪري وڃي، پنهنجي رب سان مليو(62).

مولانا حاجي امام الدين راشدي

مولانا پير حاجي امام الدين ولد پير سيد رشيد الدين تعليم ۽ تربيت پنهنجي والد وٽ حاصل ڪري.اچي ٺلاه شريف ۾ مقيم ٿيو، جتي فيض ۽ ارشاد جو سلسلو شروع ڪيائين. پاڻ حڪمت ۽ طب جو وڏو ماهر هو(63).

سن 1901ع ۾ جڏهن مولانا عبيد الله سنڌيءَ مدرسه "دارالرشاد" جي بنياد وڌو ته هي به به مدرسي جي "انجمن شوريا" جي ميمبرن مان هڪ هو(64). ان وقت کان ئي کيس مولانا عبيد الله سنڌيءَ جي صحبت نصيب ٿي.

جدّهن خلافت تحريك شروع تي ته. انگريزن ان كي ناكام بنائڻ لاءِ "امن سيائي ائئر كرائي. ۽ خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت كي مسخ كرائڻ لاءِ امن سيائي عالم مولوي فيض الكريم ٺارو شاهي ۽ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتري شايع كرائي ته پير امام الدين راشديءَ "امن سيائين" جو سات ڏيندي، ان فتوي جي تصديق كري، پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو(65). پر پوءِ سگهوئي پنهنجي غلطيءَ جو ازالو كري، خلافتي عالمن جي طرفان جاري كيل فتوائن جي تائيد كيائين(66) ۽ اهڙيءَ طرح خلافت تحريك ۾ شامل ٿي، ان ۾ ڀرپور حصو وٺڻ لڳو. پاڻ وطن جي آزاديءَ خاطر هن تحريك جي سياسي ميدان تان سرگرميءَ

سان حصو ورتائين ۽ ان جي جلسن ۾ شريڪ ٿي پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏيندو رهيو(67).

پير صاحب تاريخ 27 ربيع الثاني 1350هـ مطابق 11 سيپٽمبر 1931ع تي لاڏاڻو ڪري ويو(68)

مولانا سيد امير محمد شاه

مولوي سيد امير محمد ولد سوڌل شاه جي ولادت سن 1310هـ مطابق 1892ع ۾ ڳوٺ اميناڻي ضلع حيدرآباد ۾ ٿي(69). قرآن شريف جي تعلير پنهنجي ڳوٺ جي آخوند ميان الهندي تنيي کان ورتائين. ان بعد پرهيارن جي ڳوٺ ۾ مولوي محمد عارف وٽ فارسيءَ جي تعليم پوري ڪرڻ کان پوءِ باقي ديني تعليم دادوءَ ۾ مولوي محمد هاشر انصاريءَ کان وئي دستار بند ٿيو.

علمي قراغت کان پوءِ پاڻ ڳوٺ اميناڻين ۾ ئي تعليم ڏيڻ جو سلسلو شروع ڪيائين(70).

مولوي سيد امير محمد شاه "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست ۾ پير پاتو. پاڻ تحريك جي آغاز كان وٺي انجام تائين. ان جو پرخلوص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو. جڏهن خلافتي عالمن انگريزن طرفان قائم كرايل "امن سڀا" خلاف فتويٰ جاري كئي ته شاه صاحب بان جي تصديق كئي (71).

"خلافت تحريك" كان پوءِ هن "جميعت العلماءِ" ۾ شركت كئي. ۽ پاڻ سن 1925 ع كان وٺي "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي وركنگ كاميٽيءَ جو ميمبر بہ ٿي رهيو(72).

شاه صاحب تاريخ 29 شوال سن 1379هـ مطابق 26، اپريل 1949ع تي رحلت ڪئي (73).

مولانا مخدوم بصر الدين سيوهاڻي

مخدور بصرالدين ولد مخدور احمد صديقيء جي ولادت تاريخ 29 رمضان المبارك سن 1282ه مطابق 14 فبروري 1866ع تي سيوهڻ ضلعي دادو ۾ ٿي (74). دينيات جا كتاب پنهنجي ڏاڏي ميان محمد وٽ پڙهيو ۽ باقي علم پنهنجي سوٽ مخدور حسن الله پاتائيءَ وٽ پورو كيائين. ان بعد " سنڌ مدرسة الاسلام" كراچيءَ ۾ داخل ٿي انگريزيء جي به تعليم حاصل كري ورتائين. طب جو علم ۽ فن كيس پنهنجي ڏاڏنگ كان ورثي طور مليو هو.

مولانا بصرالدين صديتي جيترڻيك گهڻر وقت گوشي نشينيءَ ۾ گذاريندو هو، پر پاڻ تاريخ ۽ سياست ۾ وسيع مطالعو كيو هئائين (75). ان كري انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ جڏهن ملك اندر سياسي تحريكون اڀريون، ته پاڻ "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سر گرميءَ سان حصو وٺڻ لڳو. اهڙيءَ طرح جڏهن سنڌ ۽ هند جي خلافتي عالمن تركِ موالات لاءِ فتويٰ جاري كئي، ته پاڻ نه صرف ان جي تائيد كيائين (76). پر تحريك جي كاميابي لاءِ ان جي مالي مدد به كندو هو (77).

مخدوم صاحب تاريخ 10 ذي القعد 1356هـ مطابق 11 جنوري 1938ع تي وفات كئي (78).

مولانا ميان پير محمد ٿيٻو

مولوي پير محمد ولد آخوند فقير محمد ٿيٻو ٽنڊي قيصر ضلعي حيدر آباد ۾ ڄائو. قرآن شريف ۽ فارسيءَ جي ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان وٺڻ بعد عربيءَ جي وڌيڪ تعليم وڃي قاضي سيف الله ٽنڊي قيصر واري کان حاصل ڪيائين.

علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ٽنڊي قيصر ۾ مدرسو قائم ڪري درس و تدريس ڏيندو رهيو (79).

مولانا پير محمد پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "امن سيا" ۾ شامل ٿيڻ سان ڪيو (80). پر پوءِ سگهوئي "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿيو، ۽ جڏهن سنڌ جي خلافتي عالمن امن سيا خلاف "اظهار الڪرامة" نالي هڪ فتويٰ جو ڪتاب شايع ڪرايو تہ هن به ان جي تصديق ڪري (81)، پنهنجي غلطيءَ جو ازالو ڪيو.

مولانا صاحب هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ ان جي مالي مدد به كئي (82). پر تحريك ايا عروج تي ئي نه پهتي، ته پاڻ راه رباني وٺي ويو.*

مولانا قاضي تاج محمد نصر پوري

مولوي تاج محمد ولد قاضي عبد الرحمٰن جي ولادت سن 1318هـ مطابق 1900 ع ڌاري سنڌ جي تاريخي شهر نصرپور ضلعي حيدر آباد ۾ ٿي. فارسي ۽ عربيءَ جا

[&]quot; كتاب "سنڌ جا اسلامي درسگاه" ۾ سندس وفات رجب 1337ه ۾ ڄاڻائي وئي آهي. جيكا صحيح نہ آهي ڇو ته هن جن فتوائن جي رسالن تي صحيحون كيون آهن. سي سندس وفات جي ڄاڻايل سن كان پوءِ جا آهن ۽ پاڻ سن 1338ه ۾ هلال احمر لاءِ چندو ڏنو هئائين.

شروعاتي كتاب پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مولانا محمد صالح ميمڻ, مولوي محمد سمي. مولوي عبدالعزيز بختيار پوريءَ وٽ پورا كيائين. ان بعد باقي تعلير به اتي ئي مولانا محكر الدين پڙهياڙ وٽ مكمل كري دستار بند ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ اڏيرولال جي ويجهو فقير فيض محمد جي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم كري درس وتدريس جو آغاز كيائين. كجه وقت كان پوءِ اتان ڇڏي ڦلهڏيون تعلقي كپري ۾ وڃي پڙهائڻ لڳو. ان بعد نصرپور جي مدرسي "مظهر العلوم" ۾ اچي ساڳيو شغل جاري ركيائين، ۽ ان سان گڏو گڏ حكمت جو ڌنڌو به كندو رهيو (83).

قاضي تاج محمد صاحب پنهنجي سياسي زندگي جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كئي، ۽ ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. جڏهن خلافتي عالمن انگريزين طرفان قائم كرايل "امن سڀا" جي مخالفت ۾ فتويٰ جاري كئي ته مولانا صاحب به ان جي تصديق كئي (84). پاڻ ڏکڻ سنڌ ۾ دورا كري، انگريزن خلاف نه صرف تقريرون كيائين (85). پر تركِ موالات تي عمل كندي عوام كي ولايتي كپڙي پهرڻ كان به روكيندو هو(86). انگريز دشمني جي پاداش ۾ هن محب وطن عالم كي ٻارهن مهينا جيل جي به سزا ڀوڳڻي پيئي (87). قاضي صاحب سن 1384همطابق 1929ع ڌاري ڀرپور جوانيءَ ۾ لاڏاڻو كري ويو (88).

مولانا سيد تاج محمود امروتي

مولانا سيد تاج محمود ولد سيد عبدالقادر جي ولادت سن 1276 هـ مطابق 1859ع ڌاري ڳوٺ ديواني لڳ ڳاڙهي موري ضلعي خيرپور ميرس ۾ ٿي (89). هن بزرگ ابتدائي تعليم جو آغاز پنهنجي والد جي نظرداريءَ ۾ ڪيو. ان بعد پير پاڳاري جي ڳوٺ ۾ ڪجه وقت تائين فارسيءَ جي تعليم ورتائين، ۽ ان کان پوءِ تعلقي پني عاقل ۾ وڃي مولانا حاجي عبدالقادر صاحب پنهواريءَ وٽ ظاهري علومن جي تڪميل ڪري فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان بعد وقت جي نامياري بزرگ حافظ محمد صديق يرچونڊيءَ واري كان فيض حاصل كري، سندس ئي حكم تي اچي امروت ۾ رهيو. (90) امروت ۾ سكونت اختيار كرڻ كان پوءِ ديني خدمت جو آغاز كيائين. انهيءَ دوران مولانا عبيدالله سنڌي به ديوبند مان فارغ التحصيل ئي اچي امروت ۾ رهيو. پنهي بزرگن گڏجي امروت ۾ هك دارالعلوم كولي درس و تدريس جو كم شروع كيو، ۽ ان سان گڏ سنڌي عوام جي مذهبي، سياسي، ادبي ۽ علمي شعور كي زنده كرڻ لاءِ "محمود المطابع" نالي هك پريس قائم كري، اشاعت جي شروعات كئي.

حضرت امروٽي صاحب پنهنجي دور جو سٺو اديب ۽ سنڌيءَ ٻوليءَ جو وڏو شاعر هو. قرآن شريف جو سنڌيءَ ۾ ترجمو، سندس نشرنگاريءَ جو هڪ بهترين نمونو آهي. اهڙيءَ طرح شعروشاعريءَ ۾ سندس لکيل ڪتاب "پريت نامو" ۽ "مولود شريف" وڏي شاهڪار جو درجو رکن ٿا(91). شاعريءَ ۾ سندس تخلص "حسن" هو(92).

مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي سوانح حيات جي مطالعي مان اها ڳالهه واضح ٿئي ٿي تہ سندس شخصيت ۽ سياسي ڪردار وطن دوست اڳواڻن کان ڪنهن بہ طرح گهٽ نہ آهي. پاڻ انهن حريت پسند شخصيتن مان هڪ هر، جن مولانا عبيد الله سنڌيءَ سان گڏجي، سنڌ توڙي هند ۾ انقلابي فڪر پيدا ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي ۽ جنهن مان اڳتي هلي "ريشمي رومال" جو واقعو وجود ۾ آيو. اها سندس ئي ڪوشش هئي، جو مولانا عبيدالله سنڌي فرنگي سرڪار طرفان وٺ پڪڙ جي باوجود, سنڌ ڇڏي وڃي افغانستان پهتو. ان کان پوءِ بہ مولانا عبيد الله سنڌيءَ ۽ مولانا تاج محمود صاحب جي وچ ۾ رابطو قائر رهيو. مولانا عبيد الله سنڌيءَ جڏهن "جنود رباني" جي تشڪيل ڪئي، ته ان ۾ مولانا تاج محمود امروٽيءَ کي "ليفٽيننٽ جنرل" مقرر ڪيو ويو(93). ان کان سواءِ امروٽ کي هندستان اندر انگريزن خلاف تحريڪ جو مرڪز بڻايو ويو(94).

جنگ بلقان كان پوءِ جڏهن "خلافت تحريك" جو آغاز ٿيو، ته پاڻ سنڌ توڙي هند جي خلافتي اڳواڻن جي اول صف ۾ شمار ٿيڻ لڳو، ۽ تحريك جي شروع كان وٺي آخر تائين پوريءَ سنڌ ۾ جيكي به مكيه "خلافت كانفرنسون" ٿيون، تن ۾ هن شركت كئي. مولانا امروٽي صاحب جي ئي اها سياسي بصيرت هئي، جنهن جي ذريعي هن " تركِ موالات" جو تصور ڏنو* ۽ ساڳئي وقت "هجرت تحريك" كي به گهڻو همٿايائين (95).

[&]quot; تاريخ 23 سيپٽمبر 1921ع تي جڏهن ڪراچيءَ ۾ "آل انڊيا خلافت ڪانفرنس" منقعد ٿي. تہ ان موقعي تي ترڪ موالات جو ٺهراءُ پيش ڪيو ويو هو، جڏهن ته ان کان اڳ جيڪب آباد خلافت ڪانفرنس مؤرخ 2، مئي 1920ع جي موقعي تي، نه رڳو ترڪ موالات جو ٺهراءُ منظور ڪيو ويو، پر هجرت جي رٿ به پيش ڪئي ويئي هئي. (مولانا دين محمد وفائي:، "ياد جانان" حڪيم عبدالحق ڪتب فروش، 1920، ص15).

مولانا تاج محمود صاحب "خلافت تحريك" كي كامياب ۽ كامران بنائڻ لاءِ پنهنجي وقت ۽ دولت جي قرباني ڏني. پاڻ وقت بوقت هن تحريك لاءِ چندو ڏيندو ۽ گڏ كندو وتندو هو(96). ان كري كيس كيترا ڀيرا وقت جي سركار پنهنجين ڏاڍاين جو نشانو بڻايو، ۽ مٿس زبان بنديءَ جا حكم صادر كيا. *

"خلافت تحريك" جي آغاز وقت جدّهن انگريزن "امن سڀا" قائم كرائي، ۽ ان جي روح روان مولوي فيض الكريم ٺاروشاهيءَ كي اڳيان آڻي، خلافت جي حيثيت ۽ ان جي حقيقت خلاف كائنس "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جاري كرائي تخلافتي عالمن به ان فتويٰ جا رد لكي شايع كرايا، جن جي مولانا امروٽي صاحب به تصديق ۽ تائيد كئي. (97) اهڙيءَ طوح جدّهن خلافت كاميٽيءَ طرفان تركيءَ تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني كرائڻ لاءِ وائسراءِ ۽ گورنر جنرل كي هك يادداشت نامو دنو ويو ته پاڻ ان تي به صحيح كندڙن مان هك هر(98). هن مرد مجاهد "خلافت تحريك" كي كامياب بنائڻ لاءِ سنڌ كان ٻاهر بمبئي، دهلي، لاهور، عليگڙه ۽ كلكتي تائين سفر كيو(99).

"خلافت تحريك" جي آغاز ۾ ئي "جمعيت علماءِ هند" جو قيام عمل ۾ اچي چڪو هو. مولانا تاج محمود انهن سياسي اڳواڻن مان هڪ هو، جن هن جماعت جي قيام لاءِ دهليءَ ۾ سڏايل پهرين اجلاس ۾ شرڪت ڪئي هئي (100). ان کان پوءِ "جميعت علماءِ هند" جي ئي سياسي ميدان تان سر گرميءَ سان حصو وٺندي، نه صرف ان جي سنڌ واري شاخ جو صدر ٿي رهيو، پر سنڌ کان ٻاهر به سندس قيادت کي تسلير ڪيو ويو، ۽ پاڻ جميعت جي اُڪيترن ئي جلسن جي صدارت ڪيائين (101).

سكر بئراج جي كو تائيء وقت جدّهن اتر سنڌ ۾ كيترين ئي مسجدن جي شهيد ٿيڻ جو امكان ظاهر ٿيو ته پاڻ "تحفظ مساجد جي تحريك" شروع كيائين، جنهن ۾ كيس بي مثال كاميابي حاصل ٿي (102).

مَّتي ذکر کیل سیاسي سرگرمین جي احوال ڏیڻ سان مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي سیاسي خدمتن جو مڪمل خاکو چٽي نٿو سگهجي. پر اجمالي طرح سندس سیاست ۾ حصي وٺڻ جو ذکر کیو ویو آهي. پاڻ پنهنجي دور جي نامور

[°]تاريخ 16 ۽ 17 اپريل 1920ع تي سڏايل سيوهڻ واري خلافت ڪانفرنس جي موقعي تي مٿس اهڙي قسم جو نوٽيس تعميل ڪيو ويو هو. (ڏسو روزانه "الوحيد"، ڪراچي، مؤرخ 26، اپريل 1920ع، ص14-17٠

مدبرن مان هڪ هو. جيئن تہ سندس زماني ۾ اڃا هندو مسلم اختلاف کي ايتري هوا نہ ملي هئي، ان ڪري سنڌ ۽ هند جي سياست تي ٻنهي قومن جو عنصر غالب هو. انهيءَ باهمي تعاون سبب پاڻ ڪنهن حد تائين ڪانگريس سان به وابستہ رهيو (103). ان کان سواءِ سن 1920ع ۾ جڏهن سنڌ ۾ "سنڌ مسلم ليگ" جي ٻيهر تشڪيل ٿي، تہ پاڻ ان ۾ بدلچسپي ورتائين (104).

مولانا امروٽي صاحب تاريخ 3. جمادي الثاني سن 1348هـ مطابق 5. نومبر 1929ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو (105).

مولانا پير تراب علي شاه

پير تراب علي شاه ولد سيد عبدالله شاه تاريخ 5، ذي القعد 1274هـ مطابق 2. نومبر 1857ع تي ڳوٺ علي خان لڳ قمبر ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. جيئن ته پاڻ پيراڻو ٻار هو. ان ڪري سندس تعليم ۽ تربيت جو جوڳو بندوبست ڪيو ويو. کيس علم ادب سان بيحد چاه هوندو هو. ان ڪري هن "الراشد" نالي رسالو به ڪڍيو (106).

پير تراب علي شاه جي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ شريك ٿيڻ سان ٿئي ٿو. پاڻ هن تحريك جي هڪ سرگرم ۽ پرخلوص اڳواڻ جي حيثيت سان خدمت كيائين. جڏهن انگريزن خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت كي مسخ كرڻ لاءِ "امن سيا" قائم كرائي ۽ ان جي روح روان عالم مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو شايع كرايو، ته ان جي رد ۾ وري خلافتي عالمن"اظهار الكرامة" نالي فتويٰ جاري كئي، جنهن جي پير تراب علي شاه برتائيد كئي (107).

پير صاحب انهن سياسي اڳواڻن مان هڪ هو، جن سنڌ خواه هند ۾ ٿيل ڪانفرنسن ۽ جلسن ۾ شرڪت ڪئي. "خلافت تحريڪ" جي آغاز ۾ ئي "جمعيت علماءِ هند" جو قيام عمل ۾ اچي چڪو هو، ان ڪري هن 31 ڊسمبر 1919ع تي جميعت جي امرتسر واري اجلاس ۾ شرڪ ٿي، پيش ٿيندڙ تجويزن جي نہ صرف پٺڀرائي ڪئي (108). پر کيس انهيءَ اجلاس ۾ "جميعت علماءِ هند" جي منتظمه ڪاميٽيءَ تي ميمبر طور به کنيو ويو (109).

ان کان پوءِ جڏهن ترڪن تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني ڪرائڻ لاءِ وقت جي وائسراءِ ۽ گورنر جنرل کي هڪ يادداشت نامو ڏنر ويو، ته ان تي سنڌ مان ٻين سان گڏ

پير تراب علي شاه به صحيح ڪئي(110). اهڙيءَ طرح جڏهن خلافتي عالمن جون اهي ڪوششون ڪامياب ٿي نہ سگهيون، ته انهن "تركِ موالات" بابت هڪ فتويٰ جاري ڪئي، جنهن جي پير تراب علي شاه به تصديق ڪئي(111).

شاه صاحب كي انگريزن كان بيحد نفرت هوندي هئي ۽ كنهن انگريز جو منهن دسّ به گوارا نه كندو هو. انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ كيس كيتريون مصيبتون به سهڻيون پيون. اها پير صاحب جي ئي شخصيت هئي، جنهن جي كوششن سان تاريخ 7.6 ۽ 8 جون 1920 تي لاڙكاڻي ۾ حضرت پير رشدالله شاه جي صدارت هيٺ "آل انڊيا خلافت كاميٽيءَ" جو عظيم الشان جلسو ٿيو.

جڏهن خلافتي عالمن انگريزن جي مسلم دشمن حڪمت عمليءَ کي ظاهر ڪندي پوري هندستان کي "دارالحرب" قرار ڏنو، ته پير صاحب "هجرت تحريڪ" کي زور وٺائڻ لاءِ مولانا تاج محمود امروٽي ۽ جان محمد خان جوڻيجي جي رفاقت ۾ ڀرپور ڪوشش ورتي (112).

هن محب وطن عالىر تاريخ 2. شوال سن 1357هـ مطابق 17 مارچ 1938ع تىي رحلت *كئي* (113).

مولانا حامد الله ميمن

مولانا حامد الله ولد ميان گل محمد ميمڻ ٻيلي شهر ضعلي ٺٽي ۾ ڄائو(114). قرآن شريف جي تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ ورتائين. ان بعد ٺٽي ۾ مولوي عبدالرحيم کٽيءَ وٽ عربي ۽ فارسي پڙهيو، ۽ آخر ۾ لاڙڪاڻي ۾ وڃي علام عطاء الله فيروز شاهيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستار بند ٿيو.

قارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ اچي سوهن جي ڳوٺ تعلقي ميرپور بٺوري ۾ درس و تدريس جو آغاز ڪيائين. ڪجه وقت کان پوءِ عربستان هليو ويو (115)، جتي ڏه سال رهي واپس سنڌ وريو(116)، ۽ اچي سجاول جي مدرسي ۾ پڙهائڻ لڳو. کيس فتويٰ نويسي ۽ تحرير ۾ ڏاڍي مهارت حاصل هئي(117).

مولانا حامد الله صاحب "خلافت تحريك" مرقدم ركئ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جي شروعات كئي. انگريزن جڏهن هن تحريك كي كمزور كرڻ لاءِ امن سيائي عالم مولوي فيض الكريم كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتوي جو رسالو لكرائي شايع كرايو، ته خلافتي عالمن وري ان جي جواب

۾ "اظهار الڪرامة" نالي رد جاري ڪيو، جنهن جي مولانا حامد الله پئ تصديق ۽ تائيد ڪئي (118).

مولانا صاحب انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ "خلافت تحريڪ" جي سياسي ميدان تان ڀرپور حصو ورتو ۽ اٺهن جي جلسن جي صدارت بہ ڪيائين. (119) اهڙي طرح اڃا هيءَ تحريڪ هلندڙ هئي تہ پاڻ هيءُ جهان ڇڏي ويو.

مولانا قاضي حبيب الله

مولوي حبيب الله ولد قاضي عبد الله جي ولادت سن 1312هـ مطابق 1894ع ۾ ليڙهي ضلعي خير پور ۾ ٿي. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين، ۽ ان بعد پهريائين هاليجيءَ ۾ ۽ ان کان پوءِ پير جهندي جي مدرسي "دارالشاد" ۾ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو. (120). علمي فراغت بعد مولوي صاحب ٺيڙهيءَ ۾ "دارالهديٰ" نالي مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو. انهيءَ وچ ۾ دارالعلوم ديوبند به ويو ۽ علام انور شاه ڪشميريءَ وٽ وڃي دوره حديث پڙهيو. ان دور ۾ مولانا حڪيم غلام صديق نوناري ۽ مولانا نواب الدين چانڊيو پڻ سندس ساٿي ٿي رهيا (121).

قاضي حبيب الله صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو. پاڻ انهن خلافتي عالمن خلاف جاري ڪيل "اظهار الڪرامة" نالي فتويٰ جي تصديق ڪئي هئي(122).

"خلافت تحريك" كان پوءِ مولوي صاحب "جمعيت العلماء" جو سرگرم كاركن ٿي رهيو(123). سن 1944ع ۾ حيدرآباد جي تاريخي قلعي ۾ جڏهن قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت علماءَ سنڌ" جو عظيم الشان جلسو ٿيو. تہ ان ۾ قاضي صاحب بہ شريك ٿيو (124)، ۽ آخر ۾ "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار كيائين (124). اهڙيءَ طرح هن سياسي ۽ ديني خدمت كندي پنهنجي ڄمار پوري كئي.

^{*} كتاب "لاز جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ۾ سندس وفات 10 شعبان 1438هـ (1919) ڄاڻائي وئي آهي, جيكا صحيح نہ آهي، ڇاكاڻ تہ هن صاحب 19 مارچ 1920 تي سجاول ۾ "يوم خلافت" جي صدارت كئي هئي. اهڙيءَ طرح هجري سن مطابق 10 شعبان 1338هـ ۽ عيسوي سن مطابق 29-1 لپريل 1920ع تي سندس وفات ٿي آهي.

مولانا حمادالله هاليجوي

مولانا حماد الله ولد مولانا محمود اندڙ جي ولادت سن 1300هـ مطابق 1883ع ڌاري تعلقي پني عاقل جي ڳوٺ هاليجيءَ ۾ ٿي. قرآن شريف جي تعليم آخوند ابراهيم جي مدرسي مان وٺڻ کان پوءِ، فارسيءَ جي تعليم حاصل ڪرڻ لاءِ پنهنجي عزيز بزرگ ۽ عالم مولانا قمر الدين اندڙ جي مدرسي ۾ داخل ٿيو (126). جتي درس نظاميءَ جا جملي ڪتاب پڙهي فضيلت جي دستار ٻڌائين. جنهن کان پوءِ هن علم حديث جي سند مولانا عبيد الله سنڌيءَ کان حاصل ڪئي (127).

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ مولانا حماد الله صاحب پڙهائڻ جو شغل اختيار ڪيو. پاڻ وقت جي نامور استاد عالمن مان ٿي گذريو آهي. سندس چڱو عرصو ٺيڙهيءَ جي مدرسي، ۽ باقي وقت هاليجيءَ واري پنهنجي مدرسي ۾ گذريو.

ليڙهيءَ جي مدرسي ۾ پڙهائڻ واري دور ۾ مولانا تاج محمود امروٽيءَ سان سندس ويجهڙائپ ٿي، ۽ ان جي هٿ تي قادري راشدي طريقت ۾ بيعت ڪيائين(128).

مولانا حماد الله صاحب جي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ٿيو. پاڻ هن تحريڪ ۾ شامل ٿي وڏي جوش ۽ جذبي سان ڪر ڪرڻ لڳو. جيتوڻيڪ مولانا صاحب پنهنجي تر جي بزرگن ۾ شمار ٿيندو هو، پر پوءِ به ڌارين خلاف نفرت جي جذبي کيس مذهب سان گڏ سياست ۾ به دلچسپي وٺڻ تي مجبور ڪيو. پاڻ اخلاقي خواه مالي طور تي تحريڪ سان ساٿ نڀائيندو رهيو(129). جڏهن خلافتي عالمن غير ملڪي ڪپڙي جي استعمال کي ناجائز بڻائي فتويٰ جاري ڪئي ته هن به ان جي تصديق ڪئي (130).

"خلاقت تحريك" كان سواءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ سند" جو به ضلعي الرائق رهيو (131).

سن 1944ع ۾ حيدرآباد جي تاريخي قلعي ۾ جڏهن قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو ٿيو تہ مولانا حماد الله به ان ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو(132).

حضرت هاليجوي تاريخ 12 ذوالقعد 1381هـ مطابق 18 اپريل 1962ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي تيو(133).

مولانا خادم حسين جتوئي

مولوي خادر حسين جتوئي ولد محمد جيثل جتوئي سن 1285هـ مطابق 1868ع ڌاري ڳوٺ شاهپور ضلعي شڪارپور ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم ڳوٺ جندي ديري جي مدرسي مان ورتائين. ان کان پوءِ ڳوٺ ترائي. رتيديري، ابڙا تعلقو قنبر ۽ ڀنگ جي مدرسن مان پڙهي فارغ التحصيل ٿيو(134).

علمي فراغت كان پوءِ مولوي خادر حسين درس وتدريس جو شغل اختيار كيو. پاڻ اوسته پليڏنو، جيڪب آباد ۽ رتيديري ۾ پڙهايائين(135).

مولوي صاحب خلافتي عالمن مان هڪ هو ۽ پوري ڄمار هن تحريڪ جو سر گرمر ڪارڪن ٿي رهيو. پاڻ "خلافت تحريڪ" جي نہ صرف جلسن ۾ شرڪت ڪندو هو (136)، پر جڏهن خلافتي عالمن "نرڪ موالات" لاءِ فتويٰ جاري ڪئي تہ هن بہ ان جي تصديق ڪئي(137). اهڙيءَ طرح جڏهن مولوي فيض الڪريم جي لکيل رسالي "تحقيق الخلافت" جو خلافتي عالمن رد لکي شايع ڪرايو تہ مولانا خادم حسين بہ ان رد جي تائيد ڪري خلافتين سان ساڻ نڀايو(138).

مولوي صاحب سن 1349ه مطابق 1930ع ير رحلت كئي (139).

مولانا خدا بخش ڀٽو

مولوي خدا بخش ولد مولوي نظام الدين ڀٽو ڳوٺ عيدن ڀٽي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم مولانا قاضي عثمان ۽ مولانا يار محمد راڄنپوريءَ کان ورتائين. ان بعد عيدن ڀٽي ۾ مولوي يار محمد ليه وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو(140).

علم جي تحصيل کان پوءِ ڳوٺ عيدن ڀٽي، ڳڙهي محمد شاه ۽ هيبت تعلقي ڪنڌ ڪوٽ ۾ تعليم ڏنائين. آخر ۾ ڳوٺ رئيس عمر ڀٽي تعلقي ڪشمور ۾ لڳاتار ٽيھ سال تعليم ڏيڻ کان پوءِ واپس پنهنجي ڳوٺ موٽي آيو(141).

مولوي خدا بخش "خلافت تحريك" بر حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو. پاڻ تحريك جو پرخلوص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو. انگريزن جڏهن "امن سيا" قائم كرائي ۽ ان جي روح روان مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو لكارائي، خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت كي مسخ كرڻ جي كوشش كئي، ته خلافتي عالمن به ان جا رد لكي شايع كرايا، جن جي مولانا خدا بخش ڀٽي پڻ تصديق ۽ تائيد كئي(142).

مولوي صاحب سن 1360هـ مطابق 1941ع ۾ هي؛ جهان ڇڏيو(143).

مولانا خوش محمد ميروخاني

مولانا خوش محمد ولد واحد بخش ڌنگ جي ولادت سن 1306هـ مطابق 1889ع ۾

ميروخان ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ٿي(144). ابتدائي سنڌي، عربي، ۽ فارسيءَ جي تعليم پنهنجي ڳوٺ مان ورتائين. ان کان پوءِ مولانا دين محمد بٺيءَ واري، مولوي مير محمد نورنگيءَ، مولوي محمد اسماعيل ڀٽي گهوٽڪيءَ واري ۽ مولانا غلام رسول شيخ ڀليڏني آباد واري کان باقي تعليم وٺي دستار بندي ڪيائين(145). کيس علم حاصل ڪرڻ جو ايترو تہ شوق هو جو قرآن پاڪ جي دوره تفسير لاءِ مولانا احمد علي لاهوريءَ وٽ وڃي رهيو، ۽ ڪجه وقت لاءِ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي به پير جهنڊي ۾ شاگردي قبول ڪيائين.

علىر جي تعصيل كان پوءِ ٿوري عرصي كان سواءِ باقي ڄمار پنهنجي ڳوٺ ۾ ئي مدرسو قائم كري درس وتدريس ڏيندو رهيو ۽ لڳ ڀڳ چار سو پنجاه عالم وٽانئس دستار بندي كري نكتا. پاڻ تبليغ جي كمن ۾ به دلچسپي ركندو هو ۽ انهيءَ مقصد كي ماڻڻ لاءِ "انجمن محمدي" به قائم كيائين(146).

مولانا خوش محمد صاحب "امن سيا" جي ساٿ ڏيڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو. ۽ امن شيائي عالم مولوي فيض الڪريم "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو لکي شايع ڪرايو تہ مولوي صاحب به ان تي صحيح ڪندڙن ۾ شامل ٿيو(147). مگر ستت ئي پوءِ هن پنهنجي سياسي غلطيءَ جو ازالو ڪيو ۽ خلافتي عالمن طرفان جاري ڪيل فتويٰ "اظهار الڪرامة" جي تصديق خوام تائيد ڪيائين(148).

ان کان پوءِ "خلافت" تحريڪ ۾ ئي رهيو ۽ ان جي آخر ٽائين هڪ وفادار ڪارڪن جي حيثيت سان پنهنجون سياسي خدمتون سر انجام ڏيندو رهيو.

"خلافت تحريڪ" جي خاتمي کان پوءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ سنڌ" ۾ شموليت اختيار ڪئي(١٤٩). پاڻ هن جماعت جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو ۽ ان جي جلسن ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڀرپور ڪوشش ڪيائين(150).

ان كان پوءِ جَدِّهن مذهبي بنيادن تي "كانگريس" ۽ "مسلم ليگ" انگريزن خلاف هلچل شروع كئي، تـ هن "مسلم ليگ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد كئي(151).

مولانا خوش محمد صاحب سن 1396ه مطابق 1976ع ير لاذاثو كيو (152).

مولانا حافظ خير محمد اوحدي

حافظ خير محمد ولد محمد ابراهيم انصاري تاريخ 28 ربيع الاول سن 1329هـ

مطابق 29 مارچ 1911ع تي سنڌ جي تاريخي شهر شڪارپور ۾ ڄائو. هن ڏهن ورهين جي ئي ڄمار ۾ قرآن مجيد حفظ ڪري ور تو. ان کان پوءِ باقي تعليم مختلف مدرسن مان وٺي فارغ ٿيو.

حافظ صاحب سن 1932ع کان صحافت جي دنيا ۾ قدم رکيو، ۽ پاڻ هنتيوار "الحنيف" (جيڪب آباد) "اصلاح" (ڪراچي) "قرباني" (ڪراچي) "ڪاروان" (حيدرآباد) "نعره تڪبير", (شڪارپور), "انقلاب" (سکر), "يڪتا" (شڪارپور), "سنڌ زميندار" (سکر), ۽ "مسلم ليگ" اخبار (ڪراچي), جو ايڊيٽر ٿي رهيو.

حافظ خير محمد اوحدي جيتوڻيك پنهنجي جمارجو ڳچ حصو صحافت ۾ گذاريو. پر پاڻ مسلم ليگي سوچ جو سياسي كاركن هو. مولانا صاحب جڏهن "مسلم ليگ" اخبار جو ايڊيٽر هو، تڏهن "تحريك پاكستان" كي كامياب بنائڻ لاءِ پنهنجي قلم كان خوب كر ورتائين(153).

حافظ صاحب تاريخ 2 ربيع الثاني سن 1402هـ مطابق 28 جنوري 1982ع تي رحلت كئي (154).

مولانا خير محمد نظاماڻي

مولوي خير محمد ولد حاجي محمد سليمان نظاماڻيءَ جي ولادت ڳوٺ نبر ليار جاگير ضلعي حيدرآباد ۾ سن 1326ھ مطابق 1908ع ۾ ٿي. ابتدائي سنڌي تعليم ڳوٺ جي اسڪول ۾ وٺڻ کان پوءِ اچي مدرسي "مظهر العلوم" کڏي ڪراچيءَ ۾ داخل ٿيو. جتي ٻن سالن جي اندر عربي ۽ فارسيءَ جي تعليم پوري ڪرڻ کان پوءِ وڃي هز پير جهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" پير احسان الله شاھ وٽ باقي تعليم مڪمل ڪئي(155).

علمي فراغت كان پوءِ كجه وقت بدين ۾ ناظره قرآن مجيد جي تعليم ڏنائين، ان بعد سن 1930ع كان صحافت جي زندگيءَ جو آغاز كري پاڻ ماهوار "طالب العلم" مدرسہ مظهر العلوم كڏو كراچي (1930ع)، هفتيوار "بيداري" كراچي (1933ع) ع)، پندرهن روزه "خادم الاسلام" حيدرآباد (1935ع) پندره روزه "خادم الاسلام" ميرپورخاص (1936ع) روزانه "قرباني" كراچي (1946ع) ۽ روزانه "باب الاسلام" حيدرآباد (1946ع) جو ايڊيٽر ٿي رهيو.

مولانا صاحب صحافت سان گڏ تصنيف ۽ تاليف جو ڪر بہ ڪندو رهيو. سندس لکيل ڪتابن مان "پيريءَ مريديءَ بابت ڪتاب", "مؤذن" ۽ "عر پاره جي لفظن جون معنائون ۽ سمجهاڻي" ذڪر لائق آهن. هن صاحب شاعري به ڪئي، جيڪا گهڻو ڪري مذهبي نوعيت جي آهي.

مولانا خير محمد صاحب جي اڃا طالب العلميءَ جو ئي زمانو هو ته "خلافت تحريك" جو آغاز ٿيو. ان وقت هيءُ اڃا ٻارهن ورهين جي ڄمار جو مس هو ۽ چوٿين درجي سنڌيءَ جو شاگرد هو، ته اسكول كي خيرآباد چئي وڃي "خلافت تحريك" محصو ورتائين. مولانا صاحب تحريك جي جلسن ۾ شريك ٿي انگريزن خلاف تقريون كرڻ لڳو، جنهن سبب كيس گرفتار كري جيل به موكليو ويو. خلافت جي خاتمي كان پوءِ "خاكسار تحريك" ۾ شموليت اختيار كيائين ۽ ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو(156). اڳتي هلي انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ كيس ٻيهر جيل جي سزا ڀوڳڻي پيئي(157).

اهڙيءَ طرح ورهاڱي کان پوءِ باقي زندگي مسلم ليگ سان وابسته رهي (158). صحافتي خدمت کي به جاري رکيائين(159) ۽ هڪڙو دور اهڙو به آيو جو وقت جي حڪومت ۾ وڃي مجلس شوريٰ جو ميمبر بڻيو.

مولانا در محمد دول

مولوي در محمد ولد ملا واصل محمد دول سن 1293ه مطابق 1886ع ۾ ڳوٺ محمد واصل لڳ ٺل ضلعي جيڪب آباد ۾ ڄائو(160)، پاڻ ٺل جي پرائمري اسڪول ۾ ست درجا سنڌيءَ جا پڙهڻ کان پوءِ ڳوٺ عوديءَ ۾ مولانا نبي بخش عوديءَ کان تعليم وٺي دستار بند ٿيو (161).

على جي تعصيل کان پوءِ مولوي صاحب مختلف مدرسن ۾ تعليم ڏني. ان بعد جرنگل ۾ پنهنجو مدرسو قائم ڪري. نو سال اتي تعليم و تدريس جو ڪر جاري رکيائين. ان کان پوءِ وري اچي ٺل ۾ مدرسو قائم ڪيائين. جتي به ان سال کن علم جو نور پکيڙيندو رهيو، آخر ۾ وري به کيس جونگل جي مدرسي ڏانهن موٽي وڃڻو پيو(162).

مولوي در محمد دول "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. پاڻ اتر سنڌ جي پر خلوص ۽ ناميارن خلافتي ڪارڪنن مان هڪ هو. هن

سندس وفات 29 ربيع الاول سن 1406هـ مطابق 13 بسمبر 1985ع تي ٿي (ڏسو: روزانہ "عبرت" حيدرآباد، مؤرخ 14 بسمبر 1985ع)

اول کان وٺي آخر تائين تحريڪ جي هڙئون توڙي وڙئون ڪافي مدد ڪئي(163). هيءُ ڪيترو وقت "جيڪب آباد خلافت ڪاميٽيءَ" جو ناظر به ٿي رهيو. (164). خلافتي عالمن جڏهن انگريزن ۽ انهن جي ڇاڙتن امن سڀائين جي خلاف فتوائن جو سلسلو شروع ڪيو ته هن به ڪيترين ئي فتوائن تي صحيحون ڪيون(165). ان کان سواءِ پاڻ تحريڪ جي مکي گڏجاڻين، خواه ڪانفرنسن ۾ به شرڪت ڪندو هو(166).

"خلافت تحريك" جي خاتمي كان پوءِ "جمعيت العلماءِ سنڌ" ۾ شامل ٿي عوامر جي سياسي خدمت كيائين (167) مولوي صاحب جيستائين ٺل ۾ رهيو، تيستائين سري جو اهو ڳوٺ خلافت خواه جمعيت جو مركز ٿي رهيو ۽ سندس ئي كوششن سان اتى كيترائى عظيم الشان جلسا به منعقد ٿيا(168).

اهڙيءَ طرح سن 1944ع ۾ حيدرآباد جي تاريخي قلعي ۾ جڏهن قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو ٿيو تہ مولانا صاحب به ان ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو(169).

پاڻ تاريخ 18 شعبان سن 1370هـ مطابق 21 مئي 1951ع تي هي؛ جهان ڇڏيائين(170).

مولانا در محمد "خاك"

مولانا در محمد ولد ميان عبد الرب كانڌڙو سن 1313هـ مطابق 1895ع ۾ ڳوٺ كانڌڙا لڳ نصير آباد ضلعي لاڙكاڻي ۾ پيدا ٿيو. قرآن مجيد ۽ فارسيءَ جا ابتدائي كتاب ملان محمود لاكير وٽ پڙهيائين. ان كان پوءِ آڏي جي مدرسي ۾ داخل ٿيو، جتي مولانا مسعود كوكر وٽ كجه تعليم حاصل كرڻ كان پوءِ مدرسي باگي تيوڻي لاڙكاڻي ۾ وڃي حافظ فدا احمد وٽ پڙهيو، تنهن كان پوءِ1330هـ ۾ ڌامراه ضلعي لاڙكاڻي ۾ مولاناعبدالرحلن ڌامراه وٽ پڙهڻ كان پوءِ كجه وقت لاءِ وڃي مولوي قادر بخش سولنگيءَ وٽ ملاڻن جي ڳوٺ ضلعي لاڙكاڻي ۾ پڙهيائين. تنهن كان پوءِ حضرت علام مير محمد نورنگي ۽ قنبر ڀرسان مولانا مير محمد معرفاڻي بلوچ جي مدرسي ۾ وڃي پڙهيو. آخر ۾ مولانا محمد صالح ابڙي گاجاڻيءَ وٽ باقي كتاب پڙهي پنجويهن ورهين جي ڄمار ۾ سن 1338هـ ۾ دستاربند ٿيو.

فارغ التحصيل ٿيڻ کان بعد مختلف مدرسن ۾ تعليم ڏيندو رهيو ۽ ان سان گڏ تصنيف ۽ تاليف جو ڪر بہ جاري رکيائين(171). مولوي صاحب ڪيتراثي ڪتاب لکيا، جن مان سندس ڇپيل ڪن ڪتابن جو وچور هن طرح آهي(172): "خزانة العارفين" (حضرت شاه عبداللطيف ڀٽائي اله جي ڪلام جو شرح) اعانة الوحيد"، "جذبات خاڪ"، "الوحي الوفي"، "تحفه سنڌ"، جديد دور جي سهڻي ميهار، "حب الحي"، قصيده بر دعا فارسي، "پکين جي پچار تي هڪ نظر نروار"، تاريخ بزرگ شهداد ڪوٽي، "تحفة الاخوان"، شجره ميمڻ"، "وطن جي واکاڻ"، اللمعة في تحقيق الخطبة" (عربي)، "مڇرنامه"، (سلوڪ جي باري ۾) ۽ "ييج پاڳارا پير پيارا.

ان کان سواءِ مولانا صاحب سنڌي، فارسي ۽ عربيءَ جو سٺو شاعر به هو ۽ پنهنجي شاعريءَ ۾ "خاڪ" تخلص ڪر آڻيندو هو. مولانا درمحمد خلافت تحريڪ ۾ حسي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ اتر سنڌ ۾ هن تحريڪ جي اهر گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿي. انگريز سامراج جي خلاف تقريرن جي ذريعي ۽ پڻ شعر پڙهي عوام ۾ بيداريءَ جو احساس پيدا ڪندو رهيو.

جدّهن مسلم ليگ طرفان ملك جي ورهاڱي لاءِ سنڌ اندر به كوششون ورتيون ويون، ته مولانا در محمد صاحب به انهيءَ پارٽيءَ ۾ شامل ٿيو ۽ قاضي سيد اسد الله شاه ٽكڙائي جي رفاقت ۾ ملك جي ورهاڱي تائين پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو.(173)

هن يكانه عالم, جي وفات تاريخ 30 ربيع الأوَّل سن 1401هـ مطابق 6فيبروري 1981ع تي ٿي(174).

مولانا دوست محمد لكمير

مولوي دوست محمد ولد آخوند عبد الوارث لكمير جي ولادت سن 1292هـ مطابق 1875ع ڌاري ڳوٺ كبڙ لكمير تعلقي سكرنڊ ضلعي نواب شاه ۾ ٿي.

ابتدائي قرآن مجيد جي تعلير پنهنجي والد کان ورتائين، ۽ باقي تعلير پنهنجي ثي ڳوٺ ۾ مولوي محمد حسين جمالي وٽ پوري ڪري دستاربند ٿيو. علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ۾ ديني تعلير ڏنائين.

جڏهن خلافت تحريڪ شروع ٿي تہ مولانا دوست محمد ان ۾ حصو وٺندي پنهنجي سياسي زندگي جو آعاز ڪيو. پاڻ تعلقي سڪرنڊ جي ڪيترن ڳوٺن جهڙوڪ: مهر علي جمالي، عرس ڪيريو ۽ ٻائيءَ ۾ وڃي انگريزن جي خلاف پرچار ڪيائين. سن 1925 ۾ سندس ئي صدارت هيٺ ڳوٺ ٻائي ۾ "خلافت تحريڪ" جي هڪ وڏي ڪانفرنس ٿي، جنهن ۾ وطن جي آزادي لاءِ سنڌي عوام کي جوش ۽ جذبو ڏياريو ويو.

پاڻ 60 ورهين جي ڄمار ۾ سن 1340ه مطابق 1935ع ۾ راه رباني ورتائين (175).

مولانا دين محمد بُنوي

مولانا دين محمد بُٺوي ولد ڳهڻو خان چانڊيو، بٺي تعلقو ميرو خان ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم قاضي الاهي بخش کان ورتائين ۽ عربيءَ جا ڪجه ڪتاب مولانا غلام صديق شهدادڪوٽيءَ وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ ٺوڙهي، ابڙيجا ۽ همايون جي مدرسن ۾ تعليم وٺي بهاولپور جي ڀُنگ شهر ۾ وڃي مولانا نظر محمد وٽ دستاربندي ڪيائين.

علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ ديني مدرسو قائم ڪري درس تدريس جو مشغلو رکندو آيو. پاڻ علم ميراث جو وڏو ماهر ٿي گذريو آهي(176).

مولانا دين محمد جي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" سان ٿيو. جدِّهن "امن سيا" جي روح روان عالم مولوي فيض الكريم ناروشاهيءَ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ كڍي، خلافت جي تدّهوكي حيثيت كي تسليم كرڻ كان انكار كيو، ته ٻين عالمن سان گڏ مولوي دين محمد بُثوي به سندس تائيد كري(177) امن سيائي هئڻ جي ثابتي ڏني. ان كان پوءِ جدِّهن "تحقيق الخلافت" جي ره ۾ خلافتي عالمن "اظهار الكرامة" نالي فتويٰ جاري كئي، ته هن انهيءَ تي به صحيح كئي.(178) اهڙيءَ طرح خلافتي عالمن جي صف ۾ شامل ٿي، پنهنجي پهرئين غلطيءَ جو ازالو كيائين. ان كان پوءِ هن تحريك ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺندو رهيو ۽ سندس ئي كوشش سان بُئي ۾ خلافت كاميدي قائم ٿي(179). ان كان سواءِ هن "عدم تعاون تحريك" دوران برطانوي مالي امداد وٺڻ كان به انكار كيو هر(180).

مولانا دين محمد بُنْري تاريخ 2 جمادي الاول سن 1350هـ مطابق 135سيپٽمبر 1931ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻر ڪري ويو(181).

مولانا دين محمد "وفائي"

مولانا دين محمد ولد حكير گل محمد ڀٽي تاريخ 27 رمضان المبارڪ سن1311 هـ مطابق 4 اپريل 1894ع تي ڳوٺ کٽيون تعلقي ڳڙهي ياسين ضلعي شڪارپور ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ فارسي مولوي محمد عالم ۽ عربي جي تعليم مولانا غلام عمر سوني جتوئيءَ واري کان ولي 1913ع ۾ فارغ التحصيل ٿير(182).

علر جي تحصيل کان پوءِ مولانا دين محمد صاحب ڪجه وقت لاء ڪراچيءَ ۾ رهيو. ان بعد سن 1914ع کان 1916ع تائين راڻي پور ۾ جيلائي پيرن جي اولاد کي

تعليم ڏنائين. تنهن کان پوءِ ٺلاه ۾ حاجي امام الدين شاه راشديءَ جي فرزندن کي پڙهائڻ لڳو(183).

مولانا دين محمد "وفائي" سن 1920ع ۾ الوحيد اخبار جي اسسٽنٽ ايڊيٽر جي حيثيت سان صحافت جي دنيا ۾ قدم رکيو. ٽن سالن کان پوءِ سن 1923ع ۾ ڪراچيءَ مان ماهوار رسالو "توحيد" جاري ڪيائين. سن 1926ع ۾ "سنجو ڳي" شيخن جي تحريڪ شروع ٿي تہ پاڻ هڪ سال لاءِ اتر سنڌ ۾ وڃي تبليغ ڪندو رهيو ۽ سن 1927ع ۾ اخبار الحرب" جاري ڪيائين(184). سن 1930ع ۾ الوحيد جو ايڊيٽر مقرر ٿيو، ۽ سن 1934ع ۾ ڪراچيءَ مان وري "توحيد" رسالو ڪڍيائين (185). ان کان پوءِ مولوي صاحب ڪجه وقت لاءِ اخبار "آزاد" جو ايڊيٽر ٿي رهيو(186).

سن 1940ع ۾ "سنڌي ادبي مرڪزي صلاحڪار بورڊ" قائم ٿيو. ته کيس ان جو ميمبر مقرر ڪيو ويو. ان کان سواءِ ساڳئي زماني ۾ "سنڌي لفت ڪاميٽي" تي به هن کي ميمبر طور کنيو ويو. اهڙيءَ طرح هندستان جي ورهاڱي کان پوءِ سن1949ع ۾ سنڌي درسي ڪتابن کي نئين سر تيار ڪرڻ لاءِ ڪاميٽي ڏاهي وئي ته ان ۾ به کيس ميمبر بنايو ويو.(187).

مولانا دين محمد "وقائي" ناميارو عالم, بيباك صحافي ۽ مشهور اديب هو. ان كان سراء كنهن حد تائين شعر ۽ شاعريءَ سان به شغف ركندو هو، جنهن كري "وقائي" تخلص اختيار كيائين(188). پاڻ صاحب تصنيف به هو، هن جيكي كتاب لكيا آهن, تن جو وچور هن طرح آهي(189):

1- فاروق اعظر (شخصيات -1925) 2- خاتون جنت (شخصيات -1228ع) 3- نو مسلم هندو راثيون(تاريخ -1928ع) 4- محمد في (شخصيات -1930) 5- ترحيد الاسلام _ سنڌي ترجيو، تقوية الاسلام (مذهبيات 1938ع) 6- مير محمد عربي الاسلام _ سنڌي ترجيو، تقوية الاسلام (مذهبيات 1938ع) 8- الهام باري حصو پهريون، ترجيو البخاري (مذهبيات -1952ع) 9- غوث اعظم (شخصيات -1955ع) 10- الهام باري حصو بيو _ تجريد البخاري (مذهبيات -1966ع) 11- الهام باري حصو بيو _ تجريد البخاري (مذهبيات 1963ع) 12- الهام باري حصو پنجون، تجريد البخاري (مذهبيات -1964ع) 13- الهام باري حصو پنجون، تجريد البخاري (مذهبيات -1964ع) 14- سيرت حضرت عثمان (شخصيات -1946ع) 15- الهام باري حصو چهون تجريد البخاري (مذهبيات) 16- الهام باري حصو ستون (مذهبيات)

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ سنڌي عالمن جي گهڻائي "خلافت تحريڪ" جي آغاز سان گڏ عملي طور تيسياسي ميدان ۾ قدم رکيو. مولانا دين محمد "وفائي" جي سياسي زندگيءَ جي شروعات به اهڙي ُطرح ٿي. جيتوڻيڪ پاڻ سنڌي عالم سياستدانن جي بيءَ صف جو سياستدان هو. پر تنهن هوندي به هن عملي خواه قلمي طور تي سنڌ جي مکيد سياسي تحريڪن ۽ جماعتن جي خدمت ڪئي.

"خلافت تحريك" دوران هن سنڌ كان وٺي هند تائين سمورين كانفرنسن ۾ شركت كئي، ۽ ملكي سطح تي سنڌ جي سري كان وٺي لاڙ تائين اهر جلسن ۾ شريك ٿيو. پاڻ پهرين صف جي تحريكي مبلغن مان هك هو. هو نه رڳو "سنڌ خلافت كاميٽيءَ" جو سيكريٽري ٿي رهيو(190), پر جماعت لاءِ چندن ڏيڻ ۽ گڏ كرڻ (191) ۽ امن سيائي عالمن كي جواب ڏيڻ ۾ به باقي عالم سياستدانن كان اڳرو رهندو آيو.*

"خلافت تحريك" سان گڏ هن "جمعيت العلماءِ سنڌ" ۾ به شركت ڪئي ۽ ڪيتري وقت تائين ان جو ناظر بہ ٿي رهيو(192) پاڻ ساڳئي ئي جذبي سان انهيءَ جماعت جي سياسي ميدان تان پنهنجون سياسي خدمتون سرانجار ڏيندورهيو ۽ انهيءَ عرصي دوران "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" ۾ به شموليت اختيار ڪيائين(193).

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ کان پوءِ مولانا صاحب "سنڌ اتحاد پارٽي" سان همدرديون قائر رکيون. پر جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي سن 1939ع ۾ جلاوطني کان پوءِ واپس وطن وريو ۽ اچي "جمنا، نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين تہ پاڻ سندس ٻانهن ٻيلي ٿي سياست ۾ حصو ورتائين(194). ان کان پوءِ آخري ڄمار ۾ مولوي صاحب مسلم ليگ سان وابستہ ٿيو (195).

مولانا وفائي صاحب تاريخ 22 جمادي الآخر سن 1369ع مطابق 10 اپريل 1950 ع تي هن جهان مان لاڏاڻو ڪيو(196).

^{*} مولانا دين محمد وفائي امن سيائي عالمن جي فتوائن جي جواب ۾ هي ڪتاب مرتب ڪيا:

i. اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة

امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ جمعيت العلماءِ سنڌ جي متفقه فتويٰ

iii. مولوي معين الدين جي محاكمه جي حقيقت ۽

iv. فصل الخطاب في رد ازالة الاتياب.

مولانا دين محمد "پٽائي"

مولانا دين محمد ولد محمد خان بلوچ جي ولادت سن 1308هـ مطابق 1891ع ۾ ڳوٺ پَٽُ گل محمد لغاري ضلعي دادو ۾ ٿي(197). ابتدائي تعليم ڳوٺ ۾ وٺڻ کان پوءِ ڳوٺ ٻپير، ڊگهه بالا، گاهي مهيسر، روهڙي، مٽياري، هالا، حيدرآباد، ميرپور خاص ۽ ٽنڊي الهيار جي مدرسن ۾ پڙهي دستاربندي ڪيائين، ان بعد پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو(198).

مولوي صاحب سنڌ جي بمبئيء کان عليحدگيءَ بعد سياست ۾ پير پاتو. ۽ پاڻ مسلر ليگي عالر هو. هن پاڪستان جي تحريڪ ۾ ڀرپور حصو ور تو(199).

هن تاريخ 17 شِهُوال سن 1391ع مطابق 13 اپريل 1960ع تي وفات ڪئي(200).

مولانا دين محمد "اديب"

مولانا دين محمد ولد پانڌي خان چنو تاريخ 15 شرال سن 1314هـ مطابق 21 مارچ 1897ع تي فيروز شاه ضلعي دادو ۾ ڄائو((201). ابتدائي ديني تعليم مولانا عطاء الله فيروزشاهيءَ کان ورتائين. ان کان پوءِ فارسي مولانا عبدالرحمٰن وٽ پڙهيو. ۽ آخر ۾ وڃي تعلقي ميهڙ جي ڳوٺ ٻانهي لاکير ۾ مولانا الاهي بخش جي مدرسي ۾ داخل ٿيو. جتي پنجن سالن جي مسلسل محنت کان پوءِ علمي فراغت حاصل ڪيائين(202).

تعليم پوري ڪرڻ کان پوءِ مختلف مدرسن، اسڪڙائن، ۽ آخر ۾ مسلم ڪاليج حيدرآباد ۾ درس و تدريس ڏنائين(203). کيس شعروشاعري ۽ لکڻ پڙهڻ سان بہ شغف هوندو هو. سندس شاعري سنڌي، اردو ۽ فارسيءَ ۾ آهي، ۽ پنهنجيءَ شاعريءَ ۾ "اديب" تخلص ڪر آڻيندو هو. پاڻ ڪيترا ڪتاب بہ لکيائين، جن جو رچور هن طرح آهي(204):

1- "جزاء الاعمال"، 2- "بهشتي كوثر"، 3- "علاج القحط والربا"، 4- "زاد السعيد في الصلوة علي النبي الوحيد"، 5- "نورٌ عليٰ نور ترجمة خاتر الانبيا"، 6- "علم الاخلاق عرف اسلامي اخلاق"، 7- "چهره كشاد مثنوي، ترجمه رونمائي مثنوي"، 8- "اختتام مثنوي"، 9- "حيات المسلمين"، 10- "منع الانام عن وضع الايدي علي الاقدام"، 11- "مجموعة الاشعار" (فارسي) 12- "بهشت جي كنجي"، 13- "معلم الاسلام"، 14- "چاليهن دعائن جو ترجمو"، 15- "كليات اديب"، 16- "صبح هشام جون دعائون"، 17- "خلفاء واشدين"، 18- "كشف المحجوب" (ترجمو) 19- الخلاق النبي" ع 20- "اشرف العلوم"

مولوي دين محمد صاحب "خلانت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ توڙ تائين هن تحريڪ جو پرخلوص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. ميهڙ ۾ سڏايل خلافت ڪانفرنسن کي ڪامياب بنائڻ ۾ سندس ئي وڏو هٿ هو. ضلعي دادو کان سواءِ هن لاڙڪاڻي ۽ حيدرآباد جي ڪانفرنس ۾ پڻ شرڪت ڪئي (205).

انگريزن "امن سيا" قائر كرائي خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت كي مسخ كرڻ لاءِجڏهن مولوي فيض الكريم ئارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو لكارائي شايع كرايو ته خلافتي عالمن ان فتويٰ جو رد لكيو، جنهن جي مولانا "اديب" پڻ تصديق ۽ تائيد كئي(206). ان كان سواءِ تحريك جي كاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد بر كيائين (207).

سنڌ جي بمبئي کان علحدگيءَ کان پوءِ هن سر غلام حسين هدايت الله قمسلم پوليٽيڪل پارٽيءَ" ۾ شرڪت ڪئي ۽ هڪ ڪارڪن جي حيثيت سان پنهنجيون سياسي خدمتون سرانجام ڏنائين (208).

بعد ۾ هي لا "جمعيت العلماء سنڌ" ۾ شامل ٿيو ۽ سن 1944ع ۾ جڏهن حيدرآباد جي تاريخي قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ هن جماعت جو جلسو منعقد ٿيو، ته مولانا صاحب به ان ۾ شريڪ ٿي، وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو (209).

مولانا دين محمد تاريخ 23 محرم سن 1393هـ مطابق 27 فبروري1963 ع تي پنهنجي زندگيءَ جو ظاهري سفر پورو ڪري وڃي مالڪ حقيقيءَ سان مليو (210).

مولانا پير رشد الله شاه راشدي

پير رشد الله شاه ولد پير رشيد الدين شاه راشدي بيعت دئي سن 1277ه مطابق 1860ع داري ڳوٺ پير فضل الله (موجوده پير جهنڊو) ضلعي حيدرآباد ۾ ڄائو (211). ابتدائي ديني تعليم ڳوٺ ۾ ئي ورتائين. قاضي فتح محمد نظامائي سندس ان دور جي استادن مان هو. فراغت کان پوءِ سلم ۽ منطق جا ڪجه ٻيا ڪتاب مولانا عبيد الله سنڌيءَ کان به پڙهيائين ۽ ان کان پوءِ پير جهنڊي ۾ ئي دين جي خدمت ڪندو رهيو (212).

پير صاحب "ريشمي رومال" واري تحريك ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو، مولانا عبيد الله سنڌيءَ جي افغانستان ڏانهن هجرت كري وحِنْ مِ پير رشد الله جو و قر هٿ هو. افغانستان پهچڻ کان پوءِ مولانا عبيد الله پير صاحب کي جهاد ۾ مدد ڪرڻ لاءِ مولانا عبيد الله لغاري جي هٿان هڪ خط به موڪليو هو. ساڳئي عرصي دوران جيڪي ريشمي خط شيخ عبد الحق کي ڏنا ويا ته انهن ۾ هڪ خط مولانا عبيد الله سنڌيءَ طرفان پير رشد الله ڏانهن مالي مدد ڪرڻ واسطي پڻ شامل هو (213).

ان كان پَوْءَ جِدِّهن "خلافت تحريك" شروع تي ته ان ۾ به ڀهرپور حصو ورتائين. جان محمد جوڻيجي جي كوششن سان لاڙكاڻي ۾ تاريخ 6-7 ۽ 8 جون 1920ع تي خلافت كانفرنس منعقد ٿي ته انهيءَ جي صدارت پير صاحب ئي كئي هئي (214).

من تحريك كي كامياب بنائڻ واسطي جڏهن خلافت جي عالمن فتوائن ڏيڻ جو سلسلو شروع كيو ته پير صاحب به انهن جي كيترين فتوائن جي تصديق ۽ تائيد كئي (215). نه صرف ايترو پر سن 1920ع ۾ جڏهن تركيءَ تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني كرڻ لاءِ وائسراءِ ۽ گورنر جنرل كي يادداشت نامو ڏنو ويو ته سنڌ مان ٻين عالمن مان گڏ پاڻ به ان تي صحيح كئي هئائين (216). پوءِ جڏهن وقت جي سركار انهيءَ يادداشت نامي تي كو به غور نه كيو ته خلافتي عالمن"ترك موالات" كرڻ لاءِ فتويٰ باري كئي، جنهن جي پڻ پير صاحب تصديق كئي (217). پاڻ تحريك جي وقت بوقت مالي مدد كندو رهيو (218). پر خاص طرح سان "خلافت تحريك" دوران سندس بي كوششن سان تيه هزار رپيا صرف "انگورا فنڊ" ۾ گڏ كيا ويا. اهڙيءَ طرح تحريك ايا جاري هئي ته پاڻ تاريخ 22 رمضان المبارك سن 1340ه مطابق 19 مئي تحريك ايا دري ويو (219).

مولانا مفتي سعدالله انصاري

حكير مولانا مفتي سعد الله جنهن جو اصل نالو عبدالرحير هو. سن 1385هـ مطابق 1868ع پر حاجي عبدالحق انصاريء جي گهر هالا نوان ضلعي حيدر آباد پر ڄائو. فارسي ۽ عربيءَ جا كتاب پنهنجي والد وٽ هالا پر پڙهيو. ۽ ان بعد سنڌ جي مختلف مدرسن پر پڙهڻ كان پوءِ وڃي كڏي واري مدرسي "مظهرالعلوم" كراچيءَ پر مولانا عبدالله ميمڻ وٽان باقي تعليم پوري كري. دستاربند ٿيو. ان كان پوءِ پنهنجي مطالعي ذريعي طب پر به مهارت حاصل كري ورتائين (220).

ان بعد خيرپور رياست جو مفتي بڻيو، جتي سرڪاري فيصلن سان گڏوگڏ عام فتوائون به ڏيندو هو. جڏهن کيس قضا جي عهدي تان هٽايو ويو، ته پاڻ ناز هاءِ اسڪول خيرپور ۾ استاد مقرر ٿيو ۽ گڏوگڏ شهر جي خانگي مدرسي ۾ به تعليم ڏيندو رهيو (221).

مفتي صاحب لكڻ پڙهڻ ۽ شعرو شاعريءَ سان به شغف ركندو هو. سندس لكيل كتاب "توب محمدي" (ڇپيل) ۽ "ضرب المدارس بجواب واقعة القرطاس" (قلمي) ذكر لائق آهن (222).

جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو ۽ ڌارين حڪمرانن جي خلاف ماڻهن ۾ نفرت وڌندي وئي. ته مفتي سعدالله پڻ هن تحريڪ ۾ شامل ٿي سياسي ڪر ڪرڻ لڳو. پاڻ هن تحريڪ جي اول کان آخر تائين اخلاقي توڙي مالي مدد ڪندو رهيو (223).

مفتي سعدالله صاحب جمادي الآخر سن 1363هـ مطابق مئي 1944ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيو (224).

مولانا شفيع محمد بهر

مولوي شفيع محمد ولد محمد حسن ٻٻر ڳوٺ عرضي نائج ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. جتان پوءِ لڏي اچي خيرپور ناٿن شاه ضلعي دادو ۾ ويٺو. مختلف هنڌن تي پڙهي. پنهنجي تعليم پوري ڪري وڃي جامع مسجد مصري شاه جو پيش امام بڻيو. پاڻ پنهنجي تر جو ناميارو عالم ۽ شاعر ٿي گذريو آهي (225).

مولوي شفيع محمد "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. سندس ئي ڪوشش سان ڳوٺ عرضي نائچ ۾ "خلافت تحريك" جا ڪيترا جلسا منقعد ٿيا (226). ان كان سواءِ تحريك جي كاميابيءَ لاءِ ان جي اخلاقي توڙي مالي مدد بـ كيائين (227).

مولوي صاحب سن 1359هـ مطابق 1940ع ۾ رحلت ڪري ويو (228).

مولانا شفيع محمد سودر

مولوي شفيع محمد ولد ولي محمد سوڍر ڳوٺ سوڍاري ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي ديني تعليم ڳوٺ ۾ ورتائين (229). ان کان پوءِ پپريءَ واري حافظ عبدالله رضي نابينا وٽ صرف ۽ ڪجھ نحو پڙهيو. ان بعد ڳوٺ فيض محمد آگري ضلعي ميهڙ ۾ مولانا محمد پريل آگري وٽ پڙهڻ ويٺو، ۽ آخر ۾ ڳوٺ نورنگ تعلقي قمبر ۾ وڃي مولانا مير محمد نورنگيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستار بندي ڪيائين.

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو (230).

پاڻ شعرو شاعريءَ سان بہ شغف رکندو هو، ۽ هن پنهنجي شاعريءَ ۾ "مسجدي" تخلص ڪر آندو آهي (231).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" جي آغاز سان گڏ سياست جي ميدان ۾ پير پاتو. پاڻ خلافت ڪاميٽيءَ جو مقرر ٿيل مبلغ هو (232)، ۽ انهيءَ سلسلي ۾ مختلف هنڌن تي وڃي تحريك جو پرچار كندو هو (233).

انهيءَ دور ۾ جڏهن امن سڀائي عالمن جي اڳواڻ مولوي فيص الڪريم ٺارو شاهيءَ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو جاري ڪري، خلافت جي تڏهوڪي حيثيت کي مسخ ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي، تـ خلافتي عالمن پڻ ان فتويٰ جو رد لکي شايع ڪرايو، جنهن جي مولوي شفيع محمد سوڍر بـ تصديق ۽ تائيد ڪري، پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو (234)، ۽ اهڙيءَ طرح هن تحريڪ جي خاتمي سان گڏ سندس سياسي خدمتون بـ پوريون ٿيون.

سندس وفات تاريخ 13 رمضان سن 1364ه مطابق 22 آگست 1945ع تي ٿي (235).

مولانا شفيع محمد منگيو

مولوي شفيع محمد ولد محمد بچل منگيو سن 1307هـ مطابق 1890ع ۾ ڳوٺ ڇتن شاه تعلقي سڪرنڊ ضلعي نوابشاه ۾ ڄائو، ديني تعليم جي حاصل ڪرڻ لاءِ پير جهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ داخل ٿيو. جتان مولانا عبيدالله سنڌي. مولانا محمد اڪرم انصاري، ۽ مولانا عبدالحليم متوو ڪڇيءَ وٽان پڙهي فارغ ٿيو.

علىر جي تحصيل کان پوءِ ساڳئي ئي مدرسي ۾ پڙهائڻ لڳو، ۽ گڏوگڏ مدرسي جو مهتمر ۽ ڪاتب بہ ٿي رهيو. ان مشغوليءَ جي باجود مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي ترغيب ڏيارڻ تي، پاڻ ايتري انگريزي به سکي ورتائين، جو قرآن شريف جي ننڍين سورتن جو انگريزيءَ ۾ ترجمو ڪري ٻڌائيندو هو.

زندگي ۽ جو وڏو صصو پير جهنڊي ۾ پڙهائڻ کان پوءِ دڌ ۽ ڇتن شاه جي ڳوٺن ۾ به ڪجهه وقت درس و تدريس جو سلسلو جاري رکيائين. ان کان پوءِ اچي سڪرنڊ ۾ رهائش پذير ٿيو. کيس مطالعي ۽ لکڻ جو به شوق هوندو هو. سندس لکيل ڪتاب "حصن حصين" ۽ "ملفوظات حضرت پير رشدالله" (قلمي) قابل ذکر آهن. مولوي شفيع محمد صاحب شاگرديءَ جي زماني ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ کان ديني علوم سان گڏ، سياسي تربيت به حاصل ڪري ورتي هئي. جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي، تہ پاڻ ان ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺڻ لڳو ۽ پير جهنڊي ۾ وقت بوتت ٿيندڙ سياسي گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿيندو رهيو (236).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ جڏهن "سنڌ جي بمبئيءَ کان علحدگيءَ واري تحريڪ" شروع ٿي، تہ مولي صاحب ان ۾ به ڀرپور حصو ورتو، ۽ پاڻ ڳوٺ ڇتن شاهه جي "سنڌ آزاد جماعت" جو صدر به ٿي رهيو (237).

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو. ۽ اچي "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين. تـ مولوي شفيع محمد بـ ان ۾ شموليت اختيار ڪري. وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو (238).

مولانا منگيو صاحب سن 1390ه مطابق 1970ع ۾ لاڏاڻو ڪيو (239).

مولانا شفيع محمد نظاماتي

مولوي شفيع محمد ولد مير محمد نظاماڻيءَ جي ولادت سن 1310هـ مطابق 1892 ع ڌاري ڳوٺ ڪرم خان نظاماڻي تعلقي هالا ضلعي حيدرآباد ۾ ٿي. پاڻ حصول تعليم لاءِ ديوبند به ويو. پر طبيعت ناساز هئڻ سبب سگهوئي واپس وطن وريو. ۽ اچي پهريائين هالا ۾ خليفي صاحب جي مدرسي "محمديه" ۾ پڙهڻ ويٺو، ۽ ان کان پوءِ پير جهندي جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" ۾ باقي تعليم وٺي فراغت حاصل ڪيائين.

علم جي تحصيل کان پرءِ پاڻ ويهي ڪٿي پڙهائڻ بجاءِ رفاهي ڪمن ۾ دلچسپئي وٺڻ لڳو ۽ اڳتي هلي وڃي ضلعي ڪائونسل جو ميمبر بڻيو (240).

اهڙيءَ طرح جڏهن سنڌ جي بعبئيءَ کان علحدگيءَ لاءِ تحريڪ هلي، ته پاڻ ان ۾ به هڪ اهر ڪارڪن جي حيثيت سان. سنڌ جي آزاديءَ تائين پنهنجون سياسي خدمتون سر انجار ڏيندو رهيو (241).

انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ جڏهن ملك اندر كيتريون ئي تحريكون شروع ٿيون. ته مولوي صاحب "خاكسار تحريك" ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ سر گرميءَ سان بهرو ورتو (242).

مولانا نظاماتي صاحب سن 1390ه مطابق 1970ع ۾ هن دنيا مان رخصت ٿيو (243).

مولانا حكيم شمس الدين

مولانا حكير شمس الدين ولد ميان عبيدالله قاضي سن 1312هـ مطابق 1894ع ۾ نوشهرو فيروز ضلعي نواب شاه ۾ پيدا ٿيو. حكير صاحب دارالعلوم ديوبند جو فارغ التحصيل هو، ۽ طبيه ڪاليج دهليءَ مان حكمت جي سند به حاصل كئي هئائين. طب جي تحصيل كان پوءِ كيس اتي جي طبيه كاليج ۾ پروفيسر مقرر كيو ويو (244) - ان كان پوءِ موٽي اچي حيدرآباد سنڌ ۾ پنهنجو مطب كوليائين، جنهن كي هن وقت طبي كمپنيءَ جي حيثيت حاصل آهي.

حڪير صاحب جا فن طب تي ڪتاب بہ مستند سمجهيا وڃن ٿا، ۽ حيدرآباد جي مشهور "طبيہ ڪاليج" سندس ئي يادگار آهي. (245). مولانا حڪير شمس الدين "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگي جو آغاز ڪيو. پاڻ سنڌ ۽ هند جي مشهور خلافتي اڳواڻن مان هڪ هو، ۽ تحريڪ جي ڪيترن ئي عهدن تي فائز رهيو. "

اهڙيءَ طرح سنڌ اندر "خلافت تحريڪ" جي جلسن ۾ شريڪ ٿي وڃي انگريزن خلاف پرچار ڪندو هو (246).

جڏهن وقت جي سرڪار "امن سيا" قائر ڪرائي، مولوي فيض الڪرير کي اڳيان آڻي کائنس "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو جاري ڪرايو، ۽ خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت کي مسخ ڪرڻ جو ڪوشش ڪئي، ته ان جي رد ۾ خلافتي عالمن پڻ فتوائن جو سلسلو شروع ڪيو، جن مان ڪيترين فتوائن جي حڪيم صاحب به تصديق ۽ تائيد ڪئي (247). ان کان سواءِ تحريڪ جي مالي مدد به ڪندو هو (248).

^{*} پاڻ جن عهدن تي فائز رهيو. اهي هي هئا:

ميمبر دستور العمل "خلافت كاميني" (ڏسو روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 14 فيبروري 131 ع. ص2).

ميمبر مركزي "خلافت كاميني" (خلافت صوبه سنة) (ڏسو روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخ 24 اپريل1932ع، ص6).

صدر حيدرآباد "خلافت كاميني" (ڏسو روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 24 اپريل 1932ع. ص6).

صدر مجلس خلافت صوبہ سنڌ (ڏسو "اعلان" ڪراچي، ڪوهنور پرنٽنگ ورڪس، سال؟، ص 2).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولانا صاحب "جميعت علماءِ" ۾ شامل ٿيو ۽ ان جو سرگرم ميمبر ٿي رهيو. (249). پاڻ جمعيت طرفان سنڌ اندر سڏايل جلسن ۾ شريڪ ٿي، وطن جي آزادي لاءِ سرگرمي سان حصو ور تائين. (250)

مولوي صاحب ڏنو ولد ملا کٻڙ ڀٽو سن 1280هـ مطابق 1864ع ڌاري ڳوٺ قادر پور ضلعي جيڪب آباد ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ ورتائين. ان کان پوءِ مختلف مدرسن ۾ پڙهيو، ۽ آخر ۾ رستم جي مولوي عبدالستار وٽ وڃي باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو (252). علمي فراغت کان پوءِ درس وتدريس ڏيڻ لڳو (253).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" جي دور جو عالم سياستدان هو (254)، پر ان هوندي به غير ملكي كپڙي جي استعمال كي جائز سمجهندي خلافتي عالمن سان اختلاف ركندو هو (255).

مولوي صاحب ڏني سن 1350هـ مطابق 1931ع ۾ وفات ڪئي (256).

مولانا صدر الدين شاهر

مولوي صدر الدين شاه ولد شرف الدين شاه بخاري سن1328هـ مطابق 1910ع داري مراد پور (جونگل) ضلعي جيڪب آباد ۾ پيدا ٿيو. جونگل ۾ مولانا در محمد وٽ پڙهي فارغ ٿيو.

علم جي تحصيل کان پوءِ ڪٿي وڃي ويهي پڙهائڻ بجاءِ صحافت جي سيدان ۾ گهڙيو، ۽ پنهنجي ادارت هيٺ هفتيوار اخبار "تنظيم" جاري ڪيائين (257).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان علحدگيءَ واري تحريڪ شروع ٿي تہ مولانا صدر الدين شاه ان ۾ شامل ٿي، پنهنجي سياسي زندگي جو آغاز ڪيو، سندس ئي ڪوششن سان سن1936ع ۾ مرادپور ۾ "سنڌ آزاد مسلم پارٽي" ٺهي، جنهن جو پاڻ صدر بڻجي سنڌ جي آزاديءَ تائين پاڻ پتوڙيندو رهيو(258).

ان کان پوءِ جڏهن "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" مذهبي بنياد تي وطن جي آزاديءَ لاءِ هلچل شروع ڪئي تہ پاڻ "مسلم ليگ" ۾ شرڪت ڪري ملڪ جي ورهاڱي تائين پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏنائين(259).

مولوي صدر الدين شاه سن 1395ه مطابق 1975ع ۾ رحلت ڪئي(260).

مولانا پيرضياء الدين شاه راشدي

پير ضياءِ الدين، ولد پير رشد الله شاه راشدي تاريخ 27 رجب سن1304ه مطابق 20 جون 1887ع ڳوٺ پير جهنڊي تعلقي هالا ضلعي حيدر آباد ۾ تولد ٿيو(261). شروع کان آخر تائين پنهنجي ڳوٺ واري مدرسي "دارالرشاد" ۾ حضرت مولانا عبيد الله سنڌيءَ، مولانا نجر الدين. صاحب، مولانا محمد صاحب احمداڻي، مولانا عبدالله لغاري ۽ حافظ امين محمد ڪڇيءَ وٽ پڙهي دستار بندي ڪيائين(262).

سندس والد پير رشدالله صاحب جي رحلت کان پوءِ صاحبزادن ۾ گادي نشين ٿيڻ تان اختلاف پيدا ٿي پيو، ان ڪري پير ضياءُ الدين شاه پنهنجي زمين تي ڳوٺ نٿوڪيريو تعلقي سڪرنڊ ۾ وڃي آباد ٿيو، ۽ اتي مدرسو "دارالرشاد" جاري رکيائين. ڪجه وقت کان پوءِ دادرسيءَ لاءِ حڪومت وٽ شڪايت ڪيائين، جنهن 1937ع ۾ سندس ئي حق ۾ فيصلو ڏنو، ان ڪري پاڻ واپس اچي پير جنهڊي ۾ گادي نشين ٿيو ۽ مدرسي جي عمارت ٻيهر تعمير ڪرائي علم جو فيض جاري رکيائين.

پير ضياء الدين شاه جي سياسي تربيت سندس والد حضرت پير رشد الله صاحب ۽ ان جي مربي استاد ۽ انقلابي اڳواڻ مولانا عبيد الله سنڌيءَ وٽ ٿي هئي. جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو ته پاڻ نه صرف ان جي اجلاسن ۾ شامل ٿي، عملي شرکت کندو رهيو (263)، پر خلافتي عالمن طرفان جاري کيل کيترين ئي . فتوائن جي تصديق به کيائين(264)، ان کان سواءِ تحريک جي کاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد به کندو هو(265). اهڙيءَ طرح خلافت جي خاتمي کان پوءِ پير صاحب "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار کري وطن جني آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو.

سن 1939ع ۾ مولانا عبيد الله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ جڏهن سنڌ وريو ۽ اچي"بيت الحڪمت" ۽ "جمنا- نربدا-سنڌ ساگر پارٽي" جو قيام عمل ۾ آندائين ته پير صاحب به بيت الحڪمت جي درس مان فيضياب ٿيڻ سان گڏرگڏ "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ۾ شريڪ ٿي پنهنجيون سياسي سر گرميون جاري رکيون(266).

پير ضياء الدين شاه تاريخ 14 رجب سن 1376هـ مطابق 15 فيبروري1957ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري، دارالبقا ڏانهن راهي ٿي ويو(267).

مولانا ظهور الحسن درس

مولانا ظهور الحسن ولد مولانا عبدالكريم درس جي ولادت سن 1323هـ مطابق 1905هـ ير كراچي ڀر ٿي. قرآن مجيد ناظره "مدرسه درسيه" ۾ حافظ قادر بخش وٽ پڙهيو، درس نظاماڻي ۽ حڪمت جي تعليم مولانا عبدالله درس کان ورتائين. شرح جامي، شيح چغمني ۽ فارسي علوم پنهنجي والد بزرگوار مولانا عبدالكريم درس وٽ پڙهيو. ان بعد اين. جي وي جاءِ اسكول مان مئٽرك ۽ سينٽ پئٽرك كاليج مان انٽر پاس كيائين.

علمي فراغت كان پوءِ هُن پنهنجي ئي مدرسي ۾ درس و تدريس جو سلسلو شروع كيو. كيس لكڻ پڙهڻ ۽ شعر وشاعريءَ جو به ذوق هوندو هو. سندس لكيل قرآن مجيد جو فارسيءَ ۾ تفسير ۽ اردو شاعري "نعت" ذكر لائق آهن.

مولانا ظهور الحسن صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "ڪانگريس" جي سياسي ميدان تان ڪيو. ۽ پاڻ مولانا محمد صادق کڏي واري جي رفاقت ۾ وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪيائين. ان کان پوءِ سگهوئي سن 1938ع ۾ ڪراچي ۾ قائداعظم جي صدارت هيٺ جڏهن "آل انڊيا مسلم ليگ" جو جلسو منعقد ٿيو، ته ان موقعي تي سيٺ حاجي عبدالله هارون جي ترغيب ڏيارڻ تي "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين(268).

پاڻ هڪ بي باڪ سياستدان ٿي اڀريو، ۽ محمد علي جناح، جي.اير.سيد، سيٺ حاجي عبدالله هارون، پير علي محمد راشدي، محمد هاشر گذور ۽ شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ جي رفاقت ۾ پاڪستان جي حاصل ڪرڻ لاءِ سنڌ ۽ هند جي جلسن ۾ شريڪ ٿيندو هو(269). مولانا صاحب هڪ ڪامياب مقرر پڻ هو، جنهن ڪري هن جماعت جي جلسن کي ڪامياب بنائڻ ۾ سندس شرڪت کي وڏي اهميت حاصل هوندي هئي.*

مولانا صاحب كي اهڙي قسر جا خط لكي جلسن ۾ شريك ٿيڻ لاءِ استدعا ڪئي ويندي هئي.
 تفصيل لاءِ ڏسو:

i. محمد هاشر گذدر ۽ شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ جو خط مؤرخه ؟.

ان سيٺ عبدالله هارون جو لکيل خط مؤرخه 29 مئي 1941ع.

iii. محمد صديق جو دفتر مسلم ليگ مان لکيل خط مؤرخه 30 مثى 1941ع.

iv. پير على محمد راشديء جو لکيل خط مؤرخه 29 مارچ 1942ع.

بير،سيد (پريزيڊنٽ سنڌ پراونشل مسلم ليگ) جو خط مؤرخه 27 جولاءِ
 بير،سيد (پريزيڊنٽ سنڌ پراونشل مسلم ليگ) جو خط مؤرخه 27 جولاءِ

[.] ايضاً . مؤرخه 7 آگسٽ 1944ع

[.]vii ايضاً. مؤرخه 16 سيپٽمبر 1944ع

مولانا ظهور الحسن درس مسلم ليگ جي ورکنگ ڪاميٽيءَ جو ميمبر، سنڌ پراونشل مسلم ليگ جو ميمبر، سٽي مسلم ليگ ڪراچيءَ جو سيڪريٽري ۽ ان جي ايڪشن ڪاميٽيءَ جو ميمبر ٿي رهيو(270) ان کان سواءِ کيس "آل انڊيا مسلم ليگ" جي سالياني جلسي لاءِ "سنڌ پراونشل مسلم ليگ" پاران ڪراچيءَ لاءِ ڊيليگيٽ پڻ مقرر ڪيو ويو هو(271).

اهڙيءَ طرح مولانا صاحب "مسلم ليگ" جي سياسي ميدان تان انگريزن کان
 آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ نه صرف عملي طرح سرگرم رهيو. پر پاڻ هن جماعت جي مالي
 مدد ۾ پڻ هٿ ونڊايائين(272).

مولانا ظهور الحسن درس تاريخ 7 شوال سن 1392هـ مطابق 14 نومبر 1972ع تي رحلت ڪئي(273).

مولانا عبدالله بنگلديرائي

مولانا عبدالله ولد آخوند عبدالرحيم جي ولادت سن 1277هـ مطابق 1860ع ۾ ڳوٺ باگڙجي تعلقي سکر ۾ ٿي. پنج درجا سنڌيءَ جا پڙهڻ کان پوءِ عربي ۽ فارسيءَ جي تعليم وٺڻ جو شوق جاڳيس(274). آخرڪار مولانا محمد اسماعيل ابڙن واري وٽ پڙهي علمي فضيلت جي دستاربندي ڪيائين.

فارغ التحصيل قيڻ کان پوءِ ڳوٺ بنگلديري ضلعي لاڙڪاڻي ۾ مدرسو تائمر ڪري، لڳاتار چاليهن ورهين تائين درس وتدريس ڏيندو رهيو. پاڻ پنهنجي تر جو ناميارو مفتي ۽ تحرير نويس به هڪ هو(275)، ۽ ان سان گڏ طب جي علم جو به وڏو ماهر هو.هن "تحفة الحڪماء" نالي طب اڪبر فارسي ڪتاب جو سنڌيءَ ۾ ترجمو ڪري ڇپارايو، جنهن کي سنڌ جي طبيبن ۾ اهميت حاصل آهي(276).

مولانا عبدالله "خلافت تحريك" جي دور جو سياستدان هو. هن جيتوڻيك "خلافت تحريك" ۽ "جمعيت العلماءِ" جهڙين سياسي جماعتن ۾ سر گرميءَ سان حصو ورتو پر سندس سياسي خدمتن تي مذهبي رنگ چڙهيل هوندو هو، ان كري هندو مسلم اتحاد كي شك جي نگاه سان ڏسندو هو (277).

هن "خلافت تحريك" جي شروعات ۾ جيتوڻيك امن سڀائي عالمن جي اثر هيٺ اچي مولوي فيض الكرير ٺاروشاهيءَ جي لكيل "تحقيق الخلافت" نالي فتويٰ جي

رسالي تي صحيح ڪئي هئي (278)، پر پوءِ جڏهن خلافتي عالمن طرفان ترڪ موالات تي عمل ڪندي غير ملڪي ڪپڙي جي استعمال کي هڪ فتويٰ ذريعي ناجائز قرار ڏنو ويو. تہ مولانا صاحب بہ ان فتويٰ جي تصديق ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبرت پيش ڪيو(279).

مولانا عبدالله تاريخ 13 ذي الحج سن 1350هـ مطابق 20 اپريل 1932ع تي لاڏاڻوڪيو(280).

مولانا عبدالله لغاري

مولانا عبدالله ولد نهال خان لغاري سن 1288ه مطابق 1871ع دّازي ڳوٺ داد لغاري تعلقي ميرپور ماٿيلي ضلعي سکر ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي عزيز مولوي محمد امين لغاريءَ کان ورتائين. ان بعد مولوي عبدالقادر پنوهاريءَ واري قاضي محمد عالم، قاضي عبدالرؤف، قاضي عبدالحنيظ، ۽ مولوي فيض الحريم وٽ نوشهري ۾ پڙهيو. تنهن بعد نارو شاه لڳ ساندن جي ڳوٺ ۾ مولوي عبدالحريم، ديري ۾ مخدوم غلام محمد (281)، ڳوٺ تڳرن ۾ وڃي مولوي عبدالقدوس وٽ پڙهيو. ان بعد ڪراچيءَ ۾ مولوي عبدالله ميمڻ وٽ ڪجه وقت پڙهڻ کان پوءِ، هڪ سال کن مولوي سلطان محمود محدث ملتاني، مولوي عبدالرشيد بهاولپوري، مولوي محمد عاتل جلالپوري ۽ مولوي الاهي بخش عمرپوريءَ وٽ تعليم حاصل ڪري وڃي مستاربند ٿيو(282).

علمي قراغت كان پوءِ مولانا عبدالله لغاريءَ امروٽ شريف ۾ اچي مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي رفاقت ۾ درس و تدريس ۽ اشاعت جو كر كيو(283). ان بعد ڳوٺ پير جهندي ۾ جڏهن "دارالرشاد" نالي مدرسو قائم ٿيو، ته ان جو "نائب مهتمم" ئي كر كيائين. مولوي صاحب پنهنجي ڄمار جو ڳچ حصو مولانا عبيدالله سنڌيءَ سان گڏجي گذاريو(284).

مولانا عبدالله لغاري پهرين و صف جي عالم سياستدانن مان هڪ هو. مدرسو "دارالرشاد" پير جهنڊو، جيڪو ديني علوم سان گڏ سياست جو به مرڪز بڻجي ويو، تنهن ۾ رهندي مولوي عبدالله لغاري وي سياسي تربيت مولانا عبيدالله سنڌي جهڙي مدبر عالم ۽ انقلابي سياستدان وٽ ٿي چڪي هئي.

مولانا عبدالله صاحب پنهنجي سياسي استاد مولانا عبيدا الله ۽ مولانا محمد صادق کڏي واري سان گڏجي "دارالعلوم ديوبند" ويو، ۽ اتي شيخ الهند مولانا محمود

الحسن جهڙي عالم سياستدان سان پڻ ملاقات ڪئي(285).

جڏهن شيخ الهند جي مشوري تي مولانا عبيدالله سنڌي آگسٽ 1915ع ۾ افغانستان ڏانهن پنهنجي سفر جو آغاز ڪيو. ته مولانا عبدالله لغاري به ساڻس همراه بڻيجي افغانستان تائين توڙ نيايو ۽ ڪجه وقت کان پوءِ سندس ئي حڪر تي واپس سنڌ وريو. جڏهن ريشمي رومال وارن خطن جي سلسلي ۾ وقت جي سرڪار وٺ پڪڙ شروع ڪئي ته ٻين سان گڏ مولانا عبدالله لغاريءَ کي به گرفتار ڪري جيل جي حوالي ڪيو ويو. اهڙيءَ طرح مولانا عبدالله سنڌيءَ جڏهن افغانستان ۾ "جنود ربانيه" نالي قوج قائم ڪئي، ته مولانا عبدالله لغاريءَ کي ان ۾ ڪرنل جو عهدو ڏنوهئائين(286).

جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي تہ مولانا عبدالله لغاريءَ پڻ ان ۾ شامل ٿي ڀرپور حصو ور تو، پاڻ خلافتي عالمن جو ساٿ ڏيندي، انهن جي جاري ڪيل ڪيترين ئي فتوائن جي تصديق ڪري (287)، پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو تُبوت ڏنائين.

"خلاف تحريك" سان گڏو گڏ مولانا لغاري "جمعيت العلماء" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪندو رهير (288).

ان کان پوءِ جڏهن مولانا صاحب "هاري ڪاميٽيءَ" ۾ بہ ڪجهہ وقت رهيو ۽ هن جماعت جي ڪانفرنسن ۾ شريڪ ٿي. سنڌ جي ڏکويل هارين کي حقن وٺي ڏيڻ لاءِ جدوجهد ڪيائين(289).

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي، پنهنجي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو. ۽ اچي "جمنا، نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين. تہ مولانا عبدالله پڻ ان ۾ شامل ٿي پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(290).

پاڻ تاريخ 4 ربيع الاول سن 1378هـ مطابق 18 سيپٽمبر 1958ع تي رحلت ڪيائين(291).

مولانا عبدالله كدهري

مولوي عبدالله ولد مولوي محمد عمر كيريو سن 1293ه مطابق 1876ع ۾ ڳوٺ كڏهر تعلقي سكرنڊ ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. ابتدائي تعلير پنهنجي والد كان ورتائين. ان بعد مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي شاگرديءَ جو شرف حاصل كيائين، ۽ آخر ۾ وڃي امروت شريف مان فارغ التحصيل ٿيو.

علم جي تحصيل کان پوءِ پاڻ گهڻو وقت سنڌ جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" پير جهنڊي ۾ مدرس ٿي رهيو، ۽ ڪجه وقت لاءِ "مدينة العلوم"

ڀينڊي ۾ تعليم ڏنائين.

مولانا عبدالله كيريو, مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي سياسي مكتب فكر جو عالم سياستدان هو. سندس سياسي زندگيءَ جو عملي طور تي آغاز "خلافت تحريك پر شركت كرڻ سان ٿيو. پاڻ تحريك جو سر گرم كاركن ٿي رهيو(292) ، ۽ جڏهن ترك موالات تي عمل كرائڻ لاءِ سنڌ ۽ هند جي عالمن هك گڏيل فتويٰ جاري كئي ته هن بران جي تصديق كري (293) خلافتين جو ساك ڏنو.

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماء" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ بهرو ورتو(294).

ان کان پوءِ جدّهن مولانا عبيدالله سنڌي سن 1939ع ۾ پنهنجي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارڻي" ٺاهيائين ته مولانا عبدالله صاحب به ان ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو (295).

مولانا كڏهري صاحب تاريخ 10 شعبان 1383هـ مطابق 15 ڊسمبر 1964ع تي وفات ڪئي(296).

مولانا پير آغا عبدالله جان سرهندي

پير عبدالله جان عرف "شاهر آغا" ولد خواجر محمد حسن جان سرهندي تاريخ 8 جمادي الاول سن 1305هـ مطابق 22 جنوري1888ع تي ڳوٺ ٽکڙ ضلعي حيدرآباد ۾ پيدا ٿير(297).

شروعاتي تعليم پنهنجي ڏاڏي حضرت خواج عبدالرحمٰن سرهنديءَ کان ورتائين. ان بعد باقاعده ديني تعليم مولوي عبدالقيوم بختيارپوري، مولوي لعل محمد مٽياروي، مخدوم حسن الله پاٽائي ۽ آخر ۾ مولوي خير محمد مگسيءَ وٽ پوري ڪري علمي قراغت حاصل ڪيائين(298).

ان كان پوءِ انگريزيء ۾ به چڱي مهارت حاصل كيائين(299) ۽ ان سان گڏ هن علم طب جو به كافي مطالعو كيو(300). كيس شعر وشاعري سان به شغف هوندو هو، ۽ هن پنهنجي شاعريءَ ۾ "شائق" تخلص كر آندو آهي(301). اهڙيءَ طرح پاڻ صاحب تصنيف پڻ هر ۽ سندس لكيل كتابن جو وچور هن طرح ٿئي ٿو:(302)

1- انتخاب مكتوبات شريف (فارسي) 2- اربعين مكتوبات (فارسي)، 3- مونس المخلصين (فارسي) 4- حفظ حديث (فارسي)، 5-هدايةالعج (سنڌي)، 6-راحة القلوب (سنڌي) 7-راحة المخلصين (سنڌي)، 8- الارشاد، شرح بانت سعاد (سنڌي)، 9- احسن

الوسائل في تحقيق المسائل (سنڌي) 10-مخزن الغلوم (سنڌي)، 11- شرح كانيه (عربي)، 12-طب ۾ تعريف الامراض ۽ تفريق الامراض، ۽ 13- برگ سبز (فارسي).

پير عبدالله جان سرهندي ٽنڊي سائيندادجي حريت پسند عالمن مان هڪ هو. جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي، ته ان ۾ شريڪ ٿي پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيائين.

انگريزن جڏهن هن تحريك كي ناكام بنائڻ لاءِ "امن سڀا" قائم كرائي، ته خلافتي عالمن ان جي مخالفت ۾ فتوائن جو سلسلو شروع كيو، پير صاحب خلافتين سان ساك ڏيندي، انهن جي جاري كيل كيترين ئي فتوائن جي تصديق ته كئي(303)، پر ساڻن انگريزي كپڙي جي استعمال واري مسئلي تي اختلاف ركيائين(304) ان كان پوءِ به هن "خلافت تحريك" جي جلسن ۾ شريك ٿي (205)، انگريزن خلاف ڀرپور حصو ورتو.

خلافِت جي خاتمي کان پوءِ پير صاحب "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو. ۽ ان جي جلسن ۾ شريڪ ٿي. وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين(306).

آغا عبدالله جان تاريخ 3 ربيع الاول سن 1393هـ مطابق7 اپريل 1973ع تي هيءُ جهان ڇڏيو(307).

مولاناعبدالله هالاتي

مولوي عبدالله ولد مولوي محمد تاريخ 22 ربيع الثاني سن 1316هـ مطابق 10 آگسٽ 1898ع تي هالا پراڻا ضلعي حيدرآباد ۾ ڄائو. شروع کان وٺي آخر تائين مدرسه "محمديه" ۾ پنهنجي والد کان تعليم وٺي فارغ التحصيل ٿيو. ان بعد سندس والد جي وفات کان پوءِ پنهنجي ئي مدرسي ۾ تعليم ڏيڻ سان گڏ حڪمت جو شغل بجاري رکيائين (308).

مولوي عبدالله پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافتم تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو. ۽ تحريڪ جي هر موڙ تي هن خلافتي عالمنجو ڀرپور ساٿ ڏنو.

جڏهن خلافتي عالمن مولوي فيض الڪريم جي فتويٰ واري رسالي "تحقيق الخلافت" جو رد لکي شايع ڪرايو، ته مولوي عبدالله نه صرف ان جي رد جي تصديق ڪئي(309) پر تحريڪ جي ڪاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد به ڪيائين(310).

پاڻ تاريخ 25 رمضان سن 1395هـ مطابق 1. آڪٽوبر 1975ع تي لاڏاڻو ڪري ويو(311).

مولانا عبدالله شاه فتاحي

مولوي عبدالله شاه ولد محمد شاه جي ولادت ڳوٺ احمد پور تعلقي خيرپور ۾ ٿي. ابتدائي تعليم ڳوٺ اڳڙا تعلقي گمبٽ ۾ ورتائين. ان کان پوءِ ناز هاءِ اسڪول خيرپور مان مئٽرڪ پاس ڪري آخر ۾ وڃي عربي ۽ فارسيءَ جي تحصيل ڪيائين(312).

علمي فراغت بعد ڪجه وقت لاءِ ناز هاءِ اسڪول خيرپور ۾ عربي ٽيچر مقرر ٿيو، ۽ ان بعد ڳوٺ اڳڙن ۾ "مدرسه دارالصلاح" جو بنياد وجهي درس وتدريس ۽ دين جي تبليغ ڪندي پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين(313)

پاڻ شعروشاعريءَ ۾ به شغف رکندو هو، ۽ هن پنهنجي شاعريءَ ۾ پهريائين "عبد" ۽ پوءِ "شوق" جو تخلص اختيار ڪيو(314). سندس سنڌي، فارسي ۽ عربيءَ ۾ چيل ڪيترو ڪلام اڻ ڇپيو رهجي ويو. البت هڪ ڪتاب "اوچتو عشق" ڇپايل آهي.

مولوي سيد عبدالله شاه خيرپور رياست جي مشهور خلافتي اڳواڻن مان هڪ هو. هن "خلافت تحريڪ" ۾ ان جي هر موڙ تي وفاداريءَسان بهرو ورتو. تحريڪ جي فائدي ۾ تبليغ ڪندي کيس ڳوٺ شاهپور ۾ گرفتار ڪري جيل به موڪليو ويو(315).

"خِلافت تحريك" كان پوءِ "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو، ۽ پاڻ 1925ع كان وٺي "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي وركنگ كاميٽيءَ جو ميمبر ٿي رهيو(316)، ۽ انهيءَ خدمت كندي ئي لاڏاڻو كري ويو.

مولاناعبدالله مري

مولوي عبدالله ولد حاجي قيصر خان مري تايخ 9 رمضان سن 1318هـ مطابق 1، جنوري 1901ع تي ڳوك الهـ بخش مري ضلعي سانگهڙ ۾ ڄائو. ابتدائي تعلير سندس والد جي قائم ڪيل "مڪتب محمديه" ۾ مولوي محمد طاهر چني کان ورتائين(317) ان بعد اچي نصرپور ۾ مولانا قاضي تاج محمد وٽ باقي تعليم پوري ڪري فارغ التحصيل ٿيو(318).

جيئن ته مولانا صاحب سن 1922ع کان اڳ پنهنجي ڳوٺ ۾ "مدرسه ڪماليه"جو بنياد وجهي چڪو هو، جنهن ڪري علمي فراغت کان پوءِ ان مدرسي جي ترقيءَ ۽ واڌاري جو گهڻو خيال ڪرڻ لڳو. پاڻ مدرسي ۾ درس وتدريس ڏيڻ سان گڏ تصنيف ۽ تاليف جو ڪر به ڪندو رهيو. سندس ڇپيل ڪتابن مان: 1- شان مسلر (1971ع) 2-مشكل كشا (1974) 3- نقراء محمدي حصو اول (1975ع) 4- نقراء محمدي حصو دوم (1975ع) 4- نقراء محمدي حصو دوم (1977ع) ۽ 5-سهڻا سخن(1979ع)ذكر لائق آهن (319).

مولانا عبدالله مري طالب العلميءَ جي ئي زماني ۾ "خلافت تحريك" ۾ حصو ورتو. سندس استاد مولانا تاج محمد نصرپوريءَ "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ كري، جڏهن پنهنجو مدرسو بند كري ڇڏيو، ۽ پنهنجي شاگردن ۾ به انگريزن خلاف جوش جاڳايو، ته سندس تقريرن كان متاثر ٿي مولانا عبدالله مري پڻ پنهنجي اباڻي ڳوٺ اله بخش مريءَ ۾ وڃي "خلافت تحريك" جي آفيس كولي، ۽ پاڻ ان شاخ جو سيكريٽري مقرر ٿي، تحريك جي كاميابيءَ لاءِ جدوجهد شروع كيائين (320).

مولانا عبدالله مري سنڌ جي ميلن ملاکڙن تي پهچي، انگريز سامراج جي غلط ڪارين کي عوام اڳيان اگهاڙو ڪري، سنڌي ماڻهن ۾ بيداريءَ جو پرچار ڪندو هو (321). سندس انهيءَ انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي (322). ان کان پوءِ به وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪم ڪيائين، ۽ ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ عملي سياست کان پري رهي، هن ديني خدمتون سرانجام ڏيندي پاڻ کي مشغول رکيو.

مولانا عبدالحق چانڊيو

مولوي عبدالحق ولد حافظ بلوچ خان چانڊيو، راوتسر تعلقي ڇاڇري ضلعي ٿرپارڪر ۾ تولد ٿيو. پاڻ ملاڪاتيار ۽ پير ڳوٺ (روهڙي) جي مدرسن ۾ پڙهي فارغ ٿيو. ۽ ان سان گڏ طب جي علم کان به مانوس ٿي ويو.

علم جي تحصيل كان پوءِ مدرس "مظهر الحق والهدايت" جو مهتمر بثجي كاني عرصي تائين درس وتدريس ڏنائين (323).

ان بعد "مدرس اسلامي" راوتسر تعلقي ڇاڇري ۾ پڙهائڻ لڳو. سندس اڻ ٿڪ ڪوشش جي نتيجي ۾ ٿر جي پوئتي پيل علائقي جي هن ديني مدرسي ڪيترن ئي ماڻهن کي علر جو فيض پهچايو (324).

مولانا صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ مولانا محمد صادق کڏ واري ۽ پير غلام مجدد مٽياريءَ واري جي رفاقت ۾ وطن جي آزاديءَ لاءِ جهدوجهد ڪيائين (325).

هُن "خلافت تحريك" كي كامياب ۽ كامبران بـثائن لاء ان جي مالي . مدد بـ كئي(326).

ان کان پوءِ جڏهن "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" مذهبي بنيادن تي انگريزن کان

آزادي حاصل كرڻ لاءِ هلچل شروع كئي، ته مولوي صاحب "مسلر ليگ" مر شامل ٿي، پوري ڄمار هك مخلص كاركن جي حيثيت سان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙڻ لڳو.

مولانا عبدالحق راوتسري ايا انهيءَ آزاديءَ واري هلچل ۾ شريڪ هو، ته سندس حياتي اچي پوري ٿي، ۽ پاڻ تاريخ 13 شعبان سن 1358ه مطابق 28 سيپٽمبر 1939ع تي هيءُ جهان ڇڏي ويو (327).

مولانا عبدالحق رباني

مولانا عبدالحق ولد محمد رمضان درس جي ولادت سن 1324ه مطابق 1906ع داري سنڌ جي تاريخي شهر نصرپور تعلقي ٽنڊي الهيار ضلعي حيدرآباد ۾ ٿئي، عربيءَ ۽ فارسيءَ جي تعليم نصرپور جي وڏي عالم قاضي ميان تاج محمد جي مدرسي ۾ حاصل ڪيائين. ننڍ پڻ کان ئي پاڻ وڏو ذهين ۽ هوشيار هو. ان ڪري کيس سرڪار طرفان اسڪالر شپ ملندي هئي.

مولانا قاضي تاج محمد جڏهن "خلافت تحريڪ" جي سلسلي ۾ وقت جي سرڪار جي عتاب هيٺ آيو، ۽ کيس ٻارنهن مهينا جيل جي سزا ملي، ته سندس مدرسي جو سمورو بار اچي مولانا عبدالحق صاحب جي ڪلهن تي پيو، ان کان پوءِ پاڻ ڪجه وقت لاءِ وڃي "دار العلوم ديوبند" ۾ به پڙهيو، ۽ اتان واپس وري اچي سن 1933ع ڌاري پنهنجي ئي شهر نصرپور ۾ "مظهر الحق" نالي مدرسو قائم ڪري درس وتدريس جو آغاز ڪيائين(328).

مولانا ربانيء ساڳئي وقت پنهنجي مدرسي طرفان سنڌ جي مسلمانن ۾ مذهبي ۽ سياسي شعور پيدا ڪرڻ لاءِ سن 1351ه ۾ رسالو "الفاروق". سن 1357ه ۾ رسالو "الفاروق". سن 1357ه ۾ رسالو "عدل" جاري ڪئي، پر پي ۽ سنگهوئي مالي مشڪلات سبب کيس بند ڪرڻا پيا(329).

مولانا صاحب كجه وقت مدرسي "مدينة العلوم" پينڊي ۾ به پڙهايو (330) ان كان پوءِ مولانا محمد صالح جي سهكار سان ميرپور خاص شهر ۾ مدرسو "دارالعلوم قاسميه" قائم كري، اتي به پنهنجون ديني خدمتون سرانجام ڏنائين(331).

مولانا عبدالحق رباني شاگرديءَ واري ئي دور ۾ پنهنجي استاد مولانا قاضي تاج محمد صاحب نصرپوريءَ وٽان سياسي تربيت حاصل ڪري چڪو هو، ۽ اڳتي هلي جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ شروع ٿي، ته هن ان هلچل ۾ شامل ٿي، سنڌجي آزاديءَتائين ڀرپور حصو ور تو(332). ان بعد هن صاحب "جمعيت العلماءِ هند" ۾ شموليت اختيار ڪئي ۽ پاڻ مولانا محمد صادق کڏي واري جي رفاقت ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" شاخ جو ڪجه وقت تائين ناظر اعليٰ ۽ پوءِ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو(333).

مولانا عبدالحق هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڀرپور ڪوشش ڪئي. سن 1944ع ۾ حيدرآباد جي شاهي قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ جڏهن "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي ڪانفرنس ٿي تہ ان جو استقباليہ خطبو چيئرمين جي حيثيت سان مولانا رباني صاحب ئي پڙهيو هو(334). اهڙيءَ طرح پاڻ انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ وارن ساڳين اصولن تي "ڪانگريس" جماعت جو به همدرد رهيو(335).

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ جي خاتمي کان پوءِ واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "بيت الحڪمت" قائم ڪري پير جهنڊي ۾ ان جو درس شروع ڪيائين تہ مولانا رباني صاحب پڻ ان مان فيض حاصل ڪيو(336)، اهڙيءَ طرح مولانا سنڌيءَ جي ٺاهيل "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ۾ به شموليت اختيار ڪري پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيائين(337).

پاڻ ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ سنڌ جي ڌتڙيل هارين جي حالت سڌارڻ لاءِ پڻ جاکوڙ ڪيائين ۽ ان کان پوءِ عملي سياست کان پاسيرو رهيو. *

مولانا عبدالحكيم

مولوي عبداحكير ولد مولوي غلام رسول تاريخ 10 رمضان 1318هـ مطابق 1. جنوري 1901ع تي ڳوٺ راڄنپور تعلقي اٻاوڙي ضلعي سكر ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي ئي ڳوٺ مولوي عبدالحليم كان ورتائين. ان بعد "قاسر العلوم" گهوٽكيءَ ۾ مولوي نور محمد وٽ، مدرسي "مظهر العلوم" كڏي كراچيءَ ۾ مولانا محمد صادق وٽ ۽ آخر ۾ شڪارپور ۾ مولانا اميد عليءَ وٽ پڙهي، دستاربند ٿيو. ان كان پوءِ ڪجه وقت لاءِ ديوبند به ويو هو.

^{*} مولوي صاحب تاريخ 13 ربيع الاول سن 1404هـ مطابق 19 بسمبر 1983ع تي وفات ڪري ويو. (معلومات محترم حامد علي خانائيءَ ڏني).

فارغ التحصيل ٿي پنهنجي ڳوٺ جي مدرسي "عثمانيه" ۾ پڙهائيءَ جو سلسلو شروع ڪيائين. ان بعد ڪجه وقت لاءِ روهڙيءَ ۾ خطيب به ٿي رهيو(338).

مولوي عبدالحكير "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جي شروعات كئي. پاڻ مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي صحبت ۾ رهي اول كان وٺي آخر تائين هن تحريك ۾ ڀرپور حصو ورتائين. ان زماني ۾ جڏهن خلافتي عالمن "امن سڀا" جي روح روان مولوي فيض الكرير ٺارو شاهيءَ جي فتويٰ واري رسالي "تحقيق الخلافت" جو رد لكي شايع كرايو، ته مولوي عبدالحكير خلافتين جو سات ڏيندي ان ردجي تصديق كئي(339).

"خلافت تحريك" سان گڏ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ هڪ سر گرم ڪارڪن جي حيثيت سان پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏنائين(340).

مولوي عبدالحكير تاريخ 22 ربيع الثاني سن 1357هـ مطابق 21 جون 1938ع تى رحلت كئي(341).

مولوي عبدالخالق "خليق" مورائي

مولوي عبدالخالق ولد قاضي نبي بخش سومرو سن 1311ه مطابق 1893ع ۾ موري ضلعي نواب شاه ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي شهر موري ۾ حاصل ڪرڻ کان پوءِ باقي تعليم وڃي "مدرسه اسلاميه" ڳوٺ خدا بخش ڀرڳڙي تعلقي جيمس آباد ضلعي ٿرپارڪر ۾ پوري ڪري علمي فراغت حاصل ڪيائين. کيس طب خانداني ورثي طور ملي.

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ سياست ۾ حصو ورتائين، ۽ بعد ۾ صحافي ۽ اديب بڻجي قوم جي خدمت ڪندو رهيو. سن 1920ع ۾ ڪراچيءَ مان ماهوار "ترقي" رسالو جاري ڪيائين. ان کان سواءِ "خليق" جي تخلص سان شاعري به ڪندو هو.

مولانا صاحب كيترائي كتاب پڻ لكيا، جن مان: "سندري"، "آخري رسول"، "آخري مذهب"، "فاتح سنڌ محمد بن قاسم"، "عبرت"، "نسيما"، "صديق اكبر"، "قرآن ۽ نئين روشني"، "علماءِ سنڌ"، "سنڌ ۾ تحريك خلافت جا

فدائي". "خلافت عثمانيه". "جهاد اكبر"، "وڏيرو وڏيري"، "عدل يورپ". "فاروق اعظم". "اسلام ۽ وياج"۽ "تجربات خليق" قابل ذكر آهن(342).

مولانا عبدالخالق مورائي ٻيءَ صف جي عالم سياستدانن مان هڪ هو. سندس سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريڪ" جي ابتدا سان گڏ ٿئي ٿو. هن سنڌ(343) خواه هند ۾ * سڏايل مکيه خلافت ڪانفرنسن ۾ شرڪت ڪئي، ۽ خاص طرح سان "ترڪ موالات" ۽ "قطع تعلقات" واري زماني ۾ سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڄ ۾ وڃي عوام کي ڌارئين حڪمران خلاف بيدار ڪيائين.*

هن تحريك دوران جدّهن خلافتي عالمن فتوائن جو سلسلو شروع كيو ته. مولانا صاحب خلافتين جو سات دّيندي، انهن جي شايع كيل كيترين ئي فتوائن جي تصديق ۽ تائيد كئي(344). نہ صرف ايترو پر تركيءَ تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني كرائڻ لاءِ جدّهن وائسراءِ ۽ گورنر جنرل "بيرن چيلسفورڊ" (Barin Chelmsford) كي

سن 1922ع ۾ جمعيت العلماءِ هند جي ڪلڪتي واري اجلاس ۾ شريڪ ٿي. هن انگريزن خلاف تقريرون ڪيون. (هيءَ معلومات قاضي محمد اڪبر وڪيل کان 31 مئي 1980ع تي حاصل ٿي).

^{*} مولانا عبدالخالق صاحب، مولانا دين محمد وفائيء وانگر سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ "خلافت تحريك" جي تبليغ كئي. ۽ انهيءَ جوش خواه جذبي ۾ اهي ٻئي عالم بي بدل هئا. تفصيل لاءِ ڏسو:

ا. روزانه "الرحيد" كراچي، مؤرخه 24 آگسٽ 1920ع، ص3.

ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 13 آكٽوبر 1920ع، ص3.

انا روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 19 آكٽوبر 1920ع. ص٠٤.

iv. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 26 آكٽوبر 1920ع، ص2.

٧٠ روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 4 نومبر 1920ع، ص4.

[.]vi. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 8 نومبر 1920ع، ص4.

اورات الوحيد كراچي، مورحه 6 نومبر 1920ع. ص3.
 روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 14نومبر 1920ع. ص3.

[.]iii. روزاد "الوحيد" كراچى، مؤرخه 16 نومبر 1920ع. ص3.

ix. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 5جنوري 1921ع. ص2.

[.]x روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 25 جنوري 1921ع. ص3.

22 جون 1920ع تي هڪ ياد داشت نامو ڏنو ويو، ته هن سنڌي عالم سياستدان به ان تي صحيح ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(345) ان کان سواءِ تحريڪ جي ڪاميابيءَ لاءِ وقت بوقت ان جي مالي مدد به ڪندو هو(346).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙي رهيو هو، ته اچي سندس حياتي پوري ٿي، ۽ پاڻ سن 1353هـ مطابق 1934ع ۾ وڃي پنهنجي رب سان مليو(347).

مولانا عبدالخالق كندياروي

مولوي عبدالخالق ولد نظام الدين سهتو سن 1309ه مطابق 1891ع ڌاري ڳوٺ ڄام نور الله لڳ ڪنڊيارو ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم پنهنجي ڳوٺ جي مڪتب ۾ حاصل ڪيائين. ان بعد سنڌ جي مختلف مدرسن ۾ پڙهي فارغ ٿيو. مولانا صاحب وقت جو وڏو عالم ٿي گذريو آهي، ۽ ديني علمن سان گڏ پاڻ علم طب، علم منطق ۽ سنڌ جي تاريخ جو پڻ وڏو ڄاڻو هو.

علم جي تحصيل کان پوءِ مولانا عبدالخالق زندگيءَ جي عملي دور ۾ قدم رکيو. پاڻ ڪجه وقت ڪنڊياري ۾ رهي، پوءِ نواب شاھ جي جامع مسجد ۾ وڃي پيش امام ۽ خطيب ٿي رهيو(348)٠

مولانا صاحب علم ادب سان چاه رکندي، صحافت جي ميدان ۾ پڻ پير پاتو، ۽ نواب شاه مان ئي سن 1936ع ۾ "معارف" نالي هڪ ماهوار رسالو جاري ڪيائين، جيڪو لڳاتار ٻارهن مهينن تائين ديني ادب جي خدمت ڪندو رهيو، ان کان سواءِ پاڻ صاحب تصنيف پڻ هو، ۽ هن سن 1930ع ۾ "سوره ڪوثر" جو سنڌيءَ ۾ تفسير ۽ سن 1932ع ۾ "معارف القرآن" جي نالي سان سنڌي ۾ تفسير لکيو، اهڙي طرح صحيح بخاري ۽ مولانا روم جي مثنويءَ جو به سنڌيءَ ۾ ترجمو ڪيائين(349).

مولانا ڪنڊياروي صاحب سن 1938ع ڌاري نواب شاه کي هميشہ لاءِ ڇڏي وڃي

ٽريننگ ڪاليج فارمين حيدر آباد ۾ فقه ٽيچر مقرر ٿيو ۽ ان سان گڏو گڏ حيدر آباد شهر جي ڪورين جي پڙ واري جامع مسجد ۾ پيش اماميءَ جا فرائض انجام ڏيندي، پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين(350).

مولانا عبدالخالق سهتي پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كيو. پاڻ اول كان وٺي آخر تائين هك پرخلوص ۽ سرگرم كاركن جي حيثيت سان هن تحريك ۾ بهرو ورتائين.

"خلافت تحريك" كي ٿڌي كرڻ جي نيت سان جڏهن امن سڀائي عالمن طرفان "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو شايع ٿيو، ته ان جي رد ۾ وري خلافتي عالمن فتوائن جو سلسلو شروع كيو، جن مان كيترين جي مولانا صاحب پڻ تصديق ۽تائيد كئي(351).

مولوي صاحب تحريڪ جي نہ صرف مکيہ گڏجاڻين ۾ شرڪت ڪئي(352) پر وقت بوقت ان جي مالي مدد بہ ڪندو هو(353).

"خلافت تحريك" جي خاتمي كان پوءِ هن "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار كئي، ۽ پاڻ هن جماعت جي وركنگ كاميٽيءَ جو به ميمبر ٿي رهيو(354). انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ مولانا عبدالخالق كنڊياروي هن ئي جماعت جي سياسي ميدان تان اچا پاڻ پتوڙي رهيو هو، ته كيس سندس حياتيءَ ساٿ نه ڏنو۽ ملك جي ورهاڱي كان اڳيئي رجب 1365ه مطابق جون 1947ع ۾ وڃي پنهنجي رب سان مليو(355).

مولانا عبدالرحمن

مولوي عبدالرحمٰن ولد خليفو خدا بخش فيروز شاه ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم ڳوٺ ۾ پنهنجي عزيزن کان ورتائين. ان کان پوءِ شهداد ڪرٽ، همايون. گهوٽڪي ۽ پپريءَ جي مدرسي ۾ پڙهي دستار بند ٿيو.

علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم ڪري، ان ۾ ئي پوري جمار درس وتدريس ڏيندو رهيو(356).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" جي دور جو عالم هو. ۽ سندس سياسي خدمتون محض هن دور تائين محدود رهيون. پاڻ جيتوڻيك "خلافت تحريك" جي حمايت ۾ هو (357)، ۽ وت آهر ان جي مالي مدد به كيائين (358)، پر ولايتي كپڙي جي پهرڻ واري مسئلي ۾، هن امن سڀائي عالمن جو سات ڏنو (359).

پاڻ سن 1347هـ مطابق 1928ع ۾ رحلت ڪيائين (360).

مولانا سيد عبدالرحيم شاهم

سيد حاجي عبدالرحير شاه ولد سيد محمد رحير شاه جي ولادت, تاريخ 14 ربيع الاول سن 1295ه مطابق 18 مارچ 1878ع تي سباول ضلعي ٺٽي ۾ ٿي. ابتدائي تعليم ماستر عبدالڪريم مٽياريءَ واري کان حاصل ڪيائين. ان کان پوءِ قرآن شريف ۽ فارسيءَ جي تعليم آخوند محمد عثمان ميمڻ ۽ مولانا حامد الله کان پرايائين (361).

تعليم پوري ڪري پنهنجي زمينداري سنڀالڻ لڳو، ۽ ان عرصي دوران سن 1921 ع ۾ سجاول ۾ مدرسه "دارالفيوض هاشميه" قائم ڪيائين(362)

مولانا سيد عبدالرحير شاه مذهبي عقيدت ۽ سياسي بصيرت رکندڙ انسان هو. پاڻ "ريشمي رومال تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان عملي طور تي سياسي ميدان ۾ قدم رکيائين. مولانا عبيدالله سنڌيءَ افغانستان مان جڏهن پنهنجي استاد بزرگوار مولانا محمود الحسن شيخ الهند کي ريشي رومال تي هڪ مخفي خط لکيو، جنهن جي کڙڪ انگريزن کي پئجي ويثي ۽ ريشمي رومال وارو مقدمو هليو. انهيءَ خط وڪتابت ۾ شيخ عبدالرحيم حيدرآباديءَ سان گڏ الحاج سيد عبدالرحيم شاه سجاوليءَ جو پڻ وڏو هٿ هو(363).

جدّهن "خلافت تحريك" شروع ٿي تہ پاڻ ان ۾ شامل ٿي هڪ پرخلوص ۽ سرگرم كاركن جي حيثيت سان بهرو ورتائين. شاه صاحب هن تحريك دوران مقرر

كيل فندن ۾ دل كولي چندا پڻ ڏنا(364).

جئين ته پاڻ مولانا محمد صادق کڏي واري ۽ حڪيم فتح محمد سيوهاڻيءَ جي دوستن مان هو، ان ڪري "جمعيت العلماءِ هند" سان به لاڳاپو رهيس(365)، پر پاڻ ڪانگريسي دور وارو جمعيتي سياستدان نه هو. اهر ئي سبب هو جو سن 1930ع ۾ جڏهن ڪانگريس طرفان لوڻ جي "بهشڪار جي تحريڪ" هلي ته هن انهيءَ جي خلاف آواز اٿاريو(366).

جڏهن سنڌ جي بمبئيء کان علحدگيء لاءِ سنڌ اندر "سنڌ آزاد جماعت" ٺهي. تـ سيد عبدالرحيم شاه پڻ ان ۾ شامل ٿي سرگرميء سان حصو ورتو.

سن1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي پنهنجي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "جمنا، نربدا. سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين تہ شاھ صاحب بہ ان ۾ شريڪ ٿي. وطن جي آزادي لاءِ ڪر ڪندو رهيو(367).

سيد عبدالرحير شاه تاريخ 2 شعبان سن1366هـ مطابق 22 جون 1947ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو(368).

مولانا عبدالرزاق بوبكائي

مولانا حاجي عبدالرازق ولد مولوي محمد اسماعيل قريشي سن 1268ه مطابق 1851ع ڌاري بوبڪ ضلعي دادو ۾ ڄائو. عربيءَ ۽ فارسيءَ جي تعيلر مولانا غلام عمر سوني جتوئيءَ واري وٽ وٺڻ کان پوءِ دستاربندي وڃي، سيتا ۾ مولانا محمد صديق وٽ ڪيائين.

علمي فراغت . . بعد پنهنجي ئي ڳوٺ بوبڪ ۾ درس وتدريس جو سلسلو شروع ڪرڻ سان گڏ حڪمت جو شغل به اختيار ڪيائين (369).

مولانا عبدالرزاق بوبكائيء جي سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ٿيو. پاڻ تحريك كي كامياب ۽ كامران بنائڻ لاءِ ان جي اهميت تي وڃي سنڌ جي عوام ۾ تقريرون كندو هو(370). ڌارين حكمرانن خلاف تقريرون كرڻ سبب، وقت جي سركار طرفان كيس زبان بنديء جا به حكم مليا(371). پر هيء بيباك سنڌي عالم سرگرم عمل رهيو. پاڻ انگريزي كپڙي كي حرام سمجهي (372)، عوام كي ان جي استعمال كان روكيندو هو، ۽ ان سان گڏ تحريك جي مالي مدد به كندو هو (373).

هن محب وطن عالم سن 1345ه مطابق 1926ع دّاري وفات كثي(374).

مولانا عبدالرزاق پيرزادو

مولوي عبدالرازق ولد حاجي كمال الدين پيرزادو سن 1301هـ مطابق 1884ع ۾ ڳوٺ فراش تعلقي سکر ۾ ڄائو. عربيءَ ۽ فارسيءَ سان گڏ سنڌي فائينل جو امتحان پاس ڪري, تعليم کاتي ۾ استاد مقرر ٿيو (375).

جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي، ۽ وطن دوست ۽ آزادي پسند ماڻهن انگريزن جا لقب ۽ ملازمتون ڇڏيون، ته مولوي عبدالرازف پيرزادي پڻ سرڪاري نوڪريءَ کي لت هڻي، وڃي هن تحريڪ ۾ شامل ٿيو.پاڻ ان جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو (376)، ۽ تحريڪ کي ڪامياب بنائڻ لاءِ نه صرف ڳوٺن ۾ وڃي تبليغ ڪندو هو. پر پنهنجي وت آهر ان جي مالي مدد به ڪندو هو (377).

آخر ۾ قيام پاڪستان کان ٿورو اڳ "مسلم ليگ" جماعت ۾ شامل ٿي، وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو(378).

مولوي صاحب تاريخ 30 رمضان المبارك سن 1388هـ مطابق 21 دسمبر 1968 تي رحلت كئي(379).

مولانا عبدالرئوف دومكي

مولانا عبدالرئوف ولد واحد بخش ڊومڪيءَ جي ولادت, سن 1315هـ مطابق 1897ع ڌاري ڳوٺ مل ضلعي سبيءَ ۾ ٿي. ابتدائي تعليم ڪنڌ ڪوٽ جي مولوي صاحبڏني ڀٽي کان ورتائين. ان کان پوءِ مولوي محمد عثمان وٽ چڪ ڀرڪڻ ۾ پڙهيو، ۽ آخر ۾ مولانا نبي بخش عوديءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستار بندي ڪيائين.

علمي فراغت بعد مختلف هنڌن جهڙوڪ، ڳوٺ ولي محمد كوسي، ڳوٺ نهال خان باجڪاڻي، ڳوٺ گل محمد خان وزيراڻي ۽ ڳوٺ ڪمال خان كوسي ۾ ديني مدرسا قائم ڪري، درس و تدريس جو شغل اختيار ڪيائين.

مولوي عبدالرئوف, مولاناتاج محمود امروٽيءَ جي سياسي حلقي جو عالم هو. هن اول کان وٺي آخر تائين "خلافت تحريك" ۾ ڀرپور حصو ورتو.

پاڻ سن 1393هـ مطابق 1973ع ۾ لاڏاڻو ڪيائين(380).

مولانا پير عبدالستار جان سرهندي

پير آقا حاجي عبدالستار جان ولد خواج محمد حسن جان سن 1311هـ مطابق 1894ع ڌاري ٽکڙ ۾ پيدا ٿيو(381). ابتدائي تعليم علام حافظ محمد يوسف کان ورتائين. باقي تعليم تندي سائينداد ۾ وٺي فارغ التحيصل ٿيو(382).

پاڻ شعرو شاعري سان بہ شغف رکندو هو. ۽ پنهنجي شاعري ۾ "پير" تخلص ڪر آندو اٿس(383).

پير عبدالستار جان "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگي جو آغاز كيو. پاڻ هن تحريك جي جلسن ۾ شركت كيائين (384)، ۽ هك پرخلوص ۽ سر گرم كاركن هڻڻ كري، چوٽيءَ جي خلافتي اڳواڻن ۾ شمار ٿيندو هو(385).

"خلافت تحريك" دوران انگريزن امن سيائي عالر مولوي فيض الكرير كان "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو لكارائي هن تحريك كي كمزور كرڻ جي كوشش كئي، ته ان فتويٰ جو خلافتي عالمن به رد لكي شايع كرايو. پير صاحب خلافتين جو ساٿ ڏيندي نه صرف ان رد جي تصديق كئي(386)، پر پاڻ تحريك جي كاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد به كيائين(387).

"خلافت تحريك" كان پوءِ "جمعيت العلماءِ" سان وابسته رهيو، (388). جنهن ۾ سندس حيثيت صوبائي اڳواڻ جهڙي هئي.

پير صاحب تاريخ1، جمادي الثاني1386هـ مطابق 17، سپٽمبر 1966ع تي داعي اجل کي لبيڪ چوندي وفات ڪئي(389).

مولانا عبدالعزيز تريچاڻوي

مولانا عبدالعزيز ولد مولوي محمد حيات جي ولادت روهڙي، لڳ ڳوٺ ٿريچاڻيءَ ۾ ٿي. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ ڳوٺ پنوهاريءَ جي ديني مدرسي ۾ داخل ٿي، مولانا عبدالقادر انڍڙ جو شاگرد ٿيو (390). پر دستاربندي وڃي امروٽيءَ جي مدرسي مان ڪيائين. امروٽ ۾ کيس مولانا عبيدالله سنڌيءَ جا درس پڻ نصيب ٿيا. هن ئي عرصي دوران حضرت مولانا تاج محمود امروٽيءَ کي مرشد ڪري ورتائين، ۽ پنهنجي ڄمار جو ڳچ حصو ساڻس گڏجي مذهبي، تبليغي، سياسي ۽ سماجي ڪمن ۾ بسر ڪيائين.

مولوي عبدالعزيز ٻيءَ صف جي سنڌي عالم سياستدانن مان هڪ هو، ۽ سندس سياست تي مولانا تاج محمود امروٽي ۽ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جو رنگ چڙهيل هو. اهو ئي سبب هو جو کيس ڌارين خلاف بيحد نفرت هئي. ۽ ان ڪري کيس جيل جي سزا ب ڀوڳڻي پئي(391).

سندس سياسي زندگيءَ جي شروعات خلافت تحريك ۾ حصي وٺڻ سان ٿي. پاڻ

تحريك جي هر موڙ تي اول كان وٺي آخر تائين هڪ پرخلوص ۽ سرگرم كاركن جي حيثيت سان كر كيائين.

"خلافت تحريك" جي آغاز ۾ امن سڀائي عالمن "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتريٰ جو رسالو شايع ڪرائي، خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت کي مشڪوڪ بنائڻ جي ڪوشش ڪئي، تہ خلافتي عالمن وري ان جو رد لکيو، جنهن جي مولانا پڻ تصديق ۽ تائيد ڪئي (392). اهڙيءَ طرح خلافتي عالمن انگريزي ڪپڙي جي پهرڻ کي حرام ٺهرائڻ جي فتويٰ جاري ڪئي ته هن ان تي به صحيح ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو (393).

مولانا عبدالعزيز صاحب نه صرف اترسنڌ ۾ "خلافت تحريڪ" جي سياسي گڏجاڻين ۽ ڪانفرنسن ۾ عملي طور تي شرڪت ڪئي (394)، پر پاڻ وقت بوقت انهيءَ تحريڪ جي مالي مدد بہ ڪندو هو (395).

"خلافت تحريك" جي خاتمي كان پوءِ مولوي صاحب "جمعيت العلماء" ۾ شريك ٿي پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏنيون (396). سنڌ جي بمبئيءَ كان علحدگيءَ كان پوءِ جڏهن هتي ڏيهي سياست جو آغاز ٿيو، ۽ مختلف سياسي گروهن ۾ ڇڪتاڻ شروع ٿي ته "مسلم ليگ" الله بخش وزارت كي ختم كرڻ لاءِ "مسجد منزل گاه" جو مسئلو هٿ ۾ كنيو، مولوي عبد العزيز مسلم ليگين جو ساٿ ڏيندي هن تحريك ۾ بهرو ورتو، جنهن جي پاداش ۾ كيس گرفتار كري نظربند به كيو ويو (397).

مولانا صاحب تاريخ 21 شوال سن 1369هـ مطابق 6. آگسٽ 1950ع تي هيءُ جهان ڇڏيو (398).

مولانا عبدالغفور سيتائي

مولوي عبدالغفور ولد گل محمد سولنگي سن 1326هـ مطابق 1908ع ڌاري ڳوٺ بعد بچہ واهڻ تعلقي ميهڙ ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي ديني تعليم پاٽ ۾ وٺڻ بعد ڪراچيءَ جي مدرسي "مظهر العلوم" کڏي ۾ اچي مولانا محمد صادق وٽ پڙهڻ ويٺو. ان کان پوءِ هندستان جي مشهور مدرسي "دارالعلوم ديوبند" ۾ وڃي داخل ٿيو، پر پوءِ سگهوئي واپس وطن وريو(399). ۽ اچي "مظهر العلوم کڏي" ۾ مولانا محمد صادق وٽ دستياربندي ڪيائين.

فارغ التحصيل ٿي پاڻ گهڻو وقت "مظهر العلوم" کڏي ۾ ئي پڙهائيندو

رهيو(400). ان کان پوءِ ڪجھ وقت لاءِ بدين ۾ مولانا احمد ملاح جي قائم ڪيل مدرسي ۾ مدرس ٿي رهيو(401).

ان کان بعد مولوي صاحب پڙهائيءَ جو شغل ڇڏي، صحافت جي زندگيءَ جو آغاز ڪيو، ۽ اڳتي هلي هن ئي ميدان تان پاڪستان جي حاصل ڪرڻ لاءِ ڀرپور پرچار ڪيائين. پاڻ جن اخبارن جو ايڊيٽر ٿي رهيو سي هيون (402):

روزانه "سنڌ زميندار" (سكر), هفتيوار "اصلاح" (سكر), روزانه "نواءِ وقت"(كراچي) ۽ روزانه "الوحيد" (حيدرآباد).

انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ جڏهن ملڪ اندر مذهب جي بنياد تي "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" هلچل شروع ڪئي تہ مولوي عبدالغفور "مسلم ليگ" ۾ شامل ٿي ويو. پاڻ عملي طور تي خانبهادر محمد ايوب کهڙي ۽ خانبهادر غلام محمد وساڻ جي رفاقت ۾ هن ئي جماعت جي سياسي ميدان تان سرگرميءَ سان حصو ورتائين(403).

مولانا صاحب نه صرف هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿيو (404). پر کيس "سکر سٽي مسلم ليگ" جي ورڪنگ ڪاميٽيءَ جو ميمبر به مقرر ڪيو ويو هو(405). سن 1942ع ۾ جڏهن سکر ضلعي ۾ ٻوڏون آيون ته "مسلم ليگ" فلڊ رليف ڪاميٽي سکر" ٺاهي ويئي، جنهن ۾ هن به پاڻ ملهايو(406).

مولوي عبدالغفور صاحب تاريخ 9 رجب سن 1400هـ مطابق 24 مئي 1980ع تي وفات ڪئي. (407)

مولانا عبدالقادر لغاري

مولانا عبدالقادر ولد خير محمد لغاريء جي ولادت سن 1312هـ مطابق 1895ع ۾ ڳوٺ ملان بخشہ لغاري تعلقي ميرپور ماٿيلي ضلعي سکر ۾ ٿي. قرآن پاڪ ۽ فارسيءَ جي ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان بعد مولوي عبدالقادر وٽ ڳوٺ داد ڀٽي ۾ اچي هڪ سال تائين پڙهيو (408). بعد ۾ پير جهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ داخل ٿيو(409). جتان فارغ التحصيل ٿي (410) اتي ئي درس وتدريس جو آغاز ڪيائين(411).

مولوي عبدالقادر صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو، پاڻ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي سياسي مڪتب فڪر جو عالم سياستدان هو ۽ هن تحريڪ جي اول کان وٺي آخرتائين اخلاقي توڙي مالي مدد ڪيائين(412). تحريك دوران خلافتي عالمن جڏهن "ترك موالات" لاءِ فتويٰ جاري كئي، ته هن به ان جي تصديق كئي(413).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" سان گڏ "جمعيت العلماء" سان به وابسته رهيو. سندس ئي كوششن سان ميرپورخاص ۾ هن جماعت جي شاخ قائم ٿي، جنهن جو پاڻ ئي پهريون باني ناظر مقرر ٿيو(414).

ي پاديان مولانا عبيدالله سنڌي سن 1939ع ۾ جلاوطنيءَ کان پوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو ۽ اچي "بيت الحڪمت" قائم ڪري، انجو درس پير جهنڊي ۾ شروع ڪيائين، تہ مولانا عبدالقادر پڻ انهيءَ درس مان فيض حاصل ڪيو (415). اهڙيءَ طرح ساڳئي ئي عرصي دوران مولانا سنڌيءَ جي ٺاهيل "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" ۾ به شموليت اختيار ڪري پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(416).

ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ مولوي صاحب عملي طور تي سياست کان پري رهيو. ۽ دين جي خدمت ڪندي تاريخ 5 رمضان 1395هـ مطابق 12 سيپٽمبر 1975ع تي رحلت ڪيائين(417).

مولانا قاضي عبدالكريم عباسي

مولانا قاضي عبدالكريم ولد مولانا قاضي محمد سعيد عباسي سن 1299هـ مطابق 1882ع ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم كان وٺي دستاربنديءَ تائين پنهنجي والد وٽ پڙهيو. البت انهيءَ وچ ۾ كجه وقت مولانا عبدالله جتوئي آمريءَ واري وٽ بي پڙهيائين.

علمي فراغت كان پوءِ مولوي عبدالكرير صاحب پوري ڄمار دين جي خدمت كندو رهيو(418).

جدِّهن "خلافت تحريك" شروع ئي ته مولانا صاحب ١ن ۾ شامل ئي ڌارين حكمرانن خلاف كم كيو. پاڻ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پترڙيائين (419).

مولوي صاحب سن 1344هـ مطابق 1925ع ۾ لاڏاڻو ڪيو(420).

مولانا عبدالكريس درس

مولانا عبدالكريم ولد مولانا عبدالله درس جي ولادت سن 1277هـ مطابق 1860 ع ذاري كراچي ۾ ٿي. ابتدائي عربي، فارسي ۽ سنڌيءَ جي تعليم پنهنجي والد بزرگوار كان "مدرسه درسيه" كراچي ۾ ورتائين(421). ان كان بعد كراچيء جي مشهور مدرسي "مظهر العلوم" كڏي ۾ مولانا عبدالله ميمڻ وٽ كجه كتاب پڙهيو(422)، ۽ ان كان پوءِ وڃي مصر جي "جامع ازهر" ۾ داخل ٿيو، جتان علم جي تكميل كري، شيخ الحديث ۽ تفسير جي سند وٺي (423)، واپس وطن وريو، ۽ اچي پنهنجي ئي مدرسي "مدرسه درسيه" كراچيءَ ۾ پڙهائڻ لڳو(424).

ان كان پوءِ لياري كوارٽر كراچيءَ ۾ "مدرسه عاليه اهل سنت والجماعت" قائم كري (425)، پڙهائڻ سان گڏ، اتي ئي هك يتير خانو به قائم كيائين، جنهن جي پڻ خدمت انجام ڏيندو رهيو، ۽ ساڳئي وقت صدر بازار كراچيءَ ۾ مطب كولي حكمت جو ڏنڌو به جاري ركندو آيو(426)، ان كان سواءِ پاڻ "مظهر العلوم" كڏي جي عالمن طرفان فتوائن ڏيڻ لاءِ قائم كيل "انجمن السواد الاعظم" جو پڻ ميمبر ٿي رهيو (427).

مولانا صاحب ديني خدمتن سان گڏ سنڌي. اردو، عربي ۽ فارسيءَ ۾ شاعري به ڪندو هو، ۽ ان سان گڏ ڪجهه ڪتاب به لکيائين، جن مان: "منتخب ديوان درس" (ڇپيل)، "مجموعه متفرقات درس" (ڇپيل)، "سلطان الترڪ خليفة الله في الملڪ" (ڇپيل) ۽ "نعت شريف" سنڌي (اڻ ڇپيل) ذڪر لائق آهن(428).

مولانا عبدالكرير درس پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "امن سيا" ۾ شامل ٿيڻ سان كيو(429). پر پوءِ سگهوئي هن پنهنجي غلطيءَ جو ازالو كيو ۽ خلافتي عالمن طرفان شايع كيل "اظهار الكرامة" نالي فتويٰ جي تصديق كري (430). "خلافت تحريك" ۾ شامِل ٿي ويو.

مولانا صاحب پهرينءَ صف جي عالىر سياستدانن مان هڪ هو ۽ پاڻ مبلغ بئجي. تحريڪ جي ضلعي خواه صوبائي سطح جي جلسن ۾ شريڪ ٿي، نه صرف خلافت جي اهميت جو پرچار ڪندو هو(431)، پر ڪيترن جلسن جي صدارت به ڪيائين، اپريل 1920ع ۾ هن جي ئي صدارت ۾ سيوهڻ ۾ خلافت ڪانفرنس منعقد ٿي، جنهن ۾ هجرت جو ٺهراءُ منظور ڪرايو ويو هو(432).

اهڙيءَ طرح خلافتي عالمن طرفان انگريزي سامان جي استعمال خلاف جڏهن فتوائون جاري ڪيون ويون. تہ مولانا صاحب نہ صرف انھن فتوائن جي تائيد کئي(433). پر پاڻ جلسن جي صدارت ڪري انگريزي سامان جي استعمال کان روڪڻ سان گڏ. ديسي شين جي استعمال لاءِ پڻ سنڌي عوام کي همٿائيندو هو(434).

مولانا عبدالكريم صاحب كي "خلافت تحريك" جي "مجلس شوريا" ۾ پڻ

شامل كيو ويو. ۽ وقت بوقت كيس گهرائي تحريك جي ڀلائيءَ لاءِ ساڻس مشورو كيو ويندو هو(435).

مولانا صاحب تحريك دوران قائم كيل فنڊن جي گڏ كرائڻ ۾ نہ صرف خلافتي عالمن جو ساٿ ڏنو(436)، پر هن تحريك جي پاڻ به دل كولي مدد كيائين(437).

مولانا عبدالكرير درس تاريخ 19 شعبان سن 1344هـ مطابق 4 مارچ 1926ع تي دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو(438).

مولانا عبدالكرير ڏيرو

مولوي عبدالكرير ولد حاجي الهورايو ڏيرو سن 1315ه مطابق 1897ع ۾ ڳوٺ رضا محمد ڏيرو تعلقي ككڙ ضلعي لاڙكاڻي ۾ ڄائو. ابتدائي قرآن شريف جي تعليم ۽ فارسي ۽ عربيءَ جا اكثر كتاب پنهنجي ڳوٺ جي مدرسي ۾ مولانا محمد اسماعيل صاحب كنڊويءَ واري وٽ پڙهيو. ان كان بعد باقي عربيءَ جو علم مولانا الاهي بخش ٻانهي لاكير تعلقي ميهڙ واري وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو.

تعلير پوري ڪرڻ کان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ ديني مدرسو قائر ڪري درس وتدريس جو مشغلو اختيار ڪيائين(439) بعد ۾ ميهڙ لڳ ڳوٺ گاهي مهيسر واري مدرسي ۾ سن 1341ه کان وٺي 1349ه تائين تعلير ڏنائين. پاڻ پڙهائڻ سان گڏ تصنيف جو ڪر بہ جاري رکندو آيو. سندس لکيل ڪتابن جو وچور هن طرح آهي.

عربيء م: 1- مقدمة تفسير القرآن 2- المكاتيب الجديدة, 3- صحيفة الخشوع ۽ 4- راحة القلوب في لسان المحبوب.

فارسيءَ م: 1- اخلاق نامه امام غزالي 2- اعتقاد نامه امام رباني. 3-فوائد دينيه، 4-هدايت نامه امام رباني. 5-تعليم قرآن. 6- معلم القرات، 7- فضائل آل واصحاب، 8- قصو پير دستگير، 10- قصو امام رباني، 12- نصيحت نامه پير دستگير، 10- قصو امام رباني، 12- كرامات اولياءَ الله، 13- نصيحت نيك، 14- نصيحت قرآن، 15- نصيحت ذكر، 16- ضروري مسئلات، 17- ديباچه فقه حنفي، 18- كتاب الصلوة سنڌي، 19- قواعد عربيه، 20- قواعد فارسي، 21- دلائل وجوب التجويد، 22- معجزن جوكتاب، 23- مولودن جو كتاب، 24- عربضه اصغف العباد في مسئلة

الضاد, ع 25 - اعلام العباد في مسئلة الضاد.

ان کان پوءِ ميهڙ ۾ مدرسو قائم ڪيائين، جيڪو پوءِ "مدرسه دارالقرآن" جي نالي سان مشهور ٿــو(440).

مولانا عبدالكرير ڏيري پنهنجي سياسي زندگيء جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كئي. پاڻ هن هلچل جي جلسن ۾ شريك ٿيندو هو، ۽ خلافت جي اهميت تي ڀرپور تقريرون كري. ان كي كامياب بنائڻ جي كوشش كيائين(441).

انگريزن "امن سيا" قائر كرائي خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت كي مسخ كرڻ لاءِ مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي فتويٰ جو هك رسالو شايع كرايو، ته خلافتي عالمن وري ان فتويٰ جو رد لكي ورهايو، جنهن جي مولانا عبدالكريم ڏيري پڻ تائيد كري، پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(442).

پاڻ تاريخ 8 رجب المرجب سن 1373هـ مطابق 13 مارچ 1954ع تي هن فاني دنيا مان لاڏاڻر ڪيائين(443).

مولانا مفتي عبدالكرير

مولانا عبدالكرير ولد عبدالرحير كوك بچه تعلقي پني عاقبل ير جائبو. ابتدائي تعليم سنڌ مان حاصل كري، باقي تعليم ديوبند مان وٺي فارغ التحصيل ٿيو (444).

ديوبند كان واپس اچي مولانا صاحب سنڌ جي مختلف مدرسن ۾ ديني تعلير جي شغل كي جاري ركيو.

مولوي عبدالكريم, مولانا تاج محمود جي سياسي حلقي سان واسطو ركندو هو ۽ سندس ئي رفاقت ۾ آزادي حاصل كرڻ لاءِ ڀرپور حصو ورتائين(445).

پاڻ "خلافت تحريڪ" سان گڏ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان به ڪر ڪيائين. سن 1944ع ۾ جڏهن حيدر آباد جي قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو منعقد ٿيو. ت مولانا صاحب به ان ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪئي(446). ان کان پوءِ "مسلر ليگ" ۾ شامل ٿي پنهنجرن سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(447).

مولوي صاحب سن 1376هـ مطابق 1957ع ۾ رحلت ڪئي(448).

مولانا عبدالكرير چشتي

مولانا عبدالكريىر ولد عبدالله سن 1314هـ مطابق 1896ع ڌاري شكارپور ۾ پيدا ٿيو. ڇهن ورهين جي ڄمار ۾ خليفي حاجي عبدالغفور وٽ قرآن شريف پڙهڻ لاءِ ويٺو. ان كان پوءِ مولوي غلام رسول چشتي ۽ مولوي عبدالرحمٰن وٽ پڙهي سن 1918 ع ۾ دستاربندي كيائين. هن ديني تعليم سان گڏ طب جو علم به حاصل كري ور تو.

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ مولانا عبدالڪريم چشتيءَ شڪارپور ۾ طبابت جو ڌنڌو اختيار ڪيو(449)، ۽ ان سان گڏ سندس پوري ڄمار دين جي تبليغ ۽ تحريڪن ۾ حصو وٺندي گذري. هن سنڌي عالم صحافت جي خوب خدمت ڪئي، ته علم ادب جا گهڙا ڀريندي به پاڻ موکيو. مولاناصاحب جن اخبارن جو ايڊيٽر ٿي رهيو، تن جو وچور هن طرح آهي (450):

روزاند اخبار "الوحيد" (كراچي)، روزاند اخبار "آزاد" (كراچي) ، روزاند اخبار "مجاهد" (كراچي) ، روزاند اخبار "مجاهد" (كراچي) ، هفتيولر اخبار "صداقت" (جيد بستار)، هفتيولر اخبار "بيغام" اشكارپور)، هفتيولر اخبار "جمهور" (شكارپور)، ۽ هفتيولر اخبار "ياكستان" (الرّكاڻو).

مولانا صاحب کي لکڻ جي پڻ قدرت ڏات بخشي هئي، ۽ پاڻ ڪيترن ئي ڪتابن جو مصنف ٿي گذريو آهي. سندس لکيل ڪتابن جو وچور هن طرح آهي: (451)

سنڌي: 1-هدايات محمدي، 2- انوار محمدي، 3- حالات محمدي، 4-ڪمالات محمدي، 5- احسانات محمدي، 6- وصال محمدي، 7- حبيب خدا، 8- آئيند حق، 9- تلوار حق، 10- آفتاب حق، 11- صراط المستقير، 12- برهان رباني، 13- حجت حقاني، 14- اهليت المؤمنين، 15- شهيد ڪربلا، 16- قضيه ڪربلا، 17- امام اعظم، 18-امام شافعي، 19-محبوب سبحاني، 20- امام رباني، 21- سلطان الهند، 22- بيان المعراج، 23- نور خدا، 24- جواهرات، 25- تعليم الاسلام، 26- مجاهد الاسلام، 27- اولياء اسلام، 28- رهبر حج، 29- علامات قيامت، 30- امير معاويه، 31- تقديس الرسول، 23- پيغام محبت، 33- جواب لا جواب، 34- عملن جو انجام، 35- مجموعه وظائف، 36- ڪتاب النڪاح، 37- هدايت المسلمين، 38-ميلاد نبي، 39- باطل نبوت، 40- طاهرات، 41- قرآني دعائون، 42- پيغمبري دعائون، 43- مجربات چشتيه، 44-پنج طاهرات، 41- قرآني دعائون، 43- عبدالڪريم ۽ 47- معجزات محمدي.

فارسي: 1- قرب قيامت، 2-معامل باغ فدك، 3- القول المقبول، 4-القول الاظهر، 5- التلقين والهداية، 6- كشف الغطاء ۽ 7- رافع الحجب.

جڏهن به سنڌ جي غريب مگر بي لوث سياسي عالمن جو ذڪر ڪيو ويندو، ته مولانا عبدالڪرير چشتيءَ جو نالو مڙني کان پهريائين ڳڻپ ۾ ايندو. سندس سياسي، مذهبي ۽ علمي خواه صحافتي خدمتن جو دامن ايترو ته وسيع آهي، جو مٿس الڳ ڪتاب لکي سگهجن ٿا.

مولانا چشتيءَ جي سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" جي ابتدا سان ٿيو. پاڻ هن تحريك جي بي مثال خدمت كيائين. غربت ۽ افلاس هوندي به هن تحريك لاءِ چندا ڏنائين (452)، ۽ هنڌين ماڳين وڃي ان جي اهميت جو پرچار كندو رهيو (453). "خلافت تحريك" جا جيكي به مكيه جلسا ٿيا، هن انهن ۾ شركت كئي. وطن دوستيءَ جي صدقي ۾ كيس كيترا ڀيرا جيل به وڃڻو پيو."

انگريزن جڏهن امن سڀائي عالمن کي اڳيان آڻي "خلافت" جي حيثيت ۽ حقيقت کي بدلائڻ جي ڪوشش ڪئي، ۽ کانئن اهڙي قسم جون فترائرن جاري ڪرايون. تـ خلافتي عالمن به انهن جي جواب ۾ فتوائن جو سلسلو شروع ڪيو، جن مان ڪيترين جي مولانا صاحب پڻ تصديق ڪئي(454).

پاڻ هن تحريك ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺندي كيتري وقت تائين "سنڌ خلافت كاميٽي" جو نائب صدر بہ ٿي رهيو (455). هن تحريك كان سواءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ هند" جو بہ ميمبر ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح كانگريس جماعت جي سياسي ميدان تان به كر كيائين(456).

هن صاحب سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ ۾ پڻ ڀرپور حصو ورتو. انهيءَ سلسلي ۾ سندس ئي ڪوششن سان شڪارپور ۾ "سنڌ آزاد جماعت" قائم کئي ويئي، جنهن جو پاڻ پهريون جنرل سيڪريٽري ٿي رهيو(457).

^{*} پاڻ وطن جي آزاديءَ خاطر ٽي ڀيراجيل ۾ ويو. جنهن جو تنصيل هن طرح آهي:

i. پهريون ڀيرو فوجداري ڏوه _ بنا اجازت جلوس ڪڍڻ تي. هڪ مهينو.

ii. ٻيو ڀيرو 144 قلر جي ڀڃڪڙيءَ تي. چار مهينا

[.] أنا تيون ڀيرو 108 قلر جي بغاوت جي ڏوه ۾ ، ٻارهن مهينا.

⁽شهاب الدين چشتي: "مولانا عبدالكرير چشتي" (مضمون) تماهي مهران "سوانح نمبر" 3 - -4. حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1957ع ص240).

اهڙيءَ طرح پاڻ ڪيترا سال "آزاد قومي پارٽي" ۽ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو پڻ نائب ناظر ٿي رهيو (458). ان کان سواءِ مولانا عبدالڪريم چشتي "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي ضلعي واري شاخ جو به نائب مقرر ٿيل هو(459). جڏهن حيدرآباد واري قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو عظيم الشان جلسو ٿيو، ته هن به ان ۾ شرڪت ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ سنڌ" جو عظيم الشان جلسو ٿيو، ته هن به ان ۾ شرڪت ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ ياڻ پتوڙيو(460).

مولوي صاحب اوائلي دور واري "مسلم ليگ" ۾ پڻ شامل ٿيو هو، ۽ کيس ان ۾ ميمبر جي حيثيت حاصل هئي(461).

هي مرد مجاهد تاريخ 17 ذي القعد سن 1383هـ مطابق 31 مارچ 1964ع تي زندگيءَ جو ظاهري سفر پورو ڪري، وڃي پنهنجي رب سان مليو(462).

مولانا عبدالكرير مكسي

مولوي عبدالكريم ولد غلام حسين مكسيءَ جي ولادت تاريخ 12 ربيع الاول سن 1302هـ مطابق 11 جنوري 1884ع تي فيروزشاه ضلعي دادو ۾ ٿي. ابتدائي تعليم گوٺ جي مدرسي مان ورتائين. ان كان پوءِ كجه وقت سنڌ جي مختلف مدرسن ۾ پڙهيو ۽ آخر ۾ موٽي اچي ڳوٺ واري مدرسي مان دستار بند ٿيو.

علمي فراغت کان پوءِ مولوي صاحب پوري ڄمار درس وتدريس ۽ دين جي خدمت ڪندي گذاري(463).

مولوي عبدالكرير پنهنجي سياسي زندگيء جي شروعات "خلافت تحريك" مر حصي وٺڻ سان كئي. پاڻ هن تحريك جو سر گرم كاركن ٿي رهيو، ۽ خلافتي عالمن جو سات ڏيندي، انهن جي جاري كيل كيترين ئي فتوائن جي تصديق ب كيائين(464). هن ئي تحريك جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ كم كرڻ سان گڏ، پاڻ "جمعيت العلماءِ سنڌ" ۾ به شريك ٿيو، ۽ ان جي ميهڙ واري شاخ جو نائب ناظر بڻجي(465)، آزاديءَ جي جدوجهد جاري ركيائين.

مولوي عبدالكريم مكسيءَ تاريخ 2 صفر 1392هـ مطابق 18 مارچ 1972ع تي هيء جهان ڇڏيو (466).

مولانا عبدالكريم كورائي

مولوي عبدالكريم ولد ملا پانڌي خان كورائي بلوچ جيكب آباد شهر ۾ ڄائو. ابتدائي سنڌي، انگريزي، عربي ۽ فارسيءَ جي تعليم جيكب آباد جي شهر مان ورتائين. ان كان پوءِ 21 سالن جي ڄمار ۾ مولوي محمد صالح شيخ كان باقي تعلير وٺي قضيلت جي دستاربندي ڪيائين.

مولوي صاحب تعليم حاصل ڪرڻ دوران جيڪب آباد ۾ امامت جا فرائض به سرانجام ڏيندو هو. ان کان پوءِ ڳوٺ محمد پور اوڍي ۾ لڏي آيو، ۽ اتي ئي درس وتدريس شروع ڪيائين(467) ان عرصي ۾ هن بزرگ عالم مولانا سيد تاج محمود امروٽيءَ جي صحبت اختيار ڪري، سلوڪ جو سفر اختيار ڪيو ۽ مولانا امروٽيءَ جو وڏو خليفو مجاز ٿيو(468).

ڳچ عرصي کان پوءِ اتان لڏي بکو سيال تعلقي شهدادڪوت ۾ اچي ويٺو (469). جتي ارڙهن سالن تائين علم جو نور پکيڙي، وري لڏي اچي ڪوٽ الاهي بخش تعلقي رتيديري ۾ ويٺو. ان بعد به هڪ ڀيرو نقل مڪاني ڪيائين ۽ ڪجه وقت لاءِ گوري پهوڙ تعلقي شڪارپور ۾ اچي ويٺو. پر اتي به کيس قرار نہ آيو ۽ وري ڪوٽ الاهي بخش ۾ موٽي آيو.

مولوي عبدالكريم صاحب پنهنجي دور جو ناميارو مبلغ، مصنف ۽ شاعر ٿي گذريو آهي. پاڻ جيكي كتاب لكيائين. تن جو وچور هن طرح آهي:

"معراج المؤمنين", "اعمال قرآني", "اصلاح الاخلاق", "تن پارن جو سنڌي ترجمو" ۽ "زليخا _ منظوم سنڌي ترجمو" قابل ذكر آهن(470).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيو. تحريك جي آغاز ۾ جڏهن امن سڀائي عالمن خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت کي مشكوك بنائڻ لاءِ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فقريٰ جاري ڪئي تہ خلافتي عالمن بہ ان جو رد لکي شايع ڪرايو، جنهن جي مولانا صاحب پڻ تصديق ڪئي (471). اهڙيءَ طرح خلافتي عالمن طرفان جڏهن انگريزي ڪپڙي جي استعمال خلاف هڪ فقريٰ جاري ٿي تہ مولوي عبدالڪريم ڪورائي بہ انهن عالمن مان هڪ هو، جن هن فقويٰ جي تصديق ۽ تائيد ڪئي (472). اتر سنڌ ۾ "خلافت تحريك" جا جيكي به مکيہ جلسا ٿيا، تن ۾ هن به شركت ڪئي(373). پاڻ ايڏو حق گو هو جو حق چوندي ماڻهن جا ڇوڏا لاهيندو هو، ان ڪري سندس لقب ئي مولوي ڪهاڙو مشهور ٿي ماڻهن جا ڇوڏا لاهيندو هو، ان ڪري سندس لقب ئي مولوي ڪهاڙو مشهور ٿي ويور(474).

"خلافت تحريڪ" کان پوءِ جڏهن سنڌ جي بعبئيءَ کان عليحدگيءَ جي تحريڪ هلي، تہ هن ان ۾ به ڀرپور حصو ورتو. پاڻ ڪيترو وقت عودي ڳوٺ جي "سنڌ آزاد جماعت" جو سيڪريٽري ٿي رهيو(475). اهڙيءَ طرح هيءُ صاحب سنڌ جي هارين جو

پڻ همدرد ٿي رهيو (476).

مولانا عبدالكرير صاحب 75 ورهين جي جمار ۾ رحلت كئي (477).

مولانا عبدالكرير ككل بُنوي

مولانا عبدالكريم ككل لاڙكاڻي ضلعي جو رهاكو هو ۽ وڏو مجاهد ماڻهو ٿي گذريو آهي. پاڻ شروع كان آخر تائين مولانا دين محمد بٺويءَ كان تعليم وٺي فراغت حاصل كيائين.

علر جي تحصيل بعد بئيءَ جي هڪ مسجد جو خطيب بڻيو، ۽ ان سان گڏ طب يونانيءَ جو شغل به جاري رکيائين(478)٠

مولانا عبدالكريم "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي، پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو. پاڻ هن تحريك ۾ نهايت سرگرميءَ سان حصو ورتائين.

تحريڪ جي ڪاميابيءَ واسطي خلافتي عالمن جڏهن فتوائن جو سلسلو شروع ڪيو, ته پاڻ خاص طرح سان ولايتي ڪپڙي واري فتويٰ جي باري ۾ انهن جو ساٿ ڏنائين(479).

مولانا صاحب انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ هن تحريڪ جي پٺيرائيءَ ۾ عملي طور تي نہ صرف ان جي ضلعي سطح جي جلسن ۾ شريڪ ٿيندو هو(480)، پر صوبائي سطح جي اجلاسن ۾ بہ پهچي (481)، انگريز دشمنيءَ جو اظهار ڪندو هو، سندس انهيءَ تحريڪ دوستيءَ ۽ انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزا بي ڀوڳڻي پيئي (482).

انهيءَ عرصي دوران جڏهن فلسطين ۾ عربن جي مٿان ڏکيا ڏينهن آيا, تہ سنڌ جي مسلمانن انهن واقعن تي شديد رد عمل ڏيکاريو. سن 1938ع ۾ جڏهن قمبر ۾ جلسو سڏايو ويو, ته مولانا عبدالڪرير صاحب ان ۾ شريڪ ٿي, بين الاقوامي سياست ۾ حصو وٺندي, فلسطين جي حق ۾ ڀرپور تقرير ڪئي(483).

پر سادر خلافت جي خاتمي کان پوءِ جڏهن مذهبي بنيادن تي "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" جماعتن آزاديءَ لاءِ هلچل شروع ڪئي، ته پاڻ "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين، ۽ ان جي جلسن ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو(484). اهڙيءَ طرح هن ديني خواه سياسي خدمتون ڪندي پنهنجي ڄمار پوري ڪئي.

مولانا عبدالكريم سمون

مولوي عبدالكريم ولد مولوي محمد هاشر سمون سن 1310هـ مطابق 1892ع دّاري ڳوٺ ڀڳڙا ميمڻ لڳ شهر سيراڻي ضلعي بدين ۾ ڄائو. پاڻ سجاول جي مدرسي "هاشميه" ۾ مولوي محمد اكرم هالائي ۽ مولوي فتح علي جتوئيءَ وٽ پڙهڻ کان پوءِ ٽوئن جي ڳوٺ تعلقي ماتلي ضلعي بدين ۾ مولوي علي محمد درس وٽ فقه ۽ تفسير جي تعليم وٺي فارغ ٿيو.

علر جي تحصيل کان پوءِ ڳوٺ باقر نظاماڻي، ڳوٺ مبين خاصخيلي، ڳوٺ گولاڙي، ڳوٺ پير محمد ٿيٻي لڳ تلهار ۽ ڳوٺ ڇٽي هاليپوٽي لڳ بدين ۾ ديني تعليم ڏنائين(485).

مولوي عبدالڪريم سمي "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان سياست ۾ پير پاتو. پاڻ ضلعي بدين ۾ تحريڪ طرفان سڏايل گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿي، هن ئي تحريڪ جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪيائين(486)، ان کان پوءِ عملي طرح سياست کان پري ٿي، صرف ديني خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو.

مولاناعبداللطيف دول

مولوي عبداللطيف ولد سانوڻ ڊول، دين پورتعلقي ٺل ضلعي جيڪب آباد ۾ پيدا ٿيو. قرآن مجيد ۽ فارسيءَ جي تعليم ڳوٺ جي مولوي محمد عظيم لاشاريءَ کان ور تائين. ان بعد عوديءَ ۾ مولانا نبي بخش، جنگل ۾ مولوي در محمد ڊول ۽ ٻچڙي ۾ مولوي احمد الدين وٽ پڙهيو، پر دستاربندي وري موٽي اچي عودي ۾ ڪيائين.

علمي فراغت كان پوءِ هن مختلف هنڌن جهڙوك، ڳوٺ عبدالغني شاه، دين پور، ٺل ۽ هاليجيءَ ۾ درس وتدريس جو سلسلو جاري رکيو(487). پاڻ تحرير ۽ تقرير جو به وڏو ماهر هو. سندس كي فتوائون ۽ "شرح اسماءالحسنيٰ" شايع ٿيل آهن(488).

مولوي عبداللطيف صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصو وٺندي. سياست ۾ گهڙيو، هن تحريك جي هر موڙ تي هڪ مخلص ۽ سرگرم ڪارڪن جي حيثيت سان پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏنيون.

"خلافت تحريك" دوران انگريزن جدّهن "امن سيا" قائم كرائي ۽ ان جي روح روان مولوي فيض الكريم ئارو شاهيءَ كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو لكارائي، خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت خلاف شايع كرايو. جنهن تي آزادي

واري جذبي هيٺ "خلافت تحريك" كي كامياب بنائڻ لاءِ انهيءَ "تحقيق الخلافت" رسالي خلاف جوابي كاروائي كندي، خلافتي عالمن پڻ فتوائون جاري كرڻ جو سلسلو شروع كري ڏنو. خلافتي عالمن جي ڏنل فتوائن مان كيترين جي مولانا عبداللطيف دول پڻ تصديق كئي (489).

ان کان سواءِ مولوي صاحب نه رڳو تحريڪ جي مالي مدد ڪئي(490)، پر پاڻ هن تحريڪ جي آواز کي عوام تائين پهچائڻ لاءِ هنڌين ماڳين وڃي جلسن ۾ به شرڪت ڪيائين(491).

"خلافت تحريك جي خاتمي كان پوءِ هن "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار كئي ۽ پنهنجين لياقتن سبب ضلعي جيكب آباد جي مشهور جمعيتي عالمن ۾ شمار ٿيڻ لڳو. سن 1931ع ۾ جڏهن هن جماعت طرفان "جمعيت المبلغين" ٺاهي ويئي تـ كيس انهيءَ جو نائب ناظر مقرر كيو ويو(492).

مولوي صاحب سن 1379هـ مطابق 1960ع ۾ وفات ڪئي(493).

مولانا عبدالوهاب لند بلوچ

مولانا عبدالرهاب ولد نورنگ خان لنڊ بلوچ سن 1320ه مطابق 1902ع ڌاري ڳوٺ سينگاري تعلقي بدين ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي فارسي ۽ عربيءَ جي تعليم بدين جي مدرسي "انوار العلوم" ۾ مولانا احمد ملاح کان ورتائين. ان کان پوءِ وڃي پير جهنڊي جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" ۾ داخل ٿيو. جتي سال کن عربيءَ جي تعليم وٺڻ کان پوءِ اچي سجاول جي مدرسي "دارالفيوض هاشميه" ۾ مولانا فتح علي جتوئي منطقيءَ وت ٻن سالن تائين پڙهيو. ان کان پوءِ سن 1924ع ۾ وڃي انڊيا جي مشهور مدرسي "دارالعلوم ديوبند" ۾ داخل ٿيو. جي مشڪوة شريف ۽ بزي فلسفه قديم

^{*}مولانا عبدالوهاب 27 بسمبر 1982ع تي پنهنجي انٽرويو دوران ٻڌايو ته ان سال مدرسي "دارالعلوم ديوبند" ۾ سنڌ ملڪ جا17 شاگرد تعليم وٺندا هئا، جنهن سبب ان وقت جو صدر مهتمر مدرسه ديوبند مولانا انور شاه ڪشميري نهايت خوش ٿيو ۽ چيائين ته: "هيترا سارا طالب علم سنڌ ولايت کان هتي ديوبند پڙهڻ آيا آهن." انهن سترهن مان مولانا عبدالوهاب صاحب جن چوڏهن جا نالا ٻڌايا، سي هئا:

¹⁻ مولانا محمد سعيد گوپانگ (بدين). 2- مولانا حبيب الله (ليڙهي)، 3- مولانا احمد پنهور(سكر)، 4- مولانا عبدالحق (؟) 5- مولانا شفيع محمد شيخ (لاڙكاڻو)، 6-مولانا محمد صالح راڄڙ (ميرپورخاص) 7- مولانا نواب الدين چانڊيو(غيبي ديرو _ لاڙكاڻو) 8- مولانا محمد حنيف (سكر)، 9- مولانا محبوب علي شاھ (سكر)، 10- مولانا عبدالرحير

مولانا محمد ابراهيم وت, شرح چغمني, قرآن شريف ۽ تفسير مولانا محمد ادريس كانڌيلويءَ وت, حديث جو كتاب ابودائود مولانا سراج الحق وت, ديوان حماسه ۽ ادب مولانا اعزاز عليءَ وٽ, بخاري شريف ۽ ترمذي شريف صدر مدرس مولانا سيد انور علي شاه كشميريءَ وٽ, فقه ۾ هدايه مولانا عزيز الله وٽ, منطق مولانا غلام رسول پٺاڻ وٽ, مقامات حريري مولانا شفيع محمد وٽ, مختصر معاني مولانا عبدالسميع وٽ, ۽ تفسير بيضاوي مولانا شبير احمد عثمانيءَ وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ مولانا صاحب دهليء جي مدرسي فتحپوريء ۾ ڇه مهينا تعليم ڏيڻ بعد واپس وطن وريو، ۽ مولانا احمد ملاح جي مشوري تي بدين جي مدرسي "انوار العلوم" ۾ پڙهائڻ ويٺو. جتي سانده ٻارهن سال انهيءَ خدمت سان گڏ. بدعتن جي پاڙ پٽڻ لاءِ توحيد جي تبليغ به كندو رهيو.

مولانا صاحب انهيءَ عرصي دوران بدين مان هڪ هفتيوار اخبار "حزب الله" بـ ڪڍي، جيڪا سن 1941ع تائين جاري رهي.

هن وطن جي آزادي واري جذبي هيٺ "ڪانگريس" جماعت ۾ شامل ٿي، پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ هن جماعت ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺندي، ان جي اهر اجلاسن ۾ شرڪت ڪيائين ۽ ڪيتري وقت تائين "ڪانگريس ڪاميٽي بدين" جو نائب صدر بہ ٿي رهيو.

اهڙيءَ طرح جڏهن "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو قيام عمل ۾ آيو ته مولانا صاحب ان ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪئي. پاڻ بدين جي ناميارن جمعيتي عالمن ۽ اڳواڻن مان هڪ هو. ۽ سن 1931ع کان وٺي اتان جي جمعيت جو نائب صدر ٿي رهيو (494). هن مکيه عهديدار جي حيثيت سان ڪيترن ئي اجلاسن ۾ شرڪت ڪئي. خاص طور تي ولايتي ڪپڙي جي بائيڪاٽ ۾ زوردار دليل پيش ڪري. سنڌي عوام کي ديسي ڪپڙي جي استعمال لاءِ آماده ڪندو هو(495).

ان کان سواءِ پاڻ "خاڪسار تحريڪ" ۾ به رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪيائين. جنهن ۾ کيس بدين ۽ ٽنڊي باگي جي تعلقن لاءِ "سالار مندوب" به مقرر ڪيو ويو هو. هن تحريڪ ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺڻ ڪري، نه صرف کيس جيل جي سزا ڀوڳڻي پيئي، پر هن محب وطن سنڌي عالم کي ڦٽڪا به هنيا ويا.

⁽ڏيپلو). 11- مولانا گل محمد (سکر) 12- مولانا غلام صديق (لاڙڪاڻو)، 13- مولانا محمد ابراهيم لنڊ (بدين)، ۽ 14- (آئون) مولانا عبدالوهاب لنڊ (بدين)

ان كان پوءِ جدّهن مسلمانن مذهب جي بنياد تي "كانگريس" كان عليحدگي اختيار كري، دّار پنهنجي جماعت "مسلم ليگ" ٺاهي، ته شيخ عبدالمجيد سنڌيءَ جي مشوري تي مولانا عبدالوهاب هن جماعت ۾ شامل ٿي، ملك جي ورهاڱي تائين پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو. ان كان پوءِ عملي طور تي سياست كان پري رهيو، ۽ صرف ديني خدمت كندي زندگي گذارڻ لڳو(496).

مولانا عبيدالله سندي

مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي ولادت تاريخ 12 محرم 1289هـ مطابق 10 مارچ 1872ع تي ڳوٺ چيانوالي ضلعي سيالڪوٽ جي سک خاندان ۾ ٿي(497).

جيئن ته مولانا صاحب جو والدكانئس اڳ هيء دنيا ڇڏي چڪو هو. ان ڪري سندس تعليم ۽ تربيت جو بندوبست هن جي والده كي ڪرڻو پيو. جنهن ضلعي ديري غازي خان ۾ اچي كيس ڄامپور جي پرائمري اسكول ۾ داخل كرايو (498). سن 1884 ع ۾ جڏهن پاڻ اڃا ٻارنهن ورهين جو هو، ته كيس پنهنجي هڪ هر كلاسي آريه سماجي دوست كان هڪ نومسلم شيخ عبدالله جو لكيل كتاب "تحفة الهند" مليو. ان كتاب جي مطالعي مان هن كي اسلام جي صداقت جو يقين ٿيڻ لڳو(499). ان كان پوءِ پرائمري اسكول كوٽل مغلان جي هندو شاگردن ذريعي كيس مولانا اسماعيل شهيد جو لكيل كتاب "تقوية الايمان" هٿ آيو، جنهن جي پڙهڻ كان پوءِ هو پنهنجو اباڻو ڌرم ڇڏي، اسلام ڏانهن راغب ٿيو(500).

مولانا عبيدالله سنڌي، جنهن جو اصل نالو بوٽا سنگه هو(501)، سو ڪوٽلر مغلان ۾ سنت ختنه ادا ڪرائي، ٿورن ڏينهن بعد پنجاب ڇڏي، اچي ڀرچونڊيء پهتو(502). جتي جناب حافظ محمد صديق جي هٿ تي اسلام قبول ڪيائين ۽ "تحفة الهند" جي مصنف جي نالي تي پنهنجو نالو عبيدالله رکيائين(503).

پاڻ ڪحه وقت کان پوءِ ڀرچونڊي ڇڏي، پهريائين بهاولپور جو رخ ڪيائين ۽ ان کان پوءِ دين پور هليو ويو، جتي مولوي عبدالقادر وٽ ابتدائي ڪتاب پڙهيائين (504). ان بعد وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، جتي شرح جامي مولانا حڪيم محمد حسن کان پڙهيائين. حڪمت ۽ منطق جا ڪتاب مولانا احمد حسن ڪانپوريءَ وت پڙهيو، بعد ۾ ڪجه وقت لاءِ مدرسه عاليه رام پور ۾ رهي، مولانا ناظر الدين وٽ پڙهڻ کان پوءِ ديوبند ۾ اچي شيخ الهند مولانا محمود الحسن وٽ تعليم ورتائين (505).

هن ئي عرصي دوران پهريائين گنگوه ۾ وڃي مولانا رشيد احمد گنگوهي ۽ وٽ پڙهيو، ۽ ان کان پوءِ دهليءَ وڃي مولانا نذير حسين کان تبرڪ طور چار سبق حديث جا پڙهي سند ورتائين(506).

قارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ پاڻ تاريخ 20 جمادي الثاني سن 1308ه مطابق 31 جنوري 1891ع تي سنڌ ۾ موٽي آيو(507). جيئن تہ هن جي طالب العلميءَ جي عرصي دوران ئي سندس روحاني رهبر ۽ مرشد جناب حافظ محمد صديق لاڏاڻو ڪري چڪو هو، تنهن ڪري هن کي ڀرچونڊيءَ بدران امروٽ شريف وڃڻو پيو. جتي کيس مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي شفقت ۽ مهرباني حاصل ٿي. مولانا تاج محمود صاحب هن کي هڪ ديني مدرسو قائم ڪري ڏنو ۽ تصنيف وتاليف جي ڪر ۾ آساني پيدا ڪري ڏيڻ لاءِ "محمود المطابع" نالي هڪ ليٿو پريس به قائم ڪري ڏني (508).

امروت واري زماني ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ کي درس وتدريس ۽ تصنيف وتاليف سان گڏ، تحقيق ۽ غور وفڪر ڪرڻ جو به موقعو مليو، اٺن سالن جي عرصي گذارڻ کان پوءِ وري هن کي پنهنجي استاد مولانا محمود الحسن جي سڏ تي لبيڪ چئي ديوبند وڃڻو پيو. پر پوءِ سنڌ جي ڌرتيءَ وري کيس پوئتي موٽڻ لاءِ مجبور ڪيو (509). مطالعي ۽ مشاهدي کان پوءِ مولانا صاحب زندگيءَ جي هن موڙ تي، عمل جي ميدان ۾ قدم رکندي، ڳوٺ پير جهنڊي ۾ مدرسي "دارالرشاد" جو بنياد رکيو(510).

مولانا عبيدالله سنڌي "دارالرشاد" ۾ پورا ڏه سال فردن جي تياري ۽ درس وتدريس جو ڪر ڪيو. جڏهن کيس يقين ٿيو ته هو پنهنجي نئين فڪر تي عمل ڪرائڻ لاءِ ڪيترن ئي نوجوانن کي هر خيال بڻائي چڪو آهي، تڏهن سنڌ ۾ اهو ڪر ٻين کي سونپي، پاڻ هند ۾ ساڳئي ٻج ڇٽڻ لاءِ روانو ٿي ويو(511).

مولانا صاحب پنهنجي استاد مولانا محمود الحسن جي تعاون سان سن 1327هـ مطابق 1909ع ۾ ديوبند ۾ "جمعيت الانصار" نالي هڪ جماعت قائم ڪئي، جنهن جو پاڻ سيڪريٽري ٿي ڪر ڪرڻ لڳو(512). ان کان پوءِ هن دهليءَ ۾ وڃي سن 1331هـ مطابق 1913ع ۾ "نظارة المعارف" نالي هڪ جماعت ٺاهي. هن تنظيمي تحريك دوران کيس حكيم اجمل خان، نواب وقارالملك، ڊاكٽر انصاري ۽ مولانا ابوالكلام سان گڏجي كر ڪرڻ جو موقعو مليو(513).

مولانا عبيدالله هن ئي عرصي دوران دهليءَ جي فتح پور مسجد ۾ "قاسر العلوم" نالي مدرسو قائر ڪيو. حقيقت ۾ هن مدرسي جو قيام بر "نظارة

المعارف" جي تحريك جو ئي نتيجو هو. انهيءَ جماعت جي مالي مدد سان شاگردن كي هر ماه پنجاه روپيا وظيفو ڏنو ويندو هو. مولانا صاحب هن مدرسي جي معرفت شاگردن ۾ قومي جذبي جو روح ڦوڪڻ شروع ڪيو. ان سلسلي ۾ اتي "موتمر الانصار" نالي هڪ شاگرد جماعت جو بنياد وڏائين.

جيئن ته ان وقت هندستان جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ انقلابي تحريڪن جو آغاز ٿي چڪو هو، ۽ انهيءَ سلسلي ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ کي به گرفتار ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي ويئي، تنهن ڪري کيس دهلي ڇڏي سنڌ ۾ اچڻو پيو(514). اهڙي طرح پاڻ پنجن سالن کان پوءِ وري "دارالرشاد" پير جهنڊي ۾ موٽي آيو.

سنڌ ۾ اچڻ کان اڳ مولانا محمود العسن اهو طئي ڪري چڪو هو ته مولانا عبيدالله کي هتي هندستان ۾ رهي گرفتار ٿيڻ کان بهتر آهي ته ٻاهر وڃي ڪر ڪرڻ گهرجي. جيترڻيڪ مولانا عبيدالله سنڌي ان جي برعڪس هن راءِ جو هو ته ٻاهر وڃي هٿيار کڻڻ يا حاصل ڪرڻ بدران هندستان ۾ ويهي ذهنن جي تربيت ڪجي. پر کيس پنهنجي استاد جي فيصلي کي قبول ڪرڻو پيو، ۽ افغانستان ڏانهن هجرت جي تياري ڪرڻ شروع ڪيائين.

مولانا عبيدالله سنڌي مڪمل تياري ڪرڻ کان پوءِ مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي تعاون سان (515). مولانا عبدالله لغاريءَ کي ساڻ ڪري آگسٽ 1915ع ۾ افغانستان ڏانهن هجرت ڪري ويو(516). پرديس ۾ پهچڻ کان پوءِ سڀ کان پهريائين کيس اتان جي علماء طبقي جي مخالفت سان منهن ڏيڻو پيو، جن کيس مذهبي ميدان ۾ پرکڻ ۽ پروڙڻ جي ڪرشش ڪئي. مولانا صاحب هن مسئلي مان جند ڇڏائي اڃا امير حبيب الله جي درٻار تائين مس پهتو ته فرنگي سرڪار کي سندس ملڪ ڇڏي وڃڻ جون خبرون پهتيون. ان ڪري انگريز سرڪار سندس منصوبي کي ناڪام بنائڻ لاءِ هندستان مان ڪي جڙتو عالم افغانستان ڏانهن موڪلي، اتان جي حڪرمت کي باور ڪرايو ته مولانا سنڌي انگريزن لاءِ جاسوسي ڪرڻ واسطي هندستان ڇڏي آيو آهي. * هن نئين سازش کي منهن ڏيڻ لاءِ کيس وتي طورتي پنهنجي گرفتاريءَ جي آڇ ڪرڻ پيئي. افغانستان حڪومت سندس ئي

انهيءَ سلسلي ۾ مولانا صاحب حيدرآباد ضلعي جي هڪ پير ڏانهن اشارو ڪيو, جنهن جو
 تعلق ڪابل سان به هو, پر ان جا تفصيل نه ڏنا. (ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي, ماه آڪٽوبر 1944ع ص15).

تجويز تي کيس نظربند رکي سموري معاملي جي ڇنڊڇاڻ ڪئي. ۽ آخرڪار بهتان جي ڪوڙي ثابت ٿيڻ بعد کيس آزاد ڪيو ويو.

افغان حكومت جي اعتماد حاصل كرڻ كان پوءِ مولانا سنڌي نر رڳو فرنگين خلاف منظر تحريك هلائڻ جو آغاز كيو، پر ان سان گڏ افغانستان جي ملكي سياست تي بہ اثر انداز ٿيڻ لڳو. هن صاحب جي حلقي جي كوششن سان ئي امير حبيب الله جي وفات كان پوءِ سندس پٽ امان الله خان تخت تي ويٺو(517). ان زماني ۾ جڏهن افغان - انگريز جنگ لڳي نہ مولانا سنڌي نه رڳو جنگي منصوبن جي تشكيل كئي، پر كنهن حد تائين جنگ جي ميدان ۾ عملي طرح به حصو ورتو. جنهن جي كري انگريزن كي منهن جي كائڻي پيئي. مولانا صاحب جيترو وقت جنهن جي كري انگريزن كي منهن جي كائڻي پيئي. مولانا صاحب جيترو وقت افغانستان ۾ رهيو. اوترو وقت امير امان الله خان سك ۽ سكون سان حكومت هلائي. ۽ سندس حكمرانيءَ جي پڄاڻي تڏهن ٿي، جڏهن مولانا سنڌي ماسكو روانو ٿي چكو هو **

كابل واري عرصي دوران مولانا صاحب فرنگين خلاف جيكا منظر تحريك هلائي، تنهن جون خصوصيتون يا مكيه رخ هن طرح هئا:

- هن اتي راجا مهندر پرتاب ۽ راس بهاري گوس سان گڏجي عارضي آزاد هند سرڪار قائر ڪئي(518). ۽ انهيءَ حڪومت جي هٿ هيٺ "جنود ربانيه" نالي هڪ فوج تائير ڪئي(519).
- هن ريشمي رومالن جي هڪ ڪمپني کولي ۽ ريشمي رومالن کي رابطي جو ذريعو بڻائي هندستاني مرکزن سان خط وڪتابت ڪئي(520).
- iii. هندستان جي مسئلي کي سمجهائڻ ۽ مقبول بنائڻ لاءِ اتي "ڪانگريس

خود امير امان الله خان ئي مولانا سنڌيءَ کي هڪ "فوجي ماهر" طور قبول ڪيو، ۽ پنهنجي جرنيل نادرخان کي سندس ماتحت ڪر ڪرڻ لاءِ حڪر جاري ڪري ڇڏيا هئا. هڪ انگريز هن
 ڳالهه چوڻ تي مجبور ٿيو ته هيءَ ڪاميابي امير امان الله جي نه پر مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي آهي. (ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، آگسٽ _ سيپٽمبر 1952ع ص12).

[&]quot; مولانا صاحب جي كوشش سان امير امان الله حكمران ٿيو. مولانا كيس تاكيد كيو هو ته هو كريو ويو. تر هو كريو ويو. تائين افغانستان كان ٻاهر نه رچي. پر جڏهن مولانا صاحب روس هليو ويو. تر امير امان الله انگلينڊ ڏانهن رخ ركيو. ۽ پويان سندس تخت تي قبضو كيو ويو. (ڏسو: ماهوار "توحيد" كراچي، ڊسمبر 1948ع صر 1.)

جماعت" ٺاهيائين(521)٠

نرنگين خلاف ڀرپور تعاون حاصل ڪرڻ لاءِ روس ۽ جرمنيءَ سان رابطو قائر
 ڪيائين(522)٠

٧٠ عالر اسلام جون همدرديون حاصل كرڻ لاءِ قسطنطنيه جي شيخ الاسلام كان
 ١نگريزن خلاف بغاوت كرڻ جي حق ۾ فتوي وٺي هندستان موكليائين(523)٠

 افغانستان حكومت كي هندستان تي چڙهائي كرڻ جي صورت ۾ تركيءَ كان فرجي امداد حاصل كري ڏيڻ جي كوشش كيائين(524)٠

جيئن ته پهرين مهاڀاري لڙائيءَ جي پيدا ڪيل اثرن سبب ترڪي ۽ جرمني ڪنهن به ڀروسي جوڳي امداد ڪرڻ جي قابل نه رهيا هئا، ۽ "ريشمي رومال تحريڪ" جو به راز کلي چڪو هو، تنهن ڪري مولانا صاحب انهيءَ سلسلي ۾ سن 1922ع ۾ ڪابل ڇڏي روس هليو ويو(525). جتي اك مهينا کن ماسڪو ۾ ڪميونسٽ حڪومت جو شاهي مهمان ٿي رهيو.

بعد ۾ مولانا سنڌي روس کي الوداع چئي وڃي استنبول پهتو. ان وقت ترڪي، وقت ۽ حالتن جو نئون چولو پهري چڪي هئي، ۽ ان جي اقتدار واري افق تي ڪمال اتاترڪ جي قيادت جو سج چمڪي رهيو هو. مولانا صاحب کي ترڪيءَ ۾ ٽي سال گذاري پنهنجي منصوبي جي مهاڀاري پهلوئن تي روشني وجهڻي پيئي(526).

سن 1345ه مطابق 1927ع ۾ مڪي شريف ۾ "مؤتمر اسلامي" جي گڏجاڻي ٿيڻي هئي، ۽ مولانا سنڌي ان موقعي کي غنيمت ڄاڻي اٽليءَ کان ٿيندو اچي مڪي شريف ۾ پهتو(527). جيئن ته "مؤتمر اسلامي" سندس پهچڻ کان اڳ ئي ختر ٿي چڪي هئي، ۽ مڪي جي نئين سرڪار پنهنجي اقتدار وارين حدن ۾ هر قسم جي سياسي سرگرميءَ تي بندش وجهي ڇڏي هئي، تنهن ڪري مولانا صاحب کي علمي دنيا ۾ ڪم ڪرڻ جي گنجائش نظر آئي (528). ان کان پوءِ هن لڳاتار ٻارهن سال خاند دنيا ۾ ڪم ڪرڻ ۾ ويهي حديث ۽ قرآن جو درس ڏنو. هن ئي عرصي دوران مولانا صاحب درس وتدريس سان گڏ ڪن هندستاني عالمن جي، انقلابي بنيادن تي ذهني تربيت به ڪندو رهيو.

انهيءَ عرصي دوران هندستان جون حالتون بدلجي چڪيون هيون. سنڌ بعبئيءَ کان الڳ ٿي پنهنجي صوبائي خودمختياري حاصل ڪري ورتي هئي، تنهن کان الڳ ٿي پنهنجي صوبائي جي لاڳو ٿيڻ کان پوءِ سڄو هندستان "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" جي ٻن خانن ۾ ورهائجي چڪوهو. فرنگي سرڪار هندستان ڇڏڻ جا سانباها ڪري

رهي هئي. انهن حالتن کي آڏو رکندي ڪانگريس ۽ مولانا صاحب جي مداحن طرفان سندس هندستان ڏانهن واڳ ورائڻ جي تحريڪ هلائي ويئي(529).

وقت جي انگريز سرڪار ڪن شرطن سان مولانا سنڌيءَ تان هندستان اچڻ جي پابندي هٽائي ڇڏي، ۽ اهڙيءَ طرح پاڻ چوويهن ورهين جي جلاوطنيءَ بعد تاريخ 15 محرم الحرام 1358هـ مطابق 7 مارچ 1939ع تي سنڌ ۾ موٽي آيو(530).

مولانا سنڌيءَ جي واپسيءَ کيس گلن جي سيج تي ڪو نه ويهاريو. بلڪ ڳجهيءَ طرح مٿس سي، آءِ، ڊي جا پهرا بيهاريا ويا، ۽ ڪن عالمن کي ڏن ۽ دولت جي سهاري سان خريد ڪري، مولانا صاحب جي خلاف ڪر ڪرڻ تي آماده ڪيو ويو.* مگر مولانا سنڌي وقت ۽ حالتن کان بي نياز ٿي، پنهنجي فڪر جو پروانو کڻي هندستانين کي آڃڻ لڳو.

مولانا صاحب 10 بسمبر 1939ع تي "جمنا، نربدا، سنة ساگر پارٽي" تشڪيل ڏني ۽ ان کي پوري ننڍي کنڊ ۾ مقبول بنائڻ لاءِ هندستان جو دورو ڪيو. ان سلسلي ۾ هن بزرگ سياستدان نومبر 1940ع ۾ دهليءَ ۾ "بيت الحڪمت" نالي هڪ ادارو قائم ڪيو(531). سنڌ ۾ واپس اچي "ساگر انسٽيٽيوٽ"(532) ۽ "جمعيت الطلبه" قائم ڪئي(533).

مولانا عبيدالله سنڌي وقت ۽ حالتن جي تڪڙيءَ تبديليءَ کي نظر ۾ رکندي، پنهنجي ڄمار جا باقي ڏينهن عوام کي بيداريءَ جي پيغام ڏيڻ ۾ گذاريا. پر ڌڻي تعاليٰ کي ڪجه ٻيو منظور هو. سخت محنت ڪرڻ سبب سندس طبيعت روزبروز ويئي خراب ٿيندي، ۽ آخرڪار تاريخ 2 رمضان سن 1363ه مطابق 22 آگسٽ 1944ع تي جلاوطنيءَ کي جواني نذر ڪندڙ، ۽ آخر ۾ ٻڍاپو به عوام تان قربان ڪندڙ هيءُ عظيم انسان، هميشه لاءِ هيءَ دنيا ڇڏي هليو ويو(534).

^{*} ايتري قدر جو مولانا صاحب جي عزيزن مان هڪ مولوي احمد علي لاهوري سندس خلاف ٿي بيٺو، ۽ مولانا بابت فتوائون جاري ڪيائين. ان کان سواءِ فرنگي سرڪار ماڻهن کي بدظن ڪرڻ لاءِ. اهو مشهور ڪيو تہ مولانا عبيدالله سنڌي ذهني توازن وڃائي ويٺو آهي. (تفصيل لاءِ دَسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، آڪ َ وبر 1944ع ص 17، ۽ ماهوار "توحيد"، ڪراچي، مئي 1949ع ص 6).

مولانا عبيدالله لاشاري

مولانا عبيدالله ولد قيصر لاشاري ڳوٺ ٻڍاپور تعلقي واره ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. قرآن شريف جي تعليم مولوي واحد بخش ۽ حاجي مٺل شيخ وٽ تعلقي قمبر ۾، ۽ فارسي مولوي فضل الحق وٽ ڳڙهي خير محمد ڪرٽيو ۾ پڙهيو. ان کان پوءِ پارو ديرو تعلقي واره، پاٽ شريف، پير جهنڊو، ٺٽو، سجاول، ڀانڊوقبو ۽ مظهر العلوم کڏي ۾ به پڙهيو(535). ان بعد مدرسه "دارالسعادت" گوروپهوڙ تعلقي شڪارپور ۾ مولانا غلام مصطفي قاسميءَ کان هيڪر، ۽ مدرسه "بيت الحڪمت" ميرپور ڀٽي ۾ ٻيهر تعليم وئي دستاربند ٿيو.

ان كان پوءِ دارالعلوم ديوبند پهچي پهرئين سال ۾ مولانا حسين احمد مدنيءَ وٽان حديث جو دورو پورو كيائين، ۽ ٻئي سال ۾ ادب ۽ فلسفي جي وڌيڪ تعليم دارالعلوم مان ئي وٺي واپس سنڌ وريو (536).

ديوبند كان موٽڻ بعد مٺياڻي، پير جهنڊي، سعيدآباد، نواب شاهر، ٽنڊي آدم ۽ رتيديري ۾ پڙهائڻ كان پوءِ "مظهر العلوم" كڏي كراچيءَ ۾ صدر مدرس ۽ شيخ الحديث ٿي درس و تدريس ڏنائين.

مولانا صاحب پنهنجي ڳوٺ ٻڍاپور تعلقي واره ۾ مولانا حسين احمد مدنيءَ جي نالي "دارالعلوم حسينيه" مدرسو قائم ڪري، اتي به تدريس جو سلسلو جاري رکير(537).

آخر ۾ پوليس هيڊڪوارٽر ڪراچيءَ جي مسجد جو خطيب ۽ مدرس ٿي رهيو، ۽ اتي ئي پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين(538).

مولانا عبيدالله لاشاريء ان وقت سياست ۾ پير پاتو، جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ سن 1939ع ۾ واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين. پاڻ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي سياسي صحبت اختيار ڪري، ان جي ٺاهيل پارٽيءَ ۾ شامل ٿي ڪر ڪرڻ لڳو(539).

سن 1944ع ۾ حيدرآباد جي تاريخي قلعي ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" پاران ساليانو جلسو قاري محمد طيب صاحب مهتمر دارالعلوم ديوبند جي صدارت هيٺ ٿير(540). ته انهيءَ دوران سنڌ جي طالب علمن کي گهرائي، انهن جو ڌار جلسو ڪيو ويو. ان جلسي جي صدارت مولانا عبيدالله سنڌي کان ڪرائي "جمعيت الطلباءِ" سنڌ جو قيام عمل ۾ آندو ويو، جنهن ۾ مولانا عبيدالله لاشاريءَ کي "جميعت الطلباء

سنڌ" جو صدر مقرر ڪيو ويو هو.

پاڻ ان کان پوءِ بـ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد جاري رکيائين (541).

مولانا عبيدالله لاشاري تاريخ 20 صفر سن 1395هـ مطابق 4 مارچ 1975ع تي دل جي دوري پوڻ سبب رحلت ڪري ويو(542).

مولانا عزيز الله

مولوي عزيز الله ولد قاضي عبدالله سن 1314هـ مطابق 1896ع ڌاري ڄائو. ابتدائي ديني تعليم ٺيڙهيءَ مان ورتائين. ان کان پوءِ ڪجهـ وقت هاليجي ۽ پير جهنڊي جي مدرسن مان پڙهي دستاربند ٿيو.

علمي فراغت بعد مولوي صاحب درس وتدريس جو آغاز كيو، ۽ پوري عمر انهيءَ شغل ۾ صرف كيائين(543).

مولوي عزيز الله صاحب پنهنجي سياسي زندگي، جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كئي. پاڻ ان جو پر خلوص ۽ سر گرم كاركن ٿي رهيو. جڏهن امن سڀائي عالمن طرفان خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت كي مسخ كرڻ لاءِ "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو شايع ٿيو. ته خلافتي عالمن به ان جو جواب لكي ورهايو، جنهن جي مولوي عزيز الله صاحب تائيد كري پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(544).

"خلافت تحريك" كان پوءِ پاڻ "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو، ۽ ان جو سر گرم كاركن رهي انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو (545).

مولوي صاحب سن 1395هـ مطابق 1975ع ۾ لاڏاڻو ڪري ويو(546).

مولانا عزيز الله جروار

مولوي عزيز الله ولد خان محمد جروار سن 1339ه مطابق 1921ع ۾ ڳوٺ گل محمد جروار تعلقي شهداد ڪوٽ ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. قرآن شريف ۽ ابتدائي سنڌي پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مولوي محمد پٺاڻ وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ مولانا فتح محمد سيرانيءَ وٽ ميروخان ۾ پڙهڻ ويٺو، ۽ عربيءَ جي تعليم ساڳئي ئي مدرسي ۾ مولانا خوش محمد صاحب ميروخانيءَ کان ورتائين. ڪجه وقت لاءِ پاڻ ضلعي رحيم يار خان ۾ به وڃي پڙهيو، ۽ ان بعد موٽي اچي مدرسه "دارالهديٰ" ٺيڙهيءَ ۾ داخل ٿيو (547). آخر ۾ ڳوٺ گوري پهوڙ جي مدرسي "دارالسعادت" تعلقي شڪارپور ۾ مولانا عبدالحڪيم وٽ پڙهيو ۽ اتي ئي تحصيل جا آخري ڪتاب: منطق، فلسفه، ادب ۽ حديث مولانا غلام مصطفيٰ قاسميءَ وٽ پڙهي دستاربندي ڪيائين. ان کان اڳ هن شاگرديءَ واري ئي دور ۾ پنهنجي استاد سان گڏ پير جهنڊي جي "بيت الحڪمت" ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي خدمت ۾ قرآن مجيد ۽ فلسفه شاه ولي الله جي تعليم حاصل ڪري ورتي،

علمي فراغت كان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ عربي مدرسو قائم كيائين، جتي شاه ولي الله جو فلسفو پڻ پڙهايو ويندو هو. انڊونيشيا جو هڪ نوجوان پروفيسر ارشد جيڪو مولانا سنڌيءَ جو معتقد ۽ شاگردن جو شاگرد هو، ان كي گهرائي پاڻ وٽ پرنسيپال كري ركيائين. هن مدرسي ۾ ٻهراڙيءَ جي ڇوكرن ۽ ڇوكرين لاءِ انگريزي تعليم جو پڻ انتظام كيو ويو هو(548).

مولانا عزيز الله جروار سن 1937ع ۾ "جمعيت العلماءِ هند" ۾ شموليت اختيار ڪئي ۽ ان جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. تاريخ 4-5-6 ۽ 7 مئي 1945ع تي جڏهن سهارنپور يو، پي ۾ هن جماعت جو جلسو ٿيو، ته هن به مولانا غلام مصطفيٰ قاسميءَ جي اڳواڻيءَ هيٺ وڃي ان ۾ شرڪت ڪئي.

ان كَان سواءِ پاڻ "كانگريس" ۾ به رهي كر كيائين ۽ "كانگريس كاميٽي ڳوٺ گل محمد جروار" جو صدر ۽ "كانگريس كاميٽي لاڙكاڻو" جو كيتري وقت تائين ميمبر ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح "جمعيت العلماءِ سنڌ" سان به وابست رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پٽوڙيندو رهيو.

سن 1944ع مر حيدرآباد واري قلعي مر مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي صدارت هيٺ سنڌ جي طالب علمن جو هڪ جلسو ٿيو، جنهن مر "جمعيت الطلباء سنڌ" جو قيام عمل مر آيو. مولانا عزيز الله جروار کي هن شاگرد جماعت جو "جوائنٽ سيڪريٽري مقرر ڪيو ويو هو.

ان بعد "هاري ڪاميٽيءَ" ۾ سرگرميءَ سان حصر ورتائين ۽ ڪامريڊ حيدربخش جي وفات کان پوءِ سالن جا سال "سنڌ هاري ڪاميٽيءَ" جو صدر بـ ٿي رهيو. ان عهدي تي فائز رهندي سنڌ جي غريب ۽ ڏتڙيل هارين کي سندن حقن وٺي ڏيڻ لاءِ جدوجهد جاري رکيائين. جنهن جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزا بـ ڀوڳڻي پيئي(549).

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ جي خاتمي بعد واپس سنڌ وريو.

۽ اچي "جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين. تہ مولانا عزيز الله جروار بہ ان ۾ شموليت اختيار ڪري, پنهنجون سياسي خدمتون جاري رکيون.

مولانا صاحب جو كن قومي ڀائرن سان اختلاف پيدا ٿي پيو، ان كري هن پنهنجو اباڻو ڳوٺ گل محمد جروار ڇڏي وڃي، پني عاقل جي ڀر ۾ عزيز آباد نالي ڳوٺ قائر كيو ۽ اتي سكونت اختيار كئي. پاڻ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جو وڏو پروانو هو ۽ ان جي وفات تائين سندس خدمت كندو رهيو. اڳتي هلي هن زمينداري ۽ ٺيكيداريءَ جو پيشو اختيار كيو ۽ ان مان جيكي كجه كمايائين، سو هي مرد محاهد پنهنجي استاد مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي پيرويءَ ۾ پنهنجي غريب ڀائرن ۾ ورهائيندي، پاڻ اهائي حضرت ابوذر واري زندگي گهاريندو رهيو(550).

مولانا عطاءُ الله پناڻ

مولانا عطاءُ الله ولد نور محمد پٺاڻ تعلقي ٺل ضلعي جيڪب آباد جو ويٺل هو(551). ابتدائي تعليم مولانا محمد اسماعيل عوديءَ کان ورتائين. ان بعد ديوبند ويو. جتى مظفر ننگر ۾ به تعليم ورتائين ۽ اتان ئي فارغ التحصيل ٿيو.

على فراغت كان پوءِ واپس وطن وريو۽ اچي ڏکڻ سنڌ ۾ رهڻ لڳو. پاڻ مختلف جاين تي پڙهايائين، ۽ ڪجه سال ٽنڊي الهيار ۾ خطيب بہ ٿي رهيو. ان كان پوءِ گهڻو عرصو ميرپورخاص شهر ۾ گذاريائين، ۽ آخر ۾ اچي مولانا نور محمد وٽ سجاول ۾ رهي پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين(552).

مولاناً عطاء الله صاحب "خلافت تحريك" مرحصي وٺڻ سان سياست ۾ پير پاتو. پاڻ هن تحريك ۾ هڪ پرخلوص ۽ سرگرم كاركن جي حيثيت سان بهرو ورتائين.

انگريزن خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت کي مسخ ڪرڻ لاءِ جڏهن مولوي فيض الڪريم ٺارو شاهيءَ کان "تحقيق الخلافت" نالي فتريٰ جو هڪ رسالو شايع ڪرايو تـ خلافتي عالمن بـ جوابي ڪاروائي ڪندي ان جو رد لکيو. جنهن جي مولانا عطاءُ الله پڻ تصديق ڪئي(553).

مولانا صاحب تحريك جي جلسن ۾ نه صرف شريك ٿي انگريزن خلاف كر كندو هو (554), پر "خلافت تحريك" جي جلسن جي صدارت به كيائين(555).

ان كان سواءِ تحريك كي كامياب بنائڻ واسطي پنهنجي وت آهر. ان جي مالي

^{*} مولوي صاحب هن وقت وفات كري چكو آهي.

مدد به کندو هو(556).

خلافت جي خاتمي کان به ۽ پاڻ "جمعيت العلماءِ هند" جي سياسي ميدان تان مولانا محمد صادق کڏي واري، مولانا عبدالحق رباني، ۽ مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ جي رفاقت ۾ انگريز سامراج خلاف ڪر ڪيائين، جنهن جي پاداش ۾ کيس جيل جو منهن به ڏسڻو پيو(557).

جڏهن "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو قيام عمل ۾ آيو ته پاڻ ان ۾ به رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪيائين. مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي مٽيارين واري تاريخي اجلاس ۾ شريڪ ٿيو(558). ان کان سواءِ ڏکڻ سنڌ ۾ هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿي، انگريزي ڪپڙي پهرڻ جي مخالفت ۾ ۽ ديسي ڪپڙي جي استعمال لاءِ وڃي سنڌي عوام ۾ ڀرپور تقريرون ڪندو هو(559).

جڏهن "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ" شروع ٿي ۽ "سنڌ آزاد جماعت" ٺهي تہ کيس هن جماعت جي ماتلي شاخ جو سيڪريٽري مقرر ڪيو ويو (560). انهيءَ عهدي تي فائز رهي، سنڌ جي آزاديءَ تائين پاڻ پتوڙيائين.

مولانا عطاء الله صاحب تاريخ 7 جمادي الثاني سن 1402هـ مطابق 3 مارچ 1982 ع تي رحلت ڪري ويو(561).

مولانا سيد علي اكبر شاه

مولانا سيد حاجي علي اكبر شاه سن 1319ه مطابق 1901ع ڌاري ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم پنهنجي والد كان ورتائين. ان بعد ڳوٺ گاهي مهيسر لڳ ميهڙ ۾ مولوي عبدالكريم ويروي ۽ مولانا عبدالوهاب وٽ پڙهڻ كان پوءِ "مدرسة الاسلام" ميهڙ ۾ به كجه وقت پڙهيو.

علمي فراغت كان پوءِ ميهڙ جي جامع مسجد جو پيش امام بڻيو(562). انهيءَ عرصي دوران معاشري جي اصلاح لاءِ "انجمن اصلاح المسلمين" شاگردن جي تنظيم "ينگ مسلم اسوسيئيشن" (Young Muslim Association). جامع مسجد ۾ لائبريري، ريڊنگ روم ۽ نائيٽ اسڪول قائم ڪيائين.

سنڌي زبان جو اديب ۽ رنگين شاھ صاحب پنهنجي دور جو پرجوش خطيب، سنڌي زبان جو اديب ۽ رنگين اسلوب جو مالڪ ٿي گذريو آهي. کيس شعر وشاعريءَ سان به شغف هو ۽ سندس ڳچ ڪلام اخبارن ۽ رسالن، خاص طور تي تہ ماهي مهراڻ ۾ شايع ٿي چڪو آهي.

سن 1923ع ۾ جڏهن "شڌي" ۽ "سنڳٺن" جون تحريڪون شروع ٿيون. تہ هن انهن جو ڀرپور مقابلو ڪيو.

پاڻ سن 1927ع ۾ جامع مسجد ميهڙ سان گڏ هڪ عربي مدرسو بہ تعمير ڪرايائين(563).

سن 1940ع ۾ سندس ئي ڪوششن سان حيدرآباد شهر ۾ "آل سنڌ عربي ڪانفرنس" سڏائي ويئي. ۽ ان ۾ ڏنل تجويزن جي روشنيءَ ۾ "جامع عربيه" جي تشڪيل ڪئي ويئي، جنهن جو پاڻ اعزازي سيڪريٽري ٿي رهيو(564).

مولانا سيد علي اكبر شاه لاڙڪاڻي ۾ سڏايل پهرين "خلافت ڪانفرنس" ۾ شريڪ ٿي، پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. ان بعد خلافت ڪاميٽي ميهڙ جو سيڪريٽري ٿي ڪر ڪيائين، ۽ ان سان گڏ تحريڪ جي مالي مدد بي ڪندو هو(565).

سن 1940ع ۾ "آل انڊيا مسلم ليگ" جڏهن پاڪستان جو ٺهراءِ پاس ڪيو. تہ ان کان پوءِ مولانا صاحب "آل انڊيا مسلم ليگ" ڪاميٽيءَ جي ميمبر جي حيثيت سان پاڪستان جي ٺاهڻ لاءِ هر خيال عالمن ۽ ساٿين سان گڏجي ڪو ششون ور تيون. انهيءَ سلسلي ۾ تاريخ 25 مئي 1941ع تي سلطان ڪوٽ ۾ "جمعيت العلماءِ اسلام" جي تيام لاءِ عالمن جي گڏجائي ٿي. جنهن ۾ شريڪ ٿيو. ۽ "مسلم ليگ" جي حمايت ڪيائين(666). پاڻ "آل انڊيا مسلم ليگ" جي مقبول ترين اڳواڻن مان هڪ هو. سن ڪيائين (566). پاڻ "آل انڊيا مسلم ليگ" جي ميثيت سان پوري ننڍي کنڊ ۾ پهرئين نمبر تي ڪاميابي حاصل ڪيائين (567). شاه صاحب "مسجد منزل گاه" واري واقعي ۾ بي پهنهنجيءَ جماعت سان ڀرپور حصو ور تو (568).

سيد علي اكبر شاه سن 1389ه مطابق 1969ع ۾ هيءُ جهان ڇڏي ويو(569).

مولانا علي شير

مولوي علي شير جي ولادت سن1298ه مطابق 1881ع ذاري لكپور، تعلقي اوباڙي ضلعي سكر ۾ ٿي. اول كان وٺي آخر تائين ديني تعليم جي تكيمل راڄنپور ۾ كيائين. فارغ التحصيل ٿيڻ كان پوءِ پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ ديني درسگاه قائم كري

قارع التحصيل مين كان پوءِ پنهنجي ئي ٻوٺ ۾ ديني درسكاه قائم كرې تعليم ڏيڻ لڳو (570).

مولوي على شير پنهنجي سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كيو. پاڻ هن تحريك جي سرگرم كاركنن مان هك هو. اتر سنڌ ۾ هن تحريك جي نہ صرف جلسن ۾ شركت كيائين(571)، پر ان جي مالي مدد به كندو هو (572). ان كان سواءِ هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ خلافتي عالمن جڏهن فتوائن

جاري ڪرڻ جو سلسلو شروع ڪيو تہ مولانا علي شير به خلافتين جو ساٿ ڏيندي ڪيترين ئي فتوائن جي تصديق ڪئي (573).

مولاناً علي شير صاحب "خلافت تحريك" سان گذ "جمعيت العلماء" جي ضلعي الجواڻن مان هك هو. پاڻ كيترو وقت ضلعي سكر جي "جمعيت العلماء" جو نائب صدر ليي رهيو (574)، ۽ ان عهدي تي فائز رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ كر كيائين.

مولانا صاحب سن 1361ه مطابق 1942ع مر وفات كئي (575).

مولانا علي محمد مهيري

مولانا علي محمد ولد حافظ دّڻي پرتو مهيري ڳوٺ بجاري تعلقي گولاڙچي ضلعي بدين ۾ ڄائو. قرآن شريف حافظ محمد نونداڻيءَ وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ فارسي مخدوم عبدالرئوف نورنگ زاده، حافظ احمد ميمڻ (576)، ۽ آخر ۾ پنهنجي عزيز مولوي فتح محمد مهيريءَ وٽ پڙهي پوري ڪيائين (577)، ان کان پوءِ عربيءَ جي تعليم مولانا حافظ احمد ميمڻ، مولانا حامد الله ۽ مولانا محمد سليمان ٻنويءَ وٽ پڙهي درس نظاميءَ جي تڪميل ڪيائين.

علمي فراغت كان پوءِ ڳوٺ بجاري شريف ۾ تدريس جو سلسلو شروع كيائين. ان كان پوءِ ڳوٺ ٻيلي ۾ وڃي مولانا حامد الله صاحب جي صحبت ۽ تربيت هيٺ شرعي مسئلا حل كندو رهيو.

مولانا صاحب شعر وشاعري ۽ لکڻ پڙهڻ سان بہ شغف رکندو هو. ۽ سندس تصنيف ڪيل ڪتابن مان: 1. ديوان علي. 2. تفسير سوره انا فتحنا، 3. سوانح شيطان، 4. مجموعه فتاويٰ، 5. ترجمو ناول شيخ شبلي، ۽ 6. منظوم ترجم قصيده برده ذكر لائق آهن (578).

مولانا علي محمد مهيري صاحب "خلافت تحريك" پر شامل ٿي سياست پر قدم ركيو، ۽ ڏكڻ سنڌ پر هن تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. پاڻ خلافتي عالمن طرفان امن سيائين جي خلاف جاري كيل فتوائن جي پڻ تصديق ۽ تائيد كري، پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت ڏنائين (579).

تلافت تحريك سان گڏ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ هند" سان وابست رهيو. سنڌ ۽ هند جي عالمن جڏهن" ترڪ موالات" تي عمل ڪرڻ لاءِ هڪ گڏيل فتويٰ جاري ڪئي ته مولانا مهيريءَ وطن جي آزاديءَ خاطر انهيءَ فتويٰ جي تائيد ڪئي(580).

ان کان پوءِ جڏهن مسجد منزل گاه جو واقعو پيش ٿيو ۽ انهيءَ مسئلي کي مسلم

ليگ پنهنجي هٿ ۾ کنيو تہ مولانا صاحب به انهيءَ جماعت سان ساٿ ڏيندي, انهيءَ هلچل ۾ ڀرپور حصو ورتو .(581).

پاڻ تاريخ 21 شعبان.سن 1367ھ مطابق 29جون 1948ع تي الله کي پيارو ٿي ويو (582).

مولانا على محمد كاكيپوتو

مولانا علي محمد ولد بهادر خان ڪاڪيپوٽو سن 1317ھ مطابق 1900ع ڳوٺ مارون ڪاڪيپوٽي تعلقي ڳڙهي ياسين ضلعي شڪارپور ۾ پيدا ٿيو (583).

قرآن پاڪ ۽ فارسيءَ جي ابتدائي تعليم پنهنجي چاچي آخوند ميان غلام رسول کان ورتائين (584). ان کان پوءِ ڳوٺ سنهڙي ۾ مولانا محمد ڪامل وٽ پڙهڻ لاءَ ويٺو. جتان پوءِ مولانا مير محمد جي خاص شاگرد غلام الرسول وٽ ڳوٺ ٻيڙي چانڊيي ۾ پهچي، شرح جامي ۽ ٻيا ڪتاب پڙهڻ شروع ڪيائين، ۽ ان کان پوءِ وڌيڪ علمي اڄ لاهڻ لاءِ ڪورسليمان تعلقي قمبر ۾ مولانا عبدالڪريم ڪورائيءَ وٽ پهتو (585). جنهن وٽ گهڻو عرصو رهڻ کان پوءِ پنجاب ڏانهن هليو ويو. جتي رياست بهاولپور ۾ ڪوٽ چنيءَ ۾ مولانا حبيب الله وٽ ڪجه وقت رهي واپس سنڌ وريو (586). آخر ۾ وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، جتي مولانا حيسن احمد مدنيءَ وٽ تعليم مڪمل ڪري، وڃي دهليءَ جي طبيہ ڪاليج مان حڪمت جي سند حاصل ڪيائين. ان مڪمل ڪري، وڃي دهليءَ جي طبيہ ڪاليج مان حڪمت جي سند حاصل ڪيائين. ان ورتائين، ۽ آخر ۾ پنجاب يونيورسٽيءَ طرفان اورينٽل ڪاليج لاهور جو فيلو مقرر ٿيو ورتائين، ۽ آخر ۾ پنجاب يونيورسٽيءَ طرفان اورينٽل ڪاليج لاهور جو فيلو مقرر ٿيو

لاهور جي قيام دوران مولانا علي محمد صاحب داكٽر محمد اقبال جو استاد بڻيو. داكٽر صاحب كي قديم فلسفي تي يورپ ۾ ليكچر ڏيڻو هو. جنهن لاءِ هن مولانا محمد شفيع پرنسپل اورينٽل كاليج لاهور كي كنهن جيد عالم لاءِ لكيو. جنهن علام كاكيوٽي صاحب كي انهيءَ كم لاءِ مقرر كيو، جيكو روزانو داكٽر اقبال ڏانهن ويندو هو. ۽ داكٽر صاحب استفاده كان پوءِ علامه علي محمد كي پنهنجي طرفان اهڙو سرٽيفكيٽ پڻ ڏنو.

ان بعد واپس وطن وريو ۽ اچي لاڙڪاڻي جي مدرسي ۾ عربيءَ جو استاد مقرر ٿيو. ان کان پوءِ مدرسن جي ماحول ڏانهن وريو، ۽ ڪيترن عربي مدرسن ۾ صدر مدرس ياشيخ الحديث جي حيثيت ۾ تعليم ڏيندو رهيو (588). جن مان "دارالسعادت" گورو پهوڙ، علي شاه جو ڳوٺ، مدرسه "مظهر العلوم" کڏو ڪراچي، ڪنڌ ڪوٽ, پنهنجو ڳوٺ, ۽ شاه ولي الله ڪاليج منصوره تعلقو هالا ذڪر لائق آهن (589)،

پنهنجي عمر جي آخري دور ۾ علام صاحب اباڻي ڳوٺ جا وڻ وسائي وڃي حڪمت سان گڏو گڏ درس و تدريس جو سلسلو پڻ جاري رکيو (590)،

علام علي محمد كاكيپوتي ان وقت سياست ۾ پير پاتو, جڏهن سن 1939ع ۾ مولانا عبيد الله سنڌي جلاوطنيءَ كان پوءِ واپس سنڌ وريو، ۽ پير جهنڊي ۾ "بيت الحكمت" قائم كري قرآن مجيد جي درس جو سلسلو شروع كيو، ۽ علام كاكيپوتو نہ صرف ان درس ۾ شريك ٿيو(591), پر هن مولانا سنڌيءَ جي ٺاهيل "جمنا _ نربدا _ سنڌ ساگر پارٽيءَ" ۾ به شموليت اختيار كري، پنهنجون سياسي سرگرميون شروع كيون(592).

اهڙيءَ طرح پاڻ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي سياسي پليٽ فارم تان بہ ڪر ڪيائين. سن 1944ع ۾ حيدرآباد واري قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت ۾ جلسو منعقد ٿيو. تہ هن بہ ان ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو(593).

پاڻ تاريخ 22 ذي القعد 1386ھ مطابق 1، مارچ 1967ع تي ھيءُ جھان ڇڏي ويو(594).

مولانا غلام احمد ملكاثي

مولانا غلام احمد ولد حاجي بچل خان. بلوچ قوم جي ملڪاڻي قبيلي مان تاريخ 14 رمضان 1276 مطابق 5، اپريل 1860ع تي ڳوٺ ملڪاڻي ضلعي دادو ۾ ڄائو. هن قرآن شريف جي تعليم تر جي آخوند عبدالڪريم کان ورتي(595). ان بعد فارسيءَ جي تعليم سيالن واري مدرسي لڳ دادو ۾ وٺڻ کان پوءِ، مولانا حاجي حسن الله پاٽائي. مولانا عطاءِ الله فيروزشاهي، ۽ مولانا نور محمد شهداد ڪوٽيءَ وت حاصل ڪيائين. آخر ۾ عربيءَ جي تعليم مولانا محمد حسن حيدرآباديءَ وت تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو(596).

علمي فراغت كان پوءِ درس وتدريس جو شغل اختيار كيائين، جيكو لڳ ڀڳ اڌ صدي عالي جاري رهيو. مولانا ملكاڻي صاحب جي پوري ڄمار علم جي پياس چر ياڻ 48

سالن جي عمر ۾ پنجاب وڃي. حافظ عبدالڪرير جي مدرسي ۾ رهيو، ۽ قرآن شريف حفظ ڪيائين(597).

مولانا صاحب پنهنجي دور جو جيد عالم ۽ نامور مفتي هو. فقه م كيس غير معمولي دسترس حاصل هئي. پاڻ صاحب تصنيف به هو ۽ سندس لكيل كتابن مان: 1- سبيل الرشاد. 2-تنقيح المقاصد والمعاني، 3-حسن الخطاب في اثبات البقاب. 4- تعويد الله الاحد، 5-نتيجة الافكار والمحن في الرد علي المفتي الماجن، 6-تحفة الاقران، 7-تاريق عباد الله في جوازيا رسول الله، 8- السيف القهري علي عنق النوشهري، 9-ذلاقة الكبيرة في تحقيق نكاح الصغيرة، 10-عمدة الرسائل، 11-منع الملك الجليل في جواز القيام والمعانقة والتقبيل، 12- الحق الصريح، 13-فتح الخلاق في الرد علي عبد الرزاق، 14- ايقاظ الناعس الغبي في عدم ايقاع طلاق الصبي. 15- زجر الغري البليد في تحقيق وجوب التقليد، 16- القول الحسان، 17- ترويح جنان المنصفين، 18- زجر الغضيح، 19- تحفة العارفين الصوفية ۽ 20-ايضاح لما اشتبه علي الملاح قابل ذكر آهن.

مولانا صاحب جيتوڻيڪ بنيادي طرح شاعر نہ هو. پر تنهن هوندي بہ هن لوڪاڻي نوعيت وارو ڪجه ڪلام چيو آهي(598).

مولانا غلام احمد صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كئي. پاڻ هن تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. ننڍي كنڊ ۾ پهرين "خلافت كانفرنس" جيكا حيدرآباد سنڌ ۾ منعقد ٿي، تنهن جي صدارت بـ كانئس ئي كرائي ويئي(599).

ان کان پوءِ جڏهن "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" حماعتن ڌارين حڪمرانن کان آزادي حاصل ڪرڻ لا، ڌار ڌار ڪوششون ورتيون. ته مولانا غلام احمد ملڪاڻيءَ "مسلم ليگ"جي حمايت ڪئي(600).

مولانا صاحب تاريخ 22 جمادي الثاني 1354هـ مطابق 22 سيپٽمبر 1935ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪيو(601).

مولانا غلام حسين جمالي

مولانا غلام حسين ولد مٺو خان جمالي سن 1316هـ مطابق 1898ع ڌاري ڳوٺ عثمان جمالي تعلقي سڪرنڊ. ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. ابتدائي ناظره قرآن مجيد پيرجهنڊي جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" ۾ مولانا محمد سليمان ۽ مولانا عبدالقادر لغاريءَ وٽ پڙهيو. فارسي ۽ عربي ساڳئي ئي مدرسي ۾ مولانا محمد نور وٽ پڙهڻ شروع ڪيائين. ڪجهه وقت کان پوءِ جڏهن مولانا محمد نور پيرجهنڊي جو مدرسو ڇڏيو تہ پاڻ به ان سان گڏجي وڃي پهريائين مدرسي "دارالفيوض هاشميه" سجاول ۾، ۽ پوءِ "مدينة العلوم" ڀينڊي ۾ وٽس ئي تعليم جاري رکيائين. ان بعد مولانا غلام حسين "دارالهديٰ" ئيڙهيءَ ۾ پهچي ڪجهه وقت مولانا قاضي فضل الله وٽ پڙهيو. تنهن کان پوءِ کيس مولانا محمد نور پنجاب وئي ويو، جتي پنج سال پنهنجي استاد جي صحبت ۾ رهي، وٽائش تعليم جي تڪميل ڪري واپس ڳوٺ وريو.

علمي فراغت كان بعد پنهنجي ڳوٺ عثمان جماليءَ ۾ مدرسو "دارالحسنات" قائم كري درس وتدريس ڏيڻ لڳو. كجه وقت كان پوءِ پنهنجي مدرسي كي ڀر واري ڳوٺ فضل كيريو ڏانهن منتقل كيائين، ۽ اتي مدرسي سان گڏ ملا اسكول قائم كرائي، پاڻان جو هيڊ معلم بر ٿي رهيو.

آخر ۾ اچي جامع مسجد سڪرنڊ ۾ رهيو، جتي سانده ٻارهن ورهيه فتويٰ نويسيءَ سان گڏ پيش اماميءَ جا فرائض انجام ڏنائين. ان کان پوءِ اچي پنهنجو ڳوٺ وسايائين، ۽ لکڻ پڙهڻ ۽ شرعي فيصلن جو شفل جاري رکندي، پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين.

مولانا غلام حسين صاحب پنهنجي دور جو وڏو عالم ۽ مفتي ٿي گذريو آهي. سندس فتوائون ڪورٽن ۽ ملڪي خواه غير ملڪي عالمن وٽ مقبول هيون. هن جا لکيل "اهر فتوائن جا نقل"، "ڪتاب صرف"، "نماز ۽ حج جا احڪام" (قلمي) ذڪر لائق آهن(602).

مولانا صاحب جيتوڻيك پنهنجي ڄمار جو گهڻو حصو دين جي خدمت كندي صوف كيو. پر جڏهن انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ ملك اندر ماڻهو سر گرميءَ سان حصو وٺڻ لڳا، ۽ خاص كري جڏهن مسلمان "مسلم ليگ" جي سياسي ميدان تان هلچل شروع كئي. ته مولانا غلام حسين جمالي به ان ۾ شامل ٿيو. انهيءَ تحريك دوران جڏهن "آل انڊيا مسلم ليگ" طرفان "يوم پاكستان" ملهائڻ لاءِ اپيل كئي ويئي ته تاريخ 23 مارچ 1941ع تي ڳوٺ عثمان جماليءَ ۾ هك عظيم الشان جلسي جي صدارت كيائين (603)، جنهن ۾ "يوم پاكستان" جي اهميت تي روشني وجهندي، ڌارين حكمرانن كان نجات حاصل كرڻ لاءِ پاڻ پتوڙيائين.

آزاديءَ جي تحريك دوران جدّهن عالمن انگريزي شين جي استعمال خلاف "ترك مرالات" جو سدّ ذنو ته مولانا غلام حسين صاحب انهن جو عملي ساٿ

ڏنو. پاڻ نه رڳو ملڪ جي ورهاڱي تائين انگريزي شين جي استعمال کان پري رهيو. پر ان کان پوءِ به زندگيءَ جي آخري لمحي تائين، ويندي انگريزي دوائن جي ذريعي به پنهنجو علاج نه ڪرايائين.

مولوي صاحب تاريخ 7 ربيع الاول سن 1398هـ مطابق 15 فيبروري 1978ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري، دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو(604).

مولانا مخدوم غلام حيدر هالائي

مخدوم غلام حيدر ولد مخدوم ميان ظهير الدين قريشي تاريخ 12 ذي الحج سن 1316هـ مطابق 24 اپريل 1899ع تي نون هالن ضلعي حيدرآباد ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم هالن ۾ ورتائين، ۽ ان بعد مولوي شاه محمد وٽ پڙهيو. ۽ آخر ۾ ديوبند وڃي دستاربندي ڪيائين.

فارغ التحصيل تي واپس سنڌ وريو ۽ اچي خانداني مسند سنڀاليائين(605).

انهيءَ عرصي دوران هالن جي شهر ۾ سن 1942ع ۾ هاءِ اسڪول ۽ سن 1947ع ۾ ڪاليج قائر ڪيائين(606). کيس مطالعي ۽ لکڻ پڙهڻ سان به گهڻي دلچسپي هوندي هئي. مشغول هئڻ جي باوجود هن جيڪي ڪتاب لکيا، تن جو وچور هن طرح آهي: (607)

"مختصر سوانح عمري مخدوم نوح" ، "اسوه محمدي" ، "اسلامي تصوف"، "نبوي اخلاق"، "منهاج المؤمنين" ۽ "سفينة النوح عرف سكينة الروح".

مخدوم غلام حيدر سن 1922ع كان مقامي سياست ۾ دلچسپي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو. "خلافت تحريك" دوران پاڻ انهيءَ كان عملي طور تي پاسيرو رهيو ۽ "امن سيا" قائم كري "عدم تعاون" جي تحريك جي مخالفت كيائين (608). ان كان پوءِ سن 1930ع ۾ جڏهن "عدم تعاون" جي تحريك زور شور تي هئي تہ سندس كوششن سان هالن ۾ سنڌ جي پيرن ۽ فقيرن جي گڏجاڻي ٿي، جنهن ۾ هن تحريك جي مخالفت ۾ ٺهراء منظور كيا ويا (609).

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيء واري تحريڪ دوران جڏهن "سنڌ آزاد جماعت" جو قيام عمل ۾ آيو، ته هن به ان ۾ سرگرميءَ سان حصو ورتو(610). سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ بعد پاڻ سنڌ اسيمبليءَ جو ميمبر بڻيو، ۽ "مسلم پوليٽيڪل پارٽيءَ" سان وابسترهيو(611).

ان کان پوءِ "مسلم لیگ " ۾ شموليت اختيار ڪري تحريڪ پاڪستان ۾ سرگرميءَ سان حصو ورتائين، ۽ هالا مسلم ليگ شاخ جو هميش صدر بہ ٿي

رهيو(612). مخدوم صاحب تاريخ 26 رمضان 1372هـ مطابق 9 جون 1953ع تي رحلت كئي (613).

مولانا حكير غلام صديق نوناري

مولانا غلام صديق نوناري سن 1312هـ مطابق 1894ع ڌاري ڳوٺ حيدر چانڊيي ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. مختلف مدرسن ۾ پڙهيو، ۽ آخر ۾ وڃي مولانا خوش محمد ميروخانيءَ وٽ دستاربندي ڪيائين.

فارغ التحصيل ٿيڻ بعد ديوبند به ويو، ۽ واپسيءَ تي اچي قمبر علي خان ۾ درس وتدريس جو شغل اخيتار ڪيائين. آخري وقت ۾ شهداد ڪوٽ ۾ وڃي مطب کولي حڪمت جو ڌندو ڪرڻ لڳو(614).

مولانا غلام صديق "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. پاڻ هن تحريك جو پرخلوص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو، وطن جي آزاديءَ خاطر انگريزن خلاف تقريرون كري، وڃي سنڌي عوام كي بيدار كندو هو، جنهن كري هن حريت پسند سنڌي عالم كي وقت جي سركار طرفان زبان بنديءَ جا حكم به مليا(615). مولانا صاحب كيتري وقت تائين خلافت كاميٽيءَ قمبر جو صدر به ٿي رهيو(616). ان كان سواءِ جڏهن خلافت جي حيثيت كي مسخ كرڻ لاءِ مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو شايع كيو تان جي جواب ۾ خلافتي عالمن به رد لكيو. مولانا غلام صديق خلافتين جو ساٿ ڏيندي ان رد جي تائيد كئي(617).

ي خلافت جي خاتمي کان پوءِ "جمعيت العلماءِ" ۾ شرڪت ڪيائين، ۽ ان جو سر گرم ڪارڪن ٿي رهيو(618). اهڙيءَ طرح پاڻ "ڪانگريس" جماعت جو به همدرد رهيو.

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين تـ هن بـ ان جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ ۾ نمايان خدمتون سرانجام ڏنيون.

مولانا صاحب سن 1365هـ مطابق 1946ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيو(619).

مولانا غلام على گوپانگ

مولانا غلام علي ولد حيدرخان گوپانگ جي ولادت سن 1287هـ مطابق 1870ع ۾ ڳوٺ ناگيل ضلعي بدين ۾ ٿي. پاڻ تعليم جي حصول لاءِ ڪيترن ئي مدرسن جا در كڙكايائين. سندس مكيد استادن مان مولانا عبدالله ولهاري هو. جنهن وٽان تعليم پوري كري دستاريند ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ديه بخشاه تعلقي بدين ۾ ديني مدرسو قائر كري تدريس جو آغاز كيائين. ان بعد كجه وقت لنواري شريف ۾ به پڙهايائين.

مولانا صاحب لاڙ ۾ پنهنجي دور جو وڏو فقيه ٿي گذريو آهي. ۽ ان سان گڏ کيس سنڌي. اردو. فارسي ۽ عربيءَ تي به عبور حاصل هو.

مولانا غلام على صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيڻ سان كئي. پاڻ ڏکڻ سنڌ ۾ تحريك جي جلسن ۾ شريك ٿي. خلافتي عالمن جو ساٿ ڏيندو رهيو (620).

خلافتي عالمن طرفان جڏهن غير ملڪي ڪپڙي جي استعمال خلاف فتويٰ جاري ٿي ته هن ان جي تائيد ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو تُبوت ڏنو(621). ان کان سواءِ وت آهر تحريڪ جي مالي مدد به ڪيائين (622).

"خلافت تحريك" دوران ئي "جمعيت العلماء" جو قيام عمل ۾ اچي چكو هو. ان كري پاڻ هن جماعت ۾ بشامل ٿيو، ۽ "جمعيت العلماءِ بدين" جو كيترائي ڀيرا، صدارت جي عهدي تي رهندي، هك سر گرم اڳواڻ جي حيثيت سان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين(623).

مولوي صاحب پنهنجي ڄمار جا 82 ورهيه پورا ڪري تاريخ 13 ربيع الاول 1368 ه مطابق 13 جنوري 1949ع تي راه رباني ورتي(624).

مولانا غلام عمر جتوئي

مولانا غلام عمر ولد ميان محمد صادق جترئي سن 1263ه مطابق1847ع ذاري ڳوٺ سوني جتوئي ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. ديني علم جي تڪميل مولانا حسن الله پاٽائيءَ کان ڪيائين.

علمي فراغت كان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ۾ مدرسه "دارالفيوض" قائم كري درس ڏيڻ لڳو. كيس علم ادب ۽ مذهب سان ايترو ته چاه هوندو هو. جو پنهنجي مدرسي ۾ هڪ بي مثال كتب خانو به قائم كيائين(625).

مولانا غلام عمر جي حيثيت هڪ فقيه عالم جي هئي. هن "امن سڀا" جي تائيد ڪرڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو، ۽ امن سيائي عالم مولوي فيض الكريم ان جي مخالفت ۾ "تحقيق الخلافت"نالي هڪ فتريٰ جو رسالو لکي شايع ڪرايو، ته هن به ان جي تائيد ڪئي هئي(626). مگر پوءِ ست ئي پنهنجي سياسي غلطيءَ جو ازالو ڪري "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿيو، ۽ خلافتي عالمن جي جاري ڪيل ڪيترين ئي فتوائن جي تصديق پڻ ڪيائين(627). انهن فتوائن مان ولايتي ڪپڌي جي پهرڻ کي حرام سمجهندي، پهريائين خلافتين جو ساٿ ڏنائين، پر پوءِ سگهوئي انهيءَ مسئلي تي هن ساڻن اختلاف ظاهر ڪيو(628).

مولانا صاحب آخري وقت ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" ۾ شموليت اختيار ڪئي، ۽ پاڻ "جمعيت العلماءِ" ضلعي لاڙڪاڻي جو صدر به ٿي رهيو، اهڙي طرح هن جماعت ۾ رهي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪندي پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين(629).

پاڻ سن 1353هـ مطابق 1934ع ۾ لاڏاڻو ڪري ويو(630).

مولاناغلام فريد سپريو

مولانا غلام فريد سپريو سن 1321هـ مطابق 1904ع ڌاري ڳوٺ نور محمد سپريي تعلقي قمبر ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. ڪور سليمان لڳ شابڻاڻي ڳوٺ ۾ تعليم وٺي فارغ التحصيل ٿيو ۽ علمي فراغت کان پوءِ درس وتدريس جو شغل اختيار ڪيائين(631).

مولانا غلام فريد صاحب "خلافت تحريك" جي شروع ٿيڻ سان سياست ۾ پير پاتو. پاڻ هن تحريك جو سر گرم كاركن ٿي رهيو، ۽ وقت بوقت سنڌ اندر ٿيندڙ خلافت كانفرنسن ۽ جلسن ۾ شريك ٿي، ان جو ڀرپور سات ڏنائين(632).

جڏهن امن سڀائي عالمن "خلافت تحريڪ" کي مشڪوڪ بنائڻ جي ڪوشش ڪئي، تہ خلافتي عالمن بہ "امن سڀا" ۾ شامل ٿيندڙن خلاف هڪ فتوي جاري ڪئي، جنهن جي مولانا غلام فريد پڻ تائيد ڪئي(633)، هن تحريڪ ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺڻ جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي(634)،

مولانا صاحب "كانگريس" ۽ "جمعيت العلماء" جو به سرگرم كاركن ٿي رهيو. پاڻ ضلعي لاڙكاڻي جي جمعيتي عالمن مان هڪ هو. كيس كافي عرصي تائين "جمعيت العلماء سنڌ" جي كاروباري كاميٽيءَ تي ميمبر جي حيثيت سان كر كرڻ جو موقعو مليو(635). پاڻ هن جماعت جي جلسن ۾ به شريك ٿي، وطن جي

آزاديءَ لاءِ جدوجهد كيائين(636).

سن 1938ع دوران فلسطين مٿان ٿيندڙ ظلمن سبب انهن جي مظلوميت جو احساس سنڌي عوام ۾ به وڌڻ لڳو. ان ڪري فلسطينين جي حمايت ۽ مدد لاءِ سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ "فلسطين ڪاميٽيون" ٺاهيون ويون. مولانا غلام فريد کي ان ڪاميٽي، جو قمبر تعلقي لاءِ نائب صدر مقرر ڪيو ويو. پاڻ بين الاقوامي سياست ۾ بهرو وٺندي، مظلوم فلسطينين جي حق ۾ وڃي سنڌي عوام ۾ ڀرپور تقريرون کيائين(637). اهڙيءَ طرح مولانا حافظ غلام فريد صاحب سياسي ۽ ديني خدمت ڪندي، پنهنجي ڄمار پوري ڪئي(638).

مولانا پير غلام مجدد سرهندي

پير غلام مجدد ولد ميان عبدالحلير تاريخ 16 رجب سن 1300هـ مطابق 13 مئي 1883ع تي مٽياري ضلعي حيدرآباد ۾ پيدا ٿيو. هن سموري تعليم پنهنجي ئي ڳوٺ مٽياريءَ ۾ مولانا حسن الله پاٽائيءَ کان ورتي. ان کان پوءِ 1913ع ۾ والد جي وفات کان پوءِ سجاده نشينيءَ جي دستار ٻڌي، پيري مريديءَ جو شغل اختيار ڪيائين. پاڻ شعروشاعري ۽ علم ادب سان بـ شعف رکندو هر (639).

جڏهن "خلافت تحريڪ" کي ڪمزور بنائڻ لاءِ مولوي فيض الڪرير ٺارو شاهيءَ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو شايع ڪيو، ته بير صاحب به ان جي تصديق ڪري، پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو(640). پر پوءِ سگهوئي انگريزن سان نفرت ڪندي "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿي ويو، ۽ خلافتي عالمن جي جاري ڪيل فتوائن جي تائيد ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنائين جاري ڪيل فتوائن جي مشهور خلافتي اڳواڻن مان هڪ هو، ۽ کيس "آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ" جو ميمبر به چونڊيو ويو هو (642). ان کان سواءِ "سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ" جي ڪيترن ئي عهدن تي فائز رهيو."

^{*} پاڻ جن عهدن تي فائز رهيو، اهي هئا:

أمركزي خلافت كامينيء جو ميمبر" (ڏسو: روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 14 فيبروري 1931ع ص2).

جيئن تہ پاڻ بنيادي طرح پير هو، ان ڪري هن تحريڪ کي سندس ڪيترن ئي مريدن جون به همدرديون حاصل ٿيون. جنهن ۾ هن پيري مريديءَ جي مروج طريقي کي پاسيرو رکي "خلافت تحريڪ" کي ڪامياب بنائڻ تي زور ڏنو (643)، پير صاحب سنڌ اندر هن تحريڪ جي سڏايل مڙني مکي ڪانفرنسن ۽ جلسن ۾ شريڪ ٿيندو رهيو (644). اهڙيءَ طرح ڏکڻ سنڌ ۾ هن تحريڪ جا ڪيترائي جلسا سندس ئي صدارت ۾ ٿيا (645). جن ۾ پاڻ انگريزن جي غلط ڪارين کي، سنڌي عوام اڳيان اگهاڙو ڪري، منجهن آزاديءَ جو روح ڦوڪيائين(646).

سندس انهيءَ وطن دوستيءَ ۽ انگريز دشمنيءَ سبب کيس ٻن سالن لاءِ جيل جي سزا بيو ڳڻي پيئي(647). هن مرد مجاهد تحريڪ کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ لاءِ ان جي مالي مدد به ڪئي(648).

" خلافت تحريك" دوران ئي "جمعيت العلماءِ" جو قيام عمل ۾ اچي چڪو هو. ان كري پير صاحب هن جماعت سان به وابسته رهيو، ۽ ان جي جلسن ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ جاكوڙ كيائين(649).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ شروع ٿي، ۽ "سنڌ آزاد انجمن" ٺهي ته ان جو صدر بڻجي، هن تحريڪ ۾ به ڀرپور حصو وٺڻ لڳو(650).

پير غلام مجدد صاحب آخر ۾ "مسلم ليگ" ۾ شامل ٿي. پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(651). اهڙيءَ طرح جڏهن مسجد منزل گاه تحريڪ شروع ٿي، ته پاڻ ان ۾ به ڀرپور حصو ورتائين، جنهن ڪري کيس گرفتار ڪري جيل ۾ رکيو ويو هو(652)،

پير صاحب تاريخ 18 جمادي الثاني 1377هـ مطابق 9 جنوري 1958 تي هي؛ جهان ڇڏيو (653).

مولانا غلامر مصطفي قاسمي

مولانا غلام مصطفيٰ ولد حافظ محمود چانڊيو تاريخ 22 رجب 1334هـ مطابق 24 جون 1916ع تي ڳوٺ ڀنڀي خان چانڊيي ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. سندس والد استاد العلماء مولانا غلام صديق شهداد ڪوٽيءَ جي ابتدائي شاگردن مان هو، ۽ قادري

نصوبي سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ جوميمبر" (ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 24 اپريل 1932ع ص6).

طريقي ۾ سندس خليفو به هو. حافظ محمود صاحب سنڌ جي ناميارن قارين ۽ عالمن مان هڪ هو. سندس مدرسي "تحفيظ القرآن" سڄي سنڌ کي فيض رسايو.

مولانا غلام مصطفيٰ قاسميءَ جو والد بزر گوار سندس ولادت کان ڪجه سال پوءِ هيءُ جهان ڇڏي ويو. ان ڪري هن جي ڏاڏي پياري خان ۽ والده سندس سار سنڀال لڏي.

پاڻ قرآن شريف جا ان پاره ناظره پڙهي، ڳوٺ ۾ ئي فارسي پڙهڻ شروع ڪيائين. فارسيءَ ۾ سندس پهريون استاد مولانا فتح محمد سيراني هو. اڳتي هلي ڳوٺ ڇڏي. ميروخان پهتو ۽ مولانا خوش محمد کان تعليم ورتائين. ان بعد ڪور سليمان جي مدرسي "دارالفيض" ۾ داخل ٿيو ۽ مولانا عبدالڪريم ڪورائيءَ جو شاگرد بڻيو. مولانا قاسمي صاحب طالب العلميءَ جي زماني ۾ ايڏو ته ذهين هو، جو هيٺين ڪتابن وارن شاگردن کي سبق ڏيندو هو. ان کان پوءِ پنهنجي استاد سان گڏ علي خان جي مدرسي ۾ اچي تعليم ورتائين، ۽ آخر ۾ ساڳئي استاد سان گڏجي ڳوٺ پير بخش جي مدرسي ۾ اچي تعليم ورتائين، ۽ آخر ۾ ساڳئي استاد سان گڏجي ڳوٺ پير بخش ڀٽي ۾ آيو. جتي آخري ڪتاب پڙهي دستاربندي ڪيائين.

ان بعد وجي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو. جتي پاڻ پڙهڻ کان سواءِ ذهانت جي بنياد تي. پنهنجي هم ڪلاسين کي پڙهائيندو به هو. هتان فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ وڃي دهليءَ جي اورينٽل ڪاليج ۾ داخل ٿيو. جتان مشرقي علمن ۾ تعليم وٺڻ بعد مدرسطيد مان، طب جي تعليم بحاصل ڪري ورتائين.

ديوبند كان واپس سنڌ ورڻ بعد مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي صاحب مدرسي "دارالسعادت" گوري پهوڙ تعلقي شڪارپور ۾ درس وتدريس جو شغل اختيار کيو. جتي ڪيترائي شاگرد کانئس مستفيد ٿيا. بعد ۾ ڳوٺ پير بخش جي مدرسي "بيت الحڪمت" ۾ پڙهائڻ شروع ڪيائين. پاڻ ڪيترو وقت "قاسم العلوم" گهوٽڪيءَ جو صدر مدرس بہ ٿي رهيو. تنهن کان پوءِ مدرسي "مظهر العلوم" کڏي ۾ استاد حديث جي حيثيت سان پڙهايائين. مولانا صاحب ڪجه وقت "سنڌ مسلم ڪاليج" ڪراچيءَ ۾ اسلاميات جو استاد بہ ٿي رهيو. ۽ بعد ۾ الجي "شاه ولي الله اکيڊمي" حيدر آباد جو دائريڪٽر مقرر ٿيو.

مولانا صاحب سنڌ يونيورسٽيءَ ۾ پهريون اعزازي پروفيسر ۽ وزيٽنگ پروفيسر هئڻ سان گڏ سنڌي ادبي بورڊ ۽ مرڪزي چنڊ ڏسڻي ڪاميٽيءَ جو چيئرمين رهي چڪو هو. پاڻ سنڌجي ناميارن عالمن مان هڪ هو ۽ هن جي علمي فيض نه رڳو اڻ ڳئيا ديني عالم پيدا ڪيا. پر مختلف شعبن ۾ سندس هم گير شخصيت جي پيدا

ڪيل اير. فل ۽ پي. ايچ. ڊيءَ وارن جو به وڏو انگ آهي.

قاسمي صاحب ته ماهي "الرحير" (سنڌي) ۽ ته ماهي "الولي" (اردو) رسالي جي ايڊيٽر هئڻ کان سواءِ ته ماهي "مهراڻ" جي ايڊيٽوريل بورڊ جو به ميمبر به رهيو. اهڙيءَ طرح پاڻ ڪيترين ئي سرڪاري، نيم سرڪاري، علمي ادبي ۽ ثقافتي ادارن خواه جماعتن جو اڳواڻ يا باني ڪارڪن به هو."

سندس ڄمار جوڳچ حصو درس وتدريس ۽ علم ادب جي خدمت ۾ صرف ٿيو. پاڻ ڪيترائي مقالا ۽ مضمون لکيااٿس، ۽ لڳ ڀڳ درجن ڪتابن جو مصنف، مترجم ۽ مرتب هو. ان کان سواءِ ڪيترن ڪتابن جا مقدما، ۽ حاشيا پڻ لکيا اٿس. جن جو مختصر وچور هيك ڏجي ٿو:

1. تفسير سورة سبا (سنڌي) 2. شاه جو رسالو (ترتيب)، 3. پاره الر (ترجمو) 4. الهام الرحمان في تفسيرالقرآن، 5. بنيادي سنڌي لغت (ساٿي ايڊيٽر)، 6. بنيادي سنڌي لغت، (ساٿي ايڊيٽر)، 6. بنيادي سنڌي لغت، (ساٿي ايڊيٽر) 8. سماجي انصاف ۽ اجتماعيت (شاه ولي الله جي فلسفي جي روشنيءَ ۾)، 9. سطعات (ترجمو) 10. سماجي انصاف، 11. مفيد طلباء منطق (عربي)، 12. مختصر قدوري (عربي مقدمو ۽ حواشي 14. النباء في حيات الانبياءِ (عربي) تاليف ابوالحسن صغير سنڌي (عربي مقدمو ۽ حواشي) 15. الانباء في حيات الانبياءِ (عربي) تاليف ابوالحسن صغير سنڌي (عربي مقدمو ۽ حواشي) 15. معان النظر شرح شرح نخبة الفكر (عربي) قاضي محمد اكرم نصرپوري (عربي مقدمو ۽ تعليقات) 17. لمحات (عربي) 81. سطعات (قارسي) 91. الطاف القدس (قارسي) 20. تاويل الاحاديث (عربي) 22. ترجمو سطعات سنڌي. 12. ترجمو سطعات سنڌي. 23. ترجمو اردو تاويل الاحاديث ۽ 24. فتح الرحمٰن (قارسي) حواشي قرآن پاڪ جو

^{*} علامه صاحب جن ادارن سان وابسته رهيو . سي هي آهن:

^{1.} ميمبر سنڌ الاجي. 2. ميمبر سنڌ ميوزم حيدرآباد. 3. ميمبر ڊاڪٽر دائود پوٽه سنڌ پراونشل لائبريري حيدرآباد. 4. ميمبر مهراڻ آرٽس ڪائونسل حيدرآباد. 5. ميمبر صوبائي ڪائونسل سنڌ. 6. ميمبر مرڪزي پاڪستان براڊ ڪاسٽنگ اسلام آباد. 7. ميمبر مرڪزي رويت هلال ڪاميٽي. 8. ميمبر اسلامڪ اسٽڊيز ايگريڪلچر يونيورسٽي پشاور، 9. ميمبر مرڪزي اقبال اڪيڊمي لاهور، 10. ميمبر مرڪزي زڪوة ڪائونسل، 11. ميمبر صوبائي زڪوة ڪائونسل، 11. ميمبر صوبائي

مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي اڃا "دارالفيض" كور سليمان ۾ پڙهندو هو ته عملي سياست ۾ قدم رکيائين. اڳتي هلي پاڻ نه صرف تعلقي قمبر جي كانگريس كاميٽيءَ جو وائيس پريذيڊنٽ ٿي رهيو، پر كيس ضلعي لاڙكاڻي جي كانگريس كاميٽيءَ جي وائيس پريزيڊنٽ بڻجڻ جو به موقعو مليو.

مولانا صاحب كانگريس كان سواءِ "جمعيت العلماء سند" جو پڻ اڳواڻ كاركن ئي رهيو. "جمعيت العلماءِ هند" جي سهارنپور واري اجلاس ۾ اتر سنڌ مان كيس نمائندگي حاصل هئي(654).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ شروع ٿي ته پاڻ به ان ۾ ڀرپور حصو ورتائين. انهيءَ سلسلي ۾ جڏهن "سنڌ آزاد پارٽيءَ" جو قيام عمل ۾ آيو ته سنڌ جي جدا ٿيڻ تائين پاڻ ان جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو.

انهيءَ عرصي دوران جدّهن فلسطين ۾ عربن جي مٿان ڏکيا ڏينهن آيا. تـ سنڌ جي مسلمانن اهڙن واقعن تي شديد ردعمل ڏيکاريو ۽ عربن جي مالي خواه اخلاقي مدد ڪرڻ لاءِ سنڌجي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ فلسطين ڪاميٽيون برپا ڪيون ويون. انهيءَ بين الاقوامي سياست ۾ مولانا قاسمي صاحب پڻ ڀرپور حصو ورتو جنهن ۾ کيس فلسطين ڪاميٽي قمبر جو ناظر به مقرر ڪيو ويو هو (655).

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو ۽ اپي پيرجهنڊي ۾ "بيت الحڪمت" قائم ڪري درس ڏيڻ شروع ڪيائين. ته پاڻ نه صرف ان جي درس مان فيضياب ٿيو(656)، پر مولانا سنڌيءَ جي ٺاهيل "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" ۾ به شموليت اختيار ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو. اهڙيءَ طرح مولانا عبيدالله سنڌيءَ جڏهن "جمعيت الطلباء سنڌ" ٺاهي ته ان جي تشڪيل ۽ عمل ۾ به هن ڀرپور حصو ورتو. مولانا سنڌيءَ سان سندس ايتري ته نسبت ۽ عتيدت هئي جو هن بزرگ هڪ ڀيرو سندس مدرسي جو معائنو به ڪيو هو(657). آخر ۾ پاڻ جڏهن "شاهه ولي الله اڪيڊمي" حيدر آباد مان فارغ ٿيو ته پوءِ پنهنجي گهر تائين محدود رهيو.*

مولانا فتح علي جتوئي

مولانا فتح علي ولد ميان ناٿو خان سن 1285هـ مطابق 1868ع ۾ ڳوٺ گڏيون

^{*} مولانا صاحب تاريخ 15شوال سن 1424هـ مطابق 9 بسمبر 2003ع تي رحلت كري ويو.

تعلقي شاهبندر ضلعي ٺٽي ۾ ڄائو. شروعاتي تعلير مولانا عبد الله جتوئي ستاهر واري کان ورتائين. ان بعد رتيديري ۾ مولانا خادم حسين جتوئيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري فارغ التحصيل ٿيو. ان کان پوءِ حرمين شريف ويو ۽ اتي جي عالمن ۽ محدثن کان پڻ تعليم وئي واپس سنڌ وريو.

علمي فراغت كان پوءِ جاتي تعلقي ۾ ٿهيمن جي كاك تي ٽنگي جي ڳوٺ ۾ كجه وقت پڙهائڻ كان پوءِ اچي سنڍي بندر ۾ مدرسو قائم كري، ان ۾ تعليم ڏيڻ لڳو. تنهن كان پوءِ ڪجه وقت چوهڙ جماليءَ ۾ به پڙهايائين، ۽ آخر ۾ اچي سجاول جي مدرسي "دارالفيوض هاشمي" ۾ پڙهائڻ ويٺو. مولانا صاحب پنهنجي دور ۾ علم منطق جو وڏو ماهر ۽ استاد مجيو ويندو هو (658).

مولانا فتح علي جي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ شركت كرڻ سان ٿيو. پاڻ كيترو وقت"صوبائي خلافت كاميٽيءَ جي منتظم كاميٽيءَ جو ميمبر بـ ٿي رهيو (659). آزاديءَ جي تحريك ۾ سرگرميءَ سان حصو وٺڻ جي پاداش ۾ جيل جي سزاب ڀو ڳيائين (660)،

خلافتي عالمن طرفان تحريك كي كامياب بنائل لاءِ جڏهن فتوائون جاري ٿيون، تہ مولانا صاحب پڻ انهن جي تصديق كري، پنهنجي تحريك دوستي جو ثبوت ڏنر (661) ان كان سواءِ وس آهر تحريك جي مالي مدد بـ كيائين (662).

"خلافت تحريك" كان پوءِ جدِّهن "جمعيّت العلماءِ" جو سياسي دور آيو، ته هن ان ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڀرپور حصو ور تو. پاڻ سن 1930ع كان كراچي ضلعي جي "جمعيت العلماءِ" جو ناظر ٿي رهيو (663). اهڙي طرح سن 1931ع ۾ جڏهن كراچيءَ ۾ "جمعيت العلماءِ هند" جو ساليانو ميڙ ٿيو، ته كيس آڌر ڀاءُ كندڙ جي كاميٽيءَ ۾ شريك ٿي كو كرڻ جو موقعو پڻ مليو (664).

مولانا صاحب تاريخ 4. ذي القعد 1355هـ مطابق 16 جنوري 1937ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪيو (665).

مولانا فتح علي جتوئي

مولانا فتح علي ولد ميان خير محمد جتوئي سن 1278هـ مطابق 1861ع ۾ ديهـ لکي ضلعي ٺٽي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم ٺٽي ۾ مولانا عبدالرحيم کان ورتائين. ان کان پوءِ فارسيءَ ۽ عربيءَ جي باقي تعليم گونگاڻين جي مدرسي ۾ مولانا عبدالله جتوئيءَ وٽ پوري ڪري دستار بند ٿيو. فارغ التحصيل ٿيڻ بعد ڪجھ وقت گجي جي مدرسي ۾ پڙهيائين. ۽ ان کان پوءِ اچي ڳوٺ کڏيون تعلقي شاهبندر ۾ مدرسو قائر ڪري ديني تعليم ڏيندو رهيو (666).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ پاڻ "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين ۽ ان جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. کيس سن1930ع کان وٺي ڪراچي ضلعي جي "جمعيت العلماءِ" شاخ جو صدر منتخب ڪيو ويو. سندس ئي صدارت واري زماني ۾ ڪراچي شاخ سکر بئراج جي مسجدن جي بچاءَ لاءِ ڪوششون ورتيون، ۽ "سارڌا ايڪٽ" جي خلاف ٺهراءِ بحال ڪيا (668). ان کان سواءِ سن 1931ع ۾ جڏهن ڪراچيءَ ۾ "جمعيت العلماءِ هند" جو ساليانو ميڙ ٿيو، تہ پاڻ ان جي استقبالي ڪاميٽيءَ جي ميمبر جي حيثيت سان ڪر ڪيائين (669).

هن تاريخ 12ربيع الثاني 1358هـ مطابق 1، جون 1939ع تي رحلت ڪئي (670).

مولانا حكير فتح محمد سيوهائي

مولانا حكير فتح محمد ولد حكير غلار محي الدين جي ولادت سن 1300هـ مطابق 1882ع ڌاري سيوهڻ ضلعي دادو ۾ ٿي. حكير صاحب ابتدائي ديني تعلير جو آغاز پنهنجي جنر ڀوميءَ جي مولوي محمد عمر چني وٽ كيو. ان كان پوءِ عطاء الله شاه پنجي واري، مولانا عبدالرئوف بختيارپوريءَ بوبكن واري، ۽ سيتا جي مولانا محمد صديق وٽ پڙهي علر جي تحصيل كيائين (671). ان كان پوءِ طب ۽ حكمت جي سكيا پنهنجي والد كان وئي حكيم بڻيو.

كجه وقت كان پوءِ مرحوم سيد الهندي شاه جي كاروبار سنڀالڻ ۽ سندس ٻارن كي پڙهائڻ لاءِ درٻيليءَ ۾ رهيو (672). بعد ۾ كراچيءَ جي "سنڌ مدرسةالسلام" ۾ فارسي جو استاد مقرر ٿيو. پر پوءِ جلد ئي كراچي ۾ پليگ پوڻ سبب سيوهڻ موٽي ويو. ان كان پوءِ پنهنجي ڀاءُ عبدالقيوم سان گڏجي حيدر آباد ۾ مطب كرلي ويٺو. ٻن سالن بعد موٽي اچي كراچي ۾ آباد ٿيو، ۽ اتي ئي طبابت كندو رهيو (673).

حڪير فتح محمد سيوهاڻي پنهنجي دور جو نامور عالم، اديب، صحافي ۽

شاعر ٿي گذريو آهي. هن پنهنجي ادبي زندگيءَ جو آغاز شعروشاعريءَ سان ڪيو. شاعريءَ ۾ پهريائين "صغير" ۽ پوءِ "حڪيم" تخلص اختيار ڪيائين (674).

سنڌي صحافت جي دنيا ۾ هن سڀ کان پهريون قدم سال 1925ع ۾ ڪراچيءَ مان "الجامع" ماهوار رسالي جي جاري ڪرڻ سان رکيو (676). تنهن کان پوءِ سال 1936ع ۾ ڪراچيءَ مان "اصلاح" هفتيوار اخبار جاري ڪيائين (676).

حكيم صاحب پنهنجي دور جو مشهور نثرنويس پڻ هو. سندس لکيل ڪتابن جو مختصر وچور هن طرح آهي (677):

1- ميرن جي صاحبي. 2- كمال زوال، 3- ابو الفضل ۽ فيضي، 4- نورالايمان مقدم تفسير القرآن, 5- مناجات دلنشين، 6- حيات النبي، 7 اخلاق النبي، 8-بهاراخلاق، ۽ 9 آفتاب آدب.

حكيم فتح محمد سيوهاڻي ٻيءَ صف جي سنڌي عالم ساستدانن مان هڪ هو. سندس سياسي زندگيءَ هو آغاز "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان ٿيو. پاڻ سنڌ ۾ منعقد ٿيل خلافت ڪانفرنسن ۾ شرڪت ڪندو هو (678)، ۽ تحريڪ جي اخلاقي توڙي مالي مدد به ڪيائين (679)، جيتوڻيڪ مٿس ڪو ڏکيو ڏينهن نه آيو ۽ جيل وڃڻ کان بچيو رهيو، پر ان هوندي به ڪيترن موقعن تي هن تي وقت جي سرڪار طرفان زبان بنديءَ جا حڪر تعميل ڪيا ويا هئا (680). هو ڪافي وقت تائين "سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ" جي مختلف عهدن تي فائز رهيو، ۽ ان طرفان هڪ هزار رپيا درماه پگهار تي مبلغ بہ ٿي رهيو (681). پاڻ تحريڪ دوران خلافتي عالمن جي جاري ڪيل ڪيترين ئي فتوائن جي پڻ تائيد ڪيائين (682).

"خلافت تحريك" كان سواء پاڻ انهيءَ عرصي دوران "سنڌ محمدن ايسوسيئيشن" جو ميمبر به ٿي رهيو (683). ان كان سواءِ "جميعت العلماءِ هند" ۽ "كانگريس" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين (684). ۽ كجه وقت "جمعيت العلماءِ" جو ناظر به ٿي رهيو (685).

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ بعد سنڌ جي مختلف سياستدانن سان گڏجي "سنڌ اتحاد پارٽيءَ"جي قيام ۾ حصو ورتائين (686).

حكيم صاحب تاريخ 3 ذي الحج سن 1361هـ مطابق 12 ڊسمبر 1942ع تي هيءُ جهان ڇڏيو(687).

مولانا قاضي فتح محمد نظامائي

قاضي فتح محمد ولد حاجي عبدالله خان نظاماڻي سن 1270هـ مطابق 1853ع ۾

ٽنڊي قيصر ضلعي حيدرآباد ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم اڏيرو لعل لڳ چرائي ۾ سيد خان محمد شاه کان ورتائين.ان بعدعربي ۽ فارسي مولانا پير محمد ٿيبي ٽنڊي قيصر واري وٽ پڙهيو. آخر ۾ مولانا عبدالله کڏهري تعلقي سڪرنڊ واري وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو.

علمي فراغت بعدموري منگر تعلقي حيدرآباد ۾ ديني مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ شروع ڪيائين (688).جتان پوءِ وڃي ڳوٺ پيرجهنڊي تعلقي هالا ۾ پڙهائڻ لڳو ۽ ان سان گڏ تصنيف ۽ تاليف جو شغل بہ جاري رکيائين. سندس تصنيفات جو وچور هن طرح ٿئي ٿو(689):

1. مفتاح رشد الله تفسير كلام (سنڌي) 2. مجمع الفيوضات جو ترجمو جامع البركات (سنڌي) 3. صل الطالبين جو ترجمو (سنڌي) 4. تحفة المحبين في ملفوظات خير طب سين، 5. ملا بد منه جو ترجمو (سنڌي)، 6. انعام الباري ترجمو صحيح بخاري (سنڌي) ۽ 7. سنڌي گرامر ميزان صرف، ارشاد صرف علم الصيغه.

قاضي فتح محمد نظاماڻيءَ سياست ۾ مختصر حصو ورتو ۽ سندس سياسي خدمتون محض "خلافت تحريڪ" تائين محدود رهيون. پاڻ هن تحريڪ جو سرگرم کارڪن رهي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪيائين.

امن سيائي عالمن جي اڳواڻ مولوي فيض الكريم ٺاروشاهي ۽ "خلافت" جي حيشيت كي مشكوك بنائڻ لاءِ جڏهن "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو شايع كيو، ته خلافتي عالمن وري ان جو رد لكي ورهايو. مولانا فتح محمد نظاماڻي وخلافتي عالمن جو ساٿ ڏيندي. جيتوڻيك ان جي رد جي تصديق كئي (690). پر هجرت واري مسئلي تي ساڻن اختلاف ركيو(691).

پاڻ سن 1339هـ مطابق 1920ع ۾ رحلت ڪيائين(692).

مولانا حافظ فضل احمد

مولانا حافظ فضل احمد ولد غلام محمد تاريخ 17 ذوالحج سن 1321هـ مطابق 4 مارچ 1904ع تي ڪراچيءَ ۾ پيدا ٿيو. مدرسي "مظهر العلوم" کڏي ۾ حافظ قاري خان محمد وٽ قرآن مجيد حفظ ڪيائين. ان بعد ساڳئي ئي مدرسي ۾ مولانا محمد صادق. مولانامحمد صديق ۽ مولانا احمد علي لاهوريءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو.

فارغ التحصيل ئي، "مظهر العلوم" كذّي ۾ ئي درس وتدريس ڏيڻ شروع

كيائين (693).

سن 1939ع ير جڏهن مولانا عبيد الله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي "مدرسي مظهر العلوم" کڏي پر "بيت الحڪمت" ۽ "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهي، تہ مولانا فضل احمد به سندس سياسي صحبت اختيار ڪري، نہ صرف "بيت الحڪمت" جي درس ڀر شريڪ ٿيو، پر هن "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽيءَ" ۾ شامل ٿي انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ جدوجهد شروع ڪئي (694).

اهڙيءَ طرح مولانا محمد صادق کڏي واري جي رفاقت ۾ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان به ملڪ جي آزاديءَ لاءِ جاکوڙيائين. سن 1944ع ۾ حيدرآباد واري تاريخي قلعي ۾ جڏهن قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو منعقد ٿيو، تہ حافظ فضل احمد به ان ۾ شريڪ ٿي، آزاديءَ لاءِ ڪم ڪيو(695).

پاڻ تاريخ 13 شعبان 1381هـ مطابق 20 جنوري 1962ع تي وفات ڪري ويو(696).

مولانا حكير فضل الله سومرو

مولوي فضل الله ولد ڏاتر ڏنو سومرو سن 1318ع مطابق 1900ع ۾ شڪارپور ۾ چائو. ابتدائي تعلير شخارپور جي مولانا عبدالرحمٰن ميمڻ کان ورتائين(697). ان کان پرءِ مولانا عبدالحکير وٽ ڪجه وقت پڙهڻ بعد وڃي دهليءَ جي طيب ڪاليج مان طب جي فراغت لڏائين.

علىر جي تحصيل كان پوءِ شكارپور ۾ مدرسو "اشرافيه" قائر كري درس وتدريس ڏيڻ لڳو. انهيءَ مدرسي ۾ ساڻس مولانا عبدالحكيم شاهل سڌائي وارو به تعليم ڏيندو هو. پڙهائڻ سان گڏ مولانافضل الله صاحب شكارپور ۾ هك مطب به قائم كيو. پاڻ وڏو طبيب ثابت ٿيو جنهن كري پنهنجي مطب كي نهايت كاميابيءَ سان هلائيندو رهيو. مولانا صاحب سلوك ۾ حضرت مولانا ٿانويءَ جو خليفو مجاز هو(698).

مولانا فضل الله خلافتي عالمن مان هڪ هو. ۽ ڪيترو وقت "خلافت ڪاميٽي شڪارپور" جو نائب صدر ٿي رهيو(699). پاڻ انهيءَ عهدي تي فائز رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ سرگرميءَ سان حصو ورتائين ۽ جڏهن خلافتي عالمن انگريزي ڪپڙي جي پهرڻ خلاف هڪ فتديٰ جاري ڪئي، ته هن ان جي تصديق ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(700).

"خلافت تحريك"جي خاتمي كان پوءِ هن "سنڌ جي بمبئيءَ كان عليحدگيءَ

واري تحريك" ۾ حصو ورتو ۽ پاڻ "سنڌ آزاد جماعت" شڪارپور جو نائب صدر ٿي رهيو(701).

مولانا صاحب سن 1392هـ مطابق 1972ع ۾ لاڏاڻو ڪري ويو(702).

مولانا حكيم فضل محمد نوشهرائي

مولانا فضل محمد نوشهري، ضلع نواب شاه جو ويٺل هو. هن ڳوٺ فيض محمد آڳري تعلقي ميهڙ ۾ مولانا محمد آڳري کان تعليم حاصل ڪئي(703). پاڻ پنهنجي وقت جو سٺو حڪير بـ ٿي گذريو آهي.

مولانا فضل محمد صاحب خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سياست ۾ پير پاتو. پاڻ ساهتي پرڳڻي * جو سرگرم سياستدان هو، ۽ هن تحريك جي ضلعي خواه صوبائي سطح جي اجلاسن ۾ شريك ٿي، وطن جي آزاديءَ خاطر انگريزن جي خلاف ڀرپور كوشش كئي(704). مولانا صاحب ضلعي خلافت كاميٽي جو صدر بہ ٿي رهيو(705)، ۽ كيترا ئي جلسا سندس ئي صدارت هيٺ ٿيا(706). جڏهن انگريزن طرفان تركيءَ تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني كرائڻ لاءِ وائسراءِ هند ۽ گورنر جنرل "چيلمسفورڊ" كي 22 جون 1920ع تي هك يادداشتنامو ڏنو ويو ته ان تي صحيح كندڙن مان حكيم فضل محمد نوشهرائي به هك هو(707).

اهڙيءَ طرح جڏهن خلافتي عالمن جي طرفان انگريزي ڪپڙي جي استعمال جي حرام هئڻ جي فتويٰ جاري ڪئي ويئي تہ پاڻ بہ ان جي تصديق ڪيائين(708). هن محب وطن عالم تحريك ۾ نہ صرف عملي طرح حصو ورتو، پر ان جي مالي مدد به خوب كئي(709).

حڪير صاحب سن 1343ه مطابق 1924ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيو(710).

مولانا فيض محمد "واعظ"

مولانا فيض محمد ڏوڪري ضلعي لاڙڪاڻي جو رهاڪو هو. شروع کان آخر تائين جان محمد لاکير جي ڳوٺ ۾ مولانا عبد الرزاق وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت کان پوءِ ڏوڪريءَ ۾ درس و تدريس جو سلسلو شروع ڪيائين ۽ ان سان گڏوگڏ فضول رسمن کي ختر ڪرڻ لاءِ ميلن ملاکڙن تي پهچي. ماڻهن کي

[°] ساهتي پرڳئر هن وقت ضلعو نوشهرو فيروز سڏجي ٿو.

وعظ ۽ نصيحت به ڪندو هو (711).

مولانا فيض محمد صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كئي. پاڻ هن تحريك جو مخلص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو. جڏهن انگريزن امن سيا قائم كرائي، خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت كي مسخ كرڻ لاءِ مولوي فيض الكريم كان تحقيق الخلافت نالي فتويٰ جو هك رسالو شايع كرايو تـ خلافتي عالمن به ان جو رد لكيو، جنهن جي مولانا فيض محمد پڻ تائيد كئي(712).

آن کان پوءِ جڏهن خلافتي عالمن پوري ملڪ کي "دارالحرب" سمجهندي، ماڻهن کي هتان هجرت ڪري وڃڻ لاءِ فتوائون جاري ڪيون تہ مولانا فيض محمد صاحب لاڙڪاڻي ضلعي ۾ نہ صرف هجرت جي اهميت تي تقريرون ڪيون(713)، پر عملي طور تي پاڻ به ٻين سان گڏ هجرت ڪري وڃي ڪابل پهتو ۽ اتي ئي وفات ڪيائين(714).

مولانا حكيم قائم الدين احمد

مولانا قائر الدين ولد قادر بخش مهر، ڳوٺ موٽاڻي ضلعي جيڪب آباد ۾ چائو. عربيءَ جي تعليم مولانا قمرالدين انڍڙ کان ورتائين ۽ سندس ئي حڪم تي مولاناعبدالڪريم صاحب ڪورائي وٽ به پڙهندو رهيو. دستاربنديءَ کان پوءِ وڃي، دهليءَ جي طبيہ ڪاليج ۾ حڪيم اجمل جو شاگرد ٿيو.

طبيه ڪاليج دهليءَ ۾ فارغ التحصيل ٿي ، واپس سنڌ وريو ۽ اچي جيڪب آباد ۾ پنهنجو دواخانو کولي حڪمت جو ڌنڌو ڪرڻ لڳو (715).

مولوي قائر الدين صاحب مولانا تاج محمود امروتي جي سياسي حلقي جو عالر هو. سندس سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ٿيو. کيس هن تحريك ۾ بهري وٺڻ ۽ انگريز سركار جي خلاف عوام کي اڀارڻ جي ڏوه ۾ ٽيهن ڏيهن جي سزا برملي(716).

خلافت تحريك كان پرو من "جمعيت العلماء" ۾ شركت كئي ۽ وطن جي آزاديءَ تائين هك سرگرم كاركن جي حيثيت سان پنهنجون سياسي خدمتون جاري ركندو آيو (717). پاڻسن 1378هـ مطابق 1959ع ۾ رحلت كيائين (718).

مولانا پير حاجي مٺل شاه

پير حاجي مٺل شاه ولد پير مظهر الدين شاه سن 1301ه مطابق 1884ع ۾ ڳوٺ ٺلاه ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. هن قرآن شريف جي تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ وٺڻ کان پوءِ عربي ۽ فارسيءَ جي تعليم وڃي مولانا سکپور واري کان ورتي. ان کان پوءِ باقي تعليم مولانا غلام عمر سوني جتوئيءَ واري کان وٺي، فراغت حاصل ڪيائين(719). ان کان سواءِ پير صاحب پنهنجي دور جو سٺو حڪيم بہ ٿي گذريو آهي.

جڏهن خلافت تحريڪ شروع ٿي ته هن مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي رفاقت ۾ پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ لاڙڪاڻي ضلعي جي خلافت ڪاميٽي جو سرگرم ڪارڪن ۽ ورڪنگ ڪاميٽي جو ميمبر بہ ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح سندس ئي ڪوششن سان ڏوڪري تعلقي ۾ خلافت ڪاميٽيءَ جو بنياد پيو ۽ ڏوڪري، باڊه،سيهڙ ۽ ميهڙ ۾ هن تحريڪ جا جلسا منعقد ٿيا(720).

پاڻ خلافتي عالمن جو ساٿ ڏيندي انهن جي جاري ڪيل فتوائن جي تائيد ڪيائين (721). انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزاب ڀوڳڻي پئي(722). پير صاحب رئيس المهاجرين جناب جان محمد جوڻيجي سان گڏجي افغانستان ڏانهن هجرت به ڪئي، پر پوء کيس ٻين مهاجرن سان گڏجي واپس وطن ورڻو پيو.

هن محب وطن سنڌي عالم تاريخ 17 رمضان المبارڪ سن 1377هـ مطابق 7. اپريل 1958ع تي لاڏاڻو ڪيو(723).

مولانا حكير محكر الدين پرهياڙ

مولانا محڪر الدين پرهياڙ ڳوٺ ولي محمد پرهياڙ لڳ جيمس آباد ضلعي ٿرپارڪر جو رهاڪو هو. پاڻ پهريائين پنجاب جي شهر سيالڪوٽ ۾ تعليم ورتائين. ان کان پوءِ هندستان جي مشهور مدرسي"ندوة العلماء" ۾ داخل ٿيو. جتان فارغ التحصيل ٿي واپس سنڌ ۾ وريو. ۽ اچي جيمس آباد ضلعي ٿرپارڪر ۾ ڪافي عرصي تائين تعليم ڏنائين. ان کان پوءِ ڪجه وقت نصرپور ۾ به پڙهايائين ۽ آخر ۾ اچي حيدرآباد ۾ رهيو، جتي ميونسپالٽيءَ جي حڪمت خاني ۾ حڪمت جو شغل جاري رکندي. پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين. پاڻ معقولات ۾ وڏو ماهر ۽ هڪ مجاهد ماڻهو ٿي گذريو آهي (724).

جڏهن ملڪ جي اندر انگريزن کان آزاديءَ حاصل ڪرڻ لاءِ هلچل شروع ٿي ته مولانا محڪر الدين ڪانگريس ۾ شامل ٿي، ان جو سرفروش ورڪر ٿيو (725). ان کان پوءِ جڏهن خلافت تحريڪ شروع ٿي تہ پاڻ ان ۾ شريڪ ٿي، انگريزن جي خلاف حصو ورتائين. کيس خلافتين جي طرفان "ترڪ موالات" ۽ خلافت تحريڪ کي ڪامياب بنائڻ لاءِ مبلغ به مقرر ڪيو ويو (726). جڏهن خلافتي عالمن "ترڪ موالات" جي حق ۾ فتوائون جاري ڪيون تہ پاڻ نہ صرف انهن جي تصديق ڪيائين (727). پر عملي طور انهيءَ تحريڪ جي جلسن ۾ شريڪ ٿي، عوام کي انگريزي شين کان نفرت ڏياري، ديسي شين جي استعمال لاءِ آماده ڪندو هو (728).

سنڌ جو هيءُ عالم سياستدان پنهنجي ملڪ کي انگريزن کان آزاد ڪرائڻ سان گڏو گڏ انهن ملڪن جي آزاديءَ جو به خواهان هو، جيڪي انگريز سامراج جي قبضي هيٺ هئا. جڏهن جزيرة العرب انگريزن جي هٿن ۾ اچي ويو ته مولانا محڪر الدين عالمي سياست ۾ حصو وٺندي،انهيءَ ملڪ جي آزاديءَ لاءِ انگريزن جي خلاف تقريرون ڪيون. جنهن تي وقت جي سرڪار ناراض ٿي، ميرپور مان سندس زمين ضبط ڪري ٻين کي ڏيئي ڇڏي. کيس نه صرف ان کان محروم ڪيو ويو(729)، پر هن حريت پسند سنڌي عالم کي انهيءَ انگريز دشمنيءَ جي سبب جيلن پٺيان جيل به ڪاٽڻا پيا (730). پاڻ خلافت تحريڪ جي ڪيترن ئي عهدن تي رهي. " ان کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ جي بيحد ڪوشش ڪيائين.

خلالت تحريك كان پوءِ پاڻ "جمعيت العلماء" جي سياسي پليٽ فارم تان وطن جي آزاديءَ لاءِ كر كرڻ لڳو. جڏهن ميرپورخاص ۾ هن جماعت جي شاخ قائم ٿي، تہ كيس ان جو نائب صدر مقرر كيو ويو(731)، ان كان سواءِ 15 مارچ1925ع تي جڏهن

[°] پاڻ جن عهدن تي فائز رهيو. سي هئا:

i. عيوضى خلافت كامينى حيدرآباد

⁽ڏسو. روزانه "الوحيد". ڪراچي. مؤرخ 11 آڪٽوبر 1922ع. ص4).

أأ. ميمبر مركزي خلافت كاميني

⁽ڏسو، روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 14 فيبروري 1931ع، ص2) .

iii. ميمبر صوب سنڌ خلافت ڪاميٽي

⁽ڏسو، روزانه "الوحيد"، ڪراچي، مؤرخه 24 اپريل 1932ع، ص6).

iv. سيڪريٽري خلافت ڪاميٽي حيدرآباد

⁽ڏسو, روزانه "الوحيد". ڪراچي، مؤرخ 24 اپريل 1932ع، ص6).

سکر ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو ٿيو تہ کيس ان جي ورڪنگ ڪاميٽي جي ميمبر جي حيثيت سان بہ ڪر ڪرڻ جو موقعو مليو(732).

آخر ۾ جڏهن ڪاتگريس ۽ مسلم ليگ مذهبي بنيادن تي آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ هلچل شروع ڪئي تہ پاڻ مسلم ليگ جو صدر ٿيو ۽ جڏهن صوبہ سنڌ مسلم ليگ جي جنرل بورڊ جو الجلاس تاريخ 2 اپريل 1938ع تي حيدرآباد ۾ منعقد ٿيو تہ مولانا محڪر الدين به ان ۾ شريڪ ٿيو(733)۔ اهڙيءَ طرح هن مرد مجاهد سياسي خدمتون سرانجالم ڏيندي پنهنجي ڇار پوري ڪئي۔

مولانا محمد كتي

مولوي محمد ولد سعدالله کتي سن 1312ه مطابق 1894ع ۾ ڳوٺ گرنگاڻي تعلقي شاهبندر ضلعي ٺٽي ۾ ڄائو. اول کان آجر تائين مولانا محمد هاشر کٽيءَ وٽ پڙهي قارغ التحصيل ٿيو. ان کان پوءِ علم تي وڌيڪ دسترس حاصل ڪرڻ لاءِ مولانا فتح علي جتوئيءَ ننڍي وٽ بر ڪجھ وقت پڙهيو.

علمي قراغت کان بعد پهريائين گليل ۾ ۽ پوءِ مولانا محمد هاشر جي مدرسي ۾ تعلليم ڏيندو رهيو(734).

موالوي محمد کڻيءَ پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٿڻ سان ڪيو. پاڻ ڏکڻ سنڌ ۾ هن تحريڪ جي جلسن ۾ شريڪ ٿي انگريزن جي خلاف بهرو ور تائين. ۽ ڪيتري وقت تائين "خلافت ڪاميٽيءَ "گج گليل" ضلعي نشي جو سيڪريٽري به ٿي رهيو (735). مولانا صاحب انهيءَ عهدي تي رهي وطن جي آڙاديءَ لاءِ خوب پاڻ پتوڙيو. ۽ سندس سياسي خدمتون به هن ئي تحريڪ تائين محدود رهيون (736).

بال تاريخ 2 في الحج 1362ه مطابق 30 نومبر 1943ع تي وفات كيائين (737).

مولانا محمد سومرو

مولوي محمد ولد محمد عثنان ڪڇي سومرو سن 1307هـ مطابق 1889ع ڌاريءَ ڳوٺ سٿري ڪڇ مانڊويءَ ۾ پيدا ٿيو. پاڻ ديوبند ۾ وڃي پڙهيو، جتي حڪمت ۾ بـ مهارت حاصل ڪري ورتائين، پوءِ سگهوئي سنڌ واپس وريو ۽ اچي "مظهر العلوم" کڏي ۾ داخل ٿيو. جتي باقي تعليم مولانا محمد صادق ۽ مولانا محمد عثمان بالوچ کان پوري ڪري علمي فضيلت جي دستاربندي ڪيائين.

علم جي تحصيل بعد ڪافي عرصي تائين "مظهر العلوم" کڏي ۾ ئي درس

وتدريس ڏيندو رهيو ۽ آخر ۾ نئون آباد جي حاجياڻي مسجد ۾ اچي خطيب بڻيو (738). مولوي صاحب "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيو. پاڻ وطن جي آزاديءَ خاطر هن تحريڪ جو هڪ مخلص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. "خلافت تحريڪ" کي ڪامياب بڻائڻ لاءِ جڏهن محب وطن عالمن فتوائون جاري ڪيون، ته هن سندن ساٿ ڏيندي ڪيترين ئي فتوائن جي تائيد ڪئي (739). مولانا صاحب ڪيتري وقت تائين خلافت ڪاميٽي ڪراچيءَ جي "مجلس شوريٰ" جو به ميمبر ٿي رهيو (740)

پاڻ تاريخ7. ذي الحج 1388ه مطابق 26 جنوري 1969ع تي لاڏاڻو ڪري ويو (742).

مولانا محمد بنوي

مولانا محمد ولد يعقوب ميمڻ جي ولادت سن 1320ه مطابق 1902ع ۾ ٻني جي شهر ضلعي ٺٽي ۾ ٿي. قرآن شريف ۽ فارسيءَ جي تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ مولانا علي محمد وٽ پڙهيو. عربيءَ جي تعليم به ساڳئي ڳوٺ ۾ مولانا محمد يوسف وٽ پڙهيائين. ان کان پوءِ بوبڪن، "مظهر العلوم" کڏي، بهاولپور (پنجاب) ۾ به پڙهيو، ۽ آخر ۾ 27 شوال 1346ه تي وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو. جتي مولانا حسين احمد مدنيءَ ۽ مولانا محمد ابراهيم بلياريءَ وٽ تعليم حاصل ڪري واپس سنڌ وريو.

علمي فراغت کان پوءِ هڪ سال لاءِ سجاول جي مدرسي "دارالفيوض هاشمي" ۾ درس وتدريس ڏنائين. ان بعد شاه ڪرير بلڙيءَ لڳ ساداتن جي بستيءَ ۾ لڳاتار ڏهن سالن تائين پڙهائيندو رهيو. آخر ۾ لڏي اچي ڳوٺ راهوٺ لڳ پِنو ضلعي ٺٽي ۾ سڪونت اختيار ڪري، پنهنجون ديني خدمتون جاري رکيائين.

كيس تصنيف ۽ شعرو شاعريءَ سان به ذوق هو، سندس لكيل كتابن مان: 1-قصيده برده جو عربي شرح (قلمي)، 2- حفظ الايمان (قلمي)، 3- ترجمه الشمائل (قلمي)، 4 - تقريرات ترمذي (قلمي) ۽ 5- شاعريءَ ۾ بياض الشعر (قلمي) ذكر لائق آهن. (743)،

مولانا محمد ميمن "جميعت العلماءِ سند" جي ئي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪئي ۽ "جميعت العلماءِ مجلس عامل" جو ميمبر ٿي رهيو(744).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان علحدگيءَ واريءَ هلچل شروع ٿي، ته پاڻ به ان ۾ شامل ٿيو ۽ سنڌ جي آزاديءَ لاءِ ڪوشش ورتائين (745).

مولانا صاحب سن 1395ه مطابق 1975ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيو (746).

مولانا حاجي محمد قريشي

مولوي حاجي محمد ولد خان محمد قريشي سن 1321هـ مطابق 1903ع ڌاري ڳوٺ اڪتڙ لڳ بوبڪ ضلعي دادو ۾ ڄائو . قرآن مجيد پنهنجي ڳوٺ ۾ پڙهيو، ۽ فارسي مولانا محمد صادق ڳوٺ پارو جو کوه ۾ مولانا عبدالرؤف بختيارپوريءَ وٽ پڙهي پوري ڪيائين (747). ان کان پوءِ اميناڻيءَ جي مدرسي"عين العلوم" ۾ سيد امير محمد شاه وٽ باقي تعليم پوري ڪري فارغ التحصيل ٿيو. بعد ۾ سنڌ جي مختلف مدرسن ۾ درس وتدريس ڏنائين.

مولانا محمد صاحب وطن جي آزاديءَ خاطر "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيو. ۽ ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. پاڻ سن1920ع لاڙكاڻي جي "خلافت كانفرنس" ۾ بـ شركت كيائين(748). ان كان سواءِ انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ هن حريت پسند عالم, وطن جا وڻ ڇڏي. افغانستان ڏانهن هجرت بـ كئي (749).

پاڻ تاريخ 12 ربيع الآخر 1396ه مطابق 12، اپريل 1976ع تي وفات ڪيائين (750).

مولانا محمد مدني

مولانا محمد ولد اسلام تاريخ 9. شعبان 1314هـ مطابق 13 جنوري 1897ع تي تعلقي هالا ۾ ڳوٺ معروف ڀنڀري جي هڪ هندو خاندان ۾ پيدا ٿيو (751). ان زماني ۾ سنڌي فائينل جا ڇه درجا هوندا هئا، جيڪي هن اتي سنڌي اسڪول ۾ هڪ مسلمان استاد وٽ پڙهي پورا ڪيا. سندس استاد جي خوش اخلاقي جو مٿس اهڙو تہ اثر ٿيو، جو پاڻ دين اسلام ڏانهن راغب ٿي، وٽس قرآن شريف به پڙهي ورتائين.

مولانا صاحب جو پيءُ اڳ ۾ ئي فوت ٿي چڪو هو، جنهن ڪري پاڻ پنهنجي مامي جي سنڀال هيٺ رهيو. ننڍي عمر هئڻ جي ڪري کيس ڪو به مسلمان ڪرڻ لاءِ تيار نه هو، نيٺ عمر ڪوٽ پهچي ظاهر ڪيائين ته پاڻ قرآن شريف جي معنيٰ ۽ تفسير اتي پڙهڻ گهري ٿو، جتي قرآن شريف جي ٻولي ڳالهائي وڃي ٿي. اتفاق اهڙو ٿيو جو عمر ڪوٽ کان بمبئيءَ جي رستي ڪي حاجي حج تي وڃي رهيا هئا، جيڪي هن سڀاڳي ٻار کي پاڻ سان عربستان وٺي ويا.

اهر ترکي حکومت جو دور هو. پاڻ مديني ۾ رهي عربيءَ جي تعليم وٺڻ شروع ڪيائين. اڳتي هلي شريف - جيڪو مکي جو گورنر هو، تنهن جو وليعهد مديني ۾ آيو ۽ امتحان وٺندي جڏهن هن ٻار جو وارو آيو ته ان کي مدرسي ۾ اول نمبر ڏيئي، کيس مکي جي شيخ الاسلام جي نگرانيءَ هيٺ، تعليم ۽ تربيت لاءِ رکيائين. ان دور ۾ مولانا حسين احمد مدني به مديني ۾ پڙهائيندو هو، ان ڪري کائنس به ڪيترائي ڪتاب پڙهيو، ۽ اهڙيءَ طرح هن پنهنجي تعليم پوري ڪري ورتي.

ان كان پوءِ جدّهن شيخ الهند مولانا محمود الحسن مديني ۾ پهتو، ته كائنس بركت طور ٻيهر مشكواة شريف پڙهيائين. مولانا خليل احمد سهارنپوري، جيكو پڻ ان دور ۾ مديني ۾ آيل هو، تنهن كان هدايه پڙهيو. اڳتي هلي مولانا حسين احمد مدنيءَ جي چوڻ تي مديني كان ديوبند پهتو. اتي مولانا انور شاه كشميريءَ وٽ حديث جو دورو پڙهيائين. هن ئي دور ۾ عربيءَ ۾ مهارت هئڻ كري كيس علمي مجلس لاءِ ٻه مهينا حكيم اجمل پاڻ وٽ رهايو.

ديوبند كان واپس مكي آيو ۽ سالن جا سال حرم ۾ تعليم ڏنائين. جڏهن مولانا عبيد الله سنڌي اتي پهتو ته كائنس فلسف شاه ولي الله جي تعليم ورتائين ۽ سندس چوڻ تي سنڌ موٽي آيو ۽ كجه سال پيرجهنڊي ۾ تعليم ڏنائين(752). ان كان پوءِ سنڌ مدرسة الاسلام كراچي ۾ اچي عربيءَ ۽ اسلاميات جو استاد مقرر ٿيو. انهيءَ عرصي دوران پاڻ كيترائي كتاب به لکيائين ۽ قرآن مجيد جو سنڌيءَ ۾ ترجمو پڻ كيائين. مولانا صاحب سنڌ مدرسة الاسلام مان 28 فيبروري 1961ع تي رٽائر ٿيو.(753). بعد ۾ سن 1389ھ ۾ مدرسي "مظهر العلوم" كڏي ۾ مدرس بنجي كجه وقت عربي ادب جا كتاب پڙهايائين (754).

مولانا محمد مدنيءَ جدّهن شيخ الهند مولانا محمود الحسن ۽ مولانا عبيدالله سنڌيءَ سان مڪي ۽ مديني واري دور ۾ ملاقاتون ڪيون، ته هن جي سياسي سوچ ۾ پختگي اچي ويئي. تنهن کان اڳ جڏهن شيخ الهند مديني پهتو ته ان وقت "ريشمي رومال واري تحريڪ" شروع ٿي چڪي هئي. جنهن ڪري مولانا محمد مدنيءَ پاڻ کي انهيءَ خدمت لاءِ پيش ڪيو، پر کيس ننڍي عمر جو ڄاڻي خط نه ڏنو ويو.

ان کان پوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو ۽ اچي پير جهنڊي ۾ پڙهائڻ لڳو، تہ ان سان گڏ "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ بہ ڪر ڪندو رهيو.

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جُلا وطني کان پُوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين، ته مولانا مدني صاحب پڻ ان سان وابسته رهي پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو (755).

مولانا صاحب 83 ورهين جي ڄمار ۾ تاريخ 7، محرم سن 1399هـ مطابق 7. ڊسمبر، 1978ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو (756).

مولانا محمد ابراهيم ڳڙهي ياسيني

مولانا محمد ابراهير ولد مولانا محمد هاشر تاريخ 9, ربيع الاول 1307هـ مطابق 3. نومبر 1889ع تي ڳڙهي ياسين ضلعي شڪارپور ۾ ڄائو. (757) ابتدائي تعليم پنهنجي والد بزرگوار مولانا محمد هاشر کان ورتائين. ان کان پوءِ باقي تعليم پنهنجي وڏي ڀاءُ مولانا محمد قاسم صاحب وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ وڃي مولانا عبدالغفور همايونيءَ جي مدرسي ۾ پڙهائڻ لڳو. ان كان پوءِ جڏهن سندس ڀاءُ مولانا محمد قاسم هيءُ جهان ڇڏيو، تہ پاڻ موٽي اچي پنهنجي مدرسي ڳڙهي ياسين ۾ پڙهائڻ سان گڏ فتويٰ نويسيءَ جو شغل اختيار كيائين. ان مشغوليءَ جي باوجود پاڻ كيترا كتاب به لکيائين، جن مان سندس ڇپيل كتابن جو وچور هن طرح آهي (758).

1. ترجمومشكوة شريف (ربع اول) 2. رسالو ازالة الارتياب (فارسي)، 3. رساله حكم فوتوگراف (عربي)، 4. قوت ايمان (سنڌي)، 5. العقول الصواب (سنڌي)، 6. مناسك حج (سنڌي)، 7. رساله جماعت ثانيه (فارسي)، 8. لباس النبي على (سنڌي)، 9. تعليم المسلمين (سنڌي)، 10. آداب رسول الله على (منظوم فارسي)، 11. "ما مريدان" (منظوم فارسي)، 31. العباد فيما يتعلق بالضاد.

مولانا صاحب سنڌ ۽ بلوچستان ۾ قضا جي عهدي تي پڻ فائز رهيو. ان کان سواءِ پاڻ فارسي، اردو، عربي ۽ سنڌيءَ ۾ شاعري به ڪيائين ۽ پنهنجي شاعريءَ ۾ "ناظر"

تخلص ڪر آڻيندر هو(759).

مولوي صاحب همايوني مكتب فكر جو سياستدان هو. جدِّهن "خلافت تحريك" شروع تي، ته هن وطن جي آزاديءَ خاطر جيتوڻيك ان ۾ شموليت اختيار كئي ۽ خلافتي عالمن جو سات دِّيندي، انهن جي جاري كيل فتوي "اظهار الكرامة"جي تصديق كري (760). پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت دِّنو. پر "هجرت" خواه "ولايتي كپڙي جي پهرڻ جهڙن مسئلن تي ساڻن اختلاف ركيائين (761).

"خلافت تحريك" كان پوءِ "جمعيت العلماء" (احناف) جو سرگرم كاركن تي رهيو (762).

مولانا صاحب تاريخ 7 شعبان 1384هـ مطابق 12 بسمبر 1964ع تي رحلت كئي (763).

مولانا محمد ابراهيم بنوي

مولانا محمد ابراهير ولد مولانا دين محمد چانڊيو سن1327هـ مطابق 1909ع ۾ بني تعلقو ميرو خان ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي عربي ۽ قارسيءَ جي تعليم پنهنجي والد بزر گوار مولانا دين محمد وٽ ڳوٺ ۾ ئي حاصل ڪيائين. ان يعد علي خان ۽ نورنگ جي مدرسن ۾ پڙهيو، ۽ آخر ۾ محبوب تنيي ۾ مولانا محمد السماعيل قريشيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري، فضيلت جي دستار بندي ڪيائين.

علمي قراغت بعد پنهنجي والد واري مدرسي ۾ درس وتدريس ڏيندو رهيو (764). پاڻ پنهنجي دور جو بهترين مبلغ هئڻ سان گڏ. سٺو شاعر يہ ٿي گڏريو آهي۔ هن پنهنجي شاعريءَ ۾ "اثيم" تخلص استعمال ڪيو آهي (765).

مولانا محمد ابراهير جي سياسي تربيت پنهنجي والد وت ٿي. جنهن " خلافت تحريڪ ير حصو ور تو هو. مولانا محمد ابراهير اڃا ننڍي ڄار جو هو. ته اها تحريڪ هلي ۽ ختر ٿي ويئي، جنهن ڪري کيس ان ۾ حصي وٺڻ جي سعادت نصيب ترقي. ان کان پوءِ جڏهن " ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" جماعت مذهبي بنيادن تي آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ ڪوششون ور تيون. ته پاڻ "مسلم ليگ" ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيائين. ملك جي آزاديءَ لاءِ هن ئي جماعت جي سياسي ميدان تان سرگرميءَ سان حصو وٺڻ لڳو. ميندس سني سهڪار جي ڪري " مسلم ليگ" جا جلسا هن جي مدرسي ۾ يه متعقد ٿينتا هئا (766). ان کان سواءِ مولوي صاحب سنڌ اندر هن جماعت جي سڏايلل جلسن ۾ شريڪ ٿي. وڃي ان جي ڪاميابيءَ واسطي خوب تقريرون به ڪندو هو (767). اهڙيءَ ظرح جڏهن "مسجد منزل گاه" تحريڪ شروع ٿي ته هن ان ۾ به ڀرپور حصو ورتو (1687).

پاڻ تاريخ 4 شعبان 1399هـ مطابق 30 جون 1979ع تي لاڏاڻو ڪري ويو (769).

مولانا پير آقا محمد اسماعيل جان

پير آقا محمد اسماعيل جان ولد پير آقا محمد حسين جان تاريخ 5 ذي القعد 1307هـ مطابق 24جون 1890ع تي ٽکڙ ضلعي حيدر آباد ۾ ڄائو (770)، ابتدائي تعليم علام يوسف کان ورتائين. ان کان پوءِ "دلگير" کان قرآن مجيد. سنڌي، فقه ۽ فارسي پڙهي فارغ ٿيو (771).

پاڻ پنهنجي دور جو نياميارو شاعر ٿي گذريو آهي، ۽ شاعريءَ ۾ "روشن" تخلص اختيار ڪيو هئائين (772). هن ڪيترا ڪتاب به لکيا، جن جو مختصر وچور هن طرح آهي:

1- ديوان روشن (فارسي)، 2- انشائ روشن و خطبه هائ نظر ۽ نثر (فارسي)، 3- نسيم چمن در تتبع نفحة اليمن (فارسي)، 4- جواهر نقيسه تصوف جي فن تي، 5 ديوان روشن (سنڌي) ۽ 6- خطبات سنڌي (منظوم) قابل ذكر آهن (773).

پير صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگي جو آغاز ڪيو. پاڻ نه صرف خلافتي عالمن جي جاري ڪيل فتوائن جي تصديق ڪيائين (774)، پر انهن جڏهن "انگوره فند" ٿي گڏ ڪيو، ته هن به ان ۾ هٿ ونڊايو (775).

ان كان سواءِ هن "جمعيت العلماء" جي سياسي ميدان تان به آزاديءَ لاءِ جدوجهد كئي. پير صاحب ٿرپاركر ضلعي جي جمعيتي عالمن مان هك هو، ۽ سندس ئي كوششن سان ميرپورخاص ۾ هن جماعت جي شاخ قائم ٿي، ۽ پاڻ ان جو باني صدر بڻيو (776).

ان کان پوءِ "مسلم لیگ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين. ۽ جڏهن هن جماعت "مسجد منزل گاه" واري مسئلي کي هٿ ۾ کنيو، ته پاڻ به انهيءَ تحريڪ ۾ ڀرپور حصو ورتائين.

پير صاحب تاريخ 14 جماد الثاني 1361هـ مطابق جون 1942ع تي هي؛ جهان ڇڏيو (777).

مولانا محمد اسماعيل يتو

مولانا محمد اسماعيل ولد ملا كمن ڀٽو سن 1292ه مطابق 1875ع ڌاري گهوٽكي ضلعي جيكب آباد ۾ ڄائو (778). ابتدائي تعليم ڳوٺ حسين ٻيلي ۾ ور تائين، ان كان پوءِ گهوٽكي، دين پور, پير جهنڊي ۽ ٻين مختلف مدرسن مان پڙهڻ بعد وڃي ديوبند ۾ مولانا محمود الحسن وت دروه حديث پڙهيو, ۽ فارغ ٿي واپس سنڌ وريو (779).

علم جي تحصيل کان پوءِ گهوٽڪيءَ ۾ ديني مدرسو قائم ڪري درس وتدريس جو شغل اختيار ڪيائين (780).

مولانا محمد اسماعيل خلافتي عالمن مان هك هو. تحريك جي آغاز كان وٺي انجام تائين، هن انهيءَ ۾ سرگرميءَ سان حصو ورتو.

جدّهن مولوي فيض الكرير "خلافت تحريك" جي حقيقت كي بدلائن لاءِ "تحقيق الخلافت" نالي هك فتوي جو رسالو شايع كيو، ته خلافتي عالمن وري ان جو رد لكيو، مولانا محمد اسماعيل خلافتين جو سات ذيندي، نه صرف سندن لكيل رد جي تصديق كئي (781)، پر پوءِ جدّهن "ترك مولات" جو دور آيو، ته پاڻ ان ۾ به علمي خواه عملي طور تي ساڻ گذرهيو (782).

مولانا صاحب سن 1376ه مطابق 1957ع ۾ رحلت ڪئي (783).

مولانا محمد اسماعيل عودي

مولانا محمد اسماعيل ولد مولانا نبي بخش جي ولادت سن 1315 هـ مطابق 1897 ع ير ٿي. اول کان وٺي آخر تائين عوديءَ ۾ پنهنجي والد بزر گوار مولانا نبي بخش وٽ تعليم حاصل ڪري دستار بند ٿيو (784).

علمي فراغت كان پوءِ مولانا صاحب ڳڙهي حسن ۾ مدرسو قائم كري تعليم ڏيڻ شروع كئي، ۽ ان سان گڏ مطالعي ۽ تصنيف جي شغل كي به جاري ركيائين. سندس لكيل كتاب - جيكي اڃا اڻ چپيل آهن، تن جو وچور هن طرح آهي(785).

١- نور الايمان في اعجاز القرآن (عربي), 2- نهايت البحث في مسائل الارث, 3- صفوة العرفان بمفردات القرآن 2 جلد (عربي), 4- عزة النحو (عربي), 5- اظهار الغرية في اعفاء اللحية- تفسير والتين والزيتون (عربي مطبوع), 6- تحفة العاشقين (فارسي), 3- چهل حديث (مطبوع).

مولوي محمد اسماعيل عودي مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي سياسي حلقي سان واسطو رکندو هو. جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي تہ پاڻ وطن جي آزاديءَ خاطر ان ۾ شامل ٿي، ڀرپور حصو وٺڻ لڳو. هن خلافتي عالمن جو ساٿ ڏيندي انهن جي جاري ڪيل ڪيترين ئي فتوائن جي تصديق ڪئي (786)، ۽ ان سان گڏ تحريڪ جي کاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد بر ڪيائين (787).

"خلافت تحريك" كان پوءِ مولوي صاحب "جميعت العلماءِ" ۾ شركت كري ملك جي آزاديءَ لاءِ پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركيون. سن1931ع ۾ جڏهن "جمعيت" جي ضلعي جيڪب آباد واري شاخ "جميعت المبلغين" قائم ڪئي. تہ کيس ان جو نائب صدر مقرر كيو ويو هو (788).

پاڻ تاريخ 29 رمضان 1390هـ مطابق 29 نومبر 1970 تي وفات ڪيائين (789).

مولانا محمد اسماعيل لغاري

مولانا محمد اسماعيل ولد حاجي خان محمد لغاريء جي ولادت سن 1326ه مطابق 1908 ع ڌاري لڳ ڳوٺ جروار ٿيٻي تعلقي ٽنڊي الهيار ضلعي حيدر آباد ۾ ٿي. ابتدائي تعلير ڳوٺ جروار ٿيٻي ۾ حافظ محمد تقي هاليپوٽي کان ورتائين. ان کان پوءِ ڳوٺ حاجي وريام خاصخيلي تعلقي جيمس آباد ۾ وقت جي جيد عالم مولانا محمد نوح خاصخيليءَ وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ وڌيڪ تعليم جي تڪميل لاءِ مولانا محمد صالح ميرپور خاص واري وٽ پهتو. جتان پوءِ سگهوئي وڃي مدرسي محمديم راندير ضلعي سورت گجرات ۾ مولانا محمود الحسن اجميريءَ وٽ پڙهڻ ويٺو. تنهن کان پوءِ رياست پالڻپور شهر ۾ مولانا نذير احمد صاحب وٽ ڪجه وقت پڙهڻ کان پوءِ واپس سنڌ ۾ موٽي اچي ماتليءَ لڳ ٽوهن جي ڳوٺ ۾ مولانا علي محمد صاحب درس وٽ عربيءَ جا درمياني ڪتاب پڙهيو، ۽ آخري چار سال مولانا محمد عثمان قرانيءَ وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ ذي القعد 1352هـ مطابق فيبروري 1934ع ۾ اچي مسڻ وڏيءَ ۾ مدرسه "دارالهديٰ" قائم كري هك طرف درس و تدريس جو سلسلو شروع كيائين، ۽ ٻئي طرف عوام الناس ۾ سياسي توڙي سماجي شعور پيدا كرڻ جو آغاز كيائين.

مولانا صاحب سنڌ جو مايہ ناز عالم ، فاضل ۽ مجاهد شخص ٿي گذريو آهي. پاڻ وقت جي وڏير ڪي ظالماڻه نظام خلاف جدوجهد ۾ کيس ڪافي مشڪلاتن کي بہ منهن ڏيڻو پيو. ايتري قدر جو هن بيباڪ سنڌي عالم کي ڪيترائي ڀيراجيل جي سزاب ڀوڳڻي پيئي.

مولانا لغاري صاحب ديني ۽ دنياوي مشغولين هوندي به تصنيف ۽ شعر و شاعريءَ ۾ شغل ڪر آندو آهي. ۽ شاعريءَ ۾ "ذبيح" تخلص ڪر آندو آهي. ۽ هن 1- ديوان ذبيح (سنڌي)، 2- بياض ذبيح (فارسي) ڪتاب لکيا، جيڪي اڃا تائين غير مطبوع آهن.

مولانا محمد اسماعيل آزاديءَ جي تحريك ۾ حصو وٺندي "جمعيت العلماءِ هند" ۾ شريك ٿيو. پاڻ هن جماعت جي سياسي ميدان تان تقريرن ۽ تحريرن ذريعي وقت جي انگريز حكومت جي مخالفت كيائين ۽ سنڌ ۾ تحريك جي اڳواڻ مولانا محمد صادق كڏي واري جي رفاقت ۾ وڃي دهليءَ جا به در كڙكايائين. مولانا صاحب كيتري وقت تائين "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي مجلس عامل جو ميمبر ٿي رهيو (790)، ۽ جماعت طرفان سڏايل جلسن ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڙ پتوڙيائين (791).

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ جي خاتمي کان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي "بيت الحڪمت" ۽ "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين، تـ مولانا صاحب پڻ انهن سان وابستہ رهيو.

اهڙيءَ طرح پاڻ انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ وارن ساڳين اصولن تي "ڪانگريس" جماعت جو پڻ همدرد رهيو، ۽ ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ بہ پنهنجون سياسي خواھ سماجي سرگرميون جاري رکندو آيو (792). *

مولانا محمد اكرم انصاري

مولانا محمد اكرم ولد حاجي عبدالحق انصاري سن 1307هـ مطابق 1890ع داري هالا نوان ضلعي حيدرآباد ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي قرآن مجيد ناظره ۽ حفظ جي تعليم هالا ۾ خليفي عبداللطيف كان ورتائين. ان بعد عربي ۽ فارسي پنهنجي ڀاءُ مفتي سعدالله وٽ خير پور ۾ پڙهڻ كان پوءِ اچي مدرسي "دارالرشاد" پيرجهنڊي ۾ داخل ٿيو. جتي مولانا عبيدالله سنڌيءَ وٽ باقي تعليم پوري كري فضيلت جي دستاربندي كيائين.

علمي فراغت كان پوءِ مولانا محمد اكرم كجه وقت تائين پنهنجي شهر هالا مردسة القرآن والحديث قائر كري تعليم ڏيڻ لڳو. بعد ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي مشوري تي پيرجهنڊي جي مدرسي ۾ اچي درس وتدريس ڏنائين. ان كان پوءِ سجاول جي مدرسي "دار الفيوض هاشمي" ۽ ڀينڊي جي مدرسي "مدينة العلوم" ۾ پڻ پڙهايائين. ان بعد كجه وقت دورو نارو ضلعي ٿرپاركر ۾ بددين جي خدمت كيائين.

مولانا صاحب كي مطالعي ۽ لكڻ جو به شوق هوندو هو. ۽ پاڻ "ارشاد صرف" (ڇپيل) ۽ "جمعي جو خطبو" (قلمي) پڻ تصنيف كيائين (793).

مولانا محمد اڪرم انصاري پيرجهنڊي جي مدرسي ۾ شاگرديءَ واري زماني ۾

^{*} مولوي صاحب تاريخ 23 ذوالقعد 1409هـ مطابق28 جون1989ع تي رحلت ڪري ويو. (هيءَ معلومات مولوي محمد يامين شورو. ساڪن مسڻ وڏيءَ کان 14 جون2008ع تي ملي).

ئي پنهنجي مربي استاد ۽ انقلابي اڳواڻ حضرت مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي سياسي صحبت حاصل ڪري چڪو هو. "خلافت تحريڪ" جي زماني ۾ جڏهن پيرجهنڊي ۾ ان جون گڏجاڻيون ٿيڻ لڳيون. ته پاڻ ان ۾ به شريڪ ٿيندو رهيو. انهيءَ جذبي هيٺ مولوي صاحب ٿرپار ڪر ضلعي جي ميلن ۽ ملاکڙن ۾ پهچي وڃي ماڻهن کي "خلافت تحريڪ" جي اهميت کان واقف ڪندو هو (794).

وقت جي سركار جڏهن "امن سيا" قائم كرائي ۽ ان جي روح روان مولوي فيض الكريم ٺاروشاهي آكي اڳيان آڻي، "خلافت تحريك" كي ناكام بنائڻ لاءِ كائنس "تحقيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو شايع كرايو. ته خلافتي عالمن وري ان فتويٰ جو رد لكيو. مولانا محمد اكرم صاحب خلافتين جو ساٿ ڏيندي ان رد جي تصديق كئي (795). اهڙيءَ طرح هن تحريك دوران خلافتين جي قائم كيل فندن ۾ به مولانا صاحب دل كولي چندا ڏنا (796).

جڏهن خلافتي عالمن"ترڪ موالات" جو سڏ ڏنو. ته هن محب وطن سنڌي عالمر سندس "ملا اسڪول" کي ملندڙ سرڪاري گرانٽ وٺڻ کان انڪار ڪري ڇڏيو (797). کيس ڌارين حڪمرانن خلاف جدوجهد جي پاداش ۾ ٻارهن مهينا جيل جي سزا به ڀوڳڻي پئي (798).

مولانا محمد اكرم سنڌ كان علاوه هند جي جلسن ۾ بہ شريك ٿي ملك جي آزادي لاءِ پاڙ پتوڙيو، ۽ "خلافت تحريك" سان گڏ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان بہ انگريزن خلاف كر كيائين (799).

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطني کان پوءِ واپس سنڌ وريو، ۽ اچي پيرجهنڊي ۾ "بيت الحڪمت" قائر ڪري، درس ڏيڻ لڳو تہ مولانا محمد اڪرم انصاري نه صرف ان جي درس ۾ شريڪ ٿيو (800)، پر سندس ٺاهيل "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽيءَ" سان به وابستہ رهي، هن پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيون (801).

مولانا صاحب تاريخ 7. ذي الحج 1377هـ مطابق 26 جولاءِ 1958ع تي لاڏاڻو ڪري ويو (802).

مولانا محمد امين آريسر

مولانا الحاج محمد امين ولد حافظ صدرالدين آريسر جي ولادت سن 1316هـ مطابق 1898ع ڌاري ضلعي ٿرپارڪر ۾ ٿي. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ ڪجه عرصو مدرسي قرانيه ۾ مولانا محمد عثمان قرانيءَ وٽ پڙهيو. ۽ آخر ۾ جڳو ڀرڳڙيءَ جي مدرسي ۾ مولانا حڪير معين الدين صديقي سيوهاڻيءَ وٽان باقي تعليم پوري ڪري فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ ساڳئي ئي مدرسي ۾ درس و تدريس ڏيڻ شروع ڪيائين. مولانا صاحب سٺو اديب ۽ شاعر پڻ هو. ۽ پنهنجي شاعريءَ ۾ "امين" تخلص استعمال كندر هو.

جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي ته پاڻ ان ۾ شامل ٿي. پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيائين، ۽ هن تحريڪ جو مخلص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو (803). جڏهن محب وطن عالمن انگريزي شين جي استعمال خلاف فتوائون جاري ڪيون، ته هن نه صرف انهن فتوائن جي تصديق ڪئي (804). پر تحريڪ جي مالي مدد جي لاءِ چندن گڏ ڪرائڻ ۾ به خلافتي عالمن جو ڀروپور سات ڏنائين (805). "خلافت تحريڪ" ۾ سرگرميءَ سان حصي وٺڻ ۽ انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ کيس هڪ سال لاءِ جيل به اماڻيو ويو (806).

"خلافت تحريك" كان سواءِ مولانا صاحب "كانگريس" ۽ "جمعيت العلماءِ" ۾ بر شريك ٿي وطن جي آزادي لاءِ پاڻ پتوڙيو (807) ۽ آخر ۾ "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار كري، ملك جي ورهاڱي تائين جدوجهد كندو رهيو (808).

پاڻ سن 1380هـ مطابق 1960ع ڌاري هيءُ جهان ڇڏيائين (809).

مولانا محمد پريل منگيو

مولانا محمد پريل ولد حاجي ابوالخير منگيو سن 1318ه مطابق 1900ع ڌاري ڳوٺ ڇتن شاه تعلقي سڪرنڊ ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. اول کان وٺي آخر تائين ان وقت جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" پير جهنڊي ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ. مولانا محمد اڪرم انصاريءَ ۽ مولانا عبدالعليم متووڪڇيءَ کان تعليم وٺي فارغ ٿيو.

علر جي تحصيل کان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ڇتن شاه ۾ اچي زمينداري سنيالڻ لڳو. ۽ ان سان گڏ نياڻين لاءِ هڪ "ملا مڪتب" قائم ڪرائي، ڪافي وقت تائين ان ۾ بنا معاوضي پڙهائيندو رهيو (810). کيس علم طب ۾ بو ڏي مهارت حاصل هئي. (811)

مولانا محمد پريل پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كيو. پاڻ خلافت كاميٽي تعلقي سكرنڊ جو مبلغ ۽ جنرل سيكريٽري ٿي رهيو. ۽ ان سلسلي ۾ كيترا جلسا بـ كاميابيءَ سان كرايائين. هن "قطع تعلقات" تي عمل كندي مختلف ڳوٺن ۾ وڃي ولايتي كپڙو ساڙايو. جن مان راهب شاه. جوڻا، ۽ ڇتن شاه قابل ذكر آهن. ان كان سواءِ پاڻ هن تحريك جي مالي مدد به كيائين، ۽ پڇاڙيءَ تائين انگريزن جو كٽر دشمن ٿي رهيو (812).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان علحدگيءَ واري تحريڪ هلي، ته هن به ان ۾ شريڪ ٿي ڀرپور حصو ورتو. سن 1931ع ۾ جڏهن ڇتن شاه ۾ "سنڌ آزاد جماعت" قائم ٿي. ته کيس ان جو ناظر مقرر ڪيو ويو هو (813).

مولانا صاحب سنڌ جي بمبئيءَ کان جدائي بعد نظرياتي طرح "مسلم ليگ" سان وابستہ رهيو. هن جماعت جڏهن سکر جي "مسجد منزل گاهـ" جي تحريڪ هلائي تہ پاڻ به ان ۾ بهرو ورتائين (814).

مولانا محمد پريل سن 1363هـ مطابق 1944ع ۾ هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏي راهي ٿيو (815).

مولانا حافظ خواج محمد حسن جان سرهندي

خواج محمد حسن جان ولد خواج عبدالرحمٰن تاريخ 6 شوال 1278ه مطابق 6. الهريل 1862ع تي قنڌار, افغانستان ۾ ڄائو. کيس تعليم وتربيت پنهنجي والد بزرگوار جي هٿ هيٺ ملي (816). سن 1297ه ۾ اتان هجرت ڪري ٽکڙ, ضلعي حيدرآباد سنڌ ۾ اچي پنهنجي والد سميت آباد ٿيو. جتي مولانا لعل محمد متعلويءَ کان ب تعيلم حاصل ڪيائين (817). ان کان پوءِ هن صاحب پنهنجي زندگي جو ڪافي عرصو وڃي مڪي شريف ۾ گذاريو، ۽ اتي ئي عربي ۽ حديث جي تعليم کان سواءِ قرآن شريف ب حفظ ڪري ورتائين (818).

مكي كان واپس سنڌ اچي ٽكڙ ۾ كجه وقت تائين درس وتدريس جو شغل جاري ركيائين. پاڻ كيترن ئي كتابن جو مصنف به ٿي گذريو آهي، ۽ سندس لكيل كتابن مان- "شغاء الامراض" (عربي)، انيس المريدين" (فارسي)، "عهد ومواثيق" جو فارسيءَ ۾ ترجمو "انساب الانجاب"، اصول الاربعة في ترديد الوهابية" ۽ "سفر نام عربستان" ذكر لائق آهن (819).

حافظ محمد حسن جان "خلافت تحريك" مر حصي وٺڻ سان سياسي ميدان مر قدمر ركيو. جيئن ته پاڻ روحاني گهراڻي جو چشع و چراغ هو، ان كري هن تحريك دوران گهڻي حد تائين علمي خدمت مر شريك رهيو. پاڻ جيتوڻيك "اظهار الكرامة" نالي خلافتي عالمن جي جاري كيل فتويٰ جي تصديق كيائين (820). ۽ "تركِ موالات"

بابت سنڌ ۽ هند جي عالمن طرفان ڏنل فتويٰ جي بہ تائيد ڪيائين (821)، پر ولايتي ڪپڙي جي پهرڻ واري مسئلي تي هن خلافتين سان اختلاف ظاهر ڪيو (822). تنهن هوندي به هن صاحب تحريڪ کي ڪامياب بنائڻ لاءِ ان جي مالي مدد به ڪئي (823).

"خلافت تحريك" كان پوءِ حافظ صاحب كافي عرصي تائين سياست كان پري رهيو. پر پنهنجي ڄمار جي آخري حصي ۾ "مسلم ليگ" سان وابسته رهيو (824).

پاڻ تاريخ 2- رجب 1365ه مطابق 3- جون 1946ع تي رحلت ڪري ويو (825).

مولانا محمد حسن تالير

مولوي محمد حسن ولد مولوي حاجي محمد علي ٽالپر جي ولادت سن 1318هـ مطابق 1900ع ۾ ٽنڊي ڄام ضلعي حيدرآباد ۾ ٿي، "مدرسه عربيہ" قراني ڀنڀري ضلعي ٿرپارڪر ۾ مولانا محمد عثمان قرانيءَ کان تعليم وٺي سن 1926ع ڌاري دستاربندي ڪيائين.

علمي فراغت بعد پنهنجي والدجي قائر ڪيل "مردس عربيـ" لڳ 68 موري ديه نصرت ضلعي نواب شاه ۾ درس وتدريس ڏيڻ لڳو. ساڳئي وقت حڪمت جو پيشو اختيار ڪري. بنا ڪنهن مذهبي مت ڀيدجي غريبن جو مفت علاج ڪندو رهيو (826).

مولوي صاحب "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي پنهنجي سياسي زندگي جي شروعات كئي، ۽ ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو (827).

هن تحريك جي خاتمي كان پوءِ "كانگريس" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين. ۽ آخر ۾ "هاري كاميٽيءَ" ۾ شريك ٿي پنهنجون سياسي سر گرميون جاري ركندو آيو (828).

مولوي صاحب تاريخ 14 ذي الحج 1381هـ مطابق 19 مئي1963ع تي وفات كئي (829).

مولانا آقا محمد حسين جان سرهندي

خواج محمد حسين جان ولد خواج عبدالرحمٰن سن 1290ه مطابق 1873ع ۾ ڳوٺ ارغستان, علائقي قنڌار ۾ پيدا ٿيو. پاڻ اڃا اٺن سالن جو مس هو تہ سندس والد افغانستان مان هجرت ڪري، ٽکڙ ضلعي حيدرآباد سنڌ ۾ اچي سڪونت پذير ٿيو (830). ان کان پوءِ سن1329ه ۾ ٽکڙ ڇڏي وڃي تعلقي ساماري ضلعي ٿرپارڪر ۾ "پيرسرهندي" نالي ڳوٺ ٻَڌائي، هميشد لاءِ اتي رهائش اختيار ڪيائين.

پير صاحب علم جو فيض حافظ محمد يوسف, مولانا لعل محمد كان سواء ٻين كيترن ئي نياميارن عالمن كان پرايو. ديني علم جي فراغت كان پوءِ طب جي تعليم بحاصل كري ورتائين. ان كان سواء كيس بالپثي كان وٺي شعرو شاعريءَ سان به شغف هوندو هو. پاڻ پنهنجي دور جو فارسي ۽ عربيءَ ۾ سٺو شاعر هو. ۽ "سرهندي" تخلص سان شاعري كئي اٿس، سندس كلام "خيابان سرهندي" جي نالي سان، سندس ئي حياتيءَ ۾ ڇپجي چكو هو (831).

مولوي محمد حسين جان خلافتي عالمن مان هڪ هو. جنهن سندن جاري ڪيل حيترين ئي فتوائن جي تصديق ڪري (832). پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو تُبوت ڏنو. "خلافت تحريڪ" کان پوءِ "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان به انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکندو آيو (833). هن سن 1367هـ مطابق 1948ع ۾ لاڏاڻو ڪيو. (834).

مولانا محمد حسين صديقي

مولانا محمد حسين ولد حافظ پير محمد صديقي عرف كنجهو سن 1315ه مطابق 1896ع داري سند جي تاريخي شهر ٺٽي ۾ ڄائو. ابتدائي فارسيءَ جي تعلير پنهنجي والد وٽ ۽ ڪجه تعلير قاضي عبدالرحير کٽيءَ کان وٺڻ کان پوءِ ڪراچيءَ ۾ پهچي اڍائي سالن اندر مولانا عبد الكريم درس وٽ عربي، صرف ۽ نحو جا كتاب پورا كيائين. ان كان پوءِ مٽيارين ۾ مولانا قاضي لعل محمد صاحب متعلويءَ وٽ علم الميراث، پير غلام مجدد كان كنزالدقائق، ۽ باقي تعليم پير حاجي محمد عمر جان سرهنديءَ کان وٺي دستاربند ٿيو.

علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي وڏن جي قائر ڪيل عربي مدرسي "دارالرشد" ٺٽي ۾ درس وتدريس جو شغل جاري رکيائين.

مولانا محمد حيس پنهنجي استاد پير غلام مجدد سرهنديءَ جي سياسي صحبت اختيار كري، "خلافت تحريك" ۾ شريك ٿيو پير غلام مجدد صاحب جڏهن به سنڌ جي ڏاكڻي علائقي ۾ پنهنجا سياسي دورا كندو هو، ته مولانا محمد حسين به سائس گڏجي "خلافت تحريك" جو پرچار كندو هو (835). جڏهن سنڌ اندر خلافت كاميٽيون برپا ٿيڻ لڳيون ته هن كي "خلافت كاميٽي ئٽي" جو صدر مقرر كيو ويو (836)

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولوي صاحب "جمعيت العلماء" ۾ شمولين اختيار

ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ جاکوڙ ڪئي. پاڻ هن جماعت جي اهر گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿيندو هو (837).

جڏهن سکر بئراج جي کوٽائي جو ڪر وقت جي سرڪار هٿ ۾ کنيو ۽ مسجدن جي شهيد ٿيڻ جو انديشوظاهر ٿيو ته سنڌ جي عالمن طرفان "تحفظ مساجد" تحريڪ هلائي ويئي، جنهن ۾ پڻ هن بهرو ور تو (838).

پاڻ تاريخ 23 شوال سن 1382 مطابق 19 مارچ 1963ع تي رحلت ڪيائين(839).

مولانا محمد حسين زئونر

مولانا محمد حسين ولد حاجي جڙيو زئونر سن 1317هـ مطابق 1899ع ڌاري ڳوٺ جڙيو زئونر تعلقي ميرپور بٺوري ضلعي ٺٽي ۾ پيدا ٿيو. ناظره قرآن مجيد ڳوٺ رحيم خان زئونر تعلقي ميرپور بٺوري ۾ حافظ محمد وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ عربي ۽ فارسي ڳوٺ اڪ مگسي لڳ سهراڻي تعلقي ٽنڊي محمد خان ۾ مولانا مير محمد مگسيءَ کان پڙهيائين. تنهن کان پوءِ "مظهر العلوم" کڏي ڪراچيءَ ۾ مولانا محمد صادق وٽ ڪجه وقت پڙهيو. آخر ۾ اچي ميرپور بٺوري جي "مدرس اسلامي" ۾ مولانا محمد عثمان کٽيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو.

علمي فراغت كان پوءِ "مدرسه اسلاميه" بنوري ۾ درس و تدريس ڏيڻ لڳو. ان كان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ۾ "مسلم اسكول" قائم كرائي ديني خواه دنياوي تعليم ڏيڻ جو سلسلو جاري رکيائين (840).

مولوي صاحب" تحريك خلافت" ۾ شريك ٿي پنهنجي سياسي زندگي جو آغاز كيو. پاڻ انهيءَ تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو، ۽ خلافتي عالمن جڏهن انگريزي كپڙي جي استعمال جي خلاف فتويٰ جاري كئي ته پاڻ به سندن ساٿ ڏيئي ان فتويٰ جي تصديق كيائين(841). اهڙيءَ طرح انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ پوءِ به پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركندو آيو.

مولاناصاحب تاريخ 5 ربيع الثاني 1399هـ مطابق 5 مارچ 1979 تي وفات كئي (842).

مولانا محمد دائود تنيو

مولانا محمد دائود تنيو. ڳوٺ محبوب تنيو.لڳ بُٺي تعلقو ميرو خان ضلعي لاڙڪاڻي جو رهاڪو هو. ديني تعليم مولانا خوش محمد ميروخانيءَ کان حاصل ڪيائين ۽ مولانا ثناءُ الله امر تسري ۽ مولانادين محمد وفائيءَ جي صحبت ۾ رهي. اهل حديث مسلڪ اختيار ڪري سندن داعي رهيو.

مولانا صاحب كي حلال مال هٿ كرڻ جو فكر دامنگير هوندو هو، ان كري پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ تجارت جو پيشو اختيار كري،پوري ڄمار انهيءَ شغل ۾ گذاريائين(843).

مولانا محمد دائود "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيو. جڏهن انگريزن خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت کي مسخ ڪرڻ لاءِ "امن سڀا" قائم ڪرائي ته، ان ۾ شامل ٿيندڙن جي خلاف خلافتي عالمن هڪ فتويٰ جاري ڪئي، جنهن جي مولانا صاحب پڻ تصديق ڪئي(844). اهڙيءَ طرح تحريڪ جي جلسن ۾ شريڪ ٿي، ان جي ڪاميابيءَ لاءِ وڃي تقريرون به ڪندو هو(845).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ پاڻ "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين. جڏهن تاريخ 14 ۽ 15 آگسٽ 1937ع تي ڪراچيءَ ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو جلسو مولانا حسين احمد مدنيءَ جي صدارت هيٺ منعقد ٿيو، ته هن به شرڪت ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو(846).

ان کان پوءِ جڏهن مذهبي بنيادن تي "ڪانگريس" ۽ "مسلم ليگ" جماعتن ملڪ جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد شروع ڪئي، ته مولانا صاحب "مسلم ليگ" جي سياسي ميدان تان ڀرپور حصو ورتو. پاڻ هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿي، نهايت سرگرميءَ سان بهرو ورتائين(847) اهڙيءَ طرح هن سنڌي عالم سياسي ۽ ديني خدمتون سرانجام ڏيندي پنهنجي ڄمار پوري ڪئي (848).

مولانا محمد سعید گویانگ

مولانا محمد سعيد ولد مولانا حاجي غلام علي گوپانگ جي ولادت تاريخ16 رمضان سن 1315هـ مطابق 8 فيبروري1898ع تي ڳوٺ مڪان گاڏهـ ضلعي بدين ۾ ٿي. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ ڪجهـ وقت مولانا حامد الله وٽ پڙهڻ کان پوءِ وڃي "دار الفيوض" هاشميه سجاول ۾ مولانا فتح علي جتوئيءَ وٽ پڙهيو. آخر ۾ وڌيڪ تعليم لاءِ وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، جتي مولانا انور شاه ڪشميري ۽ مولانا محمد شفيع ديوبنديءَ کان تعليم وٺي واپس سنڌ وريو.

علم جي تحصيل کان پوءِ ڳوٺ ٽوهن تعلقي ماتلي ضلعي بدين ۾ ديني مدرسو قائم ڪري، درس ۽ تدريس ڏيڻ لڳو, جتان پوءِ سگهوڻي ڇڏي وڃي بدين جي ڀرپاسي ۾ مدرسو کولي پڙهائڻ جو سلسلو جاري رکيائين. آخر ۾ بدين شهر ۾ مدرسي "مظهر العلوم" جو مهتمر بڻجي دين جي خدمت ڪندو رهيو.

سندس والد بزرگوار مولانا غلام علي گوپانگ آزاديءَ جي تحريك ۾ ڀرپور حصو ورتو هو، جنهن جي سياسي صحبت جو اثر مٿس به پيو(849). پوءِ جڏهن خلافت تحريك شروع ٿي تہ مولانا محمد سعيد ان ۾ شامل ٿي پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو. پاڻ هن تحريك جي سياسي ميدان تان حصو وٺندي ڏکڻ سنڌ ۾ ٿيندڙ ميلن ملاكڙن ۾ پهچي، ماڻهن ۾ انگريزن جي خلاف پرچار كندو رهيو(850).

خلافتي عالمن جڏهن غير ملڪي ڪَپڙي جي استعمال جي خلاف فتريٰ جاري ڪئي ته هن به ان جي تائيد ڪري، پنهنجي وطن دوستيءَ جو ثبوت ڏنو (851).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولانا "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو ۽ انهيءَ جماعت طرفان ڏکڻ سنڌ ۾ سڏايل گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪر ڪيائين(852).

آخر ۾ "مسلر ليگ" ۾ شموليت اختيار ڪري ملڪ جي ورهاڱي تائين پنهنجون سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو.

پاڻ تاريخ 3- رجب 1381هـ مطابق 11ڊسمبر1962ع تي رحلت ڪيائين(853)

مولانا محمد سليمان بنوي

مولانا محمد سليمان ولد حاجي هارون سن 1270هـ مطابق 1854ع ڌاري ٻني، ضلعي ٺٽي ۾ ڄائو. ارڙهن ورهين جي ڄمار جو ٿيو ته تعليم حاصل ڪرڻ جو شوق جاڳيس. ان کان پوءِ آخوند يعقوب پليجي. مولانا عبد الرحيّم ٺٽويءَ، مخدوم حسن الله پاٽائي ۽ قاضي خير محمد کان تعليم وئي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت کان پوءِ بصري ۽ بغداد ذريعي پيادل حج ۽ زيارت لاءِ ويو. جتان موٽڻ بعد ڪراچيءَ ۾ سيٺ حاجي محمد حسين ميمڻ جي مدد ۽ مولانا عبد الله جي ساٿ سان کڏي جي مدرسي جو بنياد وڌائين(854). ٻن سالن کان پوءِ شهر دڙي جي ديني مدرسي ۾ پڙهائڻ لڳو. ان کان پوءِ مختلف هنڌن: جهڙوڪ ڳوٺ حاجي جيئي سومري. ٽنڊي حافظ شاه. ڪوٽڙي ۽ ٻني ۾ تعليم ڏنائين(855).

مولانا محمد سليمان ان وقت سياست ۾ پير پاتو. جڏهن خلافت تحريڪ شروع ٿي. سندس ئي ڪوششن سان ضلعي ٺٽي جي مختلف هنڌن تي "خلافت تحريڪ" جون مختلف شاخون قائم ٿيون. پاڻ هن تحريڪ جي آغاز کان وٺي انجام تائين. هر موڙ تي سرگرميءَ سان حصو وٺڻ لڳو. ۽ انهيءَ سلسلي ۾ سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ ٿيل ڪانفرنسن ۽ وڏن جلسن ۾ پڻ شرڪت ڪيائين(856). پاڻ ڪيترو وقت "صوب سنڌ خلافت ڪاميٽيءَ" جو عهديدار به ٿي رهيو(857). ان کان سواءِ تحريڪ کي ڪامياب بنائڻ لاءِ ان جي مالي مدد به ڪندو رهيو(858).

خلافت تحريك جي آغاز ۾ جڏهن امن سڀائي عالمن خلافت جي حيثيت ۽ اهميت كي مسخ كرڻ جي كوشش كئي ته خلافتي عالمن به مقابلي ۾ فتوائن جي جاري كرڻ جو سلسلو شروع كيو. مولانا محمد سليمان خلافتين جو سات ڏيندي، انهن جي جاري كيل كيترين ئي فتوائن جي تائيد كئي(859).

خلافت تحريك سان گڏ پاڻ "جمعيت العلماءِ" جو به خيرخواه ۽ سر گرم كاركن ٿي رهيو. سن 1925ع كان كيس "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي وركنگ كاميٽيءَ جو ميمبر مقرر كيو ويو(860). اهڙيءَ طرح سن 1931ع ۾ جڏهن كراچيءَ ۾ "جمعيت علماءِ هند" جو جلسو ٿيو ته هن ان لاءِ "آڌرياءُ كاميٽيءَ" جي ميمبر جي حيثيت ۾ حصو ورتو(861). هيءُ جمعيت علماءِ هند جي حكمت عملي جو حامي هو، ان كري ملك جي آزاديءَ لاءِ كانگريس سان به وابسترهيو.

مولانا صاحب سن 1360ه مطابق 1941 ۾ لاڏاڻو ڪيو(862).

مولانا محمد سليمان "واعظ"

مولانامحمد سليمان ولد الهندو خان نوناري ڳوٺ ٿرڙي محبت تعلقي ميهڙ ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم پنهنجي ڳوٺ جي مولوي حافظ محمد صادق وٽان حاصل ڪيائين. ان بعد رتيديري ۾ وڃي باقي تعليم مولوي عبد الله جي مدرسي ۾ پوري ڪري دستاربند ٿيو.

علم جي تحصيل کان پوءِ ميهڙ جي ڀرسان ٿيٻن زميندارن کي پڙهائڻ لڳو. پڇاڙيءَ واري عمر ۾ ڳوٺ جهتيال ۾ تعليم ڏنائين(863)،

مولانا محمد سليمان " واعظ" جي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك جي ابتدا سان ٿيو. پاڻ انهيءَ تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. جڏهن ان جي فائدي ۾ خلافتي عالمن فتوائون جاري كيون ته مولانا صاحب پڻ كيترين ئي فتوائن ۾ سندن ساٿ ڏنو(864). اهڙيءَ طرح پاڻ نه صرف تحريك جي جلسن ۾ شريك ٿي(865)، وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد كيائين، پر هن تحريك كي كامياب بنائڻ واسطي، ان جي مالي مدد به خوب كندو رهيو(866).

"خلافت تحريك" كان پوءِ هن "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان، پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركيون. پاڻ كيترو وقت هن جماعت جي وركنگ كاميٽيءَ جو ميمبر بـ ٿي رهيو(867)

مولانا صاحب زندگيءَ جو سفر پوري ڪري، تاريخ 15 شعبان1367هـ مطابق 23 جون1948ع تي وڃي پنهنجي رب سان مليو(868)

مولانا محمد سليمان بگهيو

مولوي محمد سليمان ولد محمد عرس ٻگهيو سن 1343ه مطابق 1924ع ۾ ڳوٺ ڪاراڻي. تعلقه ڏوڪري ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم ڳوٺ گاجي ديري ۾ مولوي عبد الڪريم کان ورتائين. ان کان پوءِ ڳوٺ خير محمد آريجا ۾ مولوي تاج محمد ۽ لاڙڪاڻي ۾ مولوي محمد کوکر وٽ پڙهيو، ۽ آخر ۾ گورو پهوڙ ۾ مولانا غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان تعليم وٺي دستاربندي ڪيائين. پوءِ ڪجه وقت لاءِ ديوبند وڃي، مولانا حسين احمد مدنيءَ وٽ دوره حديث پورو ڪري سنڌ واپس وريو.

علمي فراغت كان پوءِ ڳوٺ پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ درس ۽ تدريس ڏيڻ لڳو(869)، جيئن ته پاڻ اڃا طالب العلميءَ جي آخري دور مان گذري رهيو هو، تنهن ڪري مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي عقيدت ۽ پنهنجي استاد مولانا غلام مصطفىٰ قاسميءَ جي محبت ۽ اثر هيٺ سياست ڏانهن راغب ٿيو.

سن 1939ع ۾ جڏهن مولانا عبيد الله سنڌي پنهنجي جلاوطنيءَ کان پوءِ، سنڌ واپس وريو، ۽ اچي "جمنا- نربدا- سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين، ته مولوي ٻگهيي صاحب بران ۾ شامل ٿي سرگرميءَ سان حصو ورتو، ان کان پوءِ ملڪ جو ورها گو ٿيو ۽ کيس تعليم کاتي ۾ ملازمت ملي ويئي، جنهن ڪري پاڻ عملي طور تي سياست کان الڳ ٿي ويو. مولوي صاحب آخر ۾ وڃي اسلاميات جو پروفيسر بڻيو (870). *

مونالا محمد صادق ميمڻ

مولانا محمد صادق ولد مولوي عبدالله ميمڻ جي ولادت 25 محرم الحرام 1291هـ مطابق 15 مارچ 1874ع تي ڪراچيءَ جي محلي اسلام آباد کڏي ۾ ٿي (871). سندس ابتدائي تعليم ۽ تربيت جو آغاز سندس والد جي نگرانيءَ هيٺ ٿيو. ان کان پوءِ

[°] مولانا محمد سليمان ٻگهير هن وقت فوت ٿي چڪو آهي.

پنهنجي والد جي قائر ڪيل مدرسہ "مظهرالعلوم" کڏي ۾ مولانا احمد الدين چڪواليءَ وٽ ستن سالن تائين مختلف علمن جا ڪتاب پڙهيائين. تنهن کان پوءِ وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، ۽ ان سان گڏ علم طب جي به سند وٺي واپس سنڌ وريو.

علمي فراغت كان بعد "مظهرالعلوم" كُدِّي ۾ درس وتدريس جو آغاز كيائين. جڏهن سندس والد وفات كئي، ته پڙهائڻ سان گڏ مدرسي جو مهتمر به ٿي رهيو (872). مولانا صاحب مدرسي ۾ اعزازي طور تي كر كندو هو، ۽ سندس گذر معاش جو مدار طبابت تي هوندو هو (873).

مولانا محمد صادق علر جي تحصيل کان پوءِ ڪراچيءَ ۾ واپس اچي نه صرف درس ۽ تدريس جو ڪر هٿ ۾ کنيو، پر وطن جي آزاديءَ واري جدوجهد ۾ به شريڪ ٿيو. سن 1327ه ۾ شيخ الهند جي حڪر تي جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي ديوبند پهچي، "جميعت الانصار" ۾ چئن سالن تائين ڪر ڪيو، ته ساڻس گڏ مولانا محمد صادق پڻ شريڪ رهيو(874). پاڻ اڃا ديوبند ۾ ئي هو ته پنهنجي مستقل مزاجي، علمي صلاحيت ۽ ذهني لياقت سبب پنهنجي استاد شيخ الهند وٽ مقبوليت حاصل ڪري چڪو هو. شيخ الهند پنهنجي سياسي تحريڪ جي سلسلي ۾ وقت بوقت پيو کيس گهرائيندو هو ۽ هن کي خاص رازدان سمجهي سنڌ ۾ تحريڪ جو سربراه مقرر ڪيو هئائين.

مولانا صاحب سن 1914ع كان وٺي سياست ۾ عملي طرح حصو وٺڻ لڳو. تنهن سال جڏهن انگريز سرڪار جي هندستاني لشڪر ترڪن جي خلاف جنگ لڙندي عراق تي حملو ڪيو تہ مولانا محمد صادق فتويٰ ڏيئي انگريزي لشڪر ۾ ڀرتي ٿي، ترڪن سان وڙهڻ کي ڪفر قرار ڏنو. سندس انهيءَ فتويٰ بلوچستان ۾ ٻہ طرفو اثر پيدا ڪيو. هڪ طرف سردار نور الدين مينگل جي اڳواڻيءَ ۾ اتبي بغاوت منهن ڪڍيو، ۽ ٻئي طرف بلوچستان مان لشڪر جي ڀرتيءَ کي ٻنجو اچي ويو. نہ صرف ايترو، بلڪ بلوچستان جي بغاوت کي منهن ڏيڻ لاءِ فرنگي سرڪار کي پنهنجو ڪيترو لشڪر اتبي رهائڻو پيو. جنهن جي نتيجي ۾ عراق ۾ وڙهندڙ انگريزي فوج کي هتان ڪا به مدد پهچي نہ سگهي ۽ ترڪن جي گهيري هيٺ آيل جنرل ٽائون شيڊ کي ترڪن جي اڳيان پيش ٿيڻو پيو(875)، ۽ انهيءَ سلسلي ۾ کيس گرفتار ڪري چئن سالن تائين ڪاروار جيل ۾ رکيو ويو(876).

ريشمي رومال واري تحريك دوران مولانا عبيد الله سنڌيءَ كيس "جنود رباني" ۾ كرنل جو عهدو ڏنو هو(877). ۽ سندس مدرسي كي انگريزن جي خلاف

بغاوت كرڻ جو مركز مقرر كيو.

مولانا صاحب جيل مان آزاد ٿي آيو ته ملڪ ۾ اڳ ئي "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿي چڪو هو، تنهن ڪري پاڻ به ان ۾ شريڪ ٿي ويو ۽ ڪيترو وقت آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ جو ميمبر. سنڌ ڪاميٽيءَ جو نائب صدر ۽ صدر ٿي رهيو(878).

انهن ئي ڏينهن ۾ تاريخ8 جولاءِ 1921ع تي "آل انڊيا خلافت ڪانفرنس" جو ستون اجلاس ڪراچيءَ ۾ ٿيو ته. ان جو انتظام به مولانا صاحب پاڻ ڪيو. هن ئي ڪانفرنس ۾ مولانا حسين احمد مدنيءَ فوجي ڀرتي، پوليس ۽ فوج جي ملازمت جي خلاف فتويٰ پيش ڪئي. مولانا محمد صادق ان ڪانفرنس جو صدر مجلس استقباليه هو. ۽ پاڻ ئي آجيان جو خطبو پڙهيو هئائين(879).

"خلافت تحريك" جي زماني ۾ خلافتي عالمن جڏهن فتوائن جو سلسلو شروع كيو تـ كيترين ئي فتوائن جي هن بـ تصديق كئي(880). ان كان سواءِ تحريك جي كاميابيءَ لاءِ ان جي مالي مدد بـ خوب كيائين(881).

"خلافت تحريك" دوران جدِّهن نومبر 1919ع ۾ "جمعيت العلماءِ هند" جي قيام لاءِ دهليءَ ۾ سنڌ ۽ هند جي عالمن جو جلسو منعقد ٿيو ته هن به ان ۾ شركت كئي(882). ۽ ان كان پوءِ پاڻ انهيءَ جماعت جو اڳواڻ ليكيو ويو(883)، مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ هند" جي وركنگ كاميٽيءَ جو ميمبر(884). ۽ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو صدر به رهيو ۽ اهڙيءَ طرح سندس ئي كوششن سان تاريخ 21مارچ 1931ع تي كراچيءَ ۾ "جمعيت العلماءِ هند" جو ساليانو اجلاس ٿيو، جنهن ۾ پاڻ صدر جي حيثيت سان آجياڻي جو خطبو پڙهيائين (885).

ان كان پوءِ سيپٽمبر 1945ع ۾ جڏهن "آل مسلم پارٽيز ڪانفرنس" دهليءَ ۾ منقعد ٿي، تہ پاڻ بہ وڃي ان ۾ شرڪت ڪيائين. جتي "آل انڊيا مسلم پارليامينٽري بورڊ" قائم ٿيو، جنهن لاءِ 23 ميمبر كنيا ويا، جن ۾ هيءَ به هڪ هو (886).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان علحدگيءَ واري تحريڪ هلي، تہ مولانا محمد صادق پڻ ٻين سياستدانن سان ڪلهو ڪلهي ۾ ملائي هن تحريڪ ۾ ڀرپور حصو ور تو (887).

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جڏهن "جمنا- نربدا سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهي، ته هن به انهيءَ جماعت جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ ۾ ڀرپور حصو ورتو. جنهن ۾ سندس مدرسو "مظهر العلوم" کڏو پڻ هن پارٽيءَ جو مرڪز رهيو (888). پاڻ آزادي حاصل ڪرڻ وارن ساڳين اصولن تي "ڪانگريس" جو به همدرد رهيو ((888). هن 6- شوال 1372هـ مطابق 18 جون 1953ع تي راه رباني ورتي (880).

مولانا محمد صادق اندِرَّ

مولوي محمد صادق عرف سنهڙو مولوي ولد ميان جي چنيسر جي ولادت وڏڻ تعلقي پني عاقل ۾ ٿي. قرآن پاڪ جي تعليم آخوند محمد ابراهيم کان حاصل ڪيائين. ان کان پوءِ ملا حبيب الله، مولوي محمد واصل بروهي، مولانا قمرالدين انڍڙ ۽ مولوي محمد لغاريءَ وٽ به پڙهيو. آخر ۾ مدرسي "دارالرشاد" پيرجهنڊي مان وڃي دستار بندي ڪيائين (891).

علر جي تحصيل بعد ڳوٺ محمد ابراهير ۾ پڙهائڻ لڳو. ان کان پوءِ لڳاتار ڇهـ سال اچي هاليجيءَ ۾ تعليم ڏنائين. تنهن کان پوءِ برٿ ۾ مدرسو کوليائين ۽ ان سان گڏ ملا اسڪول به قائم ڪري ديني خواه دنياوي تدريس جو شغل جاري رکندو آيو (892).

مولانا محمد صادق انڍڙ "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ هن تحريڪ جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو، ۽ آخر ۾ جڏهن محب وطن عالمن هن تحريڪ جي فائدي ۾ فتوائون جاري ڪيون، تہ مولانا صاحب به انهن جي جاري ڪيل ڪيترين ئي فتوائن جي تصديق ڪئي(893)، ان کان سواءِ پاڻ تحريڪ جي ڪاميابيءَ لاءِ پنهنجي پهچ آهر ان جي مالي مدد به ڪيائين (894).

جڏهن سنڌ ۽ هند جي عالمن پوري ملڪ کي دارالحرب سمجهي ماڻهن کي هجرت ڪري وڃڻ لاءِ سڏ ڏنو، تہ مولانا محمد صادق انڍڙ پڻ پنهنجي سموري ملڪيت وڪڻي. هجرت لاءِ تيار ٿيو تہ اها تحريڪ وڃي پنهنجي اختتام کي پهتي. پاڻ هن تحريڪ کان پوءِ عملي سياست کان پري رهيو.

مولانا صاحب سن 1374ه مطابق 1955ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيو. (895).

مولانا محمد صالح ماذّوي

مولوي محمد صالح ولد محمد يوسف گلال ڳوٺ ماڏي تعلقي خيرپور ناٿن شاهر ضلعي دادو ۾ ڄائو. ۽ مَلڪن ۾ تعليم وٺي فارغ التحصيل ٿيو.

علر پورو ڪري پنهنجي ئي ڳوٺ واري مدرسي ۾ درس و تدريس ڏيندو رهيو (896).
مولوي گلال صاحب "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيو. پاڻ
تحريڪ طرفان سڏايل جلسن ۾ نہ صرف شريڪ ٿيندو هو (897)، پر ڪيتري وقت
تائين "خلافت ڪاميٽيءَ" ماڏي جو سيڪريٽري بہ ٿي رهيو (898). مولانا صاحب
انهيءَ عهدي تي فائز ٿي، وطن جي آزادي لاءِ پاڙ پتوڙيو ۽ انهيءَ سلسلي ۾ هن
تحريڪ طرفان ضلعي دادو ۾ ٿيندڙ جلسن جي صدارت بہ ڪيائين (899). ان کان سواءِ

تحريك كي كامياب بنائل لاء ان جي مالي مدد به كندو هو (900).

پاڻ تاريخ 21 رمضان 1369هـ مطابق 17 جولاءِ 1950ع تي رحلت ڪيائين (901).

مولانا محمد صالح سمون

مولانا محمد صالح ولد حافظ محمد طالب سمون تاريخ 18 جمادي الثاني 1318هـ مطابق 12 آكٽوبر 1900ع تي گرهوڙ شريف ضلعي بدين ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم گرهوڙ شريف ۾ پنهنجي والد كان حاصل كرڻ بعد وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو. جتي قاري محمد طيب وٽان پڙهي فارغ التحصيل ٿيو. ۽ انهيءَ دوران حكمت جي سند بہ حاصل كري ورتائين.

ديوبند کان واپس اچي ميرپور خاص ۾ تدريس جو آغاز ڪيائين. ۽ ان سان گڏ پنهنجي گذر معاش لاءِ اتي ئي مطب قائر ڪري حڪمت ڪندو رهيو (902).

مولانا محمد صالح سمي "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جي ابتدا كئي. پاڻ تحريك جو سر گرم كاركن ٿي رهيو ۽ جڏهن خلافتي عالمن هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ فتوائون جاري كيون، ته انهن جي تصديق كندڙن مان هيءُ به هك هو (903)، ان كان سواءِ پنهنجي حيثيت آهر تحريك جي مالي مدد بـ كيائين (904).

مولانا صاحب "خلافت تحريڪ" کان سواءِ "جميعت العلماءِ هند" جو بہ ڪارڪن ٿي رهيو، ۽ سنڌ ۾ هن جماعت جي روح روان مولانا محمد صادق کڏي واري جو دست راست به هو (905).

وطن جي آزاديءَ لاءِ هن جماعت طرفان ڏکڻ سنڌ ۾ جيڪي جلسا ٿيندا هئا، تن ۾ بـ سندس ئي وڏو هٿ هو (906). پاڻ ڪيتري وقت تائين "جميعت العلماءِ" ميرپور خاص شاخ جو نائب ناظر بـ ٿي رهيو (907).

سن 1944ع ۾ حيدرآباد واري تاريخي قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ جڏهن "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو عظيم الشان جلسو ٿيو. تہ مولانا محمد صالح به ان ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو (908).

انگريز سرڪار طرفان هن محب وطن سنڌي عالمر کي آزاديءَ جي هلچل ۾ ڀرپور حصي وٺڻ جي پاداش ۾، صوبي بدر ڪري ٽن سالن لاءِ جيل بہ موڪليو ويو (909).

مولانا صاحب پڇاڙيءَ ۾ "مسلم ليگ" ۾ شامل ٿي سرگرميءَ سان بهرو ورتو (910)، ۽ ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ پاڻ عملي سياست کان پاسيرو ٿي، خالص علمي ۽ تبليغي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو (911).

هي؛ محب وطن عالمر تاريخ 19 جماد الثاني 1388هـ مطابق 12 سيپٽمبر 1968ع تي، هن فاني جهان مان ڏالاڻو ڪري وڃي پنهنجي مالڪ حقيقيءَ سان ملاقي ٿيو (912).

مولانا محمد صالح شيخ

مولوي محمد صالح ڳوٺ لين ڊاهو (موجوده حسين آباد) ضلع خيرپور ميرس ۾ هڪ هندوَّ جي گهر ۾ ڄائو. هن تعليم جو آغاز سن 1901ع ۾ پ'هنجي ڳوٺ جي پرائمري اسڪول کان ڪيو. سن 1905ع ڌاري اسلامي تعليم جو اثر قبول ڪيائين، ۽ آخرڪار سن 1908ع ۾ مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي هٿ هيٺ مسلمان ٿيو.

مولوي صاحب قرآن مجيد امروٽ ۾ پڙهيو ۽ دستاربندي "مدرسه عربيه" سومراڻيءَ مان ڪيائين. ان کان سواءِ "دارالرشاد" پيرجهنڊي ۾ به کيس مولانا عبيدالله سنڌيءَ وٽ تفسير پڙهڻ جو شرف حاصل ٿيو.

علم جي تحصيل بعد پهريائين امروٽ ۾، پوءِ محمد پور اوڍي ۾ ۽ آخر ڄمار ۾ دين پور تعلقي شڪارپور ۾ پڙهائڻ لڳو (913).

مولوي محمد صالح شيخ شاگرديءَ واري ئي دور ۾ پنهنجي محسن استاد مولانا تاج محمود امروتيءَ جي سياسي صحبت به حاصل ڪري چڪو هو. جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي تہ پاڻ به ان ۾ شامل ٿي سرگرميءَ سان حصو وٺڻ لڳو. هن ئي تحريڪ دوران جڏهن ماڻهو افغانستان ڏانهن هجرت ڪرڻ لڳا، تہ پاڻ به اهل رعيال سميت هجرت ڪيائين. پر پوءِ کيس ٻين مهاجرن سان گڏ واپس وطن ورڻو پيو (914). ان کان پوءِ ديني خدمت ڪندي پنهنجي ڄمار پوري ڪيائين (915).

مولانا محمد صالح "عاجز"

مولانا محمد صالح ولد ملا محمود ميمڻ سن 1336هـ مطابق 1918ع ڌاري نور محمد شجراه ضلعي شڪارپور ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعلير مدرسي "دين محمد" نور محمد شجراه ۾ مولوي سيد عابد شاه ۽ مولوي نهال الدين کان ورتائين. ان کان پوءِ ڪجه وقت مدرسي "دارالسعادت" گوري پهوڙ ۾ مولانا احمدالدين خليفي ۽ مولانا عطا محمد صرفيءَ جو شاگرد ٿي رهيو. آخر ۾ ٻه سال کن ٺُل تعلقي جي مولانا رحيم بخش بنگلاڻي ۽ مولانا عبداللطيف ڊول وٽ پڙهي پنهنجي تعليم پوري ڪيائين.

علمي فراغت سان ئي پاڻ سياست ۾ پير پائڻ ڪري تدريسي مشغلو اختيار ڪري نہ سگھيو. البت اڳتي هلي سن 1945ع کان صحافت جو آغاز ڪيائين ۽ "الحنيف" (جيڪب آباد) ۾ مضمون لکڻ لڳو، ۽ جيڪب آباد جي هفتيوار اخبار چئلينج" جوڪج وقت لاءِ ايڊيٽر بہ ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح سن 1946ع ۾ جڏهن مولانا عبدالحق ربانيءَ هڪ هفتيوار اخبار "عدل" جاري ڪئي، ته ان جو ڪجه عرصو ايڊيٽر ٿي رهيو، ان کان پوءِ 1- مئي 1947 تي شڪارپور مان پنهنجي هفتيوار اخبار "جمهور" جاري ڪيائين. جنهن جو ابتدائي پيغام جنگ آزادي جي مشهور ليڊر ۽ ڪابل ۾ قائم ڪيل "آزاد هند گورنميٽ" جي صدر راجا مهندر پرتاب ڏنر، ۽ هن ئي اخبار جو مولانا عبدالڪريم چشتي چيف ايڊيٽر ٿي رهيو. ان بعد ڪراچي مان جڏهن سنڌ جي وزيراعظم پيرالاهي بخش روزانه اخبار "مجاهد" جاري ڪئي، ته ان ۾ مولانا محمد صالح اسسٽنٽ ايڊيٽر طور ڪر ڪيو، ۽ ان سان جاري ڪئي، ته ان ۾ مولانا محمد صالح اسسٽنٽ ايڊيٽر طور ڪر ڪيو، ۽ ان سان پوءِ هن سن 1954ع ۾ پڊعيدن ضلعي نواب شاه مان هفتيوار اخبار "ستاره سنڌ" ڪڍي، جيڪا سن 1962ع ۾ پڊعيدن ضلعي نواب شاه مان هفتيوار اخبار "ستاره سنڌ" ڪڍي، جيڪا سن 1962ع تائين جاري رهي. آخر ۾ هن سن1970ع ۾ نواب شاه مان هفتيوار اخبار "صبح صادق" جاري ڪئي. ۽ ان جو سلهلو تڏهن ختم ٿيو. جڏهن پاڻ هفتيوار اخبار "صبح صادق" جاري ڪئي. ۽ ان جو سلهلو تڏهن ختم ٿيو. جڏهن پاڻ هيءَ جهان ڇڏي ويو.

مولانا محمد صالح پنهنجي شاگرديءَ واري ئي دور ۾ سياست ۾ قدم رکيو، ۽ "ڪانگريس" پارٽيءَ ۾ شامل ٿي هڪ سرگرم ڪارڪن جي حيثيت سان ڪم ڪرڻ لڳو. جڏهن ٻي جنگ عظيم 3. سيپٽمبر 1939ع تي شروع ٿي ته 6. آڪٽوبر 1939ع تي سکر جي ليوڪس باغ ۾ ڊاڪٽر محمد عمر جي صدارت هيٺ "مجلس احرار الاسلام" جو جلسو منعقد ٿيو. ان جلسي ۾ مولانا محمد صالح انگريزي تخت ۽ تاج جي خلاف تقرير ڪئي. جنهن ڪري کيس ڊفينس آف انڊيا رولس جي سيڪشن 38 جي سي فقري هيٺ گرفتار ڪري هڪ سال لاءِ جيل موڪليو ويو. ۽ 1939ع کان پوءِ ڊينس آف انڊيا رولس جو پهريون قيدي پاڻ ئي هو.

ان كان پوءِ جيئن ئي جيل مان آزاد ٿيو ۽ جڏهن الرا جاگير تعلقي روهڙي حال ضلعي خيرپور جي موروثي هارين- جاگيرادرن جي ظلر خلاف سيد محمد علي شاه مرحوم ناظر مدرسه "دارالهديٰ" ٺيڙهي ۽ سكر ضلع جي "ڪانگريس" جي صدر مسٽر چرئٿرام وليجا وڪيل ايم. ايل. سي سنڌ جي اڳواڻيءَ ۾ هڪ تحريڪ هلائي ته مولانا محمد صالح بران هلچل ۾ حصو ورتو.

ان ثي سال اپريل 1941ع ۾ "جمعيت العلماءِ سنڌ" طرفان پني عاقل ۾ مولانا حسين احمد مدنيءَ جي صدارت هيٺ هڪ وڏي ڪانفرس ٿي. جنهن ۾ مولانا محمد صالح

پڻ شريڪ ٿي، وطن جي آزادي لاءِ پاڻ پتوڙيو. هن ڪانفرنس ۾ ٻين سان گڏ اسلامي دنيا جي وڏي انقلابي رهنما حضرت مولانا عبيدالله سنڌيءَ به شرڪت ڪئي هئي.

سن1942ع ۾ جڏهن "انڊين نيشنل ڪانگريس" پنهنجي بمبئيءَ واري اجلاس ۾ برطانيہ سرڪار جي خلاف مشهور "ڪئٽ انڊيا" وارو تاريخي ٺهراءُ پاس ڪيو، ته مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي جماعت سان گڏ مولانا محمد صالح به هن ۾ ڀروپور حصو ورتو، جنهن ڪري کيس ٻن سالن لاءِ جيل جي سزا به ڏني ويئي. اهڙيءَ طرح وطن جي آزاديءَ خاطر هن مرد مجاهد پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيون، ۽ ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ صحافت جي خدمت ڪندي (916)، تاريخ 29 شوال 1402همطابق 12 جولاءِ 1982ع تي لاڏاڻو ڪري ويو (917).

مولانا حكيم محمد صديق مورائي

مولوي محمد صديق ولد عبدالرئوف سن 1298هـ مطابق 1881ع ڌاري موري شهر ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. پاڻ سنڌ جي مختلف مدرسن مان تعيلم وٺي فارغ ٿيو.

ان کان پوءِ ڪجهه وقت درس وتدريس ۾ مشغول رهيو. ۽ باقي وقت پنهنجو مطب کولي زندگي گذارڻ لڳو. پاڻ پنهنجي تَرَ جو ناميارو عالم, اديب, شاعر ۽ ڪاتب ٿي گذريو آهي (918).

مولانا محمد صديق "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ هن تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو ۽ ان جي جلسن ۾ شريك ٿي. انگريزن خلاف تقريرون كندو هو (919). ان كري كيترن ئي جلسن دوران وقت جي سركار مٿس زبان بنديءَ جا به حكم صادر كيا (920)، مگر هن محب وطن سنڌي عالم جيل وڃڻ ته قبول كيو (921)، پر ڏاڍن ۽ ظالم حكمرانن جي اڳيان خاموش ۽ بي زبان نه رهيو.

خلافت كاميني، طرفان جد هن تُركي، تي مڙهيل شرطن تي نظر ثاني كرائڻ لاءِ وائسراءِ ۽ گورنر جنرل كي هڪ يادداشت نامو ڏنو ويو، ته ان تي صحيح كندڙن مان پاڻ به هك هو (922). ان كان سواءِ وطن جي آزادي، خاطر هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ وس آهر ان جي مالي مدد به كيائين (923).

مولانا صاحب سن 1348هـ مطابق 1929ع ۾ هيءُ جهان ڇڏي ويو (824).

مولانا محمد صديق كڇي

مولانا محمد صديق ولد مولوي عبدالله پٺاڻ سن 1293هـ مطابق 1876ع ڌاري

سوات ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ سندس والد کيس ديوبند ۾ پهچايو. ۽ پاڻ سوات کي هميش لاءِ خير آباد چئي، اچي ڪڇ جي ڳوٺ سٿريءَ ۾ قيام پذير ٿير، ۽ اتي مدرسو قائم ڪري درس و تدريس جو سلسلو شروع ڪيائين.

مولانا محمد صديق به ديوبند مان فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ اچي ڪڇ وسايو. ۽ اتي جي اصلي رهاڪن مان شادي ڪري ڪڇي سڏجڻ لڳو. ڪجه وقت کان پوءِ "مظهر العلوم" کڏي ۾ اچي درس وتدريس جو آغاز ڪيائين ۽ ان سان گڏ مدرسي جي ترقي ۽ ترويج ۾ بيحد دلچسپي وٺڻ لڳو. پاڻ مولانا محمد صادق جي جيل وڃڻ واري دور ۾ مدرسي جو مهتمر بہ ٿي رهيو. ۽ سندس پوري ڄمار، هن جي ئي مدرسي سان وابست رهي (925).

مولانا صاحب "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سياست جي ميدان ۾ پير پاتو. پاڻ پهرين صف جو عالم سياستدان هو ۽ مولانا محمد صادق جي رفاقت ۾ وطن جي آزاديءَ لاءِ وڏو ڪر ڪيائين. خلافتي عالمن هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ جڏهن فتوائون جاري كيون، تـ پاڻ انهن جي تصديق كندڙن مان هك هو (926).

مولانا صاحب هن تحريك جي جلسن ۾ شريك ٿيندو هو (927)، ۽ كيترا جلسا سندس ئي صدارت ۾ ٿيا (928). پاڻ خلافت كاميٽيءَ جي مجلس شوريٰ جو ميمبر بہ ٿي رهيو (929). ان كان سواءِ وطن جي آزاديءَ خاطر تحريك جي مالي مدد به خوب كيائين (930). هن وطن دوستي ۽ انگريز دشمنيءَ سبب جيل جون صعوبتون به سٺيون (931).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ پوري ڄمار "ڪانگريس" ۾ رهيو. ۽ ملڪ جي ورهاڱي تائين. هن ئي جماعت جو مخلص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو (932).

مولانا محمد صديق ڪڇي زندگيءَ جو ظاهري سفر پورو ڪري تاريخ 18 ربيع الاول سن 1372هـ مطابق 6- ڊسمبر 1952ع تي وڃي پنهنجي رب سان مليو (933).

مولانا محمد طيب لكمير

مولوي محمد طيب ولد آخوند خدا بخش لكمير جي ولادت سن 1324ه مطابق 1906ع ڌاري ڳوٺ كهڙ لكمير تعلقي سكرنڊ ضلعي نواب شاه ۾ ٿي. قرآن مجيد پنهنجي ڳوٺ ۾ مولانا دوست محمد لكمير وٽ پڙهڻ كان پوءِ وڃي پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ مولانا محمد اكرم انصاريءَ، مولانا محمد اسماعيل ۽ مولانا محمد نور وٽ پڙهيو. جتان پوءِ موٽي پنهنجي ڳوٺ واري مدرسي "باب الرشاد" ۾

مولانا عبدالله كدّهريء كان باقي تعليم ولي فضيلت جي دستاربندي كيائين.

علمي فراغت كان بعد پنهنجي ئي ڳوٺ واري مدرسي ۾ درس وتدريس جو مشغلو اختيار كري علم جو فيض جاري ركندو آيو.

پيرجهنڊي جو مدرسو، جيڪو آزاديءَ جي تحريڪ جو مرڪز بڻيل هو، تنهن ۾ تعليم وٺندي مولوي محمد طيب پنهنجي شاگرديءَ واري ئي زماني ۾ ڪيترن ئي عالمن جي سياسي صحبت به حاصل ڪري ورتي هئي.

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ شروع ٿي تہ هن بان ۾ ڀرپور حصو ورتو ۽ ان کان پوءِ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جاکوڙ ڪيائين.

" سن 1944ع دوران حيدرآباد واري تاريخي قلعي ۾ جڏهن قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو عظيم الشان اجلاس ٿيو، ته هن به ان ۾ شريڪ ٿي پنهنجي وطن دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(934).

جدّهن "كَانگريس" ۽ "مسلم ليگ" مذهبي بنيادن تي وطن جي آزاديءَ لاءِ هلچل شروع كئي، ته پاڻ "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار كري پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركيائين. پاڻ هن جماعت جي ڳوٺ كٻڙ لكمير واري شاخ جو صدر ب تي رهيو(935) . ۽ ملك جي ورهاڱي كان پوءِ عملي طور تي سياست كان الڳ تي ويو(936)."

مولانا محمد عاقل "عاقلي"

مولوي محمد عاقل ولد آخوند الله نواز سومرو تاريخ 19 ذي القعد 1267هـ مطابق 15 سيپٽمبر 1851ع تي ڪنگري ضلعي سکر ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان وٺڻ بعد مولانا نبي بخش عباسي، مولانا غلام صديق شهداد ڪوٽي ۽ مولانا غلام محمد ڪمال ديرويءَ وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو(937). ان کان پوءِ سن 1882ع ڌاري ڪنگري ڇڏي، اچي ڳوٺ عاقل ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ويٺو (938)، ۽ "مدرسه اسلاميه" ۾ پڙهائڻ لڳو. جتي وٽس وڏو ڪتب خانو به موجود هو(939).

مولوي صاحب پنهنجي دور جو ناميارو عالم ۽ شاعر ٿي گذريو آهي. پاڻ شاعريءَ ۾ "عاقلي" تخلص ڪر آندو اٿس. اهڙيءَ طرح سٺو حڪيم به هو، ان ڪري درس وتدريس ڏيڻ سان گڏ طب جوشغل بہ جاري رکندو آيو(940).

^{*} مولوي صاحب هن وقت نوت ٿي چڪو آهي.

مولانا محمد عاقل سنڌ جي انهن عالم سياستدانن مان هڪ هو، جنهن امن سيائي عالمن جي اڳواڻن جي تائيد ڪرڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو، ۽ پوءِ سگهوئي پنهنجي غلطيءَ جو ازالوڪري خلافتين جو همدرد بڻجي ويو.

هن پهريائين "امن سيا" جي روح روان عالم مولوي فيض الكريم ٺاروشاهيءَ جي جاري كيل "تحقيق الخلافت" نالي فتويٰ تي صحيح كئي هئي(941)، پر پوءِ جڏهن خلافتي عالمن انهيءَ جي رد ۾ "اظهار الكرامة" نالي فتويٰ جاري كئي. ته پاڻ ان جي تصديق كري (942). "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي ويو، ان كان پوءِ هن تحريك ۾ سرگرميءَ سان حصو ورتائين(943). ايتري قدر جو جڏهن موقعو آيو تهن هن "ترك موالات" جي حمايت ۾ جاري كيل فتوائن تي به صحيح كئي (944).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ مولوي صاحب "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪئي ۽ پڇاڙيءَ تائين انگريزن جو مخالف رهيو(946).

پاڻ تاريخ 10 شعبان 1360ه مطابق 3 سيپٽمبر 1941ع تي رحلت ڪيائين(947).

مولانا محمد عبدالحكير

مولوي محمد عبدالحخير ولد مولوي نور محمد سن 1313ه مطابق 1895ع ۾ ڳوٺ چوڏهو سڌايہ تعلقي شڪارپور ۾ ڄائو(948). هن شروعاتي تعلير پنهنجي ڳوٺ ۾ ورتي. ان کان پوءِ مختلف مدرسن مان تعلير حاصل ڪري وڃي محرابپور ۾ مولانا شيخ غلام رسول فاضل ديوبند وٽ مولانا خوش محمد ميروخانيءَ سان گڏ دستاربندي ڪيائين. سنڌ مان پڙهي هيءُ بزرگ عالم دارالعلوم ديوبند ويو. ۽ مولانا انور شاه ڪشميريءَ کان دورو حديث پڙهيائين. مهتمر صاحب قاري محمد طيب سندس هم ڪلاسين مان هو، ۽ مولانا عبدالحڪيم جي زباني تہ قاري محمد طيب صاحب کانئس استفادو به ڪندو هو. مولوي عبدالحڪيم صاحب پاٽ ۾ به صاحبزاده محمود کان فلسفي جي تعليم ورتي ۽ پوءِ اجمير پهچي مولانا معين الدين اجميريءَ کان به منطق ۽ فلسفو پڙهيائين.

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ درس وتدريس جو آغاز ڪيائين. سنڌ جا گهڻي ڀاڱي عالم سندس ئي شاگرد آهن(949).

مولانا صاحب خلافتي عالمن مان هڪ هو. ۽ "خلافت تحريڪ" ۾ سرگرميءَ سان حصو ورتائين. انگريزن جڏهن مولوي فيض الڪرير ٺاروشاهيءَ کان "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو شايع ڪرائي، خلافت جي حيثيت ۽ حقيقت کي مسخ ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي تہ خلافتي عالمن به ان جو رد لکيو، جنهن جي مولانا عبدالحكيم پڻ تصديق كئي(950).

"خلافت تحريك" كان پوءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار كئي، ۽ جڏهن حيدرآباد واري تاريخي قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جو اجلاس ٿيو، ته هن به ان ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو (951).

مولانا صاحب سن 1381هم مطابق 1961ع مر راهد رباني ورتي (952).

مولانا محمد عثمان "قراني"

مولانا محمد عثمان ڀنڀرو تاريخ 27 صفر 1296هـ مطابق 20 فيبروري 1879ع ڌاري ڳوٺ ڊينگاڻ ڀرڳڙي تعلقي جيمس آباد ضلعي ٿرپارڪر ۾ پيدا ٿيو. قرآن مجيد سيد حاجي احمد شاه وٽ پڙهيو. فارسيءَ جي تعليم ميان محمد عليءَ کان حاصل ڪرڻ بعد عربي تعليم مولانا لعل محمد مٽيارين واري کان پڙهي فارغ ٿيو. ان بعد حديث ۽ تفسير جي تعليم لاءِ دارالعلوم ديوبند به ويو.

ديوبند مان موٽڻ بعد پنهنجي ڳوٺ عمر ڀنڀري تعلقي ساماري ۾ اچي "مدرسه مجدديه" قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ شروع ڪيائين. مولانا صاحب پنهنجي دور جو وڏو عالم ۽ سٺو شاعر ٿي گذريو آهي. هن پنهنجي شاعريءَ ۾ "قراني" تخلص ڪر آندو آهي(953). پنهنجي مدرسي جي نصاب ۾ ٻين علومن سان گڏ طب جو مضمون به شامل ڪيائين، ۽ اهڙيءَ طرح پوري ڄمار علم جو فيض پلٽيندو رهيو(954).

مولانا محمد عثمان ڀنڀري درس ۽ تدريس جي مشغوليءَ هوندي به وطن جي آزاديءَ خاطر سياست ڏانهن وک وڌائي. جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي ته پاڻ ان ۾ شامل ٿي ڀرپور حصو وٺڻ لڳو. جيتوڻيڪ انگريزي ڪپڙي جي پهرڻ واري مسئلي تي خلافتي عالمن سان اختلاف رکيائين (955)، پر تنهن هوندي به هن سندن جاري ڪيل "اظهار الڪرامة" نالي فتويٰ جي تصديق ڪئي(956). ان کان پوءِ "خلافت تحريڪ" جي جلسن ۾ شريڪ ٿي. نه صرف ڌارين حڪمرانن جي مخالفت ڪيائين، پر هن محب وطن عالم مدرسي کي ملندڙ گرانٽ وٺڻ کان به انڪار ڪري ڇڏيو(957).

"خلافت تحريك" دوران ئي "جمعيت العلماءِ" جو قيام عمل ۾ اچي چڪو هو، ان كري پاڻ هن جماعت ۾ به شموليت اختيار كري، وطن جي آزاديءَ لاءِ پنهنجي

جدوجهد جاري ركيائين(958).

مولانا صاحب تاريخ 15 رجب 1355هـ مطابق 1. آڪٽوبر 1936ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏي راهي ٿيو(959).

مولانا محمد عثمان كٽي

مولوي محمد عثمان ولد حاجي احمد كٽيءَ جي ولادت سن 1282هـ مطابق 1865ع ۾ ڳوٺ ولهار تعلقي سجاول ضلعي ٺٽي ۾ ٿي. ٺٽي جي "مدرسه اسلاميه" ۾ مولوي محمد هاشر کٽيءَ کان تعلير وٺي فارغ التحصيل ٿيو. ان بعد ٻڍاپور جي حڪير پير غلام رسول سرهنديءَ وٽان حڪمت سکيو.

علمي فراغت کان پوءِ ٺٽي. ميرپور بٺوري ۽ سجاول ۾ تعليم ڏنائين(960).

مولانا محمد عثمان "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيڻ سان سياست جي ميدان ۾ قدم رکيو. پاڻ هن تحريك جو مخلص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو ۽ كيترو عرصو "سنڌ خلافت كاميٽيءَ" جو ميمبر (961) ۽ ان جي ڳوٺ سونپارا شاخ جو ناظر (962) بڻجي، انگريزن خلاف جدوجهد كيائين. انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ هن محب وطن عالم كي جيل جي سزا ب ڀو ڳڻي پيئي(963). تنهن هوندي به وطن جي آزاديءَ خاطر هن تحريك كي كامياب بنائڻ لاءِ وس آهر ان جي مالي مدد به كيائين(964).

"خلافت تحريك" كان پر ۽ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ "جو سر گرم كاركن تي رهيو ۽ سن 1925ع كان ولي هن جماعت جي كيترين ئي كاميٽين ۾ ميمبر جي حيثيت سان كر كيائين. ان كان سواءِ سندس همدرديون "كانگريس" سان بر هيون(965)، پر جڏهن هن جماعت طرفان لوڻ جي بهشكار جي تحريك هلي ته پاڻان جي مخالفت كئي هئائين(966).

مولانا صاحب سن 1359هـ مطابق 1940ع ۾ پنهنجي رب کي پيارو ٿي ويو(967).

^{*} مولانا صاحب جن ڪاميٽين جو ميمبر ٿي رهيو سي هيون:

أ. ميمبر منتظمه كاميني (ڏسو: روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4).

ii. ميمبر ڪاروباري ڪاميٽي (ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 14 فيبروري 1930 ع ص2).

مولانا محمد عثمان شيخ

مولوي محمد عثمان ابتدائي تعليم پنهنجي والد مولوي احمد شيخ کان حاصل ڪئي. ان کان بعد پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" مان وڃي درس نظامي پورو ڪيائين. تنهن کان پوءِ نواب شاه ۾ ڪپڙي جو دڪان کولي گذر معاش ڪندو رهيو(968).

مولوي محمد عثمان جي سياسي زندگيءَ جو آغاز تڏهن ٿيو, جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي. هن تحريڪ دوران جڏهن خلافتي عالمن "امن سيائين" خلاف فتوائون جاري ڪيون ته پاڻ سندن ساٿ ڏيندي نه صرف انهن فتوائن جي تصديق ڪيائين (969), پر تحريڪ لاءِ فنڊن گڏ ڪرڻ ۾ به ساڻن ٻانهن ٻيلي ٿي رهيو (970).

مولوي محمد عثمان خلافت جي خاتمي کان پوءِ "جمعيت العلماءِ" ۾ شرڪت ڪئي، ۽ ان جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو(971). بعد ۾ پاڻ ذريع معاش سبب ڪجه وقت لاءِ سياست کان الڳ ٿي ويو، پر جڏهن "سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ" واري تحريڪ هلي، ته ان ۾ ڀرپور حصو ورتائين. انهيءَ سلسلي ۾ سن 1931ع ۾ جڏهن "سنڌ آزاد جماعت" ٺاهي ويئي ته کيس ان جي ورڪنگ ڪاميٽيءَ جو ميمبر مقرر ڪيو ويو هو(972).

پاڻ تاريخ16 جمادي الاول 1377هـ مطابق 12 ڊسمبر 1657ع تي رفات ڪيائين(973).

مولانا محمد عثمان بلوچ

مولانا محمد عثمان ولد ملا كريم بخش سن 1315هـ مطابق 1897ع ڌاري كراچيءَ جي محلي كنڀارواڙي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي عربي ۽ فارسيءَ جا كتاب پنهنجي والد وٽ پڙهيو. ان كان پوءِ درس نظاميءَ تائين مدرسي "مظهر العلوم" كڏي ۾ مولانا محمد صديق كڇيءَ وٽ پڙهي فارغ التحصيل ٿير. ان بعد 22 ورهين جي جمار ۾ ديوبند پهچي مولانا حسين مدنيءَ كان حديث جي سند حاصل كيائين.

ديوبند كان واپس اچي لياري كوارتر كراچي، ۾ سندس والد جي قائر كيل مدرسي "احرار الاسلام" ۾ درس وتدريس جو آغاز كيائين. ان سان گڏ محلي اندر چوكرن ۽ ڇوكرين لاءِ پرائمري اسكول قائم كرائي، عوام كي دنياوي علوم جي زيور سان به آراست كرڻ لڳو، انهن مشغولين جي هوندي به پاڻ لكڻ پڙهڻ ۽ صحافت جو شغل رچائي قوم جي اصلاح به كندو رهيو، هن سن 1935ع ۾ "ترجمان

بلوچ" نالي هڪ هفتيوار اردو اخبار جو اجراءُ ڪيو، جيڪا ٻي جنگ عظير (1939ع) تائين جاري رهي.

مولانا صاحب بلوچ قوم جو مفتي هو. ۽ کيس فقه ۾ وڏو درڪ حاصل هو. پاڻ سن 1942ع ۾ قلات اسٽيٽ جو وزير معارف(وزير تعليم) بـ ٿي رهيو.

مدرسي "احرار الاسلام" لياري كوارٽر جو بنياد ئي ان لاءِ ركيو ويو هو ته مدرسي مان بهادر ۽ آزاد مزاج جا طالب العلم پيدا كيا وڃن ته جيئن انگريزن خلاف جدوجهد كري كانئن نجات حاصل كري سگهجي(974).

مولانا محمدعثمان بلوچ ديوبند كان موٽڻ بعد نہ صرف مدرسي ۾ پاڻ كي درس وتدريس جي شغل تائين محدود ركيو، پر هن وطن جي آزاديءَ لاءِ "خلافت تحريڪ" جي آغاز سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جي به شروعات كئي. پاڻ تحريك جي سر گرم اڳواڻن مان هڪ هو، ۽ تحريك كي كامياب بنائڻ واسطي خلافتي عالمن جڏهن فتوائون جاري كيون. ته سندن سات ڏيندي هن به كيترين ئي فتوائن جي تصديق كئي(975).

اهڙيءَ طرح هن تحريك لاءِ نه صرف چندا گڏ كندو هو(976)، پر وس آهر پنهنجي طرفان به ان جي مالي مدد كندو هو(977). انگريزن خلاف جدوجهد كرڻ جي پاداش ۾ هن محب وطن عالم جيل جي سزا به ڀوڳي(978). تنهن هوندي به "خلافت تحريك" جي كيترن ئي عهدن تي فائز رهيو. * ۽ جلسن ۾ شريك ٿي (979). پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركيائين.

"خلافت تحريك" كان پوءِ مولانا محمد عثمان "جمعيت العلماءِ" ۾ شريك ٿيو.

[•] پاڻ جن عهدن تي فائز رهيو سي هئا:

أميمبر منتظمه كاميتي" _ خلافت كاميتي كراچي (ڏسو: روزانه "الوحيد" كراچي,
 مؤرخه سيپٽمبر 1920ع ص4).

آميمبر مجلس شوريا" _ خلافتي ڪاميٽي (ڏسو: "روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 30 جنوري 1923ع ص4).

 [&]quot;ميمبر" _ مركزي خلافت كاميتي (دسو: روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص2).

أنحي" _ صوبه سنڌ خلافت ڪاميٽي (ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص2).

پاڻ ڪراچي ضلعي جي مکي جمعيتي عالمن مان هڪ هو ۽ هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿي سرگرميءَ سان حصو ورتائين (980). اهڙيءَ طرح جمعيت العلماءِ سنڌ جي مجلس عامل جوميمبر ٿي رهيو، ۽ ان کان سواءِ مولانا محمد صادق کڏي واري جي صحبت اختيار ڪري "جمعيت العلماءِ هند" ۽ "ڪانگريس" جو به همدرد رهيو (981).

مولاناصاحب كراچي ميونسپل اليكشن لاءِ اميدوار بيٺو(982)، ۽ ميمبر متخب ٿي ويه سال لياريءَ جي ماڻهن جي خدمت كيائين. اهڙيءَ طرح پاڻ "سنڌ مدرسة الاسلام" كراچيءَ جي بورڊ جو به ميمبر ٿي رهيو.

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو ۽ اچي "جمنا، نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين ته هن به ان ۾ شامل ٿي پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيون.

... مولانا محمد عثمان بلوچ تاريخ25 ذي القعد 1390هـ مطابق 23 جنوري 1971ع تي هي؛ جهان ڇڏي راه رباني ورتي(983).

مولانا محمد عظيم "شيدا"

مولانا محمد عظيم ولد لعل بخش سولنگيءَ جي ولادت سن 1287هـ مطابق 1870ع ۾ ڳوٺ گل ٻرڙي تعلقي واره ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ٿي. مولانا عبدالعزيز شاه خارانيءَ کان شهر کنڊو, مولانا محمد کان پير جهنڊي, مولانا خادم حسين جتوڻيءَ کان ڳوٺ ڀليڏني ۽ مولانا سيد محسن شاه کان ميان جي ڳوٺ ۾ تعليم وئي دستاربندي ڪيائين.

علمي فراغت كان پوءِ مختلف هنڌن تي درس وتدريس جو سلسلو جاري ركيائين ۽ ان سان گڏادبي خدمتون به سر انجام ڏيندو رهيو، پاڻ شعروشاعريءَ سان به شغف رکندو هو، ۽ پنهنجي شاعريءَ ۾ "شيدا" تخلص ڪر آڻيندو هو. سندس لکيل ڪتابن مان "سيرت مصطفيٰ"، "اصول حديث"، "ارشاد سالڪين" ۽ "ديوان شيدا" ذکر لائق آهن(984).

مولوي محمد عظيم صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كيو. پاڻ هن تحريك جو مخلص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو (985). ان سان گڏ هن "جمعيت العلماء" ۾ به شركت كئي، ۽ كيتري وقت تائين هن جماعت جي ضلعي شاخ جو عهديدار به ٿي رهيو (986).

سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ کان پوءِ مولانا صاحب ڪجھ وقت سياست کان

الڳ رهيو، پر پوءِ "مسلر ليگ" ۾ شموليت اختيار ڪيائين(987). ۽ قيام پاڪستان تائين انهيءَ سان وابست رهيو. ملڪ جي ورهاڱي بعد سياست کان پري رهي، خالص ديني خدمتون سرانجام ڏيندورهيو(988)*.

مولانا محمد علي جوثيجو

مولانا محمد علي جوڻيجو سن1300ه مطابق 1883ع ڌاري ڳوٺ گهموري تعلقي عمر ڪوٽ ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم ڳوٺ هاڙه جي مڪتب مان ورتائين ۽ ان کان پوءِ مولانا محمد عثمان قرانيءَ جي مدرسي مان وڃي فارغ التحصيل ٿيو(989).

علمي فراغت کان پوءِ پهريائين ڳوٺ هوندو پليءَ ۾ پڙهايائين ۽ بعد ۾ حاجي محمد عالم پلي تعلقي عمر ڪوٽ ۾ "مدرسه دارالفيوض" قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو.

مولوي محمد عليءَ "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پترڙيو. ان کان پوءِ "مسلم ليگ" ۾ شريڪ ٿي پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيائين.

مولوي صاحب تاريخ 10 جمادي الاول 1371هـ مطابق 19 فيبروري 1952ع تي هيءُ جهان ڇڏيو(990).

مولانا محمد علي شاهه

مولوي سيد محمد علي شاه ولد سيد ولايت علي شاه جي ولادت سن 1323ع مطابق 1905ع ۾ ڳوٺ سيد ضلعي خيرپور ۾ ٿي. ابتدائي تعلير ڪوٽ مير محمد ۾ حاصل ڪيائين. ان کان پوءِ ٺيڙهي ۽ ديوبند ۾ پڙهي فارغ التحصيل ٿيو(991).

شاه صاحب "خلافت تحريك" جي آخري دور ۾ شامل ٿي آزاديءَ لاءِ جدوجهد شروع كئي. پاڻ "خلافت كاميٽي" ضلعي سكر جي مجلس عاملہ جو ميمبر بہ ٿي رهيو(992).

"خلافت تحريك" كان سواءِ مولانا صاحب "هاري تحريك" جو پڻ پرخلوص كاركن ٿي گذريو آهي.سندس ئي كوششن سان سكر ۾ "هاري كاميٽيءَ"جو قيام عمل ۾ آيو. پاڻ هن تحريك سان وابسته هجڻ سبب جيل به كاٽيائين(993).

^{*} مولوي صاحب تاريخ 24صفر المظفر سن 1409 مطابق 7آكٽوبر 1988ع تي وفات كري ويو.

شاھ صاحب 9 ربيع الثاني 1387هـ مطابق 18 جولاءِ 1967ع تي رحلت ڪئي(994).

مولانا داكتر محمد عمر شيخ

مولوي محمد عمر ابتدائي تعلير پنهنجي والد مولوي احمد کان ورتي، باقي سڄي تعلير ٺيڙهي واري مدرسي "دارالهديا" ۽ پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" مان حاصل ڪيائين. ان کان پوءِ طيبه ڪاليج لاهور مان طب جو ڪورس پورو ڪري، اچي پهريائين پنهنجي ڳوٺ ۾، پوءِ سکر ۾ اسپتال کولي حڪمت جو ڏنڏو ڪرڻ لڳو.

پاڻ مولانا ابوالڪلام آزاد ۽ مولانا عبيدالله سنڌيءَ کي سياست ۾ پنهنجو اڳواڻ ڪري مڃيندو هو ۽ "جمعيت العلماءِ هند" سان واسطو رکي آزاديءَ جي تحريڪ ۾ حصو ورتائين.

ڊاڪٽر محمد عمر صاحب تاريخ 8 جمادي الاول 1390هـ مطابق 15 جولاءِ 1968ع تي وفات ڪئي (995).

مولانا محمد عمر كتي

مولانا محمد عمر ولد ميان محمد اسحاق كٽي تاريخ 12 ربيع الاول 1278هـ مطابق 7 سيپٽمبر 1861ع تي ڳوٺ گونگاڻي تعلقي شاهبندر ضلعي ٺٽي ۾ پيدا ٿيو. قرآن مجيد جي تعليم پنهنجي ڏاڏي کان وٺڻ بعد وڃي شاه يقيق جي درگاه تي مولوي محمد ابراهيم ميمڻ وٽ پڙهڻ ويٺو. جتي ماستر يار محمد ڪلهوڙي وٽ پرائمري تعليم به حاصل ڪري ورتائين، ۽ انهيءَ دوران ان وقت جي مشهور شاعر استاد ڪندن مل "مسڪين" وٽ به پڙهيو. ان بعد فارسي ۽ عربيءَ جي تعليم مولانا عبدالله جتوئيءَ کان وٺي فارغ ٿيو. ۽ باقي دوري جا ڪتاب اچي پنهنجي چاچي مولانا محمد هاشر کٽيءَ غلام الله واري کان پڙهيائين.

بعد ۾ اچي "سنڌ مدرسة الاسلام" ڪراچيءَ ۾ داخل ٿيو ۽ سن 1913ع ۾ فائينل پاس ڪري واپس اچي پنهنجي شهر ۾ ديني مدرسو قائم ڪيائين. جتي پهريائين مولانا فتح علي جترئي ننڍي ۽ پوءِ ان جي جاءِ تي مولانا محمد عثمان کٽيءَ کي ڇڏي. پاڻ علم جي وڌيڪ تحقيق لاءِ وڃي مولانا عبدالغفور همايونيءَ وٽرهيو. اتي سال کن رهي پوءِ امروٽ شريف ۾ مولانا تاج محمود صاحب وٽ هڪ سال تائين تفسير ۽

حديث جو مطالعو ڪيائين. ان کان پوءِ وڃي ديوبند ۾ داخل ٿيو ۽ هڪ سال کان پوءِ واپس اچي علم قيانه مولانا محمد عثمان کان پڙهيائين.

مولانا صاحب كي آزاديءَ جي تحريكن ۾ حصي وٺڻ جي كري كنهن مدرسي ۾ ويهي پڙهائڻ جو موقعو كو نہ مليو. البت خانگي طرح كيترن ئي پانڌيئڙن كي علم جي زيور سان آراستہ كيائين.

کيس تصنيف ۽ تاليف جو به شوق رهيو ۽ هن "زيب النساءِ جي ديوان مخفي" جي منظوم شرح بہ تيار ڪئي آهي. مولوي صاحب نوجوانن جي تعميري ادب ۾ دلچسپي رکندي "شاهبندر ادبي سوسائٽي" جو اعزازي ميمبر به رهيو(996).

مولانا محمد عمر كٽيء "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي وندگيءَ جو آغاز كيو. پاڻ تحريك جو سرگرم كاركن ٿي رهيو ۽ وس آهر ان جي مالي مدد به كيائين(997). ان كان سواءِ ڏكڻ سنڌ ۾ هن تحريك جا كيترا جلسا سندس ئي صدارت ۾ ٿيا(998).

جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان عليحدگيءَ واري تحريڪ هلي ته پاڻ به هن جدوجهد ۾ ڀرپور حصو ورتائين.

انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ واسطي جڏهن "كانگريس" ۽ "مسلر ليگ" مذهبي بنيادن تي هلچل شروع كئي، ته هن "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار كري پنهنجون سياسي سرگرميون جاري ركيون. ملك جي ورهاڱي كان پوءِ عملي طور تي سياست كان پري رهي، صرف ديني خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(999)".

مولانا محمد قاسم

مولانا محمد قاسم ٽنڊي ڄام جي طرف جو ويٺل هو. پاڻ ڪجه وقت پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ ابوتراب محمد رشد الله شاه وٽ تعليم وٺڻ کان پوءِ مدرسي "مظهر العلوم" کڏي ڪراچيءَ ۾ به پڙهيو. ان بعد وڃي دهليءَ جي طبيه ڪاليج ۾ داخل ٿيو ۽ ان سان گڏ جامعه مليه ۾ به پڙهڻ جو سلسلو جاري رکيائين.

سن 1929ع ڌاري واپس سنڌ وريو ۽ اچي مختلف شهرن ۾ شفاخانا کوليائين ۽ آخر ۾ حيدرآباد ۾ قومي شفاخانو قائم ڪري، حڪمت ڪندو رهيو. پاڻ سلھ جي مرضوعن تي هڪ ڪتاب لکيو هئائين. جيڪو ڇپجڻ کان اڳ ضايع ٿي ويو(1000).

^{*} مولانا صاحب تاريخ 7 شوال سن 1403ه مطابق 16 جولاءِ 1983ع تي وفات ڪري ويو.

مولانا محمد قاسر "خلافت تحريك" پر شامل ئي سياست پر قدم ركيو. پاڻ تحريك طرفان سڏايل جلسن پر شريك ئي، نه صرف خلافت جي اهميت تي ۽ ڌارين حكمرانن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ تقريرون كندو هو (1001)، پر كيترو وقت "خلافت كاميٽي" حيدرآباد جو نائب صدر ۽ "صوبه سنڌ خلافت كاميٽيء" جو ميمبر بہ ئي رهيو(1002). ان كري كيس "صوبه سنڌ خلافت كاميٽيء" جي جنرل باديءَ جي اجلاس پر شركت كرڻ جو به موقعو مليو(1003).

سن 1930ع ۾ ڪانگريس لوڻ جي قانون شڪئيءَ جي انحرافيءَ ۾ تحريڪ هلائي، تنهن ۾ بهرو وٺڻ ڪري جيل ياترا ڪيائين(1004).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ هن صاحب "مسلم ليگ" ۾ شموليت اختيار ڪئي. کيس ٽنڊي ڄام مسلم ليگ طرفان ضلعي ڪاميٽيءَ تي کنيو ويو هو(1005). ان ڪري آخر ۾ هن ئي جماعت جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندي عمر پوري ڪري ويو(1006).

مولانا محمد مبارك پلي

مولوي محمد مبارڪ ولد حافظ عبدالحميد پلي سن 1333ه مطابق 1915ع ڌاري ڳوٺ کيرل تعلقي عمرڪوٽ ۾ ڄائو (1007). ڳوٺ حاجي عالم پليءَ جي مدرسي "دلرالفيوض" ۾ مولانا محمد علي جوڻيجي وٽ پڙهي، فضيلت جي دستاربندي ڪيائين.

قارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ ڪجه وقت مدرسه "تعليم الاسلام" عمر ڪوٽ ۾ مدرس ٿي رهيو. ان کان پوءِ مدرسه "دارالفيوض" حاجي محمد عالم پليءَ ۾ تعليم ڏيڻ لڳو. کيس علم ادب سان به وڏو چاه هو ۽ پاڻ رسالي "قراني" جو معارن ٿي رهيو. سندس تصنيف "انڪشاف الحقيقت" ذڪر لائق آهي.

مولانا صاحب "جمعيت العلماء" ۾ شموليت اختيار ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد شروع ڪئي(1008).

بعد ۾ جڏهن "ڪانگريس" ۽ "مسلر ليگ" مذهبي بنيادن تي هلچل شروع ڪئي ته پاڻ "مسلر ليگ" ۾ شريڪ ٿي پنهنجون سياسي سر گرميون جاري رکيائين. مولانا صاحب سن 1359هم مطابق 1940ع ۾ رحلت ڪئي(1009).

مولانا حكيم محمد معاذ پيرزادو

مولانا محمد معاذ ولد حاجي محمد عارف پيرزادو سن 1314هـ مطابق 1896

ع ذاري ڳوٺ قطال شاه تعلقي سڪرنڊ ضلعي نواب شاه ۾ پيدا ٿيو(1010). سندس اصل نالو محمد پناه هو، پر پوءِ مولانا عبيدالله سنڌيءَ مٿس نئون نالو محمد معاذ رکيو.

قرآن مجيد ڳوٺ جي آخوند واليڏني وٽ پڙهڻ کان پوءِ وڃي ان وقت جي مشهور مدرسي "دارالرشاد" پير جهنڊي ۾ داخل ٿيو. جتي سنڌي، فارسي ۽ عربيءَ جي تعليم حاصل ڪرڻ کان پوءِ سن 1913ع ۾ درس نظامي پورو ڪيائين. تنهن کان پوءِ سن 1914ع ۾ دهليءَ وڃي حڪيم اجمل خان جي "مدرسه طبيه" ۾ ٻن مهينن تائين مطالعو ڪيائين. ان بعد ميرٺ وڃي مولانا عبدالمؤمن وٽ حديث جا ڪتاب پڙهيائين. آخر ۾ لکنؤ جي "تڪميل الطب ڪاليج جهوانئي ٽولا" ۾ داخل ٿي سن 1917ع ۾ طب جي عربيءَ ۾ سند وئي واپس سنڌ وريو.

علمي فراغت كان پوءِ مولانا محمد معاذ نواب شاه ۾ اچي دواخانو قائر كيو. جيكو سالن جا سال حكمت ۽ سياست جو مركز رهيو(1011). كيس پڙهڻ ۽ لكڻ جو پڻ وڏو ذوق هو، ۽ سندس كيترائي تاريخي مضمون سنڌ جي مختلف رسالن ۽ اخبارن جهڙوك: الرحيم ۽ مهراڻ ۾ شايع ٿيندا هئا.

مولانا محمد معاذ سنڌ جي بي لوث ۽ وطن دوست عالم سياستدانن مان هڪ هو. سندس سياسي تربيت مولانا عبيدالله سنڌيءَ جي نظرداريءَ هيٺ ٿي. جڏهن "خلافت تحريڪ" جو آغاز ٿيو، ته وڏي جوش ۽ جذبي سان ان ۾ شرڪت ڪيائين. مولوي صاحب ڪيترو وقت هن تحريڪ جو مبلغ ٿي رهيو(1012)، ۽ هن جي ئي ڪرششن سان نواب شاه شهر تحريڪ جو مکيه مرڪز بڻجي ويو. پاڻ اتان جي خلافت ڪاميٽيءَ جو سيڪريٽري هو(1013). اهڙيءَ طرح "صوبه سنڌ خلافت ڪاميٽي" جي ورڪنگ عليٽي جو ميمبر، (1014) ۽ "آل انڊيا خلافت ڪاميٽيءَ" جو به ميمبر ٿي رهيو(1015). وطن جي آزاديءَ خاطر هن نه رڳو تحريڪ جي سمورين ڪانفرنسن ۽ جلسن ۾ شرڪت ڪئي (1016)، پر انهيءَ جذبي هيٺ وطن جا وڻ ڇڏي انغانستان ڏانهن هجرت به ڪيائين(1017).

حكير صاحب "خلافت تحريك" سان گڏ "جمعيت العلماءِ" جو بہ سرگرم كاركن ٿي رهيو. پاڻ پنهنجي ضلعي جي جمعيتي عالم اڳواڻن مان هك هو ۽ هن جماعت جي جلسن ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ كوششون ورتائين(1018). ان كان سواءِ سن 1931ع دوران كراچيءَ ۾ سڏايل "جمعيت العلماءِ هند" جي جلسي ۾ هن آذرياءِ كاميٽيءَ جي ميمبر طور بـ كم كيو(1019).

"جمعيت العلماءِ" سان گڏ آزاديءَ وارن ساڳين اصولن تي سندس لاڳاپا "ڪانگريس" سان بر رهيا. جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ کان جدائيءَ واري تحريڪ شروع ٿي, ته پاڻ ان ۾ به ڀرپور حصو ورتائين(1020).

مطالعي هيٺ آيل دور ۾ مذهب ۽ وطن سان واسطو رکندڙ جيڪي بہ پارٽيون ٺهيون, يا جن جون بہ سنڌ اندر شاخون قائم ڪيون ويون, مولوي محمد معاذ انهن ۾ شرڪت ڪئي.

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ جڏهن جلاوطنيءَ کان پوءِ واپس سنڌ وريو. ۽ اچي "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ٺاهيائين ته هن ان جماعت جي قيام ۽ ڪارڪردگيءَ ۾ به سرگرميءَ سان حصو ورتو(1021).

ملڪ جي ورهاڱي کان پوءِ "هاري تحريڪ" ۾ شامل ٿي غريب هارين جي بهبود لاءِ جدوجهد ڪندو رهيو(1022).

پاڻ سن 1389ھ مطابق 1969ع تي لاڏاڻو ڪري ريو(1023)٠

مولانا محمد موسيٰ حبشي

مولوي محمد موسيٰ ولد جمعو خان حبشي سن 1283ع مطابق 1866ع ڌاري ڳوٺ داٻيجي ضلعي ٺٽي ۾ ڄائو. سنڌيءَ جي تعليم دابيجيءَ جي مڪتب ۾ وٺڻ بعد قرآن مجيد، فارسي ۽ عربيءَ جي ابتدائي تعليم وڃي مولوي عبدالله کان ٺٽي ۾ ورتائين. ان بعد سندس والدين داٻيجيءَ مان ڪوچ ڪري وڃي ڪوٽڙيءَ ۾ ويٺا. ان ڪري پاڻ وڃي ٺيڙهيءَ جي مدرسي ۾ داخل ٿيو. اتان پوءِ سگهوئي لکنؤ ۾ وڃي تعليم ورتائين، جتي طب جو علم به سکيو.

فارغ التحصيل ٿي سنڌ آيو ۽ ڪوٽڙي نانگولين ۾ ديني مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو ۽ ان سان گڏوگڏ طب جو دڪان کولي حڪمت جو شغل بہ جاري رکيائين. پاڻ مدرسي "احرار الاسلام" لياري كوارٽر ۽ "مظهر العلوم" کڏي ۾ ب ڪجه وقت تعليم ڏنائين. ۽ اهڙيءَ طرح سٺو مبلغ ۽ چڱو شاعر پڻ هو(1024).

مولانا محمد موسيٰ پنهنجي سياسي زندگيء جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان كيو. پاڻ هن تحريك جو مخلص ۽ سرگرم كاركن ٿي رهيو. خلافتي عالمن طرفان جڏهن "امن سيا" ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ فتويٰ جاري ٿي. تہ مولانا صاحب پڻ ان جي تصديق كري(1025). پنهنجي تحريك دوستيءَ جو ثبوت ڏنو.

مولانا صاحب ڌارين حڪمرانن کان نجات حاصل ڪرڻ لاءِ تحريڪ جي جلسن ۾

نہ صرف شریک ٿي انگریزن خلاف نفرت ڀريون تقريرون کندو هو(1026)، پر هن تحريک جي جلسن جي صدارت ب کيائين(1027)، انگريز دشمنيءَ جي پاداش ۾ کيس جيل جي سزا به ڀوڳڻي پئي. هن مرد مجاهد جي جيل وڃڻ تي خلافت جي جلسن ۾ نه صرف کيس خراج عقيدت پيش کيو ويو(1028). پر جيل مان آزاد ٿي موٽڻ تي سندس استقبال به کيو ويو(1029)، اهڙيءَ طرح وطن جي آزاديءَ خاطر پاڻ هن تحريک جي مالي مدد به خوب کيائين(1030).

هن محب وطن عالم سن 1350هـ مطابق 1931ع تي رحلتْ كئي (1031).

مولانا محمد هاشم اسحاق ديرائي

مولانا محمد هاشر ولد حاجي اله بخش سن 1306ه مطابق 1889ع ۾ ڳوٺ قلپوٽه لڳ بنگلديرو ضلعي لاڙڪاڻي ۾ ڄائو. هن ابتدائي تعليم پنهنجي ڳوٺ کان شروع ڪئي ۽ پنهنجي مامي ملا عمر وٽ قرآن شريف حفظ ڪيائين. ان کان پوءِ مولانا عبدالله بنگلديرائي، مولانا خوش محمد ميروخاني، مولانا عبدالقادر پنهواري، ۽ مولانا محمد قاسم ڳڙهي ياسينيءَ وٽ پڙهي درس نظامي پورو ڪيائين(1032).

هن علمي فراغت بعد اچي اسحاق ديري تعلقي ڳڙهي ياسين ۾ ديني مدرسو قائم ڪري درس وتدريس جو آغاز ڪيو. کيس مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي گهڻي صحبت ۽ ملاقات نصيب ٿي. پر ان جي وفات بعد لڏي اچي رڪ اسٽيشن ڀرسان نئين ڳوٺ ۾ ويٺو. ۽ اتي "انجمن مجاهدان اسلام" جي نالي سان هڪ تبليغي ادارو به قائم ڪيائين.

مولوي صاحب تدريس ۽ تبليغ سان گڏ تصنيف جو به ڪر ڪيو، ۽ سندس لکيل ڪتابن مان "بنات الرسول" ، "قبله جو مسئلو" ۽ "احيا؛ القلوب" ذڪر لائق آهن(1033).

مولانا محمد هاشر "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿي سياست ۾ پير پاتو. پاڻ تحريك جو سرگرم كاركن ۽ مبلغ ٿي رهيو(1034)، ۽ تحريك سان انصاف كرڻ خاطر مدرسي كي ملندڙ سركاري گرانٽ وٺڻ كان به انكار كري ڇڏيائين(1035). پاڻ تحريك جي مجلسن ۾ شريك ٿي وڃي انگريزن خلاف عوام كي بيدار كندو هو. جنهن كري هن جيل جي سزا به ڀوڳي(1036). جڏهن خلافتي عالمن تحريك جي حق ۾ فترائون جاري كيون ته مولوي صاحب به سندن ساٿ ڏنو(1037).

"خلافت تحريك" كان سواءِ هن "جمعيت العلماءِ" جي سياسي ميدان تان بـ وطن

جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو. مولانا صاحب سکر ضلعي جي ناميارن جمعيتي عالمن مان هڪ هو. پاڻ ڪيترو وقت هن جماعت جي ضلعي شاخ جو ناظر (1038)، نائب صدر (1039)، صدر (1040)، ۽ "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي ڪاروباري ڪاميٽيءَ جو ميمبر بـ ٿي رهيو (1041).

مولوي صاحب سن 1359ه مطابق 1940ع ۾ وفات ڪئي (1042).

مولانا محمد هاشعر كتى

مولانا محمد هاشر ولد ميان عبدالله كٽيءَ جي ولادت تاريخ 11 رجب المرجب 1271ع مطابق 30 مارچ 1855ع تي ڳوٺ گونگاڻيون، تعلقي شاهبندر ضلعي ٺٽي ۾ ٿي. ابتدائي تعلير پنهنجي ڏاڏي مولانا عبدالغفور کٽيءَ کان ورتائين. ان بعد باقي تعليم مولانا محمد عمر ستاه واري, مولانا عبدالله جتوئي ۽ ٺٽي ۾ مولانا عبدالرحيم کان وٺي فارغ التحصيل ٿيو.

علمي فراغت كان بعد كجه وقت, پهريائين ڳوٺ گونگاڻين ۾ ۽ پوءِ غلام الله شهر ۾ تعليم ڏيڻ بعد موٽي اچي پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ پوري ڄمار درس وتدريس ۾ گذاريائين. هن وقت سندس نالي پٺيان مدرسه "فيض هاشميه" كم كري رهيو آهي(1043)،

مولانا محمد هاشر كٽيءَ "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز كيو ۽ كيترو وقت خلافت كاميٽي "گج گليل" جو صدر بـ ٿي رهيو(1044).

"خلافت تحريك" كان سواءِ پاڻ "جمعيت العلماءِ" ۾ به شموليت اختيار كيائين ۽ ان جي جلسن ۾ شريك ٿي، هن صاحب وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو(1045).

مولانا صاحب تاريخ 29 جمادي الثاني 1380هـ مطابق 18 ڊسمبر 1960ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري ويو(1046).

مولانا محمد هاشر انصاري

مولانا محمد هاشر ولد ملا محمد انتصاري تاريخ 12 ربيع الاول 1305ع مطابق 28 نومبر 1887ع تبي قلجي تعلقي جوهي ضلعي دادو فر ڄائسو(1047). قرآن پاڪ ۽ فارسيءَ جي ابتدائي تعليم پنهنجي ڳوٺ ۾ ورتائين. ان بعد ڊگهر بالا تعلقي جوهيءَ ۾ مولانا محمد حسن جي مدرسي ۾ وڃي هن عربيءَ جي تعليم حاصل ڪئي(1048). علمي فراغت كان پوءِ دادو ۾ درس وتدريس ڏيڻ لڳو. ان بعد ميان جو پٽ لڳ اسٽيشن همايون. کهڙا رياست خيرپور، قاضيءَ جي ڪنڊي لڳ اسٽيشن ڦلجي، شڪارپور، كاهي ڪنڍا لڳ نوشهروفيروز ۽ نوشهروفيروز ۾ وڃي علم جو نور پکڙيائين(1049) آخر ۾ نواب شاه جي جامع مسجد جو پيش امام مقرر ٿيو ۽ هن ئي عرصي دوران قرآن شريف جو حفظ بہ كري ورتائين(1050).

مولانا صاحب "خلافت تحريك" ۾ بهرو وٺندي سياست ۾ قدم رکيو. پاڻ جيتوڻيك هن تحريك جي مكي كانفرنسن ۾ شريك ٿي آزاديءَ لاءِ ڀرپور جدوجهد كيائين، پر ان هوندي به خلافتي اڳواڻن جي جذباتي فيصلن كان پري رهيو. خاص كري "هجرت تحريك" جي مخالفت كيائين ۽ ولايتي كپڙي پهرڻ واري مسئلي تي هن خلافتين جو سات نه ڏنو(1051).

پاڻ زندگيءَ جو ظاهري سفر پورو ڪري تاريخ 12 صفر سن 1382هـ مطابق 14 جولاءِ 1962ع تي وڃي پنهنجي خالق حقيقيءَ سان مليو(1052).

مولانا پير محمد هاشر جان سرهندي

پير محمد هاشر جان ولد خواج محمد حسن جان سرهندي تاريخ 16 ذي التعد 1322هـ مطابق 22 جنوري 1905 تي ٽنڊي سائينداد ضلع حيدر آباد ۾ ڄائو(1053).

قرآن مجيد جو حفظ مولانا لعل محمد متعلويء وٽ ڪيائين ۽ فارسي ۽ عربيءَ جا ڪتاب پنهنجي والد بنزر گوار وٽ پڙهيو(1054). ان بعد وڃي اجمير شريف جي "مدرسه معينيه" ۾ داخل ٿي، مولانا معين الدين وٽ پڙهيو، ۽ ان جي ڀاءُ حڪير نظام الدين کان فن طب حاصل ڪيائين(1055). اجمير کان واپس اچي هن مدرسه "رڪن الاسلام" ٽنڊي سائينداد ۾ درس وتدريس جو شغل اختيار ڪيو(1056).

پير هاشر جان "جمعيت العلماء" ۾ شموليت اختيار كري انگريزن كان آزادي حاصل كرڻ لاءِ جدوجهد شروع كئي. تاريخ 14 ۽ 15 آگسٽ 1937ع تي كراچيءَ ۾ جڏهن مولانا حسين احمد مدنيءَ جي صدارت هيٺ "جمعيت العلماء سنڌ" جو جلسو ٿيو. تہ پاڻ بدان ۾ شركت كيائين(1057).

ان کان پوءِ جڏهن حيدرآباد واري قلعي ۾ قاري محمد طيب ديوبنديءَ جي صدارت ۾ هن جماعت جو عظير الشان جلسو منعقد ٿيو, ته ان ۾ پڻ پير صاحب شرڪت ڪري وطن جي آزاديءَ لاءِ جاکوڙ ڪئي(1058).

پير صاحب تاريخ 22 رمضان 1395هـ مطابق 28 سيپٽمبر 1975ع تي هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪيو(1059).

مولانا محمد هاشم

مولوي محمد هاشر ولد حاجي لال محمد ڳوٺ وارياسي تعلقي ميهڙ ۾ پيدا ٿيو. هن ابتدائي تعليم مولوي عبدالڪريم ڏيري کان ورتي. ان کان پوءِ مولانا محمد اسحاق ڪڙيائيءَ وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربندي ڪيائين(1060).

فارغ التحصيل ٿيڻ بعد مولوي صاحب پنهنجي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم ڪري درس وتدريس جو آغاز ڪيو. کيس تصنيف ۽ تاليف سان بہ شوق هوندو هو ۽ هن "خطبات هاشميه" نالي ڪتاب لکيو(1061).

مولانا محمد هاشر خلافتي عالمن مان هڪ هو ۽ وطن جي آزاديءَ خاطر پاڻ "خلافت تحريڪ" جي ئي سياسي ميدان تان جدوجهد ڪيائين(1062)، ۽ هن تحريڪ جي خاتمي کان پوءِ سياست کان پري رهيو.

هن سن 1396ه مطابق 1976ع ۾ وفات ڪئي(1063).

مولانا محمد هاشر لغاري

مولانا محمد هاشر ولد حاجي الهر بخش لغاري سكر ضلعي جو رهاكو هو. شروعاتي تعليم پانڌيءَ جي ڳوٺ ۾ وٺڻ بعد ٿوري وقت لاءِ رياست بهاولپور ۾ وڃي پڙهيو. ان كان پوءِ پير جهنڊي ۾ مولانا عبيدالله سنڌيءَ وٽ كجه وقت پڙهڻ بعد وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، ۽ اتان ئي علم جي تكميل كري واپس وريو.

علم جي تحصيل بعد داد لغاريءَ جي ويجهو ٽالهيءَ جي ڳوٺ ۾ مدرسو کولي پڙهائڻ لڳو، پر سندس گهڻو رجحان تبليغ ڏانهن هئڻ ڪري، اڪثر سفر ۾ گذاريندو هو.

مولانا محمد هاشر لغاريءَ تي ديوبند واري ئي دور ۾ انقلابي رنگ چڙهڻ شروع ٿيو. جڏهن "خلافت تحريڪ" هلي تہ ان ۾ حصي وٺڻ جي پاداش ۾ هن آزاديءَ جي متوالي کي سهارنپور جيل جو بہ منهن ڏسڻو پيو(1064).

ديوبند كان واپس موتي اچي ماك كري ويهي نه رهيو، پر درس وتدريس سان گڏ سياست جي شغل كي به جاري ركيائين. پاڻ بين الاقوامي سياست ۾ به دلچسپي گر كندو هو ۽ انگورا جي مظلومن سان همدرديء جي اظهار لاءِ ميرپورمائيلي ۾ سندس ئي صدارت ۾ جلسو منعقد ٿيو (1065).

ان كان پوءِ مسلمانن تي ٿيندڙ ظلمن خلاف تاريخ 31 مئي 1931ع تي جڏهن شڪارپور ۾ جلسو ٿيو. تہ پاڻ ان ۾ بہ شريڪ ٿي انهن ظلمن خلاف نفرت جو اظهار ڪيائين(1066). خلافت جي خاتمي كان پوءِ مولوي صاحب صرف ديني خدمتون انجام ڏيندي پنهنجي ڄمار پوري ڪئي(1067).

مولانا محمد هاشر گهانگهرو

مولوي محمد هاشر ولد محمد ڇُٽل گهانگهرو سن 1329هـ مطابق 1911ع ۾ پير وهنيل تعلقي ميرواه ضلعي خيرپور ۾ ڄائو. سن 1924ع ڌاري پيرجهنڊي جي مدرسي "دارالرشاد" ۾ مولانا عبدالله لغاري. مولانا عبدالقادر لغاري ۽ مولانا شمس الحق افغانيءَ وٽ چئن سالن تائين پڙهيو. ان کان پوءِ سن 1928ع ۾ وڃي "مظهر العلوم" كذي كراچيء ۾ داخل ٿيو. جتي مولانا محمد صادق. مولانا عبدالجليل ۽ مولانا حافظ فضل احمد كان تعليم ورتائين. اتان پوءِ واپس ڳوٺ پهچي هن سنڌي فائينل جي تياري ڪري سن 1932ع ۾ وڃي شڪارپور مان اهو امتحان پاس ڪيو. ان بعد بيهر "مظهر العلوم" كذّي ۾ پهچي تعليم جاري ركندي سن 1938ع ۾ دستاربندي ڪيائين. تنهن بعد مدرسي جي قائر ڪيل اسڪول ۾ پڙهائڻ سان گڏ هنتيوار "اصلاح" جو ايديٽر ٿي رهيو. جڏهن مولانا عبيدالله سنڌي پنهنجي جلاوطنيءَ کان پوءِ سن 1939ع ۾ واپس سنڌ وريو ۽ اچي "جمنا, نربدا, سنڌ ساگر پارٽي" ۽ "بيت الحڪمت" قائم ڪيائين تہ مولانا محمد هاشر پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪري. مولانا سنڌيءَ جي ٺاهيل پارٽيءَ ۾ شريڪ ٿيو. پاڻ شاگرديءَ واري ئي دور ۾ مولانا محمد صادق کڏي واري جي سياسي صحبت بہ حاصل كري چكر هو. ان كري مولاناعبيدالله سنڌيءَ هن كي پيرجهنڊي ۾ وٺي اچي کيس "جمنا، نربدا، سنڌ ساگر پارٽي" ۽ "بيت الحڪمت" جي دفتر جو انچارج مقرر كيو. مولانا محمد هاشر صاحب هن ئي جماعت جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيو.

سن 1940ع دوران فوج ۾ ڀرتي ٿيو ۽ تربيت بعد کيس برما جي محاذ تي موڪليو ويو. سن 1947ع ۾ فوج مان ڇڏي سکر ٽيڪنيڪل اسڪول ۾ هڪ سال ٽريننگ وٺي اچي حيدرآباد پاور هائوس ۾ ملازم بڻيو. جتان پوءِ سگهوئي ڇڏي خانگي ڪمن ۾ زندگي بسر ڪرڻ لڳو(1068)*

[·] مولوي گهانگهرو صاحب هن وقت وفات كري ويو آهي.

مولانا محمد يعقوب حاجاثو

مولوي محمد يعقوب ولد سونهارو خان حاجاثو بلوچ تاريخ 6 صفر 1330هـ مطابق 26 جنوري 1912ع تي ديه لياري تعلقي پٿوري ضلعي ٿرپارڪر ۾ پيدا ٿيو. هن ابتدائي عربيءَ جي تعلير "دارالعلوم وليهٽ" تعلقي عمرڪوت ۾ مولانا عبدالمطلب کان ورتي. ان بعد "دارالعلوم قراني" تعلقي پٿوري ۾ مولانا محمد عثمان قرانيءَ وت فقه ۽ حديث جي تعليم پوري ڪرڻ کان پوءِ ٻيهر موٽي اچي "دارالعلوم وليهٽ" ۾ مولانا عبدالڪريم ساندوٽ باقي رهيل ڪتاب ۽ تفسير پورو ڪيائين.

علمي فراغت كان پوء درس وتدريس جو مشغلو اختيار كرڻ بدران مولوي صاحب سياست ۾ قدم ركيو. جڏهن پڙهي بس كيائين ته "خلافت تحريك" پنهنجي آخري دور ۾ پهچي چكي هئي، تنهن هوندي به ان ۾ بهرو ورتائين.

مولانا صاحب "كانگريس" ۾ به كاني وقت رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پترڙيو. آخر ۾ سن 1938ع كان وٺي ملك جي ورهاڱي تائين "خاكسار تحريك" ۾ رهي. پنهنجي محلي جي سالار جو عهدو سنڀالي سياسي خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو. دارين حكمرانن خلاف سندس انهيءَ سرگرم سياست جي پاداش ۾ كيس سول نافرمانيءَ جي ڏوه ۾ 307 هيٺ ٻن سالن جي سزا ڏيئي، ڊسٽرڪٽ جيل ملتان ۾ رکيو ويو.

مولانا محمد يعقوب پاڻ هر هاري هئڻ ڪري آخر ۾ ڏکويل هارين جو همدرد ٿي رهيو(1069).

مولانا محمد يوسف بنوي

مولانا محمد يوسف ولد مولانا محمد سليمان ٻنوي سن 1306هـ مطابق 1889ع ۾ ڳوٺ سيد قادر ڏنو شاھ لڳ جنهاڻ سومرو ضلعي حيدرآباد ۾ ڄائو. اول کان وٺي آخر تائين پنهنجي والد وٽ علم حاصل ڪري سن 1327هـ ۾ دستاربند ٿيو(1070).

علمي فراغت کان پوءِ ٻني ۾ پنهنجي والد واري مدرسي ۾ تدريس جو ڪر شروع ڪيائين. ۽ انهيءَ پڙهائيءَ جي سلسلي کي سن 1390هـ تائين جاري رکندو آيو(1071) ان بعد فيصلا ڪرڻ ۽ فتوائون ڏيڻ سدس خاص مشغلو رهيو(1072).

مولانا محمد يوسف به پنهنجي والد مولانا محمد سليمان ٻنويءَ وانگر آزادي پسند سنڌي عالم هو. هن پنهنجي والد جي تربيت هيٺ سياسي بصيرت حاصل ڪئي هئي. جڏهن "خلافت تحريڪ" جي لهر پوري ملڪ اندر ڊوڙي ته مولانا محمد يوسف پڻ ان ۾ شريڪ ٿي. پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز ڪيو. پاڻ تحريڪ جو سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو ۽ ڏکڻ سنڌ ۾ ان کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ لاءِ سڏايل جلسن ۾ سندس وڏو هٿ هو(1073).

جدِّهن انگريزن مولوي فيض الكرير كان "تحقيق الخلافت" نالي هك فتوي جو رسالو شايو كرائي، "خلافت تحريك" كي دېائڻ جي كوشش كئي، ته خلافتي عالمن طرفان وري ان جو رد لكيو ويو، جنهن جي مولانا محمد يوسف پڻ تائيد كئي(1074).

ان سان گڏ تحريڪ جي مالي امداد لاءِ خلافتي عالمن سان چندن گڏ ڪرائڻ ۾ بہ ساٿ ڏنائين(1075) وطن جي آزاديءَ خاطر انگريزن خلاف ڪر ڪرڻ ڪري، کيس جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي(1076).

"خلافت تحريك" كان پوءِ جڏهن سنڌ جي بمبئيءَ كان عليحدگيءَ واري تحريك هلي ۽ سنڌ اندر "سنڌ آزاد پارٽي" ٺاهي ويئي تہ كيس ميرپور بٽوري شاخ جو صدر مقرر كيو ويو. هن عهدي تي فائز رهي هك مبلغ بڻجي، سنڌ جي جدائيءَ تائين هن تحريك ۾ به پرپور حصو ورتائين (1077).

مولانا صاحب آخر ۾ "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو. ۽ هن جماعت جي جلسن ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيندو رهيو(1078).

مولوي محمد يوسف تاريخ 9 محرم 1397هـ مطابق 31 بسمبر 1976ع تي رحلت كئي(1079).

مولانا محمود پاٽائي

مولانا محمود ولد مولانا محمد صالح صديقي سن 1301هـ مطابق 1884ع ڌاري پاٽ ضلعي دادو ۾ ڄائو. ابتدائي تعليم مولانا حسن الله پاٽائيءَ کان وٺڻ بعد وڃي ٽونڪ ۾ حڪيم برڪات احمد وٽ پڙهڻ ويٺو(1080) ان کان پوءِ اجمير ۾ مولانا معين الدين وٽ پڙهيو ۽ آخر ۾ دستاربند به ٿيو.

علمي فراغت بعد درس وتدريس جو شغل اختيار كيائين. سندس غير معمولي قابليت جي شهرت جي كري، وٽس فارغ التحصيل عالم به پڙهڻ ايندا هئا. پاڻ يوناني حكمت ۾ مهارت رکڻ (1081) سان گڏ عربي ۽ فارسيءَ جو اديب پڻ هو. ۽ هن "امور عام" (قلمي) تي هڪ كتاب به لکيو آهي(1082).

مولانا محمود صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جي ابتدا تڏهن ڪئي، جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي. پاڻهن تحريڪ جو نه صرف سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو، پر جڏهن خلافتي عالمن امن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ فتويٰ جاري ڪئي، ته هن ان جي تصديق ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو(1083) ان کان سواءِ حيثيت آهر تحريڪ جي مالي مدد به ڪيائين(1084).

پاڻ تاريخ 29 جمادي الآخر 1351هـ مطابق 30 آڪٽوبر 1932ع تي لاڏاڻو ڪري ويو(1085).

مولانا ميان محمود

مولوي محمود ولد ميان حاجي محمد قاسر لاکير جي ولادت ڳوٺ صلح آباد عرف ٻوڙا لاکير لڳ خيرپور ناٿن شاھ ضلعي دادو ۾ ٿي. ۽ ملڪن ۾ پڙهي دستاربندي ڪيائين.

علم جي تحصيل کان پوءِ پڙهائڻ سان گڏ ذڪرواذڪار جو سلسلو به شروع ڪيائين ۽ پاٽ شريف ۾ پهچي، مولانا محمود صديتيءَ وت ان سلسلي جي تڪميل ڪرڻ بعد اڻ ڳڻين ماڻهن کي فيض پهچائيندو رهيو(1086)

مولانا ميان محمود "خلات تحريك" شروع ٿيڻ سان سياست ۾ پير پاتو. جڏهن خلافتي عالمن امن سيائين جي خلاف فتوائون جاري ڪيون. ته پاڻ نه صرف انهن جي تصديق ڪيائين(1087)، پر ڪيتري وقت تائين لاڙڪاني ضلعي جي ڳوٺ "چونڊين خلافت ڪاميٽيءَ" جو صدر بـ ٿي رهيو(1088).

تحريڪ جو هيءُ مخلص ڪارڪن لارڪاڻي ضلعي ۾ "خلافت تحريڪ" جي ٿيندڙ جلسن ۾ شريڪ ٿي، وطن جي آزاديءَ خاطر جدوجهد ڪندر هو(1089).

مولانا صاحب تاريخ 27 رمضان 1363ه مطابق 15 سيپٽمبر 1944ع تي وفات ڪئي(1090).

مولانا معين الدين صديقي

مولانا معين الدين سيوهن جي صديقي خاندان مان هو ۽ پنهنجي دور جو وڏو جيد عالم ٿي گذريو آهي. پاڻ مخدوم حسن الله پاٽائيءَ کان تعليم ورتي هئائين ۽ جيمس آبادوٽ ڀرڳڙين ۾ پڙهائيندو هو(1091).

مولانا صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو ,پاڻ انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ واسطي هن ئي تحريك کي ڪامياب بنائڻ لاءِ خلافتي عالمن جو ساٿ ڏنائين.

خلافتي عالمن جدّهن "ترك موالات" تي عمل كرائڻ لاءِ فتوائون جاري كيون

تہ مولانا معين الدين صاحب پڻ انھن فتوائن جي تصديق ڪري(1092) پنھنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو.

پاڻ سن 1367هـ مطابق 1948ع ۾ هيءُ جهان ڇڏيائين(1093).

مولانا حكير معين الدين كنياروي

مولوي معين الدين ولد عبدالرحلن سن 1310هـ مطابق 1893ع ۾ کنيارين ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو. سندس اوائلي نالو حزب الله هو، پر پوءِ معين الدين سڏجڻ لڳو. قرآن شريف پنهنجي والد وٽ پورو ڪرڻ بعد ڪجه وقت حافظ گل شير ۽ قاضي محمد صديق جهونجهاڻ واري وٽ به پڙهيو. عربيءَ جا سبق مولوي احمد علي لاهوريءَ، حافظ محمد اکرم هالائي ۽ مولانا محمد صديق راڻي پور واري کان ورتائين. طبابت پروفيسر محمد نواز بهاولپور واري کان سکيو، پر ان جي سند هن وڃي دهليءَ جي طبيہ ڪاليج پٽيالي مان ورتي(1094).

مولانا معين الدين صاحب ُ 1917ع کان وٺي دادو جي شهر ۾ رهڻ لڳو ۽ اتي طبابت شروع ڪيائين. کيس انهيءَ پيشي ۾ چڱي مهارت حاصل ٿي ويئي، ۽ ڪجهہ وقت کان پوءِ دادو ڇڏي وڃي نواب شاھ ۾ ويٺو ۽ اتي بہ طبابت جو شغل جاري رکيائين(1095).

مولانا صاحب خلافت تحريك ۾ شامل ٿي سياست ۾ قدم رکيو. پاڻ "آل انڊيا خلافت كاميٽيءَ" جو ميمبر ٿي رهيو (1096)، ۽ سنڌ اندر هن تحريك جي جلسن ۾ شريك ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ كر كيائين(1097). اهڙيءَ طرح خلافتي عالمن جڏهن غير ملكي كپڙي جي پهرڻ خلاف فتويٰ جاري كئي، ته هن به ان جي تصديق كئي(1098)، ان كان سواءِ وس آهر تحريك جي مالي مدد به كيائين(1099).

"خلافت تحريك" كان پوءِ "جمعيت العلماءِ" ۾ شموليت اختيار كري، ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. كيس سن 1925ع ۾ جمعيت العلماءِ سنڌ جي وركنگ كاميٽي جو ميمبر مقرر كيو ويو(1100)، اهڙيء طرح پاڻ هن جماعت جي جلسن ۾ پڻ شريك ٿي(1101)، پنهنجون سياسي خدمتون جاري ركندو آيو.

مولانا صاحب تاريخ 13 ذي الحج 1389هـ مطابق 20 فيبروري 1970ع تي هن فاني دنيا مان لاڏاڻو ڪري. دار البقا ڏانهن راهي ٿيو(1102).

مولانا مولاداد چانڊيو

مولوي مولاداد ولد علي بخش چانڊيي جي ولادت ڳوٺ گل محمد چانڊيي تعلقي خيرپور ناٿن شاه ضلعي دادو ۾ ٿي. سنڌي فائنل تائين ڪڪڙ ۾ پڙهيو. ان کان پوءِ پوليس کاتي ۾ منشي بڻجي ملازمت جو آغاز ڪيائين ۽ گڏوگڏ سوني خان جتوئيءَ جي مدرسي ۾ مولانا غلام عمر جتوئيءَ کان ديني تعليم به حاصل ڪندو رهيو. لڳاتار ستن سالن جي محنت کان پوءِ دستاربند ٿيو ۽ ملازمت ڇڏي اچي ڳوٺ وسايائين (1103).

مولوي لخياحب "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست ڏانهن وڌيو. پاڻ هن تحريڪ جو پرخلوص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. وطن جي آزاديءَ خاطر انگريزن خلاف ڪر ڪرڻ سبب جيل بہ ڪاٽيائين(1104). هن خلافت ڪاميٽي "گل محمد چانڊيو" شاخ جو سيڪريٽري بڻجي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪئي(1105).

مولوي صاحب پنهنجي ڄمار جو آخري حصو "مسلم ليگ" ۾ گذاريو. هن انهيءَ جماعت سان تعاون ڪندي "مسجد منزل ڳاه" واري تحريڪ ۾ ڀرپور حصو ورتو.

پاڻ تاريخ 17 رمضان 1362هـ مطابق 17 سيپٽمبر 1943ع تي هيءُ جهان ڇڏيائين(1106).

مولانا مير محمد نورنگي

مولانا مير محمد ولد ملا محمد هاشر ڳوٺ راضي ڳورڙ، تعلقي قمبر ضلعي لاڙڪاڻي ۾ پيدا ٿيو. ابتدائي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان کان پوءِ مولوي فيض محمد پير ڳوٺائي، مولوي محمد اسماعيل ابڙن واري، مولانا عبد الله بنگلديرائي، مولانا قمر الدين، مولوي نظر محمد ڀنگائي ۽ مولوي امام بخش بهاولپوري کان عربي ۽ فارسي جي تعليم وٺي دستاربندي ڪيائين. علم جي تحصيل کان پوءِ هن پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ مدرسو قائم ڪري تدريس جو سلسلو شروع ڪيو(1107).

مولانا مير محمد نورنگيءَ "خلافت تحريك" ۾ شريك ٿيڻ سان سياست جي ميدان ۾ پير پاتو ۽ پڇاڙيءَ تائين ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو(1108).

خلافت تحريك جي زماني ۾ انگريز سركار جڏهن امن سيا قائر كرائي ۽ سنڌي عوامر هن نئين ڄار ۾ ڦاسڻ لڳو ته خلافتي عالمن گڏجي امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن خلاف فتريٰ جاري ڪئي، جنهن جي مولانا صاحب به تصديق ڪئي(1109). ان كان پوءِ امن سيائي عالمن ولايتي كپڙي كي استعمال كرڻ جي حق ۾ ڳالهيون كرڻ شروع ڪيون تہ انهن جي رد ۾ بہ خلافتي عالمن فتوائون ڏنيون، جن جي تائيد ڪندڙن مان مولانا مير محمد نورنگي بہ هڪ هو(1110).

"خلافت تحريك" كان سواءِ مولانا صاحب "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي سياسي ميدان تان به وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد كئي. پاڻ سن1925ع كان وٺي هن جماعت جو نائب صدر ٿي رهيو(111).

آخر ۾ سن 1938ع کان وٺي مولوي صاحب "مسلم ليگ" سان وابستہ رهيو ۽ سندس ئي ڪوششن سان لاڙڪاڻي ۾ "مسلم ليگ" جي شاخ قائم ٿي(1112).

پاڻ تاريخ 10 محرم 1361هـ مطابق 28جنوري 1942 تي رحلت ڪيائين(1113).

مولانا مير محمد جتوئي

مولانا مير محمد ولد مولانا حاجي عبد الله جتوئي سن 1275هـ مطابق 1858ع ۾ ڄائو. شروعاتي تعليم پنهنجي والد کان ورتائين. ان بعد ڪجهه وقت مولانامحمد هاشر غلام الله واري وت پڙهيو، ۽ آخر ۾ مولانا خادم حسين رتيدير واري وٽ باقي تعليم پوري ڪري دستاربند ٿيو. علمي فراغت کان پوءِ پنهنجي ڳوٺ ۾ درس تدريس ڏيندو رهيو(1114).

مولانا صاحب پنهنجي سياسي زندگي جي شروعات "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ هڪ فتريٰ شامل ٿيندڙن لاءِ هڪ فتريٰ جاري ڪئي تہ پاڻ بہ ان جي تصديق ڪري(1115)، پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنائين.

"خلافت تحريك" جي جڏهن پڇاڙي ٿي ته مولوي صاحب "جمعيت العلماءِ" ۾ شامل ٿيو ۽ ڏکڻ سنڌ ۾ هن جماعت جي سڏايل جلسن ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پترڙيندو رهيو(116).

مولانا مير محمد جتوئيءَ تاريخ 15 رمضان 1391هـ مطابق 5 نومبر1971ع تي وفات ڪئي (1117).

مولانانبي بخش عودي

مولانا نبي بخش ولد غلام حسين سومري جي ولادت سن 1287هـ مطابق 1870ع ۾ شڪارپور ۾ ٿي. هن ابتدائي تعليم شڪارپور ۾ ورتي. بعد ۾ مولانا عبدالغفور همايوني ۽ مولانا عبد الله بنگلديري واري وٽ پڙهيو. ان کان پوءِ ڪجه وقت خواج غلام فريد جي مدرسي ڪوٽ مٺڻ ۾ ۽ مولانا راغب الله جي مدرسي پاڻي پٽ ۾ باقي تعليم وٺي فضيلت جي دستاربندي ڪيائين (1118).

فارغ التحصيل ٿيڻ کان پوءِ مولانا نبي بخش پاڙي جي مسجد ۾ درس تدريس ڏيڻ لڳو. ان کان پوءِ ڳوٺ عودي تعلقي ٺل ضلعي جيڪب آباد جي مدرسي ۾ مدرس اعليٰ مقرر ٿيو(1119).

مولانا صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصو وٺندي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد شروع كئي. پاڻ هن تحريك جو مخلص كاركن ٿي رهيو، ۽ خلافتي عالمن جي جاري كيل فتوائن ۾ سندن ساٿ ڏنائين(1120). اهڙيءَ طرح خلافت تحريك جي جلسن ۾ بہ شريك ٿيندو رهيو(1121).

"خلافت تحريڪ" کان پوءِ ڪيترو عرصو "جمعيت العلماءِ" سان به وابست رهيو، ۽ جيڪب آباد ضلع جي ناميارن جمعيتي عالمن مان هڪ هو. مولوي صاحب "جمعيت العلماءِ سنڌ" جي ورڪنگ ڪاميٽيءَ جو ميمبر(1122)، ۽ ان جي جيڪب آباد واري ضلعي شاخ جو صدر به ٿي رهيو(1123). هن انهيءَ عهدي تي فائز رهي، وطن جي آزادي لاءِ پنهنجون سياسي سرگرميون جاري رکيون.

مولانا صاحب تاريخ 11 ربيع الثاني سن 1370هـ مطابق 19 جنوري1951ع تي لاڏاڻو ڪري ويو(1124).

مولانا نذير حسين جتوئي

مولانا نذير حسين ولد خادم حسين جتوئي تاريخ 6- جمادي الاول 1321هـ مطابق 31 جولاءِ 1903ع تي شاه جي ڳوٺ تعلقي ڳڙهي ياسين ضلع شڪارپور ۾ پيدا ٿيو. شروعاتي تعليم پنهنجي والد کان ڳوٺ ڀليڏنو آباد ۾ ورتائين. ان کان پوءِ گهوٽڪيءَ ۾ مولانا اميد علي صاحب، وڏا وڳڻ ۾ مولانا محمد عظيم سولنگيءَ ۽ چشم شريف ۾ مولانا عبدالحڪيم وٽ پڙهيو (1125). آخر ۾ اچي رتيديري ۾ مولانا اميد عليءَ وٽ دستاربندي ڪيائين (1126).

علمي فراغت كان پوءِ سياست ۾ حصي وٺڻ كري، كيس پڙهاڻڻ جو موقعو نه ملي سگهيو. البت صحافت ۾ قدم ركندي لاڙكاڻي مان نكرندڙ هفتيوار "سجاگي" اخبار ۽ ماهوار "بادل" رسالي جو ايڊيٽر ٿي رهيو. انهيءَ مشغلي هوندي به شاعريءَ سان لڳاءِ هوندو هوس. "

^{*} مولانا نذير حسين جتوئيءَ عربي، فارسي، اردو ۽ سنڌيءَ ۾ شاعري ڪئي آهي. تحريڪ دوران سنڌيءَ ۾ چيل ڪلام جو هڪ بند هن طرح آهي:

مولانا نذير حسين صاحب پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو. پاڻ هن تحريڪ طرفان ٿيندڙ جلسن ۾ شريڪ ٿي انگريزن خلاف نفرت جو اظهار ڪندو هو.

جڏهن خلافت جو خاتمو ٿيو تہ هن "ڪانگريس پارٽيءَ" ۾ شم ليت اختيار ڪئي. سن 1923ع ۾ پارٽيءَ طرفان کيس ضلعي لاڙڪاڻي جو صدر بہ مقرر ڪيو ويو. پاڻ ان عهدي تي فائز رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ ڪم ڪيائين.

سن 1935ع ۾ جڏهن هاري پارٽيءَ جو قيام عمل ۾ آيو. ته هن بان ۾ شامل ٿي. سنڌ جي ڏتڙيل ۽ غريب هارين کي سندن حق وٺي ڏيڻ لاءِ جاکوڙ ڪئي. ۽ نتيجي ۾ کيس جيل جي سزا به ڀوڳڻي پيئي (1127).

ان بعد "جمعيت العلماء" جي سياسي ميدان تان وطن جي آزاديءَ لاءِ پاڻ پتوڙيائين ۽ هن جماعت جي مکي گڏجاڻين ۽ ڪانفرنسن ۾ شريڪ ٿي انگريزن خلاف ڪر ڪندو رهيو (1128).

سن 1939ع ۾ مولانا عبيدالله سنڌي جلاوطنيءَ کان پوءِ جڏهن واپس سنڌ وريو، ۽ اچي "بيت الحڪمت" قائم ڪري پيرجهنڊي جي مدرسي ۾ تعليم ڏيڻ جو آغاز ڪيائين. ته پاڻ بدان جي تعليمي درسن ۾ شريڪ ٿي فيضياب ٿيو. اهڙيءَ طرح مولانا سنڌيءَ جي سياسي صحبت حاصل ڪري، ان جي ٺاهيل "جمنا- نربد- سنڌ ساگر پارٽيءَ" سان وابست رهي پنهنجون سياسي سر گرميون جاري رکيائين (1129).

مولانا صاحب تاريخ 1 جمادي الاول 1394هـ مطابق 23 مئي 1974ع تي رحلت ڪري ويو(1130).

مولانا قاضي نظر محمد ديهاتي

مولانا قاضي نظر محمد ولد حكير عبدالرحمان سومرو سن 1304ه مطابق 1886 ع ۾ ڳوٺ ديهات تعلقي ڪنڊياري ضلع نوابشاه ۾ ڄائو (1131)، ابتدائي سنڌي، فارسي ۽ حفظ قرآن جي تعليم پنهنجي والد كان ورتائين. وڌيڪ تعليم لاءِ كيس محبت ديري سيال ۽ سيٺارجا وڃڻو پيو. عربيءَ جي حصول لاءِ وڃي ٽنڊي سائينداد واري مدرسي "دارالرشاد" ۾ مولانا شاه آغا صاحب وٽ صرف ۽ نحو جا كتاب پڙهيائين. ان كان پوءِ

هن ديني علمن تي وڏيڪ دسترس حاصل ڪرڻ لاءِ وڃي دهليءَ جا در کڙڪايا. جتي مولانا عبدالرب جي مدرسي ۾ داخل ٿي، ديني علم جي حصول سان گڏ علم طب ۾ به مهارت حاصل ڪري ورتائين. ان کان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي ٽنڊي سائينداد ۾ مولانا خير محمد مگسيءَ وٽ فارغ التحصيل ٿيو(1132).

علمي فراغت کان پوءِ موٽي پنهنجي ڳوٺ ديهات ۾ "مدرس مجددي" قائر ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو ۽ ان سان گڏ حڪمت جو شغل بہ جاري رکيائين (1133).

مولانا صاحب كي لكڻ پڙهڻ جو به شوق هوندو هو ۽ كجه كتاب به لكيائين. جن مان 1- تحفدقاديان. 2- انوار احمديه درحالات مشائخ نقشبنديه ۽ 3- مجموع نظر ديهاتي ذكر لائق آهن. (1134)،

مولانا نظر محمد ديهاتي گهڻو وقت اسلام جي تبليغ ۽ اشاعت ۾ مشعول رهندو هو. پر جڏهن انگريزن کان آزادي حاصل ڪرڻ لاءِ ملڪ اندر تحريڪون شروع ٿيون تہ پاڻ بہ سياست ۾ دلچسپي وٺندي "خلافت تحريڪ" ۾ شامل ٿيو. جيتوڻيڪ پاڻ خلافتي عالمن سان ولايتي ڪپڙي جي استعمال تي اختلاف رکندو هو(1135)، پر تحريڪ جي باقي مرحلن تي ساڻن ڀرپور ساٿ ڏنائين.

"خلافت تحريك" جي اوائلي دور ۾ جڏهن امن سڀائي عالم مولوي فيض الكريم ٺاروشاهيءَ "تحقيق الخلافت" نالي هڪ فتويٰ جو رسالو شايع ڪري خلافت جي حقيقت ۽ حيثيت کي مسخ ڪرڻ جي ڪوشش ڪئي، تہ خلافتي عالمن به ان جو رد لکيو، جنهن جي مولانا صاحب پڻ تصديق ڪري پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت پيش ڪيو(1136).

مولانا صاحب تاريخ 9 جمادي الثاني 1345هـ مطابق 15 ڊسمبر 1926تي لاڏاڻو ڪيو(1137).

مولانا نور محمد نظاماڻي

مولوي نور محمد ولد محمد خان نظاماڻيءَ جي ولادت سن 1306هـ مطابق 1888ع ڌاري ٽنڊي سومري، تعلقي ٽنڊي الهيار ضلعي حيدر آباد ۾ ٿي. سنڌي فائينل تائين تعليم ڳوٺ واري اسڪول ۾ استاد محمد حسن کان ورتائين. "ڪريما" فارسي به وٽس پڙهيو ۽ ذاتي شوق هيٺ عربي ۽ اردوءَ جو پڻ سٺو ڄاڻو بنجي ويو.

پاڻ شاگرديءَ جي ئي زماني ۾ علم ادب ۽ شعر وشاعريءَ سان شغف رکندو هو ۽ نتيجي ۾ اڳتي هلي سن 1912ع ۾ "جهاد اڪبر" نالي هڪ ننڍڙو رسالو ڇپائي پڌرو

ڪيائين.

مولانا صاحب ڪجه وقت سنڌيءَ جو استاد به ٿي رهيو، پر پوءِ سگهوئي استعيفا ڏيئي، پنهنجي ئي ڳوٺ ۾ "نورالهديٰ" نالي ديني مدرسو قائم ڪري، قرآن مجيد جي تعليم ڏيڻ شروع ڪيائين. کيس قرآن وحديث جي علم ۾ ڪافي مهارت حاصل هئي.

سن 1925ع ۾ پنهنجو ڳوٺ ڇڏي اچي ٽنڊي الهيار ۾ دواخانو کوليائين، ۽ ان سان گڏ صحافت جي بہ خدمت ڪندو رهيو. پاڻ هفتيوار اخبار "نور الاسلام" ٽنڊوالهيار (1933ع)، ۽ هفتيوار اخبار "طيرا ابابيل" حيدرآباد (1933ع)، ۽ هفتيوار "مرغ فلڪ" حيدرآباد (1934ع)، جو ايڊيٽر ٿي رهيو.

مولوي نور محمد نظاماڻيءَ پنهنجي سياسي زندگيءَ جو آغاز "خلافت تحريڪ" ۾ حصي وٺڻ سان ڪيو. پاڻ تحريڪ جي گڏجاڻين ۾ شريڪ ٿي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪيائين(1138). اهڙيءَ طرح انهيءَ تحريڪ کي ڪامياب ۽ ڪامران بنائڻ واسطي نه صرف چندا گڏ ڪندو هو(1139)، پر وس آهر هن پنهنجي طرفان به ان جي مالي مدد ڪئي (1140).

مولوي صاحب تاريخ 15 شعبان 1353هـ مطابق 23 نومبر 1934ع تي وفات ڪئي(1141).

مولانا نور محمد اندر ا

مولوي نور محمد ولد الهنواز انڍڙ سن 1304هـ مطابق 1886ع ۾ ڳوٺ شاهو انڍڙ ضلعي سکر ۾ ڄائو. پاڻ پهريائين ڳوٺ لڪپور تعلقي اٻاوڙي ۾ مولانا علي شير وٽ پڙهڻ ويٺو. بعد ۾ لاڙڪاڻي شهر لڳ خالد ڳوٺ ۾ مولانا نورنگائيءَ ۽ ٺيڙهيءَ ۾ مولانا حماد الله صاحب هاليجويءَ وٽ پڙهڻ کان پوءِ وڃي دارالعلوم ديوبند ۾ داخل ٿيو، ۽ اتان ئي دستاربندي ڪيائين(1142).

علمي فراغت كان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي پهريائين مٽارين ۾ سرهندي پيرن وٽ پڙهايائين. تنهن كان پوءِ وٽ پڙهايائين. تنهن كان پوءِ اچي گهوٽكيءَ جي مدرسي "قاسر العلوم" ۾ درس ڏيڻ لڳو. بعد ۾ جيتوڻيك پاڻ هن مدرسي مان ٻه ڀيرا هليو ويو ۽ وڃي ٻين هنڌن تي پڙهايائين. پر وري به موٽي اچي ساڳي ئي مدرسي ۾ ديني خدمتون سرانجام ڏيندو رهيو(1143).

مولانا نور محمد انڍڙ کي مولانا تاج محمود امروٽيءَ جي سياسي صحبت حاصل هئي ۽ انگريزن جي مخالفت ۾ ڏاڍو سرگرم رهيو(1144). جڏهن "خلافت تحريڪ" شروع ٿي تہ ان ۾ شامل ٿيو، ۽ سنڌ ۽ هند جي عالمن طرفان جڏهن "ترڪ موالات" لاءِ هڪ جامع فتويٰ شايع ٿي. تہ هن به ان جي تصديق ڪئي(1145). اهڙيءَ طرح سنڌ جي خلافتي عالمن جڏهن "امن سيا" ۾ شامل ٿيندڙن خلاف فتويٰ جاري ڪئي. ته پاڻ به ان جي تائيد ڪندڙن مان هڪ هو(1146).

"خلافت تحريك" دوران جدّهن علماء كرام افغانستان دّانهن هجرت كرنْ جو سدّ دّنو، ته مولانا صاحب به سند مان ان وقت هجرت كري ايجا پشاور تائين مس پهتو ته "هجرت تحريك" ختر تي ويئي ۽ كيس واپس ورڻو پيو(1147).

پاڻ تاريخ 12 محرم 1386ه مطابق 7 مئي 1966ع تي هي؛ جهان ڇڏيائين(1148).

مولانا نور محمد سجاولي

مولانا نور محمد ولد حافظ محمد عمر راجا جي ولادت سن 1332هـ مطابق 1914 ع ڌاري ڳوٺ خالصہ لڳ سجاول ضلعي ٺٽي ۾ ٿي. قرآن مجيد جو حفظ پنهنجي والد وت شروع ڪرڻ کان پوءِ وڃي "دارالفيوض هاشميـ" سجاول ۾ مولوي محمد ٻارڻ وت پڙهڻ ويٺو. ان بعد فارسيءَ جي تعليم مولانا محمد ٻنويءَ وٽ پوري ڪيائين. تنهن کان پوءِ هن مولانا محمد يعقوب، مولانا حاجي فتح علي ۽ مولانا شمس الحق افغانيءَ وٽ باقي مٿيان ڪتاب پورا ڪيا. انهيءَ وچ ۾ وزيرآباد پنجاب ۾ مولانا محمد خليل وٽ ۽ اڇره لاهور ۾ مولانا مهر محمد وٽ به پڙهيو. اهڙيءَ طرح هڪ سال لاءِ اجمير وڃي مولانا عبدالحي وٽ ميبذي پڙهيائين(1149). تنهن کان پوءِ ڍابيل وڃي مولانا عبدالحي وٽ ميبذي پڙهيائين(1149). تنهن کان پوءِ ڍابيل وڃي مولانا عبدالحي وٽ ميبذي پڙهيائين(1499).

علمي فراغت بعد واپس سنڌ وريو ۽ اچي سجاول ۾ پڙهائڻ لڳو. يارهن سالڻ بعد وڃي مولوي محمد خان نوحاڻي ڪنگوره وٽ ٽن سالن تائين پڙهايائين. جنهن کان پوءِ اچي ٻيهر سجاول ۾ پڙهائڻ لڳو ۽ مدرسي جو صدر مدرس ٿي رهيو(1150).

مولانا صاحب وطن جي آزاديءَ خاطر "جمعيت العلماءِ هند" ۾ شامل ٿي جدوجهد

شروع ڪئي. پاڻ هن جماعت جو مخلص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. اهڙيءَ طرح ورهاڱي کان پوءِ محض ديني خدمتون جاري رکيائين(1151).*

مولانا هدايت الله تنيو

مولانا هدايت الله ولد مولوي گل محمد تنيو تاريخ 10 ذي القعد سن 1312هـ مطابق 5 مئي 1895ع تي ڳوٺ موسيٰ ديري تعلقي ڪنڊياري ضلعي نواب شاه ۾ ڄائو(1152). کيس سن 1905ع ۾ محبت ديري پرائمري اسڪول ۾ ويهاريو ويو(1153))، جتان هن سنڌيءَ جا چار درجا پاس ڪري سن 1908ع ۾ وڃي نوشهري جي مدرسي ۾ داخلا ورتي (1154). ان بعد وڃي "سنڌ مدرسة الاسلام" ڪراچيءَ ۾ پڙهيو، ۽ اتان سن 1914ع ۾ فائينل پاس ڪيائين(1155).

مولوي صاحب فائينل پاس ڪرڻ کان پوءِ ڪلارڪ جي حيثيت سان ملازمت اختيار ڪئي. جڏهن خلافت تحريڪ شروع ٿي ته پاڻ ملازمت ڇڏي وڃي سياست ۾ عملي قدم رکيائين(1156). انهيءَ ئي عرصي دوران پاٽ جي مدرسي مان ديني تعليم حاصل ڪري عالمن جي صف ۾ شمار ٿيو(1157).

مولانا صاحب جڏهن عيال سميت مديني منوره پهتو، ته اتي جي "مدرسة التهذيب" ۾ ستن سالن تائين تعليم ڏنائين(1158). اتان پوءِ واپس سنڌ وريو ۽ اچي پٿوري ۾ مدرسو قائم ڪري درس وتدريس ڏيڻ لڳو. ان کان پوءِ ڪجه وقت ٽنڊي آدم ۾ حڪيم محمد معاذسان گڏ طب جي دڪان ۾ حصيدار بڻجي ڪم ڪيائين(159). بعد ۾ کيس نوشهري فيروز ۾ ملازمت ملي، پر سگهوئي اتان به ڇڏي وڃي مبلغ بڻيو (160). اهڙيءَ طرح محبت ديري جتوئي جي انگريزي پئنچاتي اسڪول ۾ ٻارهن مهينا استاد ٿي رهيو(160).

پاڻ پنهنجي دور جو سٺو عالمر, حڪيم حاذق, اديب ۽ شاعر ٿي گذريو آهي. سندس لکيل ڪتابن مان "مجموعه زيور" (قلمي) "زال مڙس جو جهڳڙو" (قلمي) "طب

^{*} مولوي صاحب سن 1611ه مطابق 1990ع ۾ وفات ڪري ويو.

يوناني" (تلمي) ۽ "بياض ناصري" (قلمي) ذڪر لائق آهن(1162).

مولانا هدايت الله صاحب "خلافت تحريك" ۾ حصي وٺڻ سان سياست ۾ قدم ركيو. سن 1920ع ۾ جڏهن علماءِ ڪرام هجرت ڪرڻ جو سڏ ڏنو. تہ پاڻ عيال سوڌو هن تحريك ۾ شامل ٿي. افغانستان ڏانهن هجرت ڪيائين (1163)، پر پوءِ كيس ناكام ۽ مايوس مهاجرن سان گڏ واپس وطن ورڻو پيو(1164).

مولوي صاحب "خلافت تحريڪ" جو پرخلوص ۽ سرگرم ڪارڪن ٿي رهيو. سندس ئي ڪوششن سان ڳوٺ سعيد باغ ۾ خلافت ڪاميٽي قائمر ٿي ۽ جنهن جو پاڻ سيكريٽري ٿي كر كيائين. تحريك جي كاميابيء واسطي مولانا صاحب سنڌ جي ڪنڊ ڪڙڇ ۾ وڃي، تبليغ ڪرڻ سان گڏ چندا به گڏ ڪندو هو (1165).

خلافت جي خاتمي کان پوءِ سن 1931ع ۾ هن "خاڪسار تحريڪ" ۾ شموليت اختيار ڪئي ۽ کيس ضلعي "خاڪسار تحريك" جو "سالار" به مقرر ڪيو ويو. پاڻ پڇاڙيءَ تائين هن تحريڪ سان وابسته رهي وطن جي آزاديءَ لاءِ جدوجهد ڪندو

مولانا هدايت الله تنيو تاريخ 14 شعبان سن 1370هـ مطابق 1- جون 1950ع تى هن فاني جهان مان لاڏاڻو ڪري دارالبقا ڏانهن راهي ٿيو(1166).

بيهي بيلچي جو ويو يار پڙڪو،

چمچي جو چانه ۾ ٻڌي يار کڙڪو، كدِّهن بيلچو ئي هو كنڌ ۾، ڊبل مارچ ۽ هو پنڌ ۾، هئی هاڪ ڏاڍي سڄيءَ سنڌ ۾، برطانيہ ۾ يار ڦڙڪو.

يبو

^{*} مولانا صاحب "خاكسار تحريك" جي تعريف ۾ سنڌ جي سالار مولوي خير محمد نظاماڻيء کي شعر ۾ هڪ خط به هن طرح لکيو هو:

مولانا يار محمد

مولوي يار محمد جي ولادت سنڌ جي قدير شهر شڪارپور ۾ ٿي. هن ابتدائي تعليم پنهنجي ڏاڏي حافظ خليفي الهرکيي کان ورتي. ان کان پوءِ مولوي ميان عبدالرحير شڪارپوريءَ ۽ مولانا حافظ محمد حيات صاحب وٽ پڙهي باقي تعليم پوري ڪيائين.

علمي فراغت کان پوءِ پاڻ درس و تدريس ڏيڻ لڳو ۽ پوري ڄمار مسجد ۾ ويهي انهيءَ شغل کي جاري رکيائين(1167).

مولوي يار محمد صاحب پنهنجي عملي سياست جو آغاز "خلافت تحريك" ۾ شامل ٿيڻ سان كيو ۽ ان جو سرگرم كاركن ٿي رهيو. "خلافت تحريك" جي شروعات ۾ انگريزن جڏهن "امن سڀا" قائم كرائي ۽ ان جي روح روان عالم مولوي فيض الكريم ٺارو شاهيءَ كي اڳيان آڻي. خلافت جي اهميت كي مسخ كرڻ لاءِ كانئس "تحتيق الخلافت" نالي هك فتويٰ جو رسالو شايع كرايو، تـ خلافتي عالمن وري ان جو رد لكيو، جنهن جي مولوي صاحب پڻ تصديق كئي(1168).

ان کان پرءِ سنڌ جي خلافتي عالمن انگريزي ڪپڙي پهرڻ جي مخالفت ۾ فتويا جاري ڪئي، ته هن به ان جي تصديق ڪري (1169). پنهنجي تحريڪ دوستيءَ جو ثبوت ڏنو. وطن جي آزاديءَ لاءِ سندس سياسي خدمتون هن ئي تحريڪ تائين محدود رهيون، ۽ پاڻ تاريخ 29 شوال سن 1361هم مطابق 9 نومبر 1942ع تي زندگيءَ جو ظاهري سفر پورو ڪري، وڃي پنهنجي مالڪ حقيقيءَ سان مليو(1170).

حوالا

- (1) مولانا دين محمد وفائي مرحوم: "تذكره مشاهير سنڌ"، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ، 1974ع، ص177٠
 - (2) ايضاً, ص178.
 - (3) تفصيل لاءِ ڏسو:
- i. "امن سيا پر شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ", ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ, ص17.
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة". سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟. ص146.
 - (4) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 26 جون 1920ع، ص3.
- (5) مولانا دين محمد وفائي مرحوم: "تذكره مشاهير سنڌ", حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1974ع، ص179
- (6) مولوي محمد هالائي: "مولانا احمد مرحوم هالائي" (مضمون)، له ماهي مهران "سوانح نمبر" 3-4 كراچي، حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص196٠
 - (7) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26 اپريل 1920ع، ص16-16.
 - (8) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 13 جون 1920ع، ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 10 جولاءِ 1920ع، ص4·
 - iii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 11 جولاء 1920ع، ص5.
- iv. خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوب سنڌ، 1922ع ص2 ۽ 10)
 - (9) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 22 آڪٽوبر 1922ع، ص4·
 - (10) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتوي", ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ,
 1340هـ، ص11.
- ii. "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة", سكر انجمن شوري علماء سنة, سال؟, ص137.

- (11) ته ماهي مهراڻ "سوانح نمبر" حيدر آباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص197٠
- (12) هيءَ معلومات "مولانا عبدالحكيم ولد مولانا احمد ميمن" كان 1، آكٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (13) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ" بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين، ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پريٽن، 1923ع، ص4.
 - (14) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - ا. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 31 آكٽوبر 1922ع، ص4٠
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 15 نومبر 1922ع، ص4
 - iii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 12 مارچ 1929ع، ص6.
- (15) هيءَ معلومات "مولانا عبدالوهاب لنڊ" کان 24 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (16) هيءَ معلومات "مولانا عبدالحكيم ولد مولانا احمد ميمڻ" كان 1. آكٽوبر 1982ع تى انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (17) خواج غلام علي الانا: "لاز جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ", ڄامشورو, انسٽيٽيوت آف سنڌ الاجي. 1977ع ص322٠
 - (18) ايضاً ص323.
 - (19) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 31 آڪٽوبر 1922ع، ص4.
 - (20) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 24 اپريل 1932ع، ص6٠
 - (21) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع، ص4.
 - (22) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 22 مئي 1931ع، ص3-
- (23) خواج غلام علي الانا: "لاڙجي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ". ڄامشورو, انسٽيٽيوٽآف سنڌ الاجي. 1977ع ص322.
- (24) هيءَ معلومات "حڪيم نور محمد خاصخيلي ڊينگاڻ ڀرڳڙيءَ" واري کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (25) روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع، ص٠2٠
 - (26) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - أ. "تركِ مولات نمبر 1", بمبئى, مركزي خلافت كميتى، 1920ع ص11.
- ii. "ولايتي كپڙي خريد كرڻ واري معنيٰ هجڻ واري قتويٰ" كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ، 1340هـ، ص21.

- (27) غلام محمد گرامي، "وياسي وينجهار", حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1977ع ص249٠
 - (28) ايضاً ص248.
- (29) مرتب داكٽر نبي بخش خان بلوچ: "پير احسان الله شاهر راشدي مرحوم". (مقالو). لا ماهي مهراڻ "سوانح نمبر" 3-4 كراچي، حيدر آباد 1957ع، ص ص154-154.
 - (30) ايضاً ص155.
 - (31) ايضاً ص153
- (32) اسد الله شاه "اسد" تكرّائي: "مرحوم مولانا حافظ اسد الله شاه تكرّائي" (مضمون). تم ماهي مهران "سوانح نمبر" 3-4 كراچي، حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص126
- (33) اسد الله شاه "اسد" تكڙائي: "تذكره شعراء تكڙ", حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1959ع، ص72٠
- (34) اسد الله شاه "اسد" تكڙائي: "مرحوم مولانا حافظ اسد الله شاه تكڙائي (مضمون). ته ماهي مهراڻ "سوانح نمبر" 3-4 كراچي، حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص129٠
- (35) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند"، (باردوم) لاهور، مكتب محموديه، 1978ع، ص392٠
 - (36) تفصيل لاءِ ڏسو:

روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 8، آكٽربر 1920ع، ص3، روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 10، آكٽوبر 1920ع، ص4، روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 13، آكٽوبر 1920ع، ص3، روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 24، آكٽوبر 1920ع، ص2،

- (37) ڏسو: "خلافت ۾ سمرنا فند جي آمدني جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" ناريخ نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921 تائين، ڪراچي جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ، 1922ع، ص2٠
 - (38) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أ. "تركِ مولات نمبر 1", بمبئي، مركزي خلافت كميتي، 1920ع ص10.
 أن "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة", سكر انجمن شوري علماء سنة, سال؟. ص136.

- iii. "متفقه فتريا" دهلي. جمعيت مركزيه علماء هند. 1339هـ، ص27.
- iv. "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي واري منع هجڻ واري فتوي!" كراچي. جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ, ص16.
 - (39) مختصر حالات انعقاد، دهلی، جمعیت علماء هند، سال؟، ص5.
 - (40) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع، ص4.
 - (41) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26 اپريل 1920ع، ص14-16.
- (42) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين". (جلد پهريون)، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص175
- (43) مولانا دين محمد "اديب": "مولانا الاهي بخش مرحوم" (مضمون) له ماهي مهرال "سوانح نمبر" 3-4، حيدر آباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص90.
- (44) مولانا دين محمد "اديب": "مولانا الاهي بخش مرحوم" (مضمون) ته ماهي مهرال "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص91.
 - (45) ايضاً ص94.
- (46) هيء معلومات "علام غلام مصطفىٰ قاسمى" كان انترويو ذريعي ورتى ويئي.
- (47) خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقش تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ، 1922ع ص6.
- (48) مولانا دين محمد "اديب": "مولانا الاهي بخش مرحوم" (مضمون) ته ماهي مهرال "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع، ص93.
- (49) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ. آڪٽوبر نومبر 1981ع. ص150
 - (50) ايضاً ص151.
 - (51) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخ 4 جون 1931ع، ص6.
- (52) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (53) عبدالوهاب چاچڙ: 'ماهوار شريعت'- "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر نومبر 1981ع. ص151.
- (54) سيد حسام الدين راشدي: "ماك ڀنا رابيل"، كراچي پاكستان پبليكشنز. 1965ع، ص17٠

- (55) ڏسو: "مسدس اٻوجهو", حيدرآباد، مسلم ادبي سوسائٽي، 1949ع، ص1 کان اڳ وارو مواد.
- (56) Makhdum Amir Ahmed: "Maulana Allah Bux Abhojo", The Platinum Jublee Book, 1960, P. 11.
- (57) هيءَ معلومات مولانا اله بخش "ابوجهو" جي "فرزند جناب احمد شاه" کان 15 مارچ 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (58) ڏسو: "مسدس اپوجهو" حيدرآباد, مسلم ادبي سوسائٽي، 1949ع, ص1 کان وارو مواد.
- (59) عبدالوهاب چاچڙ: 'ماهوار شريعت' _ "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪتوبر نومبر 1981ع, ص325٠
- (60) لأسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر. انجمن شوري علماء سنة, سال؟. ص151.
 - (61) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 4، جنوري 1922ع، ص4.
- (62) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪتوبر نومبر 1981ع، ص325٠
- (63) مولانا دين محمد وفائي: "تذكره مشاهير سنڌ" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورد. 1974ع، ص176٠
 - .177 ايضاً، ص177٠
- (65) مولانا فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ديلي گزيٽ پريس، 1919 ع ص23٠
 - (66) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أنهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟. ص146.
 - "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متغة فتريٰ"، 1340هـ، ص18٠.
 - (67) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخہ 29، مارچ 1920ع، ص5-19٠
- (68) مولانا دين محمد وفائي: "تذكره مشاهير سنڌ"، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1774ع، ص177٠
- (69) مولانا عبدالرحير لغاري: "مولانا سيد الحاج امير محمد شاه صاحب" حسيني (مضمون) "تم ماهي الرحيم", 1، حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع ص41.

- (70) مولانا عبدالرحير لغاري: مولانا سيد الحاج امير محمد شاه صاحب حسيني (مضمون) "لّه ماهي الرحير" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع، ص42
- (71) ڏسو: "امن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي ۽ جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص19.
 - (72) ڏسو: روزانه "الوحيد"، ڪراچي مؤرخه 20 مارچ 1925ع، ص5٠
- (73) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع, ص388.
 - (74) ايضاً ص366.
- (75) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ"، (جلد ٻيو). حيدرآباد. سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976 ص689.
 - (76) ڏسو: "متفته فتريٰ"، دهلي، جمعية مركزيه علماءِ هند، 1339هـ، ص27٠
- (77) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنافند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقش " تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ، 1922ع، ص16.
- (78) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون). حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1967ع، ص128٠
- (79) محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه"سيدرآباد, سنڌ ڪلاسڪس, صوبائي هجره ڪاميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو, 1982ع, ص 459.
 - (80) ڏسو: "تحقيق الخلافت" ڪراچي، ڊيلي گزيٽ پريس، 1919ع ص 37.
- (81) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 134.
- (82) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين. ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص8.
- (83) هيءَ معلومات "مولانا عبدالرحلٰن" ولد مولانا قاضي تاج محمد كان 31 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (84) لأسو: "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتوي" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص11

- (85) تفصيل لاءٍ ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 3 آڪٽوبر 1922ع ص 4 روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 5 نومبر 1922ع ص4.
- (86) هيءَ معلومات "مولانا عبدالرحمٰن" ولد مولانا قاضي تاج محمد كان 31 مئي 1982 تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (87) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6٠
- (88) هيءَ معلومات "مولانا عبدالرحمٰن ولد مولانا قاضي تاج محمد" کان 31 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (89) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجونهيٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع ص100٠
- (90) ڏسو: "الوحيد اسپيٽل ايڊيشن _ سنڌ آزاد نمبر" ڪراچي, مؤرخه 15 جون 1936ع ص41.
- (91) ابوبكر شبلي: "حضرت مولانا تاج محمود (رح) امروتي" (مضمون) ماهوار "نئين زندگي" كراچي، اپريل 1964ع ص24.
- (92) پروفيسر ميمڻ عبدالمجيد سنڌي: "حضرت تاج محمود صاحب امروٽي" (مضمون. "تذكره مولانا تاج محمود امروٽي" حيدرآباد، علمي مجلس سنڌ. 1975ع ص29٠٠
- (93) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند" لاهور، مكتبه محموديه 1978 ع، ص364.
- (94) مولانا حسين احمد مدني: "تحريك ريشمي رومال" لاهور، اردو پريس، 1960 ع ص160٠
- (95) ڏسو: مٿي ڄاڻايل حاشيو نمبر ۽ روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 جولاءِ 1920ع ص3.
- (96) ڏسو: "جمعيت خلائت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص ص 37-38 ۽ 39.
 - (97) ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 139
- ان سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ

1340هـ ص9.

- (98) ڏسو: "ترڪ موالات نمبر1" بمبئي، مرڪزي خلافت ڪاميٽي. 1920ع ص10
- (99) ڏسو: "الوحيد اسپيشل ايڊيشن _ سنڌ آزاد نمبر" ڪراچي، مؤرخه 15 جون 1936ع ص42.
 - (100) دّسو: "مختصر حالات انعقاد" دهلي، جمعيت علماء هند سال ؟ ص 5.
 - (101) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 15 سيپٽمبر 1920ع ص3
- ii. "الوحيد اسپيشل ايڊيشن _ سنڌ آزاد نمبر" ڪراچي، مؤرخه 15 جون 1936ع ص 42،
 - (102) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، ماه مارچ _ اپريل 1981ع ص 33
 - (103) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، ماه آڪٽوبر 1924ع ص32.
 - (104) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 23 سيپٽمبر 1920ع ص3
- (105) ڏسو: "الوحيد اسپيشل ايڊيشن _ سنڌ آزاد نمبر" ڪراچي، مؤرخه 15 جون 1936ع ص43.
- (106) هيءَ معلومات "پير حسام الدين راشديءَ" کان 29 نومبر 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (107) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 147.
 - (108) لاسو: "مختصر حالات انعقاد" دهلي، جمعيت علماءِ هند سال ؟ ص 12.
 - (109) ايضاً, ص14
 - (110) ڏسو: "ترڪ موالات نمبر1"، بمبئي، مرکزي خلافت ڪميٽي، 1920ع ص10
 - (111) ڏسو: "متفقه فتويا" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند. جمادي الآخر 1339هـ ص27٠٠
 - (112) داكٽر ميمڻ عبدالمجيد سنڌي: "پير تراب علي شاھ" (مقالو) ماهوار "الرحير" حيدرآباد. شاھ ولي الله اڪيڊمي، مئي _ جون 1976ع ص31.
 - (113) هيءَ معلومات "پير حسام الدين راشديءَ" کان 29 نومبر 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (114) خواجه غلام علي الانا: "لازَّ جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو، انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي، 1977ع ص313٠
- (115) خواجه غلام علي الانا: "لازَّ جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو، انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي، 1977ع ص314.
 - (116) ايضاً. ص315
 - (117) ايضاً، ص314.
- (118) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سنة, سال؟ ص 133،
 - (119) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29 مارچ 1920ع ص 15-19.
- (120) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر – نومبر 1981ع ص471٠
- (121) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (122) ذسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سند, سال؟ ص 154.
- (123) ڏسو: 'ماهوار شريعت' "سوانح حيات نمبر" سکر, ماه آڪٽوبر نومبر 1981ع ص 447.
 - (124) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2·
- (125) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر – نومبر 1981ع ص472٠
- (126) مولانا غلام مصطني قاسمي: "جنيد وقت حضرت مولانا حماد الله هاليجوي رح" (مقالو) ماهوار "شريعت" سكر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ مارچ 1980 ع، ص12.
 - (127) ايضاً, ص13
 - (128) ايضاً. ص14
 - (129) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - .i روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 20 جون 1920ع ص4.
- ii. "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس

1923ع ص ١٠

- (130) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ" ڪراچي. جمعيت العلماءِ سنڌ، 1340هـ ص18.
 - (131) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 10 سيپٽمبر 1922ع ص 4.
 - (132) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي, مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص 2.
- (133) مولانا غلام مصطفي قاسمي: "جنيد وقت حضرت مولانا حماد الله هاليجوي رح" (مقالو) ماهوار "شريعت" سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ مارچ 1980ع ص 21.
- (134) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص175.
- (135) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص176.
 - (136) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 سيپٽمبر 1922ع ص 4.
- (137) ڏسو: "متفقه فتويٰ" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند، جمادي الآخر 1339هـ ص27٠٠
- (138) ذَّسو: "أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والأمامة" سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص153.
- (139) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص176٠
 - (140) ايضاً، ص65.
- (141) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص66.
 - (142) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر، انجمن شوري علماء سنڌ، سال ؟ ص 146.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ ص17.
- (143) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص66.

- (144) ايضاً, ص261٠
- (145) ايضاً, ص 262٠
- (146) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (147) ڏسو: "تحقيق الخلافت" ڪراچي، ڊيلي گزيٽ پريس, 22 مئي 1919ع، ص
- (148) ذسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر. انجمن شوري علما علما منذ, سال ؟ ص 150.

 - (150) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص 2·
 - (151) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 اپريل 1938ع ص4٠
- (152) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص265٠
- (153) هيء معلومات جناب "احسان احمد ولد حافظ خير محمد اوحديء" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (154) ڏسو: ٽماهي "مهراڻ" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, نمبر4, آڪٽوبر نومبر ۽ دسمبر 1981ع ص7.
- (155) هيءَ معلومات "پير وهب الله شاه ولد پير ضيا؛ الدين شاه" کان تاريخ 9 دسمبر 1982ع تي ورتي ويئي.
- (156) هيءَ معلومات "مولانا خير محمد نظاماڻيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (157) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 27 آڪٽوبر 1945ع ص3٠.
- (158) هيءَ معلومات "مولانا خير محمد نظاماڻيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (159) ڏسو: روزانه "عبرت" حيدرآباد, مؤرخه 14 ڊسمبر 1985ع.
- (160) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع ص202٠
 - (161) ايضاً, ص203،
- (162) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع ص204٠
 - (163) تفصيل لاءِ ڏسو:

- أخلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو", تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين, ڪراچي, جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص18.
- نا جمعیت خلافت صوبہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سیپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائین" ڪراچي، الوحید الیڪٽرڪ پرنٽنگ پریس 1923ع ع، ص ص24-36.
 - (164) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 8 نومبر 1922ع ص6.
 - (165) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 154.
- آمن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ ص18٠٠
- اأا "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ" كراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ 1340هـ ص18.
 - (166) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع ص9.
 - (167) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 30 مارچ 1925ع ص4.
 - (168) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 15 ڊسمبر 1931ع ص2٠
 - (169) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠
- (170) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص207.
- (171) هي، معلومات "مولانا در محمد 'ځاک' کان 13 ڊسمبر 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (172) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميء" کان 8 مثي 1982ع تي انٽرويو دريعي ورتي ويئي.
- (173) هيءَ معلومات "مولانا در محمد 'خاڪ'" کان 13 ڊسمبر 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (174) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- الراح) هيء معلومات "مولانا ابوالحسن ولد مولانا دوست محمد لكمير" كان 30

سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (176) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميءَ کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (177) ڏسو: "تحقيق الخلافت" ڪراچي، ڊيلي گزيٽ پريس، 22 مئي 1919ع، ص 37.
- (178) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 149.
 - (179) ڏسو: روزانه "الامين" حيدرآباد، مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص12٠
 - (180) ڏسو: روزانه "الامين" حيدرآباد, مؤرخه 7 جون 1920ع ص 4.
- (181) حكير دين محمد بنوي: "مولانا دين محمد مرحور بنوي" (مقالو) تماهي "مهراث" "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص124.
- (182) داکٽر نبي ىخش خان بلوچ: "مرحوم مولانا دين محمد "وفائي" (مقالو) ته ماهي مهران, "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورد 1957ع ص179.
- (183) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص3210
- (184) داكٽر نبي بخش خان بلوچ: "مرحوم مولانا دين محمد "وفائي" (مقالو) له ماهي مهراڻ، "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص181.
- (185) جي.ايم.سيد: "جنب گذريم جن سين" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص3220
- (186) هيءَ معلومات "جناب علي نواز ولد مولانا دين محمد 'وڤائي' "كان 10 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (187) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص324.
 - (188) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي ماه مئي 1949ع ص30.
- (189) ڊاڪٽر خواج غلام علي الانا: "سنڌي ليکڪن جي ڊائريڪٽري" ڄامشورو. انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي 1974ع ص244.
- (190) غلام محمد گرامي: "مولانا وفائيءَ جو دور" (مقالو) "يادگار مولانا وفائي" كراچي، وفائي پبلشنگ هائوس 1973ع ص15.
 - (191) تفصيل لاءِ ڏسو:

- . ا روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 11 سيپٽمبر 1922ع ص4٠
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 28، اپريل 1923ع ص4.
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچى. مؤرخه 29 مارچ 1929ع ص5.
- ان جمعیت خلافت صوبہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سال سیپٽمبر 1922
 کان آگسٽ 1923ع تائین. ڪراچي، الوحید الیڪٽرڪ پرنٽنگ پریس 1923ع ص ص 34-35-36 ۽ 38.
 - (192) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (193) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو اپريل 1980ع ص 47٠
- (194) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطغيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (195) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، ماه اپريل 1942ع ص4٠
- (196) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو)، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص324٠
- (197) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص382.
- (198) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص385٠
 - (199) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - ا. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 4 آكٽوبر 1938ع ص 3.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 1 جنوري 1942ع ص3٠.
- (200) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر – نومبر 1981ع ص385.
- (201) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاڪستان" راولپندي، انتشارات مركز تعقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص399٠٠
- (202) غلام محمد گرامي: "مولانا دين محمد "اديب" فيروز شاهي" (مقالو) ٽـ ماهي مهراڻ "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957 ص223٠
- (203) غلام محمد گرامي: "مولانا دين محمد "اديب" فيروز شاهي" (مقالو) له ماهي مهراڻ "سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1957 ص224٠

- (204) ايضاً ص ص 227-228.
- (205) هيءَ معلومات "مولانا در محمد 'خاڪ'" کان 13 ڊسمبر 1977 تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (206) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري، علماء سند سال؟, ص151.
 - (207) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 28 اپريل 1923ع ص4.
- (208) هيءَ معلومات "مولانا در محمد 'خاڪ'" کان 13 ڊسمبر 1977 تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (209) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع، ص٠٠.
- (210) باكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاكستان" راولپندي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص400.
- (211) هيء معلومات سندس پوٽي "پير وهب الله شاه" کان 9 ڊسمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (212) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" كان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو دريعي ورتي ويئي.
- (213) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند" (بار دوم) لاهور. مكتبه محموديه 1978ع ص471٠
- (214) ڊاڪٽر ميمڻ عبدالمجيد سنڌي: "قائد اعظم _ آزاديءَ جي جدوجهد ۽ سنڌي مسلمان" (مقالو) ٽه ماهي مهراڻ "قائد اعظر نمبر 3". حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، جولاءِ، آگسٽ ۽ سيپٽمبر 1976ع ص225٠٠
 - (215) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد انخلافة والامامة", سكر انجمن شوري علماء سنة, سال؟, ص137.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويٰ", ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ, 134هـ, ص9.
- (216) ڏسو: "ترڪ موالات نمبر1" بمبئي، مرڪزي خلافت ڪاميٽي، 1920ع ص11.
- (217) ڏسو: "متفقه فتريٰ" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند، جمادي الآخر 1339هـ ص26٠
 - (218) تفصيل لاءِ ڏسو:

- i. روزانه "الوحيد"، كراچى، مؤرخه 19 نومبر 1922ع ص1.
- نجمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ" بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص ص 9-10-11 ۽ 16.
- (219) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاهر ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري)حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس سال؟ ص10.
- (220) عبدالرحير صاحب جميل: "رموز حكمت" گجرات, پنجاب, اقبال اسٽيم" پريس. سال؟، ص 519.
 - (221) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" سوانح حيات نمبر, سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص418.
 - (222) ايضاً ، ص420.
- (223) ڏسو: "جمعيت خلافت صوب سنڌ جي سالياني رپورٽ" بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص ص5-8 ۽ 22.
- (224) هيءَ معلومات منتي صاحب جي ڀائيٽي "حڪير حافظ عبدالڪرير انصاريءَ" کان 9 ڊسمبر 1982ع تي انٽروير ڏريعي ورتي ويئي.
- (225) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" سوانح حيات نمبر، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص352٠
 - (226) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 18 آڪٽوبر 1922ع ص4.
- (227) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ ڇو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ 1922ع ص6.
- (228) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" سوانح حيات نمبر، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز ليٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص352٠
- (229) حافظ قاري محمد: "مولانا حاجي شفيع محمد "مسجدي" مرحوم" (مضمون) لا ماهي "مهرال" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص172
 - (230) ايضاً, ص173
 - (231) ايضاً، ص174.

- (232) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 آڪٽوبر 192ع ص4.
- (233) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 سيپٽمبر 1922ع ص4.
- (234) ذَّسو: "أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، أنجمن شوري علماء سنة, سال؟, ص150.
- (235) حافظ قاري محمد: "مولانا حاجي شفيع محمد "مسجدي" مرحوم" (مضمون) له ماهي مهران "سوانح نمبر" 3-4 حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص175
- (236) هيءَ معلومات "جناب عبدالرحلن منگِي" کان 8 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (237) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 10 فيبروري 1931ع ص6٠.
- (238) هيءَ معلومات "علام غلام مصطغيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (239) هيءَ معلومات "جناب عبدالرحلن منگِمي" کان 8 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (240) هيءَ مُعلومات "مُولانا جان محمد ڀٽي" کان 5 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (241) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 25 فيبروري 1931ع ص ؟.
- (242) هيءَ معلومات "سيد شاه محمد شاه" چيئرمين سنڌ ٽيڪسٽ بوڪ بورڊ کان 8 جنوري 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (243) هيءَ معلَّومات "مولانا جان محمد ڀٽي" کان 5 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (244) هيءَ معلومات "جناب قاضي فضل الله" كان 25 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (245) غلار محمد گرامي، "ويا سي وينجهار" حيدر آباد، سنڌي ادبي ٻورڊ. 1977ع ص118ء
 - (246) تفصيل لاء ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 9 جولاء 1920ع ص2.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 9 آكٽوبر 1920ع ص2.
 - iii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص2·
 - iv روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 27 اپريل 1938ع ص2.

(247) تفصيل لاء ڏسو:

- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 133.
- ii. "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص14.
- iii. "متنقية فتويًا" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ ص
 15.
 - iv. «اعلان" كراچي، كوهنور پرنٽنگ وركس، سيپٽمبر 1921ع ص2·
- (248) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص 36.
 - (249) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 فيبروري 1931ع ص6٠
 - (250) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. ماهوار "توحيد" كراچي ماهر بسمبر 1924ع جنوري 1925ع، ص30٠.
 ii. روزاند "الوحيد" كراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4٠.
- (251) هيءَ معلومات حكيم شمس الدين جي ڀاءُ "جناب قاضي فضل الله صاحب" كان 25 جولاءِ 1977ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (252) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر, نومبر 1981ع، ص221٠
 - (253) ايضاً ص222.
- (254) "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ, 1340
- (255) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر, سنة زميندار پريس 1342هـ ص24.
- (256) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص222٠
 - (257) ايضاً، ص157.
 - (258) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 13 جون 1936ع ص4.
- (259) هيءَ معلومات "علامه غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو

ذريعي ورتي ويئي.

- (260) عبدالرهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوير نومبر 1981ع, ص157.
- (261) معلومات "پير وهب الله شاه ولد پير ضياء الدين شاه" كان تاريخ 9 ڊسمبر 1982ع تي ورتي ويئي.
- (262) مولانا مفتي عبدالقاد رلغاري: "مدرسه عاليه دارالرشاد پير جهندو ضلع حيدرآباد سنڌ (مضمون) لا ماهي "الرحيم" حيدرآباد شاه ولي الله اڪيڊمي, سال سرء ص84.
- (263) هيء معلومات "پير وهب الله شاه ولد پير ضيا؛ الدين شاه" كان تاريخ 9 دسمبر 1982ع تي ورتي ويئي.
 - (264) تفصيل لاءِ ڏسر؛
- أ. "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 137.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص10.
- iii. "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" كراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ، ذي القعد 1340 ص16.
- (265) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي. الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص 27٠
- (266) هيءَ معلومات "پير وهب الله شاه ولد پير ضياءُ الدين شاه" کان تاريخ 9 ڊسمبر 1982ع تي ورتي ويئي.
- (267) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس, سال؟ ص29.
- (268) هيء معلومات "حكيم محمد اكبر ولد مولانا ظهور الحسن درس" كان 20 بسمبر 1982ع تي انترويو ذريعي ورتي ويئي.
- (269) هيءَ معلومات "جناب جي. ايم. سيد" کان 20 جولاءِ 1977ع انٽرويو ذريعي ويئي.
- (270) هيء معلومات "حكيم محمد اكبر ولد مولانا ظهور الحسن درس" كان 20

دسمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (271) See, "The Certificate No. 347 for the deligate", issued by the Sind Provincial Muslim League to Maulana Zahurul Hassan Dars, dated 23-12-1943.
- (272) ڏسو: مولانا صاحب کي "غلام نبي اوج" جو لکيل خط، مؤرخه 7 ڊسمبر 1945 ع.
- (273) هيءَ معلومات "حكيم محمد اكبر ولد مولانا ظهور الحسن درس" كان 20 بسمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (274) مولانا دين محمد وفائي: "تذكره مشاهير سنڌ"، حيدرآباد سنڌي ادبي بورڊ. 1974ع، ص286٠
- (275) مولانا دين محمد وفائي: "تذكره مشاهير سنڌ", حيدرآباد سنڌي ادبي بورد. 1974ع، ص287.
 - (276) ايضاً، ص 288.
 - (277) ايضاً, ص277.
- (278) مولانا مولوي فيض الكريم: "تعقيق الخلافت" كراچي. ديلي گزيٽ پريس، 1919ع ص37.
- (279) ڏسو: "ولايتني ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي. جمعيت العلماءِ سنڌ. ذي القعد 1340هـ ص19.
- (280) مولانا دين محمد وفائي: "تذكره مشاهير سنڌ", حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1974ع، ص288.
- (281) داکٽر نبي بخش خان بلوچ: "مولوي عبدالله لغاري" (مقالو) ٽه ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ، 1957 ص270.
 - (282) ايضاً، ص271.
 - (283) ايضاً, ص272.
- (284) مولانا مفتي عبدالقادر لغاري: "مدرسه عاليه دارالرشاد پير جهنڊو ضلع حيدرآباد سنڌ" (مضمون) له ماهي "الرحير" حيدرآباد, شاه ولي الله اڪيڊمي سال سرء ص82.
- (285) دِاكٽر نبي بخش خان بلوچ: "مولوي عبدالله لغاري" (مقالو) له ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1957 ص273.

- (286) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند" (بار دوم) لاهور، مكتبه محموديه 1978ع ص403.
 - (287) تفصيل لايدنسو:
- أ. "متفقد فتويا" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ، ص
 11.
- ii. "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص10٠
- (288) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (289) جي. ايىر.سيد: "جنب گذاريىر جن سين" (جلد ېيو) حيدرآباد, سنڌي ادبي بورد, 1967ع ص150٠
- (290) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مثي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (291) ڏسو: ماهرار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، ماه آگسٽ، سيپٽمبر 1982 ع ص18-
- (292) هيءَ معلومات مولانا عبدالله جي ڀاءُ "غلام مصطفيٰ وڪيل" کان 15 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويشي.
- (293) لآسو: "متفقه فتويا" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الأخر 1339هـ ص26٠
- (294) هيءَ معلومات مولانا عبدالله جي ڀاءُ "غلام مصطفيٰ وڪيل" کان 15 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (295) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (296) هيءَ معلومات مولانا عبدالله جي ڀاءُ "غلام مصطفيٰ وڪيل" کان 15 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (297) قادر بخش گل محمد ڀٽي: "سنڌ ۾ سرهندي سڳورن جون سماجي، ثقافتي ۽ ادبي سرگرميون" سنڌيءَ ۾ ايم. فل لاءِ پيش ڪيل مونو گراف 1961ع ص229
- (298) هيءَ معلومات "پير آغا حڪير غلام محي الدين" کان 11 فيبروري 1983ع

تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.

- (299) قادر بخش گل محمد يٽي: "سنڌ ۾ سرهندي سڳورن جون سماجي، ثقافتي ۽ ادبي سرگرميون" سنڌيءَ ۾ اير. فل لاءِ پيش ڪيل مرنوگراف 1961ع ص232
 - (300) ايضاً, ص233
 - (301) ايضاً, ص236.
- (302) هيءَ معلومات "پير آغا حڪير غلام محي الدين" کان 11 فيبروري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (303) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر، انجمن شوري علماء سندسال؟ ص135.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ ص12.
- (304) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر. سنة زميندار پريس, 1342هـ ص20.
 - (305) تفصيل لاء ڏسو:
 - i. روزانه "الرحيد" كراچي، مؤرخه 12 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤراه 23 سيپٽمبر 1922ع ص4،
- (306) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر نومبر 1981ع. ص447.
- (307) هيءَ معلومات "پير آغا حڪير غلام محي الدين" کان 11 فيبروري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (308) قاضي محمد اعظر: "علر ادب مر هالن پراڻن جو حصو" (مضمون) ماهوار "الرحير" حيدر آباد, شاه ولي الله اكيدمي، مئي، جون 1975ع ص14.
- (309) لأسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سند سال؟ ص137.
- (310) ڏسو: "خلافت ۾ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921 تائين، ڪراچي جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ، 1922ع, ص19.

- (311) قاضي محمد اعظم: "علم ادب ۾ هالن پراڻن جو حصو" (مضمون) ماهوار "الرحيم" حيدرآباد, شاه ولي الله اکيڊمي، مئي، جون 1975ع ص14٠
- (312) سيد ضياء احمد: "مرحور عبدالله شاه فتاحي" (مضمون) له ماهي "مهران سوانح نمبر" 3-4، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957غ ص413
 - (313) ايضاً، ص414.
 - (314) ايضاً. ص 413.
 - (315) ايضاً. ص414.
 - (316) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (317) مولوي محمد يامين "خادم سنڌي" مسڻ وڏي: "مولانا عبدالله مري سان ملاقات" (مضمون) ماهوار "شريعت" سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، ايريل _ مئي 1980ع، ص11٠
 - (318) ايضاً, ص12.
 - (319) ايضاً. ص16.
 - (320) ايضاً. ص12.
 - (321) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 آڪٽوبر 1922ع ص4·
- (322) مولوي محمد يامين "خادم سنڌي" مسڻ وڏي: "مولانا عبدالله مري سان ملاقات" (مضمون) ماهوار "شريعت" سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيد. اپريل _ مئي 1980ع، ص14.
- (323) هيءَ معلومات سندس فرزند جناب محمد عالم چانڊيي کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (324) مولانا محمد ادريس: "ترپاركر ۾ علوم الدينيه جي تعليم و تدريس جو پس منظر" (قصل اول _ مضمون) ماهوار "الرحيم"، حيدرآباد، شاه ولي الله اكيدمي، جولاء _ آگسٽ 1978ع ص30٠٠
- (325) هيء معلومات سندس فرزند "جناب محمد عالم چانڊيي" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (326) تفصيل لاء ڏسر:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 11 نومبر 1922ع ص6.
- آجمعیت خلافت صوبه سنڌ جي سالیاني رپورٽ" بابت سال سیپٽمبر
 آگسٽ 1923ع تائین، ڪراچي، الوحید الیڪٽرڪ پرنٽنگ

پريس 1923ع ص3.

- (327) هيءَ معلومات سندس فرزند جناب محمد عالم چانڊيي کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (328) هيءَ معلومات جناب حامد علي "خانائيءَ" جي "علمي ادبي ڊائري" مان ورتي ويئي.
- (329) هيءَ معلومات "مولانا محمد صالح "عاجز" کان 16 جون 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (330) مولانا عزيز الله بوهيو: "مدرسو مدينة العلوم ڀينڊو شريف" (مضمون) ماهوار "الصادق" كراچي، قاضي پرنٽرس، اپريل 1982ع ص44.
- (331) ڏسو: ماهوار "الرحيم" حيدرآباد, شاھ ولي الله اڪيڊمي, جولاءِ _ آگسٽ 1978ع ص34.
- (332) هيءَ معلومات جناب حامد علي خانائيءَ جي "علمي ادبي ڊائري" مان ورتي ويئي.
- (333) هيءَ معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ" کان 26 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (334) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص 2.
- (335) هيءَ معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ" کان 26 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (336) مولانا عبيدالله صاحب سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريك" (مترجم مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس, سال؟ ص23٠
- (337) هيءَ معلومات "علام غلام مصطغيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (338) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص22.
- (339) ذَّسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة". سكر انجمن شوري علماء سنة, سال؟ م144.
 - (340) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 سيپٽمبر 1922ع، ص4.
- (341) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ

پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص23٠

(342) هيءَ معلومات "جناب قاضي محمد اڪبر وڪيل" کان 31 مئي 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(343) تفصيل لاءِ ڏسو:

أ. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 26 اپريل 20و1ع ص1-16.

.ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع ص2·

(344) تفصيل لاءِ ڏسو:

أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر، انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 155.

ii. "متفقه فتويًا" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند، جمادي الآخر 1339هـ ص
 27.

iii. "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي, جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ ص21،

(345) ڏسو: ترڪ موالات نمبر1، بمبئي، مرڪزي خلافت ڪاميٽي، جون 1920ع ص

(346) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوب سنڌ، 1922ع ص ص2-6.

(347) هيءَ معلومات "جناب قاضي محمد اكبر وكيل" كان 31 مئي 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(348) قريشي حامد علي خانائي: "مولوي عبدالخالق كنڊياروي" (ساهتيءَ جو جيد عالم, صحافي ۽ خلافت تحريك جو مجاهد) (مقالو) ماهولمر "نئين زندگي" حيدرآباد، پاكستان پبليكيشنز ماه مئي ــ جون 1981ع ص36٠

(349) ايضاً, ص38،

(350) ايضاً, ص37.

(351) تفصيل لاءِ ڏسو:

أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ.
 1340هـ، ص19٠٠

ii. "اعلان" كراچى، كوهنور پرنٽنگ وركس، سيپٽمبر 1921ع ص٠2٠

- (352) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 آگسٽ 1922ع ص3.
 - (353) تفصيل لاءِ ڏسو:
- i. "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ, 1922ع ص8.
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 28 اپريل 1923ع ص4.
- iii جمعیت خلافت صوبہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سال سیپٽمبر 1922 کان آگسٽ 1923ع تائین، ڪراچي، الوحید الیڪٽرڪ پرنٽنگ پریس 1923ع ص29.
- (354) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 5 اپريل 1925ع ص4. ۽ ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، ماه اپريل 1925ع ص4.
- (355) قريشي حامد علي خانائي: "مولوي عبدالخالق ڪنڊياروي" (ساهتيءَ جو جيد عالم، صحافي ۽ خلافت تحريڪ جو مجاهد) (مقالو) ماهوار "نئين زندگي" حيدر آباد, پاڪستان پبليڪيشنز ماه مئي _ جون 1981ع ص38.
- (356) عبدالرهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانع حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع ص314.
- (357) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سند. سال؟, ص15.
- (358) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ، 1922ع ص16.
- (359) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر، سنة زميندار پريس 1342هـ ص24.
- (360) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نعبر"، يونائيٽيڊ پيڪيجڙ لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص314.
- (361) سيد غلام مرتضي شاه: "سيد حاجي عبدالرحير شاه" (مقالو) له ماهي "الرحير" نمبر 1 حيدر آباد, شاه ولي الله اكيدمي 1966ع ص7.
- (362) مولانا نور محمد: "الحاج سيد عبدالرحير شاه سجاول وارا" (مقالو) له ماهي "الرحيم" نمبر1، حيدرآباد، شاه ولي الله اكيدمي 1966ع، ص14.

- (363) هي: معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسمي: "كان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (364) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أخلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص18.
- نا جمعیت خلافت صوب سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سیپٽمبر 1922ع کان
 آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ع ص6-7 ۽ 36.
- (365) سيد غلام مرتضيٰ شاه: "سيد حاجي عبدالرحيم شاه" (مقالو) لد ماهي "الرحيم" نمبر1 حيدر آباد، شاه ولي الله اكيدمي 1966ع ص9.
- (366) See The "Daily gazette" Karachi, dated 17.6.1930. P.9
- (367) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (368) مولانا نور محمد: "الحاج سيد عبدالرحير شاه سجاول وارا" (مقالو) ته ماهي "الرحير" نمبر 1، حيدر آباد. شاه ولي الله اكيدمي 1966ع، ص16٠
- (369) هيءَ معلومات "ڊاڪٽر گل محمد ميمڻ بوبڪائيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (370) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29، مارچ 1920ع ص15-19٠
 - (371) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 19، آگسٽ 1920ع ص3٠.
 - (372) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 5، اپريل 1923ع ص4٠
- (373) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص11،
- (374) هيءَ معلومات "ڊاڪٽر گل محمد ميمڻ بوبڪائيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (375) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص441
 - (376) ايضاً, ص442.

- (377) جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص33.
- (378) ڏسو: "جمعيت العلماءِ اسلام جي گڏجاڻيءَ جي ڪارروائي" منعقده سلطان ڪوٽ، مؤرخه 25 مئي 1941ع.
- (379) عبدالرهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص4440
 - (380) ايضاً, ص228،
- (381) اسد الله "اسد" تكرّائي: "تذكره شعراءَ تكرّ" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1959ع ص167٠
 - (382) ايضاً. ص168،
 - (383) ايضاً، ص169.
 - (384) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص14.
 - (385) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع ص2٠
- (386) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة". سكر انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟. ص53.
- (387) "جمعيت خلافت صوب سنڌ جي سالياني رپورٽ" بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص29.
- (388) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص447.
- (389) غلام محمد گرامي: "وياسي وينجهار" حيدر آباد. سنڌي ادبي بورڊ. 1977ع ص231٠
- (390) ابوبكر شبلي: "مولانا عبدالعزيز مرحوم ٿريچاڻوي" (مقالو) تہ ماهي "مهراڻ ــ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص185٠
- (391) ابوبكر شبلي: "مولانا عبدالعزيز مرحوم ٿريچاڻوي" (مقالو) تہ ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص186٠
- (392) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟. ص142.

- (393) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ ص18.
 - (394) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 23 جنوري 1931ع ص4.
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 1 فيبروري 1931ع ص7٠
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 4 جون 1931ع ص6٠
 - .iv روزانه "الوحيد" كراچي, مؤرخه 5 مئي 1933ع ص6٠
 - (395) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى, مؤرخه 9 جولاء 1920، ص6.
- نخلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ4
 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ، 1922ع ص2-9 ۽ 18.
- iii. "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص 4- 112.
- (396) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع ص447.
- - (398) ايضاً، ص187.
- (399) هيءَ معلومات مولانا صاحب جي ڀائمٽي "جناب محمد خالد سيتائي" اسسٽنٽ ڊائريڪٽر شعبه اطلاعات سنڌ کان 22 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (400) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، ماه آگسٽ، سيپٽمبر 1982 ع ص11٠
- (401) خواجه غلام علي الانا: "لازَّ جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو, انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي 1977ع ص 323.
- (402) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(403) هيءَ معلومات مولوي عبدالغفور صاحب جي ڀائيٽي "جناب محمد خالد سيتائي" اسسٽنٽ ڊائريڪٽر شعبه اطلاعات سنڌ کان 22 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(404) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 24 فيبروري 1942ع ص٠٤٠

(405) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو، مارچ – اپريل 1981ع ص26٠

(406) ايضاً, ص59.

(407) هيءَ معلومات مولوي عبدالغفور صاحب جي ڀائيٽي "جناب محمد خالد سيتائي" اسسٽنٽ ڊائريڪٽر شعبه اطلاعات سنڌ کان 22 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(408) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس سال ؟، ص1٠

(409) ايضاً ، ص2٠

(410) مولانا مفتي عبدالقادر لغاري: "مدرسه عاليه دارالرشاد پير جهنڊو" (مضمون) تم ماهي "الرحيم" حيدرآباد شاهرولي الله اكيدمي 1965ع ص34٠

(411) مولانًا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدرآباد، سنڌ پرنٽنگ پريس سال؟ ص10٠

(412) ڏسو: "جمعيت خلافت صوب سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي. الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص2 ۽ 20.

(413) ڏُسو: "متنقد فتويٰ" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند. جمادي الآخر 1339هـ ص26٠

(414) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 ڊسمبر 1922ع ص4.

(415) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدر آباد، سنڌ پرنٽنگ پريس، سال؟ ص23٠

(416) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(417) هيءَ معلومات سندس ڀاءُ ڊاڪٽر احمد خان احمداڻيءَ کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.

- (418) هيءَ معلومات مولانا قاضي عبدالكرير عباسيءَ جي پوٽي "قاضي محمد حسين" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (419) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (420) هيءَ معلومات مولانا قاضي عبدالكرير عباسيءَ جي پوٽي "قاضي محمد حسين" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تى انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (421) هيءَ معلومات سندس پوٽي "حڪيم محمد اڪبر درس" کان 20 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (422) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، ماه جون/ جولاءِ 1982ع ص 27.
- (423) قسو: "نقل صورة الاجازة" از شيخ حسين بن محسن الانصاري اليماني مؤرخه 4 محرم الحرام سن 1324هـ.
- (424) هيءَ معلومات سندس پوٽي "حڪير محمد اڪبر درس" کان 20 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (425) ڏسو: "قوانين" ڪراچي، انجمن معاونين مدرسه اهل السنت والجماعة لياري ڪوارٽر، مؤرخه3 جمادي الآخر 1331هـ مطابق 10 مئي 1913ع.
- (426) هيءَ معلومات سندس پوٽي "حڪير محمد اڪبر درس" کان 20 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (427) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، ماه آگسٽ، سيپٽمبر 1982 ع ص47٠٠
- (428) هيءَ معلومات سندس پوٽي "حڪير محمد اڪبر درس" کان 20 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (429) مولانا فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ڊيلي گزيٽ پريس 22 مئي . 1919ع ص43٠
- (430) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟, ص132.
 - (431) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 26 اپريل 1920ع ص ص14-16.
 ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخ 9 جولاء 1920ع ص2.

- .iii روزانه "الوحيد" كراچي، 10 آگسٽ 1920ع ص2·
- (432) مولري دين محمد وفائي: "ياد جانان" سكر. حكيم عبدالحق كتب فروش 1920ع ص14.
- (433) ڏسو: "متنقه نتويٰ"، دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند، 1339هـ، ص15 ۽ پڻ ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري نتويٰ" ڪراچي، حمعيت العلماءِ سنڌ 1340هـ ص24.
 - (434) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 31 مئي 1920ع ص2·
- (435) ڏسو: "خط" سيڪريٽري جمعيت خلافت ڪاميٽي ڪراچي، مؤرخه 27 جولاءِ 1920ع.
- (436) ڏسو: ڏانهس لکيل "خط" سيڪريٽري خلافت ڪاميٽي ڪراچيءَ طرفان، مؤرخه 31 جولاءِ 1922ع٠
- (437) ڏسو جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين، ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923 ع، ص7-8-9—37 ۽ 40.
- (438) هيءَ معلومات سندس پوٽي "حڪير محمد اڪبر درس" کان 20 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (439) مولوي محمد قاري: "مولانا عبدالكريىر مرحوم ڏيرو" (مضمون) ته ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص190٠
 - (440) ايضاً ، ص192 .
 - (441) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 22 سيپٽمبر 1922ع ص4٠
- (442) اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة, سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟, ص151٠
- (443) مولوي محمد قاري: "مولانا عبدالكرير مرحوم ڏيرو" (مضمون) له ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص1930
- (444) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص420.
 - (445) ايضاً. ص421.
 - (446) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2·
 - (447) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 4 آڪٽوبر 1938ع ص3٠

- (448) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص421.
- (449) شهاب الدين چشتي: "مولانا عبدالكريم چشتي" (مضمون) له ماهي "مهراڻ _ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص240.
- (450) غلام محمي گرامي: "رياسي وينجهار" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1977ع ص197٠
- - (452) تفصيل لاءِ ڏسو:
- آسر: "جمعیت خلافت صوبہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سال سیپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائین". ڪراچي الوحید الیڪٽرڪ پرنٽنگ پریس، 1923ع، ص38.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى, مؤرخه 19 نومبر 1922ع ص1.
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 18 آكٽوبر 1929ع ص2.
 - .v روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 1، فيبروري 1931ع ص7٠
 - (453) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 3 جون، 1920ع ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 12 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - (454) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر، انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 140.
- أمن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص10.
- أii "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" كراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ ذي القعد 1340 ص17.
- (455) جي.اير.سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد ٻيو) حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص434.
 - (456) ايضاً, ص432.
 - (457) ڏسو: روزانـ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 19 جنوري 1932ع ص6.

- (458) شهاب الدين چشتي: "مولانا عبدالكرينر چشتي" (مضمون) ته ماهي "مهراڻ سوانح نمبر" 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص241٠
 - (459) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 سيپٽمبر 1922ع ص4·
 - (460) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2·
- (461) جي.ايم.سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد ٻيو) حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص430،
 - (462) ايضاً, ص435.
- (463) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر نومبر 1981ع. ص336.
 - (464) تفصيل لاء ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 150.
- ii. "امن سيا پر شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص19.
 - (465) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 4 جنوري 1922ع ص4٠
- (466) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص337.
 - (467) ايضاً, ص258.
- (468) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 10 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (469) عبدالوهاب چاچر: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص259.
 - (470) ايضاً, ص260٠
- (471) ذسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 153.
- (472) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص18.
 - (473) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 5 مئي 1933ع ص6٠.
- (474) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 10 جولاءِ 1982ع تي

- انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (475) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 17 فيبروري 1931ع ص5٠
- (476) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو. مارچ اپريل 1981ع ص75٠
- (477) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر". سکر. يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص261۰
- (478) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (479) "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ ذي القعد 1340هـ ص20.
 - (480) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مئي 1924ع ص4·
 - (481) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص3٠.
 - (482) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6.
 - (483) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 آڪٽوبر 1938ع ص5٠.
 - (484) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 21 اپريل 1938ع ص6.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 13 جولاءِ 1938ع ص3.
- (485) هيءَ معلومات "مولوي عبدالكرير سمي" كان 23 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (486) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3٠.
- (487) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص208۰
 - (488) ايضاً, ص209.
 - (489) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 154.
- آامن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص18.
- .iii "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" كراچي، جمعيت

العلماء سند، 1340 ص17.

- (490) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 7 سيپٽمبر 1922ع ص4.
- (491) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 28 ڊسمبر 1922ع ص4·
- (492) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 ڊسمبر 1931ع ص2٠
- (493) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لعيٽيڊ، آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص209٠
- (494) هيءَ معلومات "مولانا عبدالوهاب لنڊ" کان 27 ڊسمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (495) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3٠
- (496) هيءَ معلومات "مولانا عبدالوهاب لنڊ" کان 27 ڊسمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (497) حافظ قاري فيوض الرحمٰن "مشاهير علماء ديوبند" لاهور، المكتبة عزيزية 1976 م 3430.
- (498) مولانا عبيدالله سنڌي: ڪابل مين سات سال" (مرتب محمد سرور). لاهور. سنڌ ساگر اڪادمي 1976ع ص145٠
- (499) محمد اسلم: "مولانا عبيدالله سنڌي کي سياسي مکتوبات" لاهور. ندوة المصنفين, سال؟. ص2.
- (500) مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي: "امام انقلاب عبيدالله سنڌيءَ جي سوانح حيات ۽ سندن انقلابي پيغام" (مقالی) ماهور "ترحيد" ڪراچي، سيپٽمبر 1952ع ص
- (501) محمد اسلم: "مولانا عبيدالله سنڌي کي سياسي مکتوبات" لاهور, ندوة المصنفين, سال؟، ص1.
- (502) مولانا عبيدالله سنڌي: ڪابل مين سات سال" (مرتب محمد سرور)، لاهور، سنڌ ساگر اڪادمي 1976ع ص146٠
- (503) مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالو) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص13.
- (504) مولانا عبيدالله سنڌي: "كابل مين سات سال" (مرتب محمد سرور) سنڌ ساگر اكادمي 1976ع ص 147.
 - (505) مولانا عبيدالله سنڌي: "ذاتي دائري" (بار اول)، لاهور، ادبستان 1946ع، ص14٠

- (506) مولانا غلام مصطفيٰ تاسمي: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالي) ماهوار "توحيد" كراچي. آكٽربر 1944ع ص14.
- (507) مولانا عبيدالله سنڌي: "ذاتي ڊائري" (بار اول)، لاهور، ادبستان 1946ع، ص15
- (508) مولانا دين محمد وفائي: "مولانا عبيدالله صاحب" (مقالو) ماهوار "توحيد". سيپٽمبر 1937ع ص32.
- (509) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Agency 1969 P.176.
- (510) كريم بخش خالد: "تحريك عبيداللاهي" (مقالو) ماهوار "پيغام" كراچي. شعبه مطبرعات سنڌ اطلاعات كاتر، سيپٽمبر 1980ع ص66٠
- (511) مولوي حكير محمد معاذ: "علامه عبيدالله السندي" (مقالو) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص20.
- (512) مولانا غلام مصطفيٰ قاسمي: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالو) ماهوار "توحيد" سراچي، آڪٽوبر 1944ع ص15٠
- (513) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Agency 1969 P.176.
- (514) مولانا دين محمد وفائي: "مولانا عبيدالله صاحب" (مقالو) ماهوار "توحيد". سيپٽمبر 1937ع ص33.
- (515) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالو) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص15٠
- (516) مولانا عبيدالله سنڌي: "ذاتي ڊائري" (بار اول). لاهور، ادبستان 1946ع، ص
- (517) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالى) ماهوار "ترحيد" كراچى، آكٽربر 1944ع ص16٠
 - (518) ڏسو: هنتيوار "چوڏس" ڪراچي، آگسٽ 1946ع ص13٠٠
- (519) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند (بار دوم) لاهور، مكتبه محموديه 1978ع ص361٠

- (520) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، جولاءِ 1948ع ص17٠
- (521) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Agency 1969 P.178.
- (522) مولوي حكيم محمد معاذ صاحب نوابشاه: "علام عبيدالله السندي", (مقالو) ماهوار "توحيد", كراچي, آكٽوبر 1944ع، ص21.
- (523) مولانا دين محمد وفائي: "حضرت مولانا سنڌيءَ جي حياتيءَ جو هڪ ورق" (مقالو) ماهوار "توحيد" ڪراچي، جولاءِ 1948ع ص17.
- (524) مولانا حسين احمد مدني: "تحريك ريشمي رومال" (مرتب مولانا عبدالرحمٰن) لاهور ، كلاسيك 1960ع ص 177.
- (525) محمد اسلم: "مولانا عبيدالله سنڌي کي سياسي مکتوبات" لاهور "ندوة المصنفين سال؟ ص6.
- (526) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Agency 1969 P-178.
- (527) Ibid, P.179.
- (528) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالر) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص17.
 - (529) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 17 آگسٽ 1937ع ص6.
- (530) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتى عبدالقادر لغاري) حيدرآباد، سنڌ پرنٽنگ پريس سال ؟، 21.
- (531) پروفیسر محمد سرور: "خطبات مولانا عبیدالله سنڌي" لاهور، سنڌ ساگر اڪادمي، سال؟، ص223،
- (532) مولانا دين محمد وفائي: "سنڌ ساگر انسٽيٽيوٽ" (مقالر) ماهوار "توحيد" كراچي، آگسٽ 1943ع ص12.
- (533) مولانا غلام مصطفيٰ صاحب: "امام الانقلاب حضرت علامه سنڌي" (مقالي) ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944ع ص17.
- (534) G.Allana: "Our Freedom Fighters" Karachi, Paradise Subscription Agency 1969, P.183
- (535) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص292٠

- (536) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (537) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص292.
 - (538) ايضاً. ص294.
- (539) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء "كان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (540) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠
- (541) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (542) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص294.
 - .473 ايضاً ص 543)
- (544) "اظهار الكرامه في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟. ص154.
 - (545) ڏسو: "روزانه الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 جون 1924ع ص4.
- (546) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص473۰
- (547) هيءَ معلومات "مولانا عزيز الله جروار" كان سوالنامي ذريعي حاصل كئي ويئي.
- (548) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ڏريمي ورتي ويئي.
- (549) هيءَ معلومات "مولانا عزيز الله جروار" كان سوالنامي ذريعي حاصل كئي ويئي.
- (550) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (551) هيءَ معلومات "قاري عبيدالله" پيش امام جامع مسجد ميرپور خاص كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (552) هيء معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميء" كان 8 جنوري1983ع تي

انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(553) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة". سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟. ص 135.

(554) تفصيل لاءِ ڏسو:

i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 12 سيپٽمبر 1922ع ص4.

.ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 21 سيپٽمبر 1922ع ص4.

(555) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص ص14-16٠

(556) تفصيل لاءِ ڏسو:

i. روزانه "الوحيد" كراچي, مؤرخه 13 جون 1920ع، ص4.

ii. "غلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين " ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ. 1922ع ص2.

(557) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، اپريل 1982ع ص4.

(558) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، ڊسمبر 1924- جنوري 1925ع ص28٠

(559) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3٠

(560) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 25 فيبروري 1931ع ص5٠

(561) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي. قاضي پرنٽرس، اپريل 1982ع ص4.

(562) ڏسو: ٽہ ماهي "مهراڻ" شاعر نمبر 1-2 حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1969ع ص261،

(563) ايضاً. ص262.

(564) ايضاً، ص263.

(565) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع. ص4.

(566) ڏسو: "جمعيت العلماءِ اسلام" جي گڏجاڻيءَ جي ڪاروائي. منعقده سلطان ڪوٽ, مؤرخه 25 مئي 1941ع.

(567) ڏسو: ٽـ ماهي "مهراڻ" شاعر نمبر 1-2 حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1969ع ص263٠

(568) ايضاً, ص262

- (569) هيءَ معلومات سندس "ڀائيٽيي سيد علي انور شاه" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (570) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص21٠
 - (571) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 13، مارچ 1923ع ص4٠
- (572) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين" ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ، 1922ع ص10٠
 - (573) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 144.
- آمن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ ص19٠٠
- آاii "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" كراچي، جمعيت
 العلماء سنڌ ذي القعد 1340 ص16.
 - (574) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 6 فيبروري 1923ع ص4.
- (575) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص21٠
- (576) خواج غلام علي الانا: "لاز جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو, انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي, 1977ع ص318.
- (577) حافظ محمد حسن سومرو سجاول: "لاز جو لال مفتي علي محمد مهيري رح" (مضمون) ماهوار "شريعت" سكر. يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، فيبروري 1976ع ص11٠
- (578) محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه" حيدرآباد, سنڌ ڪلاسڪس، صوبائي هجره ڪميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو 1982ع ص510.
 - (579) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 134.
- ii. "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتوي" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ

1340هـ ص21٠

- (580) ڏسو: "متفقه فتري" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند، جمادي الآخر 1339هـ ص26٠٠
- (581) حافظ محمد حسن سومرو: "لاز جو لال مفتي علي محمد مهيري رح" (مضمون) ماهرار "شريعت" سكر. يونائينيد پيكيجز لمينيد, فيبروري 1976ع ص12
 - (582) ايضاً، ص13.
- (583) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص119.
- (584) داكٽر غلام حيدر گهانگهرو: "علام علي محمد ڪاڪيپوٽو" (مقالو) ٽه ماهي "الرحيم 2" حيدرآباد, شاه ولي الله اڪيڊمي 1968ع ص87.
 - (585) ايضاً, ص88
 - (586) ايضاً, ص90.
- (587) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو) حيدرآباد. سنڌ سائنس سوسائٽي 1976ع ص680.
- (588) ڊاڪٽر غلام حيدر گهانگهرو: "علام علي محمد ڪاڪيپوٽـ" (مقالو) ٽـ ماهي "الرحيم 2" حيدرآباد. شاھ ولي الله اڪيڊمي 1968ع ص91.
- (589) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص119.
- (590) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو) حيدرآباد. سنڌ سائنس سوسائٽي 1976ع ص681.
- (591) مولانا عبيدالله صاحب سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريك" (مترجم مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس سال؟ ص23٠
- 592) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (593) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2.
- (594) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص120.

- (595) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون)، حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص128٠
- (596) مخدور احمد مجتبيٰ "غالب" ملكاثي: "مرحور مولانا مخدور غلار محمد ملكاثي" (مقالو) له ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع ص135٠
- (597) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون). حيدر آباد، سنڌي ادبي بورڊ، 1967ع، ص129٠
- (598) مخدوم احمد مجتبيٰ "غالب" ملكاثي: "مرحوم مولانا مخدوم غلام محمد ملكاثي" (مقالو) لد ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ، 1957ع ص ص 141-140
- (599) ابوبکر خان مگسی: "عربی پاکستان کی قومی زبان" کراچی، وفائی پرنٹنگ پریس 1970ع ص1۰
 - (600) ڏسو: روزانه "الامين" حيدرآباد، مؤرخه 15 جنوري 1920ع ص3٠
- (601) جي. ايىر. سيد: "جنب گذاريىر جن سين" (جلد پهريون), حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص130٠
- (602) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب مولوي محمد خان" کان 29 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (603) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 3، اپريل 1941ع ص3٠
- (604) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب مولوي محمد خان" کان 29 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (605) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص292٠
- (606) مخدوم محمد زمان "طالب الموليٰ": "مرحوم مخدوم غلام حيدر صديقي قريشي هالائي" (مضمون) نه ماهي "مهرانْ" سوانح نمبر 2-3، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص189٠
- (607) عبدالرحمٰن محمد بچل قريشي: "سروري خاندان جون علمي، ادبي ۽ ديني خدمتون" ڊي.فل لاءِ پيش ڪيل تحقيقي مقالو 1976ع ص ص 248-250٠
- (608) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 4.7.1921 P.5
- (609) See The "Daily Gazette", Karachi, dated 7.7.1930, P.7

- (610) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (611) جي.ايم.سيد: "جنب گذريم جن سين" (جلد ٻيو)، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص294٠
- (612) مخدور محمد زمان "طالب الموليٰ": "مرحور مخدور غلام حيدر صديقي قريشي هالائي" (مضمون) له ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 2-3. حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص188.
- (613) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو). حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص296ء
- (614) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (615) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 16 سيپٽمبر 1920ع ص4.
 - (616) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 8 آڪٽوبر 1922ع ص4.
- (617) اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة, سكر انجمن شوري علماء سنة. - سال؟ ص152.
 - (618) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 21 مارچ 1930ع ص2.
- (619) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (620) هيءَ معلومات سندس پوٽي "مولانا حافظ عبدالله گوپانگ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (621) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ، 1340ه ص20.
- (622) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص15.
 - (623) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - أ. روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 3 ڊسمبر 1922ع ص4.
 - ·ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3.
- (624) هيءَ معلومات سندس پوٽي "مولانا حافظ عبدالله گوپانگ" کان 16 سيپٽمبر

- 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (625) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص289٠
- (626) مولانا فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ديلي گزيٽ پريس، 1919 ع ص41.
 - (627) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 145.
- ان سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص18٠٠
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتريا" كراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ 1340هـ ص23٠
- الآخر 1339هـ ص نعقد فتوياً دهلي، جمعية مركزيه علماء هند، جمادي الآخر 1339هـ ص
 26٠
- (628) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر, سنة زميندار پريس 1342هـ ص27٠
- (629) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (630) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز ليٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع. ص290٠
- (631) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (632) تفصيل لاء ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 20 مئي 1924ع ص٠٠٠
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 3 آكٽوبر 1928ع ص١٠.
 - . انا روزانه "الوكيد" كراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص2٠
- (633) . لاسو: "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتوي" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ. (1340هـ ، ص16٠
 - (634) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6.

- (635) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
 - (636) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 مارچ 1930ع ص٠2٠
- (637) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 آڪٽوبر 1938ع ص5.
- (638) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (639) هيء معلومات سندس فرزند "پير غلام رسول شاه" کان 25 جولاءِ 1981ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (640) مولانا مولوي فيض الكرير: "تحقيق الخلافت" كراچي، ڊيلي گزيٽ پريس، 1919ع ص20٠
 - (641) تفصيل لاءِ ڏسو:
- ن متفقه فتريا "دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ ص
 27.
 - ii. "اعلان" كراچى، كوهنور پرنٽنگ وركس، سيپٽمبر 1921ع ص٠2٠
- (642) ماهوار "پيغام" كراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات كاتو، مارچ _ اپريل 1981ع ص30٠
 - (643) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 31 آگسٽ 1920ع ص4.
 - (644) تفصيل لاء ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 26 جنوري، 1920ع ص12.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 24 آكٽوبر 1920ع ص٠2.
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص٠2٠
 - .iv روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص2.
 - (645) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 31 مئى 1920ع ص ص 5-6.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى, مؤرخه 24 آگسٽ 1920ع ص٠2٠
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 31 آگسٽ 1920ع ص4.
 - .iv روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 16 نومبر 1920ع ص1.
 - (646) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 31 مئي 1920ع ص ص 5-6.
 - (647) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6.
- (648) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر

- 1922 كان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص3.
- (649) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص4470
 - (650) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 24 فيبروري 1931ع ص٠2٠
 - (651) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 جنوري 1942ع ص3٠.
- (652) . ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو مارچ -اپريل 1981ع ص56٠
- (653) هيءَ معلومات سندس فرزند "پير غلام رسول شاهـ" کان 25 جولاءِ 1981ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (654) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (655) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 آڪٽوبر 1938ع ص5٠
- (656) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريك" (مترجر مولانا مفتى عبدالقادر لغاري) حيدرآباد، سنڌ پرنٽنگ پريس سال؟ ص23.
- (657) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (658) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (659) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 28 نومبر 1922ع ص4.
 - (660) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6٠.
 - (661) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أ. متفقه فتويا "دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ ص
 27
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ "كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ، 1340هـ ص23٠.
- (662) ڏسو: "جمعيت خلافت صوب سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص ص 27 ۽ 40.

- (663) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1930ع ص3٠.
- (664) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 فيبروري 1931ع ص 6٠
- (665) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (666) هيء معلومات "مولانا عبدالرحمٰن ولد مولانا فتح علي جتوئيء" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (667) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 مارچ 1923ع ص4.
 - (668) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1930ع ص3٠
 - (669) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 فيبروري 1931ع ص6٠.
- (670) هيءَ معلومات "مولانا عبدالرحلن ولد مولانا فتح علي جتوئيء" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (671) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص370،
- (672) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون)، حيدر آباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع. ص178٠
- (673) دكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاكستان" راولپنڊي، انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص212٠
- (674) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون)، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص179٠
- (675) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص370،
 - (676) ايضاً, ص371.
- (677) داكتر سيد سبط حسن رضري: "فارسي گويان پاكستان" راولپندي، انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص214٠
- (678) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون)، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص178٠
- (679) ڏسو: "جمعيّت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص20٠٠

- (680) دّسو: روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 26 اپريل 1920 ص14.
 - (681) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع ص٠2٠
 - (682) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟, ص134.
- ii. "متفقه فتويا" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ ص
- أان سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص14.
- آولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ, ص23.
- (683) هيءَ معلومات "جناب جي.ايـم.سيد" کان 20 جولاءِ 1977ع انٽرويـو ذريعي ويئي.
- (684) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون)، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص179٠
 - (685) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 4 جولاءِ 1920 ص ص 2-3.
- (686) جي.اير.سيد: "نئين سنڌ لاءِ جدوجهد" (دفعو ٻيو) حيدرآباد, اسلاميه پرنٽنگ پريس 1952ع ص9.
- (687) دكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاكستان" راولپنڊي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص214.
- (688) محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه" حيدرآباد, سنڌ ڪلاسڪس صوبائي هجره ڪاميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو حڪومت سنڌ 1982ع ص473.
 - (689) ايضاً, ص474.
- (690) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنڌ. سال؟. ص138.
- (691) هيءَ معلومات "پير وهب الله شاه ولد پير ضياء الدين شاه" كان تاريخ و دسمبر 1982ع تي ورتي ويئي.
- (692) محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه" حيدرآباد, سنڌ ڪلاسِڪس، صوبائي هجره ڪاميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو، 1982ع، ص 475.

- (693) حافظ محمد اسماعيل: "مدرسو مظهر العلوم كڏو ڪراچي" (مضمون) ماهوار "الصادق" ڪراچي، جون جولاءِ 1982ع ص101٠
- (694) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (695) ڏسو: روزانہ "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠
- (696) حافظ محمد اسماعيل: "مدرسو مظهر العلوم كڏو ڪراچي" (مضمون) ماهوار "الصادق" ڪراچي، جون جولاءِ 1982ع ص103.
- (697) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص150٠
- (698) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (699) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 23 سيپٽمبر 1922ع ص4.
- (700) "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ, ص17.
 - (701) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 19 فيبروري 1931ع ص6.
- (702) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص150٠
- (703) مولانا دين محمد "اديب": "مولانا محمد آڳرو مرحوم" (مضمون) ٽه ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر. 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص58.
 - (704) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص ص1-16-
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 9 جولاءِ، 1920ع ص2٠
 - .iii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 3 آكٽوبر 1922ع ص4.
 - (705) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 28 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - (706) تفصيل لاء ڏسو:
 - ان "الوحيد" كراچي. مؤرخه 29 مارچ 1920ع ص15-20.
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 26 اپريل 1920ع ص14-16.
 - .iii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 12 سيپٽمبر 1922ع ص4٠
 - .نا روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 10 آكٽوبر 1922ع ص4.

- ٧٠ روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 12 نومبر 1922ع ص4.
- (707) ڏسو: "ترڪ موالات نمبر1" بمبئي، مرڪزي خلافت ڪاميٽي، جون 1920ع ص11٠
- (708) "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ, ص20.
- (709) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس. 1923ع، ص 35-39 ۽ 40.
 - (710) ڏسو: ماهوار "توحيد" ڪراچي، ڊسمبر 1924ع جنوري 1925ع 31٠
- (711) مولانا دين محمد "اديب": "مولانا فيض محمد صاحب "واعظ" مرحوم" (711) مضمون) ته ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1957 ع ص104.
- (712) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة.سال؟، ص148.
 - (713) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 26 جون 1920ع ص3.
- (714) مولانا دین محمد "ادیب": "مولانا فیض محمد صاحب "واعظ" مرحور" (714) (مضمون) نه ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حیدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957 ع ص104.
- (715) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع. ص216.
- (716) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس. 1923ع، ص37.
- (717) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (718) حڪير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو), حيدرآباد, حيدري پرنٽنگ پريس 1976ع ص663.
- (719) در محمد پٺاڻ: "درگاھ ٺلاھ جا ٻہ شاعر شاھ" (مقالو) ماھوار "الرحيم" 5-6 حيدرآباد, شاھ ولي الله اكيڊمي نومبر _ ڊسمبر 1978ع ص22.

- (720) ايضاً. ص24.
- (721) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر. التجمن شوري علماء سنڌ. سال ؟ ص 146.
- آمتفته فتويً دهلي, جمعية مركزيه علماء هند. جمادي الآخر 1339هـ
 ص27٠
 - (722) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 12 مارچ 1925ع ص6-
- (723) هيءَ معلومات سندس فرزند "پير مظهر الدين شاه عرف دلدار شاه" کان 8 فيبروري 1980ع سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (724) هيءَ معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ" کان 26 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (725) پير علي محمد راشدي: "اهي ڏينهن. اهي شينهن" (جلاد ٽيون) ڄامشورو/حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ 1981ع ص299٠
 - (726) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 4 نومبر 1920ع ص4-
 - (727) تفصيل لاء ڏسو:
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري قتويً " كراچي.
 جمعيت علماء سنڌ, 1340هـ ص21.
 - ii. "اعلان" كراچي، كوهنور پرنٽنگ وركس، سيپٽمبر 1921ع-
 - (728) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 7 آكٽوبر 1920ع ص4-
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 10 آكٽوير 1920ع ص4-
 - .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 13 آكٽوبر 1920ع ص4-
 - (729) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 آڪٽوير 1920ع ص2-
- (730) پير علي محمد راشدي: "آهي ڏينهن، اهي شينهن" (جلد ٽيون) ڄامشورو/حيدرآباد, سنڌي لابي بوردِ 1981ع ص297.
 - (731) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 بسمبر 1922ع ص4
 - (732) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4-
 - (733) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص2-
- (734) هيء معلومات سندس فرزند "مولوي محمد انور كٽيءَ" كان سوالتامي قريعي

حاصل ٿي.

(735) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29 مارچ 1922ع ص4.

(736) هيء معلومات "مولوي محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(737) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولوي محمد انور کٽيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.

(738) هيءَ معلومات سندس ڏوهٽي "جناب احمد علي سومري" سابق "وزير محنت سنڌ" کان 17 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(739) تفصيل لايدنسو:

أمتنقه قترياً "دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الأخر 1339هـ
 ص15.

أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر انجمن شوري علماء سند, سال؟, ص132.

آامن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتريا" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ.
 1340هـ، ص12٠٠

(740) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 30 جنوري 1923ع ص4.

(741) تفصيل لاء ڏسو:

i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 9 جولاءِ 1920ع ص6.

 "جمعیت خلافت صربہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ص40.

(742) هيءَ معلومات سندس ڏوهٽي "جناب احمد علي سومري" سابق "وزير محنت سنڌ" کان 17 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(743) مولانا محمد بنوي: "خود نوشت آتر كهائي" (مؤرخه 25 جمادي الآخر 1377هـ ته ماهي "الرحيم1" حيدرآباد، شاه ولي الله اكيدمي 1968ع ص61 كان ص

(744) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1930ع ص3٠

(745) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 17 فيبروري 1931ع ص5٠

(746) هيء معلومات "جناب غلام محمد "جوهر" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.

- (747) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص396.
 - (748) ايضاً, ص397.
- (749) مولانا عبدالرحير لغاري: "مولانا سيد الحاج امير محمد شاه صاحب حسيني" (مضمون) "له ماهي الرحير" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع، ص47
- (750) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص398.
- (751) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب حسين امام" کان 23 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (752) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 2 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (753) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب حسين امام" کان 23 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (754) ڏسو: ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي پرنٽرس، جون/جولاءِ 1982ع ص112٠
- (755) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 2 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويشي.
- (756) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب حسين امام" کان 23 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ريئي.
- (757) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاڪستان" راولپنڊي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص342.
- (758) محمد قاسر ڳڙهي ياسيني: "جناب مولانا محمد ابراهير صاحب ڳڙهي ياسيني" (مضمون) يه ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص220٠
- (759) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاڪستان" راولپنڊي، انتشارات مرکز تحقيقات فارسي ايران وپاڪستان 1974ع ص343.
- (760) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟. ص140.
- (761) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب"

سكر، سنڌ زميندار پريس 1342هـ ص23٠

- (762) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 2 جولاءِ 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (763) دكتر سيد سبط حسن: "فارسي گريان پاكستان"، راولپنڊي، انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران و پاكستان، 1974، ص343
- (764) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص267٠
 - (765) ايضاً. ص268٠
 - (766) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 13 جولاءِ 1938ع ص3٠.
 - (767) تفصيل لاء ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 7 اپريل 1940ع ص4.
 - .ii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 25 جنوري 1942ع ص٠2٠
- (768) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص268٠
 - (769) ايضاً. ص269٠
- (770) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گريان پاڪستان" راولپنڊي، انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص215٠
- (771) اسد الله شاه "اسد" ٽکڙائي: "تذڪره شعراء ٽکڙ" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1959ع ص159٠
 - (772) ايضاً، ص161
- (773) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گريان پاڪستان" راولپندي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص ص216-217

(774) تفصيل لاءِ ڏسر:

- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟, ص155.
- آمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ، ص11٠٠
- اiii "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ" كراچي، جمعيت

علماء سنڌ, 1340هـ، ص23.

- (775) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص20٠٠
 - (776) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 ڊسمبر 1922ع ص4·
- (777) دكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاكستان" راولپنڊي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص216٠
- (778) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص23،
 - (779) ايضاً. ص24.
 - (780) ايضاً, ص25٠
- (781) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟، ص142.
- (782) "متفقه فتويا" دهلي، جمعيت مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ، ص27
- (783) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص27.
 - (784) ايضاً، ص189.
 - (785) ايضاً. ص190.
 - (786) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر انجمن شوري علماء سند, سال؟ ص154.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340هـ ص18.
- iii. "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويا" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص17.
- (787) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين" ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ. 1922ع ص1.

- (788) ڏسو: روزانه "الرحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 ڊسمبر 1931ع ص٠2٠
- (789) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص190
- (790) هيءَ معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ" کان 26 آڪٽوبر 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
 - (791) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠
- (792) هيء معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريء" كان 26 آكٽربر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (793) هيءَ معلومات سندس فرزند "پروفيسر احمد علي انصاري صاحب" کان 25 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويثي.
 - (794) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - ن وزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 1، بسمبر 1922ع ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 28، دسمبر 1922ع ص4.
- (795) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟، ص137.
 - (796) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 10 جولاءِ 1920ع ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 15 آگسٽ 1920ع ص3.
- خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ 4
 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ. 1922ع ص10، 12 ۽ 15.
- iv. جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص 209٠
 - (797) روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 6 آگسٽ 1920ع ص4.
 - (798) روزانه "الوحيد" كراچي, مؤرخه 13 آكٽوبر 1922ع ص4.
 - (799) ڏسو: "مختصر حالات انعقاد" دهلي، جمعيت علماءِ هند. سال؟ ص5.
- (800) مولانا عبيدالله سنڌي: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريڪ" (مترجر مولانا مفتي عبدالقادر لغاري) جيدرآباد، سنڌ پرنٽنگ پريس سال؟ ص 23.

- (801) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (802) هيءَ معلومات سندس فرزند "پروفيسر احمد علي انصاري صاحب" کان 25 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (803) مولانا محمد ادريس جوثيجر: "ضلعي ترپاركر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ كرام" (مقالو-قلمي) سال؟ ص34.
 - (804) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أمتفقه فتوياً دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ
 ص270.
- آولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتوي ڪراچي.
 جمعيت علماءِ سنڌ، 1340ه، ص21.
 - (805) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 11 نومبر 1922ع ص6٠
 - (806) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. 12 مارچ 1929ع ص6.
- (807) هيءَ معلومات حڪير نور محمد خاصخيلي ڊينگاڻ ڀرڳڙيءَ واري کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (808) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 30 نومبر 1938ع ص4.
- (809) مولانا محمد ادريس جوڻيجو: "ضلعي ٿرپارڪر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ ڪرام" (مقالو-قلمي) سال؟ ص34.
- (810) هيءَ معلومات "جناب عبدالرحلن منگيي" کان 8 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (811) حكير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو) حيدرآباد. سنڌ سائنس سوسائٽي 1976ع ص672.
- (812) هيءَ معلومات "جناب عبدالرحمٰن منگيي" كان 8 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (813) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي مؤرخه 10 فيبروري 1931ع ص6٠
- (814) هيءَ معلومات "جناب عبدالرحلن منگيي" کان 8 اپريل 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (815) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو) حيدر آباد, سنڌ سائنس سوسائٽي 1976ع ص672.

- (168) مقتي محمد صاحبداد: "خواجه محمد حسن مجددي قدس سره" (مضمون) روزانه "مهرال" سالگره نمير حيدر آباد, مؤرخه 5 جنوري 1962ع ص111.
- (817) آغا عبدالله جان سرهندي: "مونس المخلصين" كراچي، عباسي ليتوآرت پريس 1366هر ص60.
- (818) السد الله "السد" تكرّائي: "تذكره شعراء تكرّ" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1959ع ص47.
- (20%) الظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر انجمن شوري علماء سندّ. سال؟. ص135.
 - (21) "متققه فتويّ" دهلي. جمعية مركزيه علماء هند 1339هـ ص 26.
- (\$22) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "آزالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر. سنڌ زميندار پريس 1342م ص20.
- (823) ڏَسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص29-
- (\$24) السد الله شاه "السد" تكرّائي: "تذكره شعراء تكرّ" حيدرآباد, سندي ادبي يورد 1959ع ص48-
 - (25%) قسو: روزاته "الوحيد" كراچي، مؤرخه 5 جون 1946ع ص1·
- (82%) هيءَ معلومات "مير محمود ولد مولوي مير محمد حسن ٽالپر" کان سوالنامي دريعي حاصل ٿي.
- (27%) محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه" حيدرآباد, سنڌ ڪلاسڪس. صوبائي هجره ڪاميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو، 1982ع. ص 479.
- (22%) هيءَ معلومات "مولانا محمد صالح "عاجز" کان 19 جون 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (829) هيءَ معلومات "مير محمود ولد مولوي مير محمد حسن ٽالپر" کان سوالنامي دريعي حاصل ٿي۔
- (830) اسد الله شاه "اسد" تكرائي: "تذكره شعراء تكر" حيدرآباد, سندي ادبي بورد 1959ع ص112-

- (831) ايضاً, ص113.
- (832) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر انجمن شوري علماء سنة, سال؟, ص155.
- امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي, جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص11٠.
- أنا "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ, ص22.
- (833) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص447.
- (834) اسد الله "اسد" تكرّائي: "تذكره شعراء تكرّ" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1959ع ص114.
- (835) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولانا عبداللطيف صديقيءَ" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (836) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29 آڪٽوبر 1920ع ص4.
 - (837) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1930ع ص3.
 - (838) ايضاً, ص3.
- (839) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولانا عبداللطيف صديقيءَ" كان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (840) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب عبدالرحمٰن زؤر رٽايرڊ ٽيچر" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (841) "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص 21.
- (842) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب عبدالرحمٰن زؤر رٽايرڊ ٽيچر" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (843) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (844) ڏسو: "امن سڀا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص17٠

- (845) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 23 سيپٽمبر 1922ع ص4-
- (846) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص447٠

(847) تفصيل لاءِ ڏسو:

- i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 21 اپريل 1938ع ص6٠.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 13 جولاءِ 1938ع ص3٠
- .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 14 جولاءِ 1938ع ص6٠
 - .iv روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 7 آكٽوبر 1938ع 5.
- .٧٠ روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 27 اپريل 1940ع ص٠4.
- ٧١٠ "جمعية العلماء اسلام" جي گڏجاڻيءَ جي ڪاروائي، منعقده سلطان ڪوٽ
 مؤرخه 25 مئي 1941ع.
 - .vii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 1، نومبر 1941ع ص4·
 - .viii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 21 جنوري 1942ع ص2٠
- (848) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع شي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (849) هيءَ معلومات سندس ڀائٽيي "مولانا حافظ عبدالله گوپانگ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (850) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - .i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 10 ڊسمبر 1922ع ص4·
 - ii. ريزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 28 دسمبر 1922ع ص4·
- (851) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص 20٠
 - (852) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3.
- (853) هيءَ معلومات سندس ڀائٽيي "مولانا حافظ عبدالله گوپانگ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (854) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون). حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص238٠
 - (855) ايضاً, ص239٠
 - (856) تفصيل لاءِ ڏسو:

- i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 26 جنوري 1920ع ص12.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 7، اپريل 1920ع ص14.
- (857) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 28 نومبر 1922ع، ص4·
 - (858) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 4 جولاءِ 1920ع ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 11 جولاءِ 1920ع ص٠٥٠
 - (859) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 134.
- "متنقه فتويا" دهلي, جمعية مركزيه علماء هند, جمادي الآخر 1339هـ
 ص10.
- أان سڀا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتريٰ " ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ.
 1340هـ. ص9.
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتوي كراچي.
 جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص24.
 - (860) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
 - (861) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 جنوري 1931ع ص6-
- (862) خواجه غلام علي الانا: "لازَّ جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو, انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي, 1977ع ص316
- (863) مولانا دین محمد "ادیب": "مولانا فیض محمد صاحب "واعظ" مرحوم" (863) مضمون) تد ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4 حیدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957 ع ص176٠
 - (864) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أنظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 150.
- أمن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتريٰ " ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ.
 1340هـ، ص14.
- أنا "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتري" كراچي.
 جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص20.

- (865) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 9 جنوري 1922ع ص4.
- (866) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين" ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميد صويہ سنڌ، 1922ع ص ص 2-3-4 ۽ 8٠
 - (867) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4·
- (868) جي. اير. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون). حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص242٠
- (869) هيءَ معلومات "مولوي محمد سليمان ٻگهيي" کان 25 فيبروري 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (870) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (871) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون)، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص234
- (872) حافظ قاري فيوض الرحلن: "مشاهير علماء ديوبند" (جلد اول) لاهور، المكتبة العزيزيه 1976ع ص517٠
- (873) حافظ محمد اسماعيل: "مولانا محمد صادق^{رع}" (مضمون) ماهوار "الصادق" كراچي, قاضي پرنٽرس, مئي 1981ع ص 28٠
- (874) مولانا عبيدالله سنڌي: "ذاتي ڊائري" (بار اول)، لاهور، ادبستان 1946ع، ص
- (875) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون). حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص235٠
 - (876) ايضاً, ص236
- (877) مولانا سيد محمد ميان: "تحريك شيخ الهند" (بار دوم) لاهور، مكتبه محموديه 1978ع، ص4570
- (878) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون). حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص236.
- (879) حافظ قاري فيوض الرحمٰن: "مشاهير علماءِ ديوبند" (جلد اول) لاهور . المكتبة العزيزيه 1976ع ص521 .
 - (880) تفصيل لاءِ ڏسو:

- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟ ص 132.
- "متفقه فتري" دهلي، جمعية مركزيه علماء هند، جمادي الآخر 1339هـ
 ص10٠٠
- "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچِي جمعيت علماءِ سنڌ.
 1340هـ, ص10.
- نترك موالات نمبر1" بمبئي، مركزي خلافت كاميٽي، جون 1920ع .
 ص10٠٠
 - "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتري!" كراچي.
 جمعيت علماء سنڌ 1340هـ ص14.

(881) تفصيل لاء ڏسو:

- أ خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص1، 18 ۽ 19.
- نا جمعیت خلافت صوبہ سنڌ جي سالیاني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان
 آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الرحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923ع ص ص 39.36.35.33.32.31.26.24.20.17.13.11.8.3
 - (882) ڏسو: "مختصر حالات انعقاد" دهلي، جمعية علماءِ هند، سال؟ ص5.
 - (883) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (884) جي. اير. سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون)، حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص236٠٠
- (885) حافظ قاري فيوض الرحمٰن "مشاهير علماء ديوبند" (جلد اول) لاهور ، المكتبة العزيزية 1976 ع ص 521 .
 - (886) ايضاً. ص522.
- (887) حافظ محمد اسماعيل: "بمبئيءَ كان سنڌ جي آزادي واري تحريڪ ۾ مولانا محمد صادق رح جو ڪردار" (مضمون) ماهوار "الصادق" سنڌ پرنٽنگ پريس. جمادي الاول 1400هر، ص34.
- (888) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (889) هيءَ معلومات "مولانا محمد اسماعيل لغاريءَ" كان 26 آكٽوبر 1982ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (890) حافظ محمد اسماعيل: "مولانا محمد صادق رح" (مضمون) ماهوار "الصادق" قاضي پرنٽرس، مئي 1981ع ص35.
- (891) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر- نومبر 1981ع ص81۰
 - (892) ايضاً ، ص82.
 - (893) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر، انمجن شوري علماء سنة, سال؟. ص142.
 - ·ii. "متنق فتوي", دهلي, جمعيت مركزيه علماء هند، 1339هـ، ص27٠٠
- اiii ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويا", كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ ص18.
- (894) تفصيل لاءِ ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشہ تاريخ 4- نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين" ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ، 1922ع، ص7.
 - (895) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع ص82.
 - (896) ايضاً, ص349.
 - (897) ڏسو، روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 26، اپريل 1920ع، ص14-16٠
 - (898) ڏسو. روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20، آڪٽوبر 1920ع، ص4.
 - (899) ڏسو. روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27، آڪٽوبر 1920ع. ص3.
 - (900) ڏسو. روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 17. جولاءِ 1920ع، ص١٠
- (901) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نعبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص349٠
- (902) هيءَ معلومات "سندس فرزند حكيم عبدالرحمان" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (903) تفصيل لاءِ ڏسو:
- i. "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتوي" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ،

1340هـ ص11٠

- "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ"، كراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ ص20.
- (904) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922ع کان آگست 1923ع تائين"، ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص26 ۽ 40.
- (905) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (906) ڏسو. روڙانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 سيپٽمبر 1922ع، ص4-
 - (907) ڏسو، روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 سيپٽمبر 1922ع، ص4.
 - (908) ڏسو. روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 ڊسمبر 1944ع، ص2٠
 - (909) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 1، مارچ 1923ع، ص4.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچي, مؤرخه 12, مارچ 1929ع, ص6.
 - (910) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 26 جنوري 1939ع، ص5.
 - ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 29 مارچ 1942ع، ص4.
- (911) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (912) هيءَ معلومات "سندس فرزند حكير عبدالرحمان" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (913) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نرمبر 1981ع، ص127.
- (914) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص1280
- (915) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (916) هيءَ معلومات "مولانا محمد صالح عاجز" کان 19جون 1982 تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

- (917) ڏسر، ماهوار "الصادق" ڪراچي، قاضي، جون/جولاءِ 1982ع، ص133٠
- (918) هيءَ معلومات "قاضي محمد اڪبر مورائيءَ" کان 31 مئي 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (919) ڏسو. روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 26 سيپٽمبر 1920ع، ص٠٠.
 - (920) ڏسو، روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 30 سيپٽمبر 1920ع، ص4٠
 - (921) ڏسو، روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 17 آڪٽوبر 1920ع، ص٠2٠
- (922) ڏسو "ترڪ موالات" نمبر1، بمبئي، مرکزي خلافت ڪميٽي، جون 1920ع، ص11٠
- (923) ڏسو, خلافت ۽ سمرنافنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ 4-نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين، ڪراچي. جمعيت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ. 1922ع، ص10٠
- (924) هيءَ معلومات "قاضي محمد اكبر مورائيءَ" 31 مئي 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (925) هيءَ معلومات "سندس فرزند حاجي عبدالحليم ڪڇيءَ" کان 1- جون 1982ع انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (926) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 132.
- آامن سڀا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ، 1340هـ، ص12.
- "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري نتوي" كراچي،
 جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص21٠
 - iv. "متفقر فتويا" دهلي, جمعية مركزيه علماء هند, 1339هـ، ص10٠
 - (927) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 26، اپريل 1920ع، ص14-16٠
 - نا روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 31، مئي 1920ع، ص٠2.
 - (928) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - الوحيد كراچي، مؤرخه 29، آكٽوبر 1920ع، ص٠4.
 - · ii. روزانه "الوحيد" كراچى، مؤرخه 13، سيپٽمبر 1922ع، ص4·

. ۱۱۱ روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 1، آگست 1928ع، ص6٠

- (929) روزانه "الوحيد" كراچي مؤرخه 30 جنوري 1923ع ص4٠
- (930) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو تاريخ 4 نرمبر 1919ع کان تاريخ 13 جولاءِ 1921ع تاثين". ڪراچي، جمعيت خلافت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ، 1922ع، ص16 ۽ پڻ ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923 ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص 7،5،3
- (931) See The "Daily Gazette" Karachi, dated 9th March 1931, P.5.
- (932) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" كان 8 مئي 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (933) هيءَ معلومات "سندس فرزند حاجي عبدالحليم ڪڇيءَ" کان 1. جون 1982ع انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (934) هيءَ معلومات "مولانا محمد طيب لكمير" كان 30 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (935) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 21 نومبر 1938ع ص4
- (936) هيء معلومات "مولانا محمد طيب لكمير" كان 30 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (937) دكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گويان پاكستان" راولپندي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص208٠
- (938) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص289.
- (939) داكٽر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گريان پاڪستان" راولپنڊي، انتشارات مرکز تحقیقات فارسی ایران وپاکستان 1974ع ص209۰
- (940) حكير نياز حسن همايوئي: "سند جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو), حيدرآباد سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976 ص658،
- (941) مولوي فيض الكريم: "تحقيق الخلافت" كراچي، ڊيلي گزيٽ پريس، 1919 ع ص40،
- (942) ذَّسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء

سنڌ, سال؟, ص145.

- (943) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 جنوري 1920ع ص4.
 - (944) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أمتفقه فتريّ دهلي، جمعية مركزيه علماء هند، جمادي الآخر 1339هـ
 ص26٠
- "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتري" كراچي.
 جمعيت علماء سنڌ 1340هـ ص23.
- (945) دكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گريان پاكستان" راولپندي، انتشارات مركز تحقيقات فارسلي ايران وپاكستان 1974ع ص209.
- (946) حڪير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو), حيدرآباد سنڌ ساڻنس سوسائٽي، 1976 ص658.
- (947) باكتر سيد سبط حسن رضوي: "فارسي گريان پاكستان" راولپنڊي. انتشارات مركز تحقيقات فارسي ايران وپاكستان 1974ع ص209.
- (948) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص460.
- (949) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (950) قسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟, ص140.
 - (951) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي. مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2.
- (952) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص461.
- (953) حكير نور محمد خاصخيلي: "علامه مرحوم محمد عثمان "قراني" (مضمون) قد ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص
- (954) حكير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو), حيدرآباد سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976 ص629.
- (955) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر. سنة زميندار يريس 1342هـ ص21.

- (956) ذّسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنڌ. سال؟. ص155٠
 - (957) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 31 مئي 1920ع ص5.
 - (958) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 اپريل 1923ع ص4.
- (959) حكير نور محمد خاصخيلي: "علامه مرحوم محمد عثمان "قراني" (مضمون) كد ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4. حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص
- (960) هيءَ معلومات "جناب غلام محمد کٽي "جوهر" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - - (962) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 14 مارچ 1923 ص4.
 - . (963) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 25 نومبر 1922ع ص4·
- (964) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدني جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921 تائين، ڪراچي جمعيت خلافت اسلاميه صوبہ سنڌ، 1922ع، ص2٠
- 965) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 24 ڊسمبر 1938ع ص5. (966) See The "Daily gazette" Karachi, dated 25th June 1930, P.9.
- (967) هيءَ معلومات "جناب غلام محمد کٽي "جوهر" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (968) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص96۰
 - (969) تفصيل لاء ڏسر:
- اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة. سكر انجمن شوري علماء
 سنة, سال؟، ص154٠
- ان سڀا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتريٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ، 1340هـ، ص21.
- (970) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع، ص40.

- (971) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (972) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 10 فيبروري 1931ع ص6٠.
- (973) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص96.
- (974) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولانا محمد اشرف عثمانيءَ" کان 1، جون 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (975) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أمتفقه فتريا "دهلي, جمعية مركزيه علماء هند, جمادي الآخر 1339هـ
 ص15.
- "ولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتريٰ كراچي.
 جمعيت العلماءِ سنڌ 1340هـ ص24.
 - (976) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 7 سيپٽمبر 1922ع ص4.
- (977) ڏسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس 1923 ع ص15٠
 - (978) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6.
 - (979) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 14 فيبروري 1931ع ص2.
 - (980) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 15 فيبروري 1931ع ص6.
- (981) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولانا محمد اشرف عثمانيءَ" کان 1، جون 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (982) See The "Daily gazette" Karachi, dated 7.4.1930, P.5
- (983) هيءَ معلومات سندس فرزند "مولانا محمد اشرف عثمانيءَ" کان 1، جون 1982 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (984) هيءَ معلومات "مولانا محمد عظيم "شيدا" کان 20 مارچ 1980ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
 - (985) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 18 جنوري 1931ع ص8.
- (986) هيءَ معلومات "مولانا محمد عظيم "شيدا" كان 20 مارچ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (987) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 21 جنوري 1942ع ص2·

- (988) هيءَ معلومات "مولانا محمد عظيم "شيدا" کان 20 مارچ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (989) مولانا محمد ادريس جوڻيجو: "ضلعي ٿرپارڪر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ ڪرام" (مقالو-قلمي) سال؟ ص26٠
 - (990) ايضاً، ص 27.
- (991) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع. ص4370
- (992) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو، مارچ اپريل 1981ع ص30٠
- (993) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص438٠٠
 - (994) ايضاً. ص439.
 - (995) ايضاً. ص97.
- (996) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (997) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 5 آگسٽ 1920ع ص3.
 - (998) ڏسو: روزانـ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 12 آڪٽوبر 1922ع ص4·
- (999) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1000) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو) حيدرآباد, سنڌ سائنس سوسائٽي 1976ع ص569.
 - (1001) تفصيل لاءِ ڏسو:
 - .i. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 21 سيپٽمبر 1922ع ص4·
 - ·ii. روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 13 آكٽوبر 1922ع ص4·
 - (1002) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 24 اپريل 1932ع ص6٠
 - (1003) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 اپريل 1938ع ص2٠
- (1004) حكير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو). حيدرآباد سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976 ص569٠
 - (1005) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 آڪٽوبر 1940ع ص4٠

- (1006) حكيم نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو)، حيدرآباد سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976 ص569.
- (1007) مولانا محمد ادريس جوڻيجو: "ضلعي ٿرپارڪر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ ڪرام" (مقالو-قلمي)سال؟ ص36.
 - (1008) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3.
- (1009) مولانا محمد ادريس جوڻيجو: "ضلعي ٿرپارڪر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ ڪرام"(مقالو-قلمي)سال؟ ص37.
- (1010) جي. ايم. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع، ص99.
 - (1011) ايضاً, ص100.
 - (1012) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 4 نومبر 1920ع ص4.
 - (1013) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 29 مارچ 1920ع ص5.
 - (1014) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 14 جنوري 1931ع ص٠2٠
- (1015) ڏسو: ماهوار "پيغام" ڪراچي, شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات کاتو, مارچ _ اپريل 1981ع ص30.
 - (1016) ڏسو: روزانه "الرحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 جنوري 1931ع ص5.
 - (1017) ڏسو: "مولانا هدايت الله تنيي جي خود نوشته سوانح حيات" (قلمي) ص38.
 - (1018) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠
 - (1019) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 جنوري 1931ع ص6.
- (1020) جي.ايـر.سيد: "جنب گذريـر جن سين" (جلد ٻيو)، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص1000
- (1021) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1022) جي.اير.سيد: "جنب گذرير جن سين" (جلد ٻيو)، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1967ع ص101٠
- (1023) هيءَ معلومات سندس فرزند "حڪيم محمد منير" کان 15 جولاءِ 1980ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1024) هيءَ معلومات سندس ڀائٽيي "جناب محمد يوسف" کان 17 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(1025) ڏسو: "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتريا" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ، ص12.

(1026) تفصيل لاء ڏسو:

- i. روزاند "الوحيد" كراچي، مؤرخه 2 سيپٽمبر 1922ع ص4-
- ii. روزانه "الوحيد" كراچي, مؤرخه 8 سيپٽمبر 1922ع ص4·
- .iii روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 5 آكٽوبر 1922ع ص4-
- .نا روزانه "الوحيد" كراچي، مؤرخه 8 آكٽوبر 1922ع ص4.
- ٧٠ روزانه "الوحيد" كراچي. مؤرخه 20 آكٽوبر 1922ع ص4-
 - (1027) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 3 آڪٽوبر 1922ع ص4-
 - (1028) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 نومبر 1922ع ص4-
 - (1029) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 1. جون 1923ع ص4.
 - (1030) تفصيل لاءِ ڏسر:
 - i. روزانه "الوحيد" كراچى. مؤرخه 10 جون 1920ع صا·
- آسو: "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سال سيپٽمبر 1922 کان اگسٽ 1923ع تائين". ڪراچي الوحيد اليڪٽرڪ پريس، 1923ع. ص ص 28،24،21.8،2 ۽ 34.4
- (1031) هيءَ معلومات سندس ڀائٽيي "جناب محمد يوسف" کان 17 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1032) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر". سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص1410
 - (1033) ايضاً، ص142.
 - (1034) ڏسو: روزانه "الرحيد" ڪراچي. مؤرخه 27 آڪٽوبر 1922ع ص4-
 - (1035) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 13 جون 1920ع ص4-
 - (1036) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص4-
 - (1037) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 141.
- آامن سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتريٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340 هـ ص20٠٠

- (1038) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 6 فيبروري 1923ع ص4.
- (1039) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 10 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - (1040) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 10 جون 1924ع ص4.
 - (1041) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (1042) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص143.
- (1043) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (1044) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29 مارچ 1923ع ص4.
 - (1045) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3.
- (1046) هيءَ معلومات "مولانا محمد عمر کٽيءَ" کان 16 سيپٽمبر 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1047) مخدوم امير احمد: "مولانا محمد هاشر انصاري" (مقالو) ته ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص201.
- (1048) مولانا عبدالرحير لغاري: "مولانا محمد هاشر أنصاري رح جو مختصر احوال" (مقالو) له ماهي "الرحير إ" حيدر آباد, شاهر ولي الله اكيدمي، 1968ع ص43.
- (1049) مخدوم امير احمد: "مولانا محمد هاشر انصاري" (مقالو) تـ ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص203.
- (1050) مولانا عبدالرحيم لغاري: "مولانا محمد هاشم انصاري رح جو مختصر احوال" (مقالو) له ماهي "الرحيم 1" حيدرآباد, شاهرولي الله اكيدمي، 1968ع ص44.
- (1051) مخدوم امير احمد: "مولانا محمد هاشم انصاري" (مقالو) ته ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص209.
- (1052) مولانا عبدالرحيم لغاري: "مولانا محمد هاشر انصاري رح جو مختصر احوال" (مقالو) تر ماهي "الرحيم 1" حيدرآباد، شاه ولي الله اكيدمي، 1968ع ص44.
- (1053) هيءَ معلومات "حڪير غلام محي الدين جان سرهنديءَ" کان 11 جنوري 1983 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1054) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب محمد عابد جان" کان 19 جنوري 1983ع تي انٽرويو ڏريعي ورتي ويئي.
- (1055) آغا عبدالله جان سرهندي: "مونس المخلصين" كراچي، عباسي ليٿوآرت

پریس 1366هـ ص243٠

(1056) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب محمد عابد جان" کان 19 جنوري 1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(1057) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" - "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيج: لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص447

(1058) ڏسو: روزانه "آزاد" ڪراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2٠

(1059) هيءَ معنومات "حڪير غلام محي الدين جان سرهنديءَ" کان 11 جنوري 1983 ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.

(1060) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" - "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع. ص342

(1061) ايضاً, ص343.

(1062) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي, مؤرخه 1, آگسٽ 1920ع ص4.

(1063) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" - "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص343،

(1064) ايضاً. ص88.

(1065) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 13 مارچ 1923ع ص4.

(1066) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 4 جون 1931ع ص6٠

(1067) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" - "سوانح حيات نمبر". سكر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص89،

(1068) هيءَ معلومات "مولانا محمد هاشر گهانگهري" کان سوالنامي ذريعي ورتي ويئي.

(1069) هيءَ معلومات "مولانا محمد يعقوب حاجاڻي". کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.

(1070) حافظ محمد حسن سومرو سجاولي: "حضرت مولانا محمد يوسف بنوي رح" (مضمون) ماهوار "شريعت" يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آگسٽ ـ سيپٽمبر 1977ع ص16٠

(1071) ايضاً, ص17.

(1072) ايضاً, ص 18.

(1073) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 ڊسمبر 1920ع ص٠٥٠

(1074) ذَّسو: "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنڌ, سال؟، ص134.

(1075) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 11 نومبر 1922ع ص6.

(1076) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 12 مارچ 1929ع ص6.

(1077) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 17 فيبروري 1931ع ص5.

(1078) See The "Daily Gazette" Karachi, dated 25th June 1930, P.9.

(1079) حافظ محمد حسن سومرو سجاولي: "حضرت مولانا محمد يوسف بنوي رح" (مضمون) ماهوار "شريعت" يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آگسٽ _ سيپٽمبر 1977ع ص18.

(1080) مولانا دین محمد "ادیب": "علامه محمود مرحوم صدیقی پاٽائي" (مضمون) تم ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص125

(1081) ايضاً, ص126.

(1082) ايضاً. ص 127.

(1083). ڏسو: "امن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ" ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340هـ ص20.

(1084) تفصيل لاء ڏسو:

أ خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين. ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ 1922ع ص18.

جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع
 کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس
 1923ع ص5 ۽ 31.

(1085) مولانا دين محمد "اديب": "علامه محمود مرحوم صديقي پاٽائي" (مضمون) لا ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص127

(1086) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" - "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص350

(1087) تفصيل لاءِ ڏسو:

- أظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر، انجمن شوري علماء سنة, سال ؟ ص 151.
- امن سڀا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتريٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ
 1340
 - (1088) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 9 سيپٽمبر 1922ع ص4.
 - (1089) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه13 آڪٽوبر 1922ع ص4.
- (1090) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص351٠
 - (1091) ايضاً. ص369.
 - (1092) تفصيل لاءِ ڏسو:
- أمتنقه فترياً "دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الأخر 1339هـ
 ص27٠
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويا " كراچي،
 جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ، ص24.
- (1093) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص369٠
- (1094) جي. ايمر. سيد: "جنب گذاريم جن سين" (جلد پهريون). حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع. ص241٠
 - (1095) ايضاً، ص242٠
- (1096) ماهوار "پيغام" كراچي، شعبه مطبوعات سنڌ اطلاعات كاتو، مارچ اپريل 1981ع ص30٠
 - (1097) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 25 نومبر 1922ع ص٠٤٠
- (1098) ڏسو: "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" ڪراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ، 1340هـ ص20٠
- (1099) ڏسو: "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو " تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين. ڪراچي. جمعيت خلافت اسلاميہ صوبہ سنڌ، 1922ع، ص14.
 - (1100) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4.
- (1101) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ

- پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر نومبر 1981ع، ص447.
- (1102) هيءَ معلومات سندس فرزند "ميان عبدالوهاب" کان 12 مئي 1982ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- (1103) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع, ص353.
 - (1104) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 24 نومبر 1922ع ص4.
- (1105) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص355٠
 - (1106) أيضاً, ص356.
- (1107) مولوي غلام رسول لاڙڪاڻوي: "علام مير محمد مرحوم نورنگي" (مضمون) له ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع. ص 159.
 - (1108) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 29 اپريل 1920ع، ص10.
- (1109) "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ. 1340 هـ، ص16.
 - (1110) تفصيل لاءِ ڏسر:
- أمتفقه فترياً "دهلي، جمعية مركزيه علماء هند جمادي الآخر 1339هـ
 ص-27٠
- أولايتي كپڙي خريد كرڻ جي منع هجڻ واري فتويا "كراچي.
 جمعيت علماءِ سنڌ، 1340هـ ص16.
 - (1111) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 اپريل 1925ع ص4.
 - (1112) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 27 آڪٽوبر 1938ع، ص؟
- (1113) مولوي غلام رسول لاڙڪاڻوي: "علام مير محمد مرحوم نورنگي" (مضمون) له ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4، حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع، ص
- (1114) هيء معلومات سندس فرزند "ميان غلام الرسول" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (1115) إمن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ. 1340 هـ. ص21.

- (1116) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 مئي 1931ع ص3٠
- (1117) هيء معلومات سندس فرزند "ميان غلام الرسول" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (1118) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع, ص186
 - (1119) ايضاً، ص187،
 - (1120) تفصيل لاءِ ڏسو:
- اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة "سكر, انجمن شوري علماء سنڌ, سال ؟ ص 153.
- ان سيا ۾ شامل ٿيندڙن لاءِ متفقه فتويٰ " ڪراچي، جمعيت علماءِ سنڌ 1340
 - (1121) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 22 سيپٽمبر 1922ع ص4٠
 - (1122) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 20 مارچ 1925ع ص4٠.
 - (1123) ڏسو: روزانه "الوحيد" ڪراچي، مؤرخه 15 ڊسمبر 1931ع ص2٠
- (1124) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سکر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع, ص188.
- (I125) هِيءَ معلومات سندس فرزند "جناب انور حسين جتوئيءَ" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (1126) هيءَ معلومات "علام غلام مصطنيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
- -(1127) هِيءَ معلومات سندس فرزند "جناب انور حسين جتوئبيءَ" كان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
 - (1128) تفصيل لاءِ ڏسو:
- نادوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص447.
 - ·ii روزانه "آزاد" كراچي، مؤرخه 21 اپريل 1944ع ص2·
- (1129) هيءَ معلومات "علام غلام مصطفيٰ قاسميءَ" کان 8 جنوري1983ع شي انٽرويو ذريعي ورتي ويشي.
- (١١٥٥) هِيءَ معلومات سندس فرزند "جناب انور حسين جتوئيءَ" كان سوالنامي

ذريعي حاصل ٿي.

- (1131) قريشي حامد علي "خانائي": "مولانا قاضي نظر محمد ديهاتي" (مقالو) له ماهي "الرحيم" شماره 1 حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع ص57.
 - (1132) ايضاً, ص58.
- (1133) آغا عبدالله جان سرهندي: "مونس المخلصين" كراچي، عباسي ليٿوآرٽ پريس 1366هـ ص253٠
- (1134) قريشي حامد علي "خانائي": "مولانا قاضي نظر محمد ديهاتي" (مقالو) ته ماهي "الرحيم" شماره 1 حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع ص60.
- (1135) مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر، سنڌ زميندار پريس 1342هـ ص21.
- (1136) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوريٰ علماء سندّ. سال؟، ص155.
- (1137) قريشي حامد علي "خانائي": "مولانا قاضي نظر محمد ديهاتي" (مقالو) 3 ماهي "الرحيم" شماره 1 حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي 1968ع ص60.
- (1138) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب نور احمد نظاماڻيءَ "کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (1139) "خلافت ۽ سمرنا فند جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نتشو" تاريخ4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوب سنڌ، 1922ع ص8.
 - (1140) ڏسو: روزانہ "الوحيد" ڪراچي. مؤرخه 4 جولاءِ 1920ع ص4.
- (1141) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب نور احمد نظاماڻيءَ" کان سوالنامي ذريعي حاصل ٿي.
- (1142) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر"، سکر. يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، آڪٽربر - نومبر 1981ع، ص45.
 - (1143) ايضاً، ص46.
 - (1144) ايضاً, ص47.
 - (1145) ڏسو: "متنقه فتويا" دهلي، جمعية مرڪزيه علماءِ هند 1339ه ص27.
- (1146) "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ، 1340 هـ، ص19.

- (1147) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ ييڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر - نومبر 1981ع، ص480
 - (1148) ايضاً, ص46.
- (1149) عبدالرهاب چاچڙ: "استاد العلماءِ حضرت مولانا نور محمد سجاوليءَ سان ملاقات", (مضمون) ماهوار شريعت, سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيد مارچ اپريل 1978ع, ص36 كان ص39.
 - (1150) رسالو ايضاً. ماه مئي 1978ع ص19 ۽ 20٠
- (1151) عبدالوهاب چاچڙ: "استاد العلماءِ حضرت مولانا نور محمد سجاوليءَ سان ملاقات" (مضمون) ماهوار "شريعت" سكر. يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ مئي 1978ع ص20٠
 - (1152) ڏسو: "مولانا هدايت الله جي خود نوشته سوانح حيات" (قلمي) ص34.
- (1153) ڏسو: "جنرل رجسٽر" پرائمري اسڪول محبت ديرو جتوئي، جريان نمبر 107. ص24٠
- (1154) See "General Register" No 28 of High School Noushahro Feroze P.2
- (1155) See The "Annual Report of Sind Madresseh tul Islam" Karachi For The Year 1913-14, Sr-No 27 P-24.
 - (1156) ڏسو: "مولانا هدايت الله جي خود نوشته سوانح حيات" (قلمي) ص37.
- (1157) عبدالوهاب چاچڙ: ماهوار "شريعت" "سوانح حيات نمبر", سكر, يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آڪٽوبر _ نومبر 1981ع، ص275٠
- (1158) ڏسو: کيس "مدرسة التهذيب المدينة المنوره طرفان ڏنل سرٽيفڪيٽ" مؤرخه 5 شوال سن 1367هـ.
 - (1159) ڏسو: "مولانا هدايت الله جي خود نوشته سوانح حيات" (تلمي) ص49.
 - (1160) ايضاً ،ص 50.
 - (1161) ايضاً, ص51.
- (1162) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب يحيٰ الهدائيءَ" كان 25 مئي 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورتي ويئي.
 - (1163) دُّسو: "مولانا هدايت الله جي خود نوشته سوانح حيات" (قلمي) ايضاً. ص38.
 - (1164) ايضاً, ص48.

- (1165) ذَّسو: "مولانا هدايت الله جي خود نوشته سوانح حيات" (قلمي) ص 48
- (1166) هيءَ معلومات سندس فرزند "جناب يحيٰ الهدائيءَ" كان 25 مئي 1978ع تي انٽرويو ذريعي ورثي ويئي.
- (1167) الاهي بخش اعواڻ: "مولانا خليفو يار محمد مرحوم شڪارپوري" (مضمون) ته ماهي "مهراڻ" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص166.
- (1168) "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر أنجمن شوري علماء سند. سال؟، ص140.
- (1169) "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" ڪراچي. جمعيت علماءِ سنڌ, 1340هـ, ص17.
- (1170) الاهي بخش اعوان: "مولانا خليفو يار محمد مرحوم شكارپوري" (مضمون) له ماهي "مهران" سوانح نمبر 3-4 حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ 1957ع ص166.

ضميما



ضميمو پهريون عالمن جي نالن جو وچور

مولوي ابوبكر (ٺٽو)، مولوي ابوبكر گلال (دادو)، مولوي ابوبكر متعلوي (....)، مولوي حاجي احمد واهري (ٿرپارڪر)، مولوي احمد (ڪراچي)، مولوي احمد خان سرهندي (حيدرآباد). مولوي حافظ احمد پنهور (بدين). مولوي احمد الدين (جيكب آباد). مولوي الاهي بخش (سكر). مولوي الهم بخش عرف عبدالعزيز كنڊياروي (نواب شاهر), مولوى الهربخش (لاڙڪاڻو), مولوي الهربخش (دادو), مولوي الهداد (جيڪب آباد)، مولوي امام بخش (لاڙڪاڻو)، مولوي امام الدين (بدين)، مولوي اميد على (جيكب آباد)، مولوي امين الله (لاڙكاڻو)، مولوي بخش علي (لاڙكاڻو)، مولوي سيد تاج محمد شاه (لاڙڪاڻو), مولوي تاج محمد (جيڪب آباد), مولوي پير بخش (دادو), مولوي پير محمد (جيڪب آباد), مولوي جان محمد ولهاري (ٿرپارڪر), مولوي جان محمد عودي (جيكب آباد)، مولوي حامد الله (دادو). مولوي حبيب الله (دادو). مولوي حبيب الله "حبيب" (لازَّكاثو)، مولوي خدا بخش (جيكب آباد)، مولوي خير محمد (نواب شاه). مولوي خير محمد (لازَّكاتُو)، مولوي خليل الله (سكر). مولوي خير محمد لغاري (سکر)، مولوي خاوند ڏنو (لاڙڪاڻو)، مولوي خان محمد (دادو)، مولوي دين محمد مستوئي (لاڙڪاڻو), مولوي دين محمد ڀٽي (حيدرآباد), مولوي دين محمد (سکر), مولوي ڏنل شاه (...). مولوي رحيم بخش (جيڪب آباد), مولوي سرور بخش (جيڪب آباد). دولوي سعد الله (لاڙڪاڻو), مولوي شاه محمد (حيدرآباد). مولوي شاه محمد (الاراكائو), مولوي مخدوم شفيع محمد (خيرپور), مولوي شفيع محمد (الاراكائو), مولوي شفيع محمد (لاڙڪاڻو)، مولوي شمس الدين آگرو (دادو). مولوي شهاب الدين ...). مولوي شير محمد (ٿرپارڪر)، مولوي شير محمد (شڪارپور)، مولوي شير محمد (سکر)، مولوي سيد عابد شاه (جيکب آباد)، مولوي پير صاحبڏنو شاه (...)، مولوي صاحبةنو ميمن (خيرپور)، مولوي صاحبةنو (شكارپور)، مولوي ميان صدر الدين شاه (كراچي)، مولوي عبدالله بوبكائي (دادو)، مولوي عبدالله (شكارپور)، مولوي عبدالله قريشي (حيدرآباد)، مولوي عبدالله شاه (جيكب آباد)، مولوي عبدالله (دادو)، مولوي عبدالله (قرپارکر)، مولوي عبدالله (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالله (لاڙڪاڻو)، مولوي

عبدالله كبر (نواب شاهر), مولوي عبدالله (جيكب آباد), مولوي عبدالله ميمن (نتو). مولوي عبدالله (بدين)، مولوي عبدالحق هالائي (كراچي)، مولوي عبدالحق شاه لاڙڪاڻو), مولوي عبدالحق (لاڙڪاڻو), مولوي حاجي عبدالحڪيم (ٿرپارڪر), مولوي عبدالحكير هالائي (حيدرآباد), مولوي عبدالحكير (لاڙڪاڻو), مولوي حاجي عبدالحي (سانگهڙ)، مولوي عبدالحي (ٿرپارڪر). مولوي عبدالحي فيروزشاهي (دادو). مولوى عبدالحي (لاڙڪاڻو). مولوي عبدالحي هالائي (حيدرآباد). مولوي عبدالحي (شڪارپور), مولوي عبدالحي (نواب شاهر), مولوي حافظ عبدالحليم (ٺٽو), مولوي عبدالحليم (دادو), مولوي عبدالحليم (جيكب آباد), مولوي عبدالحميد (دادو), مولوي عبدالحميد يتى (سكر)، مولوي حافظ عبدالحميد تريچاشي (سكر)، مولوي عبدالخالق جروار (لاڙڪاڻو), مولوي عبدالرحمٰن (شڪارپور), مولوي عبدالرحمٰن (ٺٽو), مولوي عبدالرحمٰن منياروي (حيدرآباد). مولوي عبدالرحمٰن (لاڙڪاڻو). مولوي عبدالرحمٰن (دادو). مولوي عبدالرحير (كراچي)، مولوي عبدالرحير (بدين)، مولوي عبدالرحير (سکر)، مولوي عبدالرحير (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالرحير (جيڪب آباد)، مولوي عبدالرحير مكسى (دادو)، مولوي عبدالرزاق (جيكب آباد). مولوي عبدالشكور (جيكب آباد). مولوي عبدالسلام (حيدرآباد)، مولوي عبدالعزبز (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالعلير (حيدرآباد)، مولوي عبدالعليم عودي (جيكب آباد)، مولوي عبدالغفار (جيكب آباد). مولوي عبدالغفور (سكر)، مولوي عبدالغفور (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالغفور (جيكب آباد), مولوي سيد عبدالغنى (جيكب آباد), مولوي عبدالغنى (دادو)، مولوي عبدالغني (لاڙڪاڻو)، مولوي سيد عبدالفتاح شاه (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالقادر (دادو)، مولوى سيد عبدالقادر شاه (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالقادر (جيڪب آباد). مولوی عبدالقیوم (الرپارکر)، مولوی عبدالقیوم (سکر)، مولوی عبدالکریم حنفي (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالڪريم (ٿرپارڪر)، مولوي عبدالڪريم (جيڪب آباد). مولوي عبدالكريم (دادو)، مولوي عبدالكريم (شكارپور)، مولوى عبدالكريم (لاڙڪاڻي)، مولوي عبدالڪريم (لاڙڪاڻي)، مولوي عبدالڪريم (سکر)، مولوي عبداللطيف (حيدرآباد), مولوي عبدالمجيد (دادو), مولوي عبدالواحد (سكر), مولوي عبدالواحد (جيكب آباد). مولوي عبدالواحد (لاڙڪاڻو)، مولوي عبدالوحد (لاڙڪاڻو)، مولوى عبدالوهاب كولاچي (شكارپور). مولوي عبدالوهاب (دادو). مولوي عبدالله (جيكب آباد). مولوى عزيز الله (نواب شاهر). مولوى قاضى عزيز الله (لارَّكاتُو). مولوي عزيز الله (دادو), مولوي قاضي عزيز الله (لارَّكائو), مولوي عطا الاهي (جيكب

آباد), مولوي سيد عطا؛ الله شاه راشدي (دادو), مولوي عطا محمد (لاڙڪاڻو), مولوي سيد على انور شاه (نواب شاه), مولوي على گوهر (نواب شاهر), مولوي على گوهر (دادو), مولوي علي محمد (لاڙڪاڻو), مولوي علي نواز شاھ (شڪارپور), مولوي عنايت شاه (لاڙڪاڻو), مولوي عنايت الله (دادو), مولوي غازي خان ٽالپر (سانگهڙ), مولوي غلام حسين (لاڙڪاڻو), مولوي غلام حسين (لاڙڪاڻو), مولوي غلام حسين (بدين), مولوی غلام حسین (....)، مولوی غلام حسین پنهور (دادو)، مولوی غلام حیدر (لازّكاتو). مولوى غلام رسول لغارى (ترپاركر)، مولوى غلام رسول (لازّكاتو). مولوي غلام رسول (لاڙڪاڻو). مولوي غلام رسول تنيو (لاڙڪاڻو). مولوي غلام رسول (دادو). مولوي غلام رسول مري (نواب شاهه). مولوي غلام رسول (شكارپور). مولوي غلام رسول (جيكب آباد)، مولوي غلام رسول (سكر)، مولوي غلام رسول شاهر (سكر). مولوي غلام سرور (جيكب آباد). مولوي ميان غلام شاه (دادو). مولوي غلام قادر (لاڙڪاڻو), مولوي غلام محمد (ڪراچي), مولوي غلام محمد (حيدرآباد), مولوي غلام محمد (لازَّكاتُو). مولوي غلام محمد برزُّو (دادو). مولوي غلام محمد لغارى (سكر), مولوى غلام محمد (لازكائو), مولوي غلام مصطفى (لازكائو), مولوي غلام مصطفىٰ (ترياركر)، مولوى غلام نبى آگرو (دادو)، مولوى غلام يحىٰ (لاڙكاڻو)، مولوی حکیم فتح محمد (شکارپور)، مولوي فتح محمد (لاڙکاڻو)، مولوي فتح محمد (ترپارکر), مولوی فدا محمد (دادو), مولوی فاروق احمد (سکر), مولوی فرید الدین (لاز كاثر). مولوي فضل الحق (لاز كاثر). مولوي فيض الله (....)، مولوي حافظ فيض محمد (لازَّكانُو). مولوي فيض محمد (سكر)، مولوي قادر بخش (لازَّكانُو)، مولوي قادر بخش (ترپاركر)، مولوي قطب الدين (دادو)، مولوي قمر الدين "واعظ" (جيكب آباد)، مولوی کریم بخش (نواب شاهه)، مولوی کریم بخش (جیکب آباد)، مولوي كريم بخش (لاڙڪاڻو). مولوي ڪريم بخش (دادو). مولوي ڪريم بخش ڪڇي (كراچي). مولوى كريمداد (لاڙكاڻو)، مولوي گل محمد (شكارپور). مولوي گل محمد (نواب شاهه), مولوي گل محمد ساند (ترپاركر), مولوي لعل محمد متعلوى (حيدرآباد)، مولوي لعل محمد (سكر)، مولوي لعل محمد (ٿرپارڪر)، مولوي پير محبوب شاه (حيدرآباد)، مولوي محمد محسن شاه (شڪارپور)، مولوي محمد چنجڻي (لاڙڪاڻو), مولوي محمد مٽياروي (حيدرآباد), مولوي محمد (سانگهڙ), مولوي ميان محمد (دادو), مولوي محمد (لاڙڪاڻو), مولوي محمد (خيرپور), مولوي محمد سيوستاني (دادو), مولوي محمد (سكر), مولوي محمد ابراهير جتوئي (دادو), مولوي محمد ابراهیم (حیدرآباد)، مولوی محمد ابواهیم (ترپارکر)، مولوی محمد اسماعیل (لاڙڪاڻو). مولوي محمد اسماعيل (شڪارپور)، مولوي محمد اسماعيل (لاڙڪاڻو). مولوی محمد اسماعیل (جیکب آباد), مولوی محمد اسماعیل (سکر), مولوی محمد اسماعيل (شكاريور), مولوي محمد اشرف (بدين), مولوي محمد اعظر (لارّكاثو), مولوي مخدوم محمد افضل (سكر). مولوي محمد اكرم (ترپاركر). مولوى محمد اکمل (دادو)، مولوی محمد امام (حیدرآباد)، مولوی محمد امام شاه (لاز کاٹو)، مولوی محمد ايوب (سكر). مولوي محمد بچل (لازاكائو). مولوي محمد بخش (سكر). مولوي محمد بخش (جيكب آباد), مولوي حاجي محمد تقي (نواب شاهر), مولوي محمد پناه (جيكب آباد), مولوي محمد حزب الله (شكارپور), مولوي محمد حسن سيوهائي (دادو), مولوی سید محمد حسن (بدین), مولوي محمد حسن (نتو), مولوي حافظ محمد حسن (جيكب آباد). مولوي محمد حسن (شكارپور)، مولوي محمد حسن (دادو)، مولوي محمد حسن (لاڙڪاڻو), مولوي محمد حسن (سانگهڙ), مولوي محمد حسن (ڪراچي), مولوي محمد حسين جمالي (نواب شاه). مولوي محمد حمزو (دادو). مولوي محمد حيات (شکارپور)، مولوی محمد رحیم بخش (جیکب آباد)، مولوی محمد رمضان (حيدرآباد). مولوي محمد سليمان (لازَّكاتُو)، مولوي محمد سليمان (كراچي)، مولوي محمد شجاع (لاڙڪاڻو). مولوي محمد شريف (حيدرآباد). مولوي محمد شعيب (سکر). مولوي محمد شفيع كارائي (لاڙكاڻو), مولوي محمد صادق (خيرپور). مولوي محمد صالح عباسي (دادو). مولوي محمد صالح (لازّكائو). مولوي محمد صالح (سكر). مولوي محمد صالح (لاڙڪاڻو), مولوي محمد صديق (لاڙڪاڻو), مولوي محمد صديق (سکر), مولوی محمد صدیق (حیدرآباد), مولوی محمد طاهر (سانگهنز), مولوی محمد سيد محمد عابد شاه (شكارپور)، مولوي محمد عارف (دادو)، مولوي محمد عالر (شکارپور)، مولوی محمد عالم (شکارپور)، مولوی محمد عامل (نواب شاهر)، مولوی محمد عباس (لازَّكاڻو)، مولوي محمد عثمان (دادو)، مولوي محمد عثمان (حيدرآباد)، مولوی حکیم محمد عثمان (دادو)، مولوی محمد عظیم (جیکب آباد). مولوی محمد على (شكارپور)، مولوي محمد عمر جتوئي (ٺٽو)، مولوي محمد عمر چنو (دادو). مولوی محمد عمر سرهندی منیاروی (حیدرآباد)، مولوی محمد عیسی (لارْکائو). مولوي محمد فاضل سومراثي (سكر)، مولوي محمد فضل الحق (لاڙڪاڻو). مولوي محمد قاسر سومرو (جيكب آباد), مولوي محمد قاسر (سكر), مولوي محمد قاسر نْلاهي (لاڙڪاڻو), مولوي حاجي محمد قاسر (ٺٽو). مولوي محمد قاسر عزيز مگري (الرپاركر)، مولوي حافظ محمد كامل (لازكائو)، مولوي محمد مبارك (شكاريور)، مولوي محمد مريد (دادو), مولوي محمد مصري (دادو), مولوي محمد موسى (سكر), مولوي محمد موسيٰ (ٿرپارڪر), مولوي محمد موسیٰ (دادو), مولوي محمد موسیٰ (شكارپور)، مولوي محمد نجار (دادو)، مولوي محمد وارث (دادو)، مولوي محمد وارث (لاڙڪاڻو), مولوي محمد هارون (حيدرآباد), مولوي محمد هاشم (شڪارپور), مولوي محمد هاشر (سکر), مولوی محمد هاشر (سکر), مولوی محمد هاشر (خیرپور), مولوی محمد یعقوب (سکر)، مولوی محمد یوسف درس (....)، مولوی محمد یوسف کوسو (....)، مولوی محمد یونس (ترپارکر)، مولوی میان محمود (ئتو)، مولوی محمود هالائي (حيدرآباد). مولوي محمود (شڪارپور). مولوي محمود شاه (جيڪب آباد). مولوی محمود لغاری (سکر)، مولوی محمود (دادو)، مولوی مصلح الدین (الرپارکر)، مولوي مولا بخش ملوي (لاڙڪاڻو), مولدي ميران شاھ (ڪراچي), مولوي مير محمد جتوئي (دادو). مولوی نصير الدين صديتي (دادو). مولوی نظام الدين امروتي (شکارپور), مولوي نظام الدين (جيکب آباد), مولوي نور الحق (حيدرآباد), مولوي نور محمد چاچڙ (سکر), مولوي نور محمد (شڪارپور), مولوي نور محمد ٽنگواڻي (جيڪب آباد)، مولوي نور محمد كونجي گر (ٿرپاركر)، مولوي نور محمد (ٺٽو)، مولوي حافظ نور محمد (سكر), مولوي ميان نور محمد (نواب شاهر), مولوي ولي محمد (لاڙڪاڻو), مولوي ولي محمد جتوئي (....). ۽ مولوي يار محمد مهيري (ٺٽو).

ضميمو ٻيو سنڌ اندر خلافت تحريڪ جي شاخن جو وچور

اباوڙو (سکر)، اڏڙو (ٿرپارڪر). اسحاق ديرو (شڪارپور). اسلام ڪوٽ (ٿرپارڪر)، (اڪڙي (ٿرپارڪر)، الهڏنو سانگي (جيڪب آباد)، امروٽ شريف (شڪارپور). اوباهيو چاچڙ (....). باجي (....). باگڙجي (سکر). بٺي (لاڙڪاڻو). بدين (بدين). بندجاني (لاڙڪاڻو). بورلي محمود شاه (ٿرپارڪر)، بوهڙ (لاڙڪاڻو). بهادرپور ڇڄڙا (لاڙڪاڻو), بهراڻ پوٽو (حيدرآباد), ٻاٺو (نواب شاهر), ٻڍاپو (دادو), ٻڍو ٽالپر (ٺٽو)، ٻنو (ٺٽو)، ٻوٻي (سانگهڙ)، ٻيلو (ٺٽو)، ڀان (دادو)، ڀريا (نواب شاهر)، ڀليڏنو آباد (جيكب آباد). ينيان (....)، يورا (نواب شاه), يولا (لاڙكاڻو)، يينڊو (حيدرآبد). تلوايو (ٿرپارڪر), ٿريچاڻي (سکر). ٿرڙي حاجران (لاڙڪاڻو)، ٽنڊوالهيار (حيدرآباد)، تنډو آدم (حيدرآباد), ٽنڊوڄام (حيدرآباد). ٽنڊوقيصر (حيدرآباد), ٽنڊو محمد خان (حيدرآباد). ٺٽو (ٺٽي). ٺل (جيڪب آباد). ٺلاھ (لاڙڪاڻو). ٺوڙها (نواب شاھ). پاٽ (دادو)، پار (...)، پنان (لاڙڪاڻو), پنوعاقل (سکر)، پنهور (لاڙڪاڻو)، پنهواري (....). پير سرهندي (ٿرپارڪر). پير ڳوٺ (لاڙڪاڻو). پير محمد ارشد شاه (لاڙڪاڻو). پيلوڙو (ٿرپارڪر)، جادو ڪلهوڙو (....)، جگه (لاڙڪاڻو)، جلباڻي (لاڙڪاڻو)، حماد الله (سكر). جندوديرو (شكارپور). جنوب ريگستان (ٿرپاركر). جنهاڻ سومرو (حيدرآباد), جوهي (دادو), جهرك (ٺٽو), جهمپير (ٺٽو), جئو سومرو (ٺٽو), جيڪب آباد (جيكب آباد), ڄامر نور الله (نواب شاهر), چك (سكر), چنجئي (لاڙكاڻو), چيله (ترپاركر)، چيهر (نواب شاه)، چتن شاه (نواب شاه)، ڇيڄڙا (لاڙڪاڻو)، حيدرآباد (حيدر آباد), خان محمد (لاڙڪاڻو), خاوند بخش چاچڙ (جيڪب آباد), خيرپور (خيرپور)، خيرپور ناٿن شاھ (دادو), خيرديرو (لاڙڪاڻو), داد لغاري (سکر), دادو (دادو), دائعر مشوري (لاڙڪاڻو). درو ٽيائي (لاڙڪاڻو). دڙو (ٺٽو). دولت پور (نواب شاهر). ديدڙ (لاڙڪاڻو)، دين محمد خان (جيڪب آباد). ڏچو (ڪراچي)، دڌ (نواب شاهر)، ڏندو (بدين). ڏوڪري (لاڙڪاڻو), ڏونجه (ٿرپارڪر), ڏهر (…), ڏيپارجا (نواب شاهر), ڏيپلو (ٿرپارڪر). ڊڀرو (نواب شاهر). ڊکڻ (شڪارپور). ڊينگاڻ (ٿرپارڪر)، ڍورو نارو (ٿرپارڪر), رتاھ (....). رتوديرو (لاڙڪاڻو), رحمڻ کوسو (لاڙڪاڻو), رڪ (سکر).

ركن (شكارپور). رونك (لاڙكاڻو). روهڙي (سكر). سجاول (ٺٽو). سڄڻ پنهور (جيكب آباد), سعد الله (....), سعيد آباد (حيدرآباد), سكني (....), سكر (سكر), سن (دادو). سكرنڊ (نواب شاهر). سولنگي ماڇي (دادو). سومر چولياڻي (لاڙڪاڻو). سومرا (سکر). سونپارا (ٺٽو). سونڊا (ٺٽو). سيهڙ (لاڙڪاڻو). شاه جو ڳوٺ (لاڙڪاڻو). شاهپورچاكر (سانگهڙ)، شكارپور (شكارپور)، شهدادكوت (لاڙكاڻو)، شيخائي (سكر)، شيخ پركيو (حيدرآباد), شيخ دڙو (لاڙكاڻو)، صادق (....)، طيب (لاڙكاڻو). عادلپور (سكر), عالماڻي (لاڙڪاڻو), عبدالله خان (جيڪب آباد), عبدو (شڪارپور), علي خان (لاڙڪاڻو)، عمر ڀٽو (جيڪب آباد), عمر سومرا (.....)، عمر ڪوٽ (ٿرپارڪر). غلام علي ڪٽو (.....)، غلام مصطفيٰ ڏهر (لاڙڪاڻو)، غلام نبي ڀرڳڙي (لاڙڪاڻو)، فاضل ڪلهوڙو (لاڙڪاڻو)، فراش (سکر)، فقير محمد چنو (جيڪب آباد)، قَلهِ ڏيون (سانگهڙ). قادرپور (جيڪب آباد)، قاسم پور (....)، قاضيان (لاڙڪاڻو)، قبول كيريو (حيدرآباد). قمبر علي خان (لاڙكاڻو)، كاكِيپوٽا (شكارپور)، كبي (حيدرآباد), سيد كديو (....), كڍڻ (بدين), كراچي (كُراچي), كرم خان نظاماڻي (حيدرآباد)، كريم بخش لاشاري (جيكب آباد)، ككڙ (دادو)، كنياريو درس (ٿرپارڪر). ڪنڊيارو (نواب شاهر). ڪنڍو (شڪارپور)، ڪنڍي واهڻ (شڪارپور). ڪنهڙي (....)، ڪوٽ عالمون (ٺٽو)، ڪوٽڙي (دادو)، ڪور سليمان (لاڙڪاڻو)، ڪورنج (جيكب آباد)، كشمور (جيكب آباد)، كيسر پاركر (ٿرپاركر)، كيكاري (ٿرپارڪر). کاريو غلام شاھ (ٿرپارڪر). کاڻي مڱريو (ٿرپارڪر). کاهي (جيڪب آباد), كپرو (سانگهڙ), ڳوٺ كوكن جو (...), كهڙا (خيرپور), كيبر (حيدرآباد), كيرهل (ٿرپارڪر)، گاجي کهاوڙ (لاڙڪاڻو). گدارا (دادو)، گل محمد تنيو (لاڙڪاڻو). گل محمد چانڊيو (لاڙڪاڻو). گنج ولهار (....), گولاڙو (دادو), گوڻاڻو (ٿرپارڪر). ڳجهڙ (لاڙڪاڻي). ڳڙهي ٻڍل (جيڪب آباد). ڳڙهي ياسين (شڪارپور)، گهانگهرا (لاڙڪاڻي). گهٽهڙ (لاڙڪاڻو), گهوٽڪي (سکر), گهوگهارو (لاڙڪاڻو), لاڙڪاڻو (لاڙڪاڻو), لاکا (دادو), لالوپور (....), لائق پير (سانگهڙ), لعل بخش لاشاري (جيڪب آباد), ماتلي (بدين). ماڏو (دادو). ماڻڪ چاچڙ (سکر). مائي مٽاهل (لاڙڪاڻو). مانجهند (دادو). مباركپور (جيكب آباد), منياري (حيدرآباد), محبوب تنيو (لاڙڪاڻو), محمد پور ڀٽو (جيڪب آباد), محمد خان ڀٽر (لاڙڪاڻو), محمود گهوٽو (سکر), محمود باغ), سکر مخدوم بلال (دادو). مرادپور (جيڪب آباد). ملان ابڙا (لاڙڪاڻو). ملڪ (دادو). ملهڻ (....)، مشرق ریگستان (ترپارکر)، مگیلدو گگو (ٺٽو)، منڙيو (....)، منگراڻي

(سانگهای)، مو تاثی (سکر)، مورو (نواب شاه)، مو راثی (....)، موسو سومرو (....)، میان بچل شاه (لارگائی میان جو گوث (شکارپور)، میاثی منگر (سکر)، میرپور (جیکب آباد)، میرپور بئورو (ئنی)، میرپور خاص (ارپارکر)، میرپورمائیلو (سکر)، میرو خان (لارگائو)، میرپور اباد)، نصرپور (لارگائو)، میه و چیر (جیکب آباد)، نصرپور (حیدرآباد)، نصیر آباد (لارگائو)، ننگرپارکر (ارپارکر)، نواب شاه (نواب شاه)، نورجو کچو (سکر)، نوشهروفیروز (نواب شاه)، نوحیون (ارپارکر)، نئون واهن (....)، نورجو کچو (سکر)، وایا (لارپاکائو)، واید (الارپاکائو)، واید کهوراز (لارپاکائو)، و نیدالهرکیو (سکر)، وروائی (سانگهای)، وسی شهمیر (حیدرآباد)، وسین ملوک شاه (حیدرآباد)، وای (لارپاکائو)، ویرم (جیکب آباد)، هالا پراثا (حیدرآباد)، هالا نوان (حیدرآباد)، هالاثی (نواب شاه)، هشیم سرهو (لارپاکائو)، ع هنگورنا (ارپارکر)،

مددي كتاب



سنڌي ڪتاب

- اسد الله شاه "اسد" تكرّائي: "تذكره شعراء تكرّ" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1959ع.
- 2. مولوي اله بخش: "مسدس ابوجهو" حيدرآباد, سنڌ مسلم ادبي سوسائٽي.
 1949ع.
- 3. ڀيرومل آڏواڻي: "سنڌ جي هندن جي تاريخ" (ڀاڱو ٻيو) ڪراچي، هلال پرنٽنگ پريس 1947ع.
- 4. تاراچند شوقیرام: "ڏيارام گدومل جو جيون چرتر" حيدرآباد, ڪوڙومل ساهتيه
 منڊل, 1932ع.
- 5. پریداس برهمچاری: "کانگریس کهاڻي" حیدرآباد، جیون ساهتیه مندل، حیدرآباد 1946،
- 6. جي.اير.سيد: "جنب گذارير جن سين" (جلد پهريون) حيدرآباد, سنڌي ادبي بررڊ، 1967ء.
- .7 جي.ايـر.سيد: "جنب گذاريـر جن سين" (جلد ٻيـو) حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ. 1967ع.
- 8. جي. اير. سيد: "سنڌ جي بمبئيءَ کان آزادي"، حيدرآباد، حيدري پرنٽنگ بريس، 1968ع.
- 9. جي.ايـر.سيد: "نثين سنڌ لاءِ جدرجهد" حيدرآباد, اسلاميه پرنٽنگ پريس.
 1952ع.
- 10. سيد حسام الدين راشدي: "ماك ڀنا رابيل" كراچي، پاكستان پبليكشنز، 1965ع.
 - .11 حيدر بخش الهداد خان: "هاري انقلاب" حيدر آباد، هاري دار الاشاعت، 1953ع.
- دواركا پرساد روچي رام شرما: "پراچين سنڌو سڀيتا جو نظارو" حيدرآباد. تاج
 محل اليكٽرك پرنٽنگ وركس سال؟
- 13. مولانا دين محمد وقائي: "تذكره مشاهير سنڌ" حيدرآباد. سنڌي ادبي بورڊ.1974ع.
- .14 مولانا دين محمد وفائي: "ياه جانان" سكر. حكيم عبدالحق كتب فروش 1920

- .15 رحيمداد مولائي شيدائي: "تاريخ تمدن سنڌ" حيدرآباد، سنڌ يونيورسٽي، 1959ء-
 - .16 رحيمداد مولائي شيدائي: "جنت السند" كراچي، سنڌي ادبي بررڊ, 1958ع.
 - 17. سراج الحق: "سنذجي اقتصادي تاريخ" حيدر آباد, سنڌي ادبي بورڊ، 1958ع.
 - مولوي ميان عبدالقيوم بختيارپوري: "ازالة الارتياب عن تجارة الثياب" سكر,
 سنة زميندار پريس, 1342هـ.
 - .19 مولانا مفتي عبدالقادر لغاري: "شاه ولي الله ۽ ان جي سياسي تحريك" حيدرآباد, سنڌ پرنٽنگ پريس, سال؟.
- 20. غلام رسول مهر: "تاريخ سنڌ" (كلهوڙا دور) جلد ڇهون، حصو ٻيو، حيدر آباد، سنڌي ادبي بورڊ، 1964ع.
- 21. سيد غلام رسول شاه: "كليات ميران" حيدرآباد، سنڌ يونيورسٽي پريس • 1960ع.
- 22. ڊاڪٽر خواج غلام علي الانا: "سنڌي ليکڪن جي ڊائريڪٽري" ڄامشورو. انسٽيٽيوٽ آف سنڌ الاجي. 1974ع.
- 23. خواجه غلام علي الانا: "لاز" جي ادبي ۽ ثقافتي تاريخ" ڄامشورو. انسٽيٽيوت آف سنڌ الاجي. 1977ع.
 - .24 غلام محمد گرامي: "وياسي وينجهار" حيدرآباد، سنڌي ادبي بورڊ. 1977ع.
 - 25. حكير فتح محمد سيوهاڻي: "فتح محمدي "سكر, وكٽوريا پريس، 1911ع.
- 26. حكير فتح محمد سيوهاڻي: "ميرن جي صاحبي" كراچي، الوحيد پريس، سال؟
- .27 مولانا مولوي فيض الكرير: "تحقيق الخلافت" كراچي، ديلي گزيٽ پريس، 1919ع.
- .28 گدواڻي منر تولارام: "سنڌي ٻوليءَ جي لپيءَ جر اتهاس" جئه پور, نامديوپبليڪيشن, 1968ع.
- 29. محبوب: "هزرايل هائينس سر سلطان محمد شاه پرنس آغا خان" كراچي. اسماعيليه ايسوسيئيشن، 1959ع.
- 30. محمد جمن ٽالپر: "سنڌ جا اسلامي درسگاه" حيدرآباد, سنڌ ڪلاسڪس، صوبائي هجره ڪميٽي ۽ سنڌ ثقافت کاتو, 1982ع.
- 31. محمد صدیق میمن: "سنڌ جي ادبي تاريخ" (برٽش حڪومت کان اڳ) حيدر آباد. : مسلم ادبي (اليڪٽرڪ) پرنٽنگ پريس، 1944ع.

535

- .32 محمد عبدالغني: "خلافت جي مسئلي تي خيالات" ڪراچي، سي، سٽلويل ڊيلي گزيٽ پريس، سال؟
 - .33 موتيرام: "رتن جوت" (حصو پهريون) كراچي، هيرالد پريس، 1958ع.
- .34 موتيرام، ايس، راموڻي: "سنڌ ۾ پبلڪ جيوت جو اوائلي دور" بمبئي، هفتيوار هندواسي، 1969ع،
- 35. رحيمداد مولائي شيدائي: "بلوچستان جي مختصر تاريخ" سکر، ريلوي اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1941ع.
- 36. ميرزا قليچ بيگ: "خانبهادر حسن علي افنديءَ جي سوانح عمري" حيدرآباد، اسٽنڊرڊ پرنٽنگ ورڪس، 1925ع.
- .37 ميرزا تليچ بيگ: "و ڏو شاه جو رسالو" شڪارپور، مسٽرپو كرداس، 1913ع.
 - .38 ميرزا قليچ ييگ: "يادگيريون" حيدرآباد, سنڌ يونيورسٽي، 1958ع.
- .39 نصير محمد نظاماڻي: "تحريك خاكسار جا مختصر اصول" حيدرآباد, مسلم پرئٽنگ پريس, 1935ع،
- .40 حڪير نياز حسن همايوني: "سنڌ جي طبي تاريخ" (جلد ٻيو), حيدرآباد, سنڌ سائنس سوسائٽي، 1976ع.
- 41. وشن آءِ جڳتياڻي: "قرمي پروانه" حيدرآباد، ڪوڙومل سنڌي ساهت منڊل. '1944ع.

قلمي نسخا

- 43. عبدالرحمٰن محمد بچل قريشي: "سروري خاندان جون علمي، ادبي ۽ ديني خدمتون" دِي. فل ٿيسز، 1976ع
- 44. قادر بخش گل محمد ڀٽي: "سنڌ ۾ سرهندي سڳورن جون سماجي. ثقافتي ۽ ادبي سرگرميون" ايعر. فل ٿيسن, 1961ع.
- .45 مولانا محمد ادريس جوڻيجو: "ضلعي ٿرپارڪر جا ديني مدرسا ۽ علماءِ ڪرام"، سال؟.
- .46 عبدالرحمٰن محمد بچل قريشي: "سروري خاندان جون علمي، ادبي ۽ ديني خدمتون" ڊي.فل ٿيسز، 1976ع.
- .47 سيد ممتاز حسين شاهر: "سنڌ مدرسة الاسلام جو سنڌ جي علمي، ادبي ۽ سياسي تاريخ ۾ حصو" ڊي بل سيسز، 1979ع،

48. مولانا هدايت الله تنيو: "خود نوشته سوانح حيات", سال؟

متفرقه

- 49. "اظهار الكرامة في مقاصد الخلافة والامامة" سكر انجمن شوري علماء سنة. سال؟،
- 50. "امن سيا ۾ شامل ٿيندڙڻ لاءِ متفقه فتويا" ڪراچي جمعيت علماءِ سنڌ. 1340هـ.
 - 51. "تذكره مولانا تاج محمود امروتي" حيدر آباد, علمي مجلس سنڌ, 1975ع.
 - .52 "ترك موالات نمبر1" بمبئي، مركزي خلافت كاميني، 1920ع.
- 53. "جمعيت خلافت صوبہ سنڌ جي سالياني رپورٽ بابت سيپٽمبر 1922ع کان آگسٽ 1923ع تائين" ڪراچي، الوحيد اليڪٽرڪ پرنٽنگ پريس، 1923ع.
- 54. "خلافت ۽ سمرنا فنڊ جي آمدنيءَ جو تفصيل ۽ خرچ جو نقشو" تاريخ 4 نومبر 1919ع کان تاريخ 31 جولاءِ 1921ع تائين. ڪراچي، جمعيت خلافت اسلاميه صوبه سنڌ، 1922ع.
- 55. "ولايتي ڪپڙي خريد ڪرڻ جي منع هجڻ واري فتويٰ" ڪراچي، جمعيت العلماءِ سنڌ 1340هـ.

سنڌي رسالا ۽ اخبارون

- .56 تماهي "الرحير 3-4 "مشاهير سنڌ, حيدر آباد, شاه ولي الله اكيدمي، 1967ع.
 - 57. تماهي "الرحيم" حيدرآباد، شاهرولي الله اكيدمي، سراء.
 - 58٠ تماهي "الرحير2" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي، 1965ع.
 - .59 تماهي "الرحيم!" حيدرآباد، شاهرولي الله اكيدمي، 1966ع.
 - .60 تماهي "الرحيم 1" حيدرآباد, شاهرولي الله اكيدمي، 1968ع.
 - 61. تماهي "الرحير2" حيدرآباد, شاهرولي الله اكيدمي، 1968ع.
 - .62 ماهوار "الرحير" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي، مئي _ جون 1975ع.
 - .63 ماهوار "الرحير" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي, مئي جون 1976ع.
 - .64 ماهوار "الرحيم" حيدرآباد, شاهرولي الله اكيدمي، جولاء _ آگسٽ 1978.
 - .65 ماهوار "الرحيم" حيدرآباد, شاه ولي الله اكيدمي، نومبر _ دسمبر 1978ع.
 - .66 ماهوار "الصادق نمبر" كراچي، قاضي پرنٽرس، جون _ جولاءِ 1982ع
 - .67 ماهوار "الصادق نمبر" كراچي، قاضي پرنٽرس، آگسٽ _ سيپٽمبر 1982ع.
 - 68 ماهرار "الصادق" كراچي، قاضي پرنٽرس، جمادي الاول 1400هـ.

ماهوار "الصادق" كراچي، قاضي پرنٽرس، اپريل 1982ع. 69.

ماهرار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1924ع. 70.

ماهوار "ترحيد" كراچي، دسمبر 1924ع _ جنوري 1925ع. 71.

ماهوار "توحيد" كراچي، اپريل 1925ع. 72.

ماهوار "توحيد" كراچى، سيپٽمبر 1925. 73.

ماهوار "توحيد" كراچى، فيبروري 1935ع. 74.

ماهوار "توحيد" كراچى، سيپٽمبر 1937ع٠ 75.

ماهوار "توحيد" كراچى، اپريل 1942ع. 76.

ماهوار "توحيد" كراچي, آگسٽ 1943ع. 77.

ماهوار "توحيد" كراچي، مارچ 1944ع. 78.

ماهوار "توحيد" كراچي، آكٽوبر 1944. 79.

ماهوار "توحيد" كراچى، سيپٽمبر 1946ع. 80.

ماهوار "توحيد" كراچي، جولاء 1948ع. 81.

ماهوار "توحيد" كراچى، دسمبر 1948ع. 82.

ماهوار "توحيد" كراچي، مئي 1949ع. 83.

ماهوار "توحيد" كراچي. آگسٽ _ سيپٽمبر 1952ع. 84.

ماهوار "پيغام" كراچي، شعبه اطلاعات كاتو سنڌ، اپريل 1980ع. 85.

ماهوار "پيغام" كراچي، شعبه اطلاعات كاتو سنڌ، مارچ _ اپريل 1981ع. 86.

ماهوار "پيغام" كراچي، شعبه اطلاعات كاتو سنڌ، سيپٽمبر _ آكٽوبر 1982 87.

ماهوار "شريعت _ سوانح حيات نمبر" سكر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيد. آڪٽوير - نومبر 1981ع.

ماهوار "شريعت" سكر. يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ، فيبروري 1976ع-

ماهوار "شريعت" سكر، يونائيٽيڊ پيڪيجز لميٽيڊ, آگسٽ _ سيپٽمبر 1977

ماهوار "شريعت" سكر. يونائينيد پيڪيجز لمينيد، مارچ - اپريل 1978ع-91.

ماهوار "شريعت" سكر. يونائينيد پيكيجز لمينيد. مئي 1978ع. 92.

ماهوار "شريعت" سكر. يونائينيد پيڪيجز لمينيد. مارچ 1980. 93.

ماهوار "شريعت" سكر. يونائينيد پيكيجز لمينيد، اپريل _ مئي 1980ع-94.

- .95 تماهي "مهرال _ سوانح نمبر 3-4" حيدرآباد. سنڌي ادبي بورد. 1957ع.
 - .96 تماهي "مهرال _ شاعر نمبر 1-2" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, 1969ع.
 - 97. تماهي "مهران 1" حيدر آباد، سنڌي ادبي بورڊ، 1961.
- 98۰ تماهي "مهراڻ" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, جنوري _ فيبروري _ مارچ 1974
 - .99 تماهي "مهراڻ3" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, جولاءِ -آگسٽ ۽ سيپٽمبر 1976ع.
- .100 ٽماهي "مهراڻ 4" حيدرآباد, سنڌي ادبي بورڊ, آڪٽوبر _ نومبر ۽ ڊسمبر 1981
 - .101 ماهوار "نئين زندگي" ڪراچي. مئي 1957ع.
 - .102 ماهوار "نئين زندگي" ڪراچي. اپريل 1964ع.
 - .103 ماهوار "نئين زندگي" ڪراچي، ڊسمبر 1966ع.
 - .104 ماهوار "نئين زندگي" ڪُراچي. مارچ 1968ع.
 - .105 ماهوار "نئين زندگي" كراچي، سيپٽمبر 1968ع.
 - .106 ماهوار "نئين زندگي" ڪراچي. سيپٽمبر _ آڪٽوبر 1974ع.
 - .107 ماهوار "نئين زندگي" ڪراچي، مئي جون 1981ع.
 - .108 روزانه "الامين" حيدرآباد, 1919ع ۽ 1920ع.
- .109 روزانه "الوحيد" اسپيشتل ايڊيشن "سنڌ آزاد نمبر" ڪراچي. مؤرخه 15 جون 1936ع.
- .110 روزانـ "الوحيد" كراچي. 1920ع كان 1925ع، 1928ع كان 1934ع. 1938ع كان 1942ع ۽ 1944ع كان 1946ع.
 - 111. روزانه "آزاد" حيدرآباد، 1941ع.
 - .112 روزانه "مهرال _سالگره نمبر" كراچي. مؤرخه 15 جنوري 1961ع.
 - .113 روزانه "مهران _ سالگره نمبر" كراچي، مؤرخه 5 جنوري 1962ع.
 - .114 روزانه "هلال پاكستان" كراچي، 1979ع.
 - ·115 روزانه "عبرت" حيدرآباد. 1985ع.
 - .116 منتيوار "آزاد" كراچي، 1975ع.
 - .117 هنتيوار "چوڏس" ڪراچي، 1946ع.

اردو كتاب

- 118. ابوبكر مگسي: "عربي پاكستان كي قومي زبان"، كراچي، وفائي پرنٽنگ پريس، 1970ع.
- 119. پادري بركت الله: "قرون وسطيٰ كي ايشيائي اور هندوستاني كليسائين"، لاهور, پنجاب, رليجس بوك سوسائني، 1962ع.
 - .120 مولانا حسين احمد مدنى: "نقش حيات" (جلد دوم), كراچى، دار الاشاعت, 1979ع.
 - 121 مولانا حسين احمد مدنى: "تحريك ريشمى رومال", لاهور, اردو پريس, 1960ع.
- -122 سيد رئيس احمد جعفري ندوي: "اوراق گر گشته", لاهور, محمد علي اكيدمي, 1968ع.
 - .123 صلاح الدين ناسك: "تحريك آزادي"، لاهور، عزيز پبلشرز، 1975ع.
- 124. ضياءَ الدين احمد برني: "جمشيد نسروانجي"، كراچي، تيوسوفيكل سوسائٽي. 1953ع،
- 125. ضياء الدين اصلاحي: "هندوستان عربون كي نظر مين", اعظر گڙه, معارف پريس، 1960ع.
 - 126. ظفر حسن ايبك: "آپ بيتي" (حصد اول), لاهور, منصور بك هاؤس، 1384هـ.
- 127. آغا عبدالله جان سرهندي: "مونس المخلصين"، كراچي، عباسي ليتو آرت پريس، 1366هـ.
- .128 عبدالرحيم صاحب جميل: "رمورِ حكمت". گجرات پنجاب، اقبال اسٽيم پريم، سال؟.
 - 129٠ صاحبزاده عبدالرسول: "تاريخ پاک و هند", لاهور, اير. آر. برادرز, 1970ع.
- 130. عبدالقدوس هاشمي: "تقويم تاريخي- قاموس تاريخي"، كراچي. مركزي اداره تحقيقات اسلامي، 1965ع.
 - .131 مولانا عبيدالله سندهي: "ذاتي دائري" (بار اول)، لاهور، ادبستان، 1946ع.
- .132 مولانا عبيدالله سندهي: "كابل مين سات سال", لاهور, سنده ساگر اكادمي، 132. ع. 1976ع.
 - .133 فائق كامران: "تحريك پاكستان"، لاهور، فيروز سنز، 1976ع.
- 134. حافظ قاري فيوض الرحمٰن: "مشاهير علماء ديوبند"، لاهور، المكتبة عزيزية، 1976ع.

- .135 محمد اسلم: "مولانا عبيدالله سندهي كي سياسي تمكتوبات". لاهور, ندوة المصنفين, سال؟.
- 136. پروفيسر محمد سرور: "خطبات مولانا عبيدالله سندهي"، لاهور، سنده ساگر اكادمي، سال؟.
- 137. محمد سرور: "مولانا عبيدالله سندهي" (اشاعت پنجم)، لاهور، سنده ساگر اكادمي، 1976ع. '
- .138 محمد عظمت الله بهثي: "المشرقي"، گجرات (پاكستان), پنجاب اليكٽرك پريس، 1963ع.
- 139. مولانا سيد محمد ميان: "تخريك شيخ الهند" (بار دوم), لاهور, مكتبه معموديه, 1978ع.
- .140 منشي مشتاق احمد: "سمرنا كي خونين داستان"، ميرثهم، سوراج پرنٽنگ وركس، سال؟.
- 141 سيد هاشمي: "تاريخ مسلمانان پاڪ و بهارت", ڪراچي، انجمن ترقي اردو, 1953ع.

متفرقه

- .142 "ترك موالات نمبر 1"، بمبئى، مركزى خلافت كمينى، 1920ع.
 - .143 "متنقه نتريٰ", دهلي، جمعية مركزيه علماء هند, 1339هـ.
 - .144. "مختصر حالات انعقاد"، دهلي، جمعيت علماء هند, سال؟.
- 145. "قوانين"، كراچي، انجمن معاونين مدرسه اهل السنت والجماعة لياري كوارير. 1331هـ.

رسالو

.146 هنته روزه "الفتح"، كراچي، مؤرخه 24 مارچ 1978ع.

فارسى كتاب

- .147 خداداد خان: "لب تاريخ سند" حيدرآباد, سندي ادبي بورد, 1959ع.
- 148. دكتر سيد سبط حسن رضوي: "قارسي گويان پاكستان" راولپندي، انتشارات مركز تحقيقيات فارسي ايران وپاكستان. 1974ع.
 - .149 عظير الدين تتوي: "قتح نامه" حيدر آباد، سندي ادبي انجمن. 1967ع.

انگريزي كتاب

- 150. Azimusshan Haider: "History of Kacachi", Karachi, Feroz Sons, 1974.
- 151. Ahmad Shafi: "Haji Sir Abdoola Haroon A Biography", Karachi, Pakistan Herald Press Year?
- 152. Allana G: "Quaid-e-Azam Jinnah", the Story of Nation, Lahore, Feroze Sons, 1917.
- 153. Aziz K.K: "Britian and Muslim India", London, William Heine mann Ltd, 1963.
- 154. Aga Khan: "The Memoirs of Aga Khan", London, Cassell & Company Ltd, 1954.
- 155. Aitchison: "Treaties, Engagments and Sanads", Culcutta,
 Government of India, 1930.
- 156. Brunn Geoffrey: "The World in the Twentieth Century", Boston D.C.
 Heath & Company 1948.
- 157. Bal Krishna: "Commercial Relations between India and England", London, George Roultledge, 1924.
- 158. Burton R.F: "Sind and the Reces that in Habit the Velley of the Indus", Karachi, Oxford University press 1973.
- 159. Burton R.F: "Sindh", Karachi, Oxford University press 1973.
- Campbell George: "Modern India", A Sketch of the System of Civil
 Government, With Some Natives and Native Institutions London,
 John, Murray 1853.
- 161. Chablani S.P: "Economic Conditions in Sind", Bombay, Orient Longmans Ltd. 1951.
- 162. Dames, M.L: "The Book of Duarte Barbasa", Volume I, London, Haklut Society, 1918.
- 163. Dodwell H.H: "The Cambridge History of India", Volume V, London, Cambridge University Press 1929.

- 164. Eastwick E.B: "A Glance at Sind before Napier", Or Dry leaves from young Egypt, Karachi, Oxford University Press, 1973.
- 165. Eastwick Captain. E.B: "Speeches of Captain Eastwick on the Scinde Question", London, Smith Elder and Company, 1862.
- 166. Elliot: "History of India as told by its own Historians", London, trubner & Company, 1871.
- 167. Elliot H: "History of India", London Trubner and Company 1857, Volume I.
- 168. Edward, C. Sachan: "Alberuni's India", London Kegan Paul, 1910.
- 169. F. Valens, Wienk: "In the land of Sindhi and Baluchi", Karachi, Rotti Press, 1947.
- 170. G.Allana: "Our Freedam Fighters", Karachi, Paradise Subscription Agency 1969.
- 171. G.Allana: "Pakistan Movement Historic Documents", Karachi, Department of International Reletions, 1967.
- 172. George Lenczowski: "Middle East in World affairs", New yark, Cornell University Press, 1958.
- 173. Grover L.B: "Studies in Modern Indian History", Bombay S.Chand & Co, 1963.
- 174. Hanafi: M.A: "Muslim Rule in Indo Pakistan", Dacca, Ideal library,
- 175. Henry Cousens: "The Antiquities of Sind", Karachi, Oxford University Press, 1975.
- 176. Hunter W.W: "A History of British India", Valume II, London, Green and Co. 1912.
- 177. Hunter W.W: "The Indian Empire", London, Kegan Paul 1890-
- 178. Hamilton Alexander: "A New Account of East Indies", London, the Argonaut Press, 1930.
- 179. Homilton Walter: "East India Gazetteer", London, 1815.

- 180. Harrison: "A Hand Book of Karachi", Karachi, Educational Printing Press, 1933-
- 181. Irvine, W: "Note on Nicalao Manucci and his Storia Do Magor", London, Royal Asiatic Society 1903.
- 182. Jamaluddin Ahmed: "Middle Phase of Muslim Political Movement", Lahore Publishers United Ltd, 1969.
- 183. James Burnes: "Narrate of a Visit to the Court of Sinde", London, Longman and Company, 1839.
- 184. Jawahar Lal Nehru: "An Autography", London, John Lame the bodley head, 1937.
- 185. Joseph, Davey Cunninghan: "History of the Sikhs", London, John Murray, 1849.
- 186. Kala Tharani: "British Political Mission to Sind", New Delhi, Orient Longman Ltd. 1973.
- 187. Kanshik, P.D: "The Congress Ideology and Programme", Bombay, Allied Publishers Private Limited, 1964.
- 188. Khan Abdul Waheed: "Indian Wins the Freedom the other Side", Karachi, Pakistan Educational Publishers Ltd, 1961.
- 189. Lambrick H.T "Sir Charles Napier and Sind", Oxford Clarendon Press 1952.
- 190. L.F. Rush brook, William: "The State of Pakistan", London, Faber and Faber, 1962.
- 191. Makhdum Amir Ahmed: "Maulana Allah Bux Abhojo", the Platinum Jublee Book, 1960.
- 192. Mirza Kalichbeg: "History of Sind", Volume II, Karachi, Commissioner's Press, 1902.
- 193. Mohd Hamiuddin: "History of Muslim Education", Karachi All Pakistan Educational Conference Volume II, 1973.
- 194. Sayad Mahamman Latif: "History Of the Punjab", New Delhi, Eurasia Publishing House 1964.

- 195. Syed Moinul Haq: "The Great Revolution of 1857", Karachi, Pakistan Historical Society, 1968.
- 196. Naomal Hotchand: "Memoirs of Seth Naomal", London William Pollard & Co. Ltd. 1915.
- 197. Napier, W.F.P: "The Conquest of Scinde", London T & W. Boone, 1845.
- 198. Nicholson A.P: "Scaraps of Paper", London, Ernest Benn 1930.
- 199. Olaf Caroe: "The Pathans", London, Macmillan & Co. Ltd 1964.
- 200. Percival Spear: "Modern India" London, Oxford University, 1965-
- Postans Captain T: "Personal Observations in Sind", London, Longman, 1843.
- 202. Qureshi Ishtiaq Hussain "Education in Pakistan", Karachi, Ma'aref Ltd. 1975.
- 203. Rajput, A.B: "Muslim League Yesterday and Today", Lahore Muhammad Ashraf, 1948.
- 204. Ram Gopal: "Indian Muslims", Bombay, Asia Publishing House, 1964.
- 205. Rashdi Ali Mohd Shah: "The Report of the First Sind Provincial Muslim League Conference", Karachi, Civil and Military press, 1938-
- 206. Rennell: "Memoirs of a Map of Hindoostan", London, W.Bulmer and Company, 1792.
- 207- Roberts P.E: "History of British India", London Oxford University Press 1952.
- 208. Smith: "The Oxford History of India", London, Oxford University press, 1961.
- 209. Sorly, H.T: "Shah Abdul latif of Bhit", Oxford, Oxford University Press, 1940.
- 210. Trotter L.J: "The Earl of Auckland", Oxford, Clarendon press 1893-
- 211. Weeks.R.V: "Pakistan Birth and Growth of a Muslim Nation", London, D.Van Nostrand Company, 1964.
- 212. William.L.Langer: "An Encyclopedia of World History", London, George G.Harrap & CO, Ltd, Year?

Gazetteers

- 213. Aitken, E.H: "Gazetteer of the Province of Sind", Vol.A, Bombay, Govt. Press, 1907.
- 214 Smith, J.W: "Gazetteer of the Province of Sind", B. Volume I, Karachi District, Bombay Gort Press, 1907.
- 215. Smyth, J.W: "Gazetteer of the Province of Sind", (Hyderabad District), Bombay, 1919.
- 216. Smyth, J.W: "Gazetteer of the Province of Sind", (Karachi District), Bombay, 1919.
- 217. Smyth. J.W: "Gazetteer of the Province of Sind", (Sukkar District), Bombay, 1919.
- 218. Sorley H.T: "Gazetteer of West Pakistan", Lohore, Government of Pakistan, 1968.

Miscellaneous

- 219. The "Memorandum Presented by Sindh Hindu Sabha", to the Simon Commission.
- 220. "Karachi Directory", Karachi, Daily Gazette Press, 1916.
- 221. The "Indian & Pakistan Year Book & Who's Who", Bombay, the Times of Indian Press, 1948.

Journals and News Papers

- 222. "Journal of Royal Asiatic Society", Calcutta, 1934.
- 223. "Journal of sind Historical Society", Karachi, May 1934.
- 224. "Journal of Sind Historical Society", December 1936.
- 225. "Journal of Sind Historical Society", December 1938.
- 226. "Sind Journal of Political Science & Modern History", Universty of Sind, summer 1977/Winter 1978.
- 227. "Daily Gazette", Karachi, 1916 to 1918, 1920 to 1923, 1925, 1926 to 1931, 1933 to 1936 and 1944.





